॥ प्रस्तावना ॥

॥ श्री वीतराग परमात्माएं बे प्रकारनो धर्म उपदेश्यो छे, जेनी परंपरा अनादिकालथी चाली आवे छे, तेमां प्रथम सर्वोत्कृष्ट धर्म तो साधुजनने अंगीकार करवा योग्य सर्वत्यागरूप पंचमहाव्रत छे, ते धर्म सर्वथकी कहेवाय छे अने बीजो देशथकी धर्म ते श्रावकजननें अंगीकार करवा योग्य श्री सम्यक्त्व मूल बारव्रत रूप छे तेमां कोइएक श्रावक तो संपूर्ण बारे व्रत अंगीकार करे छे, कोइएक, द्वितीयव्रतादि संपूर्ण अंगीकार करे छे. कोइएक वली प्रत्येक व्रत मांहेलो जेटलो जेटलो भाग तेनाथी पलाइ शकाय छे, तेटलो भागज अंगीकार करे छे एम जे जेटलां व्रत अथवा जे व्रतमांहेलो जेटलो विभाग पालवाने शक्तिमान् थाय छे, ते तेटलो विभाग अंगीकार करे छे ए श्रावकनां बार व्रत अथवा ते मांहेलो कोइ पण विभाग जे सेवन करवो ते यतिनां पांच महाव्रत सेवन करवा रूप कार्यनु कारण छे एटले यतिधर्म कार्य छे अने श्रावकधर्म तेनु कारण छे

ते कारण रूप श्रावक धर्मने सेवन करनारा एवा अनेक उत्तम जीवो पण छेवट यतिना पांच महाव्रत रूप कार्यधर्मनी प्राप्ति करी ते धर्मनुं सेवन करी मोक्षरूप नगरें पहोंच्या छे,तेवा लक्षावधि महान्पुरुषोनां चरित्रो श्री जैनग्रंथोमां परंपरायें हरहमेश चाल्यां आवे छे अने आ मध्यम कालमां एटले आज वर्त्तमान समयमां पण तेवां चरित्रो मांहेला सहस्रो गमे चरित्र विद्यमान छे, जे मांहेला अनेक ग्रथोना नाम दररोज व्याख्यान करनारा तथा श्रवण करनारा साधु अने श्रावक जनोने स्मरणमां पण छे, तथापि ते सर्व ग्रथोनी पंक्तिमां प्रथम गणना करवा योग्य आ श्रीजयानद केवलीनी कथा छे कारण के एमणे शुद्ध श्रद्धान पूर्वक अतिचार न लगाडतां उल्लसित शूरवीर पणे श्रावकनां व्रत सेवन कर्यां छे ए महा पुरुषना जन्म निर्वाणादि सर्व, नवमा श्री सुविधिनाथ परमात्माना तीर्थमां थयेलां छे

ए प्रतापी पुरुषना चरित्रनी परंपरा जोतां एमजु छेहु चरित्र सवत् पन्नर सेंना शैकामां श्रीजैनशासनोन्नतिकारक,त्रिदश तरंगिणी आदिक शेंकडो ग्रंथोना कर्त्ता श्रीमुनिसुदर सूरि महाराजें सस्कृत भाषामां रच्युं छे परंतु हालमां घणा ग्रथोने पद्यबंध रास रूपें रचवानो चाल वधारे पसंद होवाथी मुनि

श्रीपद्मविजयजी महाराजें ए ग्रंथनी जूदी जूदी देशियोमां वर्णेने वे ढाल करीने रास रूपें रच्युं छे, जेथी ए कथा भाग सर्व वांचनार साहेबोने घणीज स हेलाइथी समजवामां आवशे

आ महान् प्रतापी पुरुषना चरित्रमां मुख्यत्वें करी, श्रावक व्रत पाल वाना फलनुं महात्म्य संपूर्ण रीतमां आवशे, ए श्री जयानंदजीयें आगल मतिसुंदर नामे प्रधानना भवमां श्रावकने आचरवा योग्य प्राणातिपातादिक द्वादश व्रत शुद्ध श्रद्धान पूर्वक पाल्यां, तेमना फल पण तेमने तेवांज मल्यां छे प्रथमतो देवादिकनां सुख भोगवीने फरी देवोने पण जितवाने दुर्लभ एवा महा पराक्रमी श्रीजयानंदनामें राजा थया छे, जेना प्रबल प्र ताप विषयिक महा अद्भुत अने आश्चर्य कारक वांचनारना हृदयमां आ नंद उपजावनारी एवी नवा नवा कौतुको सहित चमत्कारिक कथाउ आ चरित्रना नवे खण्डमां संपूर्ण रीतमां आवशे

नविन बोधबीजनी प्राप्ति वांछनार भव्य जीवोने आ चरित्र वांचवा थी तथा श्रवण करवाथी,श्रावक व्रत पालवाना फलनो निश्चय थशे, तेमज यति धर्म पालवाथकी जे उत्तम सुखोनी प्राप्ति थाय छे, ते पण स्पष्ट दृष्टि गोचर थशे, तथा गतभवें जे स्वल्प मात्र पण शुभाशुभ कृत्य आचरण कर्युं होय तेना सुख दुःखादि शुभाशुभ फल पण अवश्य भोगववां पडे छे ते पण प्रत्यक्ष समजवामां आवशे, जेथकी तेमने बोधि पामवी सुलभ थशे

ए श्री जयानंदजी पूर्वकृत पुण्यानुसारें, गाम गाम सर्वकार्यनी सिद्धि पाम्या छे,तथा नवी नवी राज कन्याउ परण्या छे, तेमज राजादिको सार्थे युद्ध करवामां जय पाम्या, ते तो साधारण वात छे परंतु केटलाएक वखत देव देवीयोनी सार्थें संग्राम करी तेमने पण जितीनें पोताना सेवक कर्या छे एवा ए महा पराक्रमी थया छे एमनी जेटली प्रशंसा करियें एटली थोडीज छे,

आ चरित्र छापतां प्रथम एना चौद फारम सुधी तो एकज प्रति म हारे हस्तगत थइ हती, अने त्यार पछी बीजी प्रति मली आवी तेथी सं शोधन करवाने अनुकूलता थइ, तथापि दृष्टिदोष, कंपोस करनारनी चू क अने महारी स्वल्पबुद्धिने लीधे जे भूल थइ होय ते सुज्ञानियें सुधारी वांचवी, माहारा उपर भूल चूकनी क्षमा करवी एवी महारी प्रार्थना छे

श्रावक भीमसिंह माणक

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ पन्मितश्री पद्मविजयजीविरचित ॥

॥ श्रीजयानद केवलीनो रासप्रारंभ ॥



॥ दोहा ॥

॥ प्रथम प्रथम प्रणमुं प्रभु, सोहे श्रसें जास ॥ कुंतल कनक कलश शिरें, नील कमल मनु न्यास ॥ १ ॥ सिद्धारथ सुत तिविद्दछु, वडू तिविहा वीर ॥ जनक सिद्धारथ डुविह जिन, धरणीधर पइ धीर ॥ २ ॥ कल्याणकें जस सुर करे, श्रवनी कलप श्रविशेष ॥ ते सुगुणा वरतो सवे, जयवता जिन शेष ॥ ३ ॥ मात परें पद मांम्हवा, शास्त्र मारग समजाय ॥ शिशुपरें कविनें शीखवे, प्रणमु सरसति पाय ॥ ४ ॥ गुरु उत्तमगुणगण नख्या, मुज उपकार महंत ॥ प्रणमुं पदकज प्रेमछु, श्राणी हरख श्रत्यंत ॥ ५ ॥ श्रीजयानद सोनागीया, केवल लखमी कत ॥ धर्म डुविध श्राराधिने, शिवसुख जे साधत ॥ ६ ॥ नव्यप्रतिबोधन नणी, चरित्र नणु सुविचार ॥ नवखंर्मे करी निर्मलो, रचछु रास उदार ॥ ७ ॥ प्रिया सहित पुरवनवें, समकेतनें वली शील ॥ दान धर्म वली दाखवु, लहे जिम लखमी लील ॥ ८ ॥ चमत्कारकारी चरित, सुणतां होशे स्वाद ॥ डुख दोहग दूरें जशे, विकथा मूकी वाद ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जबुद्वीप लख योजन मान, सात क्षेत्र तेहमां परधान, सात वरष पण षट वर्ष धरो, चमत्कारी ए वातें खरो ॥ १ ॥ लखमी राखण विधियें कह्यो, जगती कोट श्रठ योजन धह्यो ॥ खाई लवण सायरनी करी, सर्व द्वीप जस रह्या श्रनुसरी ॥ २ ॥ तेहमां नरत दक्षिण दिशें कह्यो, वैताढ्य दम्म लेइनें रह्यो ॥ श्रापद वारण मानु एह, षट खर्में शोनित ठे जेह ॥ ३ ॥ खम्म क्षेश मली रखे करे, तिणें धाता विचें श्राडज धरे ॥ गगा सिंधुने वली पाढ, वैताढ्य रजत तणो श्रतिगाढ ॥ ४ ॥ त्रेशठ जिन

वर पमुहा होय, मध्य खम ते एहवो जोय ॥ रतिवर्द्धन तिहां नगरी अ छे, स्वर्ग तणी शोना तेह पछें ॥ ५ ॥ फटिक कुन तिहा चैत्यनें शिरें, अधकार ते दूरें करे ॥ पूनम अमासनो वहेरो नही, सयल अनीति गइ दूरें वही ॥६॥ नृप गजशालायें कलह ते कह्यो, बधन नारि धमिल्ले रह्यो ॥ दम प्रासादनें मस्तक होय, स्नेह हानि दीपकमां जोय ॥ ७ ॥ वुहिया मदिर दीसे घणा, खड्ग मांहिं रह्यां निर्दयी पणां ॥ कोरणी नहीं ते नगर मझार, पण कोरणी घर घरनें बार ॥ ८ ॥ अलकापुरी परें तेहनो जोस, पण बहु ईश्वर तिहां नहीं दोष ॥ चूति घणी तस मदिर वली, धनद बहु रहे नेला मली ॥ ९ ॥ तिहां नरवीर अछे राजान, वकुराई जस इंद्र समान ॥ कटक रजें ढांक्यो जब सूर, तस प्रताप उद्योत करे नूर ॥ १० ॥ राणीउं गुणवती बहु जास, कीर्त्तिसुदरी पटराणी तास ॥ मतिसुवर तेहनें परधान, चतुराईनो तेह निधान ॥ ११ ॥ रूपवत बहु शास्त्रनो जाण, सुर गुरु जीत्यो बुद्धि प्रमाण ॥ जीवमात्र ते मान्नुं रह्यो, यथें जीव तिणें ए कह्यो ॥ १२ ॥ गुणमाहीनें बहु दातार, क्षमा प्रमुख गुणवत अपार ॥ विनयी न्यायी ज्ञाता जेह, नृपति नगतो अति सलनेह ॥ १३ ॥ मत्रीश्वर महोटो जे कवी, राज्य नार तेहने शिर ठवी ॥ आप निचित निर्नय थइ राय, रात दिवस नोगें लयलाय ॥ १४ ॥ मत्रीश्वरनें कामिनी दोय, प्रीति सुदरी पहेली तिहां होय ॥ गुणसुंदरी बीजी तस नाम, रूप कलाथी अति अनिराम ॥१५॥ देवितणु सवि लेइ रूप, विमन थइ माने निजरूप ॥ ते इस्खें नवि निद्रा करे, देवीउं स्वाप रहित तिणे फिरे ॥ १६ ॥ वृद्धपणे विक्लव विधि थयो, ए अपवाद विदारण नयो ॥ निपजावी ए करी विज्ञान, शक्ति देखाडे निज असमान ॥ १७ ॥ दान शीलादिक गुण बहु तास, जिम आनरणे माणक वास ॥ नृपनें एक पुरोहित वली, वसुसार नामें ते ठली ॥ १८ ॥ अतीत अनागत वातो कहे, निमित्त बलें ते सहु सहहे ॥ धर्म योग्य राजा परधान, मत्री नारी पण गुणह निधान ॥ १९ ॥ पण सामग्री नवि लह्या कोय, तेणें मिथ्यात्वी सघलां होय ॥ पुरोहित नास्तिक मत घणी, तेहनी वात सवे निर्गुणी ॥ २० ॥ श्रीजयानद केवलीनो रास, नणतां सुणतां लीलविलास ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयथी लही, प्रथम ढाल इम पद्मे कही ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नास्तिक मत निश्चय करी, काढे जोगमां काल ॥ पुरोहित महा पापीयो, आखे फोगट आल ॥ १ ॥ जीवादिक नव तत्त्व जे, नवि माने निरधार ॥ खावु पीवु सुख गणे, परजवनो न प्रकार ॥ २ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करेलडां गड दे रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मत्रीनें घरे, त्रण्य ज्ञान सयुत ॥ मुनिवर फिरता गोचरी, रूप अति अद्भुत ॥ जविक जन नमीयें रे ॥१॥ जव जव सचित पाप, सवि निर्गमीयें रे ॥ ए आकणी ॥ पुण्यराशि मनु ढग कह्यो, मयगल परें महाराज ॥ मासखमणनें पारणें, आव्या महा ऋषिराज ॥ ज० ॥ २ ॥ मत्री मुनि देखी करी, गुणलक्षण गुण वान ॥ मन चिंते मुज जाग्यथी, आव्या एह अवान ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रथम नारिनें इम कहे, आपो मुनिनें दान ॥ दान घणु तस वालहुं, हरखी चित्त निदान ॥ ज० ॥ ४ ॥ खीर खांम ते नीपनां, महोटा जाजन मांहि ॥ तेहमांथी कांइ लेइ करी, आवे मुनिवर ज्यांहि ॥ ज० ॥ ५ ॥ लीलायें लटकें करी, वचमां ढोलती तेह ॥ आवी मुनिने वीनवे, सुदर आहार ल्यो एह ॥ ज० ॥ ६ ॥ मुनि बोले व्रत वतने, नवि सूजे ए आहार ॥ तव ते मूकी लावती, कूर अति मनोहार ॥ ज० ॥ ७ ॥ पण अग्नि कपर रह्युं, जाजनमांथी आण ॥ सूजे नहीं मुनिवर कहे, अतिशय मीठी वाण ॥ ज० ॥ ८ ॥ सचित्त ढांकणु ढांकीउ, तेहथी लावी थाल ॥ ए पण मुज सूजे नहीं, मुनि कहे वयण रसाल ॥ ज० ॥ ए ॥ कण कपर रह्यु घृत वली, मुनिवर न लीये तेह ॥ कण मिश्रित वली शर्करा, शुद्धमान नहीं एह ॥ ज० ॥ १० ॥ दो दिन उपर दधि जिको, नवि लीये मुनिवर सोय ॥ ते पण मूक्यु तेणीयें, वली जे घरमां होय ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ गत कालें मोदक कर्या, जावें लावी नारि ॥ मुनि कहे अम सूजे नहीं, एह मोदक इण वार ॥ ज० ॥ १२ ॥ बे नारी मत्री मली, जक्तें आमह कीध ॥ आशय अणजाणे थके, पण मुनिवरें नवि लीध ॥ ज० ॥ ॥ १३ ॥ अणलेतां देखी करी, मनमां उपनो खेद ॥ अप मगल चित्त चिंतवी, बोले इणिपरें जेद ॥ ज० ॥ १४ ॥ मोदक अमृत सारिखा, जो नवि सूजे एह ॥ तो किम विप तुज सूजशे, किंवा नेत्र गयां देह ॥ ज० ॥ ॥१५॥ पहेली स्त्री कहे जैनना, यतिने दाक्षिण्य नांहि ॥ दाक्षिण्य शुद्ध कुलें

हुए, एहनु कुल कुण मांहि ॥ न० ॥ १६ ॥ बीजी कहे उद्योतमां, जो नवि सूजे कांय ॥ तो आपो ए अधने, जिम नणी तुम जाय ॥ न० ॥ ॥ १७ ॥ पात्र घणा ए नयरमां, तेहनें देशु दान ॥ मंगल करशु आपणें, देशुं आदर मान ॥ न० ॥ १८ ॥ जिहां तिहां दीधु दान जे, ते निष्फल न वि जाय ॥ पात्रे दीधु दान ते, सहस कोडिगुणु थाय ॥ न० ॥ १९ ॥ डु र्वाक्यें ते त्रण जणे, बांध्यु कर्म कठोर ॥ रोष शोष विण मुनि हवे, नी कलीया तप घोर ॥ न० ॥ २० ॥ एक श्रावक मंत्रि घरे, आव्यो कार्य विशेष ॥ पण ते मंत्रीमित्र छे, अंतर नहीं तस रेख ॥ न० ॥ २१ ॥ धर्मरुचि ते नामथी, आपी आसन तास ॥ उचित वयण संतोषिनें, वात क हे हवे खास ॥ न० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी बीजी ढाल ॥ ॥ पद्म कहे श्रोता घरे, होजो मंगल माल ॥ न० ॥ २३॥ सर्वगाथा ॥ ५५॥

॥ दोहा ॥

॥ नाई कोइ मुल घरनणी,आव्यो निकु एक ॥ जैन यति जाणी करी, विनयें धरी विवेक ॥ १ ॥ प्रियायें प्रारथना करी, देवा मांम्यु दान ॥ उ त्तम नोजन आपवा, बहु आदर बहु मान ॥ २ ॥ आज प्रथम मुज आं गणें, आव्यु पातर एह ॥ वीण लीधे वलीउ वली, समजण नांही सनेह ॥ ३ ॥ अप मंगल करी ठलख्यो,कोण हतो कहो नाय ॥ उलखो तो आ खो तुमें, श्रावक कहे समजाय ॥ ४ ॥ हमणां मलीया हेजशु, मुनिवर ते महिराण ॥ प्रणम्या में प्रेमें करी, उलखीया असमान ॥ ५ ॥ कान देइनें जे कहुं, सांजलो चतुर सुजाण ॥ चित्रकारी जस चरित्र छे, सुणतां आवे शान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाडी फूली अति नली॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सिंधूदेश सोहामणो, मुनि नमीयें रे ॥ सौवीर नगर मझार ॥ पाप निगमीयें रे ॥ वलिउ अतिवल राजीउ ॥ मु० ॥ तस सम नही शिरदार ॥ पा० ॥ १ ॥ तास सनामां अन्यदा ॥ मु० ॥ परदेशी नट आय ॥ पा० ॥ मांम्यु नाटक अंजनवु ॥मु०॥ देखतां अचरिज थाय ॥ पा० ॥२ ॥ देखी सगर चक्री तणु ॥ मु० ॥ नाटक पुत्र वियोग ॥ पा० ॥ पीडा तेहनी देखी नें ॥ मु० ॥ ध्याये चित्त शुनयोग ॥ पा० ॥ ३ ॥ अहो नव डु समय दे खीयें ॥ मु० ॥ बूज्या ते महाराय ॥पा०॥ निजसुत वालकनें ठवी ॥ मु०

॥ राज्य तखत निरमाय ॥ पा० ॥ ४ ॥ धर्माकर गुरु सन्निधें ॥ मु० ॥ दीक्षा लीये महाधीर ॥ पा० ॥ दुविध शिक्षा अन्यासता ॥ मु० ॥ बहु श्रुत थया गनीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ अद्भुत वैराग्यनो धणी ॥ मु० ॥ बारसविह तप सार ॥ पा० ॥ अप्रमादी नित्य विचरता ॥ मु० ॥ लब्धि तणा नंमार ॥ पा० ॥ ६ ॥ कांय असाध्य न तपथकी ॥ मु० ॥ योग्य जाणी गुरु पाय ॥पा० ॥ एक विहार आणा करे ॥मु०॥ सद्गुरु करिय पसाय ॥ पा० ॥ ७ ॥ सिंह परें ते विचरता ॥ मु० ॥ परिसहनें उपसर्ग ॥ पा० ॥ ते मृगथी बीहे नहीं ॥ मु० ॥ साधता अपवर्ग ॥ पा०॥८॥ गजपुर आव्या अन्यदा ॥ मु० ॥ ध्यान तपें तेह लीन ॥ पा० ॥ उद्यानें रह्या मुनिवरू ॥ ॥ मु० ॥ निज आतम करे पीन ॥ पा० ॥ ए ॥ विविध अतिशय गुण थकी ॥ मु० ॥ सुखीया होय सवि जीव ॥ पा० ॥ नीमराय तिहां राजीउ ॥ मु० ॥ शत्रुनें नीम अतीव ॥ पा० ॥ १० ॥ राजस गुण धारे सदा ॥ मु० ॥ सर्व दर्शननो राग ॥ पा० ॥ मतिसार मंत्री तेहनें ॥ मु० ॥ बुद्धिनिधि महानाग ॥ पा० ॥ ११ ॥ राज्यनार धोरी कह्यो ॥ मु० ॥ राज मूरति मानुं एह ॥ पा० ॥ थोडे अपराधें करी ॥ मु० ॥ मारे तस्कर तेह ॥ पा० ॥ १२ ॥ अकाम निर्जराथी थयो ॥ मु० ॥ निर्जर व्यंतर सार ॥ पा० ॥ ज्ञानविनंगें पाछलो ॥ मु० ॥ नव दीठो अविकार ॥ पा० ॥ ॥ १३ ॥ पुण्यवंत राजा नणी ॥ मु० ॥ न शक्यो परानव देण ॥ पा० ॥ गज मरगी अति आकरी ॥ मु० ॥ कीधी कारण तेण ॥ पा० ॥ १४ ॥ नृप मन खेद लहे घणो ॥ मु० ॥ करे अनेक उपाय ॥ पा० ॥ पण नवि शांति हुइ किमें ॥ मु० ॥ मंत्रीनें कहे राय ॥ पा० ॥ १५ ॥ करो उपाय कोइ वेगशुं ॥ मु० ॥ तस पण चिंता थाय ॥ पा० ॥ उद्यानें गयो अन्यदा ॥ मु० ॥ गीत वाजित्र सुणाय ॥ पा० ॥ १६ ॥ विस्मित चित्तथी आवीउ ॥ मु० ॥ मंत्री मुनिनें पास ॥ पा० ॥ देवी नाटक तिहां देखीउ ॥ मु० ॥ हाव नाव सुविलास ॥ पा० ॥ १७ ॥ महाप्रनाव ऋषिराजनो ॥ मु० ॥ जाणी नमीउ पाय ॥ पा० ॥ पद फरसित रज लेइने ॥ मु० ॥ आव्यो ते निज ठाय ॥ पा० ॥१८॥ सवि गज रेणुतिलक कर्या ॥ मु० ॥ मरगी नाठी जाय ॥ पा० ॥ ते वृत्तांत आवी कहे ॥ मु० ॥ हरख थकी निजराय ॥ पा० ॥ १९ ॥ मुनिवर स्तवना बहु करे ॥ मु० ॥ तव उत्सव करे राय ॥ पा०॥

हुए, एहनु कुल कुण मांहि ॥ न० ॥ १६ ॥ बीजी कहे वद्योतमां, जो नवि सूजे कांय ॥ तो आपो ए अधने, जिन्न भणी तुम जाय ॥ न० ॥ ॥ १७ ॥ पात्र घणा ए नयरमां, तेहने देशु दान ॥ मंगल करशु आपणे, देशु आदर मान ॥ न० ॥ १८ ॥ जिहां तिहां दीधु दान जे, ते निष्फल न वि जाय ॥ पात्रे दीधु दान ते, सहस कोडिगुण थाय ॥ न० ॥ १९ ॥ डु वाक्यें ते त्रण जणे, बांध्यु कर्म कठोर ॥ रोष शोष विण मुनि हवे, नी कलीया तप घोर ॥ न० ॥ २० ॥ एक श्रावक मंत्रि घरे, आव्यो कार्य विशेष ॥ पण ते मंत्रीमित्र छे, अंतर नहीं तस रेख ॥ न० ॥ २१ ॥ धर्मरुचि ते नामथी, आपी आसन तास ॥ उचित वयण संतोषिनें, वात क हे हवे खास ॥ न० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, भांखी बीजी ढाल ॥ ॥ पद्म कहे श्रोता घरे, होजो मंगल माल ॥ न० ॥ २३॥ सर्वगाथा ॥ ५५॥

॥ दोहा ॥

॥ भाई कोइ मुज घरभणी,आव्यो भिक्षु एक ॥ जैन यति जाणी करी, विनयें धरी विवेक ॥ १ ॥ प्रियायें प्रारथना करी, देवा मांड्यु दान ॥ उ त्तम भोजन आपवा, बहु आदर बहु मान ॥ २ ॥ आज प्रथम मुज आं गणें, आव्युं पातर एह ॥ वीण लीधे वलीउ वली, समजण नांही सनेह ॥ ३ ॥ अप मंगल करी उसख्यो,कोण हतो कहो भाय ॥ उलखो तो आ खो तुमें, श्रावक कहे समजाय ॥ ४ ॥ हमणां मलीया हेजशुं, मुनिवर ते महिराण ॥ प्रणम्या में प्रेमें करी, उलखीया असमान ॥ ५ ॥ कान देइनें जे कहुं, सांभलो चतुर सुजाण ॥ चित्रकारी जस चरित्र छे, सुणतां आवे ज्ञान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाडी फूली अति भली॥ मन भमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सिंधूदेश सोहामणो, मुनि नमीयें रे ॥ सौवीर नगर मझार ॥ पाप निगमीयें रे ॥ वलिउ अतिबल राजीउ ॥ मु० ॥ तस सम नही शिरदार ॥ पा० ॥ १ ॥ तास सभामां अन्यदा ॥ मु० ॥ परदेशी नट आय ॥ पा० ॥ मांड्यु नाटक अभिनवु ॥मु०॥ देखतां अचरिज थाय ॥ पा० ॥२ ॥ देखी सगर चक्री तणु ॥ मु० ॥ नाटक पुत्र वियोग ॥ पा० ॥ पीडा तेहनी देखी नें ॥ मु० ॥ ध्याये चित्त शुभयोग ॥ पा० ॥ ३ ॥ अहो भव दुखमय वे खीयें ॥ मु० ॥ बूज्या ते महाराय ॥पा०॥ निजसुत बालकनें ठवी ॥ मु०

कार रे लो ॥ अहो हू० ॥ उछव रंग वधामणां, हूआ घर घर बार रे लो ॥ अहो हू० ॥ १० ॥ अहो तप महिमा अचिंत्य छे, चक्रीनुं सैन्य चूरे रे लो ॥ अहो च० ॥ क्रोधथी वली सुप्रसादथी, तस ऋद्धि पूरे रे लो ॥ अहो त० ॥ ११ ॥ यत ॥ मुनयश्चक्रिण सैन्य, मपि क्रुद्धाददहत्यहो ॥ तप प्रभाव तस्तस्य, समृद्धिं दर्शयंतिच ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ राय प्रमुख मुनिरायनें, नमीयानें स्तवीया रे लो ॥ अहो न० ॥ मुनिदर्शित धर्म आदरे, शकति न गोपवीया रे लो ॥ अहो श० ॥ १२ ॥ विहार करी मुनि तिहां थकी, क्षेमा पुरी उद्याने रे लो ॥ अहो क्षे० ॥ ज्ञान ध्यानमांहि रह्या, नहीं आहारनें पा न रे लो ॥ अहो न० ॥ १३ ॥ मासखमणनें पारणे, आव्या नयर मझार रे लो ॥ अहो आ० ॥ घर घर भिक्षानें फरे, लेवा शुद्ध आहार रेलो ॥ अहो ले० ॥ १४ ॥ गोखें बेठो तिहां कणें, एक पुरोहित पुत्त रे लो ॥ अहो ए० ॥ जिनधर्मद्वेषी आकरो, मिथ्यात्व आकूत रे लो ॥ अहो मि० ॥ १५ ॥ धन यौवन मद आकरो, आवी मुनिवर पासें रे लो ॥ अहो आ० ॥ मस्तक खा सड़ा मारीआं, मुनि समता विलास रे लो ॥ आहो मु० ॥ १६ ॥ यत ॥ मृगमीनसज्जनानां, तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनां ॥ लुब्धकधीवरपिशुना, निष्कारणवैरिणोजगति ॥१॥ कज्जल तजे न श्यामता, सज्जन तजे न हेत ॥ दुरिजन तजे न कुटिलता, एह जाणो संकेत ॥२॥ कोकिलानां स्वर रूपं, स्त्री णां रूपं पतिव्रता ॥ विद्यारूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनां ॥ ३ ॥ढाल॥ कोप करे नहीं मुनिवरा, मेरुपरें धीर रे लो ॥ अहो मे० ॥ ते उपर करता कृपा, कृश तपथी शरीर रे लो ॥ अहो कृ० ॥१७॥ ऋषिजी चाल्या आगलें, तव तपनें जोरें रे लो ॥ अहो त० ॥ कोप्या शासन देवता, बांह्यो बिहु तोरे रे लो ॥ अहो बां० ॥ १८ ॥ अदृश्य रही क्रोधें करी, आक्रंद करावे रे लो ॥ अ हो आ० ॥ पीडा बहु उपजे तिणें, मावित्र तिहां आवे रे लो ॥ अहो मा० ॥ ॥१९॥ वात सवे मावित्रनें, पोतानी सुणावे रे लो ॥ अहो पो० ॥ तेपण खेद करी कहे, धिग धिग तुज थावे रे लो ॥ अहो धि० ॥२०॥ कोइ उपाय सूजे न ही, आवे मुनिवर पासें रे लो ॥ अहो आ० ॥ प्रणमी करजोडीकहे, तुम थी दुःख जाशे रे लो ॥ अहो तु० ॥२१॥ तुमें बहु महिमाना धणी, तुम शक्ति अगाध रे लो ॥ अहो तु० ॥ तुमें अचिंत त्रण जगतनें, तुमथी निराबाध रे लो ॥ अहो तु० ॥ २२ ॥ तेजमयी सूरय तुमें, बाल घूक समान रे लो

नृपति मत्री विहु उन्नवे ॥ मु० ॥ आवे मुनिवर पाय ॥ पा० ॥२०॥ मुनि प्रणमीनें उपविशे ॥ मु० ॥ पारें मुनिवर ध्यान ॥ पा० ॥ धर्म लाज देइ हवे ॥ मु० ॥ करे देशना दान ॥ पा० ॥ २१ ॥ श्रीजयानदना रासमां ॥ मु० ॥ नांखी त्रीजी ढाल ॥ पा० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ मु० ॥ आगल वात रसाल ॥ पा० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुविध धर्म तिहां दाखवे, वर्णव करी विस्तार ॥ गुणधर मुनिवर गृही तणो, सम्यग शुध्धाचार ॥ १ ॥ बूज्या नृप मत्री विहु, बीजा पण बहु लोक ॥ धर्म यथाशक्तें करी, आव्या निज निज ठोक ॥२॥ मुनिवर सयम मालहता, अप्रतिबध्ध अणगार ॥ पृथिवीनें पावन करे, वरत्ते उग्रविहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ मालीकेरे बागमें, दोय नारिंग पके रे लो ॥
अहो दोय० ॥ ए देशी ॥

॥ वीरपुरें हवे आवीया, तिहां ठे नरमारी रे लो ॥ अहो ति० ॥ बलसार तेहनो राजीउ, प्रजा पीडा अपार रे लो ॥ अहो प्र० ॥ १ ॥ देखी उपाय करे घणा, पण न थइ शांति रे लो ॥ अहो प० ॥ एक दिन भीम नरेंद्रनो, दूत तिहां आयात रे लो ॥ अहो दू० ॥ २ ॥ उद्यानें मुनि देखीआ, उलखी प्रणमत रे लो ॥ अहो उ० ॥ राज्यसजामां आवीउ, प्रणमे नृकत रे लो ॥ अहो प्र० ॥ ३ ॥ राय कहे किम आवहु, कार्य तेह दाखो रे लो ॥ अहो का० ॥ राज काज सवि वारता, होय ते तुमें आखो रे लो ॥ अहो हो० ॥ ४ ॥ तेणे पण वात कहेतां थकां, कह्युं एम प्रसगें रे लो ॥ अहो क० ॥ गजमरगी गइ भीमनें, मुनि महिमा रंगें रे लो ॥ अहो मु० ॥ ५ ॥ ते तुम जाग्यें तुम तणा, उद्यानमां आव्या रे लो ॥ अहो उ० मेंप्रणम्या महानाग्यथी, मुज मनमां जाव्या रे लो ॥ अहो मु० ॥ ६ ॥ विस्मय लही नृप हरखीउ, राज्य उत्तर देइ रे लो ॥ अहो रा० ॥ विसरज्यो ते दूतनें, सत्कार करेइ रे लो ॥ अहो स० ॥ ७ ॥ मुनि महिमा ते नयरमां, उद्घोषणा करता रेलो ॥ अहो उ० ॥ ते उद्घोषण सांजली, चित्तमां सहु धरता रे लो ॥ अहो चि० ॥ ८ ॥ मुनि फरसित रज जई करी, करे तिलक ते जाले रे लो ॥ अहो क० ॥ राय रांक सहु सारिखा, आप आप संजाले रे लो ॥ अहो आ० ॥ ए ॥ मरगी गई सवि नयरथी, हूउं जयजय

॥ ढाल पांचमी ॥ वालम वहेला आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मरुचि श्रावक इम कहे, सुणो मंत्री तुमें वाणि रे ॥ कल्पतरु सम एह महामुनि, महिमावंत गुण खाणि रे ॥ धर्मरुचि० ॥ १ ॥ सुगुण आकर्पित सुरवरा, करे नित्य जस सेव रे ॥ पूजा निंदा करे एहनी, तेहनें फल ततखेव रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तूसे रूसे नहीं ए कदा, इम सुणी तस वाणी रे ॥ बहु पश्चात्ताप नय विह्वलो, प्रिया होय तिम जाणी रे ॥ ध० ॥३॥ सचिव कहे विस्मित इणी परें, हाहा मुनि अपराध रे ॥ कीधलो एह अजाणतें, फल तास अगाध रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ में तथा होय नारी मली, कस्यो अतिय आक्रोश रे ॥ एहनां फल कहो श्यां थशे, इम मंत्री करे शोष रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ यत ॥ साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूताहि साधव ॥ कालेन फलते तीर्थं, सद्य साधुसमागम ॥ १ ॥ ढाल ॥ जैन मुनिनो अमें नवि लहु, वगर अभ्यास आचार रे ॥ बीक लागे एह मुनि थकी, देशे शाप ए वार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ धर्मरुचि कहे एह मुनिवरु, दयावंत शिरदार रे ॥ शाप नवि कोयनें ए दीये, पाले शुद्ध आचार रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ हेलना पण अणगारनी, उनयलोक दुखदाय रे ॥ जइ खमावो तिणे ए मुनि, पापशांति ते थाय रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ मंत्री कहे एह करशुं सवे, पण एक कहो वात रे ॥ पायस प्रमुख सहु आपतां, नवि लीधु किण नांत रे ॥ ध० ॥ ए ॥ श्रावक कहे हु जोई कहु, जब जूवे तिण ठाण रे ॥ खीर बिंडयें बहु कीटिका, पर्गे होय तस हाण रे ॥ ध० ॥ १०॥मंत्रीने तेह देखावतो, दया नवि रहे एण रे ॥ अगनि विराधना कूरथी, इत्यादिक कहणेण रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ आतपें दधि वली मूकीनें, मूकी अलतानु पोतुं रे ॥ उज्ज्वल सूक्ष्म जीवनें, मंत्रीनें कहे जो तु रे ॥ ध० ॥ ॥ १२ ॥ नविअ लीधुं इण कारणें, हवे मोदक वात रे ॥ नवि श्रद्धा तेह जाणु नहीं, मुनि कहेशे साक्षात रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ एहवु सांजली देखीनें, मंत्री विस्मय पामे रे ॥ सूक्ष्म धर्म अहो जैननो, नवि दीठो कोइ ठामे रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ दान बहु पात्रमा में दीयां, जाण्यो शास्त्र अनेक रे ॥ निरीहता एहवी जिहां होये, तेहवु ठाण न एक रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ श्रावक कहे मुनि वंदवा, जइयें आपण जाय रे ॥ जनम कृतारथ कीजीयें, वली नव दुख जाय रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ मंत्री कहे हु अपराधीयो, मुख

॥ अहो बा० ॥ नवि उलख्या तिणे मूरखें, कीधुं ए अपमान रे लो ॥ अहो की० ॥२३॥ तुम अपराध कर्यो घणो, खमो कृपा निधान रे लो ॥ अहो ख० ॥ मोहोटा रोष राखे नहीं, एतो बहु अज्ञान रे लो ॥ अहो ए० ॥ ॥ २४ ॥ तुम शरणें आव्या जणी, अनुकंपा कीजें रे लो ॥ अहो अ० ॥ बालना कर साजा करो, सेवक गणी लीजें रे लो ॥ अहो से० ॥ २५ ॥ तुमविण कोइ दूजो नही, जेहनें जइ कहीयें रे लो ॥ अहो जे० ॥ मुनि कहे रोष न मादरे, त्रण कालें कइयें रे लो ॥ अहो त्र० ॥ २६ ॥ पण ए शासन देवता, एहनें शिक्षा दीधी रे लो ॥ अहो ए० ॥ आकाशें परगट थइ, तव वाणी कीधी रे लो ॥ अहो त० ॥ २७ ॥ पापीनें साजो नवि करु, पूज्यनें दुःख दीधुं रे लो ॥ अहो पू० ॥ पूजा प्रमुखे सतुष्टथी, फरी वचन ते कीधुं रे लो ॥ अहो फ० ॥२८॥ मुनि पासें दीक्षा लीये, तो साजो करीयें रे लो ॥ अहो तो० ॥ ते पण तेणें अंगीकर्युं, देवी वयण आदरीयें रे लो ॥ अहो दे० ॥ २९ ॥ देवीयें शक्ति अचिंत्यथी, कर नूतन कीधा रे लो ॥ अहो क० ॥ तव हरखित थया सहु तिहा, मनोवंछित सीधा रे लो ॥ अहो म० ॥ ॥ ३० ॥ मुनि शिर उपर फूलनी, थइ वृष्टि अत्यंत रे लो ॥ अहो थ० ॥ पश्चातापें खमावीया, मुनिवर माहंत रे लो ॥ अहो मु० ॥ ३१ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, कही चोथी ढाल रे लो ॥ अहो क० ॥ पद्म कहे मुनि प्रणमतां, होये मंगल माल रे लो ॥ अहो हो० ॥ ३२ ॥ सर्वगाथा ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दिये मुनिवर तव देशना, समज्यो चतुर सुजाण ॥ मावित्र आपे अनुमति, दीक्षानुं करे वाण ॥ १ ॥ थिविर कल्पमां थापीआ, शिक्षा ग्रहण संकेत ॥ मुनि प्रणमी मावित्र मुख, चमत्कार चित्त चेत ॥ २ ॥नृप प्रमुख बहु नाविआ, जैनधर्म जगसार ॥ पाम्या तेह प्रशंसता, गया ते निज आगार ॥ ३ ॥ पारणुं करीनें पांगर्या, मास खमण मुनिराय ॥ आव्या विचरता अहीं, निर्ममनें निरमाय ॥ ४ ॥ उद्यानें अवनी तलें, ध्यान निश्चल मुनि ध्याय ॥ अवधिज्ञान वली ऊपनो, शुद्धयोग समुदाय ॥ ५ ॥ ते मुनि आव्या तुज घरें, शुद्ध गवेषे साध ॥ मासांतर करे मास तिम, निर्लेपी निरबाध ॥ ६ ॥

॥ ढाल ढही ॥ मादारु मन मोह्यु रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥
॥ अमिय समाणी रे वाणी मुनि कहे रे, सुण मत्रीसर वाण ॥ आ
क्रोश क्रोध कस्यो तुमें इणि परें रे, नयन मरूप अजाण ॥ अ० ॥१॥ सम
ता नावें रे में खमीउ सवे रे, हवे श्रावक परधान॥ विहु मली पूछे रे स्वा
मी नांखीयें रे, मोदक केरु निदान ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनि कहे रात्रें दासी
यें रांधतां रे, चूला ऊपर रह्यो नाग॥ धूमें आकुल व्याकुल ते थयो रे,
नाखि गरल अताग ॥ अ० ॥ ३ ॥ तिहां चदरुआ रे केरे अनावथी रे,
विषमयी मोदक थाय ॥ घरनां लोके कांय जाण्यु नहीं रे, जेर तणो समु
दाय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सयम घात कारण नवि में लीआ रे, मत्रीयें सान
ली तेह ॥ दासी पास मगाव्या लाडुआ रे, परीक्षा कारण एह ॥ अ०
॥ ५ ॥ मांखी मरती देखी जाणीयुं रे, मुनिनु साचु रे ज्ञान ॥ अहो अ
हो ज्ञान मुनि तुम केरडुं रे, अमचु बहु रे अज्ञान ॥ अ० ॥ ६ ॥ एह
मोदकथी कुटुंब सहित अमें रे, मरण लहत ततखेव॥ हुं उरणिउं किम था
उं कहो रे, लो करु अहोनिश सेव ॥ अ० ॥ ७ ॥ मित्र वचनथी सहु
लारु तिहां रे, परठवीया ते एकांत ॥ प्राणदायक नें शरण मुनिवरू रे, मु
निवरनें कहे खांत ॥ अ० ॥ ८ ॥ ए उपगार कस्यो तुमें मोदको रे, हवे
दाखो उपदेश ॥ मुनि नांखे सुण धर्म ते जैननो रे, सर्व अधर्म ले शेष
॥ अ० ॥ ए ॥ देव गुरु वली धर्मनें उलखी रे, श्रद्धा ते प्रतीत॥ श्रद्धा सहि
त विरति दोय नेदथी रे, सर्व देशें धरो चित्त ॥ अ० ॥ १० ॥ क्षांत्यादि
क दशधा मुनिराजनो रे, द्वादशधा गृहिधर्म ॥ थूल प्राणातिपात प्रमुख
कह्यो रे, इत्यादिक सवि मर्म ॥ अ० ॥ ११ ॥ सांजली प्रतिबूज्यो ति
हां मत्रवी रे, तिम तेहनी दोय नारि ॥ सर्वविरति स्वामी न करी शकु
रे, देशथी द्यो अणगार ॥ अ० ॥ १२ ॥ मुनि पण द्वादश व्रत उच्चरावी
यां रे, शीखवे आवश्यक सार ॥ दानादिक गुण तिम उपदेशिया रे, पाम्या
श्राद्ध आचार ॥ अ० ॥ १३ ॥ मुनि वदन करी सहुये घरें गया रे, मुनि
आशातना जेह ॥ निंदा गर्हा आलोचना मुखें रे, कर्म खपावे बहु तेह
॥ अ० ॥ १४ ॥ तो पण कांयक शेष रह्यु खरु रे, नोगवशे एक वार॥ धर्म
रुचि प्रमुखा सहु मुनि नमी रे, पोहोता निज घर वार ॥अ०॥ १५ ॥ मा
सखमण मुनिनें पूरुं थतां रे, मत्री करे नित्य सेव ॥ श्रावक सगथी पूरण

केम देखाय रे ॥ श्रावक कहे मुनि दरिशणें, कीती लाज कराय रे ॥ ध० ॥ ॥ १७ ॥ दोष तो एह देखे नही, इम कही सहु जाय रे ॥ मुनिवर प्रणमी या जक्तिथी, चित्त हरख न माय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ देइ धर्मलाज संतोषी या, मंत्री कहे कर जोडी रे ॥ स्वामी अपराध में बहु कस्यो, खमो एह मुज कोडी रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोटि नर जस्म क्षणमां करे, तप तेजें मुनि राय रे ॥ गुणनिधि करो कृपा अम जणी, अमें रज तुम पाय रे ॥ ध० ॥ ॥ २० ॥ दोय नार्या पण मुनि नमी, पश्चात्ताप करंती रे ॥ मुनि खमावे निज निवती, घणी जक्ति धरती रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ मुनि कहे कोप नहीं माहरे, तुमें नय मत आणो रे ॥ दृष्टि स्वरूप जाणो नहीं, तेह छुन्ह पि गणो रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, कही पांचमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, मुनि वात रसाल रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ १४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आखि कहो अणगारजी, मंत्री कहे इम जाम ॥ दोय जेद ठे दृष्टिना, मुनिवर इम कहे ताम ॥ १ ॥ चरमरूप थूल चक्षु जे, समजो बाह्य सुजा ण ॥ अन्यतर हवे उंलखो, ज्ञान दर्शन गुण जाण ॥ २ ॥ दोष बेंतालीश देखि यें, आहार तणो अधिकार ॥ दोय दृष्टि तेणें देख्नें, उपयोगें लव आहार ॥ ३ ॥

॥ ते बेंतालीश दोषनां नाम गाथायें करी कहे ठे —गाथा ॥ आहाकम्मु १ देसिअ, २ पूइकम्मेअ ३ मीसजाएअ ॥ ४ ॥ ठवणा ५ पाहुडिआए ६, पाउअ र ७ कीय ८ पामिच्चे ९ ॥ १ ॥ परिअट्टिए १० अनिहडु ११, निन्ने १२ मालोहडेअ १३ अछिज्जे १४ ॥ अणिसिठे १५ अज्झोयर १६, सोल स पिंमुग्गमे दोसा ॥ २ ॥ धाई १ दूई २ निमित्त ३, आजीव ४ वणिमगे ५ तिगिछाय ६ ॥ कोहे ७ माणे ८ माया ९, लोजेय १० हवंति दस एए ॥ ३ ॥ पुविं पच्छासथव ११, विद्या १२ मंतेअ १३ चुन्न १४ जोगे अ १५ ॥ उप्पायणाइ दोसा, सोलसमे मूल कम्मे अ ॥ ४ ॥ एवं बत्रीश ॥ संकिअ १ मक्खिअ २ निस्खित ३, पिहिअ ४ साहरिअ ५ दायगु ६ म्मीसे ७ ॥ अप रिणय ८ लित्त ९ छड्डिअ १०, एसण दोसा दस हवंति ॥ ५ ॥ एवं बेंहेंता लीश ॥ संजोयणा १ पमाणे २, इंगाले ३ धूम ४ कारणे ५ इति ॥ ग्रासैष णा दोषा ॥ एवं सुडतालीश दोषगाथा ॥

॥ ढाल ढठी ॥ माहारुं मन मोह्यु रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥

॥ अमिय समाणी रे वाणी मुनि कहे रे, सुण मंत्रीसर वाण ॥ आक्रोश क्रोध कस्यो तुमें इणि परें रे, नयन सरूप अजाण ॥ अ० ॥१॥ सम ता नावें रे में खमीउ सवे रे, हवे श्रावक परधान ॥ विहुं मली पूछे रे स्वामी नांखीयें रे, मोदक केरु निदान ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनि कहे रात्रें दासीयें रांधतां रे, चूला ऊपर रह्यो नाग ॥ धूमें आकुल व्याकुल ते थयो रे, नाखि गरल अताग ॥ अ० ॥ ३ ॥ तिहां चवरुआ रे केरे अनावथी रे, विषमयी मोदक थाय ॥ घरनां लोके कांय जाण्यु नहीं रे, जेर तणो समुदाय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सयम घात कारण नवि में लीआ रे, मंत्रीयें सांनली तेह ॥ दासी पास मगाव्या लामुआ रे, परीक्षा कारण एह ॥ अ० ॥ ५ ॥ मांखी मरती देखी जाणीयुं रे, मुनिनुं साचु रे ज्ञान ॥ अहो अहो ज्ञान मुनि तुम केरडुं रे, अमचु वडु रे अज्ञान ॥ अ० ॥ ६ ॥ एह मोदकथी कुटुंब सहित अमें रे, मरण लहत ततखेव ॥ हुं उरयिउं किम था शु कहो रे, जो करु अहोनिश सेव ॥ अ० ॥ ७ ॥ मित्र वचनथी सहु लारु तिहां रे, परठवीया ते एकांत ॥ प्राणदायक नें शरण मुनिवरू रे, मुनिवरनें कहे खांत ॥ अ० ॥ ८ ॥ ए उपगार कस्यो तुमें मोटको रे, हवे दाखो उपदेश ॥ मुनि नांखे सुण धर्म ते जैननो रे, सर्व अधर्म जे शेष ॥ अ० ॥ ए ॥ देव गुरु वली धर्मनें उलखो रे, श्रद्धा ते प्रतीत ॥ श्रद्धा सहित विरति दोय नेदथी रे, सर्व देशें धरो चित्त ॥ अ० ॥ १० ॥ क्षांत्यादिक दशधा मुनिराजनो रे, द्वादशधा गृहिधर्म ॥ थूल प्राणातिपात प्रमुख कह्यो रे, इत्यादिक सवि मर्म ॥ अ० ॥ ११ ॥ सांनली प्रतिबूज्यो तिहां मंत्रवी रे, तिम तेहनी दोय नारि ॥ सर्वविरति स्वामी न करी शकु रे, देशथी द्यो अणगार ॥ अ० ॥ १२ ॥ मुनि पण द्वादश व्रत उच्चरावीयां रे, शीखवे आवश्यक सार ॥ दानादिक गुण तिम उपदेशिया रे, पाम्या श्राद्ध आचार ॥ अ० ॥ १३ ॥ मुनि वंदन करी सहुये घरें गया रे, मुनि आशातना जेह ॥ निंदा गर्हा आलोचना मुखें रे, कर्म खपावे बहु तेह ॥ अ० ॥ १४ ॥ तो पण कांयक शेष रह्यु खरु रे, नोगवशे एक वार ॥ धर्मरुचि प्रमुखा सहु मुनि नमी रे, पोहोता निज घर बार ॥ अ० ॥ १५ ॥ मासखमण मुनिनें पूरुं थतां रे, मंत्री करे नित्य सेव ॥ श्रावक सगथी पूरण

श्रावक थया रे, जाण्या जीवादिक देव ॥ श्र० ॥ १६ ॥ शास्त्राभ्यास हतो पूर्वे घणो रे, वली जिनधर्म प्रसंग ॥ न खलाये मति सूक्ष्म अर्थमां रे, जिनधर्मे दृढरंग ॥ श्र० ॥ १७ ॥ न चलावे सुरपति पण धर्मथी रे, पर वादीनो करे अंत ॥ जिनशासन शोभावे बहु परें रे, कोइ न तास कलंत ॥ श्र० ॥ १८ ॥ पारण दिवस जाणी निमत्रणा रे, करे मुनिनें सुरसाल ॥ करिय कृपा मुनिवर पण आवीआ रे, नि स्पृह परम दयाल ॥ श्र० ॥ ॥ १९ ॥ मत्री दोय नारी बहु भावथी रे, आपे शुद्ध आहार ॥ परमन्नादिक तिहां परगट थया रे, पंचदिव्य मनोहार ॥ श्र० ॥ २० ॥ पाणी सुगध वर पुष्पवृष्टि थइ रे, वली होवे वसुधार ॥ डुडुनिनाद अहो दानघोषणा रे, मुनिवर करे तिहां आहार ॥ श्र० ॥ २१ ॥ दान प्रभावें त्रण्य जणें बांधीयुं रे, भोग करम अति गाढ ॥ मुनि ध्यान जड काउस्सग्ग रह्या रे, ध्यान निश्चल जिम पाढ ॥ श्र० ॥ २२ ॥ डुडुनिस्वर सुणी नृप पूछावी वीउ रे, निजनर कहे ते वृत्तांत ॥ नृप चिंते धिगधिग मुजनें इहां रे, एहवा मुनिवर माहृत ॥ श्र० ॥ २३ ॥ एहवा मुनिवर माहारा नयरमां रे, हुं नवि जाणु रे कांय ॥ प्रातसमय वडुं परिवारथी रे, इम करतां दिन जाय ॥ श्र० ॥ २४ ॥ रातें मुनिवर क्षपक श्रेणी करी रे, ध्याये शुकल ने ध्यान ॥ सर्व प्राणीहित वढक पामीआ रे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ श्र० ॥ २५ ॥ श्रीजयानंदना रासमां ए कही रे, छठी ढाल रसाल ॥ पंडित उत्तमविजय कृपा थकी रे, पद्मविजय कहे बाल ॥ श्र०॥२६॥सर्वगाथा॥१७६॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर केवल पामीया, भानु उदयें परभात॥ नाद थयो देवडुंडुनि, मनमां हरख न मात ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर आवीया, गीत वाजित्र गवाय ॥ परगट वृष्टि पुष्पनी, सुवर्ण कमल सुर ठाय ॥ २ ॥ तिहां वेग केवली तदा, देखी दिव्य उद्योत ॥ नृपति पूछे भ्रांतिथी, जूउ ए शी छे ज्योत ॥ ३ ॥ तव मत्री नर ततक्षणें,आवी कहे अवदात ॥ रायनें प्रणमी रंगशुं, वानवे सुणो ते वात ॥ ४ ॥ स्वामी सुणो ए साधुनें, उपन्नु केवल आम ॥ जइ वंदो बहु भगतिशुं, करो कृतारथ काम ॥ ५ ॥ जैनधर्म नथी जाणतो, भद्रक भावी नृप ॥ भक्ति आश्चर्य भराईउ, अवनीपति अनूप ॥ ६ ॥ सामत मत्री सामटा, परवरिउ परिवार॥ गज वेगे अति गेलशुं,वाजित्रनां बहु

कार ॥ ७ ॥ उद्यानें अवनीपति, प्रणमे मुनिना पाय ॥ सुर नर असुर स ना मली, बेग बेसण गाय ॥ ८ ॥ धर्मलाभ देइ धर्मनी, देशना दीये मु णींद ॥ आलस अग उतारीनें, सांजलजो सुखकद ॥ ए ॥

॥ ढाल सातमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ एह ससार असारमां,दोहेलो नरजव पामी रे ॥ धर्म करो जवि प्राणी आ, डुखहानी सुखकामी रे ॥ जाव धरी जवि आदरो ॥ १ ॥ ए आंक णी ॥ समकित सार ससारमां,डुर्लज पामवु प्राणी रे॥ चितामणि परें जा णियें, इष्ट दीये गुणखाणी रे ॥ जा० ॥ २ ॥ यत ॥ मूल दारं पइहाण, आहारो जायण निही॥ डुक्कयस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तत्तवि आहियं ॥ १॥ ॥ ढाल ॥ देवगुरुने रे धर्मनी, श्रद्धा कीजें सुजाण रे ॥ दोष अढार रहित सदा, आपे शिवपुर गण रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ हास्यादिक षट वेगला, क्रूय कह्या चार कषाय रे ॥ प्रेम पंचाश्रव मद नदी, केलि अढार ए थाय रे॥ ॥ जा० ॥ ४ ॥ एहवा देवनें सेवीयें, जे ससारना रोग रे ॥ तेहना वैद्य शोहामणा, गत सयोग वियोग रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रत्नत्रयीयुत गुरु कह्या, अथवा महाव्रत धार रे ॥ शय्यावस्त्रनें पात्र जे, शुद्धमान लीये आ हार रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ सम्यक धरम दायक वली, आप तरे पर तारे रे॥ पंच महाव्रत धर्म ते,हिंसा प्रमुखनें वारे रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ द्वादश व्रत गृ हिधर्म छे, थूलहिसानृत चोरी रे ॥ स्वदारा सतोषथी, नवि इछे पर गोरी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ धन परिमाण करे सदा, ए अणुव्रत कह्यां पंच रे ॥ दि शि परिमाण वली करे, जोगोपजोग प्रपंच रे ॥ जा० ॥ ए ॥ त्याग अनर्थ दम जाखीउ, गुणव्रत एह उदार रे ॥ अणुव्रतने जेह गुण करे, हवे शिक्षा व्रत धार रे ॥ जा० ॥ १० ॥ अवसरें सामायिक करे, रात्रें अने वली दीस रे ॥ सक्षेप उघा व्रतनुं, दशमु व्रत कहे ईश रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ पर्वतिथें रे पोसह करे, कोइ दिवस तथा रात्र रे ॥ कोइ अहोरात्रि आदरे, इम जाखे सिद्धांत रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ अतिथिनें दिये दान जे, शिक्षा चोथु ए धार रे ॥ बालक शीखे जिम फिरी फिरी, तिम शिक्षा व्रत सार रे ॥ जा० ॥ ॥ १३ ॥ तिम षट आवश्यक नित्य करे, दान शीयल तप जाव रे ॥ धर्म कह्यो ए श्रावक तणो, यथाशक्ति तणो दाव रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ आरा ध्यां दीये इष्टनें,परजव नृप चक्रि ऋद्धि रे ॥ स्वर्गनां सुख वली जे दीये, अ

श्रावक थया रे, जाण्या जीवादिक हेव ॥ अ० ॥ १६ ॥ शास्त्राभ्यास हतो पूर्वें घणो रे, वली जिनधर्म प्रसग ॥ न खलाये मति सूक्ष्म अर्थमां रे, जिनधर्मे दृढरंग ॥ अ० ॥ १७ ॥ न चलावे सुरपति पण धर्मथी रे, पर वादीनो करे अंत ॥ जिनशासन शोभावे बहु परे रे, कोइ न तास कलंत ॥ अ० ॥ १८ ॥ पारण दिवस जाणी निमंत्रणा रे, करे मुनिनें सुरसाल ॥ करिय कृपा मुनिवर पण आवीआ रे, नि स्पृह परम दयाल ॥ अ० ॥ ॥ १९ ॥ मंत्री दोय नारी बहु भावथी रे, आपे शुद्ध आहार ॥ परमन्नादिक तिहां परगट थयां रे, पंचदिव्य मनोहार ॥ अ० ॥ २० ॥ पाणी सुगंध वर पुष्पवृष्टि थइ रे, वली होवे वसुधार ॥ दुंदुभिनाद अहो दानघोषणा रे, मुनिवर करे तिहां आहार ॥ अ० ॥ २१ ॥ दान प्रभावें त्रण्य जणें बांधीयुं रे, भोग करम अति गाढ ॥ मुनि ठयान जइ काउस्सग्ग रह्या रे, ध्यान निश्चल जिम पाढ ॥ अ० ॥ २२ ॥ दुंदुभिस्वर सुणी नृप पूछावी वीउ रे, निजनर कहे ते वृत्तांत ॥ नृप चिंते धिगधिग मुजनें इहां रे, एहवा मुनिवर माहंत ॥ अ० ॥ २३ ॥ एहवा मुनिवर माहारा नयरमां रे, हुं नवि जाणु रे कांय ॥ प्रातसमय वडुं परिवारथी रे, इम करतां दिन जाय ॥ अ० ॥ २४ ॥ रातें मुनिवर क्षपक श्रेणी करी रे,ध्याये शुकल ने ध्यान ॥ सर्व प्राणीहित वछक पामीआ रे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ अ० ॥ २५ ॥ श्रीजयानंदना रासमां ए कही रे, छठी ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजय कृपा थकी रे,पद्मविजय कहे बाल ॥ अ०॥२६॥सर्वगाथा॥१७६॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर केवल पामीया, भानु उदयें परभात॥ नाद थयो देवदुंदुभि, मनमां हरख न मात ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर आवीया, गीत वाजित्र गवाय ॥ परगट वृष्टि पुष्पनी, सुवर्ण कमल सुर ठाय ॥ २ ॥ तिहां वेग केवली तदा, देखी दिव्य उद्योत ॥ नृपति पूछे ज्योतिषी, जूउ ए शी छे ज्योत ॥ ३ ॥ तव मंत्री नर तत्क्षणें,आवी कहे अवदात ॥ रायनें प्रणमी रंगशुं, वानवे सुणो ते वात ॥ ४ ॥ स्वामी सुणो ए साधुनें, उपन्नुं केवल आम ॥ जइ वंदो बहु भगतिशुं, करो कृतारथ काम ॥ ५ ॥ जैनधर्म नथी जाणतो, भद्रक भावी नृप ॥ भक्ति आश्चर्य भराईउ, अवनीपति अनूप ॥ ६ ॥ सामंत मंत्री सामटा, परवरिउ परिवार॥ गज वेगे अति गेलशुं,वाजिंत्रनां बहु

घटे कांय ॥ ल० ॥ जीव होय तो सवि घटे, परलोकें कुण जाय ॥ल०॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ जेटलुं नयणें निरखीयें, इंद्रिय गोचर एह ॥ ल० ॥ लोक एटलो जाणीयें, वृकपदनी परें तेह ॥ ल० ॥ अ० ॥ ८ ॥ खाउ पीउ सुखथी रमो, समुदाय मात्र ए देह ॥ ल० ॥ काल गयो आवे नही, इम निजनारी कहेह ॥ ल० ॥ अ० ॥ ए ॥ यत ॥ पिब खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ॥ नहि भीरु गतं निवर्त्तते, समुदयमात्रमिद कलेवरम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ आलोक सुख छांमी करी, परभव सुखनी आश ॥ल०॥ तप करी बे भव हारता, जबू करे तस पास ॥ ल० ॥ अ० ॥ १० ॥मांस पेशी तटें छमीनें, मीन लेवा जिम जाय ॥ ल० ॥ गृध्र मांस लेई गयो, जलमां मीन रूवाय ॥ ल० ॥ अ० ॥ ११ ॥ उभयभ्रष्ट जबुक थयो, तिम इहां छांमी भोग ॥ ल० ॥ परभव आशायें दोडता, उभयभ्रष्ट होये लोग ॥ ल० ॥ अ० ॥ १२ ॥ कष्ट करे इह लोकमां, परभव आशा चित्त ॥ ॥ ल० ॥ जीव विना परभव नहीं, एतो मोहोटी अनीति ॥ ल० ॥ अ० ॥ ॥ १३ ॥ कर्णसूचि सम सांभली, पुरोहित वचन भूपाल ॥ ल० ॥ गोपवे रोष गभीर ते, मत्री मुखडुं भालि ॥ ल० ॥ अ० ॥ १४ ॥ विद्यावत मत्री कहे अनुभव सिद्ध ए जीव ॥ ल० ॥ रे मूरख देखे नहीं, उलवे केम अतीव ॥ ल० ॥ अ० ॥ १५ ॥पुत्रनो जन्म सुणी करी, दुखिउ पण लहे सुख ॥ ल० ॥ तास मरण वली सांभली, सुखमा किम लहे दुःख ॥ ल० ॥ ॥ अ० ॥ १६ ॥ मातु कृश भुज अग ए, ए स्वामी मति केम ॥ ल० ॥ भूप पृथिवी परें भिन्न ए, जीव शरीर ए नेम ॥ ल० ॥ अ० ॥ १७ ॥ जीव वह्यो ए शाश्वतो, तिणें परभव पण जाय ॥ ल० ॥ पुण्य पाप पण सहु वस्यां, सुख दुःख फल पण पाय ॥ ल० ॥ अ० ॥ १८ ॥ दानथी देवलोक पामीयें, तपथी थाये सिद्ध ॥ ल० ॥ हिंसा प्रमुखें जाये नरकमां, ए शास्त्रें परसिद्ध ॥ ल० ॥ अ० ॥ १ए ॥ हेतुगर्भित युगतें करी,हत प्रतिहत कह्यो तास ॥ ल० ॥ लोकसभामें निभ्रछीउ, ताहरो स्यो विशवास ॥ ल०॥अ०॥ ॥ २० ॥ नरपतियें अपमानीउ, लाज्यो तेह अत्यंत ॥ ल०॥ राजसभामां आवे नहीं, ते दिनथी धरी भ्रांत ॥ ल० ॥ अ० ॥ २१ ॥ मत्रीनें सतकारता, लोक तथा नरराय ॥ ल० ॥ स्तवना करता सहु गयां,हरखी निज निज ठाय ॥ ल० ॥ अ० ॥२२॥ श्रीजयानंदना रासमां, भाखी आठमी ढाल ॥

नुक्रमें लहे तेह सिद्धि रे ॥जा०॥१ ५॥ उत्कृष्टा तेहिज नवें,साधु मोक्ष ते पाम रे ॥ बारमु स्वर्ग गृहस्थनु, उत्कृष्टु लहे ठाम रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ बिहुनें स्वर्ग जघन्यथी, पहेलु देवलोक जाणो रे ॥ एहमां एक श्रंगीकरो, निज निज शक्ति प्रमाणो रे ॥ जा०॥१७ ॥ एहवी देशना सांनली, श्राव क व्रत धरे राय रे ॥ केइक चारित्र श्रादरे, नव उद्वेग निर्माय रे ॥जा०॥ ॥ १८ ॥ देशविरति केइ श्रादरे, केइक समकेत खास रे ॥ राय प्रमुख मु नि प्रणमीने, श्रावे निज श्रावास रे ॥ जा० ॥ १९ ॥ बहु परिवार ज्ञानी गुरु, उपगारी करे विहार रे ॥ नवि रहे एकण थानके, रवि परें करे उप गार रे ॥ जा० ॥ २० ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी सातमी ढाल रे॥ प मविजय कहे सांनलो, श्रागल वात रसाल रे॥ जा०॥ २१ ॥सर्वगाथा॥२०६॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरोहित महापापीउं, कोरो कर्म कठोर ॥ उंषध नाहीं असाध्यनें, जो होय वैद्यनु जोर ॥ १ ॥ नास्तिकता ठांमी नहीं, मंत्री हवे महाजाण ॥ स्वपर समय समजावतो, नरपतिनें निरवाण ॥ २ ॥ नरपति मंत्री सानि ध्यें, धर्में दृढता धार ॥ सामंत मंत्री प्रमुख सना, पृथिवीपति पुर प्यार॥ ॥ ३ ॥ मणिसिंहासन ऊलपतो,विशद छत्रवर धार ॥ चचल शोनित चाम रें, बेठा सहु दरबार ॥ ४ ॥

॥ ढाल श्राठमी ॥ ललनांनी देशी ॥

॥ वात प्रसगें वर्णवे, साधुना गुण नरराय ॥ ललनां ॥ श्रावक गुण सो हामणा,हियडे हरख न माय ॥ ल० ॥ १ ॥ श्रहो जिनशासन जग ज यो ॥ ए आंकणी ॥ धन्य मुनीश्वर-जैनना, जे निरमम निरमाय ॥ ल० ॥ साधे जे परलोकनें, निरवांछक मुनिराय ॥ ल० ॥ श्र० ॥ २ ॥ इत्यादिक नृप वचन ते, वृश्चिक मक समान ॥ ल० ॥ लाग्युं पुरोहितनें तदा, श्र वसरें बोल्यो श्रज्ञान ॥ ल० ॥ श्र० ॥ ३ ॥ इंद्रजालीश्रानी परें, वचे लो क श्रपार ॥ ल० ॥ वीहिक दाखे परलोकनी, जैनना जे श्रणगार ॥ ल०॥ ॥ श्र० ॥ ४ ॥ लोक नोलो कुशास्त्रथी, नोग तजावे श्राप ॥ ल० ॥ विवि ध तपस्या करावता, म करो कोइ पाप ॥ ल० ॥ श्र० ॥५ ॥ पूजा माननें इ छता,खोटु धरे अनिमान ॥ ल० ॥ पुण्यनें पाप देखावता, फल शुन अशु न श्रमान ॥ ल० ॥ श्र० ॥ ६ ॥ पण जगमां जीवज नथी, तिणे ए न

मंत्रिने रे, करुं अनरथनो विचार॥ लखमी प्राण जातां जगें रे उद्यम सुख दाता र॥सु०॥ १२ ॥ यत ॥ उपायात्तीर्यते वार्द्धि, वेध्येते च हरिद्विपौ॥ उपायाज्जि रिपु लभ्य, किमुपायान्न सिद्ध्यति॥१॥ ढाल॥ खोले ढल हवें मत्रीनां रे, पण चिते वली एम ॥ जैनधर्मी नर रायनें रे, हु नास्तिक करु केम ॥ सु० ॥ ॥ १३ ॥ जैनगुरु पासें जइ रे, शीख्यो किरिया कलाप ॥ कपटी श्राव क थइ हवे रे नृपशु करे आलाप ॥ सु० ॥ १४ ॥ मत्रीनी परें कपट थी रे, दाखवे शुद्ध आचार ॥ धर्मे कपटें नृपनें ठग्यो रे, जिम ते अजय कुमार ॥ सु० ॥ १५ ॥ मत्री माया जाणतो रे, उवेख्यो नरराय ॥ रा ज मानीतो जाणीनें रे, न चले कोइ उपाय ॥ सु० ॥ १६ ॥ धर्मशास्त्र नित्य उपदेशे रे, विचें विचें कामनी वात ॥ पुरोहित रायनें रीजवे रे, क पटथकी साक्षात ॥ सु० ॥ १७ ॥ धर्म राग अति दोहिलो रे, तुरत पा पनो राग ॥ रंग गलीनो जिम होये रे, नही तिम मजीठनो लाग ॥ सु० ॥ ॥ १८ ॥ कामरागें रंगाइउ रे, धर्मराग हुइ हाणि ॥ मजिठ काजल सगें यथा रें, ललण अगर परें जाण ॥ सु० ॥ १९ ॥ एकदिन मत्री घरें गयो रे, कोइ कारय वसुसार ॥ आसन दान बोलाववु रें, बहु आदर सतका र ॥ सु० ॥ २० ॥ घर आव्या मिथ्यात्वीने रे, करवो पडे सतकार ॥ शुं कहीयें नृपमान्यनु रे, एतो उचित प्रकार ॥ सु० ॥ २१ ॥ यदुक्तं ॥ गेहागयाण उचियं, विसणावडि आण तह समुद्धरण ॥ दुहिया ण दया एसो, सवेसि सम्मउ धम्मो ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीजयानं दना रासमां रे, भांखी नवमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे सांजलो रे, श्रोता वात रसाल ॥ सु० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ आरु अवलुं अवलोकतां, निरखी मत्री नार ॥ रति प्रीति रूपें करी, सुगुण स्त्री शिरदार ॥ १ ॥ मंत्रीनें धन्य मानतो, रमणी देखी रूप ॥ जो ग योग एहनें नला, एहनें अति अनुरूप ॥ २ ॥ मुज चिंता अथवा मि टी, कार्य प्रत्युत्तर कीध ॥ आव्यो घरे उतावलो, समजे कारय सिद्ध ॥३ ॥ लगन वर्जे नृपालनें, कहे अनागत कांय ॥ राजानें इम रीजवी, नित्य वेसे नृप पाय ॥ ४ ॥ विश्वासी वसुसारनें, पूछे प्रश्न उदार ॥ ठहु मुज राज्यें अछे, सपूरण किमु सार ॥ ५ ॥

॥ज०॥ पद्मविजय कहे नविजना, धर्मे थाउ उजमाल॥ज०॥अ०॥१३॥१४३॥

॥ दोहा ॥

॥ सना विसर्जि शुन परें, स्नान नोजन सनाल ॥ नोजन करी बहुनाति नां, साधे सर्व स्वकाल ॥ १ ॥ नित्य मन्त्रीनें नरपति, चितवे धर्म विचार ॥ सखरो शासन रागीयो, परधानें कह्यो प्यार ॥ २ ॥ काल गयो इम केटलो, नरपतिनें एक दिन्न ॥ मारी वेदन मस्तकें, अतिशय ते उप्पन्न ॥ ३ ॥ औषध प्रमुख उपाय ते, वैद्यें नव नव कीध ॥ पण उपशम पामी नही, पाम्यो बहु प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ पुरोहित तव पाधरो, सांनरीयो ससनेह ॥ एह उपाय जाणे अवल, मन्त्र विद्यानो मेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ इम्र आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरोहितनें तेडावीउ रे, नरपति आदर आण ॥ मन्त्रादिक उपचार थी रे, वेदनानी करी हाण ॥ सुगुणि नर, कर्मना विचित्र प्रकार ॥ १ ॥ गुण जाणे परनो कह्यो रे, मोहोटा पुरुष जे होय ॥ आवे नित्य कचेरी यें रे, तेहनें वारे न कोय ॥ सु० ॥ २ ॥ जन पण आदर बहु करे रे, परजा राज प्रमाण ॥ धर्म मिश्रित नीति कामना रे, शास्त्र सुणावे जाण ॥ ॥ सु० ॥ ३ ॥ राजानुं चित्त रीजवे रे, थयो विश्वासी तेह ॥ ते देखी मन्त्री कहे रे, शी संगति करो एह ॥ सु० ॥ ४ ॥ स्वामी चपल ए नास्तिको रे, नृप सुणी रह्यो मौन ॥ क्रोधें डुर्बुद्धि धमधम्यो रे, डुष्ट ए सरिखो कोण ॥ सु० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण कुल हु उपनो रे, मुजनें कहे चपल ॥ राजमान मद बहु करे रे, एह मन्त्री वाचाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ हाहा परानव बहु कह्यो रे, मुजने सना समक्ष ॥ पूरवलो जीवाडीउं रे, इणें परानव प्रत्यक्ष ॥ सु० ॥ ७ ॥ जो अपमान ए सही रहु रे, तो मुज अधमता थाय ॥ मारवीने परानव थकी रे, प्राण समूला जाय ॥ सु० ॥ ८ ॥ यत ॥ वरं प्राणपरित्यागो, न मानपरिखंमन॥ प्राणनाशात् क्षण डुखं, मानजगाहिने दिने ॥ १ ॥ ढाल ॥ हीणु करे रूसे नहीं रे, तूसे न कीधे नथ्य ॥ ते नर कोइ लेखे नहीं रे, गणतीमां सब्बा पसथ्य ॥ सु० ॥ ए ॥ पंकते मरहे पगथकी रे, पण नवि अगनिने कोय ॥ तेज देखाडुं एहनें रे, ते जस्वी नमे सहु कोय ॥ सु० ॥ १० ॥ पराक्रमी मानु करे रे, तो पण चाहे तास॥ घरवाले पण अनलनें रे, ग्रहण करे नित्य खास ॥सु०॥११॥कोइ उपायें

ही सकीयें ते कहो रें ॥ लाज न आवे तास रें ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ स्वामि थ की उंबु करे रे, वेष दान ने गेह ॥ जोग अधिक सेवक थ रे रें, क्षण क्षण साले तेह रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ ए नवि समज्यो जो कदा रे, स्वामी नक्ति नहीं न्याय ॥ तो तस कामिनी अपहरी रे, शिक्षा देवी थाय रें ॥ प्रा० ॥ ॥ १८ ॥ राय वचन सुणी विप्रनां रे,जाग्यो अतर काम ॥ पण चिंते पर नारीनुं रे, मुज पच्चरकाण उद्दाम रे ॥ प्रा० ॥ १ए ॥ तेतो नवि लोपु क दा रे, वाले उत्तर तास ॥ अवसरें सवि वनी आवशे रे, विसरज्यो सुविला स रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ श्रीजयानंदना रासमा रे, दशमी ढाल रसाल ॥ प द्म कहे श्रोता सुणो रे, धन धन ए नूपाल रे ॥ प्रा० ॥ २१॥सर्वगाथा॥२८६॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी अनुमति पामीनें, चैत्य करे चित्त लाय ॥ मत्रीश्वर मन नाव तुं, प्रतिमा पण प्रतिष्ठाय ॥ १ ॥ सामी वत्सल करे सामटु, निमंत्र्यो नर राय ॥ तस पत्नी जोवा तणी, उत्कंठा पण आय ॥ २ ॥ इष्ट वैद्य उपदे शिउं, जाणी चतुर सुजाण ॥ अवनीपति आव्यो तुरत, मत्रीघर मंमाण ॥ ३ ॥ नोजन सामग्री सरस, प्रिया सहित परधान ॥ आरनी आचमनथी, सद्य करे तिम स्नान ॥ ४ ॥ आसन कनकनां आपीआं, मणिना थाल महं त ॥ रतन कचोलां रगशुं, आणीने अरपंत ॥ ५ ॥ विश्वासें विनता विहु, पीरसवा आवे पाण ॥ खाद्य नोज्य व्यंजन सखर, वली घृत अधिक वखा ण ॥६॥ विजे मत्री वायरो, आदर करी अपार ॥ नक्ति नावथी नलि परें, संतोषे शिरदार ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ देखी कामिनी दोय के कामें व्यापीउ रेके० ॥ ए देशी॥

॥ देखी कामिनी दोय के कामें वश थयो रेके ॥ का० ॥ पुरोहित उ पर वचन, विश्वास ते आवियो रे ॥ वि० ॥ तोपण गोपवी निज, आकार नोजन करें रे ॥ आ० ॥ तद्गत चित्त नोजन रस, मनमां नवि धरे रे के ॥ म० ॥ १ ॥ तांबूल वस्त्रानरण, प्रमुखें सतकारिया रे ॥ प्र० ॥ आव्या निजघर राय के, चित्त विकारिया रे के ॥ चि० ॥ एकातें एक दिन्न के, वसु सारनें कहे रे के ॥ व० ॥ ताहरी वात साची कहो, कोण न सद्दहे रे के ॥ को० ॥ २ ॥ विप्र कहे कोण सेवक, स्वामीने ठगे रे के ॥ स्वा० ॥ ला वी मूको अतेउर, जिम कोइ नवि चगे रे के ॥ जि० ॥ राय कहे किम क

॥ ढाल दशमी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरोहित कहे तुम राज्यमां रे, गज रथ तुरग अपार ॥ कामज अधिक वखाणीयें रे, पुरुषारथमां सार रे ॥ प्राणी, जूउं जूउं कपट विचार ॥ डुर्गतिनुं ए द्वार रे ॥ प्रा० ॥ तिहां नही कोइ आधार रे ॥ प्रा० ॥ जू० ॥ ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ धर्म अरथ जे साधीयें रे, ते एक कामनें काज ॥ काम साधन नार्या कही रे, ते नहि तुमचे राज रे ॥प्रा०॥ २ ॥ नारी विना निष्फल सवे रे, राज ऋद्धि परिवार ॥ विस्मय लही नृप बोलीउं रे, किम कहे जूठ ए वार रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ रूपवतीने गुणवती रे, माहारे छे बहु नारि ॥ विप्र कहे तुज सारिखी रे, एहमां न हीं कोइ सार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ४ ॥ नाममात्रथी शुं होये रे, कोड्व पण कहे आहार ॥ वाकलां पण वस्त्र थानके रे, काचादिक अलंकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ पण घेवर सुरड्ष्यनें रे, स्वर्ण माणिकनें तोल ॥ नवि आवे तिम तुज प्रिया रे, नवि आवे कांय मोल रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ राय कहे मुज नारिथी रे, अधिकी कोण सरूप ॥ दीठीनें वली सांजली रे, जगमां अति अद्जुत रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ विप्र कहे दीठी बिहु रे, अद्जूत रूपें निधान ॥ ते आगल तुज नारीनें रे, तृण पण नही उपमान रे ॥ प्रा० ॥ ᗜ ॥ तिणे रूपें जींती रमा रे, हरि नवि माने तास ॥ ते अरतें थई अथिरता रे, लखमी न एक निवास रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ए ॥ इम सांजली नृप बोलीयो रे, कोने छे आधीन ॥ परणिके कन्या अछे रे, जांखो विप्र प्रवीण रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ तव ब्राह्मण कहे पापीउं रे, एह्यु पूछो स्वाम ॥ अनुद्यमी असमर्थने रे, रूडुं अजाएयुं काम रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ११ ॥ मुज शक्ति किहां नवि फुरे रे, राय कहे कहो तेह ॥ इष्ट कामें उद्यम नहीं रे, तेह कहो ससनेह रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुणो स्वामीजी रे, तुज आधीन ए दोय ॥ तुज प्रधाननी वल्लजा रे, वल्लज ते घणु होय रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ तुज किंकर ए तेहमां रे, शुं पराक्रमनुं काम ॥ उद्यम करी बोलाविनें रे, मूको अतेउर धाम रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ नारी तुज अनुरूप छे रे, ए विण निष्फल सर्व ॥ हय गय राज्य तणो किस्यो रे, फोकट करवो गर्व रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ यतः ॥ स्त्रीरत्न जाति नास्थाने, स्थाने जाति च योजित ॥ ऐन्हे कठे मणिघटा, भ्राजते नतु गार्दन्ने ॥ १ ॥ ढाल ॥ शूर अधिक नवि सहि शके रे ॥ प्रिया अधिक तुज दास ॥ किम स

न सीमनें काजें, विरोध थयो अति रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ ते कारण नरवीर, राजायें निज नरें रे ॥ रा० ॥ दरवाजे लेखहारक, सुं शोधन करे रेके ॥नु०॥ हवे ब्राह्मण अपकार, करण मंत्री नणी रे ॥ क० ॥ अवसर जाणी कू ट, लेख लिखे आफणी रे ॥ ले० ॥ १४ ॥ हवे कोइ इव्य रहित द्विज, इव्यें लोनवी रे के ॥ इ० ॥ जूठी माया शीखवी, वलहीयें नोलवी रे के ॥ ह० ॥ सोनाना पल चार, दीये प्रपचथी रे ॥ दी० ॥ ते पण सुवर्ण लेख लेइ, चाल्यो सचथी रे के ॥ चा० ॥१५ ॥ गामांतर जइ आव्यो, दर वाजे ते फरी रे ॥ द० ॥ दूरदेशथी आव्यो, शरीर रजें नरी रे ॥ श०॥ रोक्यो जब दरवानें, नूपाल पुरुष मली रे ॥ नू० ॥ शोधन करतां सुवर्ण, लेख दीठो वली रे के ॥ ले० ॥ १६ ॥ पूछे तास स्वरूप के, तव बोले नहीं रे के ॥ त० ॥ सोंप्यो रायनें ताम, जइ तिणें गहगही रे ॥ ज० ॥ राय पू छे तुं कोण छे, तव ते इम कहे रे के ॥ त० ॥ निईव्य ब्राह्मण वित्त, लपा जेवा मन रहे रे ॥ छ० ॥ १७ ॥ तुम नगरें वसतां में, सांनल्युं एकदा रे के ॥ सां० ॥ समरवीर नृप गिरि,सगम नगरें सदा रे ॥ सं० ॥ विप्र अ पूर्वनें कनक, चतुष्टय पल दीये रे ॥ च० ॥ हु पण लोनें गयो तिहां, ह रख घणो हीये रे के ॥ ह० ॥ १८ ॥ दीधी आशीष पूछे तव, किहांथी आवीया रे के ॥ कि० ॥ में कह्यु रतिवर्द्धन, पुरथी तुम नावीया रे ॥पु०॥ तव तिणे स्वर्णने लेख, आप्यो हर्षे करी रे ॥ आ० ॥ मतिसुंदर मंत्रीनें, देजो इम उच्चरी रे ॥ दे० ॥ १९ ॥ मत देजो ए पत्र, कोइना हाथमां रे के ॥ को० ॥ लेख कनक लेइ आव्यो, एकाकी न साथमां रे ॥ ए० ॥ हु नवि जाणुं ए पत्र, मांहे तिणें श्यु लिख्युं रे ॥ मां० ॥ हु तो जाणु जेटलु, ते तु मनें नख्युं रे के ॥ ते० ॥ २० ॥ विप्र विसरजी लेख, वांचे हवे नूपति रे ॥ वां० ॥ पद्मविजय इग्यारमी, ढाल ए जिम हती रे के ॥ ढा० ॥ श्रीजया नंदना रासमां, एह कपट कथा रे के ॥ ए० ॥ तेह सांनलो वात, लिख्यु ते हमां यथा रे ॥ लि० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री प्रणमी प्रभु, लिखे राजाधिराज ॥ श्रीगिरिसगम नगरथी, समरवीर शिरताज ॥ १ ॥ श्रीमति रतिवर्द्धनपुरें, मतिसुंदर जस नाम ॥ महामंत्री सुज्ञ मित्रशुं, लिखु लेख अनिराम ॥ २ ॥ प्रीति सहित आलि

रीयें, अकारज एहवुं रे ॥ अ० ॥ परनारी पच्चरकाण, नंगें डुर्गतें जवुं रे ॥ नं० ॥ ३ ॥ लोकमांहे अपवाद, अजश बहु विस्त रे रे ॥ अ० ॥ ए कुल मलिनता हेतु के, वात नविस्तरे रे के ॥ वा० ॥ वली मुज मंत्रि सु श्रावक, स्वामी नक्तो घणो रे के ॥ स्वा० ॥ धर्मनुं साहाय्य देवे, उपकारी ए मुज तणो रे ॥ उप० ॥ ४ ॥ विनयनें न्यायी पराक्रमी, बुद्धियें आगलो रे के ॥ बु० ॥ निर्दोषीनें दोष, आरोपण नहि नलो रे ॥ आ० ॥ वली विश्वासनो घात ते, पाप मोहोटुं कह्यु रेके ॥ पा०॥ पापमूल परनारि, विरुद्ध ए किम ग्रहु रे ॥ वि० ॥५॥ एह सुणी डुर्बुद्धि, पुरोहित चिंतवे रे ॥ पु० ॥ अतर डुष्ट कहे हवे, नृपनें कैतवें रे के ॥ नृ० ॥ वात विचार करो पण, नीति जाणो नही रे के ॥ नी० ॥ जे जे रत्न होये निज देशमा, ते ते रहे अहीं रे के ॥ ते०॥६॥ तरु धान्यादिक सर्वना, स्वामी तुमें प्रनु रे के ॥स्वा०॥ तुज देशमा उपनी ए, नारीनो तु विनुरे के ॥ ना० ॥ ए सघली स्त्री ताहरी, परस्त्री न ताहरे रे के ॥ प० ॥ एहमां पाप होय तो, ते शिर माहरे रे के ॥ ते० ॥७॥ नारी न आपे केम जो, स्वामिनक्तो होये रे के ॥ स्वा० ॥ सुणी वली वात ए वयरी, अंतें तुं जोये रे के ॥ अ० ॥ ते तुं काले जाणीश, हमणां शुं कहु रें के ॥ ह० ॥ तेहनें स्वामी नक्तो, कहे केम सद्दहुं रे ॥ क० ॥ ८ ॥ मायावीशुं प्रीतिनुं, सरल ने नवि घटे रे के ॥ स० ॥ चिंतवे ताहरो ड्रोह के, श्रावक किण सटें रे के ॥ श्रा० ॥ साहायकारी तुज एह, विश्वास पमाडवा रे ॥ वि० ॥ एहवा डुर्जन लोक, ते निश्चय जाडवा रे के ॥ नि० ॥ ए ॥ करशो जो विश्वास तो, अतें जाणशो रे के ॥ अं० ॥ सवि देखाडशुं परगट, ताम वखाणशो रे के ॥ ता० ॥ सांनली विस्मय खेद, आनद राजा लहे रे ॥ आ० ॥ किम ए सत्य के जूठ, पुरोहित मुज कहे रे ॥ पु० ॥ १० ॥ कहे पुरोहितने करशुं, वात ए चित्त धरी रे के ॥ वा० ॥ विसरज्यो इम विप्र, चित्त सशय करी रे के ॥ चि० ॥ ते दिनथी हवे नरपति, सशय पामीयो रे के ॥ सं० ॥ बाह्य मित्राइनें तास,प्रियानो कामीयो रे ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ खल पेठो करे नाश, सज्जनताइ पणो रे ॥ स० ॥ हस चंचु करे नेद, खीर नीरज तणो रे के ॥ खी० ॥ १२ ॥ डुष्ट ते शिष्टनें कष्ट, नणी होये सदा रे ॥ न० ॥ सज्जनने डुर्जन दीये, पूरण आपदा रे के ॥ पू० ॥ हवे गिरिसगम नगरें, समरवीर नरपति रे ॥ स० ॥ एक दि

यो तिवार रे ॥ मुद्रा दीधी मंत्री गृहें, माने धन अवतार रे ॥ सना विस र्जे सवार रे, मत्री चिंते तिवार रे,नरपति अधम शिरदार रे ॥ जु० ॥ ८ ॥ नृपति नवि होये आपणा, करियें जो सहस उपगार रे ॥ सघलो ए परपंच कस्यो, हरवा माहरी नार रे ॥ नृप करतो जब आहार रे, दीगे में दृष्टि विकार रे, तेहिज कस्यो अणाचार रे ॥ जु० ॥ ए ॥ सर्पनें खल वली नृपति, अग्निनें जमराय रे ॥ याचक शस्त्रनें नामिनी, विधि नें विष वली खाय रे ॥ अपथ्य नोजन वली प्राय रे, पोताना नवि थाय रे, करियें कोडी उपाय रे ॥ जु० ॥ १० ॥ कुलवतो नीति जाणतो, जैनमां कु शल कहाय रे ॥ निर्दोषी मुज कपरें, कीधो एह अन्याय रे ॥ धिग् ए कह पैराय रे, देव गुरु माय ताय रे, धर्मनें पण न गणाय रे ॥ जु० ॥ ११ ॥ तप जप किरिया रे तिहां लगें, जिहां लगें कदर्प बाण रे ॥ नवि लागा जस अ गमां,लागे तो लीये प्राण रे ॥ माह्या होये अजाण रे,न गणे गण कुगण रे, लघुता लहे महाराण रे ॥ जु० ॥ १२ ॥ यत ॥ तीर लगो गोला लगो, ल गो मरमके घाय ॥ नैना किसीकों मत लगो, उनका नहीं उपाय ॥ १ ॥ नास्ति कामसमोव्याधि, र्नास्ति क्रोधसमोऽनल ॥ नास्ति ज्ञानसमसुख, नास्ति मोहसमोरिपु ॥ १ ॥ विष वेश्या नारी नदी, अग्नि जुआरी काल ॥ ए साते नहीं आपणा, वली विशेषें नूपाल ॥ १ ॥ मित्रवन्नुयमा ज्ञेया, आल स्य मित्रवन्निपु ॥ विषवन्नानृता विद्या, परस्त्री चामृतं विषम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ इह अहिल्याशुं लागीयो, धाता पुत्रीशुं लग्ग रे॥रावण सीतानें लेइ गयो, ते जा णे सहुजग्ग रे॥ शिर चुष्या जस कग्ग रे, नवि चाले जेह मग्ग रे, तेहने किहां थी होय सग्ग रे ॥ जु० ॥१३॥ अथवा पुरोहित दोष ए, नहीं नृपनो तिल मात रे ॥ इणें सहुयें ए कीधलु, राय प्रेस्यो इणी वात रे ॥ नास्तिक करे एह घात रे, अथवा कर्म आयात रे, कोइनो वांक न थात रे ॥ जु० ॥१४॥ किम करे कलुषित आतमा, कर्मथी अधिक न कोय रे॥ तादृशं कीधां ते आ वीयां, कर्म करे तेह होय रे ॥ स्याने मूढ तु रोय रे, पुण्य पाप साहामु जोय रे, उपशमे कर्मनें धोय रे ॥ जु० ॥ १५ ॥ नूप थयो इम वांकडो, हवे नहीं कोइ आधार रे ॥ नारीनुं शील ए खमशे, शरण ते धर्मनु सार रे ॥ शासन सुर सुखकार रे, आवशे आमां ए वार रे, नहीं कोइ धन परि वार रे ॥ जु० ॥ १६ ॥ जे दिनथी में अगीकस्यु, शासन जैननु एह रे ॥

गनें, खेम कुशल छे अत्र ॥ नित्य नित्य वांछु तुम तणा, खेम कुशलना प त्र ॥ ३ ॥ साचा अंतर मित्र गो, तुमथी अधिक न कोय ॥ लिखजो ते अ म सारिखु, जे तुम कारय होय ॥ ४ ॥ समाचार एक प्रीछजो, तुमें अमनें कह्यु जाण ॥ नृप विश्वासमां नाखीनें, पकडी लेशु अचान ॥ ५ ॥ राज्य ते तुमनें आपशु अवसर लही ततकाल ॥ तुमें सवि सामग्री सहित, आ वजो अवसर न्हाल ॥ ६ ॥ परिकर भेद करु अछु, ते सवि करजो काम ॥ सावधानर हेजो सदा, लिखजो दिवसनु नाम ॥ ७ ॥ ते दिन उपर आवशु, सर्व लेइ अनिसार ॥ राज्य अर्द्ध तुम भांखीशु, देशु ते निर्धार ॥ ८ ॥ संदे ह रहित ते जाणजो, तुमें मोटा परधान ॥ काम काज कहेवरावजो, सर्व स मय सावधान ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ लाल सुरंगा रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ पत्र वांचीनें रे नृपति, विस्मय क्रोध भराय रे ॥ दीठु सांभल्यु नहीं कदा, हा किम एहवु थाय रे ॥ मत्री श्रावक भाय रे, एतो नवि सभवाय रे, कोयनुं कपट ए प्राय रे ॥१॥ जुर्ज जुर्ज वात ए कर्मनी॥ ए आंकणी ॥ अ थवा लेवी एहनी प्रिया, इहां शी वात विचार रे ॥ लोकनें जणवीनें लीजी यें, लाधु एहनु द्वार रे॥ नूख्योने जिम आहार रे, नहीं अपवादनु गार रे, इच्छित थयु निरधार रे ॥ जु० ॥ २ ॥ इम चिंति दीये पत्रनें, मत्री हाथमां राय रे, मत्री जोइनें चिंतवे, पुरोहित कपट ए थाय रे॥ खल दीये छु खदाय रे, खल करे प्रछन्न घाय रे, काम ते मलिन कराय रे ॥ जु० ॥३॥ मत्री क हे नरराय नें, कोइ ए द्वेषीनुं काम रे ॥ क्रोध भराणो रे नृपति, बोले निष्ठुर ताम रे ॥ कपट करे रे तुं आम रे, धिगाईनु तुं धाम रे, चाले मुजथकी वाम रे ॥ जु० ॥ ४ ॥ पोतें दोष ते आचरी, नाखे परशिर ढाल रे ॥ ताहरे वि श्वासें हुं रहुं, तुं मल्यो वयरी भूपाल रे ॥ राय सभानें निहाल रे, लेख दे खावे ततकाल रे, जुर्ज ए वात निहाल रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ ते पण सहु चि त्त चिंतवे, सभवे वात न एह रे ॥ पण कांइ खबर पडे नहीं, मत्री धर्मनु गे ह रे ॥ सूल पडे नही रेह रे, गजब थयो मत्री देह रे, मौन करी रह्या तेह रे ॥ जु० ॥ ६ ॥ राजा काम क्रोधें करी, निजनर हुकम ते कीध रे ॥ बेडी घा ली मत्री प्रत्यें, बदीखाणे ते दीध रे ॥ तस भामिनी दोय लीध रे, कदर्पे छूठ गिद्ध रे, माने कारय सिद्ध रे ॥ जु० ॥ ७ ॥ मत्रीनो परिवार जे, नाठी ग

मोकली नावि ॥ १ ॥ काउस्सग्ग पारी कोमच्छ, आवी नृप आसन्न ॥ तव जोवे नरपति तुरत, तरुणी केरुं तन्न ॥ २ ॥ पद मुख मूकी पाधरु, सघ लुं तास शरीर ॥ कोढें व्यापित कामिनी, देखी थयो दिलगीर ॥ ३ ॥ पार्थि व तेहनें पूछतो, कोढ ए थयो किवार ॥ चिरकालीन अछे चतुर, वैद्य अ साध्य विचार ॥ ४ ॥ बीजीनें बोलावतो, डुर्गंध देवें कीध ॥ नाक मरडी नें नरपति, दैवें पुछज दीध ॥ ५ ॥ तेहनें पण पूछे तुरत, कहो ए गध किवार, कर्मथकी बहु कालनो, वैद्य असाध्य विचार ॥ ६ ॥ चित्रशालायें चित्तथी, महीपति मोकले ताम ॥ अहो दैव ए शुं थयुं, अबलानें किम आम ॥ ७ ॥ खेद लही क्षण चिंतवे, नोजन वेला नाम ॥ जोइ पण जा णी नही, एहवीनें वली आम ॥ ८ ॥ वस्त्राछादित वेगलुं, न लहु वात निदान ॥ पुरोहित महा पापीउ, जल्पी वात अजाण ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ वाहालो माहारो वाय छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ नृपति इणी परे चिंतवे रे, दोष देखाडी एण ॥ पाप अघोर करावी युं रे, बूटीश हवे कहो केण ॥ १ ॥ वाहालो महारो पाप निंदा करे रे ॥ ए आंकणी ॥ कष्ट दीधु ए मत्रीप्रत्यें रे, नारी तणे संकेत ॥ कीर्त्तिनें कुल जश धर्मेनें रे, मलिन कर्यां एह हेत ॥ वा० ॥ २ ॥ मत्री मल्यो वयरी प्र त्यें रे, ए कोण माने वात ॥ एह कपट पुरोहित तणुं रे,जाणे जग विख्या त ॥ वा० ॥ ३ ॥ एह अधर्मी कपटी घणो रे, मत्रीयें कर्यो तिरस्कार ॥ पापी ते कर्म करतां थकां रे, बीहे नहीं ते लगार ॥ वा० ॥ ४ ॥ प्रात स मयें निश्चय करी रे, बुद्धि तणे रे उपाय ॥ निर्दोषी करी मत्रीनें रे, थापुं पूरव गय ॥ वा० ॥ ५ ॥ एहनी प्रिया पाछी आपशुं रे, देशु डुर्जन दंम ॥ इम टलवलतां रयणी गइ रे, खेद आश्चर्य प्रचंम ॥ वा०॥६॥ प्रात समय हवे राजीउ रे, बेठो सना मजार ॥ महेता मुत्सुद्दी सहुये मल्या रे, तेडयो तिहां लेखहार ॥ वा० ॥ ७ ॥ रे तुं साचु मुज बोलजे रे, लेख दीउ] तुज केण ॥ नवि बोल्यो नय लही करी रे, मार देवराव्यो तेण ॥ वा० ॥ ८ ॥ मार खातां तेह बोलीउ रे, मारो मुधा केम मुक्क ॥ बहु इव्यें हु लोनावी उ रे, एह पुरोहित शुक्क ॥ वा० ॥ ए ॥ पुरोहित अक्षर जोइ करी रे, नि श्चय कर्यो निरधार ॥ एह अकर्म इयें करयु रे, पुरोहित डुष्ट अपार ॥ वा० ॥ ॥ १० ॥ निगड नगावी मत्री तणी रे, तास खमावे राय ॥ वस्त्रानरणें स

जो न विराध्युं होये मनें, समकेत शील ते रेह रे ॥ तो अधिष्ठायक जेह रे, आपद टालो मुज तेह रे, इम कही काउस्सग्ग करेह रे ॥ जु० ॥१७॥ ते काउस्सग्ग प्रभावथी. शासन देवता आय रे॥ ते कहे पारो काउस्सग्गनें, आपद गइ ते पलाय रे ॥ नृप सत्कार कराय रे, विहाणें तेडीनें राय रे, तव जाणशो तुमें नाय रे, जिनशासन सुपसाय रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ इम कही देवता गइ हवे, पारे काउस्सग्ग ताम रे ॥ विस्मय पामीनें मत्रवी, नारी अंतेउर गाम रे ॥ ते पण चिंतवे आम रे, नृप आतुर थयो काम रे, भांगशे शील अभिराम रे ॥ जु० ॥ १९ ॥ राजा दासीनें मोकले, मूकी कुल मरयाद रे, चाटु वयण ते बोलती, धिक्कारनो करी साद रे ॥ काढी तिहांथी अविवाद रे, पामी अति विषवाद रे, किहां लइयें फरीयाद रे ॥ जु० ॥ २० ॥ चित्रशालामां वेरीथकी, माने ते कारागार रे ॥ शीलभंग करशे हवे, विरह थयो भरतार रे ॥ दूर रह्यो परिवार रे, मरवु निश्चय निरधार रे, पालवु शील उदार रे॥ जु० ॥ २१ ॥ यत ॥ वर प्राणपरित्यागो, नतु शीलस्य खंमन ॥ प्राणत्यागे क्षण दुःख, नरक शीलखंमने॥१॥ ढाल॥ पामे पराभव कोयथी, नृपनें शरणे ते जाय रे ॥ छांमे मरयादा नरपति,तो आमो कुण थाय रे हवे एक धर्म उपाय रे, सकट विकटें सहाय रे, अवर नहीं सुखदाय रे ॥ जु० ॥२२॥ समकित शील जो मनथकी, न विराध्युं अमें रेष रे ॥ तो सही शासन देवता, टालो विघ्न विशेष रे अमचुं दुःख तुमें देख रे, दूर करो नृपद्वेष रे, रहुं छु काउस्सग्ग वेष रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ ध्यान बलें आवी देवता, बोली प्रत्यक्ष वाच रे ॥ शीलरक्षा तुमथी थशे, माने जो एह साच रे, अमचोजूठ एह नाच रे, शील राखो जिम पाच रे, ए हमां नहीं खल खांच रे ॥ जु० ॥ २४ ॥ काउस्सग्ग पारो तुमें सुखें, देवता थइ विसराल रे ॥ श्रीजयानंदना रासमां, भांखी बारमी ढाल रे ॥ पद्मविजय सुरसाल रे, शीलथी लक्ष्मी विशाल रे, शीलथी मगज माल रे, शील पालो उजमाल रे, वछित फले ततकाल रे, व्याल होये फुलमाल रे, जाये दूर जंजाल रे, हरि करि नासे विकराल रे, जल होय अग्निनी जाल रे॥जु०॥२५॥ सर्व गाथा ॥ ३४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रातें कामारत थको, अंतेउरमां आवि ॥ तेहनें दासी तेडवा, नृपें

मोकली जावि ॥ १ ॥ कावस्सग्ग पारी कोमच्छु, आवी नृप आसन्न ॥ तव जोवे नरपति तुरत, तरुणी केरुं तन्न ॥ २ ॥ पद मुख मूकी पाधरु, सघलु तास शरीर ॥ कोढें व्यापित कामिनी, देखी थयो दिलगीर ॥ ३ ॥ पार्थिव तेहनें पूछतो, कोढ ए थयो किवार ॥ चिरकालीन अछे चतुर, वैद्य असाध्य विचार ॥ ४ ॥ बीजीनें बोलावतो, डुर्गंध देवें कीध ॥ नाक मरडीनें नरपति, देवें पुछज कीध ॥ ५ ॥ तेहनें पण पूछे तुरत, कहो ए गध किवार, कर्मथकी बहु कालनो, वैद्य असाध्य विचार ॥ ६ ॥ चित्रशालायें चित्तघी, महीपति मोकले ताम ॥ अहो देव ए शुं थयुं, अबलानें किम आम ॥ ७ ॥ खेद लही क्षण चिंतवे, भोजन वेला जाम ॥ जोइ पण जाणी नही, एहवीनें वली आम ॥ ८ ॥ वस्त्राछादित वेगलु, न लखु वात निदान ॥ पुरोहित महा पापीउ, जल्पी वात अजाण ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ वाहालो माहारो वाय छे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ नृपति इणी परे चिंतवे रे, दोष देखाडी एण ॥ पाप अघोर करावीयुं रे, त्रूटीश हवे कहो केण ॥ १ ॥ वाहालो महारो पाप निंदा करे रे ॥ ए आंकणी ॥ कष्ट दीधु ए मन्त्रीप्रत्यें रे, नारी तणे सकेत ॥ कीर्त्तिनें कुल जश धर्मनें रे, मलिन कर्यां एह हेत ॥ वा० ॥ २ ॥ मन्त्री मल्यो वयरी प्रत्यें रे, ए कोण माने वात ॥ एह कपट पुरोहित तणुं रे,जाणे जग विख्यात ॥ वा० ॥ ३ ॥ एह अधर्मी कपटी घणो रे, मन्त्रीयें कर्यो तिरस्कार ॥ पापी ते कर्म करतां थकां रे, बीहे नहीं ते लगार ॥ वा० ॥ ४ ॥ प्रात समयें निश्चय करी रे, बुद्धि तणे रे उपाय ॥ निर्दोषी करी मन्त्रीनें रे, थापुं पूरव ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ एहनी प्रिया पाछी आपछु रे, देछु डुर्जन दम ॥ इम टलवलतां रयणी गइ रे, खेद आश्चर्य प्रचम ॥ वा०॥६॥ प्रात समय हवे राजीउ रे, बेठो सभा मझार ॥ महेता मुत्सुद्दी सहुये मल्या रे, तेड्यो तिहां लेखहार ॥ वा० ॥ ७ ॥ रे तुं साचु मुज बोलजे रे, लेख दीधो तुज केण ॥ नवि बोल्यो भय लही करी रे, मार देवराव्यो तेण ॥ वा० ॥ ८ ॥ मार खातां तेह बोलीउ रे, मारो मुधा केम मुक्क ॥ बहु द्रव्यें हु लोभावीउ रे, एह पुरोहित शुक्क ॥ वा० ॥ ए ॥ पुरोहित अक्षर जोइ करी रे, निश्चय कर्यो निरधार ॥ एह अकर्म इणें कर्यु रे, पुरोहित डुष्ट अपार ॥ वा० ॥ ॥ १० ॥ निगड भगावी मन्त्री तणी रे, तास खमावे राय ॥ वस्त्राभरणे स

जो न विराध्युं होये मनें, समकेत शील ते रेह रे ॥ तो अधिष्ठायक जेह रे, आपद टालो मुज तेह रे, इम कही काउस्सग्ग करेह रे ॥ जु० ॥१६॥ ते काउस्सग्ग प्रनावथी, शासन देवता आय रे ॥ ते कहे पारो काउस्सग्गनें, आपद गइ ते पलाय रे ॥ नृप सत्कार कराय रे, विद्यायें तेहनें राय रे, तव जाणशो तुमें नाय रे, जिनशासन सुपसाय रे ॥ जु० ॥ १७ ॥ इम कही देवता गइ हवे, पारे काउस्सग्ग ताम रे ॥ विस्मय पामीनें मत्रवी, नारी अतेउर गाम रे ॥ ते पण चिंतवे आम रे, नृप आतुर थयो काम रे, नांगशे शील अनिराम रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ राजा दासीनें मोकले, मूकी कुल मरयाद रे, चाटु वयण ते बोलती, धिक्कारनो करी साद रे ॥ काढी तिहांथी अविवाद रे, पामी अति विषवाद रे, किहां जइयें फरीयाद रे ॥ जु० ॥ ॥ २० ॥ चित्रशालामां वेगीथकी, माने ते कारागार रे ॥ शीलनग करशे हवे, विरह थयो नरतार रे ॥ दूर रह्यो परिवार रे, मरवुं निश्चय निरधार रे, पालवुं शील उदार रे ॥ जु० ॥ २१ ॥ यत ॥ वरं प्राणपरित्यागो, नतु शीलस्य खंमन ॥ प्राणत्यागे क्षण दुःख, नरक शीलखंमने ॥१॥ ढाल ॥ पामे परानव कोयथी, नृपनें शरणे ते जाय रे ॥ छांमे मरयादा नरपति,तो आमो कुण थाय रे हवे एक धर्म उपाय रे, संकट विकटें सहाय रे, अवर नहीं सुखदाय रे ॥ जु० ॥२२॥ समकित शील जो मनथकी, न विराध्युं अमें रेष रे ॥ तो सही शासन देवता, टालो विघ्न विशेष रे अमचुं दुःख तुमें देख रे, दूर करो नृपद्वेष रे, रहुं हुं काउस्सग्ग वेष रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ ध्यान बलें आवी देवता, बोली प्रत्यक्ष वाच रे ॥ शीलरक्षा तुमची थशे, माने जो एह साच रे, अमचोजूठें एह नाच रे, शील राखो जिम पाच रे, एहमां नहीं खल खांच रे ॥ जु० ॥ २४ ॥ काउस्सग्ग पारो तुमें सुखें, देवता थइ विसराल रे ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी बारमी ढाल रे ॥ पद्मविजय सुरसाल रे, शीलथी लक्ष्मी विशाल रे, शीलथी मंगल माल रे, शील पालो उजमाल रे, वंछित फले ततकाल रे, व्याल होये फुलमाल रे, नाये दूर जंजाल रे, हरि करि नासे विकराल रे, जल होय अग्निनी झाल रे ॥जु०॥२५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रातें कामारत थको, अतेउरमां आवि ॥ तेहनें दासी तेडवा, नृपें

दीये सुपात्रें दान ॥ ६ ॥ मंत्रीश्वरनी मानिनी, पण करे पुण्य प्रधान ॥ केइक कोडी वरस करे, धर्म ते सहु सावधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ सांजलजो हवे कर्म विपाक कहे मुनि रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन अतिबल केवली तिहां पाउ धारिया रे, वनपालक तिहां आवि वधाव्यो राय रे ॥ दान देइ तस संतोषी परिवारशुं रे, सामत मत्री शुं मुनि वदन जाय रे ॥ १ ॥ सांजलजो तमें कर्मविपाक केवली कहे रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रदक्षिणा देइ वदना करी वेगा सहु रे, धर्मलाभ देइ गुरु पण दीये उपदेश रे ॥ सुखना अरथी प्राणी ते अरिहतना रे, धर्मथी पामे सघलां सुख सुविशेष रे ॥ सां० ॥ २ ॥ जोग शरीर अनित्य वली लखमी राज्यनी रे, नित्य धर्म ते जजीयें मोक्षनें काज रे ॥ सांजली नृपादिक सवेगें वासीआ रे, पूछे मत्री निज पूरव जव साज रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ जिनपूजा महिमानें तस प्रतिबोधवा रे, केवली कहे मत्री पूरव जव वात रे ॥ इणे जरतें रत्नसचय नगरें नृप हूउ रे, नरदत्त नामें शत्रु विनाश विख्यात रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ नृप मानीतो मालीनदन नामथी रे, सुनंदा सुजगा दोय नारी तास रे ॥ मालती जाइ जुइ चपक वृक्षशुं रे, नृप दीधा आराम ते पाले खास रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ फूल गुथ्यां अणगुथ्यां नृपनें आपतो रे, देवपूजा तिम अगजोगनें काम रे ॥ मुकुट प्रमुख अलंकार तथा घर फूलनां रे, कुसुमनी शय्या करी आपे अजिराम रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ तिण उद्यानें रुषजदेवनु देहरु रे, नगर लोक तिहां पूजे करे बहु मान रे ॥ ते देखीनें चिंते माली ए मोटको रे, एहनें पूज्यां अरच्यां फल असमान रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ प्रजु आगल फल ढोतां जननें देखीनें रे, बीजोरु जावें करी ढोयुं एक रे ॥ ते दिन फूल आजरणें राजा रीजीउ रे, बहु परसाद कर्यो नृपें धरिय विवेक रे ॥ सां० ॥ ८ ॥ माली माने फलनुं फल मुज ए थयुं रे, ते दिनथी फल कुसुम पत्र सुविशेष रे ॥ पूजा करे अरिहंतनी गुण अणजाणतो रे, राज्य मानादिक अधिक अधिक फल देख रे ॥ सां० ॥ ॥ ए ॥ दोय प्रिया पण इमहिज जिनपूजा करें रे, फल दीठे कहो आलस कोण करे जीव रे ॥ नाम सुकठ चाकर एक कठिन आशय धणी रे, फूल जार ते पुरमां लावे सदैव रे ॥ सां० ॥ १० ॥ एकदिन पुष्प जार लेइ पुरमां आवतां रे, साहमो माली मलीउ ते कहे एम रे ॥ नृपपूजानो अ

त्कारियो रे, कीधें तेहनी दोय नार ॥ वा० ॥ ११ ॥ गज वेसारी दोय ना रिष्ठं रे, राजतना सयुक्त ॥ घर पोहोंचाडया आमंबरें रे, जंखाणो तेह भू त ॥ वा० ॥ १२ ॥ मंत्री तथा हवे दोय प्रिया रे, करे परस्पर वात ॥ देव ता वाणी प्रमुख सवे रे, धर्मे दृढता थात ॥ वा० ॥ १३ ॥ करि धिक्का रनें क्रोधथी रे, दंभी ते वसुसार ॥ देशथी काढे ते नृपति रे, माथे ते खे खहार ॥ वा० ॥ १४ ॥ राज्यविरोध मिटाविउं रे, मंत्री बुद्धि निधान ॥ मंत्री संगें वली वर्त्ततो रे, दंभी कुसंग निदान ॥ वा० ॥ १५ ॥ एक दि न बेसी कचेरीयें रे, मंत्रीनें कहे राय ॥ बीजी प्रिया परणे नहीं रे, ते हनुं कारण कांय ॥ वा० ॥ १६ ॥ मंत्री कहे छुतु नवि कहु रे, तुम आ गल महाराज ॥ निर्दूषण मुज भारया रे, नारी सवे शिरताज ॥ वा० ॥ ॥ १७ ॥ पण कोइ शासन देवता रे, कीधो ए प्रतिकार॥ कावस्सग्ग प्रमु ख सवे कह्युं रे, धुरथी सवि अधिकार ॥ वा० ॥ १८ ॥ राय विचारे मु ज भाग्यथी रे, अनुकंपा मुज कीध ॥ भस्म कस्यो नहीं मुझने रे, इणी परें समजण दीध ॥ वा० ॥ १९ ॥ धर्म महिमा प्रशंसतो रे, मंत्रीनें सर्व समक्ष ॥ आप अकारय नींदतो रे, नृपति थइ घणु दक्ष ॥ वा० ॥ २०॥ समकित शील महिमा हवे रे, जाणी नगरी मांहि ॥ विस्तास्यो बहु हर्ष थी रे, अरिहंत धर्म उछाहि ॥ वा० ॥ २१ ॥ बहुजनें तेह अंगीकस्यो रे, गुरु पासे एक चित्त ॥ पाप आलोइनें नृपति रे, प्रायश्चित प्रतिपन्न ॥ वा० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे, भाखी तेरमी ढाल ॥ पद्मविज य कहे धर्मथी रे, होवे मंगल माल ॥ वा० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥३८०॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति हवे नीपजावतो, राखी धर्मे रंग ॥ नगर ग्राम पुर नवनवां, चैत्य जैननां चंग ॥ १ ॥ साधर्मिक सुखीआ कस्या, देइ इष्ट वरदान ॥ कर मूकी कारय कस्यां, मुनिजननें दिये मान ॥ २ ॥ गुरुपूजा गुरु भक्ति थी, दान अनय दातार ॥ निजदेशें नीपजावतो, पुण्य तणा परकार ॥ ३ ॥ जगत पूरे इम जश थकी, काढे इणिपरें काल ॥ सघली करणी सचिव पण, साचवतो संभाल ॥ ४ ॥ प्रिया सहित परधान ते, शक्तें पु ण्य संभालि ॥ अरिहंत पूजा आदरी, त्रण्य काज ततकाल ॥ ५ ॥ दोय टकनां दिन प्रत्यें, पडिक्कमणां पच्चक्काण ॥ काउस्सग्ग पोसह वली करे,

दीये सुपात्रें दान ॥ ६ ॥ मंत्रीश्वरनी मानिनी, पण करे पुण्य प्रधान ॥ केइक कोडी वरस करे, धर्म ते सहु सावधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ सांजलजो हवे कर्म विपाक कहे मुनि रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन अतिबल केवली तिहां पाउ धारिया रे, वनपालक तिहां आवि वधाव्यो राय रे ॥ दान देइ तस संतोषी परिवारशु रे, सामंत मंत्री शु मुनि वंदन जाय रे ॥ १ ॥ सांजलजो तमें कर्मविपाक केवली कहे रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रदक्षिणा देइ वंदना करी बेठा सहु रे, धर्मलाभ देइ गुरु पण दीये उपदेश रे ॥ सुखना अरथी प्राणी ते अरिहंतना रे, धर्मथी पामे सघलां सुख सुविशेष रे ॥ सां० ॥ २ ॥ जोग शरीर अनित्य वली लखमी राज्यनी रे, नित्य धर्म ते जजीयें मोक्षनें काज रे ॥ सांजली नृपादिक संवेगें वासीआ रे, पूछे मंत्री निज पूरव जव साज रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ जिनपूजा महिमानें तस प्रतिबोधवा रे, केवली कहे मंत्री पूरव जव वात रे ॥ इणे जरतें रत्नसंचय नगरें नृप हूउ रे, नरदत्त नामें शत्रु विनाश विख्यात रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ नृप मानीतो मालीनंदन नामथी रे, सुनंदा सुजगा दोय नारी तास रे ॥ मालती जाइ जुइ चंपक वृक्षशुं रे,नृप दीधा आराम ते पाले खास रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ फूल गुंथ्यां अणगुंथ्यां नृपनें आपतो रे, देवपूजा तिम अंगजोगनें काम रे ॥ मुकुट प्रमुख अलंकार तथा घर फूलनां रे, कुसुमनी शय्या करी आपे अजिराम रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ तिण उद्यानें रुषजदेवनुं देहरुं रे, नगर लोक तिहां पूजे करे बहु मान रे ॥ ते देखीनें चिंते माली ए मोटको रे,एहनें पूज्यां अरच्यां फल असमान रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ प्रजु आगल फल ढोतां जननें देखीनें रे, बीजोरुं नावें करी ढोयु एक रे ॥ ते दिन फूल आजरणें राजा रीजीउ रे, बहु परसाद कर्यो नृपें धरिय विवेक रे॥ सां० ॥ ८ ॥ माली माने फलनुं फल मुज ए थयु रे, ते दिनथी फल कुसुम पत्र सुविशेष रे ॥ पूजा करे अरिहंतनी गुण अणजाणतो रे, राज्य मानादिक अधिक अधिक फल देख रे ॥ सां० ॥ ॥ ए ॥ दोय प्रिया पण इर्षाहज जिनपूजा करे रे, फल दीठे कहो आलस कोण करे जीव रे ॥ नाम सुकंठ चाकर एक कठिन आशय धणी रे, फूल जार ते पुरमां लावे सदैव रे ॥ सां० ॥ १० ॥ एकदिन पुष्प जार लेइ पुरमां आवतां रे, साहमो माली मलीउं ते कहे एम रे ॥नृपपूजानो अ

वसर जाय उतावलो रे,वेढीयें घाल्यो कोइये नाव्यो केम रे ॥ सां० ॥११॥ ते सांजलीनें चाकर तिहां रोष करी रे, नाखी नारनें चाल्यो बीजे देश रे ॥ तादृश सगपकी ते तापस व्रत ग्रहे रे, कष्ट करे अज्ञान तपें सुविशेष रे ॥ सां० ॥ १२ ॥ माली पण अति कोप करी उवेखीउ रे, पोतें फल लेइ जइ दीधां राय रे ॥ जेनधर्म प्रनावें तस लक्ष्मी वधी रे, कल्पलता परें इह नव पण सुख दाय रे ॥ सां० ॥ १३ ॥ तेहथी नाव अधिक नित्य नित्य पूजा करे रे, माली आयु पूरु करी थयो तु प्रधान रे ॥ पूरवनव पत्नी ते तुज पत्नी थइ रे, तापस कष्ट करीनें तप अज्ञान रे ॥ सां०॥१४॥ आयुक्षयें पुरोहित थयो वसुसार ए रे, पूरवनव अन्यासें द्वेषी तुज्ऊ रे ॥ बेडीयें घाल्यो वयणथी तें धिक्कारियो रे, तेणें तुज वेढी प्रपंचथी ए फल शुक्र रे ॥ सां० ॥ १५ ॥ कर्म करे जे वयणथी ते नर नोगवे रे, कर्म साक्षात् पणे इम जाणी नव्य रे ॥ कर्म न कीजें सांजली इम मत्री हवे रे, प्रिया सहित लहे जातिस्मरण नय रे ॥ सां० ॥ १६ ॥ केवलीनें कहे में पण दीठु ए सवे रे, पण अव्यक्तपणे पूजा फल एह रे ॥ व्यक्त पणाना फलनु तो कहेवुं किश्युं रे, स्वर्ग तथा अपवर्गनां फल दीये जेह रे ॥सां०॥ ॥१७॥मत्री नृप नवनीरु लह्या सवेगनें रे,धर्म यथाशक्ति ग्रही केवली पास रे॥ नृप मत्री मत्रीप्रिया सहु प्रणमी मुनि रे, परम सवेगें पोहोतां निज आवास रे ॥ सां० ॥ १८ ॥ श्रीजयानदना रासमां पद्मविजयें कही रे, कर्मविपाक तणी वर चौदमी ढाल रे ॥ कर्म शुनाशुन जेहनें जेहवां आचर्यां रे, तेहने तेहवां आव्यां उदय विशाल रे ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति मत्रीने घणा, कला संजुत कुमार ॥ रूप यौवन मद राग शुं, परण्या प्रेम अपार ॥ १ ॥ एकदिन नृप अमात्य दो, धर्म विचारी धीर ॥ निज निजसुत निज पदें ठवे,सुदर जास शरीर ॥२॥ नववैराग्य नावे घणु, सचित्त त्याग शुनचित्त ॥ ब्रह्मचर्य पाले वरत, नृप मत्री नवनीत॥३॥ अरिहत गुरु उपासतां, पुण्यवत परिवार ॥ एकदिन पौषध आलयें, पौषध करे अतिप्यार ॥ ४ ॥ रातें काउस्सग्गें रह्या, उठ्यो अगनि अनंत ॥ पवन प्रचंडें प्रेरिउ, हाहाकार हवत ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ तोरणथी रथ फेरीउ रे हां ॥ ए देशी ॥

॥ लागती अगनि आवी तिहां रेहां, लोक करे पोकार ॥ मेरे साहिबा, उलवे धूलि जलें करी रे हां, पण ते न शमे लगार ॥ मे० ॥ १ ॥ लोक देखे बहु वाधती रेहां, आवी पौषधागार ॥ मे० ॥ पोसहमां परिवार जे रेहां, नयथी कहे तिणवार ॥ मे० ॥ २ ॥ अग्नि चिहुं दिशि फरी वली रेहां, मंत्री सहित तुमें राय ॥ मे० ॥ नीकलो प्राण उगारवा रेहां, एहमां दव न वि थाय ॥ मे० ॥ ३ ॥ राय मंत्री तव चिंतवे रेहां, आज प्रतिज्ञा कीध ॥ मे० ॥ ते काउस्सग्ग किम भांगीयें रेहां, जे पच्चरकाण प्रसिद्ध ॥ मे० ॥ ॥ ४ ॥ जीवन मरण होये इण समे रेहां, पण नवि व्रत लोपाय ॥ मे० ॥ जीवित अधिक ए धर्म छे रेहां, पामवो दुर्लन थाय ॥ मे० ॥ ५ ॥ प्राण तो नव नव सोहिला रेहां, राखवो धर्म हढाव ॥ मे० ॥ नृप मंत्री ते बिहु जणा रेहां, नवि चूके ते दाव ॥ मे० ॥ ६ ॥ बीजा पौषधना धणी रेहां, सहु नीकलीया तेह ॥ मे० ॥ अगनि पसख्यो जन रव सुणी रेहां, निश्चित मरण करेह ॥ मे० ॥ ७ ॥ सागारी अणसण करी रेहां, तव नवि अगनि देखाय ॥ मे० ॥ कोलाहल पण को नहीं रेहां, सहु परिवार रह्या ठाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ अमनें क्षोन पमाडवा रेहां, कीधुं ए सवि काम ॥ मे० ॥ विस्मयथी इम चिंतवे रेहां, कोइक सुरवर ताम ॥ मे० ॥ ९ ॥ फूलवृष्टि बिहुं कपरें रेहां, करतो दिशि उद्योत ॥ मे० ॥ बोले तुम व्रत दृढपणुं रेहां, नवसायरें जिम पोत ॥ मे० ॥ १० ॥ सौधर्मेंडें वखाणियुं रेहां, सुरवर सना मझार ॥ मे० ॥ हुं अण मान्ये आवीउ रेहां, कीधी परीक्षा सार ॥ मे० ॥ ११ ॥ तुमें प्रतिज्ञा निर्वही रेहां, तुमनें हो परणाम ॥ मे० ॥ इम कही दुंदुनि वजाडतो रेहां, विस्मय लही तिण ठाम ॥ मे० ॥ १२ ॥ कनक रयण वरसी हवे रे हां, प्रणमी जाय निजवास ॥ मे० ॥ काउसग्ग पोसह पारिउ रेहां, धर्म सुणे गुरु पास ॥ मे० ॥ १३ ॥ पारणुं पाप वारण करे रेहां, मुनिवर देइ दान ॥ मे० ॥ लोक प्रशंसा बहु करे रेहां, रायनी तिम प्रधान ॥ मे० ॥ ॥ १४ ॥ एकदिन श्रावकनी वहे रेहां, प्रतिमा जे अगीआर ॥ मे० ॥ राय प्रधान बिहु जणा रेहां, दुर्बलतनु सुकुमार ॥ मे० ॥ १५ ॥ यत ॥ दसण वय सामाइय, पोसह पडिमा अबन सचित्ते ॥ आरंन पेस उद्दिठ, वज्जए समण नूएय ॥ १ ॥ ढाल ॥ शुद्ध करी आराधना रेहां, पंच परमेष्ठी ध्या

न ॥मे०॥ मरण समाधि लहे तदा रेहां, पञ्चरकी अन्ननें पान ॥ मे० ॥१६॥ शुक्र कल्पें दोय कपनां रेहां, शक्र सामानिक देव ॥ मे० ॥ मत्री प्रिया पण इं णी परें रेहां, सम्यग करी धर्म सेव ॥ मे० ॥ १७ ॥ मित्र पणे सुर बिहुं थया रेहां, सातमे देवलोकें तेह ॥ मे० ॥ जय जय रव सुरवर करे रेहां, स्तवनां करे सुरि नेह ॥ मे० ॥ १८ ॥ देवनी उत्पत्ति केरडां रेहां, विधि पूर्वक करी काज ॥ मे० ॥ वचन अगोचर सुख तिहां रे हां,नोगवे सुर सा म्राज्य ॥ मे० ॥ १९ ॥ नदीश्वरादिक तीर्थनी रेहां, यात्रा करे सुविवेक ॥ ॥ मे०॥ तीर्थंकर पासें सुणे रेहां, देशना समकित टेक ॥ मे० ॥ २० ॥ सुख नोगवतां तेहनें रेहां, जातो न जाणे काल ॥ मे० ॥ दान दीधुं मत्री नवें रेहां, मुनिवरनें असराल ॥ मे० ॥२१॥ तिणें अधिकु काय, नोगवे रेहां, देवपणे सुख सार ॥ मे० ॥ हवें पुरोहित काढयो तदा रेहां, अन्या यें वसुसार ॥ मे० ॥ २२ ॥ देश अनेक नम्यो तिहां रेहां, नवि लह्यो किहांये गम ॥ मे० ॥ नोला लोकनें नोलवे रेहां, ऊष्ट वासना काम ॥ ॥ मे० ॥ २३ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यानें मरी रेहां, रतन प्रनायें जाय ॥ मे० ॥ वे दना त्रिविध सही तिहां रेहां, पूर्व कर्म पसाय ॥ मे० ॥ २४ ॥ तिहांथी तिर्यंचमां नम्यो रेहां, वार असख्याती तेह ॥ मे० ॥ दरिद्री ऊःखी शोनागी ठ रेहां, विप्र थयो वली एह ॥ मे० ॥ २५ ॥ ते ऊःखथी उद्वेगीठ रेहां परिव्राजक वली थाय ॥ मे० ॥ धूमकेतु ज्योतिषी थयो रेहां, मिथ्यात्वी सु र राय ॥ मे० ॥ २६ ॥ हवे ते अतिबल केवली रेहां, राज ऋषि करे विहा र ॥ मे० ॥ जिणे नृप मत्री बोधीया रेहां, तिम बहु जन उपगार ॥मे०॥ ॥ २७ ॥ शैलेशी करी शिव वस्या रेहां, एम दानादिक धर्म ॥ मे० ॥ चारि त्र धर्म तिम वरणव्यो रेहां, जेह दीये शिवशर्म ॥ मे० ॥ २८ ॥ श्रीजयानं दना रासमां रेहां, पन्नरमी ए ढाल ॥ मे० ॥ प्रथम खंम पूरण थयो रेहां, पूरवनव सुरसाल ॥ मे० ॥२९॥ सवेगी शिर सेहरो रेहां, सत्यविजय पन्या स ॥ मे० ॥ कपूर विजय तेहना कवि रेहां, खिमाविजय शिष्य तास ॥ मे० ॥ ३० ॥ जिनविजयो जगमां जयो रेहां, तास शिष्य वड नाग ॥ मे० ॥ तेहना उत्तमविजयजी रेहां, बहुश्रुत महावैराग ॥ मे० ॥ ३१ ॥ तास शिष्य पद्मे कह्यो रेहां, प्रेमें पहेलो खम ॥ मे० ॥ श्रोता जन सु णतां थकां रेहां, पामो पुण्य अखम ॥ मे० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४३ ॥

इति श्रीमत्संविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर पंमित श्रीउत्तमविजय जिज्ञणिविनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानंदकेवलिचरित्रे तत्प्राग्नवमत्रिजीव बोधिवीजलानातिवल राजर्षि केवलिदृष्टांतसूचितयतिधर्मफलवर्णनादि नवत्रय नरवीर नृप नवद्वय वसुसार पुरोहित स्वरूपातिवल राजर्षि मोक्षगमनवर्णन नामा प्रथम खम समाप्त ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४३ ॥ उक्त गाथा ॥ श्लोक ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥

॥ सीमंधर स्वामी नमुं, विचरंता नगवान ॥ सीमंधर ए सारिखो, नहीं कोइ जगत निधान ॥ १ ॥ प्रथमखम पूरण कह्यो, बीजानो हवे बहार ॥ श्रोताजन सुणजो सवे, आलस अघ उतार ॥ २ ॥ जंबूद्वीप लख जोयणो, नरत क्षेत्र तिहां नाल ॥ पर्वत जोयण पंचास ते, वैताढ्य नाम विशाल ॥ ३ ॥ पचवीश उचो पण कह्यो, पूर्वापर जस प्रांत ॥ रूपानो रलियामणो, शोना तणो निशांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आदीश्वरनी विनतिनी देशी ॥ श्रीरिसहेसर देव रे, शेत्रुंजा धणी ॥ ए देशी ॥

॥ उचो जोयण पचवीश रे, गिरिवर ए कह्यो ॥ पृथिवीथी दश जोयणा ए ॥ १ ॥ विद्याधरनी श्रेणी रे, उत्तर दक्षिणे, शाठ पचाश नगर तिहां ए ॥ २ ॥ अरिहंतना गुण गाय रे, गीत सुकंठथी, खेट युगल तिहां क्रीडता ए ॥ ३ ॥ कनक रतनमयी गेह रे, नगरमां शोनतां, तिहांथी दश जोयण गइ ए ॥ ४ ॥ दोय श्रेणी तिहां होय रे, सौधर्म इंद्रना, लोकपालना देवता ए ॥ ५ ॥ आनिर्जोगिकनां ठाण रे, मणिमय रूअडां, सुरालय ते जाणीयें ए ॥ ६ ॥ तिहांथी जोयण पांच रे, गिरिशिर उपरें, सिद्धायतणादिक अछे ए ॥ ७ ॥ नवकूट अति मनोहार रे, देवदेवी तिहां, क्रीडा करे अतिरंगशुं ए ॥ ८ ॥ हवे उत्तरश्रेणि मांहि रे, गगनवल्लन पुरें, कनकमणिमय मेह ठे ए ॥ ए ॥ ते मणिगृह उद्योतें रे, नेद दिन रयणीनो, न लहे लोक कोकज लहे ए ॥ १० ॥ विद्याधरनो स्वामी रे, सहस्रायुध नामें, तेह नगर

न ॥मे०॥ मरण समाधि लहे तदा रेहां, पच्चरकी अन्ननें पान ॥ मे० ॥१६॥
शुक्र कल्पें दोय कपनां रेहां, शक्र सामानिक देव ॥ मे० ॥ मंत्री प्रिया पण इ
णी परें रेहां, सम्यग करी धर्म सेव ॥ मे० ॥ १७ ॥ मित्र पणे सुर बिहुं
थया रेहां, सातमे देवलोकें तेह ॥ मे० ॥ जय जय रव सुरवर करे रेहां,
स्तवनां करे सुरि नेह ॥ मे० ॥ १८ ॥ देवनी उत्पत्ति केरडां रेहां, विधि
पूर्वक करी काज ॥ मे० ॥ वचन अगोचर सुख तिहां रे हां, भोगवे सुर सा
म्राज्य ॥ मे० ॥ १९ ॥ नंदीश्वरादिक तीर्थनी रेहां, यात्रा करे सुविवेक ॥
॥ मे० ॥ तीर्थंकर पासें सुणे रेहां, देशना समकित टेक ॥ मे० ॥ २० ॥
सुख भोगवतां तेहनें रेहां, जातो न जाणे काल ॥ मे० ॥ दान दीधुं मंत्री
भवें रेहां, मुनिवरनें असराल ॥ मे० ॥२१॥ तिणें अधिकुं कांय, भोगवें
रेहां, देवपणे सुख सार ॥ मे० ॥ हवें पुरोहित काढयो तदा रेहां, अन्या
यें वसुसार ॥ मे० ॥ २२ ॥ देश अनेक भम्यो तिहां रेहां, नवि लह्यो
किहांये गाम ॥ मे० ॥ भोला लोकनें भोलवे रेहां, दुष्ट वासना काम ॥
॥ मे० ॥ २३ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यानें मरी रेहां, रतन प्रभायें जाय ॥ मे० ॥ वे
दना त्रिविध सही तिहां रेहां, पूर्व कर्म पसाय ॥ मे० ॥ २४ ॥ तिहांथी
तिर्यंचमां भम्यो रेहां, वार असंख्याती तेह ॥ मे० ॥ दरिद्री दुःखी दोभागी
उ रेहां, विप्र थयो वली एह ॥ मे० ॥ २५ ॥ ते दुःखथी भववेगीउ रेहां
परिव्राजक वली थाय ॥ मे० ॥ धूमकेतु ज्योतिषी थयो रेहां, मिथ्यात्वी सु
र राय ॥ मे० ॥ २६ ॥ हवे ते अतिबल केवली रेहां, राज ऋषि करे विहा
र ॥ मे० ॥ जिणे नृप मंत्री बोधीया रेहां, तिम बहु जन उपगार ॥मे०॥
॥ २७ ॥ शैलेशी करी शिव वऱ्या रेहां, एम दानादिक धर्म ॥ मे० ॥ चारि
त्र धर्म तिम वरणव्यो रेहां, जेह दीये शिवशर्म ॥ मे० ॥ २८ ॥ श्रीजयानं
दना रासमां रेहां, पन्नरमी ए ढाल ॥ मे० ॥ प्रथम खंम पूरण थयो रेहां,
पूरवभव सुरसाल ॥ मे० ॥२९॥ संवेगी शिर सेहरो रेहां, सत्यविजय पन्या
स ॥ मे० ॥ कपूर विजय तेहना कवि रेहां, खिमाविजय शिष्य तास
॥ मे० ॥ ३० ॥ जिनविजयो जगमां जयो रेहां, तास शिष्य वड भाग
॥ मे० ॥ तेहना उत्तमविजयजी रेहां, बहुश्रुत महावैराग ॥ मे० ॥ ३१ ॥
तास शिष्य पद्में कह्यो रेहां, प्रेमें पहेलो खंम ॥ मे० ॥ श्रोता जन सु
णतां थकां रेहां, पामो पुण्य असंम ॥ मे० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४३ ॥

इति श्रीमत्संविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर पंमित श्रीउत्तमविजय जिजणिविनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानदकेवलिचरित्रे तत्प्राग्नवमत्रिजीव बोधिबीजलानातिवल्ल राजर्षि केवलिदृष्टांतसूचितयतिधर्मफलवर्णनादि नवत्रय नरवीर नृप नवद्वय वसुसार पुरोहित स्वरूपातिवल्ल राजर्षि मोक्षगमनवर्णन नामा प्रथम खम समाप्त ॥ १ ॥सर्वगाथा ॥ ४४३ ॥ उक्त गाथा ॥ श्लोक ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंन ॥

॥ दोहा ॥

॥ सीमंधर स्वामी नमुं, विचरंता नगवान ॥ सीमधर ए सारिखो, नही कोइ जगत निधान ॥ १ ॥ प्रथमखम पूरण कह्यो, बीजानो हवे वहार ॥ श्रोताजन सुणजो सवे, आलस उघ उतार ॥ २ ॥ जबूदीप लख जोयणो, नरत क्षेत्र तिहां नाल ॥ पर्वत जोयण पंचास ते, वैताढ्य नाम विशाल ॥ ३ ॥ पचवीश उचो पण कह्यो, पूर्वापर जस प्रांत ॥ रूपानो रलियामणो, शोना तणो निशांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आदीश्वरनी विनतिनी देशी ॥ श्रीरिसहेसर देव रे, शेत्रुंजा धणी ॥ ए देशी ॥

॥ उचो जोयण पचवीश रे, गिरिवर ए कह्यो ॥ पृथिवीथी दश जोयणा ए ॥ १ ॥ विद्याधरनी श्रेणी रे, उत्तर दक्षिणे, शाठ पचाश नगर तिहां ए ॥ २ ॥ अरिहतना गुण गाय रे, गीत सुकंठथी, खेट युगल तिहां क्रीडता ए ॥ ३ ॥ कनक रतनमयी गेह रे, नगरमां शोनतां, तिहांथी दश जोयण गइ ए ॥ ४ ॥ दोय श्रेणी तिहां होय रे, सौधर्म इंद्रना, लोकपालना देवता ए ॥ ५ ॥ आनिर्योगकनां ठाण रे, मणिमय रूअडां, सुरालय ते जाणीयें ए ॥ ६ ॥ तिहांथी जोयण पांच रे, गिरिशिर ऊपरें, सिद्धायतणादिक अछे ए ॥ ७ ॥ नवकूट अति मनोहार रे, देवदेवी तिहां, क्रीडा करे अतिरंगशुं ए ॥ ८ ॥ हवे उत्तरश्रेणि मांहि रे, गगनवल्लन पुरें, कनकमणिमय मेह ठे ए ॥ ए ॥ ते माणगृह उद्योतें रे, नेद दिन रयणीनो, न लहे लोक कोकज लहे ए ॥ १० ॥ विद्याधरनो स्वामी रे, सहस्रायुद्ध नामें, तेह नगर

नो राजीयो ए ॥११॥सूरय परें तपे तेह रे, पण ए नित्य तपे, रवि विपरीत ते देखीयें ए॥ १२ ॥ मालिनी नामें तास रे, शील गुण मालिनी, कांता अनुरक्ता घणुं ए॥ १३॥ सुपनें चक्री देखि रे, कहे जरतारनें, राति समय ते अन्यदा ए॥ १४॥ चक्रीसम तुज पुत्र रे, होशे पति कहे, सांजली ते हरखी घणु ए॥ १५॥ नरवीर नृपनो जीव रे, शुक्रयकी चवी, तेहनी कूखें उपनो ए॥ १६॥ शुजमुहूर्त्ते शुज दिन्न रे, जनम थयो हवे, लक्षण लक्षित देहही ए॥ १७॥ अग तेजें उद्योत रे, दश दिशि दाखतो, जनम महोत्सव नृप करे ए॥ १८॥ वाजित्र नाद विनोद रे, दान दीये घणुं, वधामणां बहु आवतां ए॥ १९ ॥ मात सुपन अनुसारें रे, चक्रायुध नाम, सोजागी सुतनुं ठवे ए॥ २०॥ दिन दिन वाधे कुमार रे, प्रियदर्शन घणुं, पच धावि पालीजतो ए॥ २१॥ प्रजा मनोरथ साथ रे, कल्पांकुर परें, अनुक्रमें ते मोहोटो थयो ए॥२२॥ जणवा मूक्यो पुत्र रे, अवसर जाणीनें, कष्ट विना ते शीखतो ए॥ २३॥ कला शस्त्र नें शास्त्र रे, बहु अन्यासतो, साखी मात्र गुरु करे ए॥ २४॥ विनयवतो हवे जाणी रे, निधि सौजाग्यनो, विद्या आपे पुत्रने ए॥२५॥ प्रज्ञप्ति वेइ आदि रे, महाविद्या दीये, सहस गमे गजीरनें ए॥ २६॥ ते सवि साधे कुमार रे, लीलायें करी, विधि पूर्वक उद्यम करी ए २७॥ सत्वजाग्यथी तास रें, सिद्ध थई सवे, सिद्धि तेहनें वश अछे ए॥ २८॥ दिव्य शस्त्र बहु जाति रे, ते पण सीधलां, पुण्यनें डुःकर को नहिं ए॥२९॥ स्वयंवरा कन्या ताम रे, विद्याधर तणी, रूपें रंज हरावती ए॥ ३०॥ बहु शत संख्या तास रे, नृप परणावतो, तेहशुं सुख विलसे सदा ए॥३१॥ चारण श्रमण मुणिंद रे,एक दिन आवीया, जुवनानंद नामें गुरु ए॥३२॥ ज्ञानवंत गुरु तेह रे, शिष्यें परिवस्या, सहस्रायुध हवे राजीउ ए॥ ३३॥ बहुविद्याधर साथ रे, ऋद्धें परिवयो, प्रणमी धर्म सुणे तिहां ए॥३४॥ पामी ते प्रतिबोध रे, लघुकर्मा हवे, चक्रायुध राज्यें ठवी ए॥ ३५॥ गुरु चरणे लीये दीक्षा रे, नृपचक्रायुध, समकेतादिक आदरे ए॥ ३६॥ बीजा पण बहु जीव रे, यथाशक्ति करी, धर्म आदरी घर गया ए॥ ३७॥ बीजे खंडें एह रे, ढाल प्रथम कही, पद्मविजय प्रेमें करी ए॥ ३८॥

॥ दोहा ॥

॥ सहस्रायुध हवे साधुजी, विचरे गुरुसु वेग ॥ शिक्षा डुविध शीखे सदा, सत्य सयम संवेग ॥ १ ॥ अग पूरव अभ्यासीयां, जाणी गुरुजी योग्य ॥ आचारय पद आपियुं, गुणवता गतरोग ॥ २ ॥ चक्रायुध नरपति चतुर, विक्रमवत वखाणि ॥ विद्या देवीयें वेगसुं, प्रगट चक्र दिसुं पाणि ॥ ३ ॥ सान्वय नाम सोहामणुं, कृत्रिम बीजो कीध ॥ रयणविद्याना जोरथी, सत्य चक्रीपणु सिद्ध ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ अष्टापदगिरि जात्रा करणकुं ॥ ए देशी ॥

॥ नदीश्वरवर जात्रा करणकु, एकदिन चक्री आया ॥ प्रिया सहित पूजा करी भक्तें, वाजित्र नाद वजाया ॥ १ ॥ श्रीजिनपूजा कीजें लाल, नरभव सफल करीजें ॥ ए आंकणी ॥ नाटक चक्रवर्त्ती करे सुंदर, प्रिया वाजित्र वजावे ॥ गीत गाये जिनवरनां भक्ते, नाटक तान मिलावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ नाटक देखी कोइक सुरवर, तुष्टमान थयो शक्ते ॥ कामित करी विद्या तस आपे, श्रीजिनराजनी भक्ते ॥ श्री० ॥ ३ ॥ साधन विधिशु विनय करीनें, विद्या लीधी रंगें ॥ प्रभु प्रणमी ते देव नमीनें, आवे निजपुर सगें ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ ते विद्या साधवा हवे एकदिन, शाह्वल वनमां मांमे ॥ तप ध्यानें तिहां परवत उपरें, अन्य काम सवि छांमे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इणि अवसर लंकानो राजा, शतकठ नाम सोहावे ॥ प्रिया सहित मेरु जिन नमीनें, वलतां ते तिहां आवे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ विद्या साधतां सातमो दिन छे, तास विमान खलाय ॥ देव जूए तव देखी तेहनें, क्रोध मांहि ते भराय ॥ श्री० ॥ ॥ ७ ॥ नागपाश विद्यायें विकुर्वी, बांध्यो तरुणी गाढो ॥ तो पण निज ध्यानें ते चक्री, कांइ थयो नवि टाढो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विद्या सिद्ध थइ तें नृपति, त्रूटा ते नागपाश ॥ देवी कहे तुज सत्त्वें तूठी, फलशे ताहरी आश ॥ श्री० ॥ ए ॥ काम पडे मुजनें सभारे, इम कही गइ निज ठामें ॥ प्रज्ञप्तिथी लकापतिनी, चेष्टा खबर ते पामे ॥ श्री० ॥ १० ॥ चक्री निजपुर आव्यो ते हवे, दोय विद्याधर आवी ॥ कन्या आठ अयोध्यापतिनें, छे ते वात सुणावी ॥ श्री० ॥ ११ ॥ नारीमांही जिम ते सर्वोत्तम, पुरुषमां रुप तुमारु ॥ जो तुमें परणो तो होय सुदर, हृदय ते माने अमारु ॥ श्री० ॥ १२ ॥ पहिला पण दिग्यात्रा मनोरथ, वली ए वातें प्रेर्यो ॥ प्रौढसेना लेइ कीध प्रयाणु,

काम नृपतियें पेख्यो ॥ श्री० ॥१३॥ जइ अयोध्या पुरी उद्याने, त्रास पमाडे नयरी ॥ तेहनो श्रीचंद्रराजा वलीउं, दूत मोकले वयरी ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कन्या आवनें दंम ते आपो, नही तो युद्ध सज्ज थाउं ॥ न्यायथी छल न करुं ते कारण, जे कहु ते दिल लाउं ॥ श्री० ॥ १५ ॥ ते पण महामानी व ह्नु विक्रम, कन्यादान तो दूरें ॥ दंम न आपुं सन्मुख आवो, लडशुं आण द पूरें ॥ श्री० ॥ १६ ॥ सैन्य लेइ सन्मुख नीकलीयो, घोर महारण लाग्युं ॥ श्रीचंद्ररायें विक्रम तिम कीधु, खेट सैन्य जाय नाग्यु ॥ श्री० ॥ १७ ॥ च क्री क्रोधथकी हवे पोते, धनुर्वर्म शिरत्राण ॥ नृपनां ठेदी आकुल कीधो, करी संग्राम मंमाण ॥ श्री० ॥ १८ ॥ पूर्व आराध्यो सुर सनाख्यो, आव्यो ते ततकाल ॥ चक्रीनें बांधी आणी आपो, सुरनें कहे नूपाल ॥ श्री० ॥१९॥ सुर कहे नाग्यवंतो ए खपति, में एहशुं नवि चाले ॥ नृप कहे मुज गुरु पासें मूको, जिम मुज दीक्षा आले ॥ श्री० ॥२०॥ जिम इह नव परनव पर परिनव, पुण्यें नवि मुज आवे ॥ तव सुर चक्री शस्त्र समुदय, निज शक्ते थंनावे ॥ श्री० ॥ २१ ॥ तेहज पुर उपवनमां गुरुनी, पासें मूक्यो राय ॥ संवेगी राजा सुणी धर्मनें, अति संवेग नराय ॥ श्री० ॥ २२ ॥ चरम शरीरी थइ नि संगी, धीर लीये तव दीक्षा ॥ गुरु पासें तव शीखे डुविहा, ग्रहण आसेव न शिक्षा ॥ श्री०॥२३॥ श्रीजयानंदना रासमां नांखी, बीजे खमें ढाल ॥ बीजी पद्मविजय अति अनोपम, सुणतां मंगलमाल ॥श्री०॥२४॥ सर्वगाथा ॥७०॥

॥ दोहा ॥

॥ शस्त्र थंन्यां सनालीनें, नृप पण नवि देखाय ॥ चक्री मनमां चिंतवे, ए श्यो थयो उपाय ॥ १ ॥ तेह स्वरूप जोवा तिहां, मूके विद्याधर ताम ॥ तेह स्वरूप आवी तदा, आखे विस्मित आम ॥ २ ॥ सैन्य बिहु तिहां सा मटु, मलीने विस्मित जाय ॥ चक्री गुरु मुन चित्तशुं, विनयें वंदे पाय ॥३॥ राज रुषि वंदे वली, देखी मुनि देदार ॥ पांचशें परिव्रज्या ग्रहे, मंत्री प्रमुख मनोहार ॥ ४ ॥ अवनीपति अंतेउरी, आवी राग अत्यंत ॥ मुनि प्रतिबोधी महागुणी, पंचसया प्रव्रजंत ॥ ५ ॥ प्रणमी राजरुषि प्रतें, तास पुत्र तस ग ण ॥ थापी तास वचन थकी, परणे कनी प्रमाण ॥६॥ श्रीचंद्र नरपतिसारि खो, नूचर जींत्यो नूप ॥ कीट कुट्टन हवे कुण करे, अवर जींत्या अनुरूप॥७॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जीहो जाएयुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो चक्रायुध हवे चिंतवे, लाला विद्याधर बलवंत ॥ जीहो जींती ने करुं वश सवे, लाला दाखु तेज अनंत ॥ १ ॥ जविक जन जोजो पुण्य प्रकार ॥ जीहो पुण्यवलें सवि संपजे, लाला वंछित सुख निरधार ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ जीहो इम करतां ते सांजल्यो, लाला लंकापति शतखम्ग ॥ जीहो चाल्यो ते ऊपर हवे, लाला जाणी अति ऊदंग ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीहो आवतो जाएयो चरथकी, लाला विद्यायें करी तेह ॥ जीहो शठ योजन निजपुर थकी, लाला अग्निनो कोट करेह ॥ ज० ॥ ४ ॥ जीहो अग्रसैन्य ते दाजतु, लाला आवी कहे निज स्वामि ॥ जीहो ज्वालिनी विद्यायें कोटने, लाला उलवे चक्री ताम ॥ ज० ॥ ५ ॥ जीहो चक्री चाल्यो आगलें, लाला जाणे शतकंठ राय ॥ जीहो दर्प्प धरी निज सैन्यशुं, लाला तेहनी साहामो थाय ॥ ॥ ज० ॥ ६ ॥ जीहो विश्व जयंकर बेहुनें, लाला लाग्युं रण अतिघोर ॥ जीहो हय गय पत्ती पड्या घणा, लाला दाखवे अतिशय जोर ॥ ज० ॥७॥ जीहो एम करतां लंकेशनुं, लाला बल जाग्यु थयुं दैन्य ॥ जीहो तव पोतें ऊठ्यो तदा, लाला सज्ज करी निज सैन्य ॥ ज० ॥ ८ ॥ जीहो विविध बाण तिहां वरसते, लाला मेघ परें असराल ॥ जीहो चक्री सैन्य मद सहु गल्यो, लाला गजपद जिम हरिवाल ॥ ज० ॥ ९ ॥ जीहो हस्ती कदलीवनपरें, लाला चक्री सैन्य गयुं जाज ॥ जीहो ऊठ्यो चक्रायुध तिहां, लाला क्रोधवशें महाराज ॥ ज० ॥ १० ॥ जीहो पहेला ध्यानमांहि रह्यो, लाला दीठुं ताहरु थाम ॥ जीहो हवे आपण बेहु मल्या, लाला प्रगट तु कर निज धाम ॥ ज० ॥ ११ ॥ जीहो मर्म तणां वच सांजली, लाला शतकंठ क्रोध जराय ॥ जीहो बाण मंमप रचियो तदा, लाला रवि आतप नवि थाय ॥ ज० ॥१२॥ जीहो धनुष लंकापतिनुं शरें, लाला छेदे चक्री नरींद ॥ जीहो तव नवु लावी जूजतो, लाला ते पण छेदे अमंद ॥ ज० ॥ १३ ॥ जीहो सात धनुष इंम छेदीआं, लाला तव शतकंठ राजान ॥ जीहो विन्हल थइ विद्या बलें, लाला मूके नाग अमान ॥ ज० ॥ १४ ॥ जीहो गारुड विद्याथी तदा, लाला सर्पनें दीधो रे त्रास ॥ जीहो आग्नेयादिक शस्त्रनें, लाला मूके विद्याविलास ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीहो प्रतिशस्त्रें हणे ते सवे, लाला चक्री रोष रसेण ॥ जीहो लंकापति चक्री प्रतें, लाला ऊठ्यो क्रोधवशेण ॥ ज० ॥ १६ ॥ जी

हो लोहनार हजारनो, लाला मोघर मस्तकें दीध ॥ जीहो तेहथी पराजव नवि थयो, लाला पण कांय मूर्छा कीध ॥ ज० ॥ १७ ॥ जीहो अणगमती नारी परें, लाला मूर्छा मूकी दूर ॥ जीहो वज्र मुजरें लंकापति, लाला हण्यो पीडा थइ नूर ॥ ज० ॥१८॥ जीहो रुधिर जरे मूर्छा लह्यो, लाला निगडित कीधो रे दीन ॥ जीहो वडवृक्षे पशुनी परें, लाला बांध्यु बंधन पीन ॥ ज० ॥ १९ ॥ जीहो चक्री शक्र पराक्रमी, लाला मूको तिहां रखवाल ॥ जीहो धैर्य देइ तस सैन्यने, लाला नि शंकित नूपाल ॥ ज० ॥ २० ॥ जीहो निज सैन्यें आवी करी, लाला सुख निद्रा करे तेह ॥ जीहो तव शतकंठ चित्त चिंतवे, लाला आणी धर्मस्नेह ॥ ज० ॥ २१ ॥ जीहो निजकृत कर्म सहे अहो, लाला सुखदुःख इह पर लोक ॥ जीहो में पराजव ध्यानें कर्यो, लाला तेहनुं फल ए रोक ॥ ज० ॥ २२ ॥ जीहो बोध ए माहारो मूलगो, लाला फलीउं मुज ततकाल, जीहो आरंनादिक इणी परें, लाला फलशे मुज जंजाल ॥ ज० ॥ २३ ॥ जीहो राज्य आरंनजु मूल ठे, लाला एम करी ते आलोच ॥ जीहो दीक्षा लेव एम चिंतवी, लाला पंच मुष्टि करे लोच ॥ ज० ॥ २४ ॥ जीहो नाव मुनि थया तेहने, लाला शासन देवता ताम ॥ जीहो बंधन ठेदीनें दीयो, लाला मुनिवर वेश उद्दाम ॥ ज० ॥ ॥२५॥ जीहो इव्यनावथी मुनि थया, लाला तिहांहीज काउस्सग्ग ठाय ॥ ॥जीहो समता दृष्टि करी रह्या, लाला निर्ममनें निर्माय ॥ ज० ॥ २६ ॥ जीहो श्रीजयानंदना रासमां, लाला बीजे खंमें रे सार ॥ जीहो पंचें ढाल त्रीजी कही, लाला धन्य राय ऋषि अणगार ॥ज०॥२७॥ गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आरक्षक आनन थकी, सांजली विस्मित थाय ॥ सेना हय संयुत हवे, पोहोंतो मुनिवर पाय ॥१॥ तुमें तो मोहोटा माहाव्रती, तुम बल तुमची पाज ॥ अमें न थाये एहवुं, मुनिने कहे महाराज ॥ २ ॥ खमावे खांतें करी, लीलायें लंका जाय ॥ श्रीकंठ सुतनें सोंपतो, राज्य करी तस राय ॥ ३ ॥ आण मनावी आपथी, तेहनी दीधी ताम ॥ कन्या शतनो कर ग्रहे, कीधुं आपणु काम ॥ ४ ॥ अन्य द्वीप अवनीपति, नमीआ चक्री नाम ॥ वधू सघली लेइ वल्यो, वैताढ्यें विश्राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सोनानी जारी हे ॥ ए देशी ॥

॥ दक्षिण श्रेणी हे, सादेव मादारा सरोवर तीर ॥ फेरा तंबू दीध, सह रस कन्या तिहां क्रीडतीजी ॥ रूपगुणवती हे, सा० ॥ निज अनुरक्त, जाणी अपहरी तेह, मनमथ मनमां पीडतीजी ॥ १ ॥ कन्या कचुकी हे,सा०॥ चक्रीनी वात, जणवे कन्या ताय, तेह आवी संगर करेजी ॥ नाग ते सहु ए, सा० ॥ दक्षिण स्वामि, बहु खेचर करे सेव, वन्हिवेग रथनूपुरेंजी ॥२॥ सहु जइ तेहने हे, सा० ॥ नांखी वात, वन्हिवेग तव दूत, मोकली कहे वरावे इश्युंजी ॥ हरथी कन्या हे, सा० ॥ लीधी ते मूक, नहीं तो करो स ग्राम, अन्यायें न करो किश्युंजी ॥ ३ ॥ तेह सांनली हे, सा० ॥ मान्यो संग्राम, चूख्याने जिम आहार, करे निमत्रणा तिणीपरेंजी ॥ रथनूपुर हे, सा० ॥ नगरें आय, वन्हिवेग पण ताम, सैन्य लेइनें नीसरेजी ॥४॥ बलमदथी तेह हे, सा० ॥ ते दिन जोर, वारुण थयो संग्राम, ते बिहुं लश करनें तिहांजी॥ वन्हिवेग तव हे, सा० ॥ देखे एम, बहु गज पायक आ दि, मरण लह्या प्राणी जिहांजी ॥ ५ ॥ अति दयावतो हे, सा० ॥ चक्री नें एम, नांखे वाणी रसाल, आपण अरिहंत मत धणीजी ॥ शुद्ध श्राव क हे, सा० ॥ न घटे एह, जिणें हत्यादिक जीव, समुदय होय मरण न णीजी ॥ ६ ॥ युद्ध करीयें हे, सा० ॥ आपण दोय, वीर मानी करो यु द्ध, शाने लोक मरावीयेंजी ॥ शूर न वांछे हे, सा० ॥ जय संविनाग, अं गीकरे दोय ताम, निज निज बलनें गावीयेंजी ॥ ७ ॥ बाणनें खंझे हे, सा० ॥ दम्न गदाय, सम विक्रम तेह दोय, लडतां कोइ न हारियोजी ॥ दोय सिंह लडता हे, सा० ॥ जीते न कोय, चक्री पाम्यो खेद, ज्वलतुं चक्र संजारीयुंजी ॥ ७ ॥ आव्युं ततक्षण हे, सा० ॥ हृदयें मारि, मूर्छा ल ह्यो वन्हिवेग, धरणी पड्यो वायें डुम यथाजी ॥ जाणी साधर्मिक हे, सा० ॥ चक्री ताम, अंचलें घाले वाय, जिम सज्ञा पामे तथाजी ॥ ए ॥ करे लडाइ हे, सा० ॥ धरतां एम, दया हृदयमां जोय, धन्य जिनशासन जग जयोजी ॥ उठ्यो वलियो हे, सा० ॥ जे वज्रकाय, चिर मूर्छा नवि हो य, जिम श्रावक स्त्री परि थयोजी ॥ १० ॥ देखी चक्रीनें हे, सा० ॥ चि ते तेह, ए मुज तात समान, करे उपगार एणी परेंजी ॥ एह पराजव हे, सा० ॥ नवि देखंत, दीक्षा लीधी होत्त, जे नव तारणी सुख करेजी ॥

॥ ११ ॥ इण अवसर हे, सा० ॥ चक्रथी मुज, मरण आवत निरधार,तो दुर्गति जातो सहीजी॥ पुण्य हीननें हे, सा० ॥ सद्गति नांहिं, राजानें तो विशेष, सद्गति आरंनें नहीजी ॥ १२ ॥ चक्री कृपालु हे, सा० ॥ वात्स ल्यवत, सतोषी ए राय, अवसर योग्य करु हवेजी॥ इम चितवी हे, सा०॥ बोले वाणि, ताहरी कृपा अदनूत, एणे आचरणे सूचवेजी ॥ १३ ॥ बां धव साथें हे, सा० ॥ न करु युद्ध, लीजें माहरु राज्य, हुतो दीक्षा आद रुजी॥ चक्री बोले हे, सा० ॥ नहीं मुज काम, नोगवो सुखथी राज्य, हु नवि लेउं ताहरुजी ॥ १४ ॥ हुतो इम्नु हे, सा० ॥ एक प्रणाम, धुरथी की धो तेह, तव प्रार्थना करी निजपुरेंजी॥ आएयो चक्री हे, सा० ॥ निज प र जेह, कन्यानो समुदाय, पांचशें दीये चक्री करेंजी ॥ १५ ॥ लीधी पूरवें हे, सा० ॥ हरथी तेह, आपे तेहना तात, हर्ष करीने हेजशुंजी ॥ दक्षिण श्रे णिना हे, सा० ॥ सर्व राजान, आवी प्रणमे पाय, देखी सपुत तेजशुंजी ॥ १६ ॥ हयगय नेटण हे, सा० ॥ करता तेह, आज्ञा मानी तास, सहस गमे कन्या दीयेजी ॥ वन्हिवेगनें हे, सा० ॥ आपे ताम, मुख्य नगर जे आठ, हरख धरीनें ते लीयेजी ॥ १७ ॥ बीजा खेटनें हे, सा० ॥ आपे शेष, हवे उत्तर श्रेणी आय, लीलायें जीते नरवरूजी॥ आपे कन्या हे, सा० ॥ तेह राजान, सहस्र तणे परिमाण, यौवन रूप मनोहरूजी ॥ १८ ॥ पूर्वापर सहु ए, सा० ॥ शोल हजार, राणीनो समुदाय, जीते शेष वैरी वलीजी ॥ इम जय करीनें हे, सा० ॥ नोगवे राज्य, निजपुर आवी सार, मानुं च क्रीनी ऋद्धि मलीजी॥ १९ ॥ वन्हिवेग हवे हे, सा० ॥ पूर्णसंवेग, गुरु सयो ग अनाव, रहेवुं पडधु घरमां तिणेजी ॥ महावेग मुनिवर हे, सा० ॥ जे नि ज तात, चउनाणी थयान, समवसख्या गुरु तिहां किणेजी ॥ २० ॥ सांन ली हरख्यो हे, सा० ॥ गुरु कनें जाय, प्रणमी गुरुना पाय, तेह पासें व्रत आदरेजी, सातशें पुरुषशु हे, सा० ॥ सातशें नारि, परवरिठ परिवार, नि रतिचार सयम धरेजी ॥ २१ ॥ श्रीवन्हिवेग हे, सा० ॥ श्रीचंडराय, सहस्त्रा युध नर नाथ, त्रणे राजवी तिण नवेंजी ॥ पामी केवल हे, सा० ॥ अहो अहो एह, वरीया अव्याबाध, सकल करमनें क्षय थवेजी॥ २२ ॥ लक्ष्मी पति पण हे, सा० ॥ चारित्र पाली, पंचम नवें लहे सिद्धि, अहो चारित्र महिमा वडोजी ॥ इम श्रावकनो हे, सा० ॥ साधुनो धर्म, पालतां लहे सि

वशमें, तिणे जैन महिमा ए वडोजी॥१३॥ बीजे खंमें हे, सा०॥ चोथी ढाल, श्रीजयानदनें रास, चक्रायुध अधिकार एजी ॥ पद्मविजयें हे,सा० ॥ नांख्यो रसाल, सुणतां मगल माल, होवे जयजयकार एजी॥१४॥ सर्वगाथा॥१३३॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नरतें अवनी तलें, विजयपुर सुवखाण ॥ विधियें कीधी वानकी, स्वर्ग तणी सुख खाण ॥ १ ॥ स्वर्ग अर्थी सज्जन जिके, परगट कीजें पुण्य ॥ आदर करवा एणी परें, निरति कीधी नुन्न ॥ २ ॥ कोट चैत्यनें उंक जे, वापी वनश्री विशेष ॥ जेहनी शोना जोइनें, नाकी थया अनिमेष ॥३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ तिहां जय नामें राय, युवराजा तस नाय, आठे लाल विजयनामें जितशत्रुनेंजी ॥ १ ॥ पृथिवी पाले न्याय, चइ सूर्य समुदाय, आ० ॥ ज्यांहि अनीतितम नवि रहेजी ॥ २ ॥ मित्र शत्रुनें दोय, त्रुगा रूगा होय, आ० ॥ क्षिति आपे अचरिज अहोजी ॥ ३ ॥ जयनें विमला नारि, विजयने कमला धारि, आ० ॥ नयन ते राज्य लक्ष्मी तणांजी ॥ ४ ॥ रति प्रीति दोय नारि, हरदग्ध अनग विसारि, आ० ॥ सुख अर्थें आवी इहांजी ॥ ५ ॥ एकदिन सूती राति, सुपने सूअर साक्षात, आ० ॥ हरि सुत खोले आवी रह्योजी ॥ ६ ॥ सूअर मूकी ताम, हरि गयो कोइ गाम, आ० ॥ जागी कहे नरतारनेंजी ॥ ७ ॥ पुत्र ते सूअर समान, होशे कहे राजान, आ० ॥ अन्यनें हरि सम सुत थशेजी ॥ ८ ॥ पण बेहुनें थशे प्रीत, सार्थे विचरशे नित्य, आ० ॥ सानली खेद हरख लहेजी ॥ ए॥ वसुसार जीव तिहां आय, पूरण करी सुर आय, आ० ॥ तेहनी कूखें उपन्योजी ॥ १० ॥ हिंसा शोहादिक नाव, मायनें दोहद प्रनाव, आ० ॥ क्रूरता प्रमुख घणी थइजी ॥ ११ ॥ अनुक्रमें जनम ते थाय, दासी वधाइ खाय, आ० ॥ दान नरिंदें बहु दीयांजी॥ १२ ॥ जनम महोत्सव करे राय, हरिदर्शन चित्त लाय, आ० ॥ सिंहसार अनिधा ठव्युंजी ॥ १३ ॥ कमला पण एक दिन्न, सूतां रयणी सुपन्न, आ० ॥ सिंह सूअर दीग बिहुंजी ॥ १४ ॥ नयन सौम्य बलवत, उत्संगें रह्यो सत, आ० ॥ कोल गयो अन्य थानकेंजी ॥ १५ ॥ संनलावे नरतार, सांनली हर्षे अपार ॥ आ० ॥ सुपन तणु फल ते कहेजी ॥ १६ ॥ ताहरे सिंह समान, गुणथी ते असमान, आ० ॥

बीजीनें सूअर सारिखोजी ॥ १७ ॥ वयण सुणीनें तेह,हर्षवती थइ तेह, आ० ॥ कमला कमलमुखी तदाजी ॥ १८ ॥ सत्तर सागर आय, मंत्री जीव सुर राय, आ० ॥ सातमा देवलोकथी चवीजी ॥ १९ ॥ तास कुखें अवतार, शुन्न दोहला तेणी वार, आ० ॥ उपजे धर्म करण तणाजी ॥ ॥ २० ॥ पूरे ते युवराय, आनंद अंग न माय, आ० ॥ अवसरें पुत्र जनम थयोजी ॥ २१ ॥ शुन्न लग्ने शुन्न वार, नासुर अति देदार, आ० ॥ पूरव दिशें सूरज परेंजी ॥ २२ ॥ इण समे शंख पुरीश, मानवीर नरईश, आ० ॥ ते उपरें जय नृप चढेजी ॥ २३ ॥ विनयें निवारी राय, चढीया तव युवराय, आ० ॥ जय करी बाधी लावीयाजी ॥ २४ ॥ दासी वधावे ताम, कमला सुत थयो स्वामि, आ० ॥ आवी बीजी दासी तदाजी ॥ २५ ॥ दोय वधाया राय, नाल निक्षेपनें गाय, आ० ॥ पुत्र जनमनें अवसरेंजी ॥ २६ ॥ नीकल्यो कुंन्न निधान, हरख्या बेहु राजान, आ० ॥ तिहां मगावी जोइयोजी ॥ २७ ॥ तात नामांकित तेह, देखी चिंतवे जेह, आ० ॥ पुत्रपुण्यें गयो निधि जडयोजी ॥ २८ ॥ शत्रुजय थयो एम,लखमी आवी नेम, आ० ॥ पुत्र जनम कारण थयोजी ॥२९॥ दासी संतोषी दान, देइ तास अमान, आ०॥ बीजे खंमें एम कहीजी ॥ ३० ॥ पांचमी ढाल रसाल,सुणतां मंगल माल, आ० ॥ पद्मविजयें प्रेमें कहीजी ॥३१॥ सर्वगाथा ॥ १६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वधामणां वर आवतां, बंदी बिरुद बोलाय ॥ युगपत जय जय रव होये, गीत नाटक गवराय ॥ १ मूक्या बंदी मोकला, दान मोहा देवाय ॥ दशविध वाजित्र नादथी, प्रमोद प्रजा बहु पाय ॥ २ ॥ इष्ट अर्थ आगमनथी, प्रीतें आशीष पढाय ॥ हर्षे पुत्रना हेतथी, जगमां जनम जणाय ॥ ३ ॥ पडिवजी आणा प्रेमथी, मानवीर महाराय ॥ दम्न लेइनें दंन विन्नु, शीख दीये समजाय ॥ ४ ॥ शत्रुजय सहु जीवनें, आनंद आपणहार ॥ श्रीजयानंद सक्जन मली, दीधु नाम उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ फतमल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति श्रीजयानंद कुमार, सिंहसार सार्थे वधे ॥ न० ॥ धार्वे पाली जतां तेह, तात मनोरथ नित्य सधे ॥ १ ॥ न० ॥ पांसुक्रीडा करे साथ, तिम बीजी रामत सम करे ॥ न० ॥ यथा कलानें योग, नृप कलाचार्य

पासें धरे ॥ २ ॥ न० ॥ शस्त्र शास्त्रनी जेह, शीखवे कला नली परें ॥ न० ॥ नाग्य प्रमाणे तेह, पाम्या उद्यम पर परें ॥ ३ ॥ न० ॥ बहु धन आपी राय, कलाचार्य संतोषीउ ॥ न० ॥ यौवन पाम्या दोय, काम राय जिहां पोषीउ ॥ ४ ॥ न० ॥ वापी वन आराम, मित्र सार्थे क्रीडा करे ॥ न० ॥ सामग्री सम होय, पण प्रकृति निन्नज धरे ॥५॥न० ॥ सहुनां कर्म विनिन्न, सिहसार क्रूरज घणो ॥ न० ॥ लोकनें करे उदवेग, लागे सवि अलखामणो ॥ ॥ ६ ॥ न०॥ होनागी अविनीत, अप्रियनाखी अधर्मियो ॥ न० ॥ श्रीजयानंद कुमार, सौनागी घणो धर्मियो ॥ ७ ॥ न० ॥ लावण्य लीलावत, त्यागी शूर सोनागीयो ॥ न० ॥ न्यकृत मनमथ रूप, सहुजन जेहनो रागीयो ॥ ॥ ८ ॥ न० ॥ प्रकृतें उदार कृतज्ञ, प्रियवादी उपगारीयो ॥ न० ॥ सर्वेनें हित करनार, गुण गणनो ते धारीयो ॥९॥न०॥ लोक मुखें जस वाद, सिहसार तस सांनले ॥ न० ॥ खेद लहे चित्तमांहि, कारमी प्रीति करी नलें ॥ १० ॥ न० ॥ सरल ते श्रीजयानंद, साचु करीनें सद्दहे ॥ न० ॥ साची प्रीति धरेह, तस गुणमांहि नजर रहे ॥ ११ ॥ न० ॥ गुणी गुण देखे सर्व, निर्गुणी ते अवगुण ग्रहे ॥ न० ॥ एकदिन क्रीडा उद्यान, वसत कुतें बाहिर रहे ॥ १२ ॥ न० ॥ रातें सुणे दिव्य गीत, वाजित्रध्वनि मीठो घणुं ॥ न० ॥ तव साहसिक ते दोय, चाल्या धरत धीरयपणुं ॥ १३ ॥ ॥ न० ॥ कौतुकें पोहोच्या दूर, क्रीडा पर्वत उपरें ॥ न० ॥ काउस्सग्गमां लीन, कोइक ऋषि ध्यानज धरे ॥१४॥न०॥ कोइ सुर दिव्य स्वरूप, देवीयुत देखे तदा ॥ न० ॥ पटह वजावे देव, नृत्य करे एक सुरी यदा ॥ १५ ॥ ॥ न० ॥ एक वजावे ताल, वीणाघोषवती वली ॥ न० ॥ वंश वजावे एक, मुनि आगल मननी रुली ॥ १६ ॥ न० ॥ गावे मुनिगुण नक्ति, नाटक बेहु हरखें जुवे ॥न०॥ विभ्रमोहन अदनूत, करतां कर्मकादव धूवे ॥न०॥१७॥ मुनि समता नंमार, शुक्लध्यान श्रेणें चढ्या ॥न०॥ पाम्या केवल ज्ञान, घाती कर्म सार्थे वढ्या ॥ १८ ॥ न०॥ महोत्सव करवा काज,चार निकायना देवता ॥ न० ॥ मलिया वाजित्र नाद, करता केवली सेवता ॥ १९ ॥ न० ॥ कनक कमल रचे तत्र, केवली तिहां बेसी करी ॥ न० ॥ सहुनें देइ धर्म लान, देशना दिये चित्तमां धरी ॥ २० ॥ न० ॥ समकेत अणुव्रत आदि, सांनली देशना हित करे ॥ न० ॥ श्रीजयानंद कुमार, बूझ्या सम

बीजीनें सूअर सारिखोजी ॥ १७ ॥ वयण सुणीने तेह,हर्षवती थइ बेह, आ० ॥ कमला कमलमुखी तदाजी ॥ १८ ॥ सत्तर सागर आय, मंत्री जीव सुर राय, आ० ॥ सातमा देवलोकथी चवीजी ॥ १९ ॥ तास कुखें अवतार, शुभ दोहला तेणी वार, आ० ॥ उपजे धर्म करण तणाजी ॥ ॥ २० ॥ पूरे ते युवराय, आनंद अंग न माय, आ० ॥ अवसरें पुत्र जनम थयोजी ॥ २१ ॥ शुभ लग्नें शुभ वार, नासुर अति देदार, आ० ॥ पूरव दिशें सूरज परेंजी ॥ २२ ॥ इण समे शंख पुरीश, मानवीर नरईश, आ० ॥ ते उपरें जय नृप चढेजी ॥ २३ ॥ विनयें निवारी राय, चढीया तव युवराय, आ० ॥ जय करी बाधी लावीयाजी ॥ २४ ॥ दासी वधावे ताम, कमला सुत थयो स्वामि, आ० ॥ आवी बीजी दासी तदाजी ॥ २५ ॥ दोय वधाया राय, नाल निक्षेपनें ठाय, आ० ॥ पुत्र जनमनें अवसरेंजी ॥ २६ ॥ नीकल्यो कुंभ निधान, हरख्या वेहु राजान, आ० ॥ तिहां मगावी जोइयोजी ॥ २७ ॥ तात नामांकित तेह, देखी चितवे जेह, आ० ॥ पुत्रपुण्यें गयो निधि जडघोजी ॥ २८ ॥ शत्रुजय थयो एम,लखमी आवी नेम, आ० ॥ पुत्र जनम कारण थयोजी ॥२९॥ दासी संतोषी दान, देइ तास अमान, आ०॥ बीजे खंमें एम कहीजी ॥ ३० ॥ पांचमी ढाल रसाल,सुणतां मंगल माल, आ०॥ पद्मविजयें प्रेमें कहीजी ॥३१॥ सर्वगाथा ॥ १६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वधामणां वर आवतां, बंदी बिरुद बोलाय ॥ युगपत जय जय रव होये, गीत नाटक गवराय ॥ १ मूक्या बंदी मोकला, दान मोहा देवाय ॥ दशदिश वाजित्र नादथी, प्रमोद प्रजा बहु पाय ॥ २ ॥ इष्ट अर्थ आगमनथी, प्रीतें आशीष पढाय ॥ हर्षे पुत्रना हेतथी, जगमां जनम जणाय ॥ ३ ॥ पडिवजी आणा प्रेमथी, मानवीर महाराय ॥ दम लेइनें दंभ विना, शीख दीये समजाय ॥ ४ ॥ शत्रुजय सहु जीवनें, आनंद आपणहार ॥ श्रीजयानंद सज्जन मली, दीधु नाम उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ फतमल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति श्रीजयानंद कुमार, सिंहसार साथें वधे ॥ न० ॥ धावें पाली जतां तेह, तात मनोरथ नित्य सधे ॥ १ ॥ न० ॥ पांसुक्रीडा करे साथ, तिम बीजी रामत सम करे ॥ न० ॥ थया कलानें योग, नृप कलाचार्य

जीवडा, परस्त्रीगमन करे जेह हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ १० ॥ सु० ॥ पंचेंद्रिय वध आचरे, तेहने नरकमां गण हो ॥ सुं०॥ हिंसा न करे जे नरा, तस सुख जस कल्याण हो ॥ सु०॥ ग० ॥ ११ ॥ सुं० ॥ आरोग्यता बल आ वखु, पामे लक्ष्मी रूप हो ॥ सुं०॥ परजवें सुरवर सुख होये, अनुक्रमें मो क्षसरूप हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १२ ॥ सु० ॥ सांजली धर्मनें बूजीया, सम कित पामे सार हो ॥सु०॥ प्रथम अणुव्रत आदरे, वली पच्चरके मांसाहार हो॥सुं०॥ग०॥१३॥ सु० ॥ हरखें अमने वदीया, पोहोता निज आवास हो ॥ सु०॥ अहोनिश ते व्रत पालता, माने जीवित खास हो ॥ सु० ॥ ॥ग० ॥ १४ ॥ सु० ॥ राय सुणे ते वारता, मिथ्यात्वी शिरदार हो ॥ सु० ॥ हिंसकपरिणामी घणो, कोप करी तिणी वार हो ॥सुं०॥ग०॥१५ ॥ सुं० ॥ मृगया करी मृगमांसनें, लावो जिन्न जिन्न दोय हो ॥ सुं०॥ मुज मृगमांस खावा तणी, आज इछा छे जोय हो ॥सु०॥ ग० ॥ १६ ॥ सुं० ॥ नृप आ णा अगीकरी, चाल्या दोय ते ताम हो ॥सु०॥ आज तो मृग लाधां नहीं, उत्तर देशु स्वामी हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १७ ॥ सुं० ॥ वनमां दोय गया हवे, मृग दीठा तेणे ताम हो ॥सु०॥ जीम चिंते चित्तमां तदा, मृग हणीयें मां स काम हो ॥सु०॥ ग० ॥ १८ ॥ सु० ॥ तो व्रत जांगे मूलगु, पण होये कोप नरींद हो ॥सु०॥ दोष नहीं परवश पणे, इम कहे श्रीजिनचंद हो॥ सु०॥ग०॥१९॥ सु०॥ व्रत तो कालें फल दीयें, आजज फल नृप कोप हो॥ सु० ॥ सोमें वार्यो पण नवि रह्यो, कीधो व्रतनो लोप हो ॥सुं०॥ग०॥२०॥ ॥सु०॥मृग हणी मांस लेइ वल्यो, श्रीजयानदनें रास हो ॥सु०॥ बीजे खर्मे पभे कह्यो, सातमी ढाल विलास हो ॥ सु०॥ ग० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्राण जाय परलोक जो, पण व्रत नवि लोपाय ॥ बीजो तो इम व छु परें, सोम चित्त समजाय ॥१॥ प्राण राखवा आपणां, परनां न हणु प्राण ॥ माहारां वाहालां मुजने, परनें तिमज प्रमाण ॥ २ ॥ राजा रूसो मुज उपरें, प्राण धरो परदेश ॥ मृगनें छु माहारी करी, लोपु नहीं व्रत ले श ॥ ३ ॥ यत ॥ निंदतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु, लक्ष्मी समाविश तु गछतु वा यथेष्ट ॥ अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा, न्यायात्पथोन विचल ति कदापि धीरा ॥१॥ निमित्तमासाद्य जवेन किंचन, स्वधर्ममार्गं विसृजति

केत आवरें ॥ २१ ॥ न० ॥ श्रीजयानवने रास,बीजे खंर्मे ए कही ॥ न०॥ छठी ढाल रसाल, पद्मविजय गुरुथी लही ॥॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ १७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानद पूछे इश्युं, सुर ए स्वामी कवण ॥ नाटक कीधु निर्मेलु, वात कहे मुनि वयण ॥ १ ॥ वैताढ्यें खेचरवई, नाम जयंत निधान ॥ सु रय ग्रहणे समजियो, दीक्षा करुं आदान ॥ २ ॥ ज्ञानवत थयो गुरुथकी, आपी मुजनें आण ॥ एकाकीनी अवनीयें, विचरुं अवसर जाण ॥ ३ ॥ विंध्यगुफामां आवीयो, चोमासुं चउमास ॥ करी उपवास तिहां किणे, र ह्यो हुं रीजी उल्लास ॥ ४ ॥ तिहांथी दोय लोयण तदा, नयरगिरि दुर्ग नाम ॥ सुनद तिहां नृपति सदा, राज्य करे अभिराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ सुदर पापस्थानक कह्युं सोलमु ॥ ए देशी ॥

॥ सुदर दोय सेवक छे तेहनें, भीम सोम अभिधान हो ॥ सुदर ॥ एक गाव ते गुफाथकी, रायनु गोकुल थान हो ॥ १ ॥ सुदर ॥ गति परिमाणें मति होये ॥ ए आंकणी ॥ सु० ॥ राय आणाथी बिहु जणा, पामी नृप आदेश हो ॥ सु० ॥ गोकुलमां वासो वसे, शूरवीर सुविशेष हो ॥ सु० ॥ ॥ग०॥ २॥सु०॥ मृगया अरथे एकदा, आव्या गुफानें पास हो ॥सु०॥ मृ गयूथ देखी बहु तिहां, मूके बाण ते तास हो॥ सु० ॥ ग० ॥ ३ ॥ सु० ॥ कोइ मृगनें नवि लागीयु, बाण ते थया निराश हो ॥सु०॥ विस्मय ते बिहु पामीया, मृग आव्या मुज पास हो ॥सु०॥ ग०॥ ४ ॥सु०॥ मुज पासें सुणे देशना, मृग पूठें ते दोय हो ॥ सु० ॥ आव्या मुज देखी करी, तास विचार ते होय हो ॥ सु० ॥ ग० ॥ ५ ॥ सु० ॥ ए मुनिना महिमाथकी, मृगनें न लाग्यां बाण हो ॥ सु० ॥ ए तपसी कृपिराजीया, करे उपकारनें हाण हो ॥ सु०॥ ग० ॥ ६ ॥ सुं० ॥ मनमां बीहीना अतिघणु, कोधो मुज परणा म हो ॥ सु० ॥ कहे अपराध ए अम तणो, खमो तुमें तपसी स्वामि हो॥सु०॥ग०॥७ ॥ सु० ॥ अमें तुम मृग नहीं मारीयें,मत करजो अमराष हो ॥सु०॥ मुनि धर्म लाभ देइ कहे, नय नवि आणो सराख हो ॥ सु०॥ ॥ ग० ॥ ८ ॥ सु० ॥ तुमनें अभय छे पण सुणो, धर्मतत्त्व एकांत हो ॥ सु० ॥ सुखइछक सहु जीवडा, जीववु सहु इछंत हो ॥ सु०॥ ग० ॥ ९ ॥ सु० ॥ तेहनां प्राण जे अपहरे, नरकें जाये तेह हो ॥ सु० ॥ मांसाहारी

कोइ शस्त्र लागे नही रे, तेहनें अंग विशाल रे ॥ क० ॥ १५ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी रे, थइ वली ढुंढुजि ध्वान ॥ ते देखी विस्मित हुर्दे रे, उना रहे तिण थान रे ॥ क० ॥ १६ ॥ तव पाषाण पडे तिहां रे, मस्तक उपरें तास ॥ ते ते पथरे मारीजता रे, बुंब करे जिम दास रे ॥ १७ ॥ क० ॥ नय विह्वल नागा तिहां रे, नृपनें कहे सवि वात ॥ देवी परगट सोमनें रे, दिव्य शरीर विख्यात रे ॥ क० ॥ १८ ॥ देहकी सघली अपहरी रे, तुष्टमान थइ तेह ॥ धीर पारो काउस्सग्गनें रे, दीठो तुज व्रतनेह रे ॥ क० ॥१९॥ में तुज परीक्षा कारणें रे, देहकी हरितण दीध ॥ तुजनें काले परो डीये रे, राज्य यशो प्रसिद्ध रे ॥क०॥२०॥ श्रीजयानंदना रासमां रे,नांखी आठमी ढाल ॥ बीजे खंमें पद्म कहे रे, आगल वात रसाल रे ॥क०॥२१॥ २४५॥

॥ दोहा ॥

॥ महाव्रतवंता मुनि कनें, रहेजे जइनें रात ॥ एम कहीनें अदृश थइ, सोमने थइ सुखशात ॥ १ ॥ पार्यो काउस्सग्ग प्रेमथी, हियडे हरख न मात ॥ प्रणमे जाणी मुज प्रतें, उपसर्गनो अवदात ॥ २ ॥ रातें पूछे रागीयो, मुजनें कहो मुनिराय ॥ जीवाडयो मुजनें जिणें, माहारी कोण ते माय ॥३॥ में नांख्युं माहारी थणु, नगतिवंती नलि नांति ॥ समकेत पामी ए सुरी, अम पासें एकांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ निणदल वींदली दे ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें धर्म पाम्या एम जाणी, पूछे मुजनें सपराणी हो ॥ नविजन धर्म करो ॥ व्रत पालशो के ए नाहीं, मुजने नांखो ते आंही हो ॥ न० ॥ १॥ में कह्युं विराधशे नीम, आराधशे सोम ए नीम हो ॥न०॥ तुज परीक्षा करवा आवी, तुज धैर्य देखी थइ नावी हो ॥ न० ॥ २ ॥ तव सोम सुणी मुज धर्म, चिंतवे जीवादिक मर्म हो ॥ न० ॥ हवे नृपति सोमनी वात, देवता कृत साह्य विख्यात हो ॥ न० ॥ ३ ॥ ते सांजली विस्मित नृप, थयु मांस अजीर्ण अनूप हो ॥ न० ॥ थइ गूढ विसूचिका तास, तेह रातिमां गयो यमधाम हो ॥ न० ॥ ४ ॥ बीजी नरकें उत्पन्न, महापापथी तेह अधन्य हो ॥ न० ॥ अति उग्र पुण्य के पाप, फले तुरत ए शास्त्रे थाप हो ॥ न० ॥ ५ ॥ स्वामीनर्के मातु नीम, करी पाप अघोर नि सीम हो ॥ न० ॥ तेहज नरकें गयो तेह, व्रतनग तणु फल एह हो ॥ न० ॥ ६ ॥

बालिशा ॥ तप'श्रुतज्ञानधनास्तुसाधवो, न याति कष्टोपगमेपि विक्रियं ॥ ॥ ३ ॥ दोहो ॥ सोम विचारी सत्त्वथी, मृग नवि मार्यो तेण ॥ उत्तर रायनें आपीयो, अमनें न जड्यो एण ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सोम आव्यो निज घरजणी रे, जीम प्रशंसे राय ॥ मृग आमिष जे आणीयुं रे, खाधुं उदर जराय रे ॥ कर्म विटंवणा ॥ १ ॥ कर्मे जुउं हुं होय रे, कुर्गति जेटणा ॥ कर्म न छूटे कोय रे, नवनव दुःखिउं सोय रे ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ जीमनें पूछे नृपति रे, सोम न लायो रे केम ॥ तव ईर्ष्यायें जांखीयु रे, एहने छे ए नेम रे ॥ क० ॥ २ ॥ मृग लाधां प ण नवि हण्यां रे, तव रूठो नरराय ॥ मुज आणा लोपी इणे रे, बांधी लावो जाय रे ॥ क० ॥ ३ ॥ गाम एक तुज आपशुं रे, तव हवे लोजथी तेह ॥ सुजट सार्थे तस घर गयो रे, मारण चित्त धरेह रे ॥ क० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व शस्त्र करी हाथमां रे, आव्यो तिहां किण जाम ॥ सोम शकावत सु रथकी रे, वात सुणी वली ताम रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सोम नाठो घरथी हवे रे, परवत जावुं रे धारि ॥ नगर बाहिर जब नीकल्यो रे, जीम पण पद अनुसार रे ॥ क० ॥ ६ ॥ जीम पूठें सोम आगलें रे, लग जग मलिया रे तेह ॥ सोम विन्हल जय नासतो रे, जाणे आव्या एह रे ॥ क० ॥७॥ सुजट कहे किहां जाय छे रे, करी नृपनो अपराध ॥ किहां जाइश तुं ना शिनें रे, रूठो राय अगाध रे ॥ क० ॥ ८ ॥ कडुआं वयण सुणी इश्या रे, जय'आणी मनमांहि ॥ अति उतावलो नासतो रे, मनथी 'गतउत्साह रे ॥ क० ॥ए॥ इणे अवसरें मारग विचें रे, देडकी सूक्ष्म अपार ॥ चालती केइ केइ थिर रही रे, देखे सोम तिवार रे ॥ क० ॥१०॥ लस्कोगमे पग मू कवा रे, न मले ठाम विचाल ॥ केम जाउं इम चिंतवे रे, सोम महा कि रपाल रे ॥ क० ॥११॥ पर्वत आव्यो ढूंकडो रे, पहोंचु शीघ्रथी तेथ ॥ सु जटें नवि पकडाईयें रे, पण मडुकी मरे एथ रे ॥ क० ॥ १२ ॥ पण मुज प्राण जतां थकां रे, व्रत लोपुं किण रीत ॥ इत्यादिक ध्यातां थकां रे, करे अणसण ते अनीत रे ॥ क० ॥ १३ ॥ काउस्सग्ग करीनें रह्यो रे, परमेष्ठी करे ध्यान ॥ एहवे जीमादिक सहु रे, आव्या जट ते थान रे॥ ॥ क० ॥ १४ ॥ विविध शस्त्र मूके तदा रे, क्रूर महा विकराल ॥ पण

कोइ शस्त्र लागे नही रे, तेहनें अंग विशाल रे ॥ क० ॥ १५ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी रे, थइ वली डुडुनि ध्वान ॥ ते दिखी विस्मित हुदें रे, उना रहे तिण थान रे ॥ क० ॥ १६ ॥ तव पाषाण पडे तिहां रे, मस्तक ऊपरें तास ॥ ते ते पथरे मारीजता रे, बुब करे जिम दास रे ॥ १७ ॥ क० ॥ नय विव्हल नाग तिहां रे, नृपनें कहे सवि वात ॥ देवी परगट सोमनें रे, दिव्य शरीर विख्यात रे ॥ क० ॥ १८ ॥ देडकी सघली अपहरी रे, तु ष्टमान थइ तेह ॥ धीर पारो कावस्सग्गनें रे, दीठो तुज व्रतनेह रे ॥ क० ॥१९॥ में तुज परीक्षा कारणें रे, देडकी वरिसण दीध ॥ तुजनें काले परो ढीये रे, राज्य थशे प्रसिद्ध रे ॥क०॥२०॥ श्रीजयानदना रासमां रे,नांखी आठ मी ढाल ॥ बीजे खर्मे पद्म कहे रे, आगल वात रसाल रे ॥क०॥२१॥ २४५॥

॥ दोहा ॥

॥ महाव्रतवता मुनि कनें, रहेजे जइनें रात ॥ एम कहीनें अदृश थइ, सोमने थइ सुखशात ॥ १ ॥ पाख्यो काउस्सग्ग प्रेमथी, हियडे हरख न मा त ॥ प्रणमे जाणी मुज प्रतें, उपसर्गनो अवदात ॥ २ ॥ रातें पूछे रागीयो, मुजनें कहो मुनिराय ॥ जीवाडयो मुजनें जिणें, माहारी कोण ते माय ॥३॥ में नांख्यु माहारी घणु, जगतिवती नलि नांति ॥ समकेत पामी ए सुरी, अम पासें एकांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ निणवल बींदजी दे ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें धर्म पाम्या एम जाणी, पूछे मुजनें सपराणी हो ॥ नविजन धर्म करो ॥ व्रत पालशे के ए नाहीं, मुजने नांखो ते आंही हो ॥ न० ॥ १॥ में कह्यु विराधशे नीम, आराधशे सोम ए नीम हो ॥न०॥ तुज परीक्षा करवा आवी, तुज धैर्य देखी थइ नावी हो ॥ न० ॥ २ ॥ तव सोम सुणी मु ज धर्म, चितवे जीवादिक मर्म हो ॥ न० ॥ हवे नूपति सोमनी वात, देव ता कृत साह्य विख्यात हो ॥ न० ॥ ३ ॥ ते सांनली विस्मित नूप, थयु मांस अजीर्ण अनूप हो ॥ न० ॥ थइ गूढ विशूचिका ताम, तेह रातिमां गयो यमधाम हो ॥ न० ॥ ४ ॥ बीजी नरकें उत्पन्न, महापापथी तेह अधन्य हो ॥ न० ॥ अति उग्र पुण्य के पाप, फले तुरत ए शास्त्रें गाप हो ॥ न० ॥ ५ ॥ स्वामीनर्के मातु नीम, करी पाप अघोर नि सीम हो ॥ न० ॥ तेहज नरकें गयो तेह, व्रतनग तणु फल एह हो ॥ न० ॥ ६ ॥

मृतकारज करी हवे विहाणे, अपुत्रीयो नृप ए टाणे हो ॥ न० ॥ खोले ह वे योग्य राजान, राज्य मन्त्रीनें परधान हो ॥ न० ॥ ७ ॥ पंच दिव्य प्रग ट करी वासें, नगरीथी बाहीर निकासे हो ॥ न० ॥ परवत पासे जाय जा म, सोम कुटुम्ब खबरनें काम हो ॥ न० ॥ ८ ॥ जाय ते नगरीमांहि, गज रायें दीठो चन्नांहि हो ॥ न० ॥ तिहां कलशनु जल शिर नामे, आरोपे पृष्ठ नें गामें हो ॥ न० ॥ ए ॥ वली छत्र चामर वींजाय, हेषारव तुरंग कराय हो ॥ न० ॥ आकाशें देवी ते बोली, सांजलो सहु हियडु खोली हो ॥ न० ॥ ॥ १० ॥ सोम नाम ए तुमनें राय, में आप्यो गुण समुदाय हो ॥ न० ॥ ए हनी जे खमशे आण, तस जमघरें देइश ठाण हो ॥ न० ॥ ११ ॥ इम कही अदृश थइ देवी, सहु हरख्या तेह सुणेवि हो ॥ न० ॥ तेहनें सहु क रे प्रणाम, सहु माने रायनें गाम हो ॥ न० ॥ १२ ॥ वाजित्रध्वनि नन न वि माय, बंदीजन बिरुद बोलाय हो ॥ न० ॥ महा ऋद्धिथी प्रवेश उच्छिहा, आवी सिंहासनें बेठा हो ॥ न० ॥ १३ ॥ न्यायें परजानें पाले, दया धर्म घ णो अजुआले हो ॥ न० ॥ सोम दृढधर्मा दया पाली, इण नव पण सु खनी आली हो ॥ न० ॥ १४ ॥ जीम हिंसायें गयो नरकें, पापी किम जा ये सरगें हो ॥ न० ॥ मुज नमवा नूपति आयो, निज देशें अमारी बजा यो हो ॥ न० ॥ १५ ॥ सेवे गुरु तिम शुद्ध धर्म, प्रत्यक्ष दीठो जिणें मर्म हो ॥ न० ॥ एम धर्ममयी राज्य पाली, सौधर्मे गयो दुःख गाली हो ॥ ॥ न० ॥ १६ ॥ ते सामानिक थयो देव, में विहार कस्यो ततखेव हो ॥ ॥ न० ॥ ॥ फरी आव्यो हु इण थान ॥ देवता जुवे अवधिज्ञान हो ॥ न० ॥ ॥ १७ ॥ आव्यो उपकार संजारी, प्रणमी नाटक करे नारी हो ॥ न० ॥ गुरु सेवानें अहिंसा, तेहनां फल स्वर्गमां शस्यां हो ॥ न० ॥ १८ ॥ सां जली कहे श्रीजयानंद, जसु धर्मे बुद्धि अमंद हो ॥ न० ॥ युद्धादिक का रण टाली, स्थूलहिंसा नहीं करु जाली हो ॥ न० ॥ १ए॥ परस्त्रीनो त्या ग में कीधो, समकित व्रत तुमथी लीधो हो ॥ न० ॥ गुरु कहे तु सम्य ग पाले, ए कल्पवृक्ष सम जाले हो ॥ न० ॥२०॥ एहथी थशे तुज क ल्याण, कहे कुमर स्वामी परमाण हो ॥ न० ॥ निज आतम कृतारथ जा णे, मुनि प्रणमी गया घर विहाणे हो ॥ न० ॥२१॥ गुरुकमां ते सिंह सार, नवि प्रणम्यो धर्म लगार हो ॥ न० ॥ सुर प्रमुख ते गया निज था

न, लही श्रद्धा प्रमुख प्रधान हो ॥ न० ॥१२॥ अलगें मुनि करे विहार, युवराज नंदन हवे सार हो ॥ न० ॥ लीधो ते धर्मनें पासे, गुरु देव नक्ति अजुवाले हो ॥न०॥१३॥ ढाल नवमी बीजे खंमें,कही धर्मनो राग अखंमें हो ॥न०॥ गुरु उत्तमविजयनो बाल, कहे पद्मविजय सु रसाल हो ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन जय अवनीपति, पूछे प्रश्न प्रकार ॥ सामुद्रिक घणुं समज णो, कुण सुलक्षण कुमार ॥१॥ निमित्तियो दोय निरखीनें, सर्वांगें शुन रीति ॥ नृपनें कहे निमित्तियो, निर्णय कीधो नीति ॥२॥ सिंहसारनां लाछलो, तुमें ल क्षण ततकाल ॥ अनरथ स्वजननें आपशे, लोक द्वेष जिम काल ॥ ३ ॥ क्रूर बुद्धि कृतघ्न कह्यो, पर्दे पर्दे आपद गेह ॥ दुर्गतिगामी दुःख लहे, धर्म नो द्वेष धरेह ॥४॥ श्रीजयानद सोनागीयो, शुन लक्षण सर्वांग ॥ सुख कर्त्ता सवि विश्वनें, चक्रधारी ए चग ॥५॥ त्रण खंमनो अधिपति, बहुराजा बलवत ॥ सेवा एहनी सारशे, उपकारी ए अनत ॥६॥ न्याय धर्ममां निपुण ए, जस प्रताप जयवत ॥ शिवगामी सुस्वर धणी, एहना गुण छे अनत ॥ ७ ॥ विसरजे वारु परें, निमित्तियो नरनाह ॥ धरणीपति धारी करी अनुजने कहे उछाह ॥८॥ गोप्य अछे पण गाइयें, तुज आगल तहकीक ॥ सिंहसार तो शुन नहीं, श्रीजयानद सश्रीक ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ रामचंद्के बाग ॥ ए देशी ॥

॥ एणे समें दासी एक, राय तंबोल तणी री ॥ जाणी विश्वासी तेह, वात ते सर्व सुणी री ॥१॥ अवसर पामी राय, नाना प्रकार करी री ॥ परी क्षा कीधी तास, नैमित्त वचन धरी री ॥२॥ निश्चय कीधो तास, हवे सिंह सार पुरें री ॥ क्रीडतो करे उन्माद, लोकनें दुःख धरे री ॥३॥ शका न ध रे कांय, स्वेछायें विचरे री ॥ नर नारी आनरण, लूंटी लीये सुपरें री ॥४॥ फोडे नारीना कुंन, नारी सुरूपा हरे री ॥ शकट लूटी लूटी जाय, बहु अन्याय करे री ॥ ५ ॥ तुरंग खेलावे तेह, मारगमांहि जइ री ॥ कोप्या नगरना लोक, वीनवे जइ नरवइ री ॥ ६ ॥ लोकनें करी सत्कार, मोकले आप घरें री ॥ कुमर निभ्रछी राय, अति अपमान करे री ॥ ७ ॥ इणी परें वे त्रण वार, वार्यो पण न रहे री ॥ एक दिन दासी तेह, जाती दे खी कहे री ॥ ८ ॥ शुं लेइ जाये एह, ते कहे केम खसे री ॥ नृप अरपे

तंबोल, सुणी तिणें लीधुं घर्ले री ॥ ए ॥ रूठो कहे रे डुष्ट, नैमित्त साच वदे री ॥ कुमरें नोलावी तास, कहे तु जेह हृदे री ॥१०॥ दासी कहे ह वांत, सघलो जेह थयोरी ॥ कुमरें धारी वात, डुर्मन तेह नयोरी ॥११॥ यत ॥ न तरुस्तटिनीतटे चिर, न खले प्रीतिरघात्मनींदिरा ॥ नच धर्मर सोतिलोनके, नच गूढ हृदि तिष्ठति स्त्रिया ॥ १ ॥ ढाल ॥ दासीयें क ही सवि वात, कुमरें अन्याय कस्यो री ॥ रायें बोलावी ताम, नांखे क्रो ध नस्यो री ॥१२॥ रे पापी अन्याय, नगरमां नित्य दमे री ॥ लोक करे पो कार, सहुनें तुं न गमे री ॥१३॥ घरमां पण ए रीति, कुलमां कलंक स मो री ॥ जा हवे नगरथी दूर, देशांतरमां नमो री ॥१४॥ रहीश जो नगरी मांहि, तो हुं नाहिं सहु री ॥ कापीश नाकनें कान, पुत्र छे पण ए कहु री ॥१५॥चिंते सिंहकुमार, जाव परदेश यदा री ॥ श्रीजयानद कुमार, नृपति थाये तदा री ॥ १६ ॥ रागी लोकनें राय, एहनो वेखु सही री ॥ लेई जा उ परदेश, तो रहे दूध दहीं री ॥ १७ ॥ राज्य वेलायें मुक्त, बोलावे हर्ष धरी री ॥ त्रीजो नहीं कोइ योग्य, एहिज वात खरी री ॥१८॥ इम चिंति एक दिन्न, मायावत वदे री ॥ सांनली श्रीजयानद, आपण एक हृदें री ॥१९॥ देशांतर चलो नाय, जिहां आश्चर्य होवे री ॥ अतुल कला शीखा य, नाग्य परीक्षा जोवे री ॥ २० ॥ तीर्थ अनेक वधाय, तनु ए क्षेम सहे री ॥ धूर्तथी नवि वधाय, डुर्जन सयण लहे री ॥२१॥ एम अनेक गुण थाय, नहीं एक गण रह्यां री ॥ तुज विरहो न खमाय, तिणे ए व यण कह्यां री ॥२२॥ श्रीजयानदनें रास, दशमी ढाल कही री ॥ खम्म बी जे कहे पद्म, कपटें सिद्धि नही री ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कारण चालो तुमें, विश धारी कोइ वेश ॥ पित्रादिक अण पूछीनें, वारु करशुं विशेष ॥१॥ सरल ते जाणे सहु खरुं, पुण्यवत परधान ॥ सु कृतिमांहे शिरोमणि, मान्युं वचन प्रमाण ॥ २ ॥ रातें चाल्या रंगशुं, बिहुंये करी बनाव ॥ खजय सखाइ खांतशु, जावे कांइक जाव ॥ ३ ॥ कथा प्रसं ग करतां थकां, वारु धर्म विचार ॥ श्रीजयानद कहे सुणो, पुर्ण्ये सर्व प्र कार ॥ ४ ॥ पुर्ण्ये लखमी पामीयें, पायक सेवे पाय ॥ जस कीरति जग जागती, सुकुलें जन्म सदाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ सत्तरमुं पापनुं गम ॥ ए देशी ॥

॥ धरमें सुख पामे प्राणी, आपदा जाय सर्व ढलाणि ॥ सुर नरमां कीरति गवाणी हो लाल ॥ १ ॥ धर्म करो नवि प्राणी ॥ ए आंकणी ॥ खाएयो पृथिवीनें तरु जे आपे, मणिद्रव्यनें फल दुःख कापे ॥ ए धर्मथकी नहीं पापें हो लाल ॥ ध० ॥ २ ॥ अरिहंतनो धर्मज रूडो, बीजो जाणो सहु कूडो ॥ नवि माने अधर्मी जूठो हो लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ हवे बोले तिहां तिहसार, जाई तुम वचन उदार ॥ सत्य मानुं हुं निरधार हो लाल ॥ध०॥ ॥ ४ ॥ पण वात एक अवधारो, अधर्मीनें द्रव्य वधारो ॥ हमणां अधर्म सुखकारो हो लाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ धर्मी जन दुःखीया दीसे, ए वात छे विश्वावीशे ॥ अधर्मीथी दुःख जाय रीशें हो लाल ॥ ध०॥ ६ ॥ तव श्रीजयानंदजी बोले, मूरख नही तादरे तोले ॥ तु खोटी वातमां मोले हो लाल ॥ ध० ॥ ७ ॥ पापानुबंधी पुण्य, तेणे लखमी होये अगण्य ॥ तुं देखे हृदयथी शून्य हो लाल ॥ ध०॥ ८ ॥ वली पुण्यानुबंधी पाप, तेणें आ नवमां संताप ॥ ए परनव कीधलां आप हो लाल ॥ ध० ॥ ए॥ इण नवमां जे जे करशो, तेहनां फल आगल नोगवशो ॥ वावशो ते कालें फलशे हो लाल ॥ ध० ॥ १० ॥ तव दुष्ट कहे तिहसार, वाद ते प्रेमनो हरनार ॥ नाई म करो वाद विचार हो लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ कोइ निपुणनें पूछीयें वात, ते नांखे जे अवदात ॥ ते धारियें निश्चय भ्रात हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१२॥ ते श्रीजयानंदजी माने, बीजो दुष्ट ते एम मन जाणे ॥ एहने राय प्रजा सहु माने हो लाल ॥ ध० ॥ १३ ॥ राज्य योग्य टले तेम करीयें, ए वातमां पण कांय धरीयें ॥ एहनां नेत्र कदि अपहरियें हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१४॥ पछी राज्य ते माहरे आवे, एम चिंतवी कहे इंण दावें ॥ नाइ पण विना काम न आवे हो लाल ॥ ध० ॥ १५ ॥ जे हारे ते आपे नयण, एम तिहसार कहे वयण ॥ श्रीजयानंद माने सयण हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१६॥ कोइ गाममांहि हवे पेठ, गामठाकुर लोकशु वेठ ॥ तिहसारें ते सहु दीठ हो लाल ॥ ध० ॥१७॥ तस प्रणमीनें कहे एम, हु पापथी शुभ कहु नेम ॥ आतो धर्मथी कहे ए केम हो लाल ॥ ध० ॥ १८ ॥ ते रूप वेष तस देखी, माया नाटक वली पेखी ॥ बोले ठाकुर सवि उवेखी हो लाल ॥ ध० ॥१ए॥ नाई तादरी वात ते साची, सांनली तिह मनमां मा

ची ॥ नाइशुं चाल्यो हवे नाची हो लाल ॥ ध० ॥ २० ॥ आगल जइ मे त्र ते जाचे, कहे श्रीजयानद एम वाचें ॥ गामडीयाने वयणें शुं माचे हो लाल ॥ ध० ॥२१॥ बीजे खंडें अग्यारमी ढाल, कही पद्मविजय सुरसाल, धर्मथी होय मगलमाल हो लाल ॥ ध० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥३२४॥

॥ दोहा ॥

॥ गामडीया ने गमार ए, धर्म न लहे अधर्म ॥ कूड साखी केवल कह्या, मूरख न लहे मर्म ॥ १ ॥ जूतु बोले ए जडा, श्यो एहनो विश्वास ॥ गाम डियानो मत गणो, कोइ विश्वास चकास ॥ २ ॥ हस काग दृष्टांत हे, सांनल जे तुं लीह ॥ श्रीजय कहे ते सांनलो, बहु गनीर अबीह ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ धन्य पुरें एक इह मोहोटो अछे, तिहां बहु मत्स्यनी जाति॥सुबंधव॥ मीन लेवा एक काग पडयो तिहां, मीन तो जलमांहे जात ॥ सु० ॥१॥ गाम डीयानो विश्वास न कीजीयें ॥ ए आंकणी ॥ कागनी पांखो जलनीनी थई, न तराये न वन्हाय ॥ सु०॥ जलमांहे हवे बूडशे कागडो, इण समे अचरज थाय ॥ सु० ॥ गा० ॥ २ ॥ हसी हसने कहे सुणो स्वामीजी, कागडो बूडे छे एह ॥ सु०॥ नीचें पेशी पूठें धरी तुमें, काढो करुणा रे नेह॥सु० ॥ गा०॥३॥ तेमज कर्युं तिणें काकनें काढीयो, स्वस्थ थयो हवे काग ॥सु०॥ प्रार्थना करी हंसी सुत हंसनें, तुमें उपगारी महानाग ॥ सु० ॥ गा० ॥ ४ ॥ एम कही पोतानें वड लइ गयो, वातो करी विवेक ॥ सु० ॥ चचुपुटें फल लावी आपीयां, वावरे प्रीति विवेक ॥ सु० ॥ गा० ॥ ५ ॥ हंसी सहित हवे हं सलो उडवा, मांमे जेटले ताम ॥ सु०॥ काक कहे रे प्रिया तु जाय किहां, हंसी रोकी ते गाम ॥ सु० ॥ गा० ॥ ६ ॥ हंस कहे माहारी ए नारी छे, ताहरी ए नहिं नारी ॥सु०॥ तुंतो मिश सरिखो महा श्याम छे, एतो शशी अ नुहार ॥ सु०॥ गा०॥ ७ ॥ काक कहे तेहनो श्यो मेल छे, परकुलनी होये ना र ॥ सु० ॥ नगिनी होय तो समरूपें होय, एक कूखें अवतार ॥ सु०॥ गा० ॥ ॥ ८ ॥ जो नवि माने मुज ए वातडी, तो ए गामना लोक ॥सु०॥ छु ए परख्यो तव सहु दोसलो, मली मली सहुयें रे थोक ॥सु०॥ गा० ॥ ९ ॥ ते कहेशे तो मानशो के नहीं, हसे मानी ते वात ॥सु०॥ पित्रादिकनें सोंप्यो हंसलो, काक ते ग्रामें आयात ॥ सु० ॥ गा० ॥ १० ॥ आप्र विवाद सुणाव्यो लोकनें, मर

नाखें कहे वाणी ॥ सु० ॥ कूडी साखें मुज साचो करो, नहीं तो तुम करु हाण ॥ सु०॥ गा०॥ ११ ॥ नारी शिरें घट हुं अशुचि करुं, पछ्छ व्रण खोडुं रे तेम ॥ सु० ॥ पीडा उपजावुं अति आकरी, कहेशो न कसु रे केम ॥ सु०॥ गा० ॥ १२ ॥ नर नारी शिर वेसी वही जाउं,तावड मूक्यां जे धान ॥सु० ॥ ते कणनक्कण करु वली बालपी, करु अशनादि आदान ॥सु०॥ गा० ॥ ॥ १३ ॥ बीजा पण अनरथ हु बहु करुं, करो घर लोक अन्याय ॥ सु० ॥ मनुष्य वाणी सुणी विस्मय पामीया, बीहिना सहु समुदाय ॥सु०॥ गा०॥ ॥ १४ ॥ धर्माधर्म विचार कस्यो नहीं, मानी कूडी रे साख ॥ सु० ॥ धिग ए काक तथा धिग लोकनें, करे अन्याय ए नाख ॥ सु० ॥ गा० ॥ १५ ॥ हवे ते काक हंस नेला मली, पूछे आवी रे न्याय ॥ सु०॥ लोक कहे अमें परणतां देखीयो, सुणि हंस अति डुःखी थाय ॥सु०॥ गा०॥ १६ ॥ काक कहे हवे हंसनें सांजलो, ल्यो ए तुम प्रिया सार ॥सु०॥ प्राण दीया तुमें मुजनें तुम तणो, न करुं झोह लगार ॥सु०॥गा० ॥ १७ ॥ गामडीया पर ख्या इण रीतिशुं, ग्राम्यनें कहे हवे काग ॥सु०॥ रे मूरखो तुमें थोडे कारणें, कस्यो कूडी साख लाग ॥ सु०॥ गा०॥ १८ ॥ इह नव परनव तुमनें डुःख घणां, कूडी साख सम पाप ॥सु०॥ नहीं जगमां जेहथी सवि ऊपजे, हिंसादिकनो रे व्याप ॥ सु० ॥ गा० ॥ १९ ॥ हंस काग मली क्रोधथकी हवे, चांचें लावी रे आग ॥ सु० ॥ वरशी अगारानें बालीया, तेहनां घर नहीं ताग ॥ सु०॥ गा० ॥ २० ॥ मरण लही ने डुर्गतिमां गया, कूडी साख प्रनाव ॥सु०॥ एह कथा गामडीयानी सुणी, मत विश्वास तु लाव ॥सु०॥ गा० ॥ २१ ॥ वात सुणी कहे सिंह नाई सुणो, कूड कथा कही मुज्क ॥ सु०॥ मनुष्य परें पशु नवि बोले कदा,न ठगावं वातें तुज्क ॥सु०॥गा०॥२२ श्रीजयानंद कहे ए सत्य छे, सांजलो कारण तास ॥ सु० ॥ बीजे खंमें थारमी ढाल ए, पद्म कहे सुविलास ॥सु०॥ गा० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥३५८॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीमुख यक्ष वसे इहां, अर्चे लोक अगाध ॥ नंदी यक्ष नदी पुरें, विहु मित्र निर्बाध ॥ १ ॥ श्रीमुख नंदीघर सुखें, पोहोतो धारी प्रीत ॥ कहे नंदीनें किम नवि, मुज घर आवो मित्त ॥ २ ॥ नंदी कहे नावु तिणें, गामडीया जे गमार ॥ तेहनी बीक धरी तथा, विगत विवेक विचार ॥३॥

ची ॥ नाइशुं चाल्यो हवे नाची हो लाल ॥ ध० ॥ २० ॥ आगल जइ ने त्र ते जाचे, कहे श्रीजयानद एम वाचे ॥ गामडीयाने वयणें शुं माचे हो लाल ॥ ध० ॥२१॥ बीजे खंडें अग्यारमी ढाल, कही पद्मविजय सुरसाल, धर्मथी होय मगलमाल हो लाल ॥ ध० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥२२२॥

॥ दोहा ॥

॥ गामडीया ने गमार ए, धर्म न लहे अधर्म ॥ कूड साखी केवल कह्या, मूरख न लहे मर्म ॥ १ ॥ जूठु बोले ए जडा, श्यो एहनो विश्वास ॥ गाम डियानो मत गणे, कोइ विश्वास चकास ॥ २ ॥ हस काग दृष्टांत हे, सांजल जे तुं सीह ॥ श्रीजय कहे ते सांनलो, बहु गजीर अबीह ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ धन्य पुरें एक इह मोहोटो अछे, तिहां बहु मत्स्यनी जाति॥सुबंधव॥ मीन लेवा एक काग पडयो तिहां, मीन तो जलमांहे जात ॥ सु० ॥१॥ गाम डीयानो विश्वास न कीजीयें ॥ ए आंकणी ॥ कागनी पांखो जलनीनी थई, न तराये न उम्डाय ॥ सु०॥ जलमांहे हवे बूडशे कागडो, इण समे अचरज थाय ॥ सु० ॥ गा० ॥ २ ॥ हंसी हसने कहे सुणो स्वामीजी, कागडो बूडे छे एह ॥ सु०॥ नीचें पेशी पूठें धरी तुमें, काढो करुणा रे नेह॥सु० ॥ गा०॥३॥ तेमज कयुं तिणें काकनें काढीयो, स्वस्थ थयो हवे काग ॥सु०॥ प्रार्थना करी हंसी सुत हंसनें, तुमें उपगारी महाजाग ॥ सु० ॥ गा० ॥ ४ ॥ एम कही पोतानें वड लइ गयो, वातो करी विवेक ॥ सु० ॥ चचुपुटें फल लावी आपीयां, वावरे प्रीति विवेक ॥ सु० ॥ गा० ॥ ५ ॥ हंसी सहित हवे हं सलो उडवा, मांडे जेटले ताम ॥ सु०॥ काक कहे रे प्रिया तुं जाय किहां, हंसी रोकी ते ठाम ॥ सु० ॥ गा० ॥ ६ ॥ हंस कहे माहारी ए नारी छे, ताहरी ए नहि नारी ॥सु०॥ तुंतो मिश सरिखा महा श्याम छे, एतो शशी अ नुहार ॥ सु०॥ गा०॥ ७ ॥ काक कहे तेहनो श्यो मेल छे, परकुलनी होये ना र ॥ सु० ॥ नगिनी होय तो समरूपें होय, एक कूखें अवतार ॥ सु०॥ गा० ॥ ॥ ८ ॥ जो नवि माने मुज ए वातडी, तो ए गामना लोक ॥सु०॥ कु ए परख्यो तव सहु दीसलो, मली मली सहुयें रे थोक ॥सु०॥ गा० ॥ ९ ॥ ते कहेशे तो मानशो के नहीं, हंसे मानी ते वात ॥सु०॥ पिआदिकनें सोंप्यो हंसलो, काक ते ग्रामें आयात ॥ सु० ॥ गा० ॥ १० ॥ आप्र विवाद सुणाव्यो लोकनें, नर

धर्मे जयवंत ला०॥ध० ॥१०॥ इंम चिंती कह्युं धुरथी साचुं, आप्युं घरेणुं
कतारी जाचु ला० ॥ क० ॥ हरख धरी ते तस्कर माल्या. नृप ते वनमां
आगल चाल्या ला० ॥ आ० ॥११॥ तापस आश्रम पामीने वेसे, कुलप
ति कहे किम आश्रमें पेसे ला० ॥ आ० ॥ कोण तुं किम इहां आयो नाई,
तव नृप कहे सवि चित्त लगाइ ला० ॥ चि० ॥१२॥ कुलपति कहे सुण रा
क्षस एक, इण वन वसतो नांही विवेक ला० ॥ ना० ॥ तापस विण माण
सनें मारे, तेणें तुं तापस वेशने धारे ला० ॥ वे० ॥१३॥ एम कही तापस
वेशनें आपे, नृप पण निज अगें ते थापे ला० ॥ अ० ॥ करी फल आहा
रने सरोवर आवे, न्हावानें जव सज्ज ते थावे ला० ॥ स० ॥१४॥ तव रा
क्षस आवी कहे एम, निक्षु नवो तु आव्यो छे केम ला० ॥ आ० ॥ माह
री वात सांजल तु एक, नर नखी दिन एक राखुं छु टेक ला० ॥ रा० ॥
॥१५॥ बत्रीश लक्षणो नखीयें राजा, एक वरस लगें रहीयें ते ताजा
ला० ॥ एहवो नृप नंदीपुर स्वामी, पण रहे नित्य नित्य परवश्यो धामी
ला० ॥ प० ॥ १६ ॥ तेणे माहारो कोई दाव न फावे, पण एक वात
सुणी इणे रावें ला० ॥ सु० ॥ तुरग हरी अटवीमां लावे, एह वात खरी
होय तो फावे ला० ॥ हो० ॥ १७ ॥ जाणतो होय तो कहे मुज वात,
सांजली चिंतवे नृप विख्यात ला० ॥ साचु कहु तो ए मुज खाये, जूठु
कहुं तो व्रत मुज जाय ला० ॥ व्र० ॥ १८ ॥ अथवा प्राणनें अरथें जूठु,
बोलुं तो लागे पाप अपूठु ला० ॥ पा० ॥ प्राणथी अधिको धर्म ए मोहो
टो, नवि कहुं जूठ न थाउ खोटो ॥ ला० ॥ था० ॥ १९ ॥ मुज तनु देइ
बीजा उगारुं, लाज मोहोटो होये आतम तारुं ला० ॥ आ० ॥ होशे
वया एक वरस प्रमाण, निश्चय कह्यो इम आप विन्नाण ला० ॥ आ० ॥
॥ २० ॥ राय कहे हुं तेहज राय,कर तु ताहरे जे मन नाय ला० ॥जे०॥
ते कहे मुनि नवि मारु कहे साचु, खरो तापस के कांय छे काचु ला० ॥
॥ कां० ॥ २१ ॥ नृप कहे मुनियें आप्यो छे वेश,कोणप कहे तुज नखियें
विशेष ला० ॥ न० ॥ इष्ट देव सन्नार तु रंग, नृप पण निज वोसिरावे अ
ग ला० ॥ वो० ॥ २२ ॥ पंच परमेष्टिनु ध्यान ते ध्याय, राक्षस घोररूपें
तिहां थाय ला० ॥ रू० ॥ अट्टाट्ट हास्य स्थूल ते दंत, खावा धाये नृप
अक्षोन वंत ला० ॥ अ० ॥ २३ ॥ राक्षस अटवी क्षणमां न देखे, निज

ज्ञान बुद्धि गत ए जना, जोवु वदन न योग्य ॥ श्रीमुख कहे किम सत्य ए, फनि परीक्षा विण फोक ॥४॥ तेह परीक्षा तेहनी, करवा कारण होय ॥ हस काग थइ हरखशुं, सघलु कीधु सोय ॥ ५ ॥ हस काक बोल्या हता, सत्य तु जाण सुजाण ॥ न वदे आणद नृप परें, जूठ जते पण प्राण ॥६॥ कहे सिह आणद किश्यो, जेह न बोल्यो जूठ ॥ श्रीजय कहे तमें सांजलो, उत्तम एह अतुठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ लालननी देशी ॥ अथवा पापथानक अगीयारमु कूडु ॥ ए देशी ॥

॥ नदीपुर नगरें अति शोहे, आणद नरपति जनमन मोहे लालन, जनमन मोहे ॥ श्रीअरिहंतना धर्मनो रागी, पापजीरु मोहोटो वडजागी ला० ॥ मो० ॥ १ ॥ बत्रीश लक्षण अंग बिराजे, आवे बहु नृप सेवना काजें ला० ॥ से० ॥ कोडी मूलथी उंचु न राखे, आजरण ते निज अगें सराखे ला० ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रीडा करवा एकदिन आवे, पुर बाहिर आजरणें सोहावे ला० ॥ आ० ॥ विविध गतें तव वाजी खेलावे, तुरग तदा उडी आकाशें जावे ला० ॥ आ० ॥ ३ ॥ लावे अटवीमां नृप एकाकी, डुष्ट जाणी नृप उछल्यो ताकी ला० ॥ उ० ॥ जूमी पडयो हय अदृश्य हूउ, जमे एकाकी तिहां अचरिज जूउ ला० ॥ अ० ॥ ४ ॥ उघाडे सस्त्र चोर ते चार, मलीया नवि खोजाणो लगार ला० ॥ खो० ॥ चोर कहे अम जाग्यें मलीयो, अलकार युत्त तुज अटकलीयो ला० ॥ तु० ॥५॥ चरित्र अमारु सांजल राय, सूरिपुर नृप सेव कराय ला०॥से०॥ क्षत्रीपुंगव कांय अपराध कीनो, अमने देश निकाल ते दीनो ला० ॥नि०॥६॥ गुरु कन्हे धर्म सुणी अमें लीधु, नवि सेवुं कोइनुं अण दीधु ला० ॥ को० ॥ पण अमचो निर्वाह न थाय, नृपति विण बीजो पीडाय ला० ॥ बी० ॥७॥ लक्ष्थी उंडी चोरी न करीयें, नित्य परिणाम न हीणडा धरीयें ला० ॥ही०॥ तेणे नृपनुं धन बहु अमें लेशुं, तेहवु नहीं होय तो अमें जावाने देशुं ला० ॥जा०॥८॥ तु कोण बे आजरण क्यां मूलां, सत्य कहो अम वयण अमूलां ला० ॥ ॥ व० ॥ ल्यो अलकार ए नृप मन चिंते, आजीविका करो डुःख व्यतीतें ला० ॥ डु० ॥९॥ पापनुं मूल अनृत नवि बोलु, धन बे विनाशी तेणें चित्त न मोलुं ला० ॥ चि० ॥ धनथी मळ्युं सुख धर्मे अनत, सत्य समान न

धर्म जयवत ला०॥ध० ॥१०॥ इम चिंती कह्युं धुरथी साचुं, आप्युं घरेणुं कतारी जाचु ला० ॥ क० ॥ हरख धरी ते तस्कर माल्या. नृप ते वनमां आगल चाल्या ला० ॥ आ० ॥११॥ तापस आश्रम पामीने बेसे, कुलप ति कहे किम आश्रमें पेसे ला० ॥ आ० ॥ कोण तु किम इहां आयो नाई, तव नृप कहे सवि चित्त लगाइ ला० ॥ चि० ॥१२॥ कुलपति कहे सुण रा क्षस एक, इण वन वसतो नांही विवेक ला० ॥ ना० ॥ तापस विण माण सनें मारे, तेणें तुं तापस वेशने धारे ला० ॥ वे० ॥१३॥ एम कही तापस वेशनें आपे, नृप पण निज अगें ते थापे ला० ॥ अ० ॥ करी फल आहा रने सरोवर आवे, न्हावानें जव सज्ज ते थावे ला० ॥ स० ॥१४॥ तव रा क्षस आवी कहे एम, भिक्षु नवो तु आव्यो ठे केम ला० ॥ आ० ॥ माह री वात सांभल तुं एक, नर नखी दिन एक राखुं छु टेक ला० ॥ रा० ॥ ॥१५॥ बत्रीश लक्षणो नखीयें राजा, एक वरस लगें रहीयें ते ताजा ला० ॥ एहवो नृप नंदीपुर स्वामी, पण रहे नित्य नित्य परवस्यो धामी ला० ॥ प० ॥ १६ ॥ तेणे माहारो कोई दाव न फावे, पण एक वात सुणी इणे रावें ला० ॥ सु० ॥ तुरंग हरी अटवीमां लावे, एह वात खरी होय तो फावे ला० ॥ हो० ॥ १७ ॥ जाणतो होय तो कहे मुज वात, सांभली चिंतवे नृप विख्यात ला० ॥ साचु कहु तो ए मुज खाये, जूतु कहुं तो व्रत मुज जाय ला० ॥ व्र० ॥ १८ ॥ अथवा प्राणनें अरथें जूतु, बोलु तो लागे पाप अपूतु ला० ॥ पा० ॥ प्राणथी अधिको धर्म ए मोहो टो, नवि कहुं जूठ न थाउ खोटो ॥ ला० ॥ था० ॥ १९ ॥ मुज तनु देइ बीजा वगारुं, लाभ मोहोटो होये आतम तारुं ला० ॥ आ० ॥ होशे वया एक वरस प्रमाण, निश्चय कर्यो इम आप विनाण ला० ॥ आ० ॥ ॥ २० ॥ राय कहे छुं तेहज राय,कर तु ताहरे जे मन नाय ला० ॥जे०॥ ते कहे मुनि नवि मारु कहे साचु, खरो तापस के कांय ठे काचु ला० ॥ ॥ कां० ॥ २१ ॥ नृप कहे मुनियें आप्यो ठे वेश,कोणप कहे तुज नखियें विशेष ला० ॥ न० ॥इष्ट देव संभार तु रग, नृप पण निज वोसिरावे अ ग ला० ॥ वो० ॥ २२ ॥ पंच परमेष्ठिनु ध्यान ते ध्याय, राक्षस घोररूपें तिहां थाय ला० ॥ रू० ॥ अट्टाट्ट हास्य स्थूल ते दंत, खावा धाये नृप अक्षोभ वंत ला० ॥ अ० ॥ २३ ॥ राक्षस अटवी क्षणमां न देखे, निज

पुर बाहिर क्रीडातो पेखे ला० ॥ क्री० ॥ सैन्यनें नृपण तेह तुरंग, तिम हीज देखे पूरव रंग ला० ॥ पू० ॥ २४ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी थाय, इंद्रजाल के नवि समजाय ला० ॥ गगनें देदीप्यमान देव दो दीसे, एक कहे सुणो वात जगीशें ला० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खमें तेरमी ढाल, सांजलतां होये मंगलमाल ला० ॥ मं० ॥ श्रीजयानंदना रासमां जाखी, पद्मविजय कहे चरित्र ठे साखी ला० ॥ च० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥३ए५॥

॥ दोहा ॥

॥ उणद्विज उद्याने अछु, नदी यक्ष उण नाम ॥ मित्र श्रीयक्ष सुजनें, तेडयो हु गयो ताम ॥ १ ॥ कूट साखी परीक्षा करी, गामडियानी गमार ॥ सुजनें कहे हवे मित्र ते, कहो तुम नयर प्रकार ॥ २ ॥ में कह्यु उत्तम माहरा, नयरमां नृप नर नारि ॥ सत्यवादी गुन लक्षणा, श्रीमुख कहे श्रीकार ॥३॥ किम मानुं साचुं करी, इम संदेह अपार ॥ आवी परीक्षा अमें करी, सत्यवादी शिरदार ॥४॥ धन्य तु दृढव्रतनो धणी, नवि चूक्यो निज नेम ॥ पामीश इह नव परनवें, इच्छित संपद एम ॥ ५ ॥ आमयहर मणि आपीयो, खड्ग शत्रुजय खात ॥ आपीनें अदृश थया, सांजली प्रजा प्रशांत ॥६॥ नृपतणी स्तवना जणे, प्रजालोक पुण्यवंत ॥ मणिथी रोग गमावतो, खड्गें रिपुजय खांत ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वादिक व्रत सवि, पाली पूरण प्रीति ॥ सात क्षेत्रे धन सातवी, सुरवर थया सुरीति ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ अढीयानी देशी ॥

॥ कहे श्रीजय सुण सिंह,वात कहुं निरबीह॥उत्तम नर जही ए, पूठीयें तिहां सही ए॥ १ ॥ ते कहेशे ते साच, करशुं प्रमाण तस वाच ॥ सिंह अंगी करे ए, आगल संचरे ए ॥ २ ॥ श्रीविशालपुर नाम, पोहोता क्रमें तिण गाम ॥ तास उद्यानमां ए, देखता शानमां ए ॥३॥ विद्याविलास अनिधान, कलाचारज गुनवान ॥ धनुर्वेदादिका ए, बहुत कला जिका ए ॥ ४॥ नृप पुत्रादिक जेह, पांचशें ठात्रनें तेह ॥ शीखवे गुन परें ए, गया तस परिसरें ए ॥ ५ ॥ सिंहशुं श्रीजयानंद,नमी तस पद अरविंद ॥ पूछे आपनी ए, वात गुन पापनी ए ॥ ६ ॥ कहे कलाचारज वात, शास्त्र लोक अवदात ॥ गुन ते धर्मथी ए, अगुन अधर्मथी ए ॥ ७ ॥ सांजली श्रीजयानंद, पाम्या परमानंद ॥ कुमलाणो वली ए, सिंह ते मन वली ए ॥ ७ ॥ कलाचारयनी

पास, करवा कला अभ्यास ॥ जणवा तिहां रह्या ए, चित्तमां गहगह्या ए ॥ ए ॥ कलाचारज वश कीध, गात्रोगानन हरी लीध ॥ विनयादिक करी ए, श्रीजय चित्त धरी ए ॥ १० ॥ अल्प दिनें जाण्यो तेह, सकल कला गुण गेह ॥ अनुक्रमें आण हीए, कलाचारयनी सही ए ॥ ११ ॥ गात्र जणावे ताम, एम सहु मन अभिराम ॥ सहुनें वल्लन घणो ए, लागे शोहामणो ए ॥ १२ ॥ स्पर्द्धायें जणे सिंह, ते पण रातनें दीह ॥ बहुदिनें अल्प लह्यो ए, जाग्य प्रमाण कह्यो ए ॥ १३ ॥ नाम विशाल जयराय, षट षट मासें आय ॥ परीक्षा सहु तणी ए, करतो नृपधणी ए ॥ १४ ॥ एक दिन आव्यो तेह, पुत्रादिकनें स्नेह ॥ सहुनें परखतो ए, नयणें निरखतो ए ॥ १५ ॥ ताड शिरें तव्यु एक, मोरपिछ अति ठेक ॥ वींधे धनुर्द्धरा ए, तेह कुमरवरा ए ॥ १६ ॥ कह्यो तंतु न छेदाय, पाठक मन कलपाय ॥ आण श्रीजयतणी ए,करता ते गुणी ए ॥ १७ ॥ तंतु बताव्यो जेह, वींध्यो श्रीजयें तेह ॥ हरख्या तव सहु ए, देखी कला बहु ए ॥ १८ ॥ यंत्र मुक्तादिक वात, चरित्र मांहे घणी जात ॥ ते तिहांथी लहो ए, इहां सक्षेप कह्यो ए ॥ १९ ॥ बीजे खमें ढाल, चौदमी अति सुरसाल ॥ पद्मविजय कही ए, नविजनें सद्दही ए ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ ४१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कमलपत्र तिहां मांमीनें,गुरु बतावे जेह ॥ श्रीजय छेदे ते तंतु,खडूं न बीजुं रेह ॥ १ ॥ वली मूके कर चक्रनें, छेदे जे सहु ताल, गिरिशिर दूर शिला रही, चूरे ते ततकाल ॥ २ ॥ अश्वयुद्ध करतां थकां, सुजट हजारो तेण ॥ महावीर्यथी जीतिया, श्रीजयें बहु शस्त्रेण ॥ ३ ॥ वली धारा गति अश्वनें, वट शाखा विलग्ग ॥ पवन वेग विहुपगथकी, अश्वने उपाड्यो सलग्ग ॥ ४ ॥ इम गज युद्धे पाडीया, आधोरणादिक वीर ॥ इत्यादिक बहु देखीनें, नृपें जाण्यो धीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ साहेला हे ॥ ए देशी ॥

॥ साहेला हे, ते नृपादिक सर्व, विस्मित मुदित थया हवे हो लाल ॥ सा० ॥ शिर धूणावता तेह, सिंह विना सहु ए स्तवे हो लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ वीर्य कला गुण देख, पूछे पाठकनें नृपति हो लाल ॥सा०॥ ए कोण पुरुष रतन्न, पाठक कहे सुणो सांप्रति हो लाल ॥ २ ॥ सा० ॥ प

पुर बाहिर क्रीडातो पेखे ला० ॥ क्री० ॥ सैन्यनें नृपण तेद तुरंग, तिम
हीज देखे पूरव रंग ला० ॥ पू० ॥ २४ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी थाय, इ
ड्जाल के नवि समजाय ला० ॥ गगनें देदीप्यमान देव दो दीसे, एक क
हे सुणो वात जगीशें ला० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खमें तेरमी ढाल, सां
नलतां होये मंगलमाल ला० ॥ मं० ॥ श्रीजयानंदना रासमां जाखी, प
द्मविजय कहे चरित्र छे साखी ला० ॥ च० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥३९५॥

॥ दोहा ॥

॥ उणदिज उद्याने अछु, नदी यक्ष उण नाम ॥ मित्र श्रीयक्षें सुजनें, तेडयो छु गयो ताम ॥ १ ॥ कूट साखी परीक्षा करी, गामडियानी गमार ॥ सुजनें कहे हवे मित्र ते, कहो तुम नयर प्रकार ॥ २ ॥ में कह्यु उत्तम माहरा, नयरमां नृप नर नारि ॥ सत्यवादी गुन लक्षणा, श्रीमुख कहे श्री कार ॥३॥ किम मानु साचु करी, इम संदेह अपार ॥ आवी परीक्षा अ में करी, सत्यवादी शिरदार ॥४॥ धन्य तुं दृढव्रतनो धणी, नवि चूक्यो निज नेम ॥ पामीश इह जव परजवें, इछित संपद एम ॥ ५ ॥ आमयहर मणि आपीयो, खड्ग शत्रुजय खांत ॥ आपीनें अदृश थया, सांजली प्रजा प्र शांत ॥६॥ नृपतणी स्तवना जणे, प्रजालोक पुण्यवंत ॥ मणिथी रोग ग मावतो, खड्गें द्विट्जय खांत ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वादिक व्रत सवि, पाली पूर ण प्रीति ॥ सात क्षेत्रें धन साचवी, सुरवर थया सुरीति ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ अढीयानी देशी ॥

॥ कहे श्रीजय सुण सिंह,वात कहु निरबीह॥उत्तम नर लही ए, पूछीयें ति हां सही ए ॥ १ ॥ ते कहेशे ते साच, करशुं प्रमाण तस वाच ॥ सिंह अं गी करे ए, आगल संचरे ए ॥ २ ॥ श्रीविशालपुर नाम, पोहोता क्रमें ति ण गाम ॥ तास उद्यानमां ए, देखता शानमां ए ॥३॥ विद्याविलास अनिधा न कलाचारज गुनवान ॥ धनुर्वेदादिका ए, बहुत कला जिका ए ॥ ४॥ नृप पुत्रादिक जेह, पांचशें गात्रनें तेह ॥ शीखवे गुन परें ए, गया तस परिसरें ए ॥ ५ ॥ सिंहशुं श्रीजयानंद,नमी तस पद अरविंद ॥ पूछे आपनी ए, वा त गुन पापनी ए ॥ ६ ॥ कहे कलाचारज वात, शास्त्र लोक अवदात ॥ गु न ते धर्मथी ए, अगुन अधर्मथी ए ॥ ७ ॥ सांजली श्रीजयानंद, पाम्या प रमानंद ॥ कुमलाणो वली ए, सिंह ते मन वली ए ॥ ८ ॥ कलाचारयनी

पास, करवा कला अभ्यास ॥ नणवा तिहां रह्या ए, चित्तमां गहगह्या ए ॥ ए ॥ कलाचारज वश कीध, छात्रोगानन हरी लीध ॥ विनयादिक करी ए, श्रीजय चित्त धरी ए ॥ १० ॥ अल्प दिनें नण्यो तेह, सकल कला गुण गेह ॥ अनुक्रमें आण हीए, कलाचारयनी सही ए ॥ ११ ॥ छात्र नणावे ताम, एम सहु मन अनिराम ॥ सहुनें वह्लन घणो ए, लागे शोहामणो ए ॥ १२ ॥ स्पर्द्धायें नणे सिह, ते पण रातनें दीह ॥ बहुदिनें अल्प लह्यो ए, नाग्य प्रमाण कह्यो ए ॥ १३ ॥ नाम विशाल जयराय, षट षट मासें आय ॥ परीक्षा सहु तणी ए, करतो नूधणी ए ॥ १४ ॥ एक दिन आव्यो तेह, पुत्रादिकनें स्नेह ॥ सहुनें परखतो ए, नयणें निरखतो ए ॥ १५ ॥ ताड शिरें रच्युं एक, मोरपिछ अति छेक ॥ वींधे धनुर्द्धरा ए, तेह कुमरवरा ए ॥ १६ ॥ कह्यो तंतु न छेदाय, पाठक मन कलपाय ॥ आण श्रीजयनणी ए,करता ते गुणी ए ॥ १७ ॥ तंतु बताव्यो जेह, वींध्यो श्रीजयें तेह ॥ हरख्या तव सहु ए, देखी कला बहु ए ॥ १८ ॥ पत्र मुक्तादिक वात, चरित्र मांहे घणी जात ॥ ते तिहांथी लहो ए, इहां संक्षेप कहो ए ॥ १९ ॥ बीजे खर्मे ढाल, चौदमी अति सुरसाल ॥ पद्मविजय कही ए, नविजनें सद्दही ए ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ ४१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कमलपत्र तिहां मांमीनें,गुरु बतावे जेह ॥ श्रीजय छेदे ते तंतु,खर्हु न बीजु रेह ॥ १ ॥ वली मूके कर चक्रनें, छेदे जे सहु ताल, गिरिशिर दूर शिला रही, चूरे ते ततकाल ॥ २ ॥ अश्वयुद्ध करतां थकां, सुनट हजारो तेण ॥ महावीर्यथी जीतिया, श्रीजयें बहु शस्त्रेण ॥ ३ ॥ वली धारा गति अश्वनें, वट शाखा विलग्ग ॥ पवन वेग बिहुपगथकी, अश्वने उपाडयो सलग्ग ॥ ४ ॥ इम गज युद्धे पाडीया, आधोरणादिक वीर ॥ इत्यादिक बहु देखीनें, नूपें जाण्यो धीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ साहेला हे ॥ ए देशी ॥

॥ साहेला हे, ते नूपादिक सर्व, विस्मित मुदित थया हवे हो लाल ॥ सा० ॥ शिर धूणावता तेह, सिह विना सहु ए स्तवे हो लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ वीर्य कला गुण देख, पूछे पाठकनें नूपति हो लाल ॥सा०॥ ए कोण पुरुष रतन्न, पाठक कहे सुणो सांप्रति हो लाल ॥ २ ॥ सा० ॥ प

रदेशी कोइ एह, बांधव सहित कला नणे हो लाल ॥ सा० ॥ क्षत्री पुं गव शुद्ध, नवि जाणुं रहे किहां कणे हो लाल ॥ ३ ॥ सा०॥ चिंतवे नरप ति ताम, राज्य योग्य निश्चय करे हो लाल ॥ सा० ॥ ए ने राजकुमार, ल क्षण सवि तेहनां धरे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥ आदर करिय अपार, पूजी पावक पर परें हो लाल ॥ सा० ॥ ठात्र नणावण आण, देई नृप गया म दिरें हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ श्रीजयानद कुमार, गीत नाटघादिक बहु नणे हो लाल ॥ सा० ॥ कला बहोंत्तेर विशेष, पामी पसाय गुरुतणे हो लाल ॥ ६ ॥ सा० ॥ ठात्र नणावे नित्य, गुरुनें वीसामो करे हो ला ल ॥ सा० ॥ एकदा परीक्षा निमित्त, रायनो ढंढेरो फिरें हो लाल ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ तेहनें इच्छित देश, आपु जे तोले करी हो लाल ॥ सा० ॥ श्री जय तोले ताम, गजनें नावामां धरी हो लाल ॥ ८ ॥ सा० ॥ जलमां मूके तेह, बूडे तिहां रेखा करे हो लाल ॥ सा० ॥ गज उतारी तेह, ना वामां पञ्चर नरे हो लाल ॥ सा० ॥ ए ॥ रेखा लगें जल आय, तव पञ्च र तोले सवे हो लाल ॥ सा० ॥ तेहना नार प्रमाण, हाथीनु पण सनवे हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ नूपति विस्मय पामि, आदरथी घर लावियो हो लाल ॥ सा० ॥ स्नान नोजन शुन रीत, बहु गौरव करे नावियो हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥ सर्व कलामां प्रवीण, गुणवंतो पंमित लही हो लाल ॥ सा० ॥ रूप कला गुणें तास, निजपुत्री अनुरूप सही हो ला ल ॥ १२ ॥ सा० ॥ अण इछतां पण राय, पुत्री मणिमजरी तणो हो लाल ॥ सा० ॥ कीधो शुन विवाह, नृप दायजो आपे घणो हो लाल ॥ ॥ १३ ॥ सा० ॥ हय गय रथने पत्ति, देश एक आपे वली हो लाल ॥ ॥ सा० ॥ घर उपकरण समेत, मोहोल एक दीये मनरुली हो लाल ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ मणिमजरीशुं नोग, दिन दिन नोगवे अनिनवा हो ला ल ॥ सा० ॥ जींती नृप अनेक, सोंपे नृपनें नवनवा हो लाल ॥ १५ ॥ ॥ सा० ॥ पामे प्रतिष्ठा सार, हवे एक नृप शूररायनें हो लाल ॥ सा० ॥ जींतवा जातां निषेध, करी कहे जींतुं हु जायनें हो लाल ॥ १६ ॥ सा० ॥ सेना लेइ गयो तेह, साहमो आव्यो नृपति हो लाल ॥ सा० ॥ युद्ध थ शुं दोय सैन्य, नाग्यो कुमर सेनापति हो लाल ॥ १७ ॥ सा० ॥ कवचा कु मर नरिंद, युद्ध कर्युं तिहां तेणिपरें हो लाल ॥ सा० ॥ वैरी सेना नष्ट,

ूर उठ्यो तव ततपरें हो लाल ॥ १८ ॥ सा० ॥ वाणें बेहु करे युद्ध, गगन दिशो सघली नरी हो लाल ॥ सा० ॥ अनुक्रमें सात धनुष, बेदे कु नार शरें करी हो लाल ॥ १९ ॥ सा० ॥ नांग्यो रथ वली वर्म, खड्ग ले हनें धावियो हो लाल ॥ सा० ॥ कुमरें खड्गें खड्ग, खम्न करीनें वधावियो हो लाल ॥ २० ॥ सा० ॥ मोघरें मोघर नांगी, गदायें गदा चूरण करे हो लाल ॥ सा० ॥ शस्त्र रहित थयो तेह, बाहु युद्ध मल्लनी परें हो लाल ॥ २१ ॥ सा० ॥ बहु वेला करी युद्ध, शूरनें हृदयमां ताडियो हो लाल ॥ सा० ॥ मूर्च्छा लही पड्यो नूमि, यश अवर लगें चाडियो हो लाल ॥ २२ ॥ सा० ॥ निगडबध करी तास, जीवन बाटी सज्ज कस्यो हो लाल ॥ सा० ॥ सैन्यने अनय ते दीध, जइ नृपनें आगल धस्यो हो लाल ॥ २३ ॥ सा० ॥ कुमर वयणें करी तास, मूक्यो दम लेइ यदा हो लाल ॥ सा० ॥ वयावत एम जाणी, मूके शत्रु नम्यो तदा हो लाल ॥ २४ ॥ सा० ॥ बालें जीत्यो मुज्ज, एह वैराग्य धरी मनें हो लाल ॥ सा० ॥ पुत्रनें थापी राज्य, दीक्षा लीधी गुरु कनें हो लाल ॥ २५ ॥ सा० ॥ पाली निरतिचार, केवल लही शिवपद वस्यो हो लाल ॥ सा० ॥ धन्य एहनो अवतार, एणी परें अतर रण कस्यो हो लाल ॥ २६ ॥ सा० ॥ बीजे खमें ढाल, पन्नरमी ए सोदामणी हो लाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे एम, धर्म ते जिम चिंतामणि हो लाल ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाग्यवत नोगी नला, राज्य वृद्धि करनार ॥ नगर लोक नरपति न णी, हर्ष पमाडण हार ॥ १ ॥ सुखमां काल श्रीजयतणो, जाय नित्य जय कार ॥ खेवाये खर नानुयें, सिंह जिम घूक शिरदार ॥ २ ॥ लखमी आ पे नवि लीये, ईर्ष्यानें अनिमान ॥ अवलु चिंते उंयमी, नावे शान निदा न ॥ ३ ॥ यत ॥ खल खियतएवान्य, ऋद्धिनि सत्कृतोप्यलम् ॥ पश्यन् साम्यश्रियं शुष्येत्, सिक्तोऽपि हि च वासक ॥ १ ॥ दोहा ॥ देशांतरें दुख वाखवा, लेई जाउं हुं लाहार ॥ एम चिंतीनें एम कहे, वात सुणो सुविचार ॥ ४ ॥ निजनयरीथी नीकल्या, देश वर्शननें दूर ॥ मनवंछित मनमां रस्यु, पाम्या न कौतुक पूर ॥ ५ ॥ आसन्न रहेता आपणें, जाणे मावित्र जाम ॥

मावित्र माणस मोकली, तेडावी लिये ताम ॥ ६ ॥ सुख गिरिधर मुज स
थ जो, नहीं आवो मनधार ॥ एकाकी जाणु भ्रमें,तुज वियोग ङ ख त्यार॥७॥

॥ ढाल शोलमी॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ मन चिंतवे रे, श्रीजयानंद शिरोमणि ॥ मुज आशय रे, आव्यो सहु
अग्रगणी ॥ केम एकलो रे, मूकु तेणें जावू खरुं ॥ तस लांखे रे, आवश्
सार्थे तिम करु ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तिम करु एम कही करे सामग्री,वास घ
हार शाख ए ॥ श्रीजयानंद लखे श्लोकह, तेहमां एम लाख ए ॥ यत ॥
रत्वा जलाशयेष्वष्टौ, मासांश्चित्रेषु कौतुकान् ॥ वर्षासु कुरुते हंस , स्वपं
मानसे रतिं ॥ १ ॥ निजनारीणु परिवार सहुने, वची खड्ग सहाय ए ।
सिंह सार्थे नीकल्यो ते, नगरथी निरमाय ए ॥ २ ॥ पुरग्रामें रे, फरत
इच्छायें करी ॥ जोवे कौतुक रे, इण अवसर मणिमंजरी ॥ प्रात समय
रे, चिंतवे मुज पति किहां गया ॥ पूछे परिकर रे, ते पण सहु विलख
थया ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ तेणें पण नृपनें जणाव्यु, मूकी निज नर राय ए।
ग्राम नगर उद्यान प्रमुखें, बहु परें शोधाय ए ॥ खोलतां नवि शोध लाधी
शोकातुर नृप बहु थयो ॥ इण अवसर श्लोक देखी, मणिमंजरी आणव
नयो ॥ ४ ॥ कहे तातनें रे, कौतुकें देश जोई करी, वर्षायें आवशे रे, मु
जपति जाणजो इहां फरी ॥ तव धीरज रे, धरीनें राय प्रमुख रह्या ॥ हवे
दोय जण रे, चाल्या आगें मन गह गह्या ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सिंह एकदा ज
यनें लांखे, अधर्मे लहु कष्ट ए ॥ तु सहेशो कष्ट एणि परें, तुतो धर्मे लष्ट
ए ॥ कहे श्रीजयानंद ताहरे, संगें पामु आपदा ॥ पापी संगें धर्मवंत, सीदा
ये जाये संपदा ॥६॥ यत ॥ तेजोमयोऽपि पूज्योऽपि, पाविना नीच धातुना ॥
अयसा संगतोवन्हि, सहते घनताडनम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ कुसंगतें रे, म
हिमा मोहोटानो नवि रहे ॥ लसण संगें रे, गंध कपूर सवे जहे ॥ तव पा
पी रे, क्रोधें बोल्यो एणी परें ॥ वाद आपणो रे, हजीअ न लांग्यो कोइ नरें
॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कलाचार्यनां वचन बहुविध, तेह नांही प्रमाण ए ॥ विना
इव्यें जेह आपे, अशननें वली पान ए ॥ तेहनो मत खरो जाणे, पण
तो चक्षुनु अछे ॥ श्रीजयानंदें मानीयु तव, हरख्यो सिंह कहे पछें ॥ ८ ॥
॥ त्रुटक ॥ शक्ति परीक्षण आज आगल, जाछु हु पुर गाम ए ॥ तुमें विलं
वें आवजो लाई, पूछें लोजन काम ए ॥ जो न लाले काम मुजथी, तो तुमें

पढें साधजो ॥ आज मुजथी काम लीजे, काल तो तमें वाधजो ॥ ए ॥ एम कहीनें रे, आगल चाल्यो ते हवे ॥ चमसेन रे, शतकूटगिरिप्रस्तु एह वे ॥ नदिसाल रे, नगरें अवस्कध कारणें ॥ जाय ठे तिहां रे, सिंह पड्यो निल्ल मारणें ॥ १० ॥ त्रुटक ॥ बांध्यो सिंहनें लोभवशथी, पल्लिपतिनें दीध ए ॥ पापी नरकमां पड्यो परमा, धामीयें जिम कीध ए ॥ कोलाहल सुणी श्रीजयानंद, दया स्नेह धरी करी ॥ शीघ्र आवी कहे जाशो, किहां बांधव मुज धरी ॥ ११ ॥ लुटघा आसेरण रे, पल्लिपतियें तेहना ॥ युद्ध करवा रे, अग्रसेना नट जेहना ॥ बाण वरशी रे, हत प्रहत सहुनें कस्या ॥ चमसेनें रे, आवी सुनट धीरय धस्या ॥ १२ ॥ शृंगनादें थया नेला, युद्ध करवानें सहु ॥ युद्ध करतां तेह साथें, मारतो निल्लनें बहु ॥ कालनी परें श्रीजय जाण्यो, एह नवि जींताय ए ॥ मरण जाणी पल्लिपति निज, कहे एम सुणो नाय ए ॥ १३ ॥ केम मारे रे, महारा सुनटनें एणी परें, तव ते कहे रे, बांध्यो जेहनें थुन परें ॥ तेहनो हु रे, लघु बांधव मूको तेणें ॥ नहीं मारु रे, जाउं पढें निर्नय पणे ॥ १४ ॥ त्रुटक ॥ चमसेन कहे नाई ताहरो, लेई मूक सग्राम ए ॥ आपणे आजथी प्रीति जाणे, लाज ली श्रीजय ताम ए ॥ मूक्युं रण तेणें सिंह आप्यो, पल्लीशें प्रार्थना करी ॥ आव्या पालीमां दोय नाई, कार्य निज चित्तमां धरी ॥ १५ ॥ बिहु जण करी रे, नोजन सुखमां तिहां कणे ॥ तस आग्रहें रे, रहिया तेहने वाक्षिणें ॥ श्रीजय कनें रे, शीखे धनुर्विद्या कला ॥ पल्लिपति रे, गुण ग्राहक गुण आगला ॥ १६ ॥ त्रुटक ॥ बीजे खंमें शोलमी ए, ढाल कही शोहामणी ॥ धर्मथी सघले सुरक पामे, धर्म जिम चिंतामणि ॥ पंमित उत्तम विजय केरो, शिष्य पद्मविजय कहे ॥ जेह प्राणी धर्म उद्यम, करे ते संपद लहे ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मृगया चोरी धाडमा, साथें जाये सिंह ॥ नीच कर्म नित्य नित्य करे, वमणु ते निरबीह ॥१॥ सहस्र कूटमां एणे समे, महासेन महाराण ॥ चम वैरी चमसेननो, पल्लिपति लीये प्राण ॥ २ ॥ एकदिन्न चमसेन एम, सिंह सहित एम साम ॥ वयणें श्रीजयने वदे, करो अमारु काम ॥ ३ ॥ स्वार्थ सिद्ध नणी स्वामीजी, राख्या ठे रणकाज ॥ थाउ सखायी स्थिर थइ,

जाणीये आप्यु राज ॥ ४ ॥ तास वचन ते ततक्षणें, मान्युं वचन प्रमाण ॥ उत्तमजन अंगी करे, प्रार्थनायें दिये प्राण ॥ ५ ॥ सर्व सामग्री सामटी, करी आव्यो सहसकूट ॥ शृंगशब्दें सघले तिहां, वात विशेषें स्फूट ॥ ६ ॥ महासेन निज मानवी, परवस्यो पालीने वाहार ॥ नीकनियो जट मानवी, क्रोधें जम अनुकार ॥ ७ ॥ वसन चित्रक करी व्याघ्रनां, मृगपशुनां महा मान ॥ विविध लता वींटी शिरे, मोर पिछ असमान ॥८॥ काहिल नावें क्रोधथी, युद्ध करणनें जोध ॥ विविध आयुद्धशु आविया, शत्रु करता शोध ॥९॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ धवल शेठ लेई भेटणुं ॥ ए देशी ॥

॥ सैन्य मल्यां दोय सामटां, गर्जारवें गिरि गाजे रे ॥ कटुआ वचन वदे घणां, वाजित्र बहु तिहां वाजे रे ॥ सै० ॥ १ ॥ एक एक शत्रु बोलावता, खड्ग कुंतें केइ मारे रे ॥ बाण लेइ केइ उछले, शत्रु केइ संहारे रे ॥ सै० ॥ ॥ २ ॥ रण करतां चंद्रसेनन्नु, भागुं सैन्य ते नासे रे ॥ कोलाहल सुणी आवियो, सिंहसार ते पासें रे ॥ सै० ॥ ३ ॥ धीरज देई तेहनें, वरसे बाण अखंड रे ॥ भिल्ल नासे ते उपद्रवें, जिम घनें रेणु प्रचंड रे ॥ सै० ॥ ४ ॥ महासेन ते देखीनें, उठ्यो जिम जमराय रे ॥ बाण वरसे सिंह उपरें, भिन्न ते भाग जाय रे ॥ सै० ॥ ५ ॥ सिंहनां बाण छेदे शरें, शत्रु शरण न कोय रे ॥ सिंहधनुष्य छेदी करी, सिंह व्याकुल तिहां होय रे ॥ सै० ॥ ६ ॥ बांधीने निज सैन्यमां, मोकले सुभटनें संगें रे ॥ चंद्रसेन ते देखीनें, सन्नद्धबद्ध थइ रंगें रे ॥ सै० ॥ ७ ॥ महासेन बोलावियो, क्रोधें थइ विकराल रे ॥ बिहुं धीर स्पर्द्धायकी, लडे ज्युं दुर्द्धर व्याल रे ॥ सै० ॥ ८ ॥ गाजे गर्जारवें गिरिगुफा, घनपरें वरसे बाण रे ॥ घोर संग्राम कर्यो तेणें, वीर तणु घणु मान रे ॥ सै० ॥ ९ ॥ महासेन बलीयो हवे, चंद्रसेन धनु वर्म रे ॥ बाणें छेदी विव्हल कर्यो, गयो तेहनो अति भर्म रे ॥ सै० ॥ १० ॥ सेनायें सेना त्रासवी, कुंत तीर तरवार रे ॥ चंद्रसेन बीजु धनु, लीये अति धीरज धार रे ॥ सै० ॥ ११ ॥ हवे महासेन तणु धनु, बाणे करीनें कापे रे ॥ पापनें कापे जेम व्रती, विघन महामंत्रने जापें रे ॥ सै० ॥ १२ ॥ शिलाखंड लेई हवे, चंद्रसेन शिर दीधी रे ॥ तेह पीडायें तेहनें, पापीयें मूर्च्छा कीधी रे ॥ सै० ॥ १३ ॥ चंद्रसेननें बांधवा, आवे महासेन जेतें रे ॥ अकस्मात श्रीजय तिहां, आवी बोलाव्यो तेतें रे ॥ सै० ॥ १४ ॥ महासे

न पण अमरष धरी, चाप आस्फाले कोपें रे ॥ श्रीजय साहामो धाईनें, क
हे क्रोध आटोपें रे ॥ सै० ॥ १५ ॥ निरपराधी हणुं नहीं, भिल्लनी जाति
विशेषें रे ॥ क्षत्री कुल हु ऊपन्यो, लागे कलंक सहु देखे रे ॥ सै० ॥१६॥
भाई माहारो तें बांधीयो, एटलो काल ऊवेख्यो रे ॥ हवे हु महारीश तुज
नें, क्रोधें करीनें विशेष्यो रे ॥ सै० ॥ १७ ॥ नहीं तो कह्य जे हु कहु, मू
क माहारो तु भाई रे ॥ मेल करो चमसेनशुं, राज्य भोगव तु सवाई रे ॥
॥ सै० ॥ १८ ॥ महासेन कहे मानीपणे, क्षत्रीपणुं हवे लेदेशुं रे ॥ मृ
गछु हरिनें मेल स्यो, आगल सहु तुज कहेशुं रे ॥ सै० ॥ १९ ॥ हरिथी
मृग मूकावशे, एहवो कोण छे धीर रे ॥ गुणथी वीर वखाणीयें, नवि वय
णें होये वीर रे ॥ सै० ॥ २० ॥ स्पर्द्धायें करी बिहुं जणा, महाभट माहा
उत्साह रे ॥ महामानी महापराक्रमी, महायोध धरत उमाह रे ॥ सै० ॥
॥ २१ ॥ बाणयुद्धे ते योधता, पराक्रमथी पनोता रे ॥ बिहुं दल पण
सन्नद्ध थइ, रण संग्राममां पोहोता रे ॥ सै० ॥ २२ ॥ श्रीजय बाण समू
हथी, सहुदिशें सुभट ते वेगा रे ॥ कायर थइ निर्भयपणे, तेहनें शरणें पे
गा रे ॥ सै० ॥ २३ ॥ एहवो भट नवि को रह्यो, अकित जे नवि कीधो
रे ॥ पण श्रीजयें किरपाथकी, यम नृप घर नवि कीधो रे ॥ सै० ॥ २४॥
बल भागु महासेननु, क्रोधें अधिक भराणो रे ॥ बाण निरंतर मूकतो,
छेदे श्रीजय ऊजाणो रे ॥ सै० ॥ २५ ॥ बखतर धनुष छेदी करी, छेदे
तस तरवार रे ॥ शस्त्र रहित मुष्टियकी, श्रीजय हृदयमां मारे रे ॥ सै० ॥
॥ २६ ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो, भिल्ल पासें बधावी रे ॥ पाणी पाई
सज्ज कर्यो, दिये चमसेनने लावी रे ॥ सै० ॥ २७ ॥ बीजे खर्मे ए कही,
सत्तरमी वर ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे धर्मथी, होवे मंगलमाल रे ॥
॥ सै० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंद तस सैन्यनें, आश्वासन बहु आपि ॥ सिंह तेडावी सज्ज
करें, कपरां बधन कापि ॥ १ ॥ श्रीजयनी सेवा करे, चातुर ते चमसेन ॥
स्तवना करे सारी परें, हियडे हर्ष भरेण ॥ २ ॥ अहो भाग्य अमारडु,
कुलदेवें करी महेर ॥ पाम्या तुम सरिखा पुरुष, लेवा लीला लहेर ॥ ३ ॥
श्रीजय स्तवना शुभ परें, करी पालि निज पाण ॥ कोइक तिहां थापी क

री, सिंह लेइ सपराण ॥ ४ ॥ महासेन लेइ मोजशुं, पोहोता आपणी पाल ॥ श्रीजयने स्वामी गणे, काढे एणी परें काल ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चित्रोडा राणा रे ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन दम लेइ रे, मूक्यो सुख सेंइ रे ॥ श्रीजय न करेइ, कोप तस ऊपरें रे ॥ १ ॥ मन चिंते सिंह रे, धिग माहारा दीह रे ॥ दोय वार अवीह, मूकाव्यो जीवतो रे ॥ २ ॥ अधिकूं दुःख थायो रे, वधथी मूकायो रे ॥ एह वातनें गायो, श्रीजय एम वदे रे ॥ ३ ॥ खेद म करो नाई रे, वात ते चित्त लाई रे ॥ जीत हार कमाई, देशादिक लही रे ॥ ४ ॥ सिंह चूको फाल रे, वनमां कोइ काल रे ॥ तोहि महा व्यालनें, मारे ते खरो रे ॥ ५ ॥ एम श्रीजय बोल्या रे, पण सिंह न मोल्या रे ॥ जस रोग असाध्य खुल्या, औषध कीशु रे ॥ ६ ॥ श्रीजय उपगारी रे, काम अनुतकारी रे ॥ पण उत्सुकता धारी, श्रीजय नही कदा रे ॥ ७ ॥ दोय वार दियां प्राण रे, पण खल अप्रमाण रे ॥ देवा दुःखठाण, विचारे सिंह तदा रे ॥ ८ ॥ जावा परदेश रे, मन कीधु विशेष रे ॥ कोण म्लेछ देशमां, रहे एम जाणतो रे ॥ ए ॥ श्रीजय केइ दिन्न रे, रह्या लही दाखिन्न रे ॥ गुण आकीर्ण, ते करे उपगारनें रे ॥ १० ॥ कोइ काल व्यतीतें रे, शूल रोग प्रतीतें रे ॥ परलोक गतें गयो, पल्लिपति हवे रे ॥ ११ ॥ तस पुत्र न कोई रे, पालिनो धणी होइ रे ॥ पराक्रम जोइ, श्रीजयनें कहे रे ॥ ॥ १२ ॥ निल्ल मलीनें ताम रे, कहे थाउ अम स्वाम रे ॥ कुराज्यनो ठाम, देखीनें नवि ग्रहे रे ॥ १३ ॥ इल्ले सिंह सार रे, अन्य नांहीं तेवार रे ॥ निल्लराय उदार ते, थाप्यो सिंहनें रे ॥ १४ ॥ करे कर्म ते क्रूर रे, गर्व धरतो प्रचूर रे ॥ धरे नूरि प्रमोदनें, पाले पालिनें रे ॥ १५ ॥ देशांतर जाशुं रे, हुं इहां नवि ठाशुं रे ॥ श्रीजयें प्रकाश्युं, तव सिंह चिंतवे रे ॥ ॥ १६ ॥ मावित्र जो जाणे रे, एहनें तेडी पराणें रे ॥ आपशे कोइ टाणे, एहनें राज्यनें रे ॥ १७ ॥ एम चिंतवी तेह रे, माया धरी नेह रे ॥ तुज विरह न रेह, खमी शकूं हुं कदा रे ॥ १८ ॥ तव श्रीजय गाया रे, एकदिन सिंह राया रे ॥ कहे गर्व नराया, श्रीजयानदनें रे ॥ १ए ॥ हुं अधर्मकारी रे, पाम्यो राज्य विचारी रे ॥ जूउ चित्तमां धारी, तव श्रीजय कहे रे ॥ २० ॥ पामी खलखम रे, रंक गर्व प्रथम रे ॥ केम मा

न उद्दंम, धरे लगारिके रे ॥ २१ ॥ उपनो अति काप रे, पण दीधो गोप रे ॥ आटोप करे केम, बलीया आगलें रे ॥ २२॥ पण मूषक लेवा रे, करे गात्र सखेवा रे ॥ जंतुपरें देवा रे, सिंहना जाणजो रे ॥ २३ ॥ इसी प्रेम देखाडे रे, बहु रीज पमाडे रे ॥ बहु दिवस गमाडे रे, एकदिन सिंह कहे रे ॥ २४ ॥ सांजलो तुमें भ्रात रे, गिरिकूट नग ख्यात रे ॥ तेह गण रहात, गिरिमालिनी सुरी रे ॥ २५ ॥ एक गाउ थाय रे, पल्लिपतियें पूजाय रे ॥ कालि चउदश थाय, आज तेणे सांजलो रे ॥ २६ ॥ मंत्र जपतां थाय रे, मांहि बहु अंतराय रे ॥ जो उत्तर साधक थाय,तो कारज नीपजे रे ॥ २७ ॥ मान्युं श्रीजयानदें रे, लेइ खड्ग आणदें रे ॥ पूजा उपकरण वृदें, सिंह ते चालीयो रे ॥ २८ ॥ देवीनें धाम रे, श्रीजय अनिराम रे ॥ उपगारने काम, गयो सार्थे तिहां रे ॥ २९ ॥ बीजे खमें अधिकार रे, ढाल थइ सुप्रकार रे ॥ सिंहसारनुं चरित्र, सुणो हवे जे होयें रे ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूजी देवी पाथरी, जपतो कपटें जाप ॥ तेहनी आगल ते रही, उंघ चलावे आप ॥ १ ॥ श्रीजय खड्ग सबाहीनें, सात्त्विकमां शिरदार ॥ देवालयनें चिहुं दिशें, करतो तिहां हुकार ॥ २ ॥ त्रास पमाडे नूतनें, प्रेत ते सहु पलाय ॥ उत्तर साधक आफणी, थयो तास थिर थाय ॥ ३ ॥ मत्र थयो सिद्ध माहरे, तुम प्रनाव ततकाल ॥ दक्ष पणे दोय पोहोरमां, सिंह कहे संनाल ॥ ४ ॥ मत्रजागरिका माहरे, करवी छे तेणे काम ॥ सूउं श्रांत थया तुमें, रक्षक छु आराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी, नोलीडा हसा रे, विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ आशय तेहनो रे अणजाणे थके, सूता श्रीजयानद ॥ निद्रा आवी रे बहु थाकें करी, अवसर लही ते नरींद ॥ १ ॥ पापी दुर्जन एणी परें जाणीयें, न गणे कांय उपकार ॥ सज्जननें दु खदायी कलटो, तेहथी ध्यान श्रीकार ॥ पा० ॥ २ ॥ कलयो बल लही शस्त्रीयें करी, काढयां नेत्र विशाल ॥ कहे मुज पक्ष अधर्मनें दुखवे, तिम मुज राज्य रसाल ॥ पा० ॥ ॥ ३ ॥ हाख्यो नेत्र न आपे मुजनें, बलथी लीधां में दुष्ट ॥ धर्मना फल नोगव हवे आंधला, मरण तणु लहे कष्ट ॥ पा० ॥ ४ ॥ एम कहीनें रे आ

व्यो पालिमां, डुर्गतिनु रे प्रस्थान ॥ साधुनें नेत्र गया जे नावीयां. मत्री नवें ते निदान ॥ पा०॥ ५ ॥ श्रद्धानें जे कर्म उपारज्युं, क्राधें करीनें अपा र ॥ निंदा गर्हा आलोचनादिकथकी, क्षय कीधु तेणी वार ॥ पा० ॥ ६ ॥ शेष रह्यु ते रे नोगववु पड्यु, हवे बहु वेदना थाय ॥ शास्त्रवेदी पण मुज नें धिक पडो, खल विश्वास कराय ॥ पा० ॥ ७ ॥ यत ॥ जीर्णां नोजन मात्रेय, कपिल प्राणिनां दया ॥ बृहस्पतिरविश्वास, पांचाल स्त्रीषु मार्दव ॥ १ ॥ ढाल ॥ जीवतो राख्यो रे तो पण एम थयो,ते मुज कर्म प्रमाण ॥ कर्म कर्त्ता ते रे नोगवे प्राणीयो, निश्चय एह विन्नाण ॥ पा० ॥ ८ ॥ क्षेत्र कालादिक सामग्री मले, पाके शुनाशुन कर्म ॥ ते सहेतां नहीं हाणी ठे तादरे, क्रोध ते करवो अधर्म ॥ पा०॥ ए ॥ यत ॥ पुनरपि सहनीयो, डुःख पाकास्तवैव, न खलु नवति नाश कर्मणां संचितानां ॥ इति सह गणयि त्वा यद्यदा याति सम्यक्, सदसदितिविवेको ऽन्यत्र नूय कुतस्ते ॥१॥ ढाल ॥ आपद पामे रे धीरय धारवु, सज्जननो ए स्वनाव ॥ वृक्ष कंपे पण पर्वत नवि चले, वायुए ए निजनाव ॥ पा० ॥ १० ॥ कर्मनो क्षय होय ध्यान बलें करी, तेणेंकरी ध्यावु रे तेह ॥ समकित निश्चल सुखदायक अठे, आपद अग्निर्ये मेह ॥ पा० ॥ ११ ॥ एम विचारी रे काउस्सग्ग धारतो, ध्यातो परमेष्ठि मंत ॥ शत्रु मित्र समोवड त्रेवडे, मन एकाग्र करंत ॥ पा० ॥ १२ ॥ समकेत ध्यानबलें गिरिमालिनी, कंपित आसन आ य ॥ कहे तुज सुपुरुष केरी आपदा, हरवा आवी रे नाय ॥ पा० ॥ १३ ॥ कहे एक पद्मर्ये रे पूजा माहरी, कर तुं नयननें काम ॥ काउस्सग्ग पूरो क रि पारी हवे, देवीनें कहे आम ॥ पा० ॥ १४ ॥ आंखनें प्राण जाउ सवि मूजगां, न हणु प्राणीनां प्राण ॥ बलिनें नोज्य प्रणाम वली जाचती, दे वी तेह अजाण ॥ पा० ॥ १५ ॥ समकेत मलिन थवानें कारणें, तुं मि थ्यात्विणी जेण ॥ न करु तुजनें रे कोपी ते तदा, बोली क्रोध नरेण ॥ पा० ॥ १६ ॥ न करें मुजनें प्रणाम पण डुरमति, तो तस फल तु रे दे ख ॥ एम कही डुर्द्धर वायु विकूर्वेती, रज कडे सुविशेष ॥ पा० ॥ १७ ॥ पर्वत शिला रे पडतां शब्दथी, बीये देवनां वृंद ॥ उपाडीनें आकाशें नमा डीयो, पीडा अतिही अमंद ॥ पा० ॥ १८ ॥ पण न खोनाणो रे श्रीजय धर्मथी, पडतां जडफे रे तेह ॥ कहे हु तूठी रे तुज सत्त्वें करी, तुं गुण ग

ए मणि गेह ॥ पा० ॥ १ए ॥ औषधि ले तु सक्क कर नयननें, लेइ घ
सी जलमांहे ॥ रेडी आखमां रे, सक्क थयां नयन ते, धरतो अग उ
च्छाह ॥ पा० ॥ २० ॥ औषधिने मणि मंत्र प्रभाव जे, वयणें नवि क
हेवाय ॥ दिव्य नेत्र थई देवी देखतो, आणंद अग न माय ॥ पा० ॥२१॥
देवी कहे तें रे समकित कारणें, क्लेश सह्यो रे अपार ॥ तास सरूप कहो
मुज साहेबा, तव ते श्रीजयकुमार ॥ पा० ॥ २२ ॥ देवादिकनु स्वरूप
सुविस्तरें, श्रावकधर्म विस्तार ॥ सांभली पूरवभव सस्कारथी, जाणे अ
वधें विचार ॥ पा० ॥ २३ ॥ उगणीशमी ए रे बीजा खम्मां, भांखी अ
नुपम ढाल ॥ पद्मविजय कहे धर्म करो सवे, धर्मथी मगलमाल
॥ पा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत बंधो तुमें मानवी,सांभलतां श्रीकार ॥ श्रीजयानदजी सारिखा,
अनरथ लह्या अपार ॥ १ ॥ समकेत पामी ते सुरी, पूरवभव परबंध ॥
श्रीजयनें कहे सांभलो, अन्य दर्शनें थइ अध ॥ २ ॥ समकित धारी श्रावि
का, व्रत धारी गुणवत ॥ पुत्र महारो मांदो पड्यो, तास उपायने तंत
॥ ३ ॥ पूछु हुं लिंगी प्रतें, प्रतिक्रिया परकार ॥ परिव्राजक एक पाधरो,
आव्यो मुज आगार ॥ ४ ॥ भूत दोष मुज भांखीनें, मत्र चूर्णादिक मेलि
॥ साजो कीधो सुत प्रतें, भिक्षा देउ मन भेलि ॥ ५ ॥ लेवा भिक्षा लाल
चें, आवी आखे धर्म ॥ शौच मूलने सांभली, मुज मन पाम्यो भर्म
॥ ६ ॥ शौच धर्म साचो हशे, अथवा मलमय एह ॥ एम शंकादिक अति
चरी,समकितमां सदेह ॥७॥ काल घडु एम काढीयो,आलोयु नही आल ॥
गिरशिर हु गिरिमालिनी, देवी थई दयाल ॥ ८ ॥ मिथ्या दृष्टि शिरोमणि,
करु कर्म अतिक्रूर ॥ तुज वयणें मुज तम गयु, समकित ऊग्यो सूर ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ रहो तो हु रांधुं खीचडी ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी में पूरवभव माहरो, भांख्यो तुम आगल एह ॥ स्वामी मोरा
हे, हवे तुम आधीन हु रहु, कहो मुजनें करवु जेह ॥ स्वा० ॥ १ ॥ उत्त
म नर एम जाणीयें ॥ ए आंकणी ॥ तुज साखें में आदर्यु, भलु समकित
जगमां सार ॥ स्वा० ॥ वली निरपराधी जीवनें, हणवु नहीं कोइ प्रका
र ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ २ ॥ पण में हिंसा करी घणी, तेह किम छूटय पारो

मुज ॥ स्वा० ॥ कुमर कहे तुमे देवता, तप प्रमुख न होये तुज ॥ स्वा० ॥ ॥ ज० ॥ ३ ॥ पण श्रीअरिहंतना चैत्यनी, करो पूजा निर्मल चित्त ॥ स्वा० ॥ वली शासननी प्रभावना, धर्म सहाय करो नित्य नित्य ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ४ ॥ तेह देवी अंगी करे, पठी देवी कहे सुणो स्वामि ॥ स्वा० ॥ तुमें महारा उपकारीया, तुम मूकुं कहो कुण गाम ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुमर कहे तुं धन्य छे, तुजनें थयो एम उपगार ॥ स्वा० ॥ हेमपुरना उद्यानमां, मुजनें मूके तु धरी प्यार ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ६ ॥ ततक्षण मूक्यो तिहां जइ, वली आपी औषधि दोय ॥ स्वा० ॥ एक विषनी अपहारिणी, नेत्र सज करणी बीजी जोय ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ७ ॥ दिव्यवस्त्रनें पथ्य वली दीयां, तिम बहुमूला अलंकार ॥ स्वा० ॥ करी प्रणाम अदृश थई, हवे ते सवि अंगें धार ॥ ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ८ ॥ पेठो हवे ते नयरमां, मोह पामे लोकना वृंद ॥ ॥ स्वा० ॥ दीठ रमता जुवटू, तिहां बेठो मन आणंद ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ॥ ए ॥ नूपण पणमां धरी करी, दस दाव रम्यो ते ठाम ॥ स्वा० ॥ दश लक्ष लीलायें जीतीयो, राजकुमर हार्या ते ताम ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १० ॥ हवे हार्याना जयथकी, नवि रमियो कोइ कुमार ॥ स्वा० ॥ हवे गवरावे गंधर्वप्रत्यें, जिनवरनां गीत उदार ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ ११ ॥ दश लाख याचकनें दीयां, एह सांजली चरित्र उदार ॥ स्वा० ॥ हेमप्रजरायें तेडियो, दीठो अद्भुत आकार ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १२ ॥ दिव्य अलंकृत वस्त्रनें, वली अद्भुत लावण्यरूप ॥ स्वा० ॥ लहे व्यामोह सजाजना, जइनें तिहां प्रणम्यो नूप ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १३ ॥ विस्मय लही आलिंगीयो, कहे अर्धासने तु बेश ॥ स्वा० ॥ विनयें नवि बेठो तिहां, तेह उचित न चूके लेश ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १४ ॥ बेठो ते नीचे आसनें, नृप पूछे कुशल छे तुज ॥ स्वा० ॥ ते कहे तुम दरशनथकी, थयुं जनम नयन फल मुज ॥ ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १५ ॥ यत ॥ तीर्थानां प्रथम तीर्थं, नृपतिर्नयपावन ॥ दर्शनादपि योत्राऽपि, दत्तेऽजीष्टामृतश्रिय ॥ १ ॥ ढाल ॥ विनय आकारादिक सवे, नांखे तुज गुण असमान ॥ स्वा० ॥ मूरति तुज सरखी नही, एम कहे वारंवार राजान ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १६ ॥ कुमर कहे तुम दृष्टिथी, हु सौनागी थयो आज ॥ स्वा० ॥ एम वातें वेला गमी, आव्यो शिर उपर दिनराज ॥ स्वा० ॥ ज० ॥ १७ ॥ सजा विसर्जी राजीये, हवे स्नान

ोजन करे राय ॥ स्वा०॥ कुमर सयातें सहु करी, नृप शय्यायें जइ गाय ॥ स्वा० ॥ ७० ॥ १८ ॥ कुमरनें आसन आपीनें, कहे नृप सुणो तुमें वा ॥ स्वा० ॥ जे कारण तुम तेडीया, ते सांजलो मुज अवदात ॥ स्वा० ॥ ७० ॥ १९ ॥ बीजा खंममां वीशमी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ स्वा० ॥ श्रीजयानदना रासमा, आगल सुणो वात रसाल ॥ स्वा० ॥ ७० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राणी पाचशे रूअडी, माहारे छे मनोहार ॥ ललिता विमला लीला वती, केलि कलादिक सार ॥ १ ॥ शत पुत्रह सोहामणा, नानु नानुधर नाम ॥ नानुवीर सुनानु नें, वरदत्त सुदत्त सुराम ॥ २ ॥ सुसेन रवितेजा सुगुण, सुनीम सुमुख सुजाण ॥ इत्यादिक उपर अछे, पुत्री रूप निधान ॥३॥ ललिता पटराणी लहे, गुणोत्तर सरवंग ॥ सौनाग्य मजरी सुरलता, तरखी यौवन संग ॥ ४ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ मोहनजी मोकलोनें मोशाला ॥ ए देशी ॥

॥ ते चोशठ कला निधान, प्रिय मधुर वदे सुप्रधान ॥ तेहनां वर उत्तम काल, बेठो कुलदेवी समाज ॥ १ ॥ मोहनजी सांनलो अरदास ॥ तुम सम नहीं जग सुविलास ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ रेलणी कुलदेवी नाम, मौन ध्याननें जप धुन गाम ॥ त्रीजे दिन तूठी रातें, मुज सुपनमां कहे इ ण नांतें ॥ मो० ॥ २ ॥ युवराज गृह द्वार पासें, द्यूतपदें रमें उल्लासें ॥ दिव्य वस्त्र अलंकृति जास, खड्गधर दिव्याकृति खास ॥ मो० ॥ ३ ॥ दश लक्ष जींती दान देशे, सौनाग्यमंजरी पतिवेशें ॥ हरख्यो हु सांनली ते ह, विहाणे पूजी गयो गेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ पारणु ऽ खवारणु कीधु, ते सुनटोनें जाण न दीधु ॥ एहवो नर कोइ आवे, लावजो मुज पासें नावें ॥ मो० ॥ ५ ॥ ते कारण तुमनें लाव्या, देखी अम मन घणु नाव्या ॥ प रणो ए महारी कुमरी, जस रूपथी हारी अमरी ॥ मो० ॥ ६ ॥ कहे कु मर न जाणो वंश, गुण अवगुण न लहो अंश ॥ केम आपो कन्या मु ज, एमां हाणी आवे छे तुज ॥ मो० ॥ ७ ॥ यत ॥ कुल शील वपुर्वि द्या, वयोवित्त सनाथता ॥ वरे सप्त गुणा मृग्या, स्ततो नाग्यवशा कनी ॥ १ ॥ ढाल ॥ कहे राय देवीनी वाणी, आकार विनयादिक जाणी ॥ जाण्यो तुम उत्तम वंश, एहमां नही संशय अंश ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुज

प्रार्थना भंग न कीजें, तव कुमरें मौन रहीजें ॥ वाजे ते ढोल दमाम, शुन लगनें परण्या ताम ॥ मो० ॥ ए ॥ हय गयने पायक गाम, दासी दासनें पुरवर दाम ॥ राय सौध रहेवानें काम, बहु उपकरण नरे ते धाम ॥मो०॥ ॥ १० ॥ तिहां नोगवता वर नोग, नृप सेवा करे शुनयोग ॥ ते विनयी लखमी वाधे, बहु राय प्रमुख नृप साधे ॥ मो० ॥ ११ ॥ श्रीवर्द्धन अनिधा थापे, तेहनो जश दश दिशें व्यापे ॥ एक दिन नृप नांखे कुमार, सुणो अमकुल ए आचार ॥ मो० ॥ १२ ॥ परणीनें बहु नरतार, उच्छवथी हर्ष अपार ॥ कुल देवता मासने अंतें, पूजे एक पशुयें सुचिंत्तें ॥ मा०॥ १३ ॥ चौदशनी रात्रें पूजो, तुम विघन होये ते धूजो ॥ कहे कुमर न काम ए कीजें, अपराध विना न मारीजें ॥ मो० ॥ १४ ॥ यत ॥ नास्ति हिंसा सम पापं, नरकादिप्रदानत ॥ न चाहिंसासम पुण्यं, दानात्स्वर्गापवर्गयो ॥ १ ॥ अमृतं नौरगाद्वक्रात्, नैवापथ्याऽलदक्षय ॥ साधुवादोविवादान्न, न शांति प्राणिनां वधात् ॥ २ ॥ ढाल ॥ नोज्यादिकें नृपति नांखे, अरचो जिम विघन न दाखे ॥ कहे कुमर मिथ्यात्विणी एह, तत्त्वज्ञानी पूछ कहो केह ॥ मो० ॥ १५ ॥ जेहनें देव गुरु धर्म राखे, तेहनें इह अनर्थ न दाखे ॥ ए रांकडीनो श्यो नार, तुमें रहो सुखमां निरधार ॥ मो० ॥१६॥ यत ॥ महा प्रसन्नावशवर्त्तिन सुरा, न दुष्टनूपा प्रनवति नो खला ॥ न श्यंति विघ्नाविलसंति संपदो, यदि स्थितो यत्र जिन सुपूज्यते ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ जमाईनें नवि कहेवाय, अधिकुं एम कही घर जाय ॥ कुलदेवी नें कहे एम, तें आप्यो जमाई प्रेम ॥ मो० ॥ १४ ॥ ते पण तुजनें नवि पूजे, बीजु मुजनें नवि सूजे ॥ तूनें ते जमाइ जाणो, शुं करु पण नक्ति न राणो ॥ मो० ॥ १८ ॥ नमी देवीनें गयो नूप, कुमरें लह्यु तास स्वरूप ॥ स प्रत्यया देवी जाणी, हवे रयणीयें गुणमणिखाणी ॥ मो० ॥ १ए ॥ कांयक तस शंका करतो, पट्टमां जिनप्रतिमा धरतो ॥ धूप पुष्प सुगंध धरीनें, बेगे जिनध्यान करीने ॥ मो० ॥ २० ॥ एकवीशमी बीजे खंडें, ढाल नांखी रंग अखंडें ॥ धर्मे दृढ एम मन करजो, कहे पद्मविजय शिव वरजो ॥ ॥ मो० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अप्रमत्त आसन धयु, पोहर बीजे तिहां पेखी ॥ धूमघटा दश दिश धरी,

देवीकृत ए देखी ॥ १ ॥ कोलाहल परिकर करी, दहदिशें नाठो दूर ॥ कुम र बीहीक मन नवि करे, परमेष्टि ध्यान पडूर ॥ २ ॥ काउस्सग्ग तव करी रह्यो, घूमभयो ते ध्यान ॥ जाज्वल्य मान ज्वाला थई, परगट ते पहिचान ॥ ३ ॥ रौद्ररूप करी रेह्नणी, मस्तक मूढक समान ॥ अग्नि गणशी आं खडी, ताड मान पद तान ॥ ४ ॥ पेट बन्युं पर्वत गुफा, कीलक दंत क राल ॥ चक्र त्रिशुल खड्ग चगचगे, नीषण अतिशय नाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हामानी देशी ॥

॥ अट्टाट्ट हास्यनें मूकती डमरूक वजाडे, बहुत्रास पमाडे, कर चक्र न माडे, मानु आकाश तल फोडशे रे ॥१॥ में तुजनें नररायनी, लखमी बहु दीधी, कन्या प्रसिद्धि, ताहरे कर कीधी, तोहि तें निंदा कीधी माहरी रे ॥ २ ॥ हजीअ पूजा कर माहरी, वली कर परणाम, नहीं तो यम धाम, पामिश सुत्राम, राखण काम पण नावशे रे ॥ ३ ॥ तोहे पण क्षो न्यो नही, तव रीश चढावी, अगनि वरसावी, जाला शिर आवी, तो पण लावी कुमरें मन नहीं रे ॥ ४ ॥ जिनवर ध्यानधारा धरे, अगनि उला य, तव हरि मूकाय, गर्क्षारव थाय, नहण करवा जाय ते हवे रे ॥ ५ ॥ पुछांछोटें कपावतो, धरतीनें जाम, नख आयुध गाम, दाढा पडी ताम, नख आम नांगा जिन ध्यानथी रे ॥ ६ ॥ सिंह गयो हवे सर्पथी, मूक्या बहु नाग, फुंकारनो लाग, नरे अंबर नाग, श्यामनो राग नव मेघश्यो रे ॥ ॥ ७ ॥ शतगमे मणि घणु दीपता, मानु यम कर दंड, फणाटोप प्रचंड, वींटे ते अखंड, वेदना चंड करे रोषथी रे ॥ ८ ॥ फणाटोपें मारे घणु, वली तनुनें मरडे, दशने वली करडे, लालायें खरडे, दंत पडे रे तेह नागना रे ॥ ९ ॥ फणथी मणि त्रुटी पडे, वली नांगे हाड, वायरें जिम जाड, नवि लागे पहाड, कुमर पहाड तनु उपरें रे ॥ १० ॥ नाग सवे विलखा थइ, ते नाठा जाय, विस्मय सुरी पाय, मन चिंते थाय, पीडा उपाय नवि एहनें रे ॥ ११ ॥ ध्यान वलें न खोनी शकु, करु ध्याननें पी डा, अनुकूल पणे क्रीडा, करी छुन कहु ईडा, एहमां रे व्रीडा नहीं मुज नें रे ॥ १२ ॥ एम विचारी नारीनु, कीधु वली रूप, अलंकृत अनुरूप, मुख चंद सरूप, कामनो यूप मानू ए बनी रे ॥ १३ ॥ घुघरी चरणे रणजणे, लीला गतें चाले, कुमर मुख नाले, निज मानें गाले, बोले रसालें वयण

एणीपरें रे ॥ १४ ॥ माहारो खम अपराध रें, सात्विक सोनागी, तुजथ्थी लय लागी, मुज नावठ नांगी, हु थइ रागी हवे ताहरी रें ॥ १५ ॥ एवा पुरुषनें पामवा, में परीक्षा कीधी, हुं तुजथ्थु गिद्धी, मुजनें कृप लीधी, देवनी ऋद्धि नोगव नरपणें रे ॥ १६ ॥ अंगीकार कर मुजनें, हु ताहरो दासी, स्नेही सुविलासी, नित्य नृत्य प्रकाशी, गीत गाशी रे सहु तुज आगलें रे ॥ १७ ॥ कामने वयणें न वेधी रे, न चलाव्यु ध्यान, व्रत उपर ज्ञान ॥ जिनवर वद्धमान, मान न दीधु रे देवीनें तेणें रे ॥ १८ ॥ बीजे खर्म बावीशमी, वर नाखी ढाल, पदमें सुरसाल, परीक्षाने काल, मगलमाल होये थिर थतां रे ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विस्मय पामी व्यंतरी, वोले एहवा बोल ॥ तुज उपर तूठी थवु, खांतें वचनज खोल ॥ १ ॥ हवे उपसर्ग करु नहीं, पण कहे ताहरी पास ॥ श्यो ठे मत्र सोहामणो, परगट तेह प्रकाश ॥ २ ॥ जास प्रनावें मुज जरा, जालिम न चल्यो जोर ॥ कोण धर्म पूजा करे, सांनलुं मूकी सोर ॥ ३ ॥ हु ताहरो हितकारिणी, पूजे नहीं तू पाणि ॥ काउस्सग्ग पारी कुवर ते, उत्तर आपे आणि ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ महाविदेहक्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे सुण रेवणी, पंच परमेष्ठी ध्यान लाल रे ॥ जगत पूज्यनुं हु करु, केवल अमृत पान लाल रे ॥कु०॥ १ ॥ त्रिविधें जेह ध्यातां थकां, सकल छुःख क्षय थाय लाल रे ॥ धर्म ते अरिहंतनो कह्यो, सयल जीव हितदाय लाल रे ॥ कु० ॥ २ ॥ समकेतधारी प्राणीया, मिथ्यादृष्टि जे होय लाल रे ॥ तेहनी पूजा नवि करे,प्राणांतें पण जोय लाल रे ॥कु०॥ ॥ ३ ॥ तेमाटे देवी सुणो, इहो जो आतम हेत लाल रे ॥ त्रिविधें हिंसा नवि करो, हिंसा नरक सकेत लाल रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ धर्म अरिहंतनो मुजनें, नांखो करी विस्तार लाल रे ॥ तव कुमारें विस्तर करी, नांख्यो धर्मविचार लाल रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ हिंसानां फल दाखीयां, तेमज दयानां विशाल लाल रे ॥ सांनली बूजी ते हवे, समकेत महे सुरसाल लाल रे ॥ कु० ॥ ॥ ६ ॥ विरमी प्राणीवधथकी, पूर्वे जे हिंसा कीध लाल रे ॥ तेह रोगनें टालवा, उषध आकरु दीध लाल रे ॥ कु० ॥ ७ ॥ अरिहंतनी पूजा करो,

धर्म सहाय करेह लाल रे ॥ शासननी परभावना, सघ उपरें ससनेह ला ल रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ देवी लेवा धर्मथी, कुमर देवी लह्या हर्ष लाल रे ॥ वृक्ष कदंबना फूलनें, मेघ धारा जिम वर्ष लाल रे ॥ कु० ॥ ए ॥ गुरु नक्तें दिव्यौषधि, आपे महिमावत लाल रे ॥ निज पर शिर थापीथकी, इच्छित रूप करत लाल रे ॥ कु० ॥ १० ॥ वस्त्र भूषण वली आपती, वर्षे कनक मणिराशि लाल रे ॥ देव डुडुन्नि वजाडीनें, अदृश्य हुई तास लाल रे ॥ ॥ कु० ॥ ११ ॥ जई राजा बोलावीयो, उर्पे जागे ठे के केम लाल रे ॥ जागु बुं नरपति कहे, उघ आवे केम एम लाल रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ धूम्यादिक जमाई घरें, देखी डुःख अपार लाल रे ॥ सा कहे सांनल जे कहुं, तुज जमाई उदार लाल रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ अनुकूल प्रतिकूल में कस्या, उपसर्ग तास अनेक लाल रे ॥ पण सात्त्विक उत्तम घणो, नवि मूकी निज टेक लाल रे ॥ कु० ॥ १४ ॥ जीवदया मूल आदस्यो, में एह पासें धर्म लाल रे ॥ तु पण धर्म एहनी कनें, लेजे ठमी अधर्म लाल रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ एम कही ए अदृश्य थई, हवे विहाणें सहु आय लाल रे ॥ राय प्रमुख रयणी तणो, जोवा कुमरनें ठाय लाल रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ कुमर आनूषण वस्त्रथी, दिव्यें देखी हरखाय लाल रे ॥ रत्नपुज देखी करी, आनद अग न माय लाल रे ॥ कु० ॥ १७ ॥ पूठे नूप कुमारनें, स्यो रयणी वृत्तांत लाल रे ॥ कुमरें यथास्थित नांखीयो, चित्त करी एकांत लाल रे ॥ कु० ॥ ॥ १८ ॥ कुमर सत्त्व प्रशसता, तिम जिन धर्म प्रनाव लाल रे ॥ चमतकार पामी करी, राय प्रमुख सद्भाव लाल रे ॥ कु० ॥ १ए ॥ धर्म श्रद्धा नृप मन करे, उद्यान पालक ताम लाल रे ॥ दीये वधामणी आवीया, धर्मयशा गुरु नाम लाल रे ॥ कु० ॥ २० ॥ बहु परिवारें परिवस्या, धर्म मूर्त्ति मानुं तेह लाल रे ॥ कुमरवयणें राजा हवे, वदे गुरु ससनेह लाल ॥ कु० ॥ २१ ॥ धर्म सांनली आदरे, समकेतादिक शुद्ध लाल रे ॥ राज पुत्र राज्यवर्गीया, नागर पण प्रतिबुद्ध लाल रे ॥ कु० ॥ २२ ॥ कुमत मूकी धर्मी थया, देखी कुमार चरित्र लाल रे ॥ काल काढे एम धर्ममां, श्रीवर्द्धन सुपवित्र लाल रे ॥ कु० ॥ २३ ॥ बीजे खर्ने त्रेवीशमी ,पद्म कहे एम ढाल लाल रे ॥ श्रीजयानदना रासमां, आगल वात रसाल लाल रे ॥ कु० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६८२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन आस्थानें रह्यो, सोधर्म सना समान॥ शत सुत श्रीवर्द्ध न सहित, पागीयानें परधान ॥ १ ॥ वन पालक आवी कहे, क्रीडा वनमां क्रोड॥ घोर शब्द घुर्घुर करे, खराखर करे खोड ॥२॥ काल रूपें ए कोल छे, नटनें पण दीये नीक ॥ नाशी जाये निर्क्करा, एहमा नहीं अलीक ॥ ३ ॥ अवनीपति उठे यदा, वारे पुत्र विनीत ॥ शत पुत्र वठे सामटा, सन्नद्ध थया छुन रीत ॥ ४ ॥ कुमर पछु जाणी करो, उवेखीयु तमाम ॥ कौतुकथी केडें गयो, बुद्धिमत वलधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ जाजरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ जइ सूअर बोलावीयोजी, हय गय परिवृत तेह ॥ साहामो सूअर आवीयोजी, क्रोध करालित देह ॥ १ ॥ नवि नाव धरीनें सुणजो अचरज वात ॥ ए आंकणी ॥ समकालें सुत रायनाजी, वाण श्रेणी वरसत ॥ उछ ली उछली ते सवेजी, दाढायें खम करंत ॥ नवि०॥ २॥ हय गयनें पण पाडियाजी, खड्ग मोघर गदा घात ॥ तेहने अणगणतो थकोजी, बहु सुनट करे पात ॥ नवि० ॥ ३ ॥ क्षण गगनें क्षण धरतीयेंजी, फाल दीये बलवंत ॥ लस्करमां सहु देखताजी, आदि मध्यें वली अंत ॥ नवि० ॥ ४ ॥ आकुल व्याकुल सहु थयाजी, राजकुमर तेणी वार ॥ तेहनी रक्षा कारणेंजी, श्री जयानंद कुमार ॥ नवि० ॥ ५ ॥ शस्त्र रहित ते देखीनेंजी, मूके खड्ग तुरंग ॥ बांधी केडें बोलावीयोजी, सूअरनें निज संग ॥ नवि० ॥ ६ ॥ फाल देइ कुमर शिरेंजी, आवे कोल ते जाम ॥ मुष्टियें हणी दोय दाढनेंजी, खंम खम करी ताम ॥ नवि०॥ ७ ॥ तो पण सत्त्व पराक्रमेंजी, श्रीजय ऊपर तेह ॥ पडवा मांम्पु तेटलेजी, पग पकडी भ्रम देह ॥ नवि० ॥ ८ ॥ ते फेरि दूर फेंकी दीयोजी, धीर बली महावीर ॥ सात ताड दूरें पड्योजी, श्री जयसूर कोटीर ॥ नवि० ॥ ९ ॥ नागो बुंबारव करीजी, थयो नख दाढनो भंग ॥ पेठो गहनें नाशिनेंजी, पूठें कुमर गया संग ॥ नवि० ॥ १० ॥ वीठो नहीं ते वराहनेंजी, आवतो जूए गजराज ॥ श्वेत चार दंतुशळे जी, शोभित आव्यो समाज ॥ नवि० ॥ ११ ॥ मोद लहीनें नमाडियोजी, मुष्टियें कीध प्रहार ॥ वश करी शिर ऊपर चढ्योजी, श्रीजयानंद कुमार ॥नवि० ॥ १२ ॥ वाले ते हिमपुर नणीजी, पण वन सनमुख धाय ॥ वायुवेगें दूरें

जइजी, गगनें पंखीपरें जाय ॥ नवि० ॥ १३ ॥ देखे पृथिवीयें तदाजी, गो पद सम कासार ॥ यदेही शिखर परें नग तदाजी, नदीयो नीक अनुहार ॥ नवि० ॥ १४ ॥ ग्राम पुरादिक देखतोजी, बालक्रीडा पुर रीति ॥ कुमर विचारे चित्तमांजी, वैरी कोइक दिये नीति ॥ नवि० ॥ १५ ॥ रखे सायरमां नाखतोजी, वज्रमुष्टियें कस्यो घाय ॥ तेहनुं बल न सही शक्योजी, दुःख पीडा अति थाय ॥ नवि० ॥ १६ ॥ गगनें गंभीनें गयोजी, समरे औषधि ताम ॥ विघ्न निवारणी नामथीजी, सरोवर पडियो वहाम ॥ नवि० ॥ ॥ १७ ॥ तेह तरी तीरें गयोजी, मारग जोवा काम ॥ चढीयो एक वड उपरेंजी, दीठो मारग वली गाम ॥ नवि० ॥ १८ ॥ उतरवा इछा करेजी, वडथी जावा जाम ॥ वड उमयो आकाशमांजी, जइ महारणनें ठाम ॥ नवि० ॥ १९ ॥ पर्वतनिकूटे वड रह्योजी, उतर्यो हवे वनमांहि ॥ पाणी सींच्यां वृक्षनांजी, थल दीठां रे उछांहि ॥ नवि० ॥ २० ॥ पांचशें तापसना तिहांजी, आश्रमें गयो ते कुमार ॥ तिहां एक शय्यायें रह्योजी, व्याघ्र दीठो मनोहार ॥ नवि० ॥ २१ ॥ वाघ सेवा तापस करेजी, विस्मय लह्यो कुमार ॥ तव तापस उना थइजी, आलिंगन दिये सार ॥ नवि० ॥ ॥ २२ ॥ खेम कुशल पूछे वलीजी, अमृत नरियां नयण ॥ बेसारे उचिता सनेंजी, कुमर पूछे एम वयण ॥ नवि० ॥ २३ ॥ एह वाघ कहो कोण छेजी, केम सेवा करो तास ॥ तापस कहे मोहोटी कथाजी, छे ते कहेशुं उल्लास ॥नवि०॥ २४ ॥ श्रीजयानदना रासमांजी, चोवीशमी ए ढाल ॥ खम बीजे पदमें कहीजी, सुणतां मंगलमाल ॥ नवि० ॥ २५॥सर्वगाथा॥७१२॥

॥ दोहा ॥

॥ स्नान करीने शुद्ध थया, गौरवथी गुणवंत ॥ नोजन करवा नाजने, पायस ते पिरसंत ॥ १ ॥ इष्ट फलादिक आपियां, नोजन करीनें नावि ॥ तापसशुं तिहां ततक्षणें, आसन बेग आवि ॥ २ ॥ तापस एक युवान तव, हरिवीर हितकार ॥ कुमरनें तेह कथा कहे, व्याघ्रनी करी विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥ वींछीयानी देशीमां ॥

॥ महापुरें नरसुंदर राजियो, गाजीयो शत्रुजय हेत रे ॥ हरिवीर क्षत्रीमां ग्राजीयो, नृप तेहशुं हित बहु देत रे ॥ १ ॥ जूउं जूउं वात विनोदनी ॥ ए आंकणी ॥ नृप बालमित्र सेनापति, निज नंदन अधिक प्रमाण

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन आस्थानें रह्यो, सोधर्म सना समान॥ शत सुत श्रीवर्द्ध न सहित, पागीयानें परधान ॥ १ ॥ वन पालक आवी कहे, क्रीडा वनमां क्रोड॥ घोर शब्द घुघुर करे, खराखर फरे खोड ॥२॥ काल रूपें ए कोल डे, नटनें पण दीये नीक ॥ नाशी जाये निर्क्कारा, एहमा नहीं अलीक ॥ ३ ॥ अवनीपति उठे यदा, वारे पुत्र विनीत ॥ शत पुत्र उठे सामटा, सन्नद्ध थया शुन रीत ॥ ४ ॥ कुंमर पञ्च जाणी करी, उवेखीयु तमाम ॥ कौतुकथी केडें गयो, बुद्धिमत बलधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ जइ सूअर बोलावीयोजी, हय गय परिवृत तेह ॥ साहामो सूअर आवीयोजी, क्रोध करालित देह ॥ १ ॥ नवि नाव धरीनें सुणजो अचरज वात ॥ ए आंकणी ॥ समकालें सुत रायनाजी, वाण श्रेणी वरसत ॥ उछ ली उछली ते सवेजी, दाढायें खन्म करंत ॥ नवि०॥ २॥ हय गयनें पण पा डियाजी, खड्ग मोघर गदा घात ॥ तेहने अणगणतो थकोजी, बहु सुनट क रे पात ॥ नवि० ॥ ३ ॥ क्षण गगनें क्षण धरतीयेंजी, फाल दीये बलवत ॥ तस्करमां सहु देखताजी, आवि मध्यें वली अत ॥ नवि० ॥ ४ ॥ आकु ल व्याकुल सहु थयाजी, राजकुमर तेणी वार ॥ तेहनी रक्षा कारणेंजी, श्री जयानंद कुमार ॥ नवि० ॥ ५ ॥ शस्त्र रहित ते देखीनेंजी, मूके खड्ग तुरंग ॥ बांधी केडें बोलावीयोजी, सूअरनें निज संग ॥ नवि० ॥ ६ ॥ फाल देइ कुमर शिरेंजी, आवे कोल ते जाम ॥ मुष्टियें हणी दोय दाढनेजी, ख न्म खंम करी ताम ॥ नवि०॥ ७ ॥ तो पण सत्त्व पराक्रमेंजी, श्रीजय उपर तेह ॥ पडवा मांम्यु तेटलेजी, पग पकडी ज्रम देह ॥ नवि० ॥ ८ ॥ ते फे रि दूर फेंकी दीयोजी, धीर बली महावीर ॥ सात ताड दूरें पडयोजी, श्री जयशूर कोटीर ॥ नवि० ॥ ९ ॥ नागो बुंबारव करीजी, थयो नख हाडनो नंग ॥ पेठो गहनें नाशिनेंजी, पूठें कुमर गया संग ॥ नवि० ॥ १० ॥ दीठो नहीं ते वराहनेंजी, आवतो जूए गजराज ॥ श्वेत चार दंतुशलें जी, शो नित आव्यो समाज ॥ नवि० ॥ ११ ॥ मोद लहीनें नमाडियोजी, मुष्ट यें कीध प्रहार ॥ वश करी शिर उपर चढयोजी, श्रीजयानंद कुमार ॥नवि० ॥ १२ ॥ वाले ते हिमपुर नणीजी, पण वन सनमुख धाय ॥ वायुवेगें दूरें

रथ वेगो क्रोधथी एम कहे, नाशि गयो तु एकवार रे ॥ हवे नाश्यो किहां परवलथकी,वेखु तपे केतिक वार रे ॥जू०॥१८॥ जोगराय कोप करीनें कहे, एक वार चूको दीपीकालें रे, पण वानर मारतां वार शी, परथी तप्यो श्रय तृण वाले रे ॥ जू० ॥ १९ ॥ तेजस्वी श्रवज्ञा नवि खमे, लाग्युं तिहां रण असराल रे ॥ जोगरायनुं धनुष छेद्युं शरें, रथ नांज्यो थइ विकराल रे ॥जू० ॥ २० ॥ शिरस्त्राण वर्म सवि नेदीयां, जोगराय थयो जोगहीन रे ॥ हरिवीरें रथ वच्चे नाखियो, करे युद्ध थइ अदीन रे॥ जू० ॥ २१ ॥ कहे शूरपाल तुं केम मरे, पर श्रर्थे कहे तव तेह रे॥ निजपरनां काम स मोवडें, गणे सज्जन प्राणी जेह रे ॥ जू० ॥ २२ ॥ मरवु तो दैवनें हाथ छे, तुज इछानें न आधीन रे॥ एम कही शरनो मन्दप रच्यो, शूरपाल से ना थई दीन रे ॥ जू० ॥ २३ ॥ पत्ति ते विपत्ति पामीया, रथ रहित थ या रथवत रे॥ एम निज निज वाहन सवि गयां, मूक्यां संग्राम महंत रे ॥ जू० ॥ २४ ॥ हय गय नड तूर्यना नादथी, प्रस्फोट परें आकाश रे ॥ युद्ध करतां जयश्री श्रंतरें, रही न लह्यो वर श्रवकाश रे ॥ जू० ॥ २५ ॥ वादिहेत परें ते हेतीनें, छेदे ते परस्पर योद्ध रे ॥ सात धनुष छेद्यां शूर पालनां, अनुक्रमें सेनानीयें क्रोध रे ॥ जू० ॥ २६ ॥ तव विधुर चिंते तनु कंपतो, जे लेञ ते छेदे एह रे॥ हु थाको एह नवा परें, सेना नागी गइ जेह रे ॥ जू० ॥२७॥ इहां रहु तो मरण लहु खरो, नइ पामे जीव नोजीव रे॥ लज्जा नहीं शूरथी नासतां, एम चिंतवे चित्त श्रतीव रे ॥ जू० ॥२८॥ एम चिंतवी रथ वाल्यो तेणें, मूकी वचमां नट श्रेणी रे ॥ नाठो शूरपाल लेई चमू, जोगराय पूठें थयो तेणी रे ॥ जू० ॥ २९ ॥ गज घोडा शस्त्र लू टी लीयें, मते बकतरनें अलंकार रे ॥ नासतां लूटवु शोहलु, तव हूर्ज जय जयकार रे ॥ जू० ॥ ३० ॥ बीजे खमें पच्चवीशमी, ढाल श्रीजयानंदनें रास रे॥ कहे पद्मविजय पुण्यें करी, लहियें नित्य लीलविलास रे ॥ जू० ॥ ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान याचकनें देयतां, सेनानी लइ संग ॥ जोगराय निजपुर नणी, आव्या अति उछरंग ॥१॥ जोगराय माने नलु, जीवनो दायक जाण ॥ सेनानीनां शुन परें,वारु करे वखाण ॥ २ ॥ देवा कन्या मोवहु, उपकारीने

रे ॥ एहवें निज मातुल नरपति, भोगपुरीमां भोगराजान रें ॥ जू० ॥ १ ॥ तस वैरी तस पुरें आवियो. राजा वलीयो शूरपाल रे ॥ भोगराय ते तेह शु जूझीउं, नाग्रु निजवल तिण काल रे ॥ जू० ॥ २ ॥ भोगराय पेठो निज नयरमां, परधानें लख्यो ते लेख रे ॥ ठानो भाणेज तेडावियो, नरसुंदर लेख ते देख रे ॥ जू० ॥ ४ ॥ धीर वीर माने निज धन्यता, आन स्वजननें आव्यु काम रे ॥ करु उपकार हु तेहने, राखु सहुनी एम माम रे ॥ जू० ॥ ५ ॥ यत ॥ किं तद्राज्य रमा सा किं, यतोनोपकृति परे ॥ सर्वेपूपचिकीर्षंति, महांत किं पुनर्निजे ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ एम चिंतवी जावा उद्यम करें, तेटले नृपनें निषिद्ध रे ॥ सेनानी कहे भेक उपरें, केम गरुड पराक्रम सिद्ध रे ॥ जू० ॥ ६ ॥ शूरनगरें जइ शूरपालनें, जीती राखु भोगराय रे ॥ मुज द्यो आदेश तव भूपति, आण आपे करी सुपसाय रे ॥ जू० ॥ ७ ॥ गजरथ दोयसह ते आपीया, पांच लाख तुरगम दीध रे ॥ पायक पांच कोडीशु परिवस्यो, नीसाणे भको कीध रे ॥ जू० ॥ ॥ ८ ॥ हरिवीर चाल्यो भोगपुर भणी, महामानी माहा जोद्धार रे ॥ शूरपालनें जइ बोलावीयो, भोगरायें जाण्यो ते प्रकार रे ॥ जू० ॥ ए ॥ लेइ सैन्यनें तेह भेलो थयो,शूरपाल सैन्य दोय साथ रे ॥ लडे तास वाजित्र गर्जारवें, गाजे जिम सायर पाथ रे ॥ जू० ॥ १० ॥ गर्जे गज तुरंगें तुरग लडे, रथी पायक सम करे युद्ध रे ॥ शर कुंत खड्ग न्यायें लडे, क्षीण शस्त्रें केइ थइ क्रुद्ध रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ बाहु मुष्टियुद्धें वली जूझता, पदें पद दतें वली दंत रे ॥ केशें केश नखें नख वलगता, मस्तकें मस्तक फूटत रे ॥ ॥ जू० ॥ १२ ॥ केइ मोघरे रथनें चूरता, पाषड परें वली गदाघात रे ॥ करी पाडे गज भगटूक ज्यू, जम सरिखा ते साक्षात रे ॥ जू० ॥ १३ ॥ हय पग पकडी उछालता, लघु उपल परें वली केइ रे ॥ पग पकडी सुभट भमाडता, जेम शिशु उगाड करेइ रे ॥ जू० ॥ १४ ॥ केइ मूर्छा पडया गृद्ध पांखना, पवने सज्ज युद्ध कराय रे ॥ रणधरति उ सचर थइ, प्रेतें करी गगन भराय रे ॥ जू० ॥ १५ ॥ एम घोर रणें शूरपालनें, सैन्यें दोय सैन्यनें हेली रे ॥ तव ठंसरुया कांयक हारथी, रणथल मर्यादा मेली रे ॥ ॥ जू० ॥ १६ ॥ *भोगराय कवयो तव रथ चडी, अनिमानथी युद्ध करेय* रे ॥ शूरपालनुं सैन्य भागु तदा, देखी शूरपाल उठेय रे ॥ जू० ॥ १७ ॥

मदिरा हिययाए मग्गो, तिन्निवि विरला पर्यपंती ॥ १ ॥ रविचरियं गह चरियं, तारा चरिय च राहु चरियं च ॥ जाणति बुध्धिमता, महिला चरियं न जाणति ॥ २ ॥ दोहा ॥ जामातानें विंछी वाघ, मद्यपानी मूरख अज्ञा त ॥ नगिनीसुत पृथिवीको नाथ, कीधो गुण नवि जाणे सात ॥ ३ ॥ धूता धूते मूढकुं, चतुर न धूत्यो जात ॥ नारी धूते चतुरकुं, एह बडी एक बात ॥ ४ ॥ नूल्यो नाट बगायु ढोर, हाख्यो जुआरी बांध्यो चोर ॥ रांम नामने मातो सांढ, ए सातेथी टलीया मांम ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली ॥ जणव्युं जमाईनें तेणें रे, ते आव्यो ततकाल ॥ उचित प्रतिपत्ति करी रे, संतोष्यो सुरसाल ॥ जू० ॥ १२ ॥ सुनगा कुमलाणी मनें रे, दीवी देखी जेम नाग ॥ बाहिर स्नेह देखावतां रे, कहे मुज जाग्यां नाग्य ॥ ॥ जू० ॥ १३ ॥ यत ॥ कबहु वनिता मृड वाच वदे, कबहुं तिनछुं कटु वाच कहे ॥ कबहु मनरग विरंग धरे, कबहुज बिरागिनी हूइ रहे ॥ कबहु एक बोल सहे न नलो, कबहुं कटु बोल अनेक सहे ॥ मुनि धन्य कहे जगदीश विना, त्रियकी करणी कहो कौन लहे ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ हवे स्त्री लईने जायवा रे, हरिवीर थयो उजमाल ॥ तव कपटें घहेली थई रे, शिर कंपे विकराल ॥ जू० ॥ १४ ॥ अट्टहास्य मुख बोलती रे, आंखे बीहाडे लोक ॥ नाजन नांगे नाचती रे, मारे बालादि थोक ॥ जू० ॥ ॥ १५ ॥ निज परनें गालो दीये रे, कांइ न ढांके अंग ॥ कारण विण रुवे हसे रे, ताली दीये गाये रंग ॥ जू० ॥ १६ ॥ विच विचमां माही होयें रे, वावडीमां करे क्रीड ॥ खेद लहे पित्रादिका रे, धरता अतिशय व्रीड ॥ जू० ॥ १७ ॥ मत्रवादी तेडया घणा रे, करता बहु प्रतिकार ॥ देवी भद प्रेत शाकिनी रे, व्यंतर शंका धार ॥ जू० ॥ १८ ॥ सन्निपात उन्मादता रे, जाणी दोष अपार ॥ विविध प्रयोग औषध करे रे, पण गुण न थयो लगार ॥ जू० ॥ १९ ॥ कुलदेवी पूजा करे रे, मात पिता घण राग ॥ हरिवीर पण करे मानता रे, देव देवीनी लाग ॥ जू० ॥ २० ॥ गुण न थयो कोयथी हवे रे, विलखो थयो हरिवीर ॥ सालादिक हांसी करे रे, चिर रहेतां जाय नीर ॥ जू० ॥ २१ ॥ रूपवती सती प्रेयसी रे, अनु यायी घणो स्नेह ॥ एम इ खणी न खमी शकु रे, चितवे जावं गेह ॥ जू० ॥ ॥ २२ ॥ घरें जाउ एहनें मूकीनें रे, मित्रादिक करे हास ॥ मुख दाखी

एह ॥ सनाने पूछे सुगुण, कन्या छे कोइ गेह ॥ ३ ॥ दंमनायक शूरदत्त ते, बोल्यो एहवा बोल ॥ सुनगा नाम सोहामणी, आवे एहने तोल ॥ ४ ॥ अद्भुत कन्या एहवी, माहारे छे महाराय ॥ एकांतें अनुरूप जोइ, मनमां मोद न माय ॥ ५ ॥ हरिवीरनें दीये हर्षथी, अवनीपति लही आण ॥ पाणीग्रहण प्रेमें करी, महोत्सव विविध मम्राण ॥ ६ ॥ आपे अति आदर करी, करमोचननें काल ॥ शूरदत्त निजशक्तिथी, अनुपम धन असराल ॥ ७ ॥ नोगराय पण नक्तिथी, आपे वस्त्र अनेक ॥ पुर गाम दिये प्रेमें करी, वारु धरीय विवेक ॥ ८ ॥ काल केतोएक काढतो, नोगवतो सुख नोग ॥ जावा निजपुर जेटले, उद्दत्तो कीधो योग ॥ ए ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुनगा कहे एणे अवसरें रे, पेटपीडा मुज थाय ॥ कपट न शीखवुं पडे रे, नारीमां सहज ए आय ॥१॥ जूठं गति नारीनी रे ॥ नारी कपट न कोय जणाय ॥ जू० ॥ ए आकणी ॥ मांचे तडफडती पडी रे,पिता करे प्रतिकार ॥ तिम तिम बूब पाडे घणु रे, दाखवे अतिय विकार ॥ जू० ॥ २ ॥ नाग्ययोगें नरता मल्यो रे, उत्तम सुगुण निधान ॥ एणे अवसर पीडा थई रे, धिग् मुज पाप निदान ॥ जू० ॥ ३ ॥ सासू ससरा सेववा रे, उत्सुकता रही एम ॥ एम सांनली निज कपटें रे, दम्मनायक लहे प्रेम ॥ जू० ॥ ४ ॥ स्वामी मलवा मन घणु रे, पण टकीयो कोई विघ्न ॥ पण शाता तस नवि थई रे, खाये नवि वली अन्न ॥ जू० ॥ ५ ॥ कगाडी कहो कोण शके रे, जागतो उघे जेह ॥ हवे ससरादिक एम कहे रे, साजी थाये जब एह ॥ जू० ॥ ६ ॥ तव तुमें तेडवा आवजो रे, नूपनें जणाव्युं तेह ॥ नूपें नूपनें मोकल्यां रे, हय गय अद्भुत जेह ॥ जू० ॥ ॥ ७ ॥ सेनानी ते लई चल्यो रे, दूरें पोहोतो जाणि ॥ स्वैरिणी सुनगा हर्षथी रे, साजी थइ तेणे ठाय ॥ जू० ॥ ८ ॥ तात चाकर मधुकवर्ण रे, सेवे काम विलास ॥ नाना उपचारें करी रे, ते पण वश छे तास ॥ जू० ॥ ए ॥ मोही तेहना स्वरथकी रे, क्रीडा करे आसक्त ॥ पण निपुणाइ तेहनी रे, कोई न जाणे रक्त ॥ जू० ॥ १०॥ नारी चरित्र न को लहे रे, धाता पण मुजाय ॥ शूरदत्त हरख्यो घणु रे, सरल ते नारीनो ताय ॥ ॥ जू० ॥ ११ ॥ यत ॥ जलमके मच्छिपयं, आगासे पंखीयाण पयपती॥

दिक दीये शीख, सुनगा पण अगीकरेजी ॥ जगत ठगे जे नारी, मात पिता ते नवि धरेजी ॥ १० ॥ दपती चाल्यां दोय, वोलावी सहुये वल्यांजी ॥ मधुकर दर्शितमार्ग, ते मार्गे महुये चल्यांजी ॥ ११ ॥ मान्या इछया जेह, तेह सफल माने तदाजी ॥ अर्द्ध मारगें हरिवीर, नदी आवी तिहां एकदाजी ॥ १२ ॥ वन निकुंज तस तीर, ऊतस्या नोजन कारणेजी ॥ दपती नोजन कीध, सुनगा कहे चित्त गारणेजी ॥ १३ ॥ ए सरिता रमणीक, वन प्रदेश सोहामणाजी ॥ क्रीडा करीयें क्षणेक, मुज मन एहवी कामनाजी ॥ १४ ॥ मधुकर रक्षक एह, अंतर सेवक आपणो जी ॥ लाजनें नय इहां नांहिं, नवि आवे कोइ खांपणोजी ॥ १५ ॥ पेठां सरितामांहिं, कामक्रीडा पीयुशुं करेजी ॥ जलक्रीडा करी एम, पेठां ते वन गव्हरेंजी ॥ १६ ॥ कामक्रीडा करे तह, आलिंगन गाढुं दीयेजी ॥ विविध करी रतिक्रीड, एक पोहोर ठल्लंघीयेंजी ॥ १७ ॥ रक्षा मिश मधुकंठ, रथ बेशी फरे चिहु दिशेंजी ॥ फिकर करें चोकीयात, नीकल्यां नहीं कारण कीशेजी ॥ १८ ॥ बीजे खम्में ढाल, सत्तावीशमी सोहामणीजी ॥ पद्म कहे मुनिराज, धन्य जेणे नारी अवगणीजी ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ८०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुग्ध जाणे मनमां नहीं, केम इहां करीयें वार ॥ शका लही शब्दज कस्या, चोकीयातें दोय चार ॥ १ ॥ उत्तर नवि आव्यो किमे, वनमां जुवे विचार ॥ सेनानी सुनगा तथा, नवि दीठा निरधार ॥ २ ॥ खड्ग किहांयक दीठुं खरुं, अनिष्ट थइ आशक ॥ मधुकर खोलण मोकलीयो, नवि लाधो निःशक ॥ ३ ॥ शोकार्त्ते सकुल सहु, विकलप विविध विशेष ॥ पगला पण अण पेखता, पडती रयणी पेख ॥ ४ ॥ त्रियामा शतयाम परें, काढी दुखमां काल ॥ अनन्यगति कांहि आगलें, चाल्या नागती चाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ चडावलानी देशी ॥

॥ अनुक्रमें पोहोता महापुरें रे, नमीया जइ नूपाल ॥ आंखथकी आंसु जरे रे, वात कहेता विकराल ॥वात०॥ सरूप, शोकवत्त थयो सांनली नूप ॥ सैनादिकें करीनें चोप, खोलावे बहु दिन ते अनूप ॥ १ ॥ जी राजन जी जीरे ॥ लखो गमे नट मोकली रे, शोधाव्यो बहु नाति ॥ बाल मित्र राजा तणो रे, नवि लाधो एकांति ॥ नवि लाधो एकांत जेवारें, पुत्रथकी ते

शकु केणी परें रे, एके नहीं अवकाश ॥ जू० ॥ २३ ॥ कर्म तणी गति कोण लहे रे, जावु निश्चय धाम ॥ पूछे श्वसुरनें ते कहे रे, आवजो फरि तुमें आम ॥ जू० ॥ २४ ॥ आण लही चाल्यो घरें रे, पोहोतो अनुक्रमें तेह ॥ स्वजनने सहु सनलावतो रे, धरतो तास सनेह ॥ जू० ॥२५॥ खमें बीजे उवीशमी रे.पद्मविजयें कही ढाल ॥ धन्य मुनिवर जेणें परिहरी रे, नारी ङुखजजाल ॥ जू० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलदेवी पूजा करे, शकुन देखावे साच ॥ निमित्त पूछे बहु निमित्तिया, नारी करावे नाच ॥ १ ॥ कोइ सगम स्त्रीनो कहे, इव्यादिक दीये तास ॥ नारी आसक्त नरनें होये, सर्व विचार विनाश ॥ २ ॥ सुनगा वली साजी थई, पूरव रीति पिछाण ॥ तेडवु मूकवु हाथ तस, मायपणु सुप्रमाण ॥ ३ ॥ पित्रादिक परमोदथी, तेडाव्यो जामात ॥ आव्यो ते कतावलो, नूख्यानें जेम नात ॥ ४ ॥ शूरदत्तादिक साचवे, उचितकृत्य उजमाल ॥ सुनगा दाखवे सुखणी, स्नेह हियामां साल ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ राग खनाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी॥ सुनगा नामें नार, ङुनगापणु ते आचरेजी ॥ जेम नडा कहे नाम, पण अनङ सहुने करेंजी ॥ १ ॥ कामस्नेह उपचार, करी नरतारनें रीजवेजी ॥ वश थयो नारीनें तेह, एक दिन एकांतें चवेजी ॥ २ ॥ जब करीयें प्रयाण, तब मुज तातनें मागजोजी ॥ मधुकठ आपो साथ, ए बहु कामनो जाणजोजी ॥ ३ ॥ मारगनो छे जाण, ढूकडे मारग लइ जशेंजी ॥ नक्तिवतो ने समर्थ, एहथकी गुण बहु थशेजी ॥ ४ ॥ मानी मूरखें वात, तेमज कर्युं ते अवसरेंजी ॥ वस्त्रालंकार सत्कार, दासी दास दीये तस करेंजी ॥ ५ ॥ मधुकठ पण दीयो तास, हवे जावा उद्यम करेजी ॥ मात पिता पडी पाय, सुनगा आखें आंसु जरेजी ॥ ६ ॥ मात पिता दीये शीख, नरता देवपरें गणेजी ॥ पालजो शील उदार, अनाचार सवि अवगणेजी ॥ ७ ॥ पूर्वे न कीजें शयन, करीयें नरता पूरवेंजी ॥ सासु नणदनी नक्ति, करजो जेम ङुख चूरवेजी ॥८॥ बधु परिजन जेह, वदन प्रसन्न निज राखजेजी ॥ शोक्य साथें धरे राग, पतिवल्लननें आदर करेजी ॥ ए ॥ पतिद्वेषीनें उवेखि, शुन आचारें संचरेजी ॥ इत्या

शेषी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वाजित्र गीत बहु थयां रे, बंदी मंगल बोले ॥ सांजली कुटुंब ते आवीनें रे, दुःखनां बंधन खोले ॥ बंधन दुःखनां खोला पूछे, अचरिज वात कहो ए शुं छे ॥ नवि दीठुं नवि सांजलीयुं छे, हरिवीर कहे तमें सांजलो ज्युं छे ॥ जी०॥ १२॥ कर्मथी बलीयो को नही रे, कर्मे तिरिमां घाल्यो ॥ तेहमांथी तुमें उद्धरी रे, मानवनो जव आल्यो ॥ आल्यो मानवनो जव रूडो, सवि संसारनो मोह छे कूडो ॥ बिंदु दीये एक जिम मधुपूडो, सुख माने परमारथें जूंमो ॥ जी० ॥ १३ ॥ यत ॥ शौर्ये च धैर्ये च धने च पूर्णे, ऐश्वर्ययोगेऽप्यखिले बले च ॥ मित्रे च नृपेपि हरौ कपित्वे, नृत्यत्यहो कर्मगतिर्विचित्रा ॥ १ ॥ यन्मनोरथगतेरगोचरं, यत् स्पृशति न गिर कवेरपि ॥ स्वप्नवृत्तिरपि यत्र दुर्लजा, हेलयैव विदधाति कर्म तत् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ बीजे खमें ए कही रे, अठावीशमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे सांजलो रे, आगल वात रसाल ॥ आगल वात रसाल सुसार, सांजलतां होय जयजयकार ॥ श्रीजयानंदजीनें अधिकार, हरिवीर कहे निज वात प्रकार ॥ जी० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ८२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेयसीशुं पेठो वनें, तिहां लगें मालिम तुम्ह ॥ जावि वात सुणो जणुं, अंतर वन गयां अम्ह ॥ १ ॥ स्मरचेष्टा संलापथी, मुंजावे मुज मन्न ॥ मलयगिरि मारुतथकी, टाढुं थाये तन्न ॥ २ ॥ कोकिलरव कानें सुणु, बंधुर लता संबंध ॥ जमतां जोतां जामिनी, बोली करी निर्बंध ॥ ३ ॥ माधवी मंमप रम्य छे, आपण रमीयें एथ ॥ तास वचन तहत्ति करी, ततक्षण पोतो तेथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ वणजारानी देशी ॥

॥ पल्लव सायरो पाथर्यो ॥ सुणो राजा रे ॥ कामक्रीडा करी ताम नृपति शुण ताजा रे ॥ तिहां एक कपि देखी करी ॥ सु० ॥ मुजनें कहे ते नाम ॥ नृ० ॥ १ ॥ स्वामी हुं पापणी यदा ॥ सु० ॥ मांदी थइ होय वार ॥ नृ० ॥ मूकी गया तमें मुजनें ॥ सु० ॥ दैवथी थयो करार ॥ नृ० ॥ २॥ तुम वियोगें दुःख धरुं ॥ सु० ॥ एण समे आवी एक ॥ नृ० ॥ परिव्राजिका म्हाही घणी ॥ सु० ॥ धरती अंग विवेक ॥ नृ० ॥ ३ ॥ पासें औषधि गांठडी ॥ सु० ॥ जाणी एह विचार ॥ नृ० ॥ दान इष्ट देइ वश करी ॥सु०॥

द अधिको धारे ॥ शोक विलाप करे सहु नारे, तेम तेम नूपति घणुं पोका रे ॥ जी० ॥ २ ॥ सेनानीनु कुटुंब ते रे, रूइ रुइ बहु काल ॥ प्राणी कर्म नां उदयथी रे, सहे एकलो दुःखजाल ॥ स० ॥ ते राजा, मत्र्यादिक प्रतिबोधे जाजा ॥ अन्य सेनानी थापे अतिभ्राजा, जेहनी कोय न लोपे माजा ॥ जी० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें शोक मूकी करी रे, एकदिन जाये गज लेवा ॥ विंध्या अटवी आवीयो रे, सामग्रीशु कलेवा ॥ सामग्रीशु मेरामां बेठो, बहु परिवारें परिवृत्त जेठो ॥ शबर आवी एक वेगे देठो, वानर नाच करावे उक्किठो ॥ जी० ॥ ४ ॥ वानर वानरी नाचतां रे, विचविच करे थुतकार ॥ वलगे चूबे आलिंगतां रे, शुद्ध करे ते अपार ॥ शुद्ध० ॥ ते जोइ, सहुजन चित्तमां अचरज होई ॥ एहवो नाच न दीठो कोई, सहु एम कहे ते नयणें पलोई ॥ जी० ॥ ५ ॥ राजा देखी रीजियो रे, आपे तस बहु दान ॥ तेहमां मुख्य जे वानरो रे, देखी हरखे राजान ॥ राजा देखी वानर रोवे, पाय पडी आसुयें पग धोवे ॥ सहु एहवु अचरिज ते जोवे, राय तणे मन विस्मय होवे ॥ जी० ॥ ६ ॥ चेष्टायें सवि दाखवे रे, पण वचनें न कहाय ॥ आशय कोइ समजे नहीं रे, पण कांइक अभिप्राय ॥ कांइक अभिप्राय जाणी लेवें, कपिनुं वृंद नूप ततखेवें ॥ इच्छित शबरनें धन बहु देवे, नाटकथी नूपनें कपि सेवे ॥ जी० ॥ ७ ॥ केलिवीर पशुपालनें रे, आप्यो शिक्षा देत ॥ राजा केइक दिन रही रे, चाल्यो पृथिवी नेत ॥ पृथिवीनेत लेई गज वलीयो, निजधामें पोहोतो सुख भलीयो ॥ अवसर जोइ केलिवीर ते कलियो, नृत्य करावे नृपपुर हलीयो ॥ जी० ॥ ८ ॥ कपि पालक कपिनें दीये रे, मास अधिक नरराय ॥ तत्त्व जाणे नहीं पण तिहां रे, राग ते अधिको थाय ॥ अधिका रागथी नूप करावे, कनकमणि अलंकार जडावे ॥ सोनी आजरण लेइनें आवे, नृत्य अतें नृप आगल गवे ॥ जी० ॥ ॥ ए ॥ नूपें कलाद सतोषीयो रे, दान देइ शुभ रीति ॥ तेह आजरण पहेराववा रे, निज हाथें धरी प्रीति ॥ प्रीति धरी पहेरावता काम, जोहनुं वलय अठे गल ताम ॥ नवीन पहेरावता काढे जाम, वानर पुरुष रूप हुओ ताम ॥ जी० ॥ १० ॥ नूपतिनें चरणे नमे रे, सेनानी हरिवीर ॥ उगाडी आलिंगीयो रे, नयणें फरंतो नीर ॥ नयणें नीर फरंतो देखी, जोवा रठ थइ सर्व उवेखी ॥ नूपें आश्वास्यो संभ्रम पेखी, आसनें बेसाड्यो सुवि

॥ नू०॥ १८ ॥ दोहा॥ और गांग खोली खुले, जब लगें पोहोंचे हाथ॥ प्रेमगांठ अंतर पडी, सरके शिरके साथ ॥ १ ॥ ढाल ॥ विवाह सहुयें मना वीयो ॥ सु० ॥ पण मुज राग न कोय ॥ नू० ॥ सहुने विश्वास पमाडवा ॥ ॥ सु० ॥ स्नेह देखाडयो तोय ॥ नू० ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सारी नारी किन्न री. चोथा हे जूआ ॥ नागा सो उगखा, वेश्या सो मूआ ॥ १ ॥ ढाल ॥ वार बिहुं तुज फेरव्यो ॥ सु० ॥ तोही न समज्यो गमार ॥ नू० ॥ परि व्राजिकदत्त वलयथी ॥ सु० ॥ कपि कीधो एणी वार॥ ॥नू० ॥ २० ॥ नो गव तिरिपणुं मोजमां ॥ सु० ॥ समज्यो न मुज आकूत ॥ नू० ॥ माहा रो दोष इहां नथी ॥ सु० ॥ शाने करे छे तूत ॥ नू०॥ २१ ॥ तात वची ला वी बहु ॥ सु० ॥ जाशुं कांइक धन लेह ॥ नू० ॥ क्रीडीशुं इष्टाथकी ॥ ॥ सु० ॥ तु कपिगणमां रमेय ॥ नू० ॥ २२ ॥ एम कही रथ प्रेरियो ॥सु०॥ उत्तित दिशि नणी तेण ॥ नू० ॥ फाल देई हु वलगीयो ॥ सु० ॥ वलीय विदारुं नखेण ॥ नू० ॥ २३ ॥ मार्यो परोणे मुजनें ॥ सु० ॥ तोही न मूकु तास ॥ नू० ॥ म्यान सहित खड्गें हण्यो ॥ सु० ॥ तव कस्यो क्रोधें निराश॥ ॥ नू० ॥ २४ ॥ मूर्छित थइ नूयें पड्यो ॥ सु० ॥ वातयोगें थयो सऊ॥ ॥ नू० ॥ राति गई विहाणु थयुं ॥ सु० ॥ नवि जहुं कऊ अकऊ ॥नू०॥ ॥ २५ ॥ वानरीयूथ देखी करी ॥ सु० ॥ निरधास्यो यूथेश ॥ नू०॥ वानरीशुं क्रीडा करु ॥ सु० ॥ यूथपति हु विशेष ॥ नू० ॥ २६ ॥ शबरें पकडी एक दिनें ॥ सु० ॥ शिखव्युं नाटक मुऊ ॥ नू० ॥ तुम आप्यो तु में नर कस्यो ॥ सु० ॥ ए मुज वातशुं गुऊ ॥ नू० ॥ २७ ॥ मुज पूठा तो नारिनो ॥ सु० ॥ कोइ न करशो संग ॥ नू० ॥ विषयासक्त जे जे होये ॥ ॥ सु० ॥ आपद लहे एकग ॥ नू० ॥ २८ ॥ बीजे खमें ए कही ॥सु०॥ उगणत्रीशमी ढाल ॥नू०॥ पद्म कहे ते धन्य मुनि ॥सु०॥ जे न जूते नामिनी नाल ॥ २९ ॥ सर्वगाथा ॥ ८५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदोन्मत्त मूढा परें, नष्ट हृदय जोइ नार ॥ सर्वखमा ने सम्मर्दु, करे विपरीत विकार ॥ १ ॥ वाणी सांनली नृप वदे, मत खेदाउ मन्न ॥ शील वती श्यामा करी, नोगवो नोग अखिन्न ॥ २ ॥ सेनानी कहे सांनलो,ना मिनी मुख्य नोगांग ॥ रात दिवस वीहितो रहुं, सिंहिणी जिम सारंग ॥

तूठी कहे मुज सार ॥ नू० ॥ ४ ॥ केम महारी सेवा करे ॥ सु० ॥ काम होये ते नांख ॥ नू० ॥ सर्वे वातें समरथ ढुं ॥ सु० ॥ मनमां मत कांय राख ॥ नू० ॥ ५ ॥ में कह्युं स्वामिनी सांजलो ॥ सु० ॥ रोग आवे मुज वेद ॥ नू० ॥ विघन करे कामनोगमां ॥ सु० ॥ प्रिय संगम नवि रेह ॥ नू० ॥ ६ ॥ महारां विघन दूरें करो ॥ सु० ॥ तव तेणें औषधि छत्र ॥ नू० ॥ लोह वलय मुज आपियुं ॥ सु०॥ मुजनें एणी पेरें वत्त ॥नू०॥ ॥ ७ ॥ ए औपधि पासें थकां ॥ सु० ॥ विघन थाये विसराल ॥ नू० ॥ रोग आवे नहीं सर्वथा ॥ सु० ॥ न परानवे सिंह व्याल ॥ नू० ॥ ८ ॥ सुर नर कोइ न डुःख दीये ॥ सु० ॥ हरख लइ हुं अपार ॥ नू० ॥ विसरजी पूजी नमी ॥ सु० ॥ महिमा घणो श्रीकार ॥ नू० ॥ ए ॥ तेणें तुम सगम मुज थयो ॥ सु० ॥ वली अगें नीरोग ॥ नू० ॥ महारे शिव तुम जोइयें ॥ सु० ॥ तुम करें करु योग ॥ नू० ॥ १० ॥ ठंशीके हमणां ठवुं ॥ ॥ सु० ॥ रतक्रीडायें कस्यो खेद ॥ नू० ॥ अवसरें सहु सारु थशे ॥ सु० ॥ हमणां सुठ सुख वेद ॥ नू० ॥ ११ ॥ एम कही देखाडी मनें ॥ सु० ॥ मूकी ठंशीता मूल ॥ नू० ॥ मूढ थयो एना वयणथी ॥ सु० ॥ नवि जाणी प्रतिकूल ॥ नू० ॥ १२ ॥ करी विश्वासनें ऊंघीयो ॥ सु० ॥ मुज कंठें ते दीध ॥ नू० ॥ वैरणी प्रायें निडही ॥ सु० ॥ जाग्यो देखी कपि कीध ॥ ॥ नू० ॥ १३ ॥ खेद लह्यो हुं मनथकी ॥ सु० ॥ धायो पूठें तास ॥ ॥ नू० ॥ रथ बेठी मधुकरछुं ॥ सु० ॥ करती लील विलास ॥ नू० ॥ १४ ॥ जाती दीठी स्नेहथी ॥ सु० ॥ हुं करतो लाल पाल ॥ नू० ॥ ते कहे मूढ जाणे नहिं॥सु०॥हजीअ स्नेहनो काल॥नू०॥१५॥ दोहा ॥ मूरख घर लक्ष्मी घणी,अरु विद्या अकुलीन ॥ महीला माने नीचकुं, वरसो मेह गरीन ॥१॥ पाप होय सब लोनथें, रस थें व्याधिविशेष ॥ अति डुःख ऊपजे स्नेहथें, त्रिहु ठोडे सुख देख ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एक पखो कहो निर्वेहे ॥सु०॥ स्नेह ते केतो काल ॥ नू० ॥ विवाद प्रमुख पितायें कस्यो ॥ सु० ॥ ते परवश पणे माल ॥ नू० ॥ १६ ॥ बालथी हुतो स्वैरिणी ॥ सु० ॥ मधुकरछुं अतिराग ॥ नू० ॥ मधुरस्वरें मोही घणुं ॥ सु० ॥ गीत कलानें लाग ॥ नू० ॥ १७ ॥ निजघरमां एहसुं रमुं ॥ सु० ॥ एहज मुज नरतार ॥ ॥ नू० ॥ अनुत रूप तुज देखीनें ॥ सु० ॥ वली तुज चरित्र आचार ॥

॥ नू०॥ १८ ॥ दोहा ॥ और गांठ खोली खुले, जब लगें पोहोंचे हाथ ॥ प्रेमगांठ अंतर पडी, सरके शिरके साथ ॥ १ ॥ ढाल ॥ विवाह सहुयें मना वीयो ॥ सु० ॥ पण मुज राग न कोय ॥ नू० ॥ सहुने विश्वास पमाडवा ॥ ॥ सु० ॥ स्नेह देखाडयो तोय ॥ नू० ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सारी नारी किन्न री, चोथा हे जूआ ॥ जागा सो उगया, वेध्या सो मूआ ॥ १ ॥ ढाल ॥ वार बिहुं तुज फेरव्यो ॥ सु० ॥ तोही न समज्यो गमार ॥ नू० ॥ परि व्राजिकदत्त वलयथी ॥ सु० ॥ कपि कीधो एणी वार ॥ ॥नू० ॥ २० ॥ नो गव तिरिपणुं मोजमां ॥ सु० ॥ समज्यो न मुज आकूत ॥ नू० ॥ माहा रो दोष इहां नथी ॥ सु० ॥ शाने करे ठे तूत ॥ नू० ॥ २१ ॥ तात वची ला वी बहु ॥ सु० ॥ जाशुं कांइक धन लेह ॥ नू० ॥ क्रीडीशुं इछायकी ॥ ॥ सु० ॥ तुं कपिगणमां रमेय ॥ नू० ॥ २२ ॥ एम कही रथ प्रेरियो ॥सु०॥ इछित दिशि जणी तेण ॥ नू० ॥ फाल देई हुं वलगीयो ॥ सु० ॥ वलीय विदारु नखेण ॥ नू० ॥ २३ ॥ मार्यो परोणे मुजनें ॥ सु० ॥ तोही न मूकु तास ॥ नू० ॥ म्यान सहित खड्गें हण्यो ॥ सु० ॥ तव कस्यो क्रोधें निराश॥ ॥ नू० ॥ २४ ॥ मूर्छित थइ नूयें पड्यो ॥ सु० ॥ वातयोगें थयो सज्ज॥ ॥ नू० ॥ राति गई विहाणुं थयुं ॥ सु० ॥ नवि लहुं कज्ज अकज्ज ॥नू०॥ ॥ २५ ॥ वानरीयूथ देखी करी ॥ सु० ॥ निरधास्यो यूथेश ॥ नू० ॥ वानरीशु क्रीडा करु ॥ सु० ॥ यूथपति हुं विशेष ॥ नू० ॥ २६ ॥ शबरें पकडी एक दिनें ॥ सु० ॥ शिखव्युं नाटक मुज्ज ॥ नू० ॥ तुम आप्यो तु में नर कस्यो ॥ सु० ॥ ए मुज वातशु गुज्ज ॥ नू० ॥ २७ ॥ मुज पूछो तो नारिनो ॥ सु० ॥ कोइ न करशो संग ॥ नू० ॥ विषयासक्त जे जे होये ॥ ॥ सु० ॥ आपद लहे एकंग ॥ नू० ॥ २८ ॥ बीजे खमें ए कही ॥सु०॥ ठगणत्रीशमी ढाल ॥नू०॥ पद्म कहे ते धन्य मुनि ॥सु०॥ जे न नूले जामिनी जाल ॥ २९ ॥ सर्वगाथा ॥ ८५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदोन्मत्त मूढा परें, नष्ट हृदय जोइ नार ॥ सर्वखमा ने सामटुं, करे विपरीत विकार ॥ १ ॥ वाणी सांजली नृप वदे, मत खेदाउ मन्न ॥ शील वती श्यामा करी, जोगवो जोग अखिन्न ॥ २ ॥ सेनानी कहे सांजलो,जा मिनी मुख्य जोगांग ॥ रात दिवस बीहितो रहुं, सिंहिणी जिम सारंग ॥

॥ ३ ॥ यत ॥ अनृतं साहस माया, मूर्खत्वमतिलोनता ॥ अशौच नि र्दयत्व च, स्त्रीणां दोषा स्वनावजा ॥१॥ दोहा ॥ नामिनी तजवुं नयण की, इह परनव सुख थाय ॥ तपोवनमां जइ तप करुं, आणा तुम आरा य ॥ ४ ॥ राय विचारे हृदयमां, उपरांगे थयो एह ॥ अथवा वेसी एह जु, कहो विरचे नहीं केह ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥ बटाउनी देशी ॥

॥ नृपति मनमां चिंतवे रे, गज रथ अश्व अनेक ॥ माहारे ठे पण न वि शक्यो, स्त्री पुःखथी ए व्यतिरेक रे ॥ जीव पुःख सहे अनेक रें, कोइ नहीं आधार विवेक रें, कर्म वैरी परानव लेक रे ॥ १ ॥ कर्मतणी गति ए हवी मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ इंइ ते कीडो उपजे रे, चक्री नरके जाय ॥ नरपति ते पायक होये, धनवत दरिद्री थाय रे ॥ शक्तिवतनी शक्ति जाय रे, सुखीयो ते पुःखनर गाय रे, नीरामय ते सरोगी काय रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ सुनग दोनागी नीपजे रे, इण नव परनव एम ॥ कर्म कर्यां बूटे नहीं, तेह उपर आस्था केम रे, एतो अनियत सुख ठे नेम रे, सुख विषयना उपर प्रेम रे, ते तो स्वप्न स्वनन सुख जेम रे ॥कर्म०॥३॥ विषय आशा फोकट करे रे, मृग तृष्णा परें तेह ॥ नारी आहेडी थानकें, मारे नग मृगनें जेह रे ॥ फोकट धरे तस नेह रे, नारी वाले नरनी देह रे, एतो पुःख वन उपरें मेह रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ ठगी आवी निज तातनें रे, तिरि कीधो नरतार ॥ एम कोइ राणी सुलने, करे तो श्यो तस प्रतिकार रे ॥ एक नारीयें एम पुःख धार रे, माहारे तो अनेक ठे नार रे, सापण वाघण अनुकार रे ॥ ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ नव उदवेग एम नावतो रे, आव्यो नर कोइ ताम ॥ राय वधाव्यो एणी परें, स्वामी हेमजट तापस नाम रे ॥ परिवार लइ उद्याम रे, तुम पुर सीमानें गाम रे, धरे ज्ञान ध्यान अनिराम रे ॥कर्म०॥ ॥ ६ ॥ ते गुरु आव्या सांनली रे, नृप करतो बहु मान ॥ घृतपूरमां सा कर परें, जाणी चाल्यो उद्यान रे ॥ वदनानु धारी ध्यान रे, जई दीठा त रुतलें थान रे, नमतां दीये आशीष दान रे ॥ कर्म० ॥७ ॥ तापसनक्तो नूपति रे, सांनले तस उपदेश ॥ आयु अथिर धन चपल ठे, स्वारथीयां सज्जन विशेष रे ॥ क्षण क्षण क्षय थाय तनु शेष रे, नारी राक्षसणीने वे श रे, पुःख उपजावे संक्लेष रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ नृप सुणी ते देशना रे,

अधिक वैराग्य धरेय ॥ राज्य ठवि निज पुत्रनें, साथें हरिवीरादिक लेय रे ॥ तापस व्रत अंगी करेय रे, स्वर्णजट तस अनिधा देय रे, गुरु जाननो हर्ष धरेय रे ॥ कर्म० ॥ ए ॥ पट्टराणी सुर सुंदरी रे, बूजी साथें थाय ॥ तापसणी पण नवि कह्यो, निज गर्न ते व्रत अतराय रे ॥ मन धारी पण निरमाय रें, पांचशे तापस समुदाय रे, अमें तप करीयें इण ठाय रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १० ॥ दिन दिन गर्न प्रगट थयो रें, पूछयो तास विचार ॥ वात यथारथ राणीयें, सवि नांखी निज नरतार रे ॥ प्रसवे पुत्री मनोहार रे, शुन लगन नखेतर वार रे, पाले तापसणी परिवार रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ लक्षण पुण्य लावण्यवती रे, तापससुंदरी नाम ॥ बुद्धियें जीती शारदा, तस तात शिखावे ताम रे ॥ चोशठ कला गुणधाम रे, हवे हेमजट आपणे ठाम रे, स्वर्णजट थापे अनिराम रे ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ पल्यकविद्या आपतो रे, साधनविधियें समेत ॥ ते सुरसुख नोगी थयो, कुलपति स्वर्णजट थयो नेत रे ॥ तापस पाले अनिप्रेत रे, विद्या साधन सकेत रे, उपवास विधि समवेत रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ गिरि उपर गिरिचूडनु रे, यक्षनु देहरु एक ॥ ध्यान आसन करी तिहां रह्यो, जप लाख करे सुविवेक रे ॥ देखी कुलपतिनी टेक रे, तुष्टमान थयो अतिरेक रे, एकवीश दिनें ते नेक रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ गगनगामी दियो ढोलीयो रे, कुलपति प्रणम्यो तास ॥ स्तवना करी पारणु करे, पल्यंक राखे निज पास रे ॥ ते उपर करिय निवास रे, विद्याधर परें उल्लास रे, तीरथ वदे अति खास रे ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ यौवन पामी कन्यका रे, सौनाग्य अद्भुत रूप ॥ कमला ते चपला थई, दुखें देखी तास सरूप रे ॥ पड्यो तास पिता चिताकूप रे, वर खोलवा तस अनुरूप रे, नमे पल्यकें क्षपिनूप रे ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ नूप पुत्र बहु देखतो रे, कोइ न आव्यो दाय ॥ एकनृप रूप देखी करी, व्याघ्ररूपें थानक आय रे ॥ पल्यक उपर ते ठाय रे, देखी बीहीना क्षपि समुदाय रे, जाय नाग तेह पलाय रे ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ सङ्गायें धीरी करी रे, बो लाव्या क्षपि तेह ॥ नखथी नूमि अक्षर लखी, स्वर्णजट तुम कुलपति जेह रे ॥ कोइ देव शरापें एह रे, थयो व्याघ्र तणो ए देह रे, एहमां म धरो मन संदेह रे ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ धर्मतत्त्व ज्ञानीथकी रे, नर थाईश निरधार ॥ खोली लावो तेहनें, बीजे खर्मे अधिकार रे ॥ सुणे श्रीजयानद कुमार

रे, ढाल त्रीशमी अति मनोहार रे, कहे पद्मविजय सुखकार रे, जिनधर्म थी जयजय काररे ॥ कर्म० ॥१९॥ सर्वगाथा ॥ ८८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमचा धर्मने कपरें, वरुरुष्टो नहीं अन्य ॥ मंत्रविद्या बहु मानी यां, धर्म ते न थयो धन्य ॥ १ ॥ अक्षपादनें वलुकना, सांख्य शैव सहु कोय ॥ कठिन थई उद्यम करे, होशे विफला होय ॥ २ ॥ तापस तव चितातुरा, आव्यो नहीं उपाय ॥ मुज आदे देइ सहुमुनि, गिरिचूडनें गया गय ॥ ३ ॥ पवित्र थइनें पाथरयो, दर्भ संथारो दक्ष ॥ ध्यानासन बेसी धु रें, जाप करे सुर यक्ष ॥ ४ ॥ उपवासी आदर करी, संभारे सुर तेह ॥ अंतें आठ उपवासनें, आवी पूछे एह ॥ ५ ॥ तव बोल्या ते कुलपति, स्वा मी करो स्वरूप ॥ सुर कहे हुं समरथ नहीं, सांभलो तास सरूप ॥ ६ ॥ शक्ति ए महोटा सुर तणी, कहो बीजी कांइ वात ॥ तापस कहे धर्म तत्त्व नो, जाण लावो जोइ जात ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे, दश गज फाटो चीर ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानीने पूछी करी रे, धर्मतत्त्वनो जाण रे प्राणी ॥ सुर कहे जूठी नहीं वात ए प्रमाणी ॥ १ ॥ क्षणेक जइनें आवियो रे, कहे सुणो चोथे दिन रे तेह ॥ मलशे कही देव, गयो गगनें सनेह ॥२॥ मुज आदें तापस सहु रे, पारणा दिनथी आज रे जाणो ॥ वाट जोतां चोथे दिनें, भाग्य थी पीछाण्यो ॥ ३ ॥ शक्ति होय जो तुम्हमां रे, तो करो ए उपकार रे स्वा मी ॥ संत करे उपकार, परनें पामी ॥ ४ ॥ हरिवीरनां मुखथी सुणी रे, व्याघ्र चरित्र विचित्र रे बोले ॥ करशुं तुमचुं काम अमें, धर्मथी अमोलें ॥ ॥५॥ पण तुमें सर्वज्ञ जांखायो रे, धर्म करो अंगीकार रे रूडो ॥ तो तिरिप णु छेड़ी, काढशु ए कूडो ॥ ६ ॥ ते कहे काम अमारहु रे, करशो तव सुर वयणथी ए जाणु ॥ तत्त्व जाण गुरु, सत्य ए वखाणु ॥ ७ ॥ लावो वन्हि कुमर कहे रे, वली फल प्रमुख अनेक ते मगावे ॥ ते पण सर्व लावे, चि त्तशुं स्वभावें ॥ ८ ॥ आम्बरें ए मानशे रे, एम चिंतवी वन्हिकुन्ड कर्यो तेणें ॥ स्नान मुद्रा ध्यान, आसनादिक जेणें ॥ ९ ॥ वाघ पासें बेसाडीनें रे, मंत्र उच्चरी करी होम हाथें फरशे ॥ फूंक दीये जूठं, काम केशुं करशे ॥१०॥ मंत्रोयथा ॥ ॐ नमोऽर्हन्भ्य ह्रींसर्वसपवशीकरेभ्य ह्रींनम सर्वसिद्धेभ्य सि

ज्ञानंतचतुष्टयेभ्य श्रीनम आचार्येभ्य पंचाचारधरेभ्य ॐनम उपाध्यायेभ्य सर्वविघ्नभयापहारिभ्य ॐनम सर्वसाधुभ्य' सर्वदुष्टगणोच्चाटनेभ्य सर्वा जीष्टान् साधय साधय सर्वविघ्नान् स्फुटय स्फुटय सर्वदुष्टानुच्चाटयोच्चाटय ह्रैं फुट् स्वाहा ॥ ढाल पूर्वली ॥ रेखणी दीधी उषधी रे, इच्छित रूप था ये तेह मूके हाथें ॥ लघुलाघवी कला, करी व्याघ्र माथे ॥ ११ ॥ तास प्र भावें नर हूउ रे, कुलपतिनें नमे तेह मोहें माता ॥ स्तवना करे कुमर केरी, तुंही मात भ्राता ॥१२॥ कुलपति आलिंगन करी रे, कहे तुज हो नमस्का र रे भाई ॥ हाथो मानव भव ते, तें दीयो ए आई ॥ १३ ॥ पूछे कुमर ता पस भली रे, कुलपतिनें वृत्तांत तव भाखे ॥ कन्यावरनें अर्थे भमुं, गाम नगर लाखें ॥ १४ ॥ पर्यंक साथें एकदा, पर्वतशिर पढ्यो ताम निज देखुं ॥ व्याघ्ररूपें तव, डु खन्नुं न लेखु ॥ १५ ॥ शिला उपर ध्यानें रह्या रे, जे न मुनि' एक देव तस आगें ॥ चार देवीसु परिवस्यो तिहां, साधुजीनें रा गें ॥ १६ ॥ गीत वाजित्र नाटक करे रे, विश्वनें नयणानंद रे थाये ॥ में चिंत्युं मुज अपराध कोइ प्रायें ॥ १७ ॥ ए मुनियें मुज नाखीयो रे, प्रण म्यो डु खथी ताम हुं रोतो ॥ निज भाषायें बोलुं एम, आडुं अवलुं जोतो ॥ १८ ॥ स्यो अपराध स्वामी कहो रे, मुज कस्यो वाघ हवे मुजकृपा की जें ॥ खमी अपराध माहारुं, मानवपणुं दीजें ॥ १९ ॥ कल्पना पण डु करु नहीं रे,मुनि कहे मनमां अश रे जाणो ॥ पण सुरवर कशु कांइ रो षथी जराणो ॥ २० ॥ नाटक पूरु जब कयु रे, में मुनि पूछया ताम रे स्वामी ॥ कोण ए देव कोप्यो, केम मुजमां खामी ॥ २१ ॥ मुनि कहे सां भल ते कथा रे, बीजे खंर्मे एकत्रीशमी ए ढाल ॥ पद्मविजय कहे, सुणतां मंगलमाल ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ९१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधरमां डु वडो, रमणी तजी वली ऋद्धि ॥ प्रव्रज्या में पढिव जी, पढ्यो आगम परसिद्ध ॥ १ ॥ एकाकी आणा लही, विचरु वारु री ति ॥ प्रतिबोधु भव्य प्राणीनें, तप तपतो धरी प्रीति ॥ २ ॥ गगनें जातां गिरिशिरें, एक दिन दीठु एम ॥ सामजनें सिंह मारतो, न शक्यो देखी नेम ॥ ३ ॥ अतरथी डु कतस्यो, तप परभावें ताम ॥ सिंह नागो शंका धरी, फरि उपकारने काम ॥ ४ ॥ पाप सर्व पच्चरकावीयां, दीधां नवपद

सार ॥ सर्व खमावे सत्त्वनें, पामी गुरु उपगार ॥ ५ ॥ शुन ध्यानें मरी सो हमें,मणिचूड सुर नाम ॥ पंच परमेष्टि प्रजावथी, उत्तम गुण अनिराम॥६॥

॥ ढाल ॥ बत्रीशमी ॥ मोरा साहेब हो श्रीशीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ तेह देवता हो चिंते उंहीनाण के, पूरव पुण्य में शुं कस्युं ॥ तव ना ण्यो हो महारो उपकार के, बीजा सर्वे कामें सस्युं ॥ १ ॥ बहु नक्तें हो प्रणम्यो मुज पाय के, मुज वृत्तांत सनजावीयुं ॥ एहवे तुज हो पर्यंकनी गय के ॥ देखी क्रोधमां आवीयो ॥ २ ॥ आशातना हो मुज उपर देखि के, देइ शराप दुःखी कस्यो ॥ एम सांनली हो मुनिवरनी वाणी के, ते सुर आगल संचस्यो ॥ ३ ॥ आंसु जरतो हो कहे दीन वचन्न के, मूको स राप करो कृपा ॥ कहे निर्झर हो राज्यादिक ठामी के, रे मूढ तुं छे गतत्र पा ॥ ४ ॥ मुनि केरी हो आशातना कीध के, फोकट तप तुं आचरे ॥ जा निज पद हो पर्यंकें बेश के, मुज परनावें संचरे ॥ ५ ॥ एक मासें हो धर्मतत्त्वनो जाण के, मूलरूपें करशे तनें ॥ ते पासें हो समजी धर्मत त्त्व के, कन्या तुज देजे मनें ॥ ६ ॥ हुं आव्यो हो तिहांथी एणें गाम के, वात आगल जाणो सवे ॥ ते सांनली हो तापस नें कुमार के, विस्मयथी गुण संस्तवे ॥ ७ ॥ करे उत्सव हो मंगलनां गीत के, गाये तापसणी घ णु ॥ कहे कुमरनें हो समजावो धर्म के, जेम भ्रम जाये मिथ्यापणुं ॥ ८ ॥ विस्तारें हो कुमरें कह्यो धर्म के, साधु श्रावक बहु नेदथी ॥ बूझ्या ताप स हो समकेतशुं शुद्ध के, अणुव्रत लिये गतखेदथी ॥ ए ॥ कहे कुलप ति हो देवें कह्यो मुज्ज के, कन्या नावि वर तुम्हो ॥ तेणें परणो हो करी वयण प्रमाण के, जेम राजी थाउं अम्हो ॥ १० ॥ नवि बोल्या हो सुणी तेह कुमार के, ताम कुसुम वृष्टि थई॥ देखी तापस हो विस्मय ल ह्या चित्त के, तव गिरिचूड तिहां सुरवई ॥ ११ ॥ थई परगट हो कहे सांनलो वात के, में ते ज्ञानी पूछ्या जइ ॥ नर थाशे हो केणी परें कहो स्वामी के, तत्त्वज्ञानी कहे शुनमई ॥ १२ ॥ त त्त्वज्ञानी हो सर्गे नर थाय के, में पूछ्युं केम जाणीयें ॥ ज्ञानी बोल्या हो तुज सूअर रूप के, जीतशे एह अहिनाणीयें ॥ १३ ॥ तव हुं नम्यो हो राजधानी अनेक के, कोलरूपें पण को नहीं ॥ मुज जीत्यो हो तव हेमपुर जाय के, वननंज वाड करु तहीं ॥ १४ ॥

नृपना सुत हो शत नाठा जाय के, विण शस्त्रे एणें जींतियो ॥ गजरूपें हो हरि लाव्यो ताम के, कही एम वातो अतीतियो ॥ १५ ॥ उदारता हो शौर्यता उपकार के, धर्म प्रमुख गुण एहवो ॥ नहीं बीजो हो जगमां अ द्भुत के, अनुनवीयो में जेहवो ॥ १६ ॥ कौतुकें करी हो रही ठानो अ त्र के, सवि जोशुं नयणें करी॥ वली सांनल्यो हो अरिहननो धर्म के, न वसायरमां ए तरी ॥ १७ ॥ पूरवनव हो संस्कारने जोग के, बूज्यो ते तु में सांनलो ॥ धन्यपुरमां हो धनवत धन्यनाम के, धनदेव आगल सामलो ॥ १७॥ प्रिया वसुमती हो श्रावक एक मित्र के, तस संगें वली गुरु मल्या ॥ समकित मूल हो अगी कस्यो धर्म के, गुरु वयणां तेणें सांनल्यां ॥१ए॥ एक दिन तस हो नारीनें रोग के, कपनो ते उपशम नणी ॥ तेडया वैद्यनें हो कस्या बहु उपचार के, पण नवि गुण कीधो मुणी ॥ २० ॥ घणु रागें हो मन्त्रवादी तेडि के, ते पण सवि नि फल थया ॥ गाढस्नेहें हो घहेला परें तेह के, पग पग पूछे पति सया ॥ २१ ॥ जटी कापडी हो प्रयोगना जाण के, जे साजी करे मुज प्रिया ॥ तेहनें आपु हो लक्ष सुणी एम वात के, ए क जटी कहे करु क्रिया ॥ २२ ॥ दृणमां करु हो नीरोगी नारि के, पण लेशु मुखें जे कसुं ॥ मानी तेणें हो विनयें करी वाणि के, बोल्युं ते हु नवि जहु ॥ २३ ॥ जोई नारीनें हो तेणें कीध उपाय के, रोग गयो अनुक्रमें वही ॥ तेह देखी हो विस्मय लह्यो चित्त के, साचो ते एहज सही ॥ ॥ २४ ॥ करी आग्रह हो राख्यो एक मास के, तेणें जैनधर्मे शिथिल क स्यो ॥ जेणें पाम्यो हो व्यंतर नव एह के, शेठ ते हु उर्गति धस्यो ॥ २५ ॥ तापस साथे हो समकित लह्यं आज के, धर्मतणी वाणी सुणी॥ गुरु माथे हो फूलनी करी वृष्टि के, ए सरिखो जग नहीं गुणी ॥ २६ ॥ बीजे खंमें हो बत्रीशमी ढाल के, पद्मविजय एणि परें कही ॥ सुणो श्रोता हो चित्त राखी ठाम के, निद्रा विकथा सवि जही ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ए४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव कहे यो एहनें, यौवन कन्या योग ॥ सुरवरें नांख्यो ए सखर, सु धो ए सयोग ॥ १ ॥ उन्नवयी उपगारीनें,परणावो धरी प्रेम ॥ थाशुं कृता रथ एणी परें, जाय फिकर वली जेम ॥ २ ॥ कुलपतियें अगीकस्यु,कुमरनें प्रार्थना कीध ॥ सामग्री सुरवर करे, प्रत्युपकार प्रसिद्ध ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ ऊमखडानी देशी ॥

॥ कनक मम्प तिहां सुर रचे, रयणमयी रचे पन्न ॥ सोनागी सान लो ॥ तोरण मुक्तामालनां, देखी होय श्रचन्न ॥ सो० ॥ १ ॥ देवी तापस णी मली, गावे मगल गीत ॥ सो० ॥ डुडुनिनाद वजावता,कुसुममाल सु रनीत ॥ सो० ॥ २ ॥ बिरुदावली सुर बोलता, विद्याधर सह्युत ॥ सो० ॥ उत्सव सुर तिहां बहु करे, उपकारी श्राकूत ॥ सो०॥ ३ ॥ कन्या तापस सुं दरी, दिव्यनूषण वस्त्रधार ॥ सो० ॥ तापसें परणावी तदा, कुमरें परणी नारि ॥ सो० ॥ ४ ॥ कुमरनें श्रापे देवता, वस्त्रानरण श्रनेक ॥ सो० ॥ ग गनगामि दीये ढोलियो, कुलपति धरिय विवेक ॥ सो०॥ ५ ॥ ते वन रमणी कमां रचे, गिरिचूड देव विशाल ॥ सो० ॥ सप्तनूमि शोनामयी, महोल ति हां ततकाल ॥सो०॥६॥ स्वर्गविमान ज्यु शोनतो,तेह कुमरने काज ॥सो०॥ खादिम स्वादिम पूरीयो, सर्वांगें सुखसाज ॥ सो० ॥ ७ ॥ बहु सुरना परि वारछुं,सेवा करें सुप्रकार ॥सो०॥ श्रप्सरा सरखी नारिछु,नोगवे नोग कुमा र ॥ सो० ॥ ८ ॥ तीर्थ श्रनेकनें वांदता, पल्यकनें वलें तेह ॥ सो० ॥ कोइ दिन नारी विना जाये, कोइ दिन नारीछुं नेह ॥ सो० ॥ ए ॥ नदी वनमां क्रीडा करे, वली तापसनें कुमार ॥ सो० ॥ जैन धर्म विधि शीखवे, सम्यक् नेद प्रकार ॥ सो० ॥ १० ॥ उपदेश चारित्रनो दीये, ज्ञानतणु फल सार ॥ सो० ॥ उचित नण्या ते श्रनुक्रमें, जाणे क्रिया व्यवहार ॥ सो०॥ ११॥ दक्ष थयां जिनशासनें, चारित्र इछावत ॥ सो० ॥ नववैराग्यथी ते रहे,नि त्य वैराग महंत ॥ सो० ॥ १२ ॥ बीजे खंर्मे ए कही, तेत्रीशमी वर ढाल ॥ सो० ॥ श्रीजयानद रासें थयो, बीजो खम रसाल ॥ सो० ॥ १३ ॥ स त्यविजय पन्यासना, कपूरविजय वर शिष्य ॥ सो० ॥ खिमाविजय वर तेह ना, चढती जास जगीश ॥ सो० ॥ १४ ॥ जिनविजयो जगमां जयो, तेह ना शिष्य श्रनेक ॥ सो० ॥ उत्तमविजय तेहमां थया, पंमित वारू विवेक ॥ सो० ॥ १५ ॥ तस पदपंकज श्रलि समो, पद्मविजय जसु नाम ॥सो०॥ तास कृपाथी नांखीयो, खंम बीजो श्रनिराम ॥ सो० ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्तपगछीय पंमितप्रवर पंमित श्री उत्तमविजयजीगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानदकेवलिच रित्रे सहस्रायुधादि राजर्षिचतुष्टयचरित्रेण चारित्रधर्मवर्णन श्राद्धधर्मक

लितचक्रायुधचरित्रवर्णन प्रथमव्रतपालनमहात्म्यसूचकनीमसोमदृष्टांत श्रीजयानंदप्रतिबोधादिवर्णन हंसकाकनिदर्शनेन श्रीमहानदराजदृष्टांतेन च द्वितीयव्रतपालनफलदर्शन श्रीजयानदकुमारकलाग्रहण मणिमजरी प्रथमपत्नीपरिणयन श्रीजयानदकुमारस्य महासेनपल्लीशविजयगिरिमालिनीदेवीप्रतिबोध तदार्पितमहौषधिद्वयलाभ हेमपुरपुरागमन सौनाग्यमजरीद्वितीयपत्नीपरिणयन रेह्मणीदेवीप्रतिबोधतदर्पितकामितरूपकारी महौषधिप्राप्ति हेमप्रनभूपादि प्रतिबोधलाभादि श्रीजयानदकुमारस्य देशांतरचर्यायां हेमपुरपुरोद्यानगतफुर्ज्जयकोलविजयतापसाश्रमगमन सुवर्णजटकुलपत्यादि तापसपंचसतीसहित गिरिचूडयक्षप्रतिबोध कुलपतिपुत्रीतापससुंदरी तृतीयपत्नीपरिणयनकुलपतिदत्तपर्य्यकविद्यान्वितगगनगामिपल्यकबलेन नानातीर्थनमस्करणादिवर्णनोनामा द्वितीय खम्म समाप्त ॥ प्रथमखंम्मे गाथा ॥ ४४३ ॥ द्वितीयखम्मे गाथा ॥ ए६१ ॥ सर्वमली गाथा ॥१४०५॥ तथा प्रथमखम्मे वक्त श्लोक ॥१३॥ अने द्वितीयखम्मे वक्त श्लोक ॥ १ए॥ सर्व श्लोक ॥ ३१ ॥ तथा सवईयो एक छे इति द्वितीयखम्म समाप्त. ॥ २ ॥

॥ श्रीशातीश्वरोजयति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीतृतीयखंम प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन नायक समरीयें, वर्द्धमान विख्यात ॥ देवारयनें द्रव्यगुण, सर्वे नाषा विख्यात ॥ १ ॥ वीजो खम्म वह्नु नातिसु, विगतें वरणव्यो एम ॥ त्रीजो खम्म कहु तुरत, सांनलो श्रोता प्रेम ॥ २ ॥ अघे ने अति आलसु, शिशु रमवे करे शान ॥ आहुंनें अवखु जूवे, वक्ता र्छु करे व्याख्यान ॥३॥ नयनें नयन मेलावीनें, वदन विकस्वरवत ॥ वाणी सुणे वक्ता तणी, ते वीये हर्प अत्यंत ॥ ४ ॥ तेमाटे निजमति तजी, सांनलो चतुर सुजाण ॥ श्रीजयानदना रासमां, आगल कहु आख्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ नीरे माहारे जाग्यो कुमर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ नीरे माहारे एकावन सातमी नूमि, वेग रयण सिंहासने नीरेजी॥

॥ जी० ॥ गगनें निरखे कुमार,आवतो देखे निजकनें जीरेजी ॥ १ ॥ जी०॥ परिव्राजक सुरूप, यौवनवय आव्यो तिहां जीरेजी ॥ जी० ॥ देइ आशीष वईठ, कुमर कहे रहो छो किहां जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ कोण तुमें सेहेत, आव्या ते कारण कहो जीरेजी ॥ जी० ॥ कीजें ते तुम काम, थान कृता रथ अमें अहो जीरेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जाणी न करे काम, आवे कलंक दाता तणी जीरेजी ॥ जी० ॥ तेह कृतारथ जाण, आश पूरे याचक त णी जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ अवलु मुख करी जेह, याचक देखीनें रह्या जीरेजी ॥ जी० ॥ डुम गिरि समुद्र न भार, ते धरतीनें भारे कह्या जीरे जी ॥ ५ ॥ यत ॥ दीयतां कथमजीप्सितमेषां, दीयतां डुतमयाचित मेव ॥ तं धिगस्तुकलयन्नपि वांछा, मर्थिवागवसर सहते य ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ ॥ जी० ॥ कुमर चितवे एम, केम बोल्या विण जाणीयें जीरेजी ॥ जी० ॥ परिव्राजक कहे ताम, तु शूरवीर कुलखाणीयें जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ तु ज असाध्य न कांय, परउपकारी तुं वडो जीरेजी ॥ जी० ॥ तुज सम अ वर न कोय, तु जगमां जेम केवडो जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ सांजल माहा री वात, गंगातटें मुज गुरु रहे जीरेजी ॥ जी० ॥ नड्दत्त अनिधान, जे आम्नाय बहु लहे जीरेजी ॥ ८ ॥ जी० ॥ हु गंगदत्त तस शिष्य,औषधि कल्प गुरु दीये जीरेजी ॥ जी० ॥ मलयकूटें बहु तेह, उलखु सघली छे ही ये जीरेजी ॥ ए ॥ जी० ॥ जाणु सम्यक् ताम, साधुविधिथी ए यदा जीरे जी ॥ जी० ॥ जई तिहां बहु वार, साधवा मांमी में तदा जीरेजी ॥ १० ॥ ॥ जी० ॥ मलयमाल क्षेत्रपाल, ए पर्वतनो अधिपति जीरेजी ॥ जी० ॥ बीवरावे मुज तेह, करे उपसर्ग वली अति जीरेजी ॥ ११ ॥ जी० ॥ पाद लेप गुरु दीध, तेह आम्नायथी अवरें जीरेजी ॥ जी० ॥ योजन एक उतपात, जाउं हु ए शक्तिवरें जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ आव्यो इण वन मांहि, दीठुं धाम कनकतणुं जीरेजी ॥ जी० ॥ पूछी तापसनें वात, उत्तर सुणी हरख्यो घणु जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोकोत्तर तुज वात, सुर पण तुज नवि ज य करे जीरेजी ॥ जी० ॥ जाचवा तुमची पास, स्वार्थसिद्धि तुम आशरे जी रेजी ॥ १४ ॥ जी० ॥ योग्यनें याचना जेह, तेहमां लाज आवे नही जी रेजी ॥ जी० ॥ जो समरथ छो ताम, उत्तर साधक हो वही जीरेजी ॥ ॥ १५ ॥ जी० ॥ कुअर बोल्या ताम, एहमां शुं भारे बडे जीरेजी ॥ जी० ॥

एम जीती करुं काम, तेहथी सहु हलका पडे जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ परिव्राजक कहे ताम, ए सवि तुममां सनवे जीरेजी ॥जी०॥ पण शो यो जन दूर, पर्वत इहांथी होय जवे जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ बारशें मांमवो मात्र, पूरो होय त्रयेंणे दिनें जीरेजी ॥ जी० ॥ जो निरविघ्ने था य, चौदशने दिन सिद्ध बने जीरेजी ॥ १८ ॥ जी०॥ वदि आठम छे आ ज, सक्ष थाउ विहाणे चालीयें जीरेजी ॥ जी० ॥ खर्चे बेसाडी तुज, जा तां त्रण दिन नालीयें जीरेजी ॥ १९ ॥ जी० ॥ हसीनें कहे कुमार, स्वार्थ साधो तुमें जाउ सुखें जीरेजी ॥ जी० ॥ बारशें आवशुं प्रनात,निज शके जाणो सुखें जीरेजी ॥ २० ॥ जी० ॥ म धरो सदेह लगार, वयण सयण नां नवि चले जीरेजी ॥ जी० ॥ अचला मेरुदृष्टांत, सांनली तेह हरखज धरे जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ जणवी मलया गाम,परिव्राजक थानक गयो जीरेजी ॥ जी० ॥ नारिनें कहे कुमार, पर उपकार अवसर थयो जीरेजी ॥ २२ ॥ जी० ॥ दिवस थशे मुज त्रण, कार्य करी आवु खरो जीरेजी ॥ जी०॥ पुण्य अश थशे तुज,तातनो विनय तुमें करो जीरेजी ॥२३॥जी०॥ एकादशीनी रात, कुमर पल्यंकें आवीयो जीरेजी ॥जी०॥ पल्यंक गोपवी त त्र, साधकनें मल्यो नावीयो जीरेजी ॥ २४ ॥ जी० ॥ त्रीजें खमे एह,प हेली ढाल सोहामणी जीरेजी ॥ जी० ॥ पद्मविजय कहे वात, आगल घ णी रलियामणी जीरेजी ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥३०॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर ते साधकनें कहे, सुखमां विद्या साध ॥ तेणें पण मांमी ततक्ष णें, विधियें करी विण बाध ॥ १ ॥ श्रीजय सायुध अति सुनट, विघन करे विसराल ॥ पूरवदिशि निशि पेखतो, धूम बहु धूधाल ॥ २ ॥ अधित दिशि सुख अति थयुं, देवीयें ओषधि दीध ॥ ते सनारे ततक्षणें, नमस्कार वली निद्ध ॥ ३ विलय थयो वारु परें, अगनि देखे आप ॥ अट्टाट्टहास्य नीपण अति, ततक्षण आपे ताप ॥ ४ ॥ तोपण क्षोन्यो ते नहीं, धीरज हृदयें धार ॥ अवर वाणी एहवी, सांनले अतिहिं असार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ धन्यो रे कुंअरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥

॥ कहे तो पहेलां साधक नखु, के उत्तर साधक एह रे कुमार ॥ तव त्र टकी श्रीजय बोलीयो,खा पछर एह जगेह रे सुरिंद ॥ १ ॥ श्रीजय देवशुं

जूऊतो ॥ ए आंकणी ॥ नहीं ताहरे वश अमे दोय हु, केम केशरीनें मृग खाय रे सुरिंद ॥ अथवा सिंहें मृग राखियो, तेह साहमुं नवि जोवाय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २ ॥ जीतु हु शक्र समाननें, तो ताहरी केही वात रे सुरिं द ॥ फरि देव बोल्यो आकाशमां, तु मानव कीटक मात रे कुमार ॥ श्री०॥ ॥ ३ ॥ कोण मूरख कोइ मार्टे मरे, तुं नवि जाणे कांय बाल रे कुमार ॥ केम सुरनें जीत मानवी, ए जाणे बाल गोपाल रे कुमार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जा दूरें तु तुजनें नही हणु, तु निरपराधी जेण रे कुमार ॥ तु रक्क ठते पण मारशु, साधक सापराधी तेण रे कुमार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ मुज प र्वत औषधि इछतो, विद्या साधे ठे एह रे कुमार ॥ मुज अर्चादिक न कस्यु एणें, तेणें मारीश नि सदेह रे कुमार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तव बोले कुमर ह सी करी, शुं अदृश्य रही करे वात रे सुरिंद ॥ जो वीरपणु चित्तमां धरे, तो परगट था साक्षात रे सुरिंद ॥ श्री०॥ ७ ॥ एम तर्जित अमर कोपें करी, थयो कोलरूपें परगट्ट रे सुरिंद ॥ पादाहत कंपित गिरि, साहामो आव्यो रण सट्ट रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ८ ॥ देवी दीधी औषधि बलें, कुमरें कस्यु सूअ ररूप रे सुरिंद ॥ क्रोधें करी युद्ध बेहु करे, महाडम्बर रौद्र सरूप रे सुरिंद॥ ॥ श्री० ॥ ए ॥ घोर घुघुर गरजे घणु, तेणें गिरिगुफा करती गाज रे सुरिंद ॥ मांहो मांहे ते विदारता, तेम नख कर्कश अति साज रे सुरिंद ॥श्री०॥ ॥ १० ॥ महाकायनें महापराक्रमी, स्पर्द्धावंत बेहु बलगत रे सुरिंद ॥ प र्वत धरती कंपावता, उछले वली हेठ पडंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ११ ॥ नी पण रण एणीपरें बहु कस्युं, देवता सूअरनी दाढ रे सुरिंद ॥ कुंअर कोलें जांगी तिहां, जेहनी हती अतिशय गाढ रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १२ ॥ करी बुबारव नाशी गयो, कुवर कोलथी सुरकोल रे सुरिंद ॥ करी हस्तीनुं रूप प्र गट थयो, उछालतो सूढ कल्लोल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १३ ॥ तव हस्तिरूप कुअर करी, करे युद्ध चलावे जूमि रे सुरिंद ॥ गिरिशृग पडे गर्जारवें, मानु फूटशे हमणां व्योम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १४ ॥ दतजांगा सूढ पीडा थइ, नागो सुर करिवर ताम रे ॥ सुरिंद ॥ तिम सिंहरूपें बेहु जूऊता,सुरकेशरी हाखो ते गम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १५ ॥ एम सर्वे युद्धें सुर हारियो, तव क्रोध चढयो अत्यंत रे सुरिंद ॥ जीषण रूप करे हवे, अतिरौद्र विभत्स दे खंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १६ ॥ ताड वृक्ष स्थूल जंघा घनी, गिरिकंदरा उद

र वखाण रे सुरिंद ॥ एहु लांबी शिला सम हृदय बे, लांबी कुश कोटि प्र माण रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १७ ॥ वडशाखा सम भुजा जेहनी, स्थूल रज्जु समी नसा जाल रे सुरिंद ॥ नीसातरा सम जस अंगुली, अंजन सम वर्णें काल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १८ ॥ कीलक सम दतावली, अगनि स्थानक स म नयन रे सुरिंद ॥ स्थूलनें लघु चिपट्ट नासिका, कटाह समान वदन्न रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ॥ १९ ॥ शिर त्रणकोण मूढक समु, स्थूल कावरा जेहना केश रे सुरिंद ॥ बिल कान गाल बेशी गया, नादें गाजे शैलेश रे सुरिंद ॥ ॥ श्री० ॥ २० ॥ डमरुक वजावे करथकी, स्फुटाटोप करे वली नाग रे सुरिं द ॥ मोघर करवाल धर्यां करें,एम चार हाथनो लाग रे सुरिंद ॥श्री०॥२१॥ भुजास्फोट अट्टाट्ट हास्यें हवे, सांभल रे हु क्षेत्रपाल रे सुरिंद ॥ मलयमा ल नामें वडो, करु वैरीनो हु काल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २२ ॥ तुजशुं में युद्ध कर्युं जिके, ते युद्धक्रीडानें काज रे सुरिंद ॥ मत जाणजे हु जीत्यो अछु, सुर न जीताये कोइ व्याज रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २३ ॥ हजी कांइ ग युं नथी ताहरु, मरे परनें अरथें केम रे सुरिंद ॥ मुज बालनें मारतां ज स नहीं, जीवतो मूक्यो जा खेम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २४ ॥ कहे कुमर ता हरे क्रीडा थइ, माहरे थयो परउपकार रे सुरिंद ॥ सुर असुरपति पण न वि गणु, मुज आगल तुज स्यो भार रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २५ ॥ जीतायें तेजें न वयथकी, नगशिर दीये पद रविबाल रे सुरिंद ॥ धीर मरण इछे उ पकारथी,मत मरणनी बीहीक देखाड रे सुरिंद ॥ २६ ॥ यत ॥ हस्तिस्थू लतम सचांकुशवश किं हस्तिमात्रांकुशो, वज्रेणाभिहता पतंति गिरय किं वज्रमात्रोगिरि ॥ दीपे प्रज्ज्वलिते प्रणश्यति तम किं दीपमात्र तम, स्तेजो यस्य विराजते स बलवान्स्थूलेषु क प्रत्यय ॥१॥ ढाल पूर्वली ॥ जय मर ण जाणशुं युद्ध करी,फरि युद्ध करो जो होंश होय रे सुरिंद ॥ एम तर्जि त क्रोध जही करी, धायो अति मोघर लइ सोय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २७ ॥ कुमरें कर्युं रूप ते सारिखु, सनारी तव नवकार रे सुरिंद ॥ लेई खड्ग धायो सुर ऊपरें, होय घा वचावे तेवार रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २८ ॥ एम खड्गयु द्ध बहुविध करी, दुर्जय जाण्यो ए कुमार रे सुरिंद ॥ करी नागनें करहे कु मारनें, एक हाथें धरी तरवार रे सुरिंद ॥ श्री०॥ २९ ॥ एकहाथें मोघर ले ई करी, एक हाथें वजावे तूर रे सुरिंद ॥ सर्वशक्तें जूझे उद्य करें, तव श्री

जय पण अतिशूर रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३० ॥ विघ्नहर ओषधिना बलथ की, वली धर्म पराक्रम तास रे सुरिंद ॥ करवालें म्मरुक चेदियु, खंमोखं म कख्या नागपाश रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ खड्गनें मोघर पण चूरीयां, तव वृक्ष उपाडे देव रे सुरिंद ॥ कुमरें पण वृक्ष चूरियो, पुण्ये करी तस त तखेव रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ एम नव नव वृक्ष जूझीया, वली स्थूल शिला सुरें लीध रे सुरिंद ॥ कुमरें पण कीध तेणी परें, देवनें पण विस्मय दीध रे सुरिंद श्री० ॥ ३३ ॥ हवे बल युद्धथी जूझता, वध भुज शिर स्फो ट करत रे सुरिंद ॥ पदथी धरती कपावता, कुर्कट परें उपरें पडत रे सुरिं द ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ करे मुष्टिप्रहार वेहु जणा, पडे उपडे पण न जणा य रे सुरिंद ॥ आलोटे पृथिवी उपरें, उपर हेठल वली थाय रे सुरिंद ॥ ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ युद्धें पण मले विछडे यदा, तव राग परें परखाय रे सु रिंद ॥ सिंहनादनें मुष्टिप्रहार जे, स्कधाघात भुजास्फोट कराय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ तस नादें विश्व कपावता, गिरि गाजे पृथिवी चलत रे सुरिंद ॥ दिश बहेरी नदीयो विसस्थूला, सायरनी वेली वधत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ पडे वृक्षथी फल त्रूटी करी, नगशृंगथी तेम शिला पात रे सुरिंद ॥ प्रेत नाचेनें वली नासता, प्रीतिनें वली जय आपात रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३८ ॥ मुष्ट्यादिकें श्रीजयानदजी, करी श्रांत लीलायें तास रे सु रिंद ॥ उलाली दूर नाखी दियो, पड्यो शिला उपर दुःखराशि रे सुरिंद ॥ ॥ श्री० ॥ ३९ ॥ घोर शब्दें ने शिला चूरण थई, पीडा थइ तास अत्यंत रे सुरिंद ॥ पण देव माटे खंम नवि थयो, सुर चमक्या चित्त अनत रे सु रिंद ॥ श्री० ॥ ४० ॥ तस महिमा पराक्रम देखीनें, माने मुज जीत्यो एण रे सुरिंद ॥ कहे वीर तु जगमां एक छे, निज रूप प्रगट करी तेण रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ४१ ॥ त्रीजे खंमें पूरण थइ, ए बीजी ढाल रसाल रे सुरिंद ॥ कहेप द्मविजय पुण्यें करी, लघले लहे मगलमाल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ४२ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवी जीत्यो मुजने किणे, जीत्यो मुजनें जेण ॥ जग जीत्यो ते जा णमी, तुजनें मानुं तेण ॥ १ ॥ मत्रधर्म ताहरो मनें, कहे मुज करुणा आ ण ॥ जिण बलथी तु जीतीयो, मोहोटोनें माहाराण ॥ २ ॥ जाणी श्रीज यानंदजी, धर्मथकी धरे शांत, धरी सहजाकृति धर्मनें, नांखे अति नाम्य

वत ॥ ३ ॥ वीतराग मुज देव छे,संयमी गुरु सुजाण ॥ अरिहंत नाषित आ दरु, सार धर्म सपराण ॥ ४ ॥ तेणें हुं तुजनें जीतीयो, सुणी धर्म विस्तार ॥ सुर कहे बूज्यो समी परें, पोहोंचाडयो नवपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मुनिमन सरोवर हंसलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी सांजलो, धर्मदत्त इण नामें रे ॥ पाछले नव हुं श्रावक हुतो, ऋद्धि घणी मुज धामें रे ॥ श्रीजया० ॥ १ ॥ एक दिन दीठो उद्यान मां, मास क्षपण करनार रे ॥ परिव्राजक निश्चलासनी, ध्यान लीन सुविचार रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ नाम धनेश्वर तेहनु, चार कोडी धन त्यागी रे ॥ माहरो मित्र गृहस्थमां, लोक वदन आवे रागी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ में परशास्यो तेहनें, अहो तप त्यागनें ध्यान रे ॥ आहु प्रशसित कारणें, राय प्रमुख दिये मान रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ एम समकितमां लगाडियो, चोथो में अतिचार रे ॥ बहु मिथ्यात्व वर्त्ताविशु, दर्शन हाखो तिवार रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ थयो मिथ्यात्वी देवता, समकेतवत जो होय रे ॥ वैमानिक सुर ऊपजे, नही संदेह ते कोय रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ यत ॥ सम्मद्दिठी जीवो, विमाणवज्जं न बधए आउ ॥ जइ नवि सम्मत्त जढो, अहव न बद्धाउ पुविं ॥ १ ॥ ढाल ॥ बोधि विराधीनें ऊपजे, नीच देवमांहे प्राणी रे ॥ फरी समकित लहे दोहिलु, बहुनव नमे कहे नाणी रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ धर्म आराध्यो अतिचरी, न गयो डुर्गति तेणें रे ॥ तुजथकी समकित पामीयो, पूर्व संस्कार हतो जेणें रे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ ज्ञानें जाणीनें नांखीयु नेणें मुज तुं उपकारी रे ॥ तुहिज मित्र बांधव गुरु, दे समकित निरधारी रे ॥ श्री० ॥ ए ॥ योग्य नियम वली आपियें, सांजली तेह कुमार रे ॥ श्रीजय कहे तुं धन्य छे, तुज सफल अवतार रे ॥ श्री० ॥ १० ॥ समकित तेहनें आपीयुं, हिंसानो नियम आपे रे ॥ सुर कहे धर्मदायक तुमें, तुज ऋण केणीपरें कापे रे ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ वर मागो कांइ मुखथकी, देई पूछु तुम पाय रे ॥ कुमर कहे कांइ खप नहीं, तो पण सांजल नाय रे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ साधक पुरुषनें औषधि, आपो वांछित जेह रे ॥ उद्यम श्रम विहु एहनो, सफल करो तुमें तेह रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ देव कहे देशु सही, पण नहीं रहे एह पासें रे ॥ नाग्य विना दरिद्री घरें, रयण निधान न वासे रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ में आणा करी एहनें, औषधि ल्यो मन नावे रे ॥ पन्नित औषधि कल्पमां, गुरु

कीधो सुप्रस्तावें रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥ पण तुं सार ओषधि लइ, मुजने कर उपकार रे ॥ गुरु पूजा होये मादरे, कुमर बोल्या तेवार रे ॥ श्री० ॥१६॥ पांच ओषधि दीये देवता, श्रीजयकुमरें ते लीधी रे ॥ सुर कहे महिमा सां नलो, एहवी जग परसिद्धि रे ॥ श्री० ॥ १७ ॥ वे आंगुल जाडी वली, लांबी आंगुल चार रे ॥ पीली ते मंत्र जपे थके,सीजे वार हजार रे ॥ ॥ श्री० ॥ १८ ॥ मंत्रश्चायं ॥ ॐ महाभैरवी ह्रां ह्रीं ह्रुं श्रियं वितर वि तर स्वाहा ॥ ढाल ॥ रत्न पांचशें आपशें, अर्च्या दिन दिन एह रे ॥ हवे बीजी पण एहवी, वरणें राती ठे जेह रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥ तेहनो महि मा पूज्याथकी, शु आपे एम नाखे रे ॥ माग्याथी वमणु दियो तुमें, त्यो त्रिगुणु एम दाखे रे ॥ श्री० ॥ २० ॥ कहे पण आपे कांइ नही पण कौतुक एह दीसे रे ॥ पूरव परें एहनी साधना, सुणता हियडु हीसे रे ॥ ॥ श्री० ॥ २१ ॥ मंत्रश्चाय ॥ ॐ महावादिनी ह्रॉं ह्रूँ ह्रौं महाश्रिय वद वद स्वाहा॥ ढाल ॥ त्रीजी उजली ओषधी, पूरवथी अर्द्ध मानें रे ॥ एह नी साधनां कांइ नथी, पण महिमा सुणो काने रे ॥ श्री०॥ २२ ॥ स्थावर जंगम विष हणे, रोग सवे मटी जाय रे ॥ घात व्रणादिक एहना, जाये नी र सींचाय रे ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अर्द्ध मानें चोथी एहथी, ओषधि वरणें नी ली रे ॥ पूर्वपरें मंत्र साधना, साधे काम एकेली रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥ चेतन अथवा पूतली, मस्तकें ओषधि दीधी रे ॥ अतीत अनागत वारता, पूठी कहे सवि सीधी रे ॥ श्री०॥ २५ ॥ मंत्रो यथा ॥ ॐ मादाघटे चन्द्र घमशा सिनि प्रश्नार्थं वद वद क्रें स्वाहा ॥ ढाल ॥ चोथी ए ज्ञानी समी कहे, हवे पां चमी जेह श्याम रे ॥ दुष्ट कामण मंत्र चूर्ण जे, टाले ए अभिराम रे ॥ ॥ श्री० ॥ २६ ॥ ए विधि महिमा जे नांखीयो, कुमरें धार्यो विलासें रे ॥ क्षेत्रपालशुं आवीया, साधक पुरुषनें पासें रे ॥ श्री० ॥ २७ ॥ त्रीजे खंडें त्रीजी कही, ढाल अधिक उल्लासें रे ॥ पद्मविजय कही पुण्यनी, श्रीजयान दनें रासें रे ॥ श्री० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ११० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुर कहे साधक सांजले,ले ओषधि मन लाय ॥ ध्यान मूकी धारी करी, नइ जे मनमां नाय ॥ १ ॥ एह कुमर अनुनाव ठे, सांनली सुर पू जेय ॥ निर्जर कुमर नमी कहे, श्रीजयानंद सुपेय ॥ २ ॥ काम पडे सम

रण करे, पूछी प्रणमी पाय ॥ निज थानक निर्जर गयो, साधक हवे सजा य ॥ ३ ॥ नमि नमिनें मन नावती, औषधि लीये अपार ॥ नाग प्रमा र्णे नली परें, विधि पूर्वक अवधार ॥ ४ ॥ साधक कुमरनें कहे सुणो, सघ लु सीधु काज ॥ तुम पसायथी ततक्षणें, माहारुं ए महाराज ॥ ५ ॥ तु म आणायें जाउं तुरत, निज थानक निरधार ॥ परउपगार प्रमोदथी, करे आणा ते कुमार ॥ ६ ॥ पल्यंक वेशी कुमर पण, आवे अबर राह ॥ रतन पुरनें ऊपरें, उपवनमांहें थवाह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राय कहे राणीप्रत्यें ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां जिनचैत्य मनोहरु, देखीनें विचारे ॥ उल्लंघन आशातना, रखे थाय केवारें ॥ हुं वारी एह जिणंदनी, जे नव दुःख वारे ॥ १ ॥ उ तरी पेसे चैत्यमां, विधियें प्रणमतो ॥ योग्यता जाणी ढोलीयो, किहां यक गोपंतो ॥ हुं वारी० ॥ २ ॥ विधि सामग्री मेलवी, जिनध्यानमां लीनो ॥ त्रण उपवास करी तिहां, मन्त्र जापज कीनो ॥ हु० ॥ ३ ॥ त्रणे मंत्र ते साधीया, प्रभु ऋषभनी पासें ॥ जिनवर पूजी नावसुं, आणी हर्ष उल्लासें ॥ हु० ॥ ४ ॥ पारणु फलथी करे हवे, थाय औषधि पासें ॥ पां चशें रत्न ते पामीयो, जेहथी दुःख नासे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ अठाइ महोत्सव ते हनो, करी पुरमां आवे ॥ निर्धन श्रावकनें घरें, जाइ जे थावे ॥ हु० ॥ ६ ॥ आपी तेहनें थिर रहे, मन हर्ष ते आणी ॥ गोशीर्ष चंदननी करे, प्रतिमा गुणखाणी ॥ हु० ॥ ७ ॥ ते लघुप्रतिमा गुरु कनें, प्रतिष्ठावी थापे ॥ नित्य पूजा करे तेहनी, अति आनंद व्यापे ॥ हु० ॥ ८ ॥ औषधि प्रतिमा एकठी, माथडामां मूके ॥ मावडो गर्भगृहें ठवे, तस विधि नवि चूके ॥ हु० ॥ ९ ॥ पांचशें रत्न ते नित दीये, पहेली औषधि जेह ॥ अर्थ कामनें धर्म ते, सा धे ससनेह ॥ हु० ॥ १० ॥ आव्ह कुटुंब सेवा करे, कुमरनी नकें ॥ दान दी ये तेणें वश सहु, अढलक अतिशक्ते ॥ हु० ॥ ११ ॥ बहु परिवार कस्यो ति हां, देतो याचक दान ॥ राज्य पंथें ते करावतो, वेशी गीत गान ॥ हु० ॥ ॥ १२ ॥ मूल नाम अणजाणते, लोकें दीधुं नाम ॥ श्रीविलास सान्वय प णे, इछित करे काम ॥ हु० ॥ १३ ॥ तिण नगरीनो राजीयो, रत्नरथ इति नाम ॥ गांभीर्य शौर्य ऐश्वर्यता, बहु विद्या ठाम ॥ हु० ॥ १४ ॥ विजय या त्रायें जेहनें, अचला चल थाय ॥ रतिमाला गणिका तिहां, रूपें रंभ हराय

॥ ढु० ॥ १५ ॥ तरुण पुरुष मन जींपती,कला चोशठ धाम ॥ चड् जीती पद नख मिशें, करावे परणाम ॥ ढु० ॥ १६ ॥ राय तणु चित्त रीजव्यु, क्रमें पु त्री आवी ॥ पूर्वे पुत्री अनावथी नृप चित्त अति नावी ॥ ढु० ॥ १७ ॥ जन्ममहोत्सव नूपति करे, लक्षण रूपवती ॥ रतिरनादिक नारीनें,लावण्ये जी पती ॥ ढु० ॥ १८ ॥ स्वजन जमाडी थापतो, रतिसुंदरी नाम ॥ थापे क ल्पवेली परें, वधती अनिराम ॥ ढु० ॥ १९ ॥ वय स्पर्द्धायें नित्य वधे, गु ण विनयनें रूप ॥ सुंदरता लावण्य वली, दाक्षिण्य अनूप ॥ ढु० ॥ २० ॥ योग्य थइ कला ग्रहणनें, कलाचारय पास ॥ नणवा मूके नूपति, करवा अन्यास ॥ ढुं० ॥ २१ ॥ प्रज्ञायें जीते सरसती, नणी थोडा दिनमां ॥ त्रण वर्गना शास्त्रनी, जाण थइ सहु जनमां ॥ ढु० ॥ २२ ॥ षट्दर्शननां रहस्य ते, जाणे रूडी रीतें ॥ नारती विडु रूपें थई, मानु आवी प्रीतें ॥ढु०॥२३॥ पूरव नव सस्कारथी, वली जैनी नणावे ॥ तेणे जिन शासनमां थई,घणु ते दढनावें ॥ ढु० ॥ २४ ॥ सरसती पुस्तक लेई करें, मानु जोवे एम ॥ ए हवी कोय थइ के थशे, एम जाणवा नेम ॥ ढु० ॥ २५ ॥ त्रीजे खमें चो थी कही, पद्मविजयें ढाल ॥ कुमरी गर्व रहित घणु, जैननावें रसाल ॥ ॥ ढु० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर जोवा वारू परें,रूप देखीनें राय ॥ दिशो दिश मूके दूतनें,जोवा ते पण जाय ॥ १ ॥ अन्य राणीनी ईरषा, जाणी नूप सुजाण ॥ रतिमाला पुर बाहिरें, रवी आवासनें ठाण ॥ २ ॥ कलास्थैर्यनें कारणें, रतिसुंद रीनें राय ॥ पासें राखे प्रेमशु, आपे इव्य अमाय ॥ ३ ॥ नृप कुलदेवी नामथी, उपवन मांहें अचल ॥ चक्रेश्वरी चैत्यमां रहे, नित्य थाये पूज न वल्ल ॥४॥ उपकारी अणगारजी, चोमासु चित्त लाय ॥ चोमासी तप आचरी, आवासें कोइ आय ॥ ५ ॥ सधाय ध्यानशु लीन जे, ते सुणी देवी ताम ॥ गुणरागी रीजी घणु, आदर करे उद्दाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ पूरवनव तस सांनलोजी, सांनलो नांखीयें तेह ॥ विप्रदेवशर्मा न दी पूरें जी, नंदिनी पुत्री डुःख रेह ॥ १ ॥ कर्म विचित्रता सांनलो जी॥ ए आंकणी ॥ परणी सुशर्मा वाडव प्रत्यें जी, दैवथी वरष थयुं एक ॥ मर

ए लक्षु तास पति अन्यदा जी, निकट आलयमां आयात ॥ क० ॥ २ ॥ देइ प्रतिबोध श्राविका करी जी, समकित अणुव्रत शील ॥ धर्ममां दृढव्र ती ते थई जी, साध्वी पासें रहे लील ॥ क० ॥ ३ ॥ तात आणायें तप ते करे जी, षट आवश्यक करे नित्य ॥ देवगुरु नक्तिवती घणु जी, अल्प आरंन सुविनीत ॥ क० ॥ ४ ॥ काम घरनां हवे तस पिता जी, नवि करा वे तस पास ॥ धर्ममां विघन जाणी करी जी, करे हवे धर्म उल्लास ॥क०॥ ॥ ५ ॥ एम करतां हवे अन्यदा जी, गुरु प्रमुख तणे रे अनाव ॥ आसन्न मठ परिव्राजिका जी, तास संयोग सनाव ॥ क० ॥ ६ ॥ गोठ तेहशु बनी तेहनें जी, मधुर वयणें करे वात ॥ समकित मलिन अतिचारथी जी, पा खम्डी परिचय ख्यात ॥ क० ॥ ७ ॥ प्रीति थई ते पिता वारतो जी, पण नवी मूके तस संग ॥ एह स्वनाव छे स्त्री तणो जी, संग सरिखो होये रं ग ॥ क० ॥ ८ ॥ एणें समे सावित्री ब्राह्मणी जी, छे पाडोसण तस पुत्र ॥ यज्ञदत्त अजना तस प्रिया जी, पण नहीं प्रीति संयुत ॥ क० ॥ ए ॥ पर नव गयो नंदिनीपिता जी, यज्ञदत्त देखी तस रूप ॥ मोहीयो पण नवि ते मली जी, खेद पामे प्रतिरूप ॥ क० ॥ १० ॥ दिन दिन दूबलो ते हो ये जी, पूछे तस सावित्री माय ॥ लाज मूकी कह्युं मातनें जी, मात कहे शानें खेदाय ॥ क० ॥ ११ ॥ तुज मनोरथ सफला करुं जी, हवे एक दिन तस माय ॥ नंदिनीनें एकांतें कहे जी, देइ विश्वास शुन ठाय ॥क०॥ ॥ १२ ॥ माहारो पुत्र तुज इछतो जी, यौवनवय स्मर रूप ॥ धन्य तु तेह अंगीकरी जी, यौवन सफल अनुरूप ॥ क० ॥ १३ ॥ नारीना नोग विण विफल छे जी, रूप लावण्य सोनाग ॥ यौवन विनव नि फल सवे जी, तेणे धर मुज सुत राग ॥ क० ॥ १४ ॥ वृद्धवयें तप करवु घटे जी, तरुणपणु फोक मत हार ॥ पति मरणें कह्यु पांचने जी,अन्यपति करण वि चार ॥ क० ॥ १५ ॥ यडुक्त॥ नष्टे मृते प्रव्रजिते, क्लीवे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्योविधीयते ॥ १ ॥ ढाल ॥ सांनली तेह क्रोधें चढी जी, मूढ तुजनें रे धिक्कार ॥ कर्णकटुक ए तु शु लवी जी, ड गतिनो अधिकार ॥ क० ॥ १६ ॥ सतीय ते शील लोपे नहीं जी, जो क दी दोय प्राणांत ॥ इह परलोक विरुद्ध ते जी, आचरे केम नि भ्रांत ॥ ॥ क० ॥ १७ ॥ तडुक्तं ॥ वरं प्रविष्ट ज्वलितं हुताशन, नचापि नमं सु

॥ हु० ॥ १५ ॥ तरुण पुरुष मन जीपती,कला चोशठ धाम ॥ चड्र जीती पद नख मिशें, करावे परणाम ॥ हु० ॥ १६ ॥ राय तणुं चित्त रीजव्यु, क्रमें पुत्री आवी ॥ पूर्वे पुत्री अन्नावथी नृप चित्त अति नावी ॥ हु० ॥ १७ ॥ जन्ममहोत्सव नृपति करे, लक्षण रूपवती ॥ रतिरंजादिक नारीनें,लावण्ये जीपती ॥ हु० ॥ १८ ॥ स्वजन जमाडी थापतो, रतिसुंदरी नाम ॥ थापे कल्पवेली परें, वधती अनिराम ॥ हु० ॥ १९ ॥ वय स्पर्द्धायें नित्य वधे, गुण विनयनें रूप ॥ सुंदरता लावण्य वली, दाक्षिण्य अनूप ॥ हु० ॥ २० ॥ योग्य थइ कला ग्रहणनें, कलाचारय पास ॥ नणवा मूके नृपति, करवा अन्यास ॥ हु० ॥ २१ ॥ प्रज्ञायें जीते सरसती, नणी थोडा दिनमां ॥ त्रण वर्गना शास्त्रनी, जाण थइ सहु जनमां ॥ हु० ॥ २२ ॥ षट्दर्शननां रहस्य ते, जाणे रूडी रीतें ॥ नारती बिहु रूपें थई, मानु आवी प्रीतें ॥हु०॥२३॥ पूरव नव संस्कारथी, वली जैनी नणावे ॥ तेणे जिन शासनमां थई,घणु ते दृढनावें ॥ हु० ॥ २४ ॥ सरसती पुस्तक लेई करें,मानुं जोवे एम ॥ ए हवी कोय थइ के थशे, एम जाणवा नेम ॥ हु० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंमें चोथी कही, पद्मविजयें ढाल ॥ कुमरी गर्व रहित घणु, जैनजावें रसाल ॥ ॥ हु० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर जोवा वारू परें,रूप देखीनें राय ॥ दिशो दिश मूके दूतनें,जोवा ते पण जाय ॥ १ ॥ अन्य राणीनी ईरषा, जाणी नृप सुजाण ॥ रतिमाला पुर बाहिरें, ठवी आवासनें गण ॥ २ ॥ कलास्थैर्यनें कारणें, रतिसुंदरीनें राय ॥ पासें राखे प्रेमशु, आपे इव्य अमाय ॥ ३ ॥ नृप कुलदेवी नामथी, उपवन मांहे अचल ॥ चडेश्वरी चैत्यमां रहे, नित्य थाये पूजन वल्ल ॥४॥ उपकारी अणगारजी, चोमासु चित्त लाय ॥ चोमासी तप आचरी, आवासें कोइ आय ॥ ५ ॥ सद्याय ध्यानशु लीन जे, ते सुणी देवी ताम ॥ गुणरागी रीजी घणु, आदर करे उद्दाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ पूरवनव तस सांजलोजी, सांजलो नांखीयें तेह ॥ विप्रदेवशर्मा नदी पूरें जी, नदिनी पुत्री सुख रेह ॥ १ ॥ कर्म विचित्रता सांजलो जी॥ ए आंकणी ॥ परणी सुशर्मा वाडव प्रत्यें जी, वैधव्य वरष थयुं एक ॥ मर

ण लह्युं तास पति अन्यदा जी, निकट आलयमा आयात ॥ क० ॥ २ ॥ देइ प्रतिबोध श्राविका करी जी, समकित अणुव्रत शील ॥ धर्ममां दृढव्रती ते थई जी, साध्वी पासें रहे लील ॥ क० ॥ ३ ॥ तात आणायें तप ते करे जी, षट आवश्यक करे नित्य ॥ देवगुरु नक्तिवती घणुं जी, अल्प आरंन सुविनीत ॥ क० ॥ ४ ॥ काम घरनां हवे तस पिता जी, नवि करावे तस पास ॥ धर्ममां विघन जाणी करी जी, करे हवे धर्म उल्लास ॥क०॥ ॥ ५ ॥ एम करतां हवे अन्यदा जी, गुरु प्रमुख तणो रे अनाव ॥ आसन मठ परिव्राजिका जी, तास सयोग सनाव ॥ क० ॥ ६ ॥ गोठ तेहशु बनी तेहनें जी, मधुर वयणें करे वात ॥ समकित मलिन अतिचारथी जी, पाखंमी परिचय ख्यात ॥ क० ॥ ७ ॥ प्रीति थई ते पिता वारतो जी, पण नवी मूके तस सग ॥ एह स्वनाव ठे स्त्री तणो जी, सग सरिखो होये रंग ॥ क० ॥ ८ ॥ एणें समे सावित्री ब्राह्मणी जी, ठे पाडोसण तस पुत्र ॥ यज्ञदत्त अजना तस प्रिया जी, पण नहीं प्रीति सयुत ॥ क० ॥ ९ ॥ परनव गयो नदिनीपिता जी, यज्ञदत्त देखी तस रूप ॥ मोहीयो पण नवि ते मली जी, खेद पामे प्रतिरूप ॥ क० ॥ १० ॥ दिन दिन दूबलो ते होये जी, पूछे तस सावित्री माय ॥ लाज मूकी कह्युं मातनें जी, मात कहे शानें खेदाय ॥ क० ॥ ११ ॥ तुज मनोरथ सफला करु जी, हवे एक दिन तस माय ॥ नदिनीनें एकांतें कहे जी, देइ विश्वास छुन गाय ॥क०॥ ॥ १२ ॥ माहारो पुत्र तुज इछतो जी, यौवनवय स्मर रूप ॥ धन्य तु तेह अगीकरी जी, यौवन सफल अनुरूप ॥ क० ॥ १३ ॥ नारीना नोग विण विफल ठे जी, रूप लावण्य सोनाग ॥ यौवन विनव नि फल सवे जी, तेणे धर मुज सुत राग ॥ क० ॥ १४ ॥ वृद्धवयें तप करवु घटे जी, तरुणपणु फोक मत हार ॥ पति मरणें कह्यु पांचने जी, अन्यपति करण विचार ॥ क० ॥ १५ ॥ यडुक्त॥ नष्टे मृते प्रव्रजिते, क्लीवे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्योविधीयते ॥ १ ॥ ढाल ॥ सांनली तेह क्रोधें चढी जी, मूढ तुजनें रे धिक्कार ॥ कर्णकटुक ए तु छु लवी जी, दुर्गतिनो अधिकार ॥ क० ॥ १६ ॥ सतीय ते शील लोपे नहीं जी, जो कदी होय प्राणांत ॥ इह परलोक विरुद्ध ते जी, आचरे केम नि भ्रांत ॥ ॥ क० ॥ १७ ॥ तडुक्तं ॥ वरं प्रविष्ट ज्वलितं हुताशन, नचापि नमं सु

॥ हु० ॥ १५ ॥ तरुण पुरुष मन जीपती,कला चोशठ धाम ॥ चढ़ जीती पद नख मिशें, करावे परणाम ॥ हुं० ॥ १६ ॥ राय तणुं चित्त रीजव्यु, क्रमें पुत्री आवी ॥ पूर्वे पुत्री अनावथी नृप चित्त अति नावी ॥ हु० ॥ १७ ॥ जन्ममहोछव नृपति करे, लक्षण रूपवती ॥ रतिरनादिक नारीनें,लावण्ये जीपती ॥ हु० ॥ १८ ॥ स्वजन जमाडी थापतो, रतिसुंदरी नाम ॥ थापे कल्पवेली परें, वधती अनिराम ॥ हु० ॥ १९ ॥ वय स्पर्धायें नित्य वधे, गुण विनयनें रूप ॥ सुंदरता लावण्य वली, दाक्षिण्य अनूप ॥ हु० ॥ २० ॥ योग्य थइ कला ग्रहणनें, कलाचारय पास ॥ नणवा मूके नृपति, करवा अन्यास ॥ हु० ॥ २१ ॥ प्रज्ञायें जीते सरसती, नणी थोडा दिनमां ॥ त्रण वर्गना शास्त्रनी, जाण थइ सहु जनमां ॥ हु० ॥ २२ ॥ षट्दर्शननां रहस्य ते, जाणे रूडी रीतें ॥ नारती बिहु रूपें थई, मानु आवी प्रीतें ॥हु०॥२३॥ पूरव नव संस्कारथी, वली जैनी नणावे ॥ तेणे जिन शासनमां थई,घणु ते दृढनावें ॥ हुं० ॥ २४ ॥ सरसती पुस्तक लेई करें, मानु जोवे एम ॥ एहवी कोय थइ के थशे, एम जाणवा नेम ॥ हु० ॥ २५ ॥ त्रीजे खमें चोथी कही, पद्मविजयें ढाल ॥ कुमरी गर्व रहित घणु, जैननावें रसाल ॥ ॥ हु० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर जोवा वारू परें,रूप देखीनें राय ॥ दिशो दिश मूके दूतनें,जोवा ते पण जाय ॥ १ ॥ अन्य राणीनी ईरषा, जाणी नृप सुजाण ॥ रतिमाला पुर बाहिरें, रवी आवासनें गाण ॥ २ ॥ कलास्थैर्यनें कारणें, रतिसुंदरीनें राय ॥ पासें राखे प्रेमशु, आपे इव्य अमाय ॥ ३ ॥ नृप कुलदेवी नामथी, उपवन मांहे अचल ॥ चक्रेश्वरी चैत्यमां रहे, नित्य पाये पूज न वल्ल ॥४॥ उपकारी अणगारजी, चोमासु चित्त लाय ॥ चोमासी तप आचरी, आवासें कोइ आय ॥ ५ ॥ सध्याय ध्यानशु लीन जे, ते सुणी देवी ताम ॥ गुणरागी रीजी घणु, आदर करे उद्दाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ पूरवनव तस सांनलोजी, सांनलो नांखीयें तेह ॥ विप्रदेवशर्मा नदी पूरें जी, नंदिनी पुत्री डुःख रेह ॥ १ ॥ कर्म विचित्रता सांनलो जी॥ ए आंकणी ॥ परणी सुशर्मा वाडव प्रत्यें जी, वैधव्य वरष थयुं एक॥ मर

मीजी, उत्तम एह वर ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमांजी, पद्मविजय सुर साल ॥ क० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्म पालंती ब्राह्मणी,कूतरी थइ किरतार ॥ कष्ट सधुं ते किहां गयुं, ए कोइ अवर प्रकार ॥ १ ॥ मुज पण एम मत नीपजे, नोगवु तेणें डु नोग ॥ आवी निज आगारमां, लक्षणें जाणे लोग ॥ २ ॥ सावित्री इंगित सवे, परगट एणी परें पेखी, पूरव परें कहे पापिणी, कणिम नहीं कांइ रेख ॥ ३ ॥ नंदिनी कहे नारी प्रतें, सावित्री सुण वाणि ॥ बांधवथी बीहुं बहु, वारु करो विन्नाण ॥ ४ ॥ सावित्री कहे साचलुं, जाशुं तीरथ जात ॥ श का जेम नवि उपजे, ए छलनो अवदात ॥ ५ ॥ नोगव नोग नली परें, देशांतरें जइ दक्ष ॥ द्रव्य पितानु दीधलु, निज हस्तें करी न्यक्ष ॥ ६ ॥ एम कही द्रव्य उपार्जना, पुत्र मूके परदेश ॥ पीयर मोकले वहू प्रतें, वाहवी करती वेश ॥ ७ ॥ नंदिनीनें सेवा निमित्त, जाणी घरें रही जाम ॥ सुव्रता आर्या तिणे समे, आव्यां अवसर पाम ॥ ८ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सुण बेहेनी पियुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ पूरव परिचित आर्या आव्यां, नंदिनी मनमां नाव्यां रे ॥ नंदिनी प्र णमी तव ते पूछे,धर्म वात तुम शु छे रे ॥ पू० ॥ १ ॥ वात प्रसगें स्वाशय नाख्यो, आर्यायें तव दाख्यो रे ॥ नोली रे तुं केम मूजाणी, एतो नरक नीसाणी रे ॥ पु० ॥ २ ॥ अरिहत मारगमां तु साचो, कल्पित वात सां माची रे ॥ रागी द्वेषी मूढ जे प्राणी ते कल्पित कहे वाणी रे ॥ पू० ॥३॥ पूरवनवनु ज्ञान न एहनें, कपट पाटव छे जेहनें रे ॥ पुत्रथी स्वर्ग लहे जो कोइ, तो उत्तर सुण सोइ रे ॥पू०॥४॥ नागिण कुर्कटीनें वली शूकरी, गर्दनी शुनीनें बकरी रे ॥ स्वर्गे तेह जशे सहु पहेलां, व्रत तप जप करे घ हेला रे ॥ पू० ॥ ५ ॥ ते कारण जिनमत लही साचो, जेहवो हीरो जा चो रे ॥ तेणे शीलें मन म म कर काचो, वीतरागमतें राचो रे ॥ पू० ॥ ६ ॥ यत ॥ रागाद्वा द्वेषाद्वा, मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतं ॥ यस्य तु नैते दो षा, स्तस्यानृतकारण किं स्यात् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ शीलखमनथी जिनवर नाखे, आपद एणे नव चाखे रे ॥ परनव नरक निगोदमा जावे, उचो दोही लो आवे रे ॥ पू० ॥ ७ ॥ वली तीर्यंचणी गर्दनी थाये, तुरगी मृगी दुःख

जनार्चित व्रतं ॥ वरंहि मृत्यु शुचिशुद्धकर्मणा, नचापि शीलस्खलितस्य जीवितम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ काम शास्त्रोक्त किरिया थकी जी, नरकगति नवि अवराय ॥ शीलखमनथकी निश्चयें जी, प्राणीयो नरकमां जाय ॥ ॥ क० ॥ १८ ॥ एम प्रतिहत करी तेहनें जी, मौन करी गइ निजगेह ॥ दोय त्रण वार एम कह्यु घणु जी, पण विलखी थइ तेह ॥ क० ॥ १९ ॥ कार्य असाध्य निजथी लही जी, तेह परिव्राजिका पास ॥ नंदिनी तास वश जाणीनें जी, सेवना करती उल्लास ॥ क० ॥ २० ॥ पूछे परिव्राजिका एकदा जी, केम करे सेवना मुज्ऊ ॥ सावित्रीयें सघलुं कह्यु जी, मोहवशें साध्य छे तुज्ऊ ॥ क० ॥ २१ ॥ अंगीकरी तास विसर्जती जी, हवे करे तास उपाय ॥ कूतरी एक तेणें वश करी जी, अशनपानादिक दाय ॥ क० ॥ ॥ २२ ॥ पादपतनादि चेष्टा प्रतें जी, शीखवे अतीव अन्यास ॥ नंदिनी देखतां एकदा जी, कूतरी तेडी निज पास ॥ क० ॥ २३ ॥ चक्षुमां चूर्ण नाख्यु यदा जी, तेह करती अश्रुपात ॥ पाय लगाडी मुनीप्रत्यें जी, नंदिनी देखी साक्षात ॥ क० ॥ २४ ॥ पूछे परिव्राजिकाने तदा जी, एहशु कौतुक आज ॥ सा कहे पूर्वभव सांजलो जी, मुजशु एहनें जे काज ॥ क० ॥ ॥ २५ ॥ पृथिवीपुरें दत्त ब्राह्मण वसे जी, तेहनें दीकरी दोय ॥ प्रथमनें अग्निदत्त परणीयो जी, पुत्र त्रण तेहनें होय ॥ क० ॥ २६ ॥ पति मूवे थइ परिव्राजिका जी, जगिनी लघु ते पण ताम ॥ अग्निशर्मानें ते परणती जी, मास षटें विधि थयो वाम ॥ क० ॥ २७ ॥ धव मरी गयो अतिरूपिणीजी, इछतो हरिदत्त तास ॥ सा न इछे हरिदत्तनेंजी, शील खरुं नही खास ॥ क० ॥ २८ ॥ धूर्त उपदेश तस चित्त वस्योजी, नवि लहे जोग अतराय ॥ वृद्धजगिनीनें कहे व्रत दीयोजी, ते कहे नवीय अपाय ॥ क० ॥२९॥ अपुत्रिणी नहीं व्रत योग्यनेंजी, तेह वारी पण एम ॥ नवि रही थइ परिव्राजिकाजी, नवि इछे कोयनें तेम ॥ क० ॥ ३० ॥ आयुपूरें थई कूतरी जी, देखी मुज जाति सजारि ॥ पाय पडे ए रोती थकीजो, हु गइ मनुष्य जवहार ॥ क० ॥ ३१ ॥ जोग अंतरायनें शोचती जी, तेणें सुणी नंदिनी वार्त ॥ प्रार्थना जग नवि कीजीयेंजी, जोग अंतराय बधात ॥ क० ॥३२॥ कपटणी एम कपटें करीजी, जोलवी नंदिनी नार ॥ हीणी संगतिथी हो णापणुजी, आवतां नवि करे वार ॥ क० ॥ ३३ ॥ स्वम श्रीजे कही पांच

वीने, न सुणे अन्यनु नाम ॥५॥ दासीयो दूरें करे, पुरुष न आवे पास ॥ पू रवनवपति पामवा, आदरीयो अन्यास ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ एणें अवसर तिहां मूंबनुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन नाटकणी तिहां रे, आवी विजया नाम रें ॥ चतुर नर ॥ निज योग्य बहु परिवारशु रे लोल ॥ आवी महाराष्ट्र देशथी रे, नृपघर पो लनें गाम रे ॥ च० ॥ चारीनें नीर मूके तदा रे लोल ॥१॥ नाटकें जीते मुजनें रे, दासी थाउ तास रे ॥ च० ॥ नहीं तो तस दासी करु रें लोल ॥ एह प्र तिज्ञा माहरी रे, उद्घोषणा करे खास रे ॥ च० ॥ नृप पण पडह वजाव तो रे लोल ॥ २ ॥ पण नवि कोइ परगट थयो रे, नगरमां जीतणहार रे ॥ ॥ च० ॥ राय विषाद लई करी रे लोल ॥ चितवे मुज पुरमां नहीं रे, कोई क लानिधार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी ते जाणीनें रे लोल ॥ ३ ॥ तातनो खेद निवारवा रे, कहे जीतुं एह नारी रे ॥ च० ॥ पण नरपरखदमां नही रे लोल ॥ नृप कहे नर दूरें रहे रे, तव सा करे अंगीकार रें ॥ च० ॥ दिव स उरावी घरें गइ रे लोल ॥ ४ ॥ युक्त दिनें नरपति हवे रे, विजया तेडा वे तह रे ॥ च० ॥ रतिसुदरी नृप आणथी रे लोल ॥ बेसी प्रवर सुखास नें रे, उपकरण नृत्य सङ्ग रें ॥ च० ॥ दासीयो नर दूरें करे रे लोल ॥५॥ बहु परिवारें परवरी रे, पण चित्त चितवे एम रे ॥ च० ॥ मुज नाटकने सारखी रे लोल॥ वीणावादिका कोइ नहीं रे, तेणें करशु कहो केम रे ॥ च० ॥ श्रीविलास चोहटें रह्या रे लोल ॥ ६ ॥ देखी अचरज पामी नें रे, पूछे कोइकनें वात रे ॥ च० ॥ ते पण सवि मांमी कहे रे लोल ॥ ना टक जोवा कौतुकी रे, पण नरथी न जवात रे ॥ च० ॥ रूप करे तव नारीनु रे लोल ॥ ७ ॥ मनगमती वीणा तदा रे, मागी लाव्यो कोइ पास रे ॥ च० ॥ तेह पेटकमांहे ग्रही रे लोल ॥ राय सनामां ते गई रे, धर ती मन उल्लास रे ॥ च० ॥ थोडी सनायें नृप उपविशे रे लोल ॥ ८ ॥ कौ तुक जोनारा जिके रे, ते नर राख्या दूर रे ॥ च० ॥ विजयानें नृप आणा करे रे लोल ॥ विजयायें नाटक मांमियु रे, नाना करणादि पूर रे ॥ च० ॥ गीत वाजित्रशुं मेलवी रे लोल ॥ ए ॥ रीफवे ते सघली सना रे, वशनझा यें नाच रे ॥ च० ॥ असि छुरिकायें तेम वली रे लोल ॥ तंडुलपुंजें सूचा उवी रे, कपर फूलनो ताच रे ॥ च० ॥ नाटक कछु तेह कपरें रे लोल ॥

थाय रे ॥ सूअरणी उंदरडी दुःख लहेती, नार घणो तिहां वहेती रे ॥ पू० ॥ ७ ॥ कुरूपीने कडुई वाणी, योनिरोगें अकुलाणी रे ॥ कोढरोग हीनांगनें विकला, निकलानें वली डुकुला रे ॥ पू० ॥ ए ॥ दुष्ट जीवित अल्पायु पामे पुत्र वियोग सुख वामे रे ॥ कुशील कर्म किमे नवी त्रूटे, न वजव दुःख नवि छूटे रे ॥ पू० ॥ १० ॥ वात सुणी ते नरकथी बीहीनी, साधवी वयणें जीनी रे ॥ थिर धर्म शीलें थइ बोले, नावे कोइ तुम तोले रे ॥ पू० ॥ ११ ॥ दुर्गति पडती मुजनें राखी, जिनवचनामृत जाखी रे ॥ दुष्टबोध विषनो कस्यो नाश, न पडु हवे कोइ पास रे ॥ पू० ॥ १२ ॥ एणी परें कहीनें प्रणमी पाया, निजघर मांहे आया रे ॥ वली सावित्री तास बोलावे, तेहनें कहे इण रावें रे ॥ पू० ॥ १३ ॥ हवे हुं नीच आचार न सेवु, मत कहे मुजनें एहवु रे ॥ जो ए वात कहीश हवे मुजनें, दुःख देवरावीश तुजनें र ॥ पू० ॥ १४ ॥ नंदिनी त्रातथी बीहीती नासे, गइ निज पुत्रनी पासें रे ॥ अन्यदेशें गयां साधवी विचरी, धर्ममां तत्पर इतरी रे ॥ पू० ॥ १५ ॥ तप करे मुक्तावली रत्नावली, पाखम संग तजे जाली रे ॥ परपाखमनो परिचय पामी, समकितमां थइ खामी रे ॥ पू० ॥ १६ ॥ सहस्र वरस श्रावक धर्म पाल्यो, पण नवि कर्मनें गाल्यो रे ॥ मरण लही चक्रेश्वरी देवी, थई अल्प ऋद्धि कहेवी रे ॥ पू० ॥ १७ ॥ वैमानिक सुखथी वचाणी, विराधितनी कमाणी रे ॥ तेणे मुनिवदन करीनें देवी, निज अवदात कहेवी रे ॥ पू० ॥ १७ ॥ समकित पामी मुनिवर पासें, सेवा करी चउमासें रे ॥ मुनि विचरे संघ साहाय्य करंती, विघन ते सहुनां हरंती रे ॥ पू० ॥ १ए ॥ छठी ढाल ए त्रीजे खंमें, जाखी रंग अखंमें रे ॥ पद्मविजय कहे उत्तम संगें, उत्तमता होये रंगें रे ॥ पू० ॥ २० ॥२१०॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्रजावा देवी सुणी, रतिसुंदरी अनुरूप ॥ नर्त्त मसे एम जावती, जजन चिंता जूप ॥ १ ॥ अरचे देवी आदरें, तुष्टमान थइ तेह ॥ सुपरें जांखे स्फुट परें, सांजलजे ससनेह ॥ २ ॥ नरपति आगल नाचतां, पूतली दोय प्रधान ॥ उतरी थंजथी आवशे, चामर लेई आचान ॥ ३ ॥ वींणावादकनें वींजशे, पुरवजव पति तेह ॥ वासुदेव सम वरणव्यो, इह जव नरता एह ॥ ४ ॥ जाणीनें जिनराजनी, पूजा करे प्रणाम ॥ दक्षा पूजे दे

वीने, न सुणे अन्यनुं नाम ॥५॥ दासीयो दूरें करे, पुरुष न आवे पास ॥ पू
रवजनवपति पामवा, आदरीयो अन्यास ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ एणें अवसर तिहां मूंबजु रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन नाटकणी तिहां रे, आवी विजया नाम रें ॥ चतुर नर ॥ निज योग्य बहु परिवारशुं रे लोल ॥ आवी महाराष्ट्र देशथी रे, नृपघर पो लनें गम रे ॥ च० ॥ चारीनें नीर मूके तदा रे लोल ॥१॥ नाटकें जींते मुजनें रे, दासी थाउ तास रे ॥ च० ॥ नहीं तो तस दासी करु रें लोल ॥ एह प्र तिज्ञा मादरी रे, उद्घोषणा करे खास रे ॥ च० ॥ नृप पण पडह वजाव तो रे लोल ॥ २ ॥ पण नवि कोइ परगट थयो रे, नगरमां जीतणहार रे ॥ ॥ च० ॥ राय विषाद लई करी रे लोल ॥ चिंतवे मुज पुरमां नहीं रे, कोई क लानिंमार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी ते जाणीनें रे लोल ॥ ३ ॥ तातनो खेद निवारवा रे, कहे जीतुं एह नारी रे ॥ च० ॥ पण नरपरखदमां नही रे लोल ॥ नृप कहे नर दूरें रहे रे, तव सा करे अंगीकार रे ॥ च० ॥ दिव स उरावी घरें गइ रे लोल ॥ ४ ॥ उक्त दिनें नरपति हवे रे, विजया तेडा वे तह रे ॥ च० ॥ रतिसुदरी नृप आणथी रे लोल ॥ बेसी प्रवर सुखास नें रे, उपकरण नृत्य सह रें ॥ च० ॥ दासीयो नर दूरें करे रे लोल ॥५॥ बहु परिवारें परवरी रे, पण चित्त चिंतवे एम रे ॥ च० ॥ मुज नाटकने सारखी रे लोल ॥ वीणावादिका कोइ नहीं रे, तेणें करशु कहो केम रे ॥ च० ॥ श्रीविलास चोहटें रह्या रे लोल ॥ ६ ॥ देखी अचरज पामी नें रे, पूछे कोइकनें वात रे ॥ च० ॥ ते पण मवि मांमी कहे रे लोल ॥ ना टक जोवा कौतुकी रे, पण नरथी न जवात रे ॥ च० ॥ रूप करे तव नारीनुं रे लोल ॥ ७ ॥ मनगमती वीणा तदा रे, मागी लाव्यो कोइ पास रे ॥ च० ॥ तेह पेटकमांहे जली रे लोल ॥ राय सनामां ते गई रे, धर ती मन उल्लास रे ॥ च० ॥ थोडी सनायें नृप उपविशे रे लोल ॥ ८ ॥ कौ तुक जोनारा जिके रे, ते नर राख्या दूर रे ॥ च० ॥ विजयानें नृप आणा करे रे लोल ॥ विजयायें नाटक मांमियु रे, नाना करणादि पूर रे ॥ च० ॥ गीत वाजित्रशु मेलवी रे लोल ॥ ए ॥ रीझवे ते सघली सना रे, वशनद्मा ग्रें नाच रे ॥ च० ॥ असि छुरिकाग्रें तेम वली रे लोल ॥ तंडुलपुंजें सूची उवी रे, ऊपर फूलनो ताच रे ॥ च० ॥ नाटक कयु तेह ऊपरें रे लोल ॥

दाय रे ॥ सूअरणी उदरडो दुःख लहेती, जार घणो तिहां वहेती रे ॥ पू० ॥ ८ ॥ कुरूपीने कडुई वाणी, योनिरोगें अकुलाणी रे ॥ कोढरोम हीनांगनें विकला, निकलानें वली डुकुला रे ॥ पू० ॥ ए ॥ डुष्ट जीवित अल्पायु पामे पुत्र वियोग सुख वामे रे ॥ कुशील कर्म किमे नवी बूटे, न वनव दुःख नवि त्रूटे रे ॥ पू० ॥ १० ॥ वात सुणी ते नरकथी बीहीनी, साधवी वयणें नीनी रे ॥ स्थिर धर्म शीलें थइ बोले, नावे कोइ तुम तोलें रे ॥ पू० ॥ ११ ॥ डुर्गति पडती मुजनें राखी, जिनवचनामृत नाखी रे ॥ डुष्टबोध विषनो कस्यो नाश, न पडु हवे कोइ पास रे ॥ पू० ॥ १२ ॥ एणी परें कहीनें प्रणमी पाया, निजघर मांहे आया रे ॥ वली सावित्री तास बोलावे, तेहनें कहे इण रावें रे ॥ पू० ॥ १३ ॥ हवे हु नीच आचार न सेवु, मत कहे मुजनें एहवु रे ॥ जो ए वात कहीश हवे मुजनें, दुःख देवरावीश तुजनें र ॥ पू० ॥ १४ ॥ नंदिनी त्रातथी बीहीती नासे, गइ निज पुत्रनी पासें रे ॥ अन्यदेशें गया साधवी विचरी, धर्ममां तत्पर इतरी रे ॥ पू० ॥ १५ ॥ तप करे मुक्तावली रत्नावली, पाखम संग तजे नाली रे ॥ परपाखमनो परिचय पामी, समकितमां थइ खामी रे ॥ पू० ॥ १६ ॥ सहस्र वरस श्रावक धर्म पाल्यो, पण नवि कर्मनें गाल्यो रे ॥ मरण लही चक्रेश्वरी देवी, थई अल्प ऋद्धि कहेवी रे ॥ पू० ॥ १७ ॥ वैमानिक सुख थी वचाणी, विराधितनी कमाणी रे ॥ तेणे मुनिवदन करीनें देवी, निज अवदात कहेवी रे ॥ पू० ॥ १८ ॥ समकित पामी मुनिवर पासें, सेवा करी चउमासें रे ॥ मुनि विचरे सघ साहाय्य करंती, विघन ते सहूनां हरंती रे ॥ पू० ॥ १ए ॥ उठी ढाल ए त्रीजे खमें, जांखी रंग अखंमें रे ॥ पद्मविजय कहे उत्तम सर्गे, उत्तमता होये रगें रे ॥ पू० ॥ २० ॥२१०॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्रनावा देवी सुणी, रतिसुंदरी अनुरूप ॥ नर्ता मले एम नावती, जजन चिंता नूप ॥ १ ॥ अरचे देवी आदरें, तुष्टमान थइ तेह ॥ सुपरें नांखे स्फुट परें, सांनलजे ससनेह ॥ २ ॥ नरपति आगल नाचतां, पुतली दोय प्रधान ॥ उतरी थंनथी आवशे, चामर लेई आधान ॥ ३ ॥ वींणवादकनें वींजशे, पूरवनव पति तेह ॥ वासुदेव सम वरणव्यो, इह नव नरता एह ॥ ४ ॥ जागीनें जिनराजनी, पूजा करे प्रणाम ॥ दक्ष पूजे रे

॥ च० ॥ पूरव नवना रागथी रे लोल ॥ २१ ॥ नारी रूप धरी करी रे, वेठी तस घर बार रे ॥ च० ॥ दासीयो देखीने ठलखी रे लोल ॥ रतिसुंदरीनें व धामणी रें, दीधी तव अलंकार रे ॥ च० ॥ बहु मूला दीये दासीनें रे लोल ॥ ॥ २२ ॥ साहामी जइ रतिसुदरी रे, लागी तेहने पाय रे ॥ च० ॥ कगा वे बहु हर्षथी रे लोल ॥ कुशल ठे तुजनें हे सखी रे, माहारी जीवितदा य रे ॥ च० ॥ अनुकपा करी माहरी रे लोल ॥ २३ ॥ चालो घरमांहे हवे रे, लावी ते घरमांह रे ॥ च० ॥ पल्यके वेसारीनें रे लोल ॥ धर्म शास्त्र कला तणा रे, करे विनोद उत्साह रे ॥ च० ॥ निज हस्तें न्हवरावती रे लोल ॥ २४ ॥ अमृत सम नुजाविने रे, पोतें वावरे आहार रे ॥ च० ॥ नक्तियें निजघर राखती रे लोल ॥ ते पण पूर्वमोहें करी रे,रही हवे विष्णु नें प्यार रे ॥ च० ॥ दिन दिन अधिकेरो धरे रे लोल ॥ २५ ॥ सातमी त्री जा खंममां रे, पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ च० ॥ श्रीजयानदना रासमां रे लोल ॥ धर्म काम अर्थ शास्त्रनी रे, वातो करे सुरसाल रें ॥ च० ॥ पूरव नवना प्रेमथी रे लोल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहुदिन काढे एम विष्णु, रतिसुदरी सुप्रसन्न ॥ सामुद्रिक साचु लहे, एम चिते एक दिन्न ॥ १ ॥ लक्षण जोतां हु लखु, चक्री सम ठे चेन ॥ ना रीपणे तो नवि होये, जाची ठे वली जैन ॥ २ ॥ गति चेष्टा स्वर मुख गु णा, पुरुष योग्य परधान ॥ कोइक कारणथी कखु, नारी रूप निदान ॥३॥ एम निश्चय करी आखती, स्मेरमुखी ससनेह ॥ जाणु हु जुगतें करी,तहत्त करी सुणो तेह ॥ ४ ॥ देवी वयणें दाखीयें,पूरव नवपति प्रेम ॥ कला ठे खावीय कारमी, कृत्रिम रूपें केम ॥ ५ ॥ अनुग्रह कीजें अम नणी,स्वाना विक थाउ स्वामि, स्नेहथकी साचुं कहे, प्रियानो आग्रह पामि ॥ ६ ॥ इइ स्मरथी अधिक श्री, देखी तास देदार ॥ रोमांचित रमणी थई, आनद अग अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ प्रेमनां वादल वरश्यां दाहाडा सोंहिला॥ ए देशी ॥

॥ आज आनद थयो, पूरवनव पति मलियो धन्य दिन आजनो ॥ ए आंकणी ॥ आज पूरवपुण्य विनव फलियो, अणचित्यो चितामणि मलियो ॥ आ० ॥ कहे श्रीजयानद सुणो नारी, तुज सौनाग्यता वावडी सारी ॥

॥१०॥ नाटक नाटके नृप दीये रे, दान अने बहुमान रे ॥च०॥ नाटक करतां तेहनें रे लोल ॥ भ्रू नख अंगुलि चगनो रे, विपरीत थयां तेणें थान रे ॥ ॥ च० ॥ रतिसुंदरी सहुनें दाखवे रे लोल ॥ ११ ॥ नृप आगेंजें रतिसुंदरी रे, नाटक करे अद्भुत रे ॥ च० ॥ देवता पण मोही रहे रे लोल ॥ कुमर नारी वजावती रे, वीणा नृत्य आकूत रे ॥ च० ॥ ते ध्वनि श्रवण सुधा समी रे लोल ॥ १२ ॥ नाद तथाविध कहीयो रे, देवनें दुर्लभ जाण रे ॥ ॥ च० ॥ हय गय पशु पण थिर रह्या रे लोल ॥ तो नरनुं कहेवुं किश्युं रे, नाटक पण तिणें ठाण रे ॥ च० ॥ रंजा हरावती सुंदरी रे लोल ॥ ॥ १३ ॥ विजयानो जारज किश्यो रे, तिहां देवी प्रजाव रे ॥ च० ॥ मणिपूतली दोय कतरी रे लोल ॥ वींजे सवीणा नारीनें रे, सहु लह्या विस्मय ताव रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी चित्त चिंतवे रे लोल ॥ १४ ॥ देवी कह्यु ते सवि मल्यु रे, पण नरता केम नारी रे ॥ च० ॥ माया इहां कांइ संजवे रे लोल ॥ अथवा जाणशुं आगलें रे, जर्त्तानो निरधार रे ॥ च० ॥ पण राखवी पासे सही रे लोल ॥ १५ ॥ पद्म तंतु कपर करे रे, विजया नाटक सार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी तव नाचती रे लोल ॥ लूता तंतु कपर सही रे, जींती ए निरधार रे ॥ च० ॥ जय जय रव परगट थयो रे लोल ॥ १६ ॥ रतिमाला नृप आणथी रे, करे उत्सव सुप्रकार रे ॥ च० ॥ निजघर लावे पुत्रीनें रे लोल ॥ रतिसुंदरी तव मोकले रे, तेडवा कुंवर नारि रे ॥ च० ॥ निज प्रतिहारियो मानथी रे लोल ॥ १७ ॥ केटली जूमि आविया रे, नारीरूपें कुमार रे ॥ च० ॥ नागरूपें तेआवीने रे लोल ॥ आव्या स्वरूपें निजघरें रे, हवे विजया जे नारि रे ॥ च० ॥ दासी थई हमधारणी रे लोल ॥ १८ ॥ दासीयो खोले कुमारनें रे, पण नवि दीठी ते नारि रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरीनें ते सवि कह्यु रे लोल ॥ सांजली दुःखणी ते थई रे, करे प्रतिज्ञा सार रे ॥ च० ॥ आरतध्यानें ते पडी रे लोल ॥ ॥१९॥ न मले ए नारी जिहां लगें रे, तिहां लगें न करुं आहार रे ॥च०॥ आकुल व्याकुल सहु थयां रे लोल ॥ रतिमाला सुख बहु कहे रे, न करे आहार जेवार रे ॥ च० ॥ दासीयो नृपने ते जइ कहे रे लोल ॥ २० ॥ त्रणदिन नगर शोधावीशुं रे, न जडी कोई उपाय रे ॥ च० ॥ कुमर हवे चोथे दिनें रे लोल ॥ एकांतें मुल रागिणी रे, आहार विना मरी जाय रे

॥ च० ॥ पूरव नवना रागथी रे लोल ॥ २१ ॥ नारी रूप धरी करी रे, बेठी तस घर बार रे ॥ च० ॥ दासीयो देखीने ओलखी रे लोल ॥ रतिसुंदरीनें व धामणी रे, दीधी तव अलकार रे ॥ च० ॥ बहु मूला दीये दासीनें रे लोल ॥ ॥ २२ ॥ साहामी जइ रतिसुदरी रे, लागी तेहने पाय रे ॥ च० ॥ कहा वे बहु हर्षथी रे लोल ॥ कुशल छे तुजनें हे सखी रे, माहारी जीवितदा य रे ॥ च० ॥ अनुकपा करी माहरी रे लोल ॥ २३ ॥ चालो घरमांहे हवे रे, लावी ते घरमांह रे ॥ च० ॥ पल्यंके बेसारीनें रे लोल ॥ धर्म शास्त्र कला तणा रे, करे विनोद उत्साह रे ॥ च० ॥ निज हस्तें न्हवरावती रे लोल ॥ २४ ॥ अमृत सम जुजाविने रे, पोतें वावरे आहार रे ॥ च० ॥ नक्तियें निजघर राखती रे लोल ॥ ते पण पूर्वमोहें करी रे,रही हवे बिहु ने प्यार रे ॥ च० ॥ दिन दिन अधिकेरो धरे रे लोल ॥ २५ ॥ सातमी त्री जा खंमर्मा रे, पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ च० ॥ श्रीजयानदना रासमां रे लोल ॥ धर्म काम अर्थ शास्त्रनी रे, वातो करे सुरसाल रे ॥ च० ॥ पूरव नवना प्रेमथी रे लोल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहुदिन काढे एम बिहु, रतिसुदरी सुप्रसन्न ॥ सामुद्रिक साचु लहे, एम चिते एक दिन्न ॥ १ ॥ लक्षण जोतां हु लखु, चक्री सम छे चेन ॥ ना रीपणे तो नवि होये, जाची छे वली जैन ॥ २ ॥ गति चेष्टा स्वर मुख गु णा, पुरुष योग्य परधान ॥ कोइक कारणथी कर्युं, नारी रूप निदान ॥३॥ एम निश्चय करी आखती, स्मेरमुखी ससनेह ॥ जाणु हु जुगतें करी,तहत्त करी सुणो तेह ॥ ४ ॥ देवी वयणें दाखीयें,पूरव नवपति प्रेम ॥ कला दे खावीय कारमी, कृत्रिम रूपें केम ॥ ५ ॥ अनुग्रह कीजें अम नणी,स्वाना विक थाउ स्वामि, स्नेहथकी साचुं कहे, प्रियानो आग्रह पामि ॥ ६ ॥ इह स्मरथी अधिक श्री, देखी तास देदार ॥ रोमांचित रमणी थई, आनद अग अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ प्रेमनां वादल वरश्यां दाहाडा सोहिला॥ ए देशी ॥

॥ आज आनद थयो, पूरवनव पति मलियो धन्य दिन आजनो ॥ ए आंकणी ॥ आज पूरवपुण्य विनव फलियो, अणचित्यो चितामणि मलियो ॥ आ० ॥ कहे श्रीजयानद सुणो नारी, तुज सौनाग्यता वाघडी सारी ॥

॥१०॥ नाटक नाटके नृप दीये रे, दान अने बहुमान रे ॥च०॥ नाटक करतां तेहनें रे लोल ॥ भ्रू नख अंगुलि चगनां रे, विपरीत थयां तेणें थान रे ॥ ॥ च० ॥ रतिसुदरी सहुनें दाखवे रे लोल ॥ ११ ॥ नृप आदेशें रतिसुंदरी रे, नाटक करे अद्भुत रे ॥ च० ॥ देवता पण मोही रहे रे लोल ॥ कुमर नारी वजावती रे, वीणा नृत्य आकूत रे ॥ च० ॥ ते ध्वनि श्रवण सुधा समी रे लोल ॥ १२ ॥ नाद तथाविध करीयो रे, देवनें दुर्लभ जाण रे ॥ ॥ च० ॥ हय गय पशु पण थिर रह्या रे लोल ॥ तो नरनुं कहेवु किश्युं रे, नाटक पण तिणें ठाण रे ॥ च० ॥ रंजा हरावती सुंदरी रे लोल ॥ ॥ १३ ॥ विजयानो चारज किश्यो रे, तिहां देवी प्रचाव रे ॥ च० ॥ मणिपूतली दोय कतरी रे लोल ॥ बींजे सवीणा नारीनें रे. सहु लह्या विस्मय ताव रे ॥ च० ॥ रतिसुदरी चित्त चिंतवे रे लोल ॥ १४ ॥ देवी कह्यु ते सवि मल्यु रे, पण जरता केम नारी रे ॥ च० ॥ माया इहां कांइ संचवे रे लोल ॥ अथवा जाणशुं आगलें रे, जर्त्तानो निरधार रे ॥ च० ॥ पण राखवी पासे सही रे लोल ॥ १५ ॥ पद्म तंतु ऊपर करे रे, विजया नाटक सार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी तव नाचती रे लोल ॥ लूता तंतु ऊपर सही रे, जींती ए निरधार रे ॥ च० ॥ जय जय रव परगट थयो रे लोल ॥ १६ ॥ रतिमाला नृप आणंदी रे, करे उत्सव सुप्रकार रे ॥ च० ॥ निजघर लावे पुत्रीनें रे लोल ॥ रतिसुदरी तव मोकले रे, तेडवा कुंवर नारि रे ॥ च० ॥ निज प्रतिहारियो मानथी रे लोल ॥ १७ ॥ केटली भूमि आविया रे, नारीरूपें कुमार रे ॥ च० ॥ नागरूपें तेआवीने रे लोल ॥ आव्या स्वरूपें निजघरें रे, हवे विजया जे नारि रे ॥ च० ॥ दासी थई दम धारणी रे लोल ॥ १८ ॥ दासीयो खोले कुमारनें रे, पण नवि दीठी ते नारि रे ॥ च० ॥ रतिसुदरीनें ते सवि कह्यु रे लोल ॥ सांचली डुःखणी ते थई रे, करे प्रतिज्ञा सार रे ॥ च० ॥ आरतध्यानें ते पडी रे लोल ॥ ॥१९॥ न मले ए नारी जिहां लगें रे, तिहां लगें न करुं आहार रे ॥च०॥ आकुल व्याकुल सहु थयां रे लोल ॥ रतिमाला सुख बहु कहे रे, न करे आहार जेवार रे ॥ च० ॥ दासीयो नृपने ते जइ कहे रे लोल ॥ २० ॥ त्रणदिन नगर शोधावीयुं रे, न जडी कोई उपाय रे ॥ च० ॥ कुमर हवे चोथे दिनें रे लोल ॥ एकांतें सुज रागिणी रे, आहार विना मरी जाय रे

॥ च० ॥ पूरव नवना रागथी रे लोल ॥ २१ ॥ नारी रूप धरी करी रे, बेठी तस घर बार रे ॥ च० ॥ दासीयो देखीने उलखी रे लोल ॥ रतिसुंदरीनें व धामणी रे, दीधी तव अलंकार रे ॥ च० ॥ बहु मूला दीधे दासीनें रे लोल ॥ ॥ २२ ॥ साहामी जइ रतिसुंदरी रे, लागी तेहने पाय रे ॥ च० ॥ कहा वे बहु हर्षथी रे लोल ॥ कुशल छे तुजनें हे सखी रे, माहारी जीवितदा य रे ॥ च० ॥ अनुकपा करी माहरी रे लोल ॥ २३ ॥ चालो घरमांहे हवे रे, लावी ते घरमांह रे ॥ च० ॥ पल्यके बेसारीनें रे लोल ॥ धर्म शास्त्र कला तणा रे, करे विनोद उत्साह रे ॥ च० ॥ निज हस्तें न्हवरावती रे लोल ॥ २४ ॥ अमृत सम जुजाविने रे, पोतें वावरे आहार रे ॥ च० ॥ नक्तियें निजघर राखती रे लोल ॥ ते पण पूर्वमोहें करी रे,रही हवे विहु ने प्यार रे ॥ च० ॥ दिन दिन अधिकेरो धरे रे लोल ॥ २५ ॥ सातमी त्री जा खममां रे, पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ च० ॥ श्रीजयानदना रासमां रे लोल ॥ धर्म काम अर्थ शास्त्रनी रे, वातो करे सुरसाल रे ॥ च० ॥ पूरव नवना प्रेमथी रे लोल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहुदिन काढे एम बिहु, रतिसुंदरी सुप्रसन्न ॥ सामुद्रिक साचु लहे, एम चिंते एक दिन्न ॥ १ ॥ लक्षण जोतां हु लखु, चक्री सम छे चेन ॥ ना रीपणे तो नवि होये,जाची छे वली जैन ॥ २ ॥ गति चेष्टा स्वर मुख गु णा, पुरुष योग्य परधान ॥ कोइक कारणथी कर्खुं, नारी रूप निदान ॥३॥ एम निश्चय करी आखती, स्मेरमुखी ससनेह ॥ जाणु हु युगतें करी,तद्वृत्त करी सुणो तेह ॥ ४ ॥ देवी वयणें दाखीयें,पूरव नवपति प्रेम ॥ कला दे खावीय कारमो, कृत्रिम रूपें केम ॥ ५ ॥ अनुग्रह कीजें अम नणी,स्वान्ना विक थाउ स्वामि, स्नेहथकी साचुं कहे, प्रियानो आग्रह पामि ॥ ६ ॥ इह स्मरथी अधिक श्री, देखी तास देदार ॥ रोमांचित रमणी थई, आनद अग अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ प्रेमनां वादल वरश्यां हाहाहा सोहिला॥ ए देशी ॥

॥ आज आनद थयो, पूरवनव पति मलियो धन्य दिन आजनो ॥ ए आंकणी ॥ आज पूरवपुण्य विनव फलियो, अणचिंत्यो चिंतामणि मलियो ॥ आ० ॥ कहे श्रीजयानद सुणो नारी, तुज सौनाग्यता वावडी सारी ॥

॥ श्रा० ॥ १ ॥ मुज मन कल हंस तिहां रमियो, नवि पंकिलजल मुज नें गमियो ॥ श्रा० ॥ रतिमाला दासी मुखें जाणी, आवी पूछणा करती वजाणी ॥ श्रा० ॥ २ ॥ हवें जइ दासी कहे राय, तुम पुत्री पति आज प्रगटाय ॥ श्रा० ॥ रायें तस दीधु बहुदान, वली मोकले तेडवा प रधान ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ कुमर पण नृपति कनें जावे, वही आलिंगन क रे नृप नावे ॥ श्रा० ॥ कांइ प्रेममां अतर नवि राखे, तो पण वयणें एणी परें नांखे ॥श्रा०॥४॥ तुज रूप अनुत्तर हु देखी, थयो लीन घणुं सवि क वेखी ॥ श्रा० ॥ तुम सेवा कहो शी शी करीयें, तुम सुजगता अम मनहु हरीयें ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ तुम कुल पूछणनु नहीं काम, नवि देवी वाणी क हे वाम ॥ श्रा० ॥ पण जनमें पवित्र करी नयरी, तुमें ते कहो अमनें सवि विवरी ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ हु विजयपुरी नयरीवासी, कहे कुमर सांज लो उल्लासी ॥ श्रा० ॥ कौतुक जोवानें नीसरीयो, देश गाम गाम फर्दे न रीयो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ फरतो फरतो तुम्ह पुर आव्यो, इत्यादिक सर्वे सन लाव्यो ॥ श्रा० ॥ हवे स्नान नोजन सार्थे राय, करे हर्ष हियामां नवि माय ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ कहे नृप ए मुज कन्या परणो, एहनें ए संधा अन्य नवि वरणो ॥ श्रा० ॥ कुवर कहे जस कुल नवि जाणो, तस कन्या देवा श्यो टाणो ॥ श्रा०॥ ए ॥ कहे नृप एक तो देवी वाणी, वली प्रकृति आ कृति गुणनी खाणी ॥ श्रा० ॥ एम कुल जाण्युं अमें तुम तणुं, तमें वचन प्रमाणो अम तणु ॥ श्रा० ॥ १० ॥ तव मौन कुमर करे ज्यारें, हवे लग न जोवरावे नृप त्यारें ॥ श्रा० ॥ परणावे नृप रतिसुदरी, गज घोडा दिये मनोहार करी ॥ श्रा०॥११॥ तेहमां कुमार न ले कांय, तव आग्रह अति करीनें राय ॥ श्रा० ॥ आठ नगर आपे घणु मनोहार, ते आपे पियानें ने ह धार ॥ श्रा० ॥ १२ ॥ रतिसुदरी सोंपे मातने, तस चिंताना अ ववातनें ॥ श्रा० ॥ रहे नृपति दीधा आवासें, सुख नोगवे विषयनां उल्ला सें ॥ श्रा० ॥ १३ ॥ कदी वापी वनमां करे क्रीडा, नवि देवे कोई जननें पीडा ॥ श्रा० ॥ कदी नृत्य करावे प्रिया पासें, पोतें वाद्य वजावे सुविला सें ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ करे देवगुरुना गुणग्राम, याचकनें बहु आपे दाम ॥ ॥ श्रा० ॥ दीनादिकनें दीये अति दान, लहे कीर्त्ति धर्म ते अप्रमाण ॥ ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ जिमे देव गुरुनी पूज करी, जिमे दान सुपात्रें तेह ध

री ॥ आ० ॥ करी उरडी देहरासर मांहिं, गोपवो प्रतिमा उषधि त्यांहि ॥ ॥ आ० ॥ १६ ॥ तालु देइ नारीनें दीये कूंची, सा आनूषणमां गुप्त मूची ॥ आ० ॥ निज जीवितनी परें रखवाले, ते पण नित्य पांचशें रत्न आले ॥ आ० ॥ १७ ॥ निज नारीनें रत्न दीये तेह, तेतो एकजीव मानु दो देह ॥ आ० ॥ निज पुत्रीप्रेमें रतिमाला, नित्य आवे हर्षे सुकुमाला ॥ आ० ॥ ॥ १८ ॥ पुर आव तणुं जे इव्य आवे, आपे निज पुत्रीनें चावें ॥ आ० ॥ एकदिन चिते विस्मय पामी, नृप दीधा धननो ए नहीं कामी ॥ आ० ॥ ॥ १ए ॥ पुर आवना धननुं न नाम ग्रहे, मागवु तो ते दूरें रहे ॥ आ० ॥ दान नोग करे सुरनी परें, एह अचरिज वात हृदय धरे ॥ आ० ॥ २० ॥ धन आगम मारग नवि लहु, ए वात एहनें पूछुं सहु ॥ आ० ॥ पूछे श्रीजयनें रतिमाला, तव श्रीजय वोले रढीयाला ॥ आ० ॥ २१ ॥ ते कहे सुन तात दीधु धन्न, में पण उपराज्युं बहु दिन्न ॥ आ० ॥ ते वात सुणी मानी नहीं, तेणीयें निज पुत्रीनें कही ॥ आ० ॥ २२ ॥ धन किहांथी काढे छे ए घणु, माहारु ए टाल कौतुक पणु ॥ आ० ॥ पुत्री कहे प्रश्ननु शुं काम, इछित पूरे छे अनिराम ॥ आ० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंमें आठमी ढाल, कहे पद्मविजय सुणो सुरसाल ॥ आ० ॥ हवे वेश्या ज्यो परपंच करे, निज जाति वेखावे एणी परें ॥ आ० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्रीनें पण्यांगना, क्रोध करी कहे एम ॥ एमहीज में उदरें धरी, कौतुक न कहे केम ॥ १ ॥ सरल घणु रतिसुंदरी, आखे दाक्षिण आण ॥ जाणु छुं ते जल्पियें, सांनल मात सुजाण ॥ २ ॥ देहेरासरथी दीपतां, रत्न तणो लेइ राशि ॥ तालुं देई निसरे तथा, कूंची दे मुज सकाश ॥ ३ ॥ वावरतां जे वाधीयां, आपे मुजने आवि ॥ बीजु कांइ बूफुं नहीं, जुगतो जेह जमाव ॥ ४ ॥ देहरासरमां दाखीयो, एणीयें एह उपाय ॥ पुत्रीनें एम प्रेमशुं, चिंती कहे चित्त लाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ बीजु पापनु स्थान ॥ ए देशी ॥

॥ देरासर देखडाव, ए मुज कोम पूराव ॥ आज हो रतिसुंदरी कहे मत बोलो तुमें मातजी रे ॥ १ ॥ मरणांतें पण एह, वात थाये कहो केह ॥ ॥ आ० ॥ वेश्या रे कहे तो मुज कूंची आपीयें रे ॥ २ ॥ एह मनोरथ तु

॥ आ० ॥ १ ॥ मुज मन कल हंस तिहां रमियो, नवि पंकिलजल मुज नें गमियो ॥ आ० ॥ रतिमाला दासी मुखें जाणी, आवी चूरणा करती उजाणी ॥ आ० ॥ २ ॥ हवें जइ दासी कहे राय, तुम पुत्री पति आज प्रगटाय ॥ आ० ॥ रायें तस दीधु बहुदान, वली मोकले तेडवा प रधान ॥ आ० ॥ ३ ॥ कुमर पण नृपति कनें जावे, उठी आलिंगन क रे नृप जावें ॥ आ० ॥ कांइ प्रेममां अतर नवि राखे, तो पण वयणें एणी परें जांखे ॥आ०॥४॥ तुज रूप अनुत्तर हु देखी, थयो लीन घणुं सवि क वेखी ॥ आ० ॥ तुम सेवा कहो शी शी करीयें, तुम सुजगता अम मनडुं हरीयें ॥ आ० ॥ ५ ॥ तुम कुल पूछणनुं नहीं काम, नवि देवी वाणी क हे वाम ॥ आ० ॥ पण जनमें पवित्र करी नयरी, तुमें ते कहो अमनें सवि विवरी ॥ आ० ॥ ६ ॥ हु विजयपुरी नयरीवासी, कहे कुमर सांज लो उल्लासी ॥ आ० ॥ कौतुक जोवानें नीसरीयो, देश गाम गाम फुहे न रीयो ॥ आ० ॥ ७ ॥ फरतो फरतो तुम्ह पुर आव्यो, इत्यादिक सर्वे सन लाव्यो ॥ आ० ॥ हवे स्नान जोजन सार्ये राय, करे हर्ष हियामां नवि माय ॥ आ० ॥ ८ ॥ कहे नृप ए मुज कन्या परणो, एहनें ए संधा अन्य नवि वरणो ॥ आ० ॥ कुवर कहे जस कुल नवि जाणो, तस कन्या देवा स्यो टाणो ॥ आ० ॥ ए ॥ कहे नृप एक तो देवी वाणी, वली प्रकृति आ कृति गुणनी खाणी ॥ आ० ॥ एम कुल जाण्युं अमें तुम तणु, तमें वचन प्रमाणो अम तणु ॥ आ० ॥ १० ॥ तव मौन कुमर करे ज्यारें, हवे लग न जोवरावे नृप त्यारें ॥ आ० ॥ परणावे नृप रतिसुदरी, गज घोडा दिये मनोहार करी ॥ आ० ॥ ११ ॥ तेहमां कुमार न ले कांय, तव आग्रह अति करीनें राय ॥ आ० ॥ आठ नगर आपे घणु मनोहार, ते आपे पियानें ने ह धार ॥ आ० ॥ १२ ॥ रतिसुदरी सोंपे मातने, तस चिंताना अ वदातनें ॥ आ० ॥ रहे नूपति दीधा आवासें, सुख जोगवे विषयनां उल्ला सें ॥ आ० ॥ १३ ॥ कदी वापी वनमां करे क्रीडा, नवि देवे कोई जननें पीडा ॥ आ० ॥ कदी नृत्य करावे प्रिया पासें, पोतें वाद्य वजावे सुविला सें ॥ आ० ॥ १४ ॥ करे देवगुरुना गुणग्राम, याचकनें बहु आपे दाम ॥ ॥ आ० ॥ दीनादिकनें दीये अति दान, लहे कीर्त्ति धर्म ते अप्रमाण ॥ ॥ आ० ॥ १५ ॥ जिमे देव गुरुनी पूज करी, जिमे दान सुपात्रें तेह ध

रे ॥ २४ ॥ त्रीजें खंमें ढाल, नवमी कही सुरसाल ॥ आ० ॥ पद्मविजयें ह वे सांजलो वात सोहामणी रे ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन नारीनें एम कहे, मूकी कूंची मन आण ॥ जननी तुज दे खे यथा, जूवे ते मनमां जाण ॥ १ ॥ दूर रही तु देखजे, जाणे नही ए जे म ॥ तेमज करे ते ततक्षणें, प्रेयसी आणी प्रेम ॥२॥ रतिमाला छुवे रंग शुं, घ्याये देखी ध्यान ॥ समणां रत्न बनावशुं, लावें ए अमिलान ॥ ३ ॥ एक दिन विस्मय आणिनें, देवपूजा क्षण दाव ॥ सांजले वात सोहामणी, जणे जे औषधि जाव ॥ ४ ॥ पूरव औषधि पासथी, नवि लह्या रत्न नि दान ॥ विधि साध विण विफल ते, एम नवि लहे अज्ञान ॥ ५ ॥ उताव जमां में अवर, औषधि लीधी एह ॥ बीजी साची बाहिरें, रही न बीगे रेह ॥ ६ ॥ अर्थथकी आपे अधिक, एहनें औषधि एह ॥ अवसर पामी एहनो, वदलुं बिंदुयें नेह ॥ ७ ॥ चिंतामणि पामी चतुर, कांकरे तूसे कोण ॥ अ वसर पामी एकदिनें, ग्रहे ते मूकी गौण ॥ ८ ॥ हर्पित थया कुंवर हवे, चित्तमां करे विचार ॥ वाक्पटु औषधि वालशुं, करि उपाय किवार ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ लाल रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे गणिका औषधि पूजीनें, रत्न मागे पण नवि आपे रे ॥ नवि वो ले साधन विधि विना, पण पाठी गमें न थापे रे ॥ १ ॥ नवि पुण्य विना फल पामीयें ॥ ए आंकणी ॥ करे खेद घणो विधि जाणवा, नवि वदन राग पलटावे रे ॥ करे सासू जमाइ गोठडी, धूरतें धूरत केम फावे रे ॥ न० ॥२॥ प्रीतें तिहां करतां वातडी, कुवरनें गणिका पूछे रे ॥ वत्स शुं शु विज्ञान जा णो तुमें, कहे कुमर काम तुम श्यु छे रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जाणु विविध प्रकार नी औषधि, वली सकल कला पण जाणु रे ॥ विज्ञान विविध लहु मत्रनें, कुरूपनें रूप देवं नाणुं रे ॥ न० ॥ ४ ॥ रूप होये तो अधिकेरू करु, रूडा विधिथी जो आराधे रे ॥ सौनाग्यनें यौवन नित्य रहे, मन इछित वरनें साधे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ सासू कहे मुज एहवी करो, जेहथी नूपति मुज मा ने रे ॥ जेम मान मडुं सवि शोक्यनु, कोइनें न बोलावे शानें रे ॥ न०॥६॥ कहे कुमर मूमावो शिर तुमें, वदनें वली मशिका लींपो रे ॥ उपवास करो हैयडे धरी, वली मत्र देव ते जंपो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ रुरु वुरु रुरु वुरु वुरु वु

ज, सीके न जीवतां मुज ॥ आ० ॥ रतिसुंदरी कहे तूसो अथवा रूसजो रे॥ ३ ॥ छोह न करु नरतार, प्राण सोप्यां तस सार ॥ आ० ॥ रतिमाला यें निश्चय जाण्यो पुत्रीनो रे ॥ ४ ॥ कपटे देई विश्वास, एक दिन सुरा ष ड्हास ॥ आ० ॥ पाई रे दधिघोलमां तव मूर्छा लही रे ॥ ५ ॥ सूती प ल्यंकें तेह, जोई पुत्री देह ॥ आ० ॥ लाधी रे कूची तव तालु उघाडीयुं रे ॥ ६ ॥ जूवे देहरासर जाम, औषधि दीठी ताम ॥ आ० ॥ रत्नदायक जा णीनें लेइ पाठी वली रे ॥ ७ ॥ तालूं देइ तह, कूची मूके हती जह ॥ ॥ आ० ॥ चेतना लही जागी रतिसुदरी तेटले रे ॥ ८ ॥ सघलु दीठु तेम, शंका न आवी एम ॥ आ० ॥ धूतारे कोण नवि वचाये मानवी रे ॥ ९ ॥ बीजे दिनें ते कुमार, पूजा करीनें प्यार ॥ आ० ॥ औषधि पूजवा जूवे तो नवि लाधी तदा रे ॥ १० ॥ तव पूछे निज नारि, चित्तमां शंका धारि॥आ०॥ चतुरा रे चमकी तव पतिनें वीनवे रे ॥ ११ ॥ नहीं कोइनो परवेश, कूची न ठवु अन्यदेश ॥ आ० ॥ मात दीधी सुरा काल तेणें हु अचेत थई रे ॥ १२ ॥ तेणें जाणु ठग मात, बीजो न जाणु वात ॥ आ० ॥ इंगित आ कारें करी ए निश्चय दशें रे ॥ १३ ॥ प्रश्नादिक सवि वाच, कही देखाडी साच ॥ आ० ॥ कुमरें पण निश्चय कर्यो सासुयें हरी रे ॥ १४ ॥ सासूनें कहे वात, आ श्या छे अवदात ॥ आ० ॥ गणिका रे कहे कान ढांकीने एणी परें रे ॥ १५ ॥ आपवुं तो रह्यं दूर, कलंक चढावो नूर ॥ आ० ॥ राजा नें वली तुमें मुज इष्टकारी छतां रे ॥ १६ ॥ चोरी करु शे काम, मुज परिवार पण नाम ॥ आ० ॥ चोरीनुं नवि जाणे न आवे ढूकडा रे ॥ १७ ॥ पूछो तमें निज नारि, साचवे जे रति धारि ॥ आ० ॥ शंका जो होये मनमां तो टालो परी रे ॥ १८ ॥ सांभली श्रीजयानंद, चिंतवे धिक् ए मंद ॥ आ० ॥ निजपुत्री शिर दोष दिये पोतें करी रे ॥ १९ ॥ देशे न वगर उपाय, शिक्षा दे उ एणे ठाय ॥ आ० ॥ एम चिंतीनें कहे जोशुं बीजे स्थलें रे ॥ २० ॥ हर्ष लही सुणी तेह, गइ निज थानकें नेह ॥ आ० ॥ देहेरासरमां बीजे दिन कुं वर गया रे ॥ २१ ॥ छानां सहस्र रतन्न, मूके करीनें जतन्न ॥ आ० ॥ पू जीरे जिन पढ्ढुवाक् औषधि पूजतो रे ॥ २२ ॥ पांचमी औषधि पास, मागे रत्न उल्लास ॥ आ० ॥ औषधि कहे तु रत्न सहस ले रीजवी रे ॥ २३ ॥ ले इ रत्न हजार, निकलीयो तेवार ॥ आ० ॥ पूरव परें तालु प्रमुख देइ करी

ता अहोनिशि केलि ॥ १ ॥ करतां क्रय विक्रय वली, पाम्या लाज अपार ॥ सज्जनें बहु सन्मानिया, अधिकी शोन आगार ॥ २ ॥ पूरणमासें प्रसवि यो, शुजलगनें शुज वार ॥ तिथि करण निर्दोष तेम, योग घणुं जयकार ॥ ॥ ३ ॥ वाय सुगंधी वाय ते, डुर्निक्ष नहीं निज देश ॥ जनपद सुखिया ज न सवे, वारु पहेखा वेश ॥४ ॥ प्रात समय उज्ज्वल पखें, पुण्य प्रजावें पू त ॥ पूरवदिशि सूरय परें, शोनावे घरसूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ वारी रंग ढोलणां ॥ ए देशी ॥

॥ आवी वधामणी एहवे हो राज, शेठनें हर्ष न माय ॥ सोनाणी सुत आवियो ॥ घर बाहेर बेगां थकां हो राज, आपवा धन निरमाय ॥ सो० ॥ ॥ १ ॥ खोले पण धन नहीं तदा हो राज, शेठ चिंते मनमांहि ॥ सो० ॥ दान वेला धन दोहिलु हो राज, होय ते आपे नांहि ॥ सो० ॥ २ ॥ आ मण दूमणो ते थयो हो राज, नीचु मुख करी शेठ ॥ सो० ॥ अंगुलीयें ध रती खणे हो राज, नजर करीनें हेठ ॥ सो० ॥ ३ ॥ कीडीनगरा जेटलु हो राज, दीठुं विवर ते गर ॥ सो० ॥ अधिक खणे महोटु थयुं हो राज, दीठुं सुवर्ण इव्यसार ॥ सो० ॥ ४ ॥ धन अनर्गल देखी करी हो राज, चिंते चि त्त मझार ॥ सो० ॥ अद्भुत जाग्य ए सुत तणु हो राज, आपुं चित्त उदा र ॥ सो० ॥ ५ ॥ आपे वधामणी तेहनें हो राज, तेहमांथी धन लाख ॥ ॥ सो०॥ वस्त्र जूषण घृत गुड घणा हो राज, दरिद्र न राखे सराख ॥सो०॥ ॥ ६ ॥ दीन अनाथनें आपतो हो राज, वाजित्र वाजे गेह ॥ सो० ॥ सज्ज न लावे घणां जेटणां हो राज, हर्ष न माये देह ॥ सो० ॥ ७॥धवलमंगल गाये सुंदरी हो राज, नाटक नव नव थाय ॥ सो० ॥ एम नव नव उत्सव थकी हो राज, दश दिवस वही जाय ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंद सूरय दर्शन करे हो राज, उठो जागर वली होय ॥ सो० ॥ एम उत्सव घटे जे दिनें हो रा ज, ते ते दिन करे सोय ॥ सो० ॥ ए ॥ शेठ चिंते जे दिनथकी हो राज, आव्यो ठे सुत एह ॥ सो० ॥ ते दिनथी लखमी लह्यो हो राज, मंगल माला गेह ॥ सो० ॥ १० ॥ दीनादिक संतोषिया हो राज, तोही न खूटे इव्य ॥ सो० ॥ इव्य जडयु सनलावीयें हो राज, नृपनें तो होये जव्य ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ अन्यथा राय अदत्त होये हो राज, श्रावक माटे शेठ ॥ ॥ सो० ॥ एम चिंती लेइ जेटणु हो राज, गयो नृप पासें शेठ ॥सो०॥ १२॥

रु स्वाहा, तेणीयें हर्ष सहु कीधु रे ॥ पामे आव्या सध्यायें कुमरजी, दोष जाणे वहित सीधु रे ॥ न० ॥ ८ ॥ वहु आमवर देखावतो, औषधियें सु अरणी कीधी रे ॥ बांधी थांने सांकलथी पापिणी,तें आपदि माहरी लीधी रे ॥ न० ॥ ९ ॥ पुत्री शिर दोष देखावती, फल नोगव चोरी केरां रे ॥ ल्यो औषधि एम देखावती, तमें दयावतमां धोरी रे ॥ न० ॥ १० ॥ नारी वयणथी हवे कृपा करी, मूलरूपें कीधी तास रे ॥ औषधि देइ पुत्री ज माईनें, खमावती देइ विश्वास रे ॥ न० ॥ ११ ॥ तेहुयें पण खमी राखी घरें, एक दिन हवे श्रीजयकुमार रे ॥ सासुने धर्म अरथें कहे, खमो मात तुमें पुज्यतार रे ॥ न० ॥ १२ ॥ तुमनें जे विटंबना में करी, तुम प्रति बोधननें काज रे ॥ अदत्तनु फल इह परनवें,डुःख आपे डुर्गति राज्य रे ॥ ॥ न० ॥ १३ ॥ नरकें जइयें डुर्नाग्यता, वली दरिद्र पणु ते आवे रे ॥ कोण इच्छे अदत्त एम जाणीने, कोण अदत्त लेवानें जावे रे ॥ न० ॥ १४ ॥ प्राणनाशें अदत्त न लीजीयें, थोडु पण इहां दृष्टांत रे ॥ लखमीपुंज जेम लखमी लह्या, सांनलजो तस वृत्तांत रे ॥ न० ॥ १५ ॥ हस्तिपुरमां राय पुरंदरु, पौलोमी नामें राणी रे, तेतो पौलोमी परें शोनती,शीलवती चातुर जाणी रे ॥ न० ॥ १६ ॥ तिहां शेठ सुधर्मा नामथी, जिनशासन नो घणो रागी रे ॥ दयावतनें गुरुनक्तो घणु, धन्या गेहिनी पति अनुरागी रे ॥ न० ॥ १७ ॥ धन क्षीण थयुं तस अन्यदा, अतराय लाननो आयो रे ॥ पण श्रीअरिहंतना धर्मनें, नवि ठांमे स्नेही जेम नायो रे ॥ न० ॥ ॥ १८ ॥ देवपूजानें आवश्यक प्रमुख जे, ते अंगीकर्युं नवि चूके रे ॥ एक दिन पुण्यवत सुत सूचवे, एहवु सुपन नारीने ढूके रे ॥ न० ॥ १९ ॥ पद्म सरोवर पद्में अलंकर्यु, नरतारनें आवी नांखे रे ॥ शेठ पण तस अर्थ विचारीनें, नारी आगल एम प्रकाशे रे ॥ न० ॥ २० ॥ लखमी लावण्य पुण्यवतो वली, सुत होशे सांनली हर्षे रे ॥ रत्नखाण परें गर्न धारती, प्रिया अंगें शोना वर्षे रे ॥ न० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंडें दशमी ढाल ए, कही पद्मविजय सुरसालो रे श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां होये मंगलमालो रे ॥ ॥ न० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ २३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंगें शोना अतिघणी, गर्नप्रनावें गेलि ॥ शेठनु दारिद्र गयु सवे,कर

ता अहोनिशि केलि ॥ १ ॥ करतां क्रय विक्रय वली, पाम्या लाज अपार ॥ सज्जनें बहु सन्मानिया, अधिकी शोज आगार ॥ २ ॥ पूरणमासें प्रसवियो, शुजलगनें शुज वार ॥ तिथि करण निर्दोष तेम, योग घणुं जयकार ॥ ॥ ३ ॥ वाय सुगंधी वाय ते, डुर्निक्ष नहीं निज देश ॥ जनपद सुखिया जन सवे, वारु पहेस्या वेश ॥४ ॥ प्रात समय उज्ज्वल परवें, पुण्य प्रजावें पूत ॥ पूरवदिशि सूरय परें, शोजावे घरसूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ वारी रग ढोलणां ॥ ए देशी ॥

॥ आवी वधामणी एहवे हो राज, शेठनें हर्ष न माय ॥ सोजागी सुत आवियो ॥ घर बाहेर बेगं थकां हो राज, आपवा धन निरमाय ॥ सो० ॥ ॥ १ ॥ खोले पण धन नहीं तदा हो राज, शेठ चिते मनमांहि ॥ सो० ॥ दान वेला धन दोहिलु हो राज, होय ते आपे नांहि ॥ सो० ॥ २ ॥ आमण दूमणो ते थयो हो राज, नीचु मुख करी शेठ ॥ सो० ॥ अगुलीयें धरती खणे हो राज, नजर करीनें हेठ ॥ सो० ॥ ३ ॥ कीडीनगरा जेटलु हो राज, दीठुं विवर ते गर ॥ सो० ॥ अधिक खणे महोटु थयु हो राज, दीठुं सुवर्ण द्रव्यसार ॥ सो० ॥ ४ ॥ धन अनर्गल देखी करी हो राज, चिते चित्त मकार ॥ सो० ॥ अद्भुत जाग्य ए सुत तणुं हो राज,आपु चित्त उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ आपे वधामणी तेहनें हो राज, तेहमांथी धन लाख ॥ ॥ सो०॥ वस्त्र जूषण घृत गुड घणा हो राज, दरिद्र न राखे साख ॥सो०॥ ॥ ६ ॥ दीन अनाथनें आपतो हो राज, वाजित्र वाजे गेह ॥ सो० ॥ सज्जन लावे घणां जेटणां हो राज, हर्ष न माये देह ॥ सो० ॥ ७॥धवलमगल गाये सुदरी हो राज, नाटक नव नव थाय ॥ सो० ॥ एम नव नव उत्सव थकी हो राज, दश दिवस वही जाय ॥ सो० ॥ ८ ॥ चद्र सूरय दर्शन करे हो राज, ठठी जागर वली होय ॥ सो० ॥ एम उत्सव घटे जे दिनें हो राज, ते ते दिन करे सोय ॥ सो० ॥ ए ॥ शेठ चिते जे दिनथकी हो राज, आव्यो ठे सुत एह ॥ सो० ॥ ते दिनथी लखमी लह्यो हो राज, मगल माला गेह ॥ सो० ॥ १० ॥ दीनादिक सतोषिया हो राज, तोही न खूटे द्रव्य ॥ सो० ॥ द्रव्य जहयु सजलावीयें हो राज, नृपनें तो होये जव्य ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ अन्यथा राय अदत्त होये हो राज, श्रावक माटे शेठ ॥ ॥ सो० ॥ एम चिती लेइ जेटणु हो राज, गयो नृप पासें ठेठ ॥सो०॥ १२॥

वात यथास्थित तिहां कही हो राज, नृपति वोल्यो न्याय ॥ सो० ॥ श्राव क अदत्त ग्रहे नही हो राज, नृपति हर्षित थाय ॥ सो० ॥ १३ ॥ लाम्ब निधि सुत पुण्यथी हो राज, धन प्रगट्यु असराल ॥ सो० ॥ रास तुं धन्य ए तादरु हो राज, तुज हो मंगलमाल ॥ सो० ॥ १४ ॥ राजप्रसाद लही करी हो राज, वाजते गाजते गेह ॥ सो० ॥ आव्या शुभ मुहूर्ते हवे हो रा ज, पुत्रनामनें नेह ॥ सो० ॥ १५ ॥ स्वजन कुटुंब जमाडियुं हो राज, अ र्थ धरी मनमांहि ॥ सो० ॥ लक्ष्मीपुंज इण नामथी हो राज, थाप्युं हर्ष उ छाहि ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिन दिन कल्पांकुर परें हो राज, मावित्र उमेदने सा थ ॥ सो० ॥ वाधे सुखदायी घणो हो राज, सहु जाणे अम आथ ॥सो०॥ ॥१७॥ दांत आव्या पग मांडतो हो राज, इत्यादिक सहु ठाम ॥सो०॥ ता स पिता उत्सव करे हो राज, बालक्रीडा करे ताम ॥ सो० ॥१८॥ नीशा ले भणवा ठव्यो हो राज, विनय घणो गुरु कीध ॥सो० ॥ पाठक पण तस हर्षथी हो राज, विद्या सघली दीध ॥ सो० ॥ १९ ॥ विद्या शास्त्र न तेह तु हो राज, जे नवि जाणे कुमार ॥ सो० ॥ साखी मात्र पाठक थयो हो राज,सकल कला भंडार ॥ सो० ॥ २० ॥ तिम जिनधर्म कला लह्यो हो राज, सूक्ष्म बुद्धि सुरूप ॥ सो० ॥ जैनशास्त्र शिरोमणि हो राज, कला विज्ञाननो भूप ॥ २१ ॥ काव्य छंद नाटक वली हो राज, प्रश्न प्रहेलिका न्याय ॥ सो० ॥ गीत नाटकनें विनोदमां हो राज, नित्य नित्य काल ग माय ॥ सो० ॥ २२ ॥ एकदिन मित्रें परवर्यो हो राज, क्रीडतो उपवन जाय ॥ सो० ॥ मुनिवर एकांतें रह्या हो राज, देखी प्रणमे पाय ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ धर्मलाभ मुनियें दियो हो राज, धर्म सुणे मुनिपास ॥ सो० ॥ बाल कालमां आदरे हो राज, समकित व्रत अभ्यास ॥ सो० ॥ २४ ॥ त्रीजे खंडें अगियारमी हो राज, पद्मविजयें कही ढाल ॥ सो० ॥ श्रीजयानंदना रासमां हो राज, सुणतां मंगलमाल ॥२५॥ सो० ॥ २६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मावित्र वचन माने सदा, समकितने सदाधार ॥ विनय करे वीतरा गनो, गुरुभक्तो गुणधार ॥ १ ॥ यौवन आव्युं जेटले, विवाहनी करे वात, इभ्य कन्या एहनें, श्रीदेवी साक्षात ॥२॥ धनेश्वरनें पृथ्वीधर, कन्या केरा तात ॥ श्रीधर यशोधर श्रीपति, वली धनावह विख्यात ॥ ३ ॥ श्रेष्ठी

धन ते सातमा, जिनदास आठमा जाण ॥ दाता ज्ञाता दीपता, ख्याता गु णमणि खाण ॥ ४ ॥ शेठनें नमे सोजागीया, नांखे आवी जाव ॥ पुत्री अम तुम पुत्रनें, आपणनो अभिलाष ॥ ५ ॥ रूपश्रीनें रूपरेखा, पद्माव ती पहेंचाण ॥ पद्मा धनश्री पद्मिणी, वली लखमीनु वखाण ॥ ६ ॥ म दनसिरी लखमीवती, रूपें रति अनुकार ॥ परणवु मानो प्रेमर्छु, अम आ म्रह अनुसार ॥७॥ शेठ कहे तुमें सांजलो, आव्या तुमें अम धाम ॥ कन्या उद्देशी कह्यो, मान्य विशेषें आम ॥ ८ ॥ पंथीनें जोजन परें, तेणें मानी तुम वात ॥ हर्षे लह्या ते होंशथी, उत्सवें घर आयात ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तुमें पीतांबर पहेरोजी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे लगन दिवस निरधारेजी ॥ रंगवधामणां ॥ सहु सज्जन तेडी घर बारेंजी ॥ रं० ॥ निज निज घर उत्सव रंगेंजी ॥ रं० ॥ करे चित्र विचित्र उमगेंजी ॥ रं० ॥ १ ॥ तोरण मम्प रूडा रचीयाजी ॥ रं० ॥ तेतो साव सोनेरी खचीयाजी ॥ रं० ॥ पापड वडीयो देवायजी ॥ रं० ॥ पक्वान्न विवि ध केलवायजी ॥ रं० ॥ २ ॥ कंचन मणि घाट घडायजी ॥ रं० ॥ वस्त्र विवि ध प्रकार शिवडायजी ॥ रं० ॥ सोपारी पत्र मगावेजी ॥ रं० ॥ वेदिका व ली जवहरा वावेजी ॥ रं० ॥ ३ ॥ रूडु माहिरुं चोरी बधावेजी ॥ रं० ॥ वली धवल मंगल गवरावेजी ॥ रं० ॥ एम विवाह सामग्री कीधीजी ॥ रं० ॥ निमित्तिये वेला जली दीधीजी ॥ रं० ॥ ४ ॥ वरघोडे कुंवर चढियाजी ॥ रं० ॥ ठाम ठाम दान देवा जिडियाजी ॥ रं० ॥ मलियुं साजन बहु स गेंजी ॥ रं० ॥ सांबेला बहु उछरंगेंजी ॥ रं० ॥ ५ ॥ लामणदीवो माता हाथेंजी ॥ रं० ॥ जानणी गीत गाये साथेजी ॥ रं० ॥ कन्या आठे सम कालेंजी ॥ रं० ॥ करपीडन कर्यु तेणें तालेंजी ॥ रं० ॥ ६ ॥ मणि कनक नें रयणें जडियाजी ॥ रं० ॥ जाणे स्वर्गमांहे ते घडियाजी ॥ रं० ॥ सस रा सहुये मली आपेजी ॥ लखमीपुंज कुमार पुर थापेजी ॥ रं० ॥ ७ ॥ तारुण्य वय इह समानजी ॥ रं० ॥ शचीसम आठर्छु गुनवानजी ॥ रं० ॥ जोग जोगवे अतिय रसालाजी ॥ रं० ॥ निज तात पसाय विशालाजी ॥ ॥ रं० ॥ ८ ॥ कांय चिंता नहीं घरजारजी ॥ रं० ॥ पण धर्म न पामे हा रजी ॥ रं० ॥ श्रावकनु लक्षण एहजी ॥ रं० ॥ एम जीवमां धर्म धरेहजी ॥ रं० ॥ ए ॥ यत ॥ सामग्गि अजावेवि हु, वसणेवि दुहेवि तह कुसगे

वि ॥ जस्स न हायइ धम्मो, निच्चयउं जाण तं सहं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ पूर
व पुण्यनें सुपसायजी ॥ रं० ॥ सघले ते सुखिया थायजी ॥ रं० ॥ एम ना
ग्यवत गुणवतोजी ॥ रं० ॥ जिनधर्म उपर दृढचित्तोजी ॥ रं० ॥ १० ॥
चाकर पण धर्मी देखीजी ॥ रं० ॥ धर्मी थया सर्व उवेखीजी ॥ रं० ॥ न
वि करे पराजव कोईजी ॥ रं० ॥ जस पुण्यप्रकृति दृढ होईजी ॥र०॥११॥
जेम वेलडी वृक्षने वलगे जी ॥ रं० ॥ जेम सरिता सायर सलगेजी ॥रं०॥
तेम लखमी स्वयंवरा आवेजी ॥ र०॥ अनुरक्त थई स्थिर थावेजी ॥ रं०॥
॥ १२ ॥ मणिमत्रनें चूरण जोगेंजी ॥ रं० ॥ जिम वश करियें कोइ लो
गेंजी ॥ र० ॥ जेम राशें बांधी राखेजी ॥ र० ॥ तेम लखमी न छूटे सरास्वेंजी
॥ रं० ॥ १३ ॥ अगें जोग सुपात्रें दानजी ॥रं०॥ बहुजननें खानने पानजी
॥ र० ॥ सज्जन वाणोतर कामेंजी ॥ रं० ॥ आवे वली धर्म पण पामेजी
॥ रं० ॥ १४ ॥ यत ॥ गृहकूपी कृपणानां, लक्ष्मीर्व्यवहारिणां नगरवापी ॥
व्यापारिणां च सरसी, तरंगिणीव क्षितीशानाम् ॥१॥ सा लक्ष्मीर्या धर्मकर्मो
पयुक्ता, सा लक्ष्मीर्या बंधुवर्गोपयुक्ता ॥ सा लक्ष्मीर्या स्वांगजोगप्रसक्ता, याऽ
न्या मान्या सा तु लक्ष्मीरलक्ष्मी ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ पुत्रनु पुण्य शेठ हवे जा
णीजी ॥ रं० ॥ दानादिक करे मन आणीजी ॥ र० ॥ व्यापार करे नें करा
वेजी ॥ रं० ॥ कोडघो गमे लाज तिहां आवेजी ॥ रं० ॥ १५ ॥ एम धर्म सा
धन करी शेठजी ॥र०॥ सौधर्मे सुर थया तेठजी ॥ रं०॥ माता पण गृहिधर्म
पालीजी ॥ रं० ॥ स्वर्गे गइ धर्म अजुवालीजी ॥ रं० ॥ १६ ॥ तेहनें मरणें
पण बाधेजी ॥ रं० ॥ सुख यश स्त्री सुख नवि वाधेजी ॥ रं० ॥ सुत महत्त्व
प्रमुख नवि उंगांजी ॥ रं० ॥ सतने केम होय ते गोगांजी ॥ रं० ॥ १७ ॥
पाछली रातें एक दिनजी ॥ रं० ॥ धर्म ध्यानमां तत्पर मन्नजी ॥ रं० ॥ केम
लखमी जनमथी पाम्योजी ॥ रं० ॥ नवि खूटे दुःख सवि वाम्योजी ॥ रं०॥
॥ १८ ॥ एम चिंतवतां एक देवजी ॥ रं० ॥ परगट थयो करतो सेवजी ॥
॥ रं० ॥ संशय छेदननें नाणीजी ॥ र० ॥ मन चिंते ए कोण प्राणीजी ॥
॥ र० ॥ १९ ॥ देव दानव के जोगींद्रजी ॥ र० ॥ खेचरपतिनें योगींद्रजी ॥
॥ र० ॥ मन माने ते हो एहजी ॥ रं० ॥ पण तेजस्वी गुणी देहजी ॥र०॥
॥ २० ॥ निजघरें शत्रु जो आवेजी ॥ र० ॥ पण पूजवा योग्य ते थावेजी
॥ र० ॥ तेम एहना गुण नवि जाणुंजी ॥ र० ॥ पण मणिपरें पूजन टाणु

जी॥ रं० ॥ २१ ॥ विनयें करी करे परणामजी ॥ रं० ॥ तुमें कोणनें आव्या डो कामजी ॥ रं० ॥ किहांथी तुमें आव्या स्वामीजी ॥ रं० ॥ ते चिंते सुर विनय न खामीजी ॥ रं० ॥ २२ ॥ कहे हुं बु देवता जाणो जी ॥ रं० ॥ पूर्वस्नेह रज्जु बंधाणोजी ॥ रं० ॥ मुज थानकथी इहां आव्योजी ॥ रं० ॥ तुज संशय मुज मन नाव्योजी ॥ रं० ॥ २३ ॥ ते टा लवा हुं इहां आयोजी ॥ रं० ॥ कहुं ते सांनल सुखदायोजी ॥ रं०॥ बा रमी कही त्रीजे खमेंजी ॥ रं०॥ ढाल पद्मे रंग अखमेंजी ॥रं०॥२४॥३९७॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबूनरतार्द्धे जाणीयें, मध्यखंमें मणिपूर ॥ नगरें श्रीपाल नरपति, डुशमन कीधा दूर ॥ १ ॥ धन्य वसे तिहां धनपति, नामें सारथवाह ॥ प्रीतिमती सति तस प्रिया,अगें धरे उन्नाह ॥ २ ॥ सूत्राम नामें सुत नलो, गुणधर गिरुड जेह ॥ कला बहोंतेर केलवे, यौवन पाम्यो जेह ॥ ३ ॥ शेवनी कन्या सामटी, उत्सव करी अपार ॥ परणावे तेहनो पिता, सुख नोगवे श्रीकार ॥ ४ ॥ विविध प्रकारें व्यवहरे, उपराजे बहु आथ ॥ क्रीडा करवा एकदा, सजिउं मित्र लेइ साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नणदल बिंदलि दे ॥ ए देशी ॥

॥वनमां सूरीश्वर देखे, क्रीडा करतां शुनवेषें हो ॥ नवियण मुनि वंदो ॥ मुनि अध्यवसाय शुन ध्यान, चारण मुनिनें चार ज्ञान हो ॥ न० ॥१॥ नइनें मुनि चरणे वंदे, मुनि निरखी मन आणंदे हो ॥ न० ॥ धर्मलान दिये मुनि तास, नडक जाणी सुविलास हो ॥ न० ॥ २॥ अणुव्रत पांचे विस्तारें, सर्वविरति कहे सुप्रकारें हो ॥ न० ॥ दृष्टांतनें फल देखावे, ते कु मर सुणे शुननावें हो ॥ न० ॥ ३ ॥ समकित करे अंगीकार, करे अन क्ष तणो परिहार हो ॥ न० ॥ निज उचित अनंतकाय वारे, वली अदत्त आदान व्रत धारे हो ॥ न० ॥ ४ ॥ सुविशेषें निरतिचार, वली पूढे तास विचार हो ॥ न० ॥ मुनि कहे सांनल तुं नाई, ए व्रतनी वात उराई हो ॥ न० ॥ ५ ॥ मणिनें तृण जे पर केरुं, अण आप्युं न लीजें अनेरुं हो ॥ न० ॥ मुनि त्रिविध त्रिविध व्रत पाले, गृही डुविध त्रिविध संनाले हो ॥ न० ॥ ६ ॥ बीजा पण बहु ढे नेद, पण कायर पुरुषना वेद हो ॥ न० ॥ जे नेदें आवश्यु जेहनें, ते पाली सुख लह्यां तेहनें हो ॥ न० ॥

॥ ७ ॥ वली जेणें विराध्युं एह, जवसायर जमिया तेह हो ॥ ज० ॥ वध बंधन पीडा पामे, दुःखी दरिद्री होये गाम गामें हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ दुर्गति दुःखनो नही पार, सिद्ध लोक विनाशणहार हो ॥ ज० ॥ एम जाणी अदत्त न लीजें, तो जगतजनें पूजीजें हो ॥ ज० ॥ ए ॥ आराधे उजय लोक साधे, दिन दिन दोलत बहु वाधे हो ॥ ज० ॥ व्रतथी न चले जेम मेरु, तस जस होय जगत घणेरु हो ॥ ज० ॥ १० ॥ तेजस्वीमां ते रवि जेम, सौम्यमां हिमरश्मि नेम हो ॥ ज० ॥ एम जाणी व्रत तुमें पालो, मत कोई कारणें करो टालो हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ करी तहत्ति आव्या निज धाम, गुरु प्रणमी आतमराम हो ॥ ज० ॥ त्रणे पुरुषारथ साधतो, धर्मार्थे काम अवाधतो हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ लखमी बहु छे पण जाणे, परखुं निज जाग्य ए टाणे हो ॥ ज० ॥ माय ताय प्रिया परिवार, पूछीनें थाये तैय्यार हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ करियाणु लेई दूरदेश, गयो लाजनो धरी उद्देश हो ॥ ज० ॥ पृथिवी प्रतिष्ठपुर तेह, जेटणां जलां नृपनें देह हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ नृप आणथी जाडे गेह, लेई पण्य उतारे तेह हो ॥ ज० ॥ परिवारथी देव गुरु पूजे, नित्य नित्य ते धर्में न मूंजे हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ वाणोतर लोकने आगें, धर्म उपदेशे धर्मरागें हो ॥ ज० ॥ व्यापार करेनें करावे, न्याय मारगें सहु वरतावे हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ व्यवहार शुद्धि तो पावे, न्यूनाधिक तोल टलावे हो ॥ ज० ॥ चोरे आण्यु जेह न लेवे, चोरनें नवि धन कांइ देवे हो ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ न करे जेल सजेल कांय, नृपवैरीदेशें न जाय हो ॥ ज० ॥ ए पांच अतिचार वर्जे, तो सुखमां धन बहु अर्जे हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ तेम करतो पाम्यो प्रसिद्धि, महिमा घणो लह्यो बहु ऋद्धि हो ॥ ज० ॥ नृपनें अतिशय वश कीधो, शासन उन्नति यश लीधो हो ॥ ज० ॥ १ए ॥ हवे तातें तेडाव्यो ज्यारें, नरपति आणा लही त्यारें हो ॥ ज० ॥ पूर्वे निज साथ मोकलियो, पूठें पोतें नीकलियो हो ॥ ज० ॥ २० ॥ तुरगें हवे थइ असवार, वेगें चाल्यो गुणवार हो ॥ ज० ॥ उलघे पुरनें ग्राम, एकदिन वसीयो कोइ गाम हो ॥ ज० ॥ २१ ॥ आगल जाये एकदिन्न, अटवीमां दूर आसन्न हो ॥ ज० ॥ रमणिक दोय कुंमल दीठां, अश्व उपरथी उद्धिठां हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ जेम सूर्यथी दृष्टि सकेसे, तेम नवि जुवे आगल सेषें हो ॥ ज० ॥ दीठी आगें मणिमाला, उंमे रज्जुपरें ततकाला हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ मणिरत्न

सुवर्ण नरीयो, कुन देखी आगें संचरियो हो ॥ न० ॥ जाणे उपल नखा जेम होय, तेम दृष्टि न देवे सोय हो ॥ न० ॥ २४ ॥ मन चिंतवे माहरे आगें, केम आवे ए त्रण मुज मागे हो ॥ न० ॥ अथवा शी चिंत ए माहा रे, पण विस्मय चित्तमां धारे हो ॥ न०॥ २५ ॥ धन्य एहनी मातनें तात, जे पाले व्रत साक्षात हो ॥ न० ॥ कारण मले मन न मगायो, ए केणि परें जाय ठगायो हो ॥ न० ॥ २६ ॥ खम त्रीजे तेरमी ढाल, पद्मविजय कही सुरसाल हो ॥ न० ॥ एम सांजली व्रत तुमें पालो, जेम होवे मंगल मालो हो ॥ न० ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ततक्षण थाको तुरंग ते, चाले नही ते चाल ॥ उतरियो तव अश्वथी, आ शुं चिंते अकाल ॥ १ ॥ चिंतवतां एम चित्तमां, प्राण गया परें प्राय, दिलगीर थयो देखी करी, शुं ए अश्वनें थाय ॥ २ ॥ केम ए तरपें आक लो, अथवा मूर्छा एह ॥ मरण लह्यो अथ मुजनें, कोइ न खबर करेह ॥ ३ ॥ देव कुड कोइ दाखीयें, अथवा मानु एम ॥ देव शरापें डुखीयो, कहो अकालें ए केम ॥४॥ वक्रवदन वाल्हीक ए,स्वामी जक्त सुजाण ॥ चित्त अभिप्रायें चालतो, कर्णकुश केकाण ॥५॥ मार्गे सखायी नें मृड, मांसलमध्य संस्थान ॥ ऋद्धिदाता रणमां रहे, वारु करे व्याख्यान ॥६॥ माहरी अपेक्षा मूकीनें,आ वेला थयो एम ॥ अश्व विना हवे आगलें,कहोनें चलियें केम ॥७॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जाव श्रावकना जाखीयें ॥ ए देशी ॥

॥ पंथी वैद्य कोइ मले, करे औषधें करी उपकार रे, दातार रे, जीवनुं जाणु ते सही ए ॥ १ ॥ आपु धन तेहने बहु, एम करी इत उत ते जोवे रे, होवे रे, एम करतां वेला घणी ए ॥ २ ॥ पण नवि पंथी को आवियो, पण फिरतां तरप ते लागी रे, शक्ति जांगी रे, तो पण नमतो नवि रहे ए ॥ ३ ॥ शुद्धि न लाधी वैद्यनी, नवि लाधु खोलतां पाणी रे, थाक आणी रे, वेगे गोहि तरुतलें ए ॥ ४ ॥ एणे समे मसक पाणी जरी, शाखा अवलंबित तेह रे, जेह रे, गलती जलने बिंडुयें ए ॥ ५ ॥ कोणें ए नीर ज री ठवी, गयो किहां कहो एहनो स्वामी रे, शिर नामी रे, मागीनें जल पीजीयें ए ॥ ६ ॥ तरप टालु एम चिंतवी, जोता न जड्यो कोय रे, तव जोय रे, शाखायें वेगो सूहलो ए ॥ ७ ॥ नरजापायें ते वदे, ताहरे इंगितनें

आकारें रे, जाणुं प्यारें रे, तरष्यो बे तु अतिघणो ए ॥ ७ ॥ पाणी देखे पण नवि पीये, कहे कारण मुजनें तास रे, मुज वास रे, इणहिज वृक्ष मांही अबे ए ॥ ए ॥ तु अमचो बे प्राहुणो, वली गुणवतमां शिरदार रे, आकार रे, देखी ताहरो जाखीयें ए ॥ १० ॥ घर आव्यो ते सहु पूजीयें, वली तुज सरिखा सुविशेष रे, तु देखी रे, जक्ति करु हु ताहरी ए॥ ११ ॥ जेहनु हो तेहनुं होय जो. ए पाणी पी नि शक रे, इहां वक रे, लेश मात्र नहीं ताहरो ए॥ १२ ॥ माहरे थानक ए जल अबे, तेणें आणा आपु रगें रे, वहुरगें रे, तरष टालो जल पी करी ए ॥ १३ ॥ तरष्यां धर्म न होयशे, वलहु थाय आर्त्त ध्यान रे, लावो ज्ञान रे, पबी व्रत दृढपणे पालजो ए ॥१४॥ यत ॥ सवड सजम स,जमाउ अप्पाणमेव रस्किज्जा ॥ मुच्चइ अइवायाउ, पुणो विसोही तया विरई ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कहे कुंअर सुण सूडला, तु तत्त्वनी वात न जाणे रे, मुज आणे रे, हित पण सांज ल वातडी ए ॥ १५ ॥ मसकनें जल ताहरु नहीं, आणा दीये जे होय स्वामी रे, सुखकामी रे, ते लिये तस दूषण नहीं ए ॥ १६ ॥ जेह अदत्त लीये नही, इह परजव सपदा पामे रे, डु खगामें रें, होय अदत्त जे आद रे ए ॥ १७ ॥ सुख यश लखमी लहे नहीं, वात धर्म तणी रहे दूरें रे, सपूरें रे, डुर्गति डु ख पामे सही ए ॥ १७ ॥ एक वार लीये अदत्त जो, तो जन्मनी कीर्त्ति हारे रे, प्यारें रे, आपे जल ते नवि लेव ए ॥ १ए॥ प्राणांतें पण नवि पीशुं, तरषें मरण एकवार रे, पीशुं वारि रे, मरण अनत लहु अदत्तथी ए ॥ २० ॥ स्थिरता मन वच कायथी, सांजली शुक अदृश थाय रे, तव आय रे, एक पुरुष अणचितव्यो ए ॥ २१ ॥ सत्यप्रतिज्ञावत तु, तुजनें हो परणाम रे, सत्त्वधाम रे, व्रतमां दृढ तु एक बे ए ॥ २२ ॥ एम प्रशसा सांजली, कुमर वदे एम वाणी रे, गुणखाणी रे, तुमें गुण अनुमोदनथकी ए ॥ २३ ॥ पण तुमने पूबु अमो, तुम चरित्र घणु चित्रकारी रे, अवधारी रे, कहो तुमें कोण केम आवीया ए॥ ॥ २४ ॥ ते कहे सांजलो वातडी, वैताढ्यें विपुला नयरी रे, जितवयरी रे, चडविद्याधर राजीयो ए॥ २५॥ त्रीजे स्वर्गे चौवमी, ढाल अधिक उल्लासें रें, सुविलासें रे, पद्मविजय जांखी मुदा ए ॥ २६ ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विशद नाम विद्याधरु, तेह नगरमां ताम ॥ रमणीरूपें रूअडी, मणिमाला अभिराम ॥ १ ॥ सुत तेहनो सूरय अछुं, कला ग्रही में काल ॥ शास्त्र नण्यो हुं समजणें, काढु हवें काल ॥ २ ॥ विद्या विविध प्रकारनी, आपे पिता अनूप ॥ साधनथी विद्या सवे, साधु सिद्धसरूप ॥३॥ फरतो पृथिवीमां फरु, विविध क्रीडा वनमांहि ॥ विद्या बलें वारु परें, आणी अंग उत्साहि ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन हो तिहां एक दिन सांभले कान, देशना हो भली देशना विमल सूरिकनेजी ॥ बूझ्या हो मुज बूझ्या भली परें तात, दीक्षा हो लिये दीक्षा राज्य तजी मनेंजी ॥१॥ शिक्षा हो बिहुं शिक्षा ग्रहे गुरु पास,तपथी हो वली तपथी लब्धि लहे घणीजी ॥ अतिशय हो श्रुत अतिशय गुरुथी पामि,परिसह हो खमे परिसह खमे अप्रमत्त मुणीजी ॥२॥ पाम्या हो क्रमें पाम्या सूरिपद खास,चारित्र हो धरे चारित्र समिति सगथीजी ॥ पाम्या हो रुषि पाम्या ते पंच नाण,बूझवे हो भवि बूझवे विचरे रंगथीजी ॥३॥ वसतो हो घर वसतो हु करु राज्य,चोरी हो शिख्यो चोरी हु शिख्यो कुसगथीजी ॥ लावु हो धन लावु अनर्गल ताम,नित्य नित्य हो एम नित्य नित्य विद्या अनगथीजी ॥४॥ भूचर हो नृप भूचरनु हरु द्रव्य, क्रूरता हो थइ क्रूरता मनमां आकरीजी ॥ बीजा हो बहु दोष आव्या निज अंग,सन्मति हो गुण सत्य गया मूकी करीजी ॥५॥ भाग्यें हो मुज भाग्यें प्रेक्षा ताम,आव्या हो रुषि आव्या विशदसूरीसरूजी ॥ जाणी हो गयो जाणी विद्याधर साथ,महोत्सवें हो घणे महोत्सवें प्रणम्या जनक गुरुजी ॥६॥ स्तवीया हो सुणी स्तवीया सुणी उपदेश, समकित हो सुख समकितसुख लह्या जन घणाजी ॥ निजनिज हो सहु निजनिज थानक जाय,हितनी हो मुज हितनी नहीं कांइ मणाजी ॥७॥ शिक्षा हो मुज शिक्षा बहु प्रकार,देई हो मुज देई त्रीजु व्रत आपियुजी ॥ चोरी हो भवि चोरी न करवी कोय,पूज्यें हो विधा पूज्यें मुज दुःख कापियुजी॥ ८ ॥ दीधो हो मुज दीधो तुज दृष्टांत, करवा हो मुज करवा दृढता कारणेंजी ॥ बिहु भव हो हित बिहु भव जाणी हेत,आदर्यु हो व्रत आदर्युं दुःख निवारणेंजी ॥९॥ चिंतव्यु हो में चिंतव्यु परखु तेह, जोउ हो वली

जोय आकार आचारनेजी ॥ दढता हो व्रते दढता जोउ तास, जेहना हो गुरु जेहना वखाणे व्यापारनें जी ॥१०॥ तेणें में हो तुज तेणें परीक्षा कीध, कुमल हो थार्दं कुमल प्रमुखनी जाणजेजी ॥ अश्व हो कह्यो अश्व ते अति शय मद, करणी हो माहारी करणी बीजानी मथ्थाणजेजी ॥११॥ पाणी हो तुमें पाणी न पीधु रेख,तरष्यां हो तुमे तरष्यां पण अचरिज कछु जी ॥ साची हो एह साची प्रतिज्ञा तुज्झ, कनक हो परें कनक परें व्रत तुमें धयुजी ॥१२॥ गुरुनी हो इहां गुरुनी मलि सवि वात, मिछामि हो तुज मिछामि दुक्कड दु देउजी ॥ तूठो हो तुज तूठो मागो कांय,आपी हो मुज आपी जनमनुं फल लेउ जी ॥१३॥ पठित हो सिद्धिपठित सिद्धि दिये ताम, गगन हो गामी गगनगामिनी विद्या वली जी ॥ बीजी हो घणी बीजी वियाउ अनेक, आपी हो हवे आपी धन आपे वलीजी ॥१४॥ पूछे हो तव पूछे सारथवाह, केहनुं हो ए केहनु वित्त छे ते कहो जी ॥ खेचर हो कहे खेचर कांयक मुज्झ, कांइक हो वली कांइक पारकु ए लहो जी ॥ १५ ॥ सांभली हो कहे सांभली सारथवाह, निवित हो कहो निवित वात केणी परें जी ॥ धर्मेनी हो कहो धर्मेनी एक तो वात, बीजु हो दियो बीजु अदत्त एणी परें जी ॥ १६ ॥ चोरीयें हो आव्यु चोरीयें शुद्ध पण एह, अशुद्ध हो घणु अशुद्ध मविरायें जल यथाजी ॥ धर्म हो लह्या धर्म जो तातनी पास, मूको हो तुमें मूको लाव्या तिम तथाजी ॥ १७ ॥ जाणो हो जेहनु जाणो सांभरें जेह, वावसु हो अथ अणवावसु ते आपीयें जी ॥ तिणथी हो थाय तिणथी बहु जस वाद, पुण्यनो हो वली पुण्यनो सचय थापीयेंजी ॥१८॥ सांभली हो तव सांभली सार्थप वाणि, कीधु हो तव कीधु जेह सवे कर्युंजी ॥ साजो हो थयो साजो अश्व तेणी वार, खेचर हो धन खेचर दीये ते नवि लह्युं जी ॥ १९ ॥ साखें हो तस साखें कधु धर्मगाम, पण ते हो कोइ पण ते नवि राख्युं तदाजी ॥ पोहोता हो ते पोहोता निजनिज गाम, वरते हो तुं वरते धर्ममांहे सदाजी ॥ २० ॥ वावरे हो धन वावरे साते क्षेत्र, दीनने हो दीये दीन अनाथनें सपदाजी ॥ पाले हो व्रत पाले निरतिचार, टाले हो वली टाले लोकनी आपदा जी ॥ २१ ॥ मेरु हो वली मेरुनें गिरनार, सिद्धगिरि हो वली सिद्धगिरि नदीश्वर करेजी ॥ जात्रा हो करे जात्रा तीरथनी एम, गगनें हो जाय गगनें विद्याधर परेंजी ॥ २२ ॥ उत्सव हो करे उत्सव पू

जा गीत, सफलो हो करे सफलो मानव नव तिहां जी ॥ धर्म हो करी धर्म दानादिक चार, कपन्यो हो तुं कपन्यो आयु क्षयें इहां जी ॥ २३ ॥ त्रीजे हो खंमें त्रीजे पन्नरमी ढाल, नांखी हो श्रीनांखी श्रीजयानंदराममां जी ॥ उत्तम हो गुरु उत्तमविजय पसाय, पदमें हो नांखी पद्मविजयें उल्ला समां जी ॥२४॥ सर्वगाथा ॥ ४७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर गुरु वाणीथी, पाली धर्म प्रपंच ॥ आयुक्षयें तिहां कप न्यो, सुर महाऋद्धिनो संच ॥ १ ॥ व्यंतर पल्य आयु वडो, देवता थयो दयाल ॥ पूरवनव व्रत पालिनें, तु निरिवत रसाल ॥ २ ॥ तुक्क जनमथी तादरे, घर लखमी घणी होय ॥ पूरवनव कृत पुख्यना, योगथी सघलुं जोय ॥ ३ ॥ धर्मस्नेह पूरव धरी, आव्यो तुज घर आप ॥ लखमी पूरुं लख गमे, मोजथकी विण माप ॥ ४ ॥ अधिपति व्यतरनो अछु, आव्यो ए कहेवा आज ॥ आनूषण वस्त्र आपिनें, स्वघर गयो सुरराज ॥ ५ ॥ हरख्यो लखमीपुज हवे, जाति समरण जात ॥ सुर कह्युं जाणी साचलु, धर्में दृढ थई धात ॥ ६ ॥ दान अनर्गल देयतो, सुख नोगवे सुरसाल ॥ सांनली एकदिन देशना, लह्यो वेराग विशाल ॥ ७ ॥ गुरु पासें दीक्षा ग्र ही, उत्सव करी अपार ॥ अग नएया अगीयार ते, तप वली बहु तपना र ॥ ८ ॥ चोखु पाली चरण ते, अणसण विधें आराधि ॥ देवलोक बार में देवता, बावीश अयर अबाधि ॥ ९ ॥ नोगवी आवखु सुरनवें, नृप थ यो नरनव पाम ॥ केवलज्ञान लही करी, विचरे नवि विश्राम ॥ १० ॥ सिद्धि वरे सुख शाश्वता, ए धारी अवदात ॥ बीजुं व्रत पालो तुमें, सहु लहो जिम सुख शात ॥ ११ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥ मुजरो ल्योनें जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ सांनली रतिमाला जे कुमर कह्यु, लखमीपुज दृष्टांत ॥ बूजी अद त्तादान निषेधती, अदत्त न लेव एकांत ॥ १ ॥ व्रत एम पालो नविक सोहामणु ॥ ए आंकणी ॥ श्रावक धर्म तिहां अंगी करे, हवे साधर्मिक थाय ॥ त्रिहु जण प्रीतें सुखमांहे रहे, धर्में काल गमाय ॥ व्र० ॥ २ ॥ राति समय एकदिन सूतां थकां, देखे सुपन कुमार ॥ कोइक नगरें पर्वत कूकडो, निकुनो अवतार ॥ व्र० ॥ ३ ॥ काष्ठ नार कपाडयो मस्तकें, कु

रूपी शिरदार ॥ चोटामां कनो एम देखीनें, जाग्यो तेह कुमार ॥ व्र० ॥४॥ मन चिंते ए सुपननुं फल किश्युं, वात असंभव एह ॥ जमणुं लोचन फरक्युं तेणे समे, सुपननी साख पूरेह ॥ व्र० ॥ ५ ॥ चिंतवी तास उपाय विचारीनें, मोहोटो पट एक कीध ॥ स्वप्न दीठुं जिम नगरादिक तणुं, तेम आलेखावी लीध ॥ व्र० ॥ ६ ॥ क्रीडा परवत वाव्य सरोवर, चहुटा हाटनें गेह ॥ नव नव रंगें चित्रित पट थयो, मनोहर अतिशय एह ॥ व्र० ॥ ७ ॥ तेह नगरनां बाह्य उद्यानमां, चैत्य ते रूषभ जिणंद ॥ तेहना द्वारने मल्तु वारण, शत्रुसालकरंद ॥ व्र० ॥ ८ ॥ तस आगल एक पीठ करावतो, तेडी वर सूत्रधार ॥ दानशाला मंमावी तिहां कणे, दीन अनाथ उद्धार ॥ ॥ व्र० ॥ ए ॥ चाकर मूक्या तास जिमाडवा, सेवक दक्ष वली जेह ॥ पट विस्तार देखाडे लोकनें, जूवे अति ससनेह ॥ व्र० ॥ १० ॥ जे जूवे दृष्टि करी स्थिर तेहनें, कहे नगरादिक नाम ॥ ते मुजनें मेलवजो पुरुषनें, पट जालवज्यो सुगाम ॥ व्र० ॥ ११ ॥ ते पण सेवक कह्युं तिमहिज करे, वर्णव करे सहु लोक ॥ देहरे आवे ते सहु देखता, मलि मलि थोकें थोक ॥व्र०॥१२॥ एक दिन पंथी आव्या दूरथी, धूलें खरडित देह ॥देखी पटने विस्मय पामिया, अहो केणे चितर्यो एह ॥ व्र० ॥ १३ ॥ पटने जोइ जोइ आनंद हुवे घणो, सुंदर शोभागेह ॥ अमचुं नगर वसुं अमें एहमां, नामें पद्मपुर जेह ॥ व्र० ॥ १४ ॥ पटपालक कहे आव्या किहांथकी, कोण तुमें किहां वास ॥ ते कहे पद्मपुरथी आविया, लाव्या ते कुमरनें पास ॥ व्र० ॥ १५ ॥ कुमरें वात सुणी तस मुखथकी, संतोष्या भली रीति ॥ कुमर पूछे फरी तास स्वरूपनें, ते पण कहे धरी प्रीति ॥ व्र० ॥ ॥ १६ ॥ शो योजन ते नगर इहांथकी, पद्मकूटगिरि पास ॥ राजा पद्मरथ तिहां राजियो, कोइ न जोडी छे तास ॥ व्र० ॥ १७ ॥ रूप ऐश्वर्यें जींते इंद्रनें, चइ उज्ज्वल गुण जास ॥ पण ते नास्तिक धर्मी आकरो, चइ कलंक परें तास ॥ व्र० ॥ १८ ॥ सांभली कुमरें तास विसर्जिया, देई इच्छित दान ॥ तिण नगरी जावानुं चित्त धरी, नारीनें कहे सावधान ॥ ॥ व्र० ॥ १ए ॥ तीरथ नमीनें आवुं जिहां लगें, रहेजो मातानी पास ॥ अड पुर धननुं दान देजो सदा, करजो कलानो अभ्यास ॥ व्र० ॥ २० ॥ खेद लही पण आणा पालवी, एह पतिव्रताधर्म ॥ मान्युं तव ते बेसी

ढोलीये, गगनें चाल्यो सुशर्म ॥ व्र० ॥ २१ ॥ पद्मकूट गिरि पोहोतो रंग
छुं, त्रीजे खंमें रे ढाल ॥ पद्मविजयें रंगें कही सोलमी, सुणो हवे वात
रसाल॥ व्र० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ५२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पल्यंक तिहां एक गोपवी, रूप करे कुरूप ॥ जिल्ल काष्ठ जारो धरी,
चाल्यो मन धरी चूंप ॥ १ ॥ पद्मपुरमां पाधरो, आव्यो चहुटे आप ॥ वे
चण कजो वेगछुं, पण मनु मूरति पाप ॥ २ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ कर्म न बूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ राजपुरुष तिहां आविया, देखे जिल्लनें ताम ॥ कुतल पीत जाडा घ
णुं, होत लांवा वली श्याम ॥ १ ॥ कर्म न बूटे रे आतमा ॥ ए आंक
णी ॥ मस्तक कडाह तलिया समुं, दतुरनें स्थूल पाय ॥ आंख्यो पीलीनें
श्यामलो, नाक चिपुट वेसी जाय ॥ क० ॥ २ ॥ स्थूल नसाजाल देखीयें,
कंकाल नैरव रूप ॥ कुलक्षण सवि अगनां, मानु पिशाच सरूप ॥ क० ॥
॥३॥ वींटी माथे रे वेलडी, वस्त्र ते कोपीन एक ॥ देखी थु थु करे सवे, बो
ले एणी परें ठेक ॥ क० ॥ ४ ॥ बोलावे तुज नृपति, चालो सजा मजार ॥
ते कहे हु किहां राजा किहां, हुं नवि आवुं केवार ॥ क० ॥ ५ ॥ जो तुम
काष्ठनो खप होये, तो ल्यो काष्ठनो जार ॥ पण तिहां हु नवि आवशुं, त
व ते वोले विचार ॥ क० ॥ ६ ॥ बीहीक म कर तुं रे बापडा,राजा करशे
पसाय ॥ तेहनी सार्थे तव चालियो,देखाडयो तेह राय ॥ क० ॥ ७ ॥ जे
टणु काष्ठजारा तणु, करीनें जो किरात ॥ पूछे नृपति एणी परें, कोण
तु किहांथी आयात ॥ क० ॥ ८ ॥ नाम किश्युं तुज किहां वसे, ते कहे
पिवर मुज नाम ॥ पद्मकूटगिरिमां वसु, माहरे रहेवा नहीं धाम ॥ क० ॥
॥ ९ ॥ काष्ठनो जार वेची करी, आजीविका करु स्वामि ॥ नृप कहे ड खि
यो मुज नगरमां, केम तु रहे ठे रे आम ॥ क० ॥ १० ॥ ते कहे तुम पु
र स्वर्ग ज्यु, हु ड खीयो वसु एम ॥ सरोवर पाणी जयु घणु, चातक त
रण्यो रहे नेम ॥ क० ॥ ११ ॥ नृप कहे माग जे जोइयें, ते कहे उदर
नु पूर ॥ काष्ठथकी सुखमां होये, जाग्यथी अधिकु होय दूर ॥ क० ॥
॥ १२ ॥ तुमें तूठा मुज खप नही, चीवर दोलत दाम ॥ पण नही धा
न्यनी रथनी, आपो तो होय काम ॥ क० ॥ १३ ॥ नृप कहे देउं रथनी,

एम कही बोलावे ताम ॥ विजय सुंदरी निज सुता, करे तेहनें नृप आम ॥ ॥ क० ॥ १४ ॥ जिनधर्मे तुज सुख होये, तो जोगवो जोग रसाल ॥ ए तु ज जर्त्ता में आपियो, कर्म फल्यां ततकाल ॥ क० ॥ १५ ॥ एहथी तुजने बहु सुख थशे, तव बोली तेह वाणि ॥ तातनु वचन प्रमाण छे, खेद नहीं इण गण ॥ क० ॥ १६ ॥ कुलस्त्रीनो एह धर्म छे, तातें दीधो जे कंत ॥ जाणे देव तणी परें, आराधे मन सत ॥ क० ॥ १७ ॥ पूरवजवना संबंध थी, जो पण दीठो कुरूप ॥ पण तस प्रेम घणो धरे. निम्न पण तदअनु रूप ॥ क० ॥ १८ ॥ कोइक ज्योतिषी तिहां रह्यो, ज्ञानी कहे एम वात ॥ एह मुहूर्ते परणे जिके, ते होये चक्री विख्यात ॥ क० ॥ १९ ॥ राणी होये ते तेहनी, स्त्रीमां उत्तम नार ॥ एहनी खबर न को पडे, शुं फल होशे ए वार ॥ क० ॥ २०॥ ईर्ष्या कोपथी नृपति, साहस अतिशय धार ॥ राय स ना मांहि एम कहे, सांजलजो निरधार ॥ क० ॥ २१ ॥ वरना वेषनें सारि खो, लावो वधूनो रे वेष ॥ तव ते पुरुष लेवा गया, रायनी आण विशेष ॥ ॥ क० ॥ २२ ॥ वलय लाव्या रे कथीरनां, लोहासणीनु निशाण ॥ कोईक नीचना घरथकी, साडी लाव्या पुराण ॥ क० ॥ २३ ॥ पूरव वेश मूकी करी, नवलो पहेरो ते वेष ॥ निम्न कहे तव रायनें, शी ए वात नरेश ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मणिघंटा नवि सोहियें, रासन्न केरे रे कंठ ॥ काणी कूडी नें सामली, दासी थो योग्य वठ ॥ क० ॥ २५ ॥ कागनें योग्य ते कागडी, हंसली पामे न सोह ॥ निम्न कहे पण रायनें, नवि लागो पडिबोह ॥ ॥ क० ॥ २६ ॥ विजयसुंदरी ए धन्य छे, कीधो नवि मन खेद ॥ एहवी नीड पडे थके, नवि पामी निरवेद ॥ क० ॥ २७ ॥ सत्तरमी त्रीजा खंम मां, पद्मविजय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥ ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपसार रंजातणु, करी धाता लेई केलि ॥ तेहनें पवनसी लघु तु में, निम्न कहे करि मन जेलि ॥ १ ॥ चंद्रमुखी चोशठ कला, पद्मनेत्रापि कराव ॥ धर्मजाण धर्मचारिणी, जाग्यवती जलो जाव ॥ २ ॥ राजहंस गति राजती, रति जीते रूपेण ॥ विनयादिक गुणवंत ए, सोजागी सुस्वरे ण ॥ ३ ॥ निम्न किहां दोजागीयो, कदीयारोनें कुरूप ॥ लक्षण हीण ल

खी मनें, निझनें केम थयो नृप ॥ ४ ॥ खेद लहे बहु परखदा, हा हा ए छु होय॥मत्री कहेएनी नहीं मणा, कहे एणी परें सहु होय ॥ ५ ॥ अ पत्य उपर अति क्रोध थयो, दुःख आगल देनार ॥ विपदा लहियें विरुद्ध थी, नृपति जणे तिवार ॥ ६ ॥ दोष शाने मुज' दाखवो, जैनधर्मिणी जे ह ॥ मंत्री दोष न माहरो, आपें वरियो एह ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी॥ घरें आवो जी आंबो मोहोरीयो ॥ ए देशी ॥

॥ कहे नृपति सांजलो मत्रवी,नरपतिनी रीति छे एह ॥ निज जाग्य प्र माणें पति वरे, साखी मात्र पिता होये जेह ॥ १ ॥ जवि दृष्टिराग तुमें परिहरो, दृष्टिराग अनर्थनो ठाय ॥ दृष्टिरागें नृपति कहे निझनें, में दी धी ते फेर न थाय ॥ ज० ॥ २ ॥ कलावतीशुं सुख जोगव सुखे, तुज सा हेब तूठे जाण ॥ कहे पुत्रीने पंमित माननी, करी कुल आचारनी हाण ॥ ज० ॥ ३ ॥ अवज्ञा पितानी करी घणी, निझ आपें वरियो एह ॥ तेह नां फल जोगवो मोजशुं, करो अरिहंत धर्मशु नेह ॥ ज० ॥ ४ ॥ कहे वि जयसुदरी तातनें, इहां वांक नहीं तुम रेख ॥ सुख दुःख जे जगमां पामीयें, ते कर्म तणा छे विशेष ॥ ज० ॥ ५ ॥ यत ॥ सवो पुव कयाए, कम्माए पावए फल विवाग ॥ अवराहे सुगुणे सुश्र, निमित्त मित्त परो होइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तुम कुल अजुवालीश तातजी, एह जर्त्ता इद्र समान ॥ ते सां जली नृप क्रोधें चढयो, जेम अग्निमां घृत असमान ॥ ज० ॥ ६ ॥ विष जा वित तांबूल आपियु, त्रण पोहोरें अथ ते थाय ॥ जोजन अर्तें निज पुत्री नें, वरनें दीधु सुधि जाय॥ ज० ॥ ७ ॥ नृप कहे जाउ निजथानके, सांज ली चाल्यो निज थान ॥ ठायानी परें नृपनदिनी, चाली जरता अनुमान ॥ ज० ॥ ८ ॥ राजा कहे सहुनें सांजलो, जे जाशे एहनी साथ ॥ अथवा धन आपशे एहने, तो मारीश तेहनें हाथ ॥ ज० ॥ ए ॥ नृपक्रोधथी मौ न करी रह्या, सचिवादिक पुरनां लोक ॥ देवनें उलजो आपता, धरता म नमां अति शोक ॥ ज० ॥ १० ॥ पुर बाहिर आव्यां दपती, देवकुलमां कीध आवास ॥ पतिपद उत्संगें लेइ करी, उछासें निज करें तास ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ ते देखी दूरथी नृप जयें, स्तवना करे नारीनी ताम ॥ नृपनी निं दा करे सहु जना, नृप माहा अधर्मनु धाम ॥ ज०॥ १२ ॥ हवे पूछे नि झ निज नारिने, तु रूपें रंजसमान ॥ केम मुजनें आपी तुज पिता, तव सु

एम कही बोलावे ताम ॥ विजय सुंदरी निज सुता, कहे तेहनें नृप आम ॥ ॥ क० ॥ १४ ॥ जिनधर्मे तुज सुख होये, तो जोगवो जोग रसाल ॥ ए तुज जर्त्ता में आपियो, कर्म फल्यां ततकाल ॥ क० ॥ १५ ॥ एहथी तुजनें बहु सुख थशे, तव बोली तेह वाणि ॥ तातनुं वचन प्रमाण छे, खेद नहीं इण ठाण ॥ क० ॥ १६ ॥ कुलस्त्रीनो एह धर्म छे, तातें दीधो जे कंत ॥ जाणे देव तणी परें, आराधे मन संत ॥ क० ॥ १७ ॥ पूरवजवना संबंधथी, जो पण दीठो कुरूप ॥ पण तस प्रेम घणो धरे, निश्च पण तदनुरूप ॥ क० ॥ १८ ॥ कोइक ज्योतिषी तिहां रह्यो, ज्ञानी कहे एम वात ॥ एह मुहूर्त्ते परणे जिके, ते होये चक्री विख्यात ॥ क० ॥ १९ ॥ राणी होये ते तेहनी, स्त्रीमां उत्तम नार ॥ एहनी खबर न को पडे, शुं फल होशे ए वार ॥ क० ॥ २०॥ ईर्ष्या कोपथी नृपति, साहस अतिशय धार ॥ राय सजा मांहि एम कहे, सांजलजो निरधार ॥ क० ॥ २१ ॥ वरना वेषनें सारिखो, लावो वधूनो रे वेष ॥ तव ते पुरुष लेवा गया, रायनी आण विशेष ॥ ॥ क० ॥ २२ ॥ वलय लाव्या रे कथीरनां, सोहासणीनु निशाण ॥ कोईक नीचना घरथकी, साडी लाव्या पुराण ॥ क० ॥ २३ ॥ पूरव वेश मूकी करी, नवलो पहेरो ते वेष ॥ निश्च कहे तव रायनें, शी ए वात नरेश ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मणिघंटा नवि सोहियें, रासन केरे रे कठ ॥ काणी कूडीनें सामली, दासी यो योग्य वठ ॥ क० ॥ २५ ॥ कागनें योग्य ते कागडी, हंसली पामे न सोह ॥ निश्च कहे पण रायनें, नवि लागो पडिबोह ॥ ॥ क० ॥ २६ ॥ विजयसुंदरी ए धन्य छे, कीधो नवि मन खेद ॥ एहवी नीड पडे थके, नवि पामी निरवेद ॥ क० ॥ २७ ॥ सत्तरमी त्रीजा खंममां, पद्मविजय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥ ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपसार रजातणु, करी धाता लेई केलि ॥ तेहनें पवनसी लघु तुमें, निश्च कहे करि मन जेलि ॥ १ ॥ चउसुखी चोशठ कला, पद्मनेत्रापि कराव ॥ धर्मजाण धर्मचारिणी, जाग्यवती जलो जाव ॥ २ ॥ राजहंसगति राजती, रति जींते रूपेण ॥ विनयादिक गुणवत ए, सोजागी सुस्वरेण ॥ ३ ॥ निश्च किहां दोजागीयो, कठीयारोनें कुरूप ॥ लक्षण हीण ल

दरी तणा ॥ सा० ॥ गुण स्तवे मलि मलि थोक ॥ गु० ॥ ३ ॥ पण वीजी कन्या हर्षे ॥ सा० ॥ पेखे नरपति ताम ॥ गु० ॥ कारण पूछे नृपति ॥ ॥ सा० ॥ हसवु शे थयु आम ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुमरी कहे काइ नही ॥ ॥ सा० ॥ तव आग्रह करे नृप ॥ गु० ॥ विजयसुदरी तव कहे ॥ सा० ॥ सांजलो तात अनूप ॥ गु० ॥ ५ ॥ बृहस्पति जीत्यो बुद्धिथी ॥ सा० ॥ नीति शास्त्रना जाण ॥ गु० ॥ तुमें अति निपुण छो लोकमां ॥ सा० ॥ जगमां अधिक विन्नाण ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुज जगिनी पद सांजली ॥ सा० ॥ मोद लह्या अतिरेक ॥ गु० ॥ तत्त्व न समजे ए सजा ॥ सा० ॥ प्रशसे अविवेक ॥ गु० ॥ ७ ॥ तत्त्व अजाणने आगलें ॥ सा० ॥ जाण ते वर्त्ते केम ॥ गु० ॥ एहवु अचरज देखीने ॥ सा० ॥ मुज हसवु थयु एम ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ॥ सा० ॥ तुमें तत्त्वनां जाण ॥ गु० ॥ पूरो समस्या हवे तुमें ॥ सा० ॥ जोइयें तुम विन्नाण ॥ गु० ॥ ९ ॥ नृप आणा हवे सही करी ॥ सा० ॥ तत्त्ववासित मति जास ॥ गु० ॥ हरखी समस्या पूरती ॥ सा० ॥ जैनागम अन्यास ॥ गु० ॥ १० ॥ दुहो ॥ जिणवर जसु हियडे वसे, जिण मुणि जिण तत्ताइ ॥ ते पम्मिय जिण जन्नय जव, पिस्कइ सुरक सयाइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एह समस्या सांजली ॥ ॥ सा० ॥ पातक पाम्या हर्ष ॥ गु० ॥ सजालोक पण कोइ जना ॥ सा० ॥ हरख्या अति उत्कर्ष ॥ गु० ॥ ११ ॥ पण नृपतिना जयथकी ॥ सा० ॥ मौन करी रह्या तेह ॥ गु० ॥ चमत्कार चित्त पामीया ॥ सा० ॥ अतिशय धरता नेह ॥ गु० ॥ १२ ॥ नृप पूछे सहु लोकनें ॥ सा० ॥ बोलो तुमें सहु साच ॥ गु० ॥ केहनी समस्या तत्त्वनी ॥ सा० ॥ केहनी रूडी वाच ॥ गु० ॥ ॥ १३ ॥ कहे ते आद्य साची कही ॥ सा० ॥ अनुजव सिद्ध ए अर्थ ॥ गु० ॥ विजयसुंदरीनें कहे ॥ सा० ॥ नृपति तें कह्यु व्यर्थ ॥ गु० ॥ १४ ॥ रे कटु जाषिणी तु सुता ॥ सा० ॥ बोले लोक विरुद्ध ॥ गु० ॥ पुत्री वैरिणी जावथी ॥ सा० ॥ एम बोले नृप क्रुद्ध ॥ गु० ॥ १५ ॥ कुमरी कहे में तुम कह्यु ॥ सा० ॥ तत्त्व न जाणे लोक ॥ गु० ॥ हाजी हा सघला करे ॥ सा० ॥ रूडु मनावे फोक ॥ गु० ॥ १६ ॥ कोपें राजा कलकली ॥ सा० ॥ कहे तु कोण पसाय ॥ गु० ॥ सुख जोगवे तव में कह्यु ॥ सा० ॥ कर्मे प्रसादें राय ॥ गु० ॥ १७ ॥ सहुये निज निज कर्मथी ॥ सा० ॥ सुख दुःख लहे

वरी कहे धरी शान ॥ न० ॥ १३ ॥ कहे महोटी कथा ते एहनी, सांजलो पद्मरथ नूपाल ॥ पद्मपुरमां राज्य करे सदा, अरि काल सबल करवाल ॥ न० ॥ १४ ॥ प्रजानें सुखदायी सदा, पण नास्तिक मतमां सोय ॥ राणी दोय अतिशय वालही,पदमा कमला नामें होय ॥ न० ॥ १५ ॥प दमा पतिधर्म ते आचरे, कमला जैन गुरु उपदेश ॥ वली श्रावककुलमां ऊपनी, तेणें जैनधर्म सुविशेष ॥ न० ॥ १६ ॥ पद्म नामें पुत्र पद्मा तणो, जयसुदरी पुत्री एक ॥ कमलानें तो एक पुत्रिका, नामें विजयसुंदरी सुवि वेक ॥ न० ॥ १७ ॥ दोय कुमरी धाव पाली जती, वधतां थइ जणवा यो ग्य ॥ मिथ्यात्वी पाठकनी कनें, पद्मा मूके ते अयोग्य ॥ न० ॥ १८ ॥ जे जै नकलाचारय होय, निज पुत्री कमला मूके ॥ तस पासे शास्त्र अन्यासवा, कांय विनय विवेक न चूके ॥ न० ॥ १९ ॥ जयसुदरी मात सयोगथी, ते म अध्यापक अज्ञान ॥ तेणें कौलधर्मी थइ आकरी, वीजी जैनधर्म वि ज्ञान ॥ न० ॥ २० ॥ ते पाठक विहु तस मातनें, सोंपे लही यौवन वेद ॥ धन आपे अध्यापक प्रत्यें, करे प्रीतिवत गतखेद ॥ न० ॥ २१ ॥ त्रीजे खमें अढारमी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ दृष्टिराग तजो तुमें नविज ना, दृष्टिरागथी बहुजंजाल ॥ न० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ५८२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शणगारी बेंहू सुता, पाठकसुं नृप पास ॥ पिता वरनी चिंतवी, जण वानो अन्यास ॥ १ ॥ जोवा मूके लालवी, माता मनमां आण ॥ पोहोती नरपति पाठले, सकलकला गुन जाण ॥ २ ॥ बेसाडी उत्संग विहु, पूछे पा ठ स्वरूप ॥ पाठक बोलावी पढे, नव नव प्रश्न अनूप ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ साहेलडीयांनी देशी ॥

॥ पूछे नृप निजनंदिनी ॥ साहेलडीयां ॥ पद समस्यानु एक ॥ गुण वे लडीयां ॥ कहे तमें जो निज शास्त्रमां ॥ सा० ॥ मति कीधी होये छेक ॥गु० ॥ १ ॥ (समस्यापद यथा ॥ पेस्कई सुस्क सयाइ) ते जयसुंदरी सांनली ॥ ॥ सा० ॥ तात धरममां जेह ॥ गु० ॥ पद समस्यानु पूरती ॥ सा० ॥ सांन लो आगल तेह ॥ गु० ॥ २ ॥ छुहो ॥ तुह सकर तुह खन निव, तुह पुरि सुत्तम ताय ॥ तुह्न पसाइण सव पया, पेस्कई सुस्क सयाइ ॥१॥ पूर्वढाल॥ सांनली राजा रंजियो ॥ सा० ॥ सहु परखदनां लोक ॥ गु० ॥ पाठकनें सु

दरी तणा ॥ सा० ॥ गुण स्तवे मत्ति मत्ति थोक ॥ गु० ॥ ३ ॥ पण वीजी कन्या हसें ॥ सा० ॥ पेखे नरपति ताम ॥ गु० ॥ कारण पूछे नूपति ॥ ॥ सा० ॥ हसवु शे थयु आम ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुमरी कहे काइ नही ॥ ॥ सा० ॥ तव आग्रह करे नूप ॥ गु० ॥ विजयसुंदरी तव कहे ॥ सा० ॥ सांजलो तात अनूप ॥ गु० ॥ ५ ॥ वृहस्पति जींत्यो बुद्धिथी ॥ सा० ॥ नीति शास्त्रना जाण ॥ गु० ॥ तुमें अति निपुण गो लोकमां ॥ सा० ॥ जगमां अधिक विन्नाण ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुज नगिनी पद सांजली ॥ सा० ॥ मोद लह्या अतिरेक ॥ गु० ॥ तत्त्व न समजे ए सजा ॥ सा० ॥ प्रशंसे अविवेक ॥ गु० ॥ ७ ॥ तत्त्व अजाणने आगलें ॥ सा०॥ जाण ते वर्त्ते केम ॥ गु० ॥ एहवु अचरज देखीने ॥ सा० ॥ मुज हसवु थयु एम ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ॥ सा० ॥ तुमें तत्त्वनां जाण ॥ गु० ॥ पूरो समस्या हवे तुमें ॥ सा० ॥ जोइयें तुम विन्नाण ॥ गु० ॥ ए ॥ नृप आणा हवे सही करी ॥ सा० ॥ तत्त्ववासित मति जास ॥ गु० ॥ हरखी समस्या पूरती ॥ सा० ॥ जैनागम अन्यास ॥ गु० ॥ १० ॥ डुहो ॥ जिणवर जसु हियडे वसे, जिण सुणि जिण तत्ताइ ॥ ते पंमिय जिण ज्ञनय नव, पिरकइ सुरक सयाइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एह समस्या सांजली ॥ ॥ सा० ॥ पाठक पाम्या हर्ष ॥ गु० ॥ सजालोक पण कोइ जना ॥ सा० ॥ हरख्या अति उत्कर्ष ॥ गु० ॥ ११ ॥ पण नूपतिना नयथकी ॥ सा० ॥ मौन करी रह्या तेह ॥ गु० ॥ चमत्कार चित्त पामीया ॥ सा० ॥ अतिशय धरता नेह ॥ गु० ॥ १२ ॥ नूप पूछे सहु लोकनें ॥ सा० ॥ बोलो तुमें सहु साच ॥ गु० ॥ केहनी समस्या तत्त्वनी ॥ सा० ॥ केहनी रूडी वाच ॥गु०॥ ॥ १३ ॥ कहे ते आद्य साची कही ॥ सा० ॥ अनुनव सिद्ध ए अर्थ ॥गु०॥ विजयसुंदरीनें कहे ॥ सा० ॥ नूपति तें कथु व्यर्थ ॥ गु० ॥ १४ ॥ रे कटु नाषिणी तु सुता ॥ सा० ॥ बोले लोक विरुद्ध ॥ गु० ॥ पुत्री वैरिणी नावथी ॥ सा० ॥ एम बोले नृप क्रुद्ध ॥ गु० ॥ १५ ॥ कुमरी कहे में तुम कशु ॥ सा० ॥ तत्त्व न जाणे लोक ॥ गु० ॥ हाजी हा सघला करे ॥सा०॥ रूडु मनावे फोक ॥ गु० ॥ १६ ॥ कोपें राजा कलकली ॥ सा० ॥ कहे तु कोण पसाय ॥ गु० ॥ सुख नोगवे तव में कह्यु ॥ सा० ॥ कर्म प्रसादें राय ॥ गु० ॥ १७ ॥ सहुये निज निज कर्मथी ॥ सा० ॥ सुख डुख लहे

दरी कहे धरी शान ॥ न० ॥ १३ ॥ कहे महोटी कथा ते एहनी, सांजलो पद्मरथ नृपाल ॥ पद्मपुरमा राज्य करे सदा, अरि काल सबल करवाल ॥ न० ॥ १४ ॥ प्रजाने सुखदायी सदा, पण नास्तिक मतमां सोय ॥ राणी दोय अतिशय वालही,पदमा कमला नामें होय ॥ न० ॥ १५ ॥ पदमा पतिधर्म ते आचरे, कमला जैन गुरु उपदेश ॥ वली श्रावककुलमां उपनी, तेणे जैनधर्म सुविशेष ॥ न० ॥ १६ ॥ पद्म नामें पुत्र पद्मा तणो, जयसुंदरी पुत्री एक ॥ कमलानें तो एक पुत्रिका, नामें विजयसुंदरी सुविवेक ॥ न० ॥ १७ ॥ दोय कुमरी धाव पाली जती, वधतां थइ जणवा योग्य ॥ मिथ्यात्वी पाठकनी कने, पद्मा मूके ते अयोग्य ॥ न० ॥ १८ ॥ जे जैनकलाचारय होय, निज पुत्री कमला मूके ॥ तस पासे शास्त्र अन्यासवा, कांय विनय विवेक न चूके ॥ न० ॥ १९ ॥ जयसुंदरी मात सयोगथी, तेम अध्यापक अज्ञान ॥ तेणें कौलधर्मी थइ आकरी, वीजी जैनधर्म विज्ञान ॥ न० ॥ २० ॥ ते पाठक बिहु तस मातनें, सोंपे लही यौवन वेद ॥ धन आपे अध्यापक प्रत्यें, करे प्रीतिवत गतखेद ॥ न० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंडें अढारमी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ दृष्टिराग तजो तुमें जविजना, दृष्टिरागथी बहुजजाल ॥ न० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ५८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शणगारी बेंहू सुता, पाठकसुं नृप पास ॥ पिता वरनी चितवी, जणवानो अन्यास ॥ १ ॥ जोवा मूके जालवी, माता मनमां आण ॥ पोहोती नरपति पाउले, सकलकला गुन जाण ॥ २ ॥ बेसाडी उत्संग बिहु, पूछे पाठ स्वरूप ॥ पाठक बोलावी पछे, नव नव प्रश्न अनूप ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ साहेलडीयांनी देशी ॥

॥ पूछे नृप निजनंदिनी ॥ साहेलडीयां ॥ पद समस्यानु एक ॥ गुण वेलडीयां ॥ कहे तमें जो निज शास्त्रमां ॥ सा० ॥ मति कीधी होये छेक ॥ गु० ॥ १ ॥ (समस्यापद यथा ॥ पेस्कई सुस्क सयाइ) ते जयसुंदरी सांजली ॥ ॥ सा० ॥ तात धरममां जेह ॥ गु० ॥ पद समस्यानु पूरती ॥ सा० ॥ सांजलो आगल तेह ॥ गु० ॥ २ ॥ छंदो ॥ तुह सकर सुह बन निव, तुह पुरि सुत्तम ताय ॥ तुऊ पसाइण सब पया, पेस्कई सुस्क सयाइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सांजली राजा रंजियो ॥ सा० ॥ सहु परखदनां लोक ॥ गु० ॥ पाठकनें सु

जणाउं एम रे ॥ न० ॥क०॥२॥ अधर्नें आपो जिह्ननें रे लो, ए पूरव नव वाणि रे ॥ न० ॥ आलोयुं ने पडिक्कम्युं रे लो, पश्चात्ताप बहु आणि रे ॥ ॥ न० ॥ क०॥३॥ पण एक नवें जे जोगवे रे लो, तेटलुं रह्युं तस शेष रे ॥न०॥ कर्म कर्यां बूटे नहीं रे लो,जोगव्या विण ते अशेष रे ॥न०॥क०॥ ॥ ४ ॥ जिह्ननें दीधी आंख्यो गई रे लो, एणे नवें आव्युं कर्म रे ॥न०॥ आशातना मुनिराजनी रे लो,महा छुःखदायी अधर्म रे ॥ न०॥ क०॥ ५ ॥ रायें मूक्या मानवी रे लो,ठाना जोवा काज रे ॥न०॥ सर्व वृत्तांत जई कह्युं रे लो, सांजली हरख्यो राज रे ॥ न०॥क०॥ ६ ॥ क्रोधी निर्दयीनें कदा रे लो, नवि होये पश्चात्ताप रे ॥ न० ॥ कमला पूरवें मोकली रे लो,कार्य उ हेशी आप रे ॥न०॥क०॥७॥ इष्ट विघन शंका धरी रे लो, कपट कर्युं एम राय रे ॥ न० ॥ कार्य करी आवी हवे रे लो, वात सुणे सवि माय रे ॥ ॥न०॥क०॥ ७ ॥ मूर्छा पामीनें पडी रे लो,शीतादिक उपचार रे ॥न०॥ दासीयें कीधो तेहथी रे लो, पामी चैतन्य तेवार रे ॥न०॥क०॥ए॥ करिय विलाप रुदन करे रे लो,पुत्री जोवा काम रे ॥न०॥ रातें बोय दासी लइ रे लो, पोहोती तिणद्विज ठाम रे ॥न०॥क०॥१०॥ दूरथी जोइ पाठी वली रे लो, क्रोधनें छुःख अपार रे ॥ न० ॥ रायनें कहे धिग छुर्मति रे लो, सर्व विरुद्ध करनार रे ॥न०॥क०॥११॥ चमाल पण न करे कदा रे लो,निज सुता नष्ठु द्वेष रे ॥ न० ॥ पुत्री विटंबी माहरी रे लो, वली अधित सुविशेष रे ॥ न० ॥क०॥१२॥ वात यथार्थ तुजने कही रे लो, श्यो कीधो अन्याय रे ॥ न० ॥ निंदित कर्मथी तुज्जनें रे लो, नरके निश्चय ठाय रे ॥ न०॥क०॥ ॥१३॥ पेट बुरी नाखी मरुं रें लो,एम कही नाखे जाम रे ॥ न०॥ ते बुरी उदाली लिये रे लो,नरपति बलथी ताम रे ॥न०॥क०॥१४॥ नृप कहे सुण सुंदरी रे लो, क्रोध ए कर्युं काम रे ॥ न० ॥ हवे लोक सचिव निंदा करे रे लो, पग पग माहरी आम रे ॥न०॥क०॥१५॥ ताहरी पण प्रेरणाथकी रे लो, पश्चात्ताप घणो थाय रे ॥ न० ॥ विहाणे शोध करावशुं रे लो, आण छुं आपणे ठाय रे ॥न०॥क०॥१६॥ औषध माहरे ठे वली रे लो, अधापो जेणें जाय रे ॥ न० ॥ ते औषधें साजी करुं रे लो, चिंता न कर तुं कांय रे ॥न०॥क०॥१७॥ देखु कोइ नृप पुत्रनें रे लो, क्रोधें जे कर्युं काम रे ॥न० ॥ तेह प्रमाण नहीं कदा रे लो, आश्वासे नृप वाम रे ॥न०॥क०॥१७॥ राति

ससार ॥ गु० ॥ तुम प्रसाद जो सुख होये ॥ सा० ॥ केइ दुखीया केम धार ॥ गु० ॥ १८ ॥ तव राजा क्रोध चढ्यो ॥ सा० ॥ कहे नरता कोण तुऊ ॥ गु० ॥ में कह्यु जे तुमे आपशो ॥ सा० ॥ देव समान ते मुऊ ॥ ॥ गु० ॥ १९ ॥ कर्म प्रमाणें आपशो ॥ सा० ॥ तुम पण मुज नरतार ॥ ॥ गु० ॥ क्रोधें कहे मुज जा परी ॥ सा० ॥ आवजे तेडुं तेवार ॥ गु० ॥ ॥ २० ॥ निज थानक वेहु अमें गया ॥ सा० ॥ निज नटनें कहे राय ॥ गु० ॥ दुखीयो जे कोइ नयरमां ॥ सा० ॥ ते लावो मुज पाय ॥गु०॥ ॥ २१ ॥ ते पण तुमनें लावीया ॥ सा० ॥ आगल जाणो सर्व ॥ गु० ॥ एम सांनली विस्मय लह्यो ॥ सा०॥ निह्न कहे अहो गर्व ॥ गु० ॥ २२॥ निज अपत्यनें कपरें ॥ सा० ॥ केवु अकारय कीध ॥ गु० ॥ नास्तिकनें कह्यो केम होये ॥ सा० ॥ जैनविवेक प्रसिद्ध ॥ गु० ॥ २३ ॥ निह्न विचारे चित्तमां ॥ सा० ॥ शील तथा वली स्नेह ॥ गु० ॥ जोउ दृढता एहमां ॥ सा० ॥ धर्मस्नेह वली जेह ॥ गु० ॥ २४ ॥ त्रीजे खर्में ए कही ॥सा०॥ उंगणीशमी वर ढाल ॥ गु० ॥ पद्मविजयें सोहामणी ॥ सा० ॥ धर्मे मगलमाल ॥ गु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तांबूल नखिंु तेहवु,विष व्याप्यु विकराल ॥ आंख व्यथा थइ आकरी, निह्ननें कहे ऊठ नाल ॥ १ ॥ नृप पासें विष छे नवल, जेहथी आंख्यो जाय ॥ त्रण पोहोरमां ततक्षणें, वेदन अति वेदाय ॥ २॥ विश्वासी वैरी नणी, आपे अवनीपाल ॥ तंबोलमांहे तेहनें, कोपें थई कराल ॥ ३ ॥ में परसाद जाण्यो मनें, खाधु तंबोल खांत ॥ कर्म शुनाशुन कीधलां, आवे उदय एकांत ॥ ४ ॥ आंख्यो जाशें आफणी, दैवें अंधापो दीध ॥ केम तुम सेवा करणनो, थशे मनोरथ सिद्ध ॥ ५ ॥ नारनूत तुमने नई, वधि वेदन तेणी वार ॥ रोवे तेम रोवरावती, वनमां पशुनां बाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ कोयलो पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो, कर्म कर्यां नवि जाय रे ॥ नविकजन ॥ वचन योगें करी बांधीयां रे लो, काययोगें नोगवाय रे ॥ न०॥ १ ॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो ॥ ए आंकणी ॥ मत्रीनी स्रीयें मुनिनें कर्यु रे लो, नवि सूजे तुम केम रे ॥ न० ॥ एहवा सूर्य प्रकाशमां रे लो, अध

जणाउं एम रे ॥ न० ॥क०॥२॥ अंधनें आपो निछनें रे लो, ए पूरव नव
वाणि रे ॥ न० ॥ आलोयुं ने पडिक्कम्यु रे लो, पश्चात्ताप बहु आणि रे ॥
॥ न० ॥ क०॥३॥ पण एक नवें जे नोगवे रे लो, तेटलु रह्युं तस शेष रे
॥न०॥ कर्म कर्या बूटे नहीं रे लो,नोगव्या विण ते अशेष रे ॥न०॥क०॥
॥ ४ ॥ निछनें दीधी आंख्यो गई रे लो, एणे नवें आव्यु कर्म रे ॥न०॥
आशातना मुनिराजनी रे लो,महा दुःखदायी अधर्म रे ॥ न०॥ क०॥ ५ ॥
रायें मूक्या मानवी रे लो,ठाना जोवा काज रे ॥न०॥ सर्व वृत्तांत जई कह्युं
रे लो, सांजली दूहव्यो राज रे ॥ न०॥क०॥ ६ ॥ क्रोधी निर्दयीनें कदा रे
लो, नवि होये पश्चात्ताप रे ॥ न० ॥ कमला पूरवें मोकली रे लो,कार्य व
हेशी आप रे ॥न०॥क०॥७॥ इष्ट विघन शका धरी रे लो, कपट कर्युं एम
राय रे ॥ न० ॥ कार्य करी आवी हवे रे लो, वात सुणे सवि माय रे ॥
॥न०॥क०॥ ८ ॥ मूर्छा पामीनें पडी रे लो,शीतादिक उपचार रे ॥न०॥ दा
सीयें कीधो तेहथी रे लो, पामी चैतन्य तेवार रे ॥न०॥क०॥ए॥ करिय वि
लाप रुदन करे रे लो,पुत्री जोवा काम रे ॥न०॥ रातें दोय दासी लइ रे लो,
पोहोती तिणद्विज गाम रे ॥न०॥क०॥१०॥ दूरथी जोइ पाठी वली रे लो,
क्रोधनें दुःख अपार रे ॥ न० ॥ रायनें कहे धिग दुर्मति रे लो, सर्व विरु
द्ध करनार रे ॥न०॥क०॥११॥ चमाल पण न करे कदा रे लो,निज सता
नशुं द्वेष रे ॥ न० ॥ पुत्री विटंबी माहरी रे लो, वली अधित सुविशेष रे
॥ न० ॥क०॥१२॥ वात यथार्थ तुजने कही रे लो, श्यो कीधो अन्याय रे
॥ न० ॥ निंदित कर्मथी तुझनें रे लो, नरके निश्चय जाय रे ॥ न०॥क०॥
॥१३॥ पेट बुरी नाखी मरु रें लो,एम कही नाखे जाम रे॥ न०॥ ते बुरी
उदाली लिये रे लो,नरपति बलथी ताम रे ॥न०॥क०॥१४॥ नृप कहे सुण
सुंदरी रे लो, क्रोध ए कह्यु काम रे ॥ न० ॥ हवे लोक सचिव निंदा करे रे
लो, पग पग माहरी आम रे ॥न०॥क०॥१५॥ ताहरी पण प्रेरणाथकी रे
लो, पश्चात्ताप घणो थाय रे ॥ न० ॥ विद्वाणे शोध करावशुं रे लो, आण
शुं आपणे ठाय रे ॥न०॥क०॥१६॥ औषध माहरे ने वली रे लो,अधापो
जेणें जाय रे ॥ न० ॥ ते औषधें साजी करु रे लो, चिंता न कर तु कांय रे
॥न०॥क०॥१७॥ देशुं कोइ नृप पुत्रनें रे लो, क्रोधें जे कर्यु काम रे॥न० ॥
तेह प्रमाण नहीं कदा रे लो,आश्वासें नृप वाम रे ॥न०॥क०॥१८॥ राति

ससार ॥ गु० ॥ तुम प्रसाद जो सुख होये ॥ सा० ॥ केइ दुःखीया केम धार ॥ गु० ॥ १८ ॥ तव राजा क्रोधें चढ्यो ॥ सा० ॥ कहे नरता कोण तुज्झ ॥ गु० ॥ में कह्यु जे तुमें आपशो ॥ सा० ॥ देव समान ते मुज्झ ॥ ॥ गु० ॥ १९ ॥ कर्म प्रमाणें आपशो ॥ सा० ॥ तुमें पण मुज नरतार ॥ ॥ गु० ॥ क्रोधें कहे मुज जा परी ॥ सा० ॥ आवजे तेहु तेवार ॥ गु० ॥ ॥ २० ॥ निज थानक वेहु अमें गया ॥ सा० ॥ निज नटनें कहे राय ॥ गु० ॥ दुःखीयो जे कोइ नयरमां ॥ सा० ॥ ते लावो मुज पाय ॥ गु० ॥ ॥ २१ ॥ ते पण तुमनें लावीया ॥ सा० ॥ आगल जाणो सर्व ॥ गु० ॥ एम साजली विस्मय लह्यो ॥ सा० ॥ निह्न कहे अहो गर्व ॥ गु० ॥ २२ ॥ निज अपत्यनें कपरें ॥ सा० ॥ केवु अकारय कीध ॥ गु० ॥ नास्तिकनें कह्यो केम होये ॥ सा० ॥ जैनविवेक प्रसिद्ध ॥ गु० ॥ २३ ॥ निह्न विचारे चित्तमा ॥ सा० ॥ शील तथा वली स्नेह ॥ गु० ॥ जोउ दृढता एहमां ॥ सा० ॥ धर्मस्नेह वली जेह ॥ गु० ॥ २४ ॥ त्रीजे खर्मे ए कही ॥ सा० ॥ उंगणीशमी वर ढाल ॥ गु० ॥ पद्मविजयें सोहामणी ॥ सा० ॥ धर्मे मग जमाल ॥ गु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तांबूल नखियुं तेहवु, विष व्याप्यु विकराल ॥ आंख व्यथा थइ आकरी, निह्ननें कहे छुर्ठ नाल ॥ १ ॥ नृप पासें विष ठे नवल, जेहथी आंख्यो जाय ॥ त्रण पोहोरमां ततक्षणें, वेदन अति वेदाय ॥ २ ॥ विश्वासी वैरी नणी, आपे अवनीपाल ॥ तंबोलमांहे तेहनें, कोपें थइ कराल ॥ ३ ॥ में परसाद जाण्यो मनें, खाधु तंबोल खांत ॥ कर्म घुनाघुन कीधलां, आवे उदय एकांत ॥ ४ ॥ आंख्यो जाशें आफणी, दैवें अंधापो दीध ॥ केम तुम सेवा करणनो, थशे मनोरथ सिद्ध ॥ ५ ॥ नारनूत तुमने नई, वधि वेदन तेणी वार ॥ रोवे तेम रोवरावती, वनमां पशुनां बाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ कोयलो पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो, कर्म कर्यां नवि जाय रे ॥ नविकजन ॥ वचन योगें करी बांधीयां रे लो, काययोगें नोगवाय रे ॥ न० ॥ १ ॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो ॥ ए आंकणी ॥ मत्रीनी स्त्रीयें मुनिनें कह्युं रे लो, नवि सूजे तुम केम रे ॥ न० ॥ एहवा सूर्य प्रकाशमां रे लो, अंध

ही घणो, गदगद बोले वाणि प्रीतम ॥ शु बोल्या ए स्वामिजी, वज्राघात समान प्रीतम ॥ का० ॥ ६ ॥ कुलवती कन्या होये,एकज वार देवाय प्रीतम ॥ जेह पितायें पति दियो, प्राणांतें न उमाय प्रीतम ॥ का० ॥ ७ ॥ तुमें पति तुमें मति तुमें गति, जेहवा होय ते प्रमाण प्रीतम ॥ शरण तुमारु आदखुं,अवर ते भ्रात समान प्रीतम ॥ का०॥ ८ ॥ जो तुमें छंमी भुजनें, तो संयम आधार प्रीतम ॥ अथवा अगनि शरण करु, बीजो को न विचार प्रीतम ॥ का० ॥ ए ॥ वात सुणी निज्ञ चिंतवे, दृढशीलनें वली स्नेह सुंदरी ॥ आनंदनर निज्ञ बोलियो, सांजलजे कहुं जेह सुंदरी ॥ का० ॥ ॥ १० ॥ तूठी तुज कुलदेवता, वली मातानी आशीष सुंदरी ॥ पुण्य जागतां ताहरां, ताहरी चढती जगीश सुंदरी ॥ का० ॥ ११ ॥ कारिमो निज्ञ कु कारणें, स्वाजाविक जो रूप सुंदरी ॥ देखाडु तुज माहरु, जो हवे शुद्ध स्वरूप सुंदरी ॥ का० ॥ १२ ॥ एम कही स्वाजाविक करे, अप्सरा मोहे जास सुंदरी ॥ तो नारीनुं कहेवुं किश्युं, देदीप्यमान आजास सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ १३ ॥ रत्नोद्योतें देखी करी, आणंद अंग न माय सुंदरी ॥ विजयसुंदरी एम कहे, ए शुं कौतुक थाय प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ नाना रूपें सुरपरें, मुंजवो केणी परें स्वामि प्रीतम ॥ कुमर कहे सुण सुंदरी, क्षत्रियसुत अजिराम सुंदरी ॥ का० ॥ १५ ॥ देश जमु कौतुकथकी, कला विज्ञाननें हेत सुंदरी ॥ विविध देश जमतां थकां, थयो बहु कला उपेत सुंदरी ॥ का० ॥ १६ ॥ विविध महिमावंत औषधि, पाम्यो वली देवें दीध सुंदरी ॥ आकाशगामि ढोलीयो, जिणथी मुज प्रसिद्ध सुंदरी ॥ का० ॥ १७॥ गिरि नगरादिक बहु जोश, रत्नपुरें एकदिन्न सुंदरी ॥ नृपपुत्री रतिसुंदरी, परण्यो पूरव पुण्य सुंदरी ॥का०॥ १८॥ नृप दीधा आवासमां जोगवु जोग रसाल सुंदरी ॥ स्वप्न दीठु में अन्यदा,निज्ञरूप विकराल सुंदरी॥का०॥ १ए॥ सुपन विघातनें कारणें, निज्ञरूप कर्यु एह सुंदरी ॥ राजपुरुष मुज लावीया, तुं जाणे सवि तेह सुंदरी ॥का०॥ २०॥ वात कही ते सांजली, हर्षे विकस्वर देह सुंदरी ॥ ज्ञानी वचन साचु थयु, एम कहे अहो न संदेह प्रीतम ॥का०॥॥ २१॥ सुणो एक दिन उद्यानमां,आव्या ज्ञान निधान प्रीतम ॥ गुरु गुणवंत दासीयें कह्या, हु गई तेह उद्यान प्रीतम ॥का०॥ २२॥ माता सहित वंदन करी, देशना अंतें मात प्रीतम ॥ मुज पुत्री वर कोण थशे,

गई दुखनी तिहां रे लो, विजयसुंदरीनां नयण रे ॥ ज०॥ भामला हवे नि ज कर्मनें रे लो,निंदे दुखिणी वयण रे ॥ज०॥क०॥१९॥ के जिनवर आज्ञा तना रे लो, अथवा गुरु गुणवंत रे ॥ ज० ॥ गर्हा करी अथ सघनें रे लो, उपद्रव कीध अनंत रे ॥ज०॥क०॥२०॥ हा मुज जनम शाने थयो रे लो, शानें पाली मुज्ज रे ॥ ज०॥ केम नवि मूइ बालक थकां रे लो,पण ए कर्म नु गुज्ज रे ॥ज०॥क०॥२१॥ एम ते विलपती देखिनें रे लो,रूपा उपनी तव निन्न रे ॥ ज० ॥ औषधि पाणीयें सज्ज करे रे लो, आंख्यो थइ ते नवन्न रे ॥ज०॥क०॥२२॥ वेदना नागी सर्वथा रे लो,दिव्य नेत्र थई तेह रे ॥ज०॥ चिंतवे कर्मथकी लह्यो रे लो, एहवो जरता एह रे ॥ ज०॥क०॥२३॥ त्रीजे खंडें वीशमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ज०॥ श्रीजयानंदना रासमां रे लो, पुण्यें मंगल माल रे ॥ ज० ॥ क० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवसानिध्य पण दोहली,एहवी औषधि एह ॥ निन्न कहे जमतां थ कां, गिरि उपर गुणगेह ॥ १॥ काष्ठनें अर्थें किहांयके,वृद्ध शबरनें वयण॥ औषधि महिमा उलखु,निरखी चिन्हें नयण ॥ २ ॥ लीधी विधि पूर्वक लता, राखी रूडी रीति ॥ हमणां ते सफली हुइ, नेत्रदाननें नीति ॥ ३ ॥ पण ह रिही कदरूप हु, जघन्य अछे कुलजात ॥ उत्तम कुल तु रूपनी, तादरो नृ पति तात ॥ ४ ॥ निन्न हु जर्त्ता योग्य नहीं, नवि वटलावू नाम ॥ तुं रूपें रंना जिसी, केम करु पाप निकाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वारी हु गोडी गामने ॥ ए देशी ॥

॥ तू सुकुमाल शरीर छे,रविकर परस्या नाहि सुंदरी ॥ तो केम काष्ठ वही के, जा नृप पास उत्साहिं सुंदरी ॥ १ ॥ काम विचारी कीजीयें ॥ ए आंक णी ॥ रोष शम्यो दोशे हवे, मावित्रनें जे क्रोध सुंदरी ॥ नवि बहु काल लगें रहे, वली अपवादें लह्यो बोध सुंदरी ॥ का० ॥ २ ॥ तुज माता ह र्षित थशे, राजकुमर कोइ सार सुंदरी ॥ तस परणावशे उत्सवें, सफल थ शे अवतार सुंदरी ॥ का० ॥ ३ ॥ करग्रह मात्रज मुज वरी, हु आणा देश तुज्ज सुंदरी ॥ दोष नहीं तुज कोइ इहां, अधिक संबंध न मुज्ज सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ ४ ॥ तुज मूकू नृपने घरें, जेम नवि जाणे कोय सुंदरी ॥ हुं जाई श छानो वली, परगट वात न होय सुंदरी ॥ का० ॥ ५ ॥ सांजली खेद ल

ही घणो, गदगद बोले वाणि प्रीतम ॥ शु बोल्या ए स्वामिजी, वज्राघात समान प्रीतम ॥ का० ॥ ६ ॥ कुलवती कन्या होये,एकज वार देवाय प्रीतम ॥ जेह पितायें पति दियो, प्राणांतें न ठमाय प्रीतम ॥ का० ॥ ७ ॥ तुमें पति तुमें मति तुमें गति, जेहवा होय ते प्रमाण प्रीतम ॥ शरण तुमारु आदखुं,अवर ते भ्रात समान प्रीतम ॥ का०॥ ८ ॥ जो तुमें गंमी मुजनें, तो सयम आधार प्रीतम ॥ अथवा अगनि शरण करु, बीजो को न विचार प्रीतम ॥ का० ॥ ए ॥ वात सुणी निक्ष चितवे, हढशीलनें वली स्नेह सुदरी ॥ आनदनर निक्ष बोलियो, सांजलजे कहुं जेह सुदरी ॥ का० ॥ ॥ १० ॥ तूठी तुज कुलदेवता, वली मातानी आशीष सुंदरी ॥ पुएय जागतां ताहरां, ताहरी चढती जगीश सुदरी ॥ का० ॥ ११ ॥ कारिमो निक्ष हु कारणें, स्वाजाविक जो रूप सुंदरी ॥ देखाडु तुज माहरु, जो हवे शुद्ध स्वरूप सुंदरी ॥ का० ॥ १२ ॥ एम कही स्वाजाविक करे, अप्सरा मोहे जात सुदरी ॥ तो नारीनुं कहेवु किश्युं, देदीप्यमान आजास सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ १३ ॥ रत्नोद्योतें देखी करी, आणद अग न माय सुंदरी ॥ विजयसुदरी एम कहे, ए शु कौतुक थाय प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ नाना रूपें सुरपरें, मुजवो केणी परें स्वामि प्रीतम ॥ कुमर कहे सुण सुदरी, क्षत्रियसुत अजिराम सुंदरी ॥ का० ॥ १५ ॥ देश जमुं कौतुकथकी, कला विज्ञाननें हेत सुंदरी ॥ विविध देश जमता थकां, थयो बहु कला उपेत सुदरी ॥ का० ॥ १६ ॥ विविध महिमावत औषधि, पाम्यो वली देवें दीध सुदरी ॥ आकाशगामि ढोलीयो, जिणथी मुज प्रसिद्ध सुदरी ॥ का० ॥१७॥ गिरि नगरादिक बहु जोत, रत्नपुरें एकदिन्न सुंदरी ॥ नृपपुत्री रतिसुदरी, परएयो पूरव पुएय सुदरी ॥का०॥१८॥ नृप दीधा आवासमां जोगवु जोग रसाल सुदरी ॥ स्वप्न दीठु में अन्यदा,निक्षुरूप विकराल सुदरी ॥का०॥१ए॥ सुपन विघातनें कारणें, निक्षरूप कयु एह सुदरी ॥ राजपुरुष मुज लावीया, तु जाणे सवि तेह सुदरी ॥का०॥२०॥ वात कही ते सांजली, हर्षे विकस्वर देह सुदरी ॥ ज्ञानी वचन साचु थयु, एम कहे अहो न सदेह प्रीतम ॥का०॥॥२१॥ सुणो एक दिन उद्यानमां,आव्या ज्ञान निधान प्रीतम ॥ गुरु गुणवत दासीयें कह्या, हु गई तेह उद्यान प्रीतम ॥का०॥२२॥ माता सहित वदन करी, देशना अतें मात प्रीतम ॥ मुज पुत्री वर कोण थशे,

गई डुखनी तिहां रे लो, विजयसुंदरीनां नयण रे ॥ न०॥ कामत्री हवे नि
ज कर्मनें रे लो,निंदे डुखिणी वयण रे ॥न०॥क०॥१९॥ के जिनवर आज्ञा
तना रे लो, अथवा गुरु गुणवंत रे ॥ न० ॥ गर्हा करी अथ संघनें रे लो,
उपद्रव कीध अनंत रे ॥न०॥क०॥२०॥ हा मुज जनम शाने थयो रे लो,
शानें पाली मुक्त रे ॥ न०॥ केम नवि मूइ बालक थका रे लो,पण ए कर्म
नु शुक्त रे ॥न०॥क०॥२१॥ एम ते विलपती देखिनें रे लो,रुपा उपनी तव
जिह्न रे ॥ न० ॥ औपधि पाणीयें सक्त करे रे लो, आंख्यो थइ ते नवल
रे ॥न०॥क०॥२२॥ वेदना नागी सर्वथा रे लो,दिव्य नेत्र थई तेह रे ॥न०॥
चिंतवे कर्मथकी लह्यो रे लो, एहवो नरता एह रे ॥ न०॥क०॥२३॥ त्रीजे
खर्में वीशमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल रे ॥न०॥ श्रीजयानंदना रासमां
रे लो, पुर्ण्ये मंगल माल रे ॥ न० ॥ क० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवसानिध्य पण दोहली,एहवी औपधि एह ॥ जिह्न कहे नमतां थ
कां, गिरि उपर गुणगेह ॥ १॥ काष्ठनें अर्थें किहांयके,वृद्ध शबरनें वयण॥
औषधि महिमा उंलखु,निरखी चिन्हें नयण ॥ २ ॥ लीधी विधि पूर्वक लता,
राखी रूडी रीति ॥ हमणां ते सफली हुइ, नेत्रदाननें नीति ॥ ३ ॥ पण द
रिद्री कदरूप हु, जघन्य अछे कुलजात ॥ उत्तम कुल तु रूपनी, तादृशो नृ
पति तात ॥ ४ ॥ जिह्न हु भर्त्ता योग्य नहीं, नवि बटलावू नाम ॥ तुं रूपें
रंभा जिसी, केम करु पाप निकाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वारी हु गोडी गामने ॥ ए देशी ॥

॥ तु सुकुमाल शरीर छे,रविकर परस्या नाहि सुंदरी ॥ तो केम काष्ठ वही
के, जा नृप पास वछांहि सुंदरी ॥ १ ॥ काम विचारी कीजीयें ॥ ए आंक
णी ॥ रोष शम्यो होशे हवे, मावित्रनें जे क्रोध सुंदरी ॥ नवि बहु काल
लगें रहे, वली अपवादें लह्यो बोध सुंदरी ॥ का० ॥ २ ॥ तुज माता ह
र्षित थशे, राजकुमर कोइ सार सुंदरी ॥ तस परणावशे उत्सवें, सफल थ
शे अवतार सुंदरी ॥ का० ॥ ३ ॥ करग्रह मात्रज मुज वरी, हु आणा देउ
तुक्त सुंदरी ॥ दोष नहीं तुज कोइ इहां, अधिक संबंध न मुक्त सुंदरी ॥
॥ का० ॥ ४ ॥ तुज मूकू नृपने घरें, जेम नवि जाणे कोय सुंदरी ॥ हुं जाई
श छानो वली, परगट वात न होय सुंदरी ॥ का० ॥ ५ ॥ सांजली खेद ल

ही घणो, गदगद बोले वाणि प्रीतम ॥ शु बोल्या ए स्वामिजी, वज्राघात समान प्रीतम ॥ का० ॥ ६ ॥ कुलवती कन्या होये,एकज वार देवाय प्रीतम ॥ जेह पितायें पतिं दियो, प्राणांतें न लमाय प्रीतम ॥ का० ॥ ७ ॥ तुमें पति तुमें मति तुमें गति, जेहवा होय ते प्रमाण प्रीतम ॥ शरण तुमारु आदखुं,अवर ते भ्रात समान प्रीतम ॥ का०॥ ८ ॥ जो तुमें ठांमी मुजनें, तो संयम आधार प्रीतम ॥ अथवा अगनि शरण करुं, बीजो को न विचार प्रीतम ॥ का० ॥ ए ॥ वात सुणी निह्न चिंतवे, हढशीलनें वली स्नेह सुंदरी ॥ आनंदनर निह्न बोलियो, सांनलजे कहुं जेह सुंदरी ॥ का० ॥ ॥ १० ॥ तूठी तुज कुलदेवता, वली मातानी आशीष सुंदरी ॥ पुण्य जागतां तादरां, तादरी चढती जगीश सुंदरी ॥ का० ॥ ११ ॥ कारिमो निह्न कु कारणें, स्वानाविक जो रूप सुंदरी ॥ देखाडु तुज माहरु, जो हवे शुद्ध स्वरूप सुंदरी ॥ का० ॥ १२ ॥ एम कही स्वानाविक करे, अप्सरा मोहे जाल सुंदरी ॥ तो नारीनुं कहेवु किश्युं, देदीप्यमान आनास सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ १३ ॥ रत्नोद्योतें देखी करी, आणंद अंग न माय सुंदरी ॥ विजयसुंदरी एम कहे, ए शुं कौतुक थाय प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ नाना रूपें सुरपरें, मुजवो केणी परें स्वामि प्रीतम ॥ कुमर कहे सुण सुंदरी, क्षत्रियसुत अनिराम सुंदरी ॥ का० ॥ १५ ॥ देश नमुं कौतुकथकी, कला विज्ञाननें हेत सुंदरी ॥ विविध देश नमतां थकां, थयो बहु कला उपेत सुंदरी ॥ का० ॥ १६ ॥ विविध महिमावंत औषधि, पाम्यो वली देवें दीध सुंदरी ॥ आकाशगामि ढोलीयो, जिणथी मुज प्रसिद्ध सुंदरी ॥ का० ॥१७॥ गिरि नगरादिक बहु जोउ, रत्नपुरें एकदिन्न सुंदरी ॥ नृपपुत्री रतिसुंदरी, परख्यो पूरव पुण्य सुंदरी ॥का०॥१८॥ नृप दीधा आवासमां नोगवु नोग रसाल सुंदरी ॥ स्वप्न दीठु में अन्यदा,निह्नरूप विकराल सुंदरी ॥का०॥१ए॥ सुपन विघातनें कारणें, निह्नरूप कखु एह सुंदरी ॥ राजपुरुष मुज लावीया, तुं जाणे सवि तेह सुंदरी ॥का०॥२०॥ वात कही ते सांनली, हर्षे विकस्वर देह सुंदरी ॥ ज्ञानी वचन साचु थयु, एम कहे अहो न संदेह प्रीतम ॥का०॥॥२१॥ सुणो एक दिन उद्यानमां,आव्या ज्ञान निधान प्रीतम ॥ गुरु गुणवंत दासीयें कह्या, हु गई तेह उद्यान प्रीतम ॥का०॥२२॥ माता सहित वंदन करी, देशना अंतें मात प्रीतम ॥ मुज पुत्री वर कोण थशे,

गई डु खनी तिहां रे लो, विजयसुंदरीनां नयण रे ॥ न०॥ कामजां हवे नि ज कर्मनें रे लो,निंदे डु खिणी वयण रे ॥न०॥क०॥१९॥ के जिनवर आशा तना रे लो, अथवा गुरु गुणवंत रे ॥ न० ॥ गर्हा करी श्रय सघनें रे लो, उपद्रव कीध अनंत रे ॥न०॥क०॥२०॥ हा मुज जनम शाने थयो रे लो, शानें पाली मुऊ रे ॥ न०॥ केम नवि मूइ बालक थकां रे लो,पण ए कर्म नु गुऊ रे ॥न०॥क०॥२१॥ एम ते विलपती देखिनें रे लो,रूपा उपनी तव निम्न रे ॥ न० ॥ औषधि पाणीयें सऊ करें रे लो, आव्यो थड ते नवम्न रे ॥न०॥क०॥२२॥ वेदना नागी सर्वथा रे लो,दिव्य नेत्र थई तेह रे ॥न०॥ चिंतवे कर्मथकी लह्यो रे लो, एहवो नरता एह रे ॥ न०॥क०॥२३॥ त्रीजे खर्मे वीशमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल रे ॥न०॥ श्रीजयानंदना रासमां रे लो, पुएयें मंगल माल रे ॥ न० ॥ क० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ८४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवसानिध्य पण दोहली,एहवी औषधि एह ॥ निम्न कहे नमतां थ कां, गिरि उपर गुणगेह ॥ १॥ काष्ठनें अर्थे किहांयके,वृद्ध शबरनें वयण॥ औषधि महिमा उलखु,निरखी चिन्हें नयण ॥ २ ॥ लीधी विधि पूर्वक लता, राखी रूडी रीति ॥ हमणां ते सफली हुइ, नेत्रदाननें नीति ॥ ३ ॥ पण व रिड़ी कदरूप डु, जघन्य अडे कुलजात ॥ उत्तम कुल तुं रूपनी, तादृशो नृ पति तात ॥ ४ ॥ निम्न हु नर्त्ता योग्य नहीं, नवि वटलावू नाम ॥ तु रूपें रंना जिसी, केम करु पाप निकाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वारी हु गोडी गामने ॥ ए देशी ॥

॥ तू सुकुमाल शरीर डे,रविकर परस्या नाहि सुंदरी ॥ तो केम काष्ठ वही के, जा नृप पास उह्यांहिं सुंदरी ॥ १ ॥ काम विचारी कीजीयें ॥ ए आंक णी ॥ रोष शम्यो होशे हवे, मावित्रनें जे क्रोध सुंदरी ॥ नवि बहु काल लगें रहे, वली अपवादें लह्यो बोध सुंदरी ॥ का० ॥ २ ॥ तुज माता ह र्षित थशे, राजकुमर कोइ सार सुंदरी ॥ तस परणावशे उत्सवें, सफल थ शे अवतार सुंदरी ॥ का० ॥ ३ ॥ करम्यद मात्रज मुज वरी, हु आणा देश तुऊ सुंदरी ॥ दोष नहीं तुज कोइ इहां, अधिक संबंध न मुऊ सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ ४ ॥ तुज मूकू नृपने घरें, जेम नवि जाणे कोय सुंदरी ॥ हुं जाई श ढानो वली, परगट वात न होय सुंदरी ॥ का० ॥ ५ ॥ सांनली खेद ल

ही घणो, गदगद बोले वाणि प्रीतम ॥ शु बोल्या ए स्वामिजी, वज्राघात समान प्रीतम ॥ का० ॥ ६ ॥ कुलवती कन्या होये,एकज वार देवाय प्रीतम ॥ जेह पितायें पति दियो, प्राणांतें न लंघाय प्रीतम ॥ का० ॥ ७ ॥ तुमें पति तुमें मति तुमें गति, जेहवा होय ते प्रमाण प्रीतम ॥ शरण तुमारु आदर्युं,अवर ते भ्रात समान प्रीतम ॥ का०॥ ८ ॥ जो तुमें गंमी मुजनें, तो संयम आधार प्रीतम ॥ अथवा अगनि शरण करुं, बीजो को न विचार प्रीतम ॥ का० ॥ ए ॥ वात सुणी निज्ञ चिंतवे, दृढशीलनें वली स्नेह सुंदरी ॥ आनंदजर निज्ञ बोलियो, सांजलजे कहुं जेह सुंदरी ॥ का० ॥ ॥ १० ॥ तूठी तुज कुलदेवता, वली मातानी आशीष सुंदरी ॥ पुण्य जागतां ताहरां, ताहरी चढती जगीश सुंदरी ॥ का० ॥ ११ ॥ कारिमो निज्ञ हु कारणें, स्वाजाविक जो रूप सुंदरी ॥ देखाडु तुज माहरु, जो हवे शुद्ध स्वरूप सुंदरी ॥ का० ॥ १२ ॥ एम कही स्वाजाविक करे, अप्सरा मोहे जास सुंदरी ॥ तो नारीनु कहेवु किस्युं, देदीप्यमान आजास सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ १३ ॥ रत्नोद्योतें देखी करी, आणंद अंग न माय सुंदरी ॥ विजयसुंदरी एम कहे, ए शु कौतुक थाय प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ नाना रूपें सुरपरें, मुजवो केणी परें स्वामि प्रीतम ॥ कुमर कहे सुण सुंदरी, क्षत्रियसुत अनिराम सुंदरी ॥ का० ॥ १५ ॥ देश जमुं कौतुकथकी, कला विज्ञाननें हेत सुंदरी ॥ विविध देश जमतां थकां, थयो बहु कला उपेत सुंदरी ॥ का० ॥ १६ ॥ विविध महिमावंत औषधि, पाम्यो वली देवें दीध सुंदरी ॥ आकाशगामि ढोलीयो, जिणथी मुज प्रसिद्ध सुंदरी ॥ का० ॥१७॥ गिरि नगरादिक बहु जोउ, रत्नपुरें एकदिन्न सुंदरी ॥ नृपपुत्री रतिसुंदरी, परण्यो पूरव पुण्य सुंदरी ॥का०॥१८॥ नृप दीधा आवासमां जोगवु जोग रसाल सुंदरी ॥ स्वप्न दीठु में अन्यदा,निक्षरूप विकराल सुंदरी ॥का०॥१ए॥ सुपन विघातनें कारणें, निज्ञरूप कर्यु एह सुंदरी ॥ राजपुरुष मुज लावीया, तु जाणे सवि तेह सुंदरी ॥का०॥२०॥ वात कही ते सांजली, हर्षे विकश्वर देह सुंदरी ॥ ज्ञानी वचन साचु थयु, एम कहे अहो न संदेह प्रीतम ॥का०॥॥२१॥ सुणो एक दिन उद्यानमां,आव्या ज्ञान निधान प्रीतम ॥ गुरु गुणवंत दासीयें कह्या, हु गई तेह उद्यान प्रीतम ॥का०॥२२॥ माता सहित वंदन करी, देशना अंतें मात प्रीतम ॥ मुज पुत्री वर कोण थशे,

नास्तिक कुमरीतात प्रीतम ॥ का० ॥ १३ ॥ हु मुज पुत्री जैन छु, तात
ने अल्प छे राग प्रीतम ॥ मुनि कहे धर्मशीला सुणो, जेह थशे महाजाग
प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ अर्द्ध जरतनो अधिपति, तुज पुत्री जरतार प्रीत
म ॥ फरी कहे केम मलशे कहो, तव जाखे अणगार प्रीतम ॥का०॥१५॥
इहां उद्यानें रूपजनु, चैत्य अछे तेहमांहि प्रीतम ॥ चक्रेश्वरी छे तेहनी,
पूजाथी मलशे उत्साहें प्रीतम ॥ का०॥ १६ ॥ ते दिनथी पूजा करी, मानुं
ते तुष्टमान प्रीतम ॥ स्वप्नादिक सवि तेणे कह्यु, मेलव्यो जोग समान प्री
तम ॥ का० ॥ १७ ॥ कुमर कहे जिनधर्मथी, सघलु थाय कल्याण सुंद
री ॥ योग आपणों शुज जडयो, सांजलो हवे फह्यु वाण सुंदरी ॥ का० ॥
॥१८॥ त्रीजे खर्म्मे पूरण थइ, एकवीशमी ए ढाल प्रीतम ॥ पद्मविजय कहे
धर्मथी, होवे मगलमाल प्रीतम ॥ का० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सांजली वात सोहामणी, नवि जाणे कोइ नाम ॥ तेम इहांथी चालो
तुमें, गवके जइयें गाम ॥ १ ॥ शिक्षा देउ सारी परें, तुज तातनें त्यां सी
म ॥ प्रगट न थाउं प्रेयसी, सांजली ए मुज नीम ॥ २ ॥ परगट नहीं उपा
य ते, शिक्षा मानें साम ॥ अवसरे शिक्षा देइ अमें, धर्म तणो करु धाम ॥
॥ ३ ॥ अरिहत धर्म उलखावशुं, कौलपणु करु दूर ॥ उपकार करवो अव
रनें, सज्जननु ए शूर ॥ ४ ॥ उपकार धर्म उपर नहीं, करु एहनें उपकार ॥
औषधिबलथी इहां रहे, विघ्न रहित इणवार ॥ ५ ॥ पल्यक आजरण गो
पव्यां, लेई आवु व्हार ॥ वस्त्र लावु तुज वासते, नयरीथी निरधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ मानी नारियें वात, औषधी देई चाल्यो हो तिहां लेई पल्यंक आजूष
णां ॥ पहेरी गयो पुरमांहि, चोहटामांहे दीठां हो कांय व्यवहारीनां आप
णां ॥ १ ॥ कोइ शेठनें हाट, बेसी मागे वस्त्र हो वली, आजरणां घणु दीप
तां ॥ बमणां मूलां रत्न, आपीनें लीये तेह हो, कांय स्वर्ग सबधी झींपतां
॥ २ लोर्ने वाणिक जाति, आप्यां वस्त्र अमूलां हो वली नारीनां आजूष
ण घणां ॥ नवां कराव्यां तेह, इव्ये शुं नवि सीझे हो धरे मनमां जे होये
कामणां ॥ ३ ॥ देवकुलें जई तेह,नारीनें पहेरावे हो ते वस्त्र आजूषण सो
हतां ॥ पल्यंकें सूतां दोय,ब्राह्म मुहूर्त्ते जागे हो तव वयण कहे मन मो

हतां ॥ ४ ॥ जइयें आकाशपथ, नारी कहे किहां जाछुं हो तव कुमर कहे सुणो सुंदरी ॥ रत्नपुरें छे गाम, तुज सरखी मुज नारी हो घणुं प्यारी छे रतिसुदरी ॥ ५ ॥ विजयसुंदरी कहे ताम, तुमें उपकारी महोटा हो तेणें वात सुणो एक माहरी ॥ कमलपुरें छे नृप, कमलप्रन मुज मामो हो दीन अनाथनो वाहरी ॥ ६ ॥ प्रीतिमती प्रिया आय, तेहनें सुत जयशूर हो रोगीनें दोनागीयो ॥ वली अन्यायी क्रूर, अप्रिय बोले नित्यें हो नहीं सज्जन कोइ पामीयो ॥ ७ ॥ नोगवती बीजी नारि, सोनागिणी मुज माता हो दाता प्रिय वल्लन घणु ॥ तेहनें पुत्री एक, कमलसुंदरी रूडी हो रूप धर्में मुज सम घणु ॥ ८ ॥ वय पण मुज सम तास, पुत्र विजयशूर नामें हो दाता विनयी पराक्रमी ॥ एकदिन पूछे राय,निमित्तियाने नांखे हो राज्य योग्य कोण उपमी ॥ ए ॥ ते कहे जे लघु पुत्र, गुणवतो ते योग्य हो सांनली राजा हरखियो ॥ निमित्तियो देइ दान,विसर्ज्यो ने जाणी हो प्रीतिमती विषवरषीयो ॥ १० ॥ चितवे एणी परें चित्त, विजयशूर नीरोगी हो गुणवतो छे जिहां लगें॥ रोगी माहरो पुत्र, अविनयीनें केहवी हो राज्यनी आशा तिहां लगें ॥ ११ ॥ अविनीतने दौर्नाग्य, नृपनें पण नहीं राग हो वली निमित्तियो एम कहे ॥ चांदे क्षारनो क्षेप, राजा तो ए धर्मी हो अवसर लही दीक्षा ग्रहे ॥ १२ ॥ मुजथी तो न खेवाय, शक्ति अनावें तेणें हो शोक्यपुत्र थाये राजीयो ॥ देखीनें न खमाय, मुज सुत दुःखीयो देखी हो यद्यपि ए गुण गाजीयो ॥ १३ ॥ मारु कोई उपाय, अथवा अगें हीणो हो करु जेम राज्य न ए लहे ॥ कोई कपालिणी देखि,चूरण योगादिक जाणे हो तेहनें एकदिन एम कहे ॥ १४ ॥ सेवा करे तस नित्य, ते कहे स्यानें सेवो हो तुज काम होये ते नांखीयें ॥ ए कहे मुज सुत शाल,काढो एहज काम हो घणु घणु शु तुम दाखीयें ॥ १५ ॥ कहे ए कपालिनी अल्प, खाधु करपद थन्ने हो दिउ तुज चूरण एहवु ॥ नोजनमांहे आपि, ताहरा अर्थनी सिद्धि हो थाशे चित्त छे जेहवु ॥ १६ ॥ सांनली हरखी तेह, चूरण लीधुं तेणीयें हो करी सतकार तेहने घणो॥ शोक्य उपर घणो नेह,सुत उपर दाखवे हो वली ते विश्वासी पणु ॥ १७ ॥ अधिक अधिक धरे स्नेह, दुर्जननी गति नांति हो सज्जन किमही नवि लहे ॥ एकदिन कांयक पर्व, पामीनें ते शोक्य हो तिम तस पुत्रनें एम कहे ॥ १८ ॥ चालो नोजन का

म, आज परवनो शहाडो हो सज्जन ते नेला जिमे ॥ सरल स्वनावी तेह, नोजन अर्थे आव्या हो आसन मांमयां मनगमे ॥ १९ ॥ गौरव नक्ति दे खाय, प्रीतिमती पण नेहें हो विधियें सर्व कारय करे । मोदक प्रमुख जे सार, कपालिनी दत्त चूरण हो कुमरनें सहित दे छुनपरें ॥ २० ॥ त्रीजे खंमें ढाल, बावीशमी पद्मविजयें हो नांखी एह सोहामणी ॥ श्रीजयानदनें रास, डर्ज्जन सज्जन पटतर हो एम जाणी सज्जन थाउ गुणी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जमी उठ्या जोपें करी,वली सत्कार विशेष ॥ आव्या घर आणदशुं, लख्यु जे थाये लेख ॥ १ ॥ हलुये हलुये हाथ पग, थंनाये जेम थन ॥ चूरणनां ए चिन्ह छे, आवे सहुनें अचन ॥ २ ॥ करथी कांइ न करी शके, पगें न चाले पंथ ॥ कर्मतणी गति केहवी, आगें न चले अथ ॥ ३ ॥ राय राणी व्याकुल हूवे, करे विविध प्रतिकार ॥ वैद्य औषध करे नव नवां,गुण नवि थाय लगार ॥ ४ ॥ प्रीतिमती विना सहु प्रजा, डुःख पामी खेदाय ॥ शंका आवी सर्वनें प्रीतिमत्ती ए उपाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुवा रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ चेष्टा प्रीतिमती तणी, वली नोजन दिन सनारी रे॥ निमित्तियानें पूढीयुं, कहो ए केम कर्मनो नारी रे ॥ १ ॥ कर्म प्रमाणें फल लहे ॥ ए आंकणी ॥ निमित्तियो कहे नारीथी, थयो डुष्ट चूर्णसयोग रे ॥ विविध औषधिथी नहीं टले,पण आगें थाशे नीरोग रे॥ क० ॥ २ ॥ निमित्तियाने विसर्जियो, देइ घणो सत्कार रे ॥ दासी कह्याथी जाणीयो, प्रीतिमती कपालिनी प्यार रे ॥ क० ॥ ३ ॥ सुनट मूकी कपालिनी, तेहीनें ताडना कीधी रे ॥ तव ते बोली साचकुं, चूर्णादिक वस्तु जे दीधी रे ॥ क० ॥ ४ ॥ कर्यो धिक्कार सहु जनें, प्रीतिमतीनें नरपति काढे रे॥ पीयर गई ते पाधरी, तिहां पण लोक निंदे गाढें रे ॥ क० ॥ ५ ॥ घोर कटुक फल नोगवे, पाप इह पर नव डुःखदायी रे ॥ पण ए असार ससारमां, एक धर्मज थाय सहायी रे ॥ क० ॥ ६ ॥ जे अन्यने मातु चिंतवे,परनें तो नजना जाणो रे ॥ पण एहने अनिप्रायथी,होये डुर्गति डुःखनी खाण्यो रे॥ क० ॥ ७ ॥ नूपतिनें राजवर्गीया,पुरलोक मली कहे वात्तो रे ॥ अहो अहो स्त्रीना हृदयनें,डष्टतानें

सादसघातो रें ॥क०॥८॥ धिक् इह लोकनु सुख अणु, तेहनें अर्थे करे प्राणी रे ॥ विविध प्रकारना कर्मनें, करे जिणथी लहे डुखखाणी रे ॥क०॥ ॥ ए ॥ हवे नृप पडह वजडावतो, कोइक परदेशी आवे रे ॥ अथवा कोइ निज देशनो, आवीनें परगट थावे रे ॥ क० ॥ १० ॥ जे मुज पुत्र साजो करे, तेहनें आपुं एक देश रें ॥ कमलसुंदरी कन्या देउं, वली कहे ते करुं विशेष रे ॥ क० ॥ ११ ॥ एम त्रण त्रण दिन वजाडतो, पनर पनर दिन अतें रे ॥ मामे मुज तेडी घरे, घणुं मुज उपर प्रीतिवते रे ॥ क० ॥१२॥ सांनल्युं में मोशालमा, ए नांख्युं ते वृत्तांत रे ॥ कमलसुंदरीशुं मादरे,घणी प्रीति हती एकांत रे ॥ क० ॥ १३ ॥ माहरे एहनें एक पति, करवो एम कीध विचार रे ॥ पण नाईना शोकथी, नवि वात करी लगार रे ॥ क०॥१४॥ विजयसुदरी कहे तेणें तुमें,ते नगर जई सुख कीजें रे ॥ मोशाल सहु सुखीयु थशे, जगमां जश मोहोटो लीजें रे ॥ क० ॥ १५ ॥ मुज लोचन दीधा थकी, तुममां निश्चय ठे शक्ति रे ॥ शी एहवी वस्तु जगें, कल्पवृक्ष करे नहीं व्यक्ति रे ॥ क० ॥ १६ ॥ पर उपकार परम थशे, एह साजो थाशे कुमार रे ॥ परजानें सुख आपशे, न्याय धर्मी शुन आचार रे ॥ क० ॥ १७ ॥ ए तुमनें सवि जश अछे, नारीनां सुणी वयण कुमार रे ॥ तिहां जावु अगी करे, करवा तेहनें उपकार रे ॥ क० ॥ १८ ॥ निज नाग्य परीक्षा एम करी, पाम्या एणी रीतें नारी रे ॥ श्रीजयानद मुदित थया, जे नित्य नित्य पर उपकारी रे ॥ क० ॥ १ए ॥ त्रीजे खर्मे त्रेवीशमी, ढाल नांखी चढते रंगें रे ॥ त्रीजो खम्म पूरण थयो, ए रासमां रंग अनंगें रे ॥ क०॥ २० ॥ सत्यविजय पन्यासना, वर कपूरविजय पन्यास रे ॥ खिमाविजय शिष्य तेहना, पूरव मुनि मुद्रा जास रे ॥ क० ॥ २१ ॥ जिनविजयो जगमां जयो, जेहना ठे शिष्य अनेक रे ॥ तेहमां उत्तम विजयजी, थया पंमित वारु विवेक रे ॥क०॥ ॥२२॥ तस पदपकज अलि समो, शिष्य पद्मविजय जसु नाम रे ॥ तास कृपाथी नांखीयो, खंम त्रीजो ए अनिराम रे ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७२ए ॥

॥ इति श्रीमत्सविद्म पक्षीय पंमित प्रवर पंमित श्रीउत्तमविजयजीगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबधे श्रीश्रीजयानद केवलि चरित्रे श्रीजयानदकुमारस्य देशांतरचर्यायां गगदत्तपरिव्राजकोपकार मलय मालक्षेत्रपालजय तदर्पितसमहिमसौषधिपचकप्राप्ति तत्पूर्वमत्रिनवपत्नी

हपजीव रतिसुंदरी विजयसुंदरी महावदातमहोत्सवपाणिग्रहणलक्ष्मीपुंज दृष्टांत तृतीयव्रतपालनादि फलदर्शन कमलसुंदरीकरग्रहणप्रस्तावनादि व र्णनोनामा तृतीय खम्ड समाप्त ॥

॥ प्रथम खंम्डे गाथा ॥ ४४४ ॥ द्वितीयखंम्डे गाथा ॥ ८६६ ॥ तृतीयखं म्डे गाथा ॥ ७२८ ॥ सर्वमली गाथा ॥ २१३८ ॥ तथा प्रथमखम्डे उक्त श्लो क ॥ १३ ॥ द्वितीयखम्डे उक्त श्लोक ॥ १८ ॥ तृतीखम्डे उक्त श्लोक॥११॥ सर्व मली उक्तश्लोक ॥४३॥ तथा सवईयो एक,समस्या बे ॥ इति ॥ तथा प्रथम खम्डे ढाल ॥ १५ ॥ द्वितीयखम्डे ढाल ॥ २३ ॥ तृतीयखम्डे ढाल ॥ २३ ॥ सर्व मली ढाल ॥ ७१ ॥ थई छे

॥ इति तृतीयखम्ड संपूर्णतामगमत् ॥

॥ अथ चतुर्थखंम्ड प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन नायक शिवकरण, वंदु श्रीवर्द्धमान ॥ चोथा खम्डनुं चोंपशुं, वर्णवशु व्याख्यान ॥१॥ सांभलजो श्रोता सवे, आलस दूर उतार ॥ निद्रा विकथा नवि करो, वाधे जिणथी विकार ॥ २ ॥ प्रिया सहित पल्यकथी,चा ल्यो गगन विचाल ॥ आव्यो कमलपुरें कुअर, करे वछित ततकाल ॥ ३ ॥ पर्ल्यंक किहांएक गोपव्यो, वद्यानें एकत ॥ बुद्धिनिधि शावर तणु, रूप करें रुचिवंत ॥ ४ ॥ प्रिया शावरी रूपथी,सार्थे लेई सार ॥ वेष धरी वैद्यज तणो भमता स्त्री भरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ उषधिनी हवे ग्रंथि करी, चाल्यो काखमांहे ते धरी ॥ अलंकार प हेर्या बहु मूल, बिहु जण धरतां सबल डकूल ॥ १ ॥ पेठो नयरीमा अ भिराम, सार्थे लेइ पोतनी वाम ॥ पोहोतो एक शेठनें घर द्वार, शेठनें कहे सांभलो एणी वार ॥ २ ॥ चित्रशाला द्यो रहेवा भणी, भाडु आपु तुमनें गणी ॥ शेठ कहे तुमें कोण छो कहो, किहांथी आव्या किहां वासें रहो ॥ ॥ ३ ॥ ते कहे निश्च हुं वैद्य सुजाण, टाळुं रोग विविध दुःख खाण ॥ कौतुकथी भमु देशांतरें, नारी साथ राखुं शुभ परें ॥ ४ ॥ नयर दीठु ए ऋद्धिनु ठाम, वसवा माग्रु तुमचुं धाम ॥ शेठ कहें कोपें कलकल्यो, नि

छवाडे जा तु दलफल्यो ॥ ५ ॥ निल्ल अशुचिनें अन्नाए, किहा मुज घरमां रहेवा गए ॥ किहां मीयांने किहां महादेव, किहां वाणिग घरें तु रहे हेव ॥ ६ ॥ अर्ह लक्ष ल्यो नाडुं तुमो, थोडा दिन रहेशु इहां अमो ॥ एम कही आप्यु एक रत्न, शेठ विचार करे शुन्न यत्न ॥ ७ ॥ धनद हशे के विद्याधरो, के ईश्वर दानें आकरो ॥ एहवी दान लीला किहां होय, इव्य देखि चित्त चलियो सोय ॥ ८ ॥ शेठ निल्लनें आदर करी,कहे ल्यो चित्रशाला मन हरी ॥ शुचि अशुचि न जाति विचार, गुण ते पवित्र अछे ससार ॥ ए ॥ नारी सहित चित्रशालायें रहे, शेठ देखी चित्तमां गहगहे ॥ रत्नें घर वाखरी तस दिये, आणद शेठने न माये हिये ॥ १० ॥ रत्नें मनोरथ पूरा करे, नारी रूपें रत्ना हरे ॥ तेहशु नोगवे नवला नोग, श्रीजयानद ते शुन्न सयोग ॥ ११ ॥ विविध लोकनां औषध करे,लोक तणा बहु रोगज हरे ॥ शबर वैद्य परगट कह्यु नाम, नवि लिये कोइ पासेंथी दाम ॥ १२ ॥ वीणा प्रमुख वजावे आप, राग तणा वली करे आलाप ॥ वीण वजावे कोइ दिन नारि, गायन पासें सुणे केइवार ॥ १३ ॥ नाच करावे नाटकणी पास, अठलक दान दीये वली तास ॥ नाम शबर वैश्रमण ते कह्युं, लोकें हर षथकी चित्त लह्यु ॥ १४ ॥ ए नामें थयो लोक प्रसिद्ध, स्वेछायें विलसे जेम सिद्ध ॥ एकदिन नगर उद्यान मकार, एक ब्राह्मण उत्तम शिरदार ॥१५॥ नरतें कीधा जे आरय वेद, छात्र नणावे बहु गत खेद ॥ महाबुद्धिवत ते खोले विप्र,विप्र विना वेद नापे क्षीप्र ॥ १६ ॥ एम चितिनें पूछे शेठ, जाशुं अमें हवे इहांथी नेठ ॥ घर वाखरी सोंपी लेई नारी, नीकलीयो हवे रात मकार ॥ १७ ॥ रात रह्यो हवे तेह उद्यान, विप्ररूप कीधु असमान ॥ ब्राह्मणीरूपें नारी करी, हेतु तास कह्यो चित्त धरी ॥ १८ ॥ यौवनवय पहेस्रो अलकार, पेठा विहाणें नगर मजार ॥ वणिकगृहें पूरवनी परें, नाडु आपी रहे शुन्न परें ॥१ए॥ घर वाखरी तेणें पण दीध,बहु दास दासी तिहां वली कीध ॥ परीक्षा करी वृद्ध स्त्री वली एक, राखी नारी पासें सुविवेक ॥२०॥ विनय उपाध्यायनो करी हवे, पूजा करवा रतन ते ठवे ॥ उपाध्याय नणावे तास, वेद ते नीति धरम प्रकाश ॥ २१ ॥ चोथे खमें पहेली ढाल, श्रीजयानदनु चरित्र रसाल ॥ पद्म कहे सुणो बाल गोपाल, सुणतां होवे मगल माल ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाग्यथी अल्प दिनें नण्यो, प्रज्ञावत प्रधान ॥ पदानुसारिणी पामीयो, सकल वेद सावधान ॥ १ ॥ प्रगसा बहु पामीयो, गुरु पूजे गुरुदान ॥ दानें गात्र प्रमोदिया, चमक्या सहु पहिचान ॥ २ ॥ नोग रसाला नोगवे, पूरव परें प्रसिद्ध ॥ ब्रह्मवैद्य विख्यातथी, सहुमां थयो समृद्ध ॥ ३ ॥ करे उपकार कोडघो गमे, गीत नाटकने गान ॥ राजपथे रलीयामणो, देवे अतिशय दान ॥ ४ ॥ वैद्य वैश्रमण कह्यो वली, दानें अतिदातार ॥ रूप सु वर्णनें रत्ननु, लेखु नहीं लगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ नाव श्रावकना नांखीयें ॥ ए देशी ॥

॥ पटह वाजतो एकदिनें, सांनलीयो निज कानें रे, बहुमानें रे, नवि आव्यो राजाकनें ए॥१॥ कन्या लोन शका धरी, हवे लोक कहे शु ए देव रे, नहीं टेव रे, अधर जावानी एहने ए ॥ २ ॥ अश्वनीपुत्र ए पण नही, एह रहे नित्य एक रे, सुविवेक रे, दाता एह धनद जिस्यो ए ॥३॥ नेषज दान लीला वली, सकल कला नमार रे, नूठे प्यार रे, एहवा दीठ न सांनल्या ए ॥ ४ ॥ पहेलां निक्ष एक एहवो, दीठो तेहवो एह रे, गुणगेह रें, मानु रूपांतरें आवियो ए ॥ ५ ॥ एम विकल्प सहु करे, एकदा बहुजन परिवारें रे, सुन गारें रे, वेगो राज्यपंथें जइ ए ॥६॥ वीणा वजावे कौतुकी, बहु मित्रशु गावे हर्षे रे, श्रुति वर्षे रे,अमृत रस सुन स्वरथकी ए ॥ ७ ॥ दासी वृंद हवे जायती, पाणी नरवा काम रे, ताम रे, कुब्जा दासी एक ठे ए ॥ ८ ॥ गीत रसें कनी रही, पूछे ब्राह्मण तास रे, किहां वास रे, ताहरोनें तुं कोण ठे ए ॥ ९ ॥ दासी कहे सुण साहेबा, नोगवती नृप राणी रे, तस जाणी रे, हु कुब्जा दासी घरें ए ॥ १० ॥ किम कुब्जा ब्राह्मण नणे, सा कहे मुज वायुदोषें रे, विप्र नाषे रे, वैद्य कहो कोइ नवि मल्यो ए ॥ ११ ॥ सा कहे बहु उंषध कर्यां, पण न मल्यो तुम सम कोइ रे, मुज दोइ रे, नाग्य मद ते कारणें ए ॥ १२ ॥ तेडी दासी ढूकडी, जोइ नसा जाल मर्मे रे, सुन कर्मे रे, मुष्टियें हणी हणी सज करी ए ॥ १३ ॥ तेह सरल थई हरषती, बोले एम ते वाणी रे, बहु प्राणी रे, नाग्यथकी तुमें आविया ए ॥ १४ ॥ आवो नरपतिनें घरें, तस पुत्र नीरोगी कीजें रे, लीजें रे, पूजा नूपति लोकनी ए ॥ १५ ॥ द्विज कहे जा ताहरे घरे, नहीं राज्य

कुलें मुज काम रे, राणी धाम रे, आवी ते उतावली ए ॥१६॥ राणी कहे तु कोण छे, कहे हु कुब्जा तुम दासी रे, नहिं हांसी रे, राणी कहे केम स रल तुं ए ॥१७॥ तव कहे वैद्य वैश्रवणनी, वात ते अचरजकारी रे, मनो हारी रे, सांजली वात राणी वदे ए ॥१८॥ किहां छे तव दासी कहे, श्री पंथे छे तेह रे, नेह रे,आणीनें राणी कहे ए ॥१९॥ पुत्र साजो करे के नहीं, तव दासी कहे जग ते नहीं,जे अहीं नहीं,शक्ति ते अद्भुत देखीयें ए ॥२०॥ राणी कहे जई रायनें, राजा मूके परधान रे, बहुमान रे, करीने तेहनें तेडवा ए॥ २१ ॥ तव आव्यो नृप परषदा, उंषधिगांठडी लेई रे, सुखसेंई रे, यज्ञोपवीतादिक धरी ए ॥ २२ ॥ आशीष दीये नरनाथनें, हित मितनक्की वामशायी रे, निर्मायी रे, गदपरें शत्रुजय करो ए ॥ २३ ॥ यत ॥ भुजा नोहितमितपक्कमेव सात्म्य कुर्वाण , अमसुपसीह वामशायी । स्त्रीसेवा नि लमलमूत्रशल्यमुचन्, नृतांतर्गेवगणवक्षयारिचक्रम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ आ शीर्वादमां सांजली, नैषज्यतत्त्वनी वात रे, हर्ष जात रे, कनक आसन बेसाडीयो ए ॥ २४ ॥ नृप पूछे नइ कोण छो, आव्या किहांथी बुद्धिनि धान रे, पुरवान रे, तुम आवे वाध्यो घणुं ए ॥ २५ ॥ ते कहे ब्राह्मण छु अमें, गिरिपासें वसे मुज तात रे, तस ज्ञात रे, वपदेशें बहु उंषधि ए ॥ २६ ॥ पर्वत वनमां बहु नम्यो,उलखी उंषधि बहु लीधी रे, कीधी रे, नी रोगी जन श्रेणीनें ए ॥ २७ ॥ गाम नगर फरतो फरु, एक कौतुक परउप कार रे, आगार रे, आव्यो एणीपरें तुमतणे ए ॥ २८ ॥ चोथे खमें ए क ही, पद्मविजय वर ढाल रे, रसाल रे, बीजी सुदर रासमा ए ॥ २९॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे रुडु कसु,आव्या पर उपकार ॥ बोल्या ते पालो वली,तुम उत्तम अवतार ॥ १ ॥ माहरे सुत महा रोगीयो, सकोचाणु शरीर॥ औ पध शक्ति अचित्यथी, परी करो मुज पीड ॥ २ ॥ तुम आकार वचन तथा, महाशय प्रकृति महत, उपकारी अवनीतलें, प्रगटया तुमें पुण्यवत ॥ ३ ॥ नदन तुमचो निरखीयें, वाडव बोले वाणि ॥ साध्य हशे तो साधशु, प्रथम करु पहिचाण ॥ ४ ॥ मत्री राय वाडव मुखा, सार्थे लेइ सनूर ॥ निजनदन निरखाववा, हितथी कह्यो हजूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ झांझरिया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ माया विप्र कहे सुणोजी, रोग ए विषम विकार ॥ उंषधि साध्य के वल नहींजी, जोइयें मंत्र प्रकार ॥ १ ॥ सुविवेक साजन, जूउं जूउं शक्ति अचिंत्य ॥ ए आंकणी ॥ मंत्र उंषध प्रकारथीजी, टालशुं रोग महंत ॥ मंत्रपूजामां जोइयेंजी, उपकरणां अत्यंत ॥ सु० ॥ २ ॥ राजायें पण आणीयोजी, पूजानो सामान ॥ वधावी परअचि वलीजी, आमंबर असमान ॥ सु० ॥ ३ ॥ लोक करावी वेगलांजी, मंमल रचियुं ताम ॥ चंदन होमी अग्निमांजी, मंत्र बोले हवे आम ॥ सु० ॥ ४ ॥ उँ नमो अर्हते वलीजी, उँ ह्रीं सिद्ध सनाह ॥ नमो उपट् इत्यादिकाजी, मंत्र उच्चरे निर बाह ॥ सु० ॥ ५ ॥ ध्यान मुद्रा आसन करेजी, अगर कपूरनें फूल ॥ होम करी वलि नाखतोजी, दश दिश तेह अमूल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मंमल पासें थापीयोजी, नंदन नृपनो तेह ॥ औषधि जलधारा थकीजी, सींचे तेहनो देह ॥ सु० ॥ ७ ॥ सज्ज थयो कुंवर हवेजी, परिअचि काढी जाम ॥ कुंवरनें जोवा नणीजी, नरपति आव्यो ताम ॥ सु० ॥ ८ ॥ करी कुमर साहामो जइजी, प्रणमे नरपति पाय ॥ राजा पण सुत वैद्यनेंजी, गाढ आलिंगन दाय ॥ सु० ॥ ए ॥ सोवन आसन कपरेंजी, त्रिहुं बेगं तेणी वार ॥ मंत्री सामंत सहु मल्यांजी, हियडे हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ विविध वाजित्रना शब्दथीजी, गाजी रह्युं आकाश ॥ गीत गान गायन करेजी, मोद नरे सुविलास ॥ सु०॥ ११ ॥ सोहासण मंगल तणां जी, गाये गीत रसाल ॥ हरखे माता लुंछणांजी, धरती मोद विशाल ॥ ॥ सु० ॥ १२ ॥ माया विप्र नणी कहेजी, हर्षित ते नूपाल ॥ नाग्य अमारु मोटकुंजी, जेणें तुमें मलिया दयाल ॥ सु० ॥ १३ ॥ मंत्रवादी तुमें मोटकाजी, अहो उंषधि महिमाय ॥ तुम सम उपकारी नहींजी, जगमांहे कोइ नाय ॥ सु० ॥ १४ ॥ सर्व राज्य तुम आपतांजी, करणीया न थवाय ॥ पण अमें आपु शक्तिथीजी, लेइ अम्ह हर्ष कराय ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ जे तुमनें मनमां गमेजी, देश उत्तम ल्यो एक ॥ एम कही नृपति मंत्रवीजी, बीजा पण जे अनेक ॥ सु० ॥ १६ ॥ वस्त्रादिक बहु मूलनांजी, रत्न तणा अलंकार ॥ देवा तैय्यारी करीजी, विप्र नणे नाकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ मायाविप्र कहे सुणोजी, करी परनें उपकार ॥ पुण्य

अर्थ इछे नहीं जी, सज्जन प्रत्युपकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ करी चिकित्सा अर्जीयुंजी, पूर्वे धन असराल ॥ करु निर्वाह तेर्णे हवेजी, अधिक करु छु आल ॥ सु० ॥ १९ ॥ लाभें लोभ वधे घणोजी, संतोष सुखनु मूल॥ मात्राहीन जिते नहीजी, मात्राधिक प्रतिकूल ॥ सु० ॥ २० ॥ इड्यकी अधिको कह्योजी, संतोषी सुखलीन ॥ देश ते माहरा धर्ममांजी, विघन करे अति पीन ॥ सु० ॥ २१ ॥ राजतीर्थमां ए कह्योजी, धर्म वली लोक नें हर्ष ॥ तेहमां केम हवे वरषियें जी, केम अंगारानो वर्ष ॥ सु० ॥२२॥ तो पण अवसरें जाणछुजी, चोथे खंमें ढाल ॥ त्रीजी पद्मविजय कहीजी, सुणतां मंगलमाल ॥ सु० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इत्यादिक वाणी अवल,निरखी वली निरीह ॥ दान अधिक दीपे घणुं, लह्यो धनाढ्यमां लीह ॥ १ ॥ नृपति कहे एमज नखुं, पण कहो एह प्र पंच ॥ किहां रहो तव ते कहे, सघलो नाटकसच ॥ २ ॥ नारीशुं रहुं छुं नरपति,अवनीपति कहे एम ॥मुजघर रहियें मोजशुं,किहांयें रहो हवे केम ॥ ३ ॥ विप्रें ते मान्युं वचन, नरपति तेडवा नार ॥ सुखासन तव सन्मुखें, मोकले महापरिवार ॥ ४ ॥ तास प्रिया दासी तथा, वस्तु वीणादिक सर्व, चित्रशालः तेहनें उचित, आपे राय अगर्व ॥ ५ ॥ चाकर प्रमुखनें चोपशुं, मोकले सेवा मांहिं ॥ नोजन स्नानादिक नला,अधिक करे वत्साहिं॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जीरे जी ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे म्हारे एकदिन ते नरनाथ, बुद्धिवंत मंत्री नली जीरेजी ॥ जी०॥ नोगवती वली नारि, वेग विचार करे वली जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ देशु महोटो देश, तेहमां कांइ हाणी नही जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या देशुं केम, किहां क्षत्री ब्राह्मण कहीं जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ निक्षाचर कुलें एह, राज कन्या केम दीजीयें जीरेजी ॥ जी० ॥ विण दीधे जाये बोल, जगमां अप यश लीजीयें जीरेजी ॥ ३ ॥ जी०॥ नरपति वचन अमोघ, व्याघ्र नदी न्याय आवीयो जीरेजी ॥ जी० ॥ कहे मंत्री स्यो खेद, ए मुज मनमां नावीयो जी रेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ विप्र मात्र नही एह, लक्षण शौर्य्य पराक्रमें जीरेजी ॥ जी० ॥ एहना गुण नृप योग्य, बीजे गाम न होये किमे जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ कमलसुंदरी नाम, कन्या दीजें एहनें जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या नाग्य

प्रमाण, धीजा तो साखी तेहनें जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ नृप मानी वात, राणी पण अंगीकरे जीरेजी ॥ जी० ॥ नगर पदमपुर नाम, तिहां एक वात इण अवसरें जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ तिहां पदमरथ राय, पुत्री रूपवती घणुं जीरेजी ॥ जी० ॥ ते ऊपर करी रोष, वली अतिशय राजन पणु जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ तादृश भिल्लनें दीध, बहु ठबको मंत्री दीये जीरेजी ॥ ॥ जी० ॥ राणी पण करे सोर,तव नृप धरे अनुशय हिये जीरेजी ॥ ९ ॥ जी० ॥ भिल्लनें शोधवा ताम, भिल्लवाडे नर नीकल्या जीरेजी ॥जी०॥ शोध करी बहु तास, पण नवि कोइ थानके मल्या जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ नाना पुरवर गाम, पालि गिरि वन निर्जनरें जीरेजी ॥ जी० ॥ शोध करा वे राय, पण नवि लाधा कोइ परें जीरेजी ॥ ११ ॥ जी० ॥ स्नेह सुतानो आणि, शोच करे नृप दुःख धरी जीरेजी ॥ जी० ॥ अनुक्रमें वारी शोक, वेगो छे परपद करी जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ एणे अवसर नरसिंह, नयर पुरंदरनो धणी जीरेजी ॥जी०॥ नर कुंजर तस पुत्र,आव्या तिहां सेवा भणी जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ जयसुंदरी नृप धूय, राग थयो तेह ऊपरें जीरेजी ॥ जी० ॥ रायें दीधी तास, उत्सव मोमघो भली परें जीरेजी ॥ १४ ॥ ॥ जी० ॥ निजनयरें गयो तेह, भोग भोगवे तेहशुं जीरेजी ॥ जी० ॥ कमला नयणें देख, दुःख शलक्यु घण नेहशुं जीरेजी ॥ १५ ॥ जी०॥ निज पुत्रीनी शोध, नवि लाधी वली शोक्यनी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्रीनो विवाह, देखि वियोग विलोकिनी जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ रुदन करी बहु काल, राय ऊपर क्रोधें भरी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्री विहवी मुक्क, कांइ मिलन आशा धरी जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ केइक दिवस गमाय, देखी जयसुंदरी तणो जीरेजी ॥ जी० ॥ विवाह शोकनें मोद, वाजित्रादि उत्सव घणो जीरेजी ॥ १८ ॥ जी० ॥ क्रोध ईर्ष्यानें शोक, दुःखथी तिहां नवि रही शकी जीरेजी ॥ जी० ॥ लेई निज परिवार, रायतणी आज्ञा थकी जीरेजी ॥ १९ ॥ ॥ जी० ॥ चाली तातनें गेह, नयर उद्यानें आवी रही जीरेजी ॥ जी० ॥ दासी मोकली ताम, निज भाई पासें वही जीरेजी ॥ २० ॥ ॥ जी० ॥ अंतेउर परिवार, लेई नृप साहमो गयो जीरेजी ॥ जी० ॥ प्रणामे बहेनना पाय, देखी दुःखीयो अति थयो जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ दुःखथी रोती ताम, भूपति आशासन करे जीरेजी ॥ जी० ॥ भूपति पूछे

एम, केम श्राव्या तुमें एणी परें जीरेजी ॥ २२ ॥ जी० ॥ रुदन करो केम एम, तव मूलथी मांमी कहे जीरेजी ॥ जी० ॥ सांजली नृप खेदाय, डुःख तेहथी अधिकु लहे जीरेजी ॥ २३ ॥ जी० ॥ निंदे जगिनीनाथ, नास्तिक वादि शिरोमणि ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ मत्र्यादिक तस मूढ, निंदे सहुनें अवगणी जीरेजी ॥ २४ ॥ जी० ॥ खेद न कीजें बहेन, देशु शिक्षा अव सरें जीरेजी ॥ जी० ॥ कर्म तणो अपराध, बीजा निमित्त पण धरे जीरे जी ॥२५॥जी०॥ एम आश्वासी तास, चोथे खंमें ए कही जीरेजी ॥जी०॥ चोथो ढाल रसाल, पद्मविजय गुरुथी लही जीरेजी ॥ २६ ॥ १२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवो ए अपराधीयो, शिक्षा देशुं तास ॥ सघले शोध करावशुं, पुत्री तुम चिहु पास ॥ १ ॥ जाणेजी लावी जली, प्रगुण करावु प्राय ॥ ब्रह्म वैश्रवण वारू अछे, वश्च ते आवे दाय ॥ २ ॥ पूछे कोण तव जूपति, सघलो कहे संबंध ॥ निज सुत कह्यो नीरोगीयो, परणे तेह प्रबंध ॥ ३ ॥ सांजली तेह संबधनें, आणंद अंग न माय ॥ पुत्री डुःख पाछु पडघु, सुखनी वात सुणाय ॥ ४ ॥ जागवती सुख जामिनी, प्रणमे नणदना पाय ॥ आलिंगन आशीष ये, हियडे हर्ष न माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ देश मनोहर मालवो ॥ ए देशी ॥

॥ थापी सुखासनें बहेनीनें, लावे निज आवास ललनां ॥ महा महो त्सव अति गौरवें, रायनें हर्ष उल्लास ललनां ॥ १ ॥ पुण्यें सवि आवी म ले ॥ ए आंकणी ॥ विजयशूर जत्रीज जे,फइनें प्रणमे पाय ल० ॥ आशीष देइ शिर चुंबती, लुंठणां वलीय कराय ल० ॥ पु० ॥ २ ॥ मणिमुक्ताफलथी करे, वर्धापन सुविशेष ल० ॥ कुल जाग्यादिक वर्णवे, ब्रह्म वैश्रवण विशेष ल०॥पु०॥३॥ सर्वनें सतकारी करी,रहे सुखें जाइनें गेह ल० ॥ ब्रह्म वैश्रवण प्रिया प्रत्यें, देखी उपजे नेह ल० ॥ पु० ॥ ४ ॥ पासें राखे ब्राह्मणी, वात करावे प्रेम ल० ॥ मातने उंलखी ब्राह्मणी, मात न उंलखे नेम ल० ॥ पु० ॥ ५ ॥ हवे नरपतियें निमित्तियो, तेडयो पूछवा हेत ल० ॥ पूरव परि चित रायनो, पुत्र निमित्त संकेत ल० ॥ पु०॥६॥ जाणेजी शुद्धि पूछतो,ते कहे सांजलो राय ल० ॥ कालें निजपति कुद्धिष्ठ, मलशे इणहिज ठाय ल० ॥ पु० ॥ ७ ॥ अधिक न जाणु एहथी, रायें करी सतकार ल० ॥ वि

प्रमाण, थीजा तो साखी तेहनें जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ नृपें मानी वात, राणी पण अंगीकरे जीरेजी ॥ जी० ॥ नगर पदमपुर नाम, तिहां एक वात इण अवसरें जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ तिहां पदमरथ राय, पुत्री रूपवती घणु जीरेजी ॥ जी० ॥ ते ऊपर करी रोष, वली अतिशय राक्षस पणु जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ तादृश निद्रानें दीध, बहु ठवको मंत्री दीये जीरेजी ॥ ॥ जी० ॥ राणी पण करे सोर, तव नृप धरे अनुशय हिये जीरेजी ॥ ९ ॥ जी० ॥ निद्रानें शोधवा ताम, निद्रावाडे नर नीकल्या जीरेजी ॥ जी० ॥ शोध करी बहु तास, पण नवि कोइ थानके मल्या जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ नाना पुरवर गाम, पालि गिरि वन निजनरें जीरेजी ॥ जी० ॥ शोध करा वे राय, पण नवि लाधा कोड परें जीरेजी ॥ ११ ॥ जी० ॥ स्नेह सुतानो आणि, शोच करे नृप डुःख धरी जीरेजी ॥ जी० ॥ अनुक्रमें वारी शोक, वेगो छे परपद करी जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ एणे अवसर नरसिंह, नयर पुरंदरनो धणी जीरेजी ॥जी०॥ नर कुंजर तस पुत्र, आव्या तिहां सेवा भणी जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ जयसुंदरी नृप धूय, राग थयो तेह ऊपरें जीरेजी ॥ जी० ॥ रायें दीधी तास, उत्सव मांझयो जली परें जीरेजी ॥ १४ ॥ ॥ जी० ॥ निजनयरें गयो तेह, जोग जोगवे तेहशुं जीरेजी ॥ जी० ॥ कमला नयणें देख, डुःख शल्यक्यु घण नेहशुं जीरेजी ॥ १५ ॥ जी०॥ निज पुत्रीनी शोध, नवि लाधी वली शोक्यनी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्रीनो विवाह, देखि वियोग विलोकिनी जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ रुदन करी बहु काल, राय ऊपर क्रोधें नरी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्री विहवी मुक्क, कांइ मिलन आशा धरी जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ केइक दिवस गमाय, देखी जयसुंदरी तणो जीरेजी ॥ जी० ॥ विवाह शोकनें मोद, वाजित्रादि उत्सव घणो जीरेजी ॥ १८ ॥ जी० ॥ क्रोध ईर्ष्यानें शोक, डुःखथी तिहां नवि रही शकी जीरेजी ॥ जी० ॥ लेई निज परिवार, रायतणी आज्ञा थकी जीरेजी ॥ १९ ॥ ॥ जी० ॥ चाली तातनें गेह, नयर उद्यानें आवी रही जीरेजी ॥ जी० ॥ दासी मोकली ताम, निज जाई पासें वही जीरेजी ॥ २० ॥ ॥ जी० ॥ अंतेउर परिवार, लेई नृप साहमो गयो जीरेजी ॥ जी० ॥ प्रणामे बहेनना पाय, देखी डुःखीयो अति थयो जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ डुःखथी रोती ताम, नृपति अशासन करे जीरेजी ॥ जी० ॥ नृपति पूछे

कहे नटनें इस्युं, सातमे दिन तुमें सर्व ॥ श्रावजो एम कही वार्जिया, गया ते धरता गर्व ॥ ४ ॥ नटपेटकमां निरखीनें, कुमरे काढया केई ॥ युवती युवान यथा मति, सहुनें आदरसेंई ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ माली केरा बागमां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तेहनें सवि चातुरी, कला शीखवे सार रेलो ॥ श्रहो कला शीखवे सार रेलो ॥ सामग्री सवि मेलवी, करी सवि शणगार रेलो ॥ श्र० ॥ १ ॥ रायनें कही सातमे दिनें, श्राव्या सना मकार रेलो ॥ श्र० ॥ रंगमंमपमां उपविशे, नृप नृपपरिवार रेलो ॥ श्र० ॥ २ ॥ नगरलोक सवि तेडिया, तिम नटपरिवार रेलो ॥ श्र० ॥ बहेन कन्या निज राणीयो, यवन्यतर गार रेलो ॥ श्र० ॥ ३ ॥ ठिहुं ते सवि जोयती, हवे नाटक मांमे रेलो ॥ श्र० ॥ वंश वीणादिक वाजतां, मृदंग वली ताडे रेलो ॥ श्र० ॥ ४ ॥ नाटकिणी थानें ठवी, निजनारी सुजाण रेलो ॥ श्र० ॥ पात्र बीजां तस नूमिका, श्रनुसार प्रमाण रेलो ॥ श्र० ॥ ५ ॥ गधर्व गीत मधुर ध्वनि, गाये मनोहार रेलो ॥ श्र० ॥ तालनें लयना तानशु, माया बहु विस्तार रेलो ॥ श्र० ॥ ६ ॥ मांमयुं चरित्र ते आपनु, जय विजय दो जाय रेलो ॥ श्र० ॥ विजयपुरीना राजीया, पुत्र एकेक थाय रेलो ॥ श्र० ॥ ७ ॥ सिंहसार सुत प्रथमनो, श्रन्यायी तेह रेलो ॥ श्र० ॥ श्रीजयानंद बीजा तणो, ते गुणगणगेह रेलो ॥ श्र० ॥ ८ ॥ रातें पर्वत ऊपरें, केवलीनें पासें रेलो ॥ श्र० ॥ धर्म पामी देशांतरें, जाता उल्लासें रेलो ॥ श्र० ॥ ए ॥ विशालपुरें विद्या जल्या, परण्या नृपकन्या रेलो ॥ श्र० ॥ प्रतिबोधी गिरिमालिनी, देवी थई धन्या रेलो ॥ श्र० ॥ १० ॥ कनकपुरें जूवटु रम्या, परण्या नृप कुमरी रेलो ॥ श्र० ॥ प्रतिबोधि देवी रेहणी, ते श्रतिशय सुमरी रेलो ॥ श्र० ॥ ११ ॥ सुश्वर युद्ध कयु तेणें, कर्यो तापस बोध रेलो ॥ श्र० ॥ तस पुत्री परण्या वली, शूरवीर ते योध रेलो ॥ श्र० ॥ १२ ॥ मलयमाल क्षेत्र देवता, सायें युद्ध कीधु रेलो ॥ श्र० ॥ जींत्या तेहशु जेटले, उरवि वर दीधु रेलो ॥ श्र० ॥ ॥ १३ ॥ रत्नपुरें नाटक वली, रतिसुंदरी केरो रेलो ॥ श्र० ॥ पाणीग्रहण कर्युं तिहां, निजरूप नलेरो रेलो ॥ श्र० ॥ १४ ॥ ते सवि श्रनिनय विधियकी, नाटकमां देखावे रेलो ॥ श्र० ॥ पद्मपुरें नृप निजनें, कन्या परणावे रेलो ॥ श्र० ॥ १५ ॥ देवकुलें ते आंधली, निज श्रोषधि योग

सज्यों निमित्तियो, धरतो दर्प अपार ल० ॥ पु०॥ ८ ॥ बहेन भणी आवी कहे, ते पण हर्षित थाय ल० ॥ निज चर चिहुं दिशि मोकले, ग्राम पुरा दिक गाय ल० ॥ पु० ॥ ए ॥ दूत मृक्या वली चिहु दिशें, पण नवि लाधी शुद्धि ल० ॥ उद्मस्थनें पासे थकां, पण नवि चाले बुद्धि ल०॥ पु०॥१०॥ ब्रह्म वैश्रवण ते जाणतो, शोध निवारे न तेह ल०॥ नास्तिक शिक्षा दीधा विना, प्रगट थावं नहीं रेह ल० ॥ पु० ॥ ११ ॥ एहवी प्रतिज्ञा धारतो, प्रगट न थाये तेह ल० ॥ एणें अवसर परदेशियो, आव्यो कला गुणगेह ल० ॥ पु०॥ १२॥ नाटककला मद आकरो, आप समो परिवार ल० ॥ जे मुज जीते हु तेहनो, दास थाउ निरधार ल० ॥ पु० ॥ १३ ॥ एहवी प्र तिज्ञा प्रसिद्धथी, चारि तथा वली नीर ल० ॥ राजद्वारें उवे दर्पथी, राय कहे सुण धीर ल० ॥ पु० ॥ १४ ॥ नाटक देखाडो तुमें, जोउ कला अमें जेण ल० ॥ नाटक सूचि असि कुतना, अग्रनागें कखु तेण ल० ॥ पु० ॥ १५ ॥ देखी रीज लही सजा, अभिनय वीर चरित्र ल० ॥ नवरस दे खाडे तथा, सहु तन्मय थाय चित्र ल० ॥ पु० ॥ १६ ॥ राय प्रमुख सहु ए सजा, विस्मय लही दीये दान ल० ॥ लोक प्रशसा बहु करे, तास कला नहीं मान ल० ॥ पु० ॥ १७ ॥ ब्रह्मवैश्रवण तदा जणे, मुख मरडीनें वाणि ल० ॥ विपरीत चूनगादिका, देखाडे जह गाण ल० ॥ पु० ॥ १८ ॥ निज नाटकिया मेलवी, जांखे एम नृपाल ल० ॥ एहनें जीते एहवो, उे कोइ मुज पुर जाल ल० ॥ पु० ॥ १ए ॥ रायनें नाटकिया घणा, विविध क लाना जाण ल० ॥ पण नीचु मुख करी रह्या, जीतवा तास अजाण ल०॥ पु० ॥ २० ॥ ब्रह्मवैश्रवण कहे सुणो, शी कला एहमां नूप ल० ॥ ली लायें जीतुं एहनें, जुउ तमें अनुरूप ल० ॥ पु० ॥ २१ ॥ चोथे खमें ए कही, परवडी पंचमी ढाल ल० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ल० ॥ पु० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्म वैश्रवण वदे इश्युं, पुरुष नारी परिवार ॥ नाटकीयामां निरखीनें, आपो इणद्विज वार ॥१॥ तुम इछायें ल्यो तुरत, वातें न करो वार ॥ नृप कहे नटपेटकथकी, लेई शीखवो लार ॥ २ ॥ कुमर कहे करशु अमें, नाटक सातमे दिन्न ॥ जिम एहनो मद गली जशे, आखु तुम आसन्न ॥३॥ नरपति

पण आप न लेवे, तेहनुं दारिद्र कापे ॥ सा०॥ ५ ॥ विस्मय पाम्या तेहनी देखी, कला कलावत सघला ॥ सायर आगल कूप तणी परें, हस आगल जेम बगला ॥ सा० ॥ ६ ॥ पूरवलो नाटकियो चमक्यो, बटु नाटकीयो देखी ॥ हाथो बटुकनें पाये लाग्यो, बीजु सर्व उवेखी ॥ सा० ॥ ७ ॥ कहे ताहारो हु दास हु साचो, तें मुजनें आज जीत्यो ॥ कोइ मुजनें नवि जीत्यो नाई,एटलो काल व्यतीतो ॥ सा० ॥ ८ ॥ सूरय किरणें हिम गले जिम, तिम मुज मद तें गलीयो ॥ परिकर सहित हु ताहारो चाकर तुहि शिरोमणि मलियो ॥ सा० ॥ ९ ॥ बटुक कहे मुज नहीं प्रयोजन, जाउ आपणे गाम ॥ अधिक कला जगमांहे दीसे, मद करवो केणे काम ॥सा०॥ ॥ १०॥ रायें विसर्ज्यो नाटकीयो हवे, पोहोतो आपणे गाम ॥ सना विसर्जी नरपति बटुनें, पूछे एम अनिराम ॥ सा० ॥ ११॥ कमला पासें राखी पूछे, नृप अगज कोण एह ॥ जेहनो अनिनय तें देखाड्यो, नाटकमां धरी नेह ॥ सा० ॥ १२ ॥ निश्च ते देवकुलमांथी विहाणें, गयो किहां लेई नारी ॥ तव कहे बटुउ सांनल नरपति, आगल कहु अधिकार ॥सा०॥१३॥ प्रिया सहित हु कौतुक जोतो, पृथिवीमांहे नमतो ॥ विचित्र प्रकारनां नाटक करतो, नोगपुरें गयो रमतो ॥ सा० ॥ १४ ॥ रहेवा स्थानक बीजे न जड्यु, देवकुलमां कस्यो वास ॥ निश्च दपती दोय विपरीत देखी, मनमां थयो विखास ॥ सा०॥१५॥ निश्चनें पूछ्यु तुं कुरूपी,एह देवांगना नारी ॥ ताहारे हाथे केणीपरें आवी,कहे तु तास विचार ॥ सा०॥ १६ ॥ त्यारें तेणें सघलु नांख्यु, चरित्र पोतानु एह ॥ कोण नवि आदरे एह सुणीनें, चित्रकारी होये जेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ सुखनिड्रायें सहुये सूतां, विहाणु विहाणु ज्यारें, जागीनें अमें जोयु ततक्षण, नवि दीठु कोइ त्यारें ॥सा०॥१८॥ प्रिया सहित हु नमतो नमतो, आव्यो तुमचे गाम ॥ चित्रकारी ए चरित्र जाणीनें, नाटक कीधु आम ॥ सा० ॥ १९ ॥ आगल वात तो तेहज जाणे, चोथे खंमें ढाल ॥ सातमी पद्मविजय कहे सुणजो, आगल वात रसाल ॥ सा० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणी राजा विस्मय लह्यो, कमला कमल विकाश ॥ अहो बटु एम चितवे, स्यो ए वचन विलास ॥ १ ॥

रेलो ॥अ० ॥ नव लोचना फरी ततक्षणें,काढयो तस रोग रेलो ॥ अ० ॥ ॥ १६ ॥ जेम नीपन्यु तेम नाटकें, प्रत्यक्ष देखावे रेलो ॥ अ० ॥ निज पासे ते कुअरी, सहुने भ्रम आवे रेलो ॥ अ० ॥ १७ ॥ माता देखे विरूपी, सकल्प मन थाय रेलो ॥ अ० ॥ नाम परावर्त्तन करे, पद्मपुरनें जाय रेलो ॥ अ० ॥ १८ ॥ भोगपुरें छे राजीयो,नास्तिक भोगदत्त रेलो ॥ अ० ॥ सुजया विजया दोय छे,राणीयो वरगत रेलो॥अ०॥१९॥ सुदामा सुभगा थई, दोय पुत्री तास रेलो ॥अ०॥ पहेली दीधी कोइ रायनें, बीजी निज्ज सकाश रेलो ॥ अ० ॥ २० ॥ नाम परावर्त्तन सुख्युं, पण निजनें पासे रेलो ॥ अ० ॥ विजयसुंदरी सत्य देखीनें, माय हर्ष उल्लासे रेलो ॥ अ० ॥ २१ ॥ यवनिकामांथी नीकली, पुत्रीनें गले वलगी रेलो ॥ अ० ॥ भाग्यथी दीठी तुज प्रत्यें किहां गईती अलगी रेलो ॥ अ० ॥ २२ ॥ इत्यादिक कहेतां थकां, चोथे खमें ढाल रेलो ॥ अ० ॥ छठी पद्म कहे सुणो,आगें वात रसाल रेलो ॥ अ० ॥ २३ ॥ १७६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे ब्राह्मण आवीया, करी ब्राह्मणी ततकाल ॥ कहे माता कां इम करो, भ्रांतें अवळु भाल ॥ १ ॥ ए मादारी नारी अछे, सुभगा गामें सार ॥ पण तुम ए पुत्री नहीं, सरिखे रूप सभार ॥ २ ॥ रूप नाटकमां जे कह्यु, केम प्रमाण कराय ॥ अद्भुत व्रीडा खेद एम, व्याकुल तस व्यवसाय ॥ ३ ॥ मूकी दीधी मनथकी,करे विचार अनेक ॥ श्यु रूपांतरें ए हशे, अथवा सदृश अनेक ॥ ४ ॥ दीठे एहनें दरिशणे, वधतो स्नेह विशेष ॥ ब्राह्मणनी वनिता किसु,आगल लहिशुं अशेष ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ बेडले भार घणो छे राज,वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ सुभगा थई देवकुलमां साजी, तिहां लगें नाटक कीधु ॥ पण तिहां सर्व सभानु तेणें, चित्तडु चोरी लीधु ॥१॥ साजन प्रेम धरीनें एह, नाटक नवलु देखो ॥ ए आंकणी ॥ वलिय विशेषें अचरज देतें,नाटक नवलुं करतो ॥ कुतम्भे सूचि मांही तसपरें, फूल एक वर धरतो ॥ सा० ॥ २ ॥ ते ऊपर नाटक ते करतो, एम जे जे रस पोखे ॥ ते ते रसमां तन्मय सहुये, न रहे चित्त कोइ धोखे ॥ सा० ॥ ३ ॥ माह्ये पुरुषें नाटक मांहे,पण नवि दोष ते दीठो, भूजगादिक सूक्ष्म पण कोइ, जोतां नहींअ अनिठो ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ नृपमन्त्रीमुख दान दीये ते, नटपेटकनें आपे ॥ महादान

॥सा०॥ चढती जास जगीश तो ॥१७॥ राय कहे ब्राह्मण प्रत्यें ॥सा०॥ रूपें रंन समान तो ॥ कन्या मुज सुलक्षणी ॥सा०॥ परणो देउं बहु मान तो ॥१८॥ पुत्र साजो जे मुज करे ॥सा०॥ तेहनें कन्या दान तो ॥ करशु एह प्रतिज्ञा जे ॥सा०॥ न चले मेरुपरें धार तो ॥ १९॥ बहु बोले ए साचलु ॥सा०॥ पण एक सांजलो वात तो ॥ धान्यनी रांधणी ब्राह्मणी ॥सा०॥ छे माहरे सु जात तो ॥२०॥ अधिक प्रिया नवि जोश्यें ॥सा०॥ जेह सामान्य नर होय तो ॥ मदन कथानें सांजली ॥सा०॥ दोय प्रिया न करे कोय तो ॥ २१ ॥ कोण ते मदन कह्यो तुमें ॥सा०॥ वाडव नांखे ताम तो ॥ सरस कथा तुमें सांजलो ॥सा०॥ मदन कथा कहु आम तो ॥ २२ ॥ चोथे खंनें ए कही ॥सा०॥ पद्मविजय वर ढाल तो ॥ आठमी अधिके रंगशुं ॥सा०॥ सुणतां मंगलमाल तो ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखइछक सहु जीव छे, जाणे सुख नवि कोय ॥ जिहां आत्मिक सुख नीपजे, ते शिवमंदिर होय ॥ १ ॥ डुर्बुद्धि सुखभ्रांतिथी, रमे विषयमां लीन ॥ न गमे सज्जन पुरुषनें, जास सुकृत मति पीन ॥२ ॥ तेह विषय साधन अछे, मुख्यपकी वर नार ॥ तेतो क्रूर कुटिल कही, सापण परें निरधार ॥ ३ ॥ जूठी क्रोध मुखी घणु,निर्दयी साहस वंत॥ कलहकारी कपटी वली, पार लहे नहीं संत ॥ ४ ॥ कटुकविपाक परिणामथी, सुणजो इहां दृष्टांत ॥ मदन तथा धनदेवनु,विवरी कहु वृत्तांत ॥ ५ ॥ चरित्र देखी नारी तणु,विरम्या जेह महंत ॥ ते सुखीया संसारमां, ते पामे गुणवंत ॥६॥ तेपण ए दृष्टांतथी, जाणो सुगुण निधान ॥ केम आदरी छांमी वली,जाणी डुःख निदान ॥ ७ ॥ कौतुकनें वैराग्यनो, वात घणु सुविनोद ॥ सांजलतां सुख ऊपजे, पूरण लहे प्रमोद ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ माली केरा बागमां, दोय नारिंग पक्के रेलो ॥
अहो दोय नारिंग पक्के रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीप लख जोयणो, जगतीशुं सोहे रेलो ॥ अहो जगतीशुं सोहे रेलो ॥ मेरुपर्वत मध्यजागमां,देखो मन मोहे रेलो ॥अ०॥१॥ तेहथी दक्षिण दिश जलु, क्षेत्र जरत देदारु रेलो ॥ अ० ॥ वचमां नग वैताढ्य छे,रूपानो वारू रेलो ॥अ०॥२॥ तेहथी दक्षिण जरतमां, साहे सन्निवेश रेलो ॥अ०॥

॥ ढाल आठमी ॥ तेह नगरमांहि वसे, साहेलडी रे ॥ ए देशी ॥

॥ भाइ नगिनी एम चिंतवे ॥ साहेलडी रे ॥ एहनां रूप अनुसार तो ॥ दा न धनादिक नवि घटे ॥ सा० ॥ वरसे जेम जलधार तो ॥१॥ विप्ररूपें जि नराज हशे ॥ सा० ॥ अथवा उत्तम कोइ विप्र तो ॥ चेष्टा गहन एहनी घ णु ॥ सा० ॥ मालिम न पडे क्षीप्र तो ॥ २ ॥ ब्राह्मणी रूपें मुज सुता ॥ ॥ सा० ॥ के अथवा अन्य एह तो ॥ कलावतनां चरित्रनी ॥ सा० ॥ को ण जाणे गति जेह तो ॥ ३ ॥ ए हो के अथवा अन्य हो ॥ सा०॥ पण एक निश्चय थाय तो ॥ कलावत कोइ भाग्यनिधि ॥ सा० ॥ परण्यो मुज सुता आय तो ॥ ४ ॥ दिव्यनेत्रवती थई ॥ सा० ॥ दुःख तणो बहु गाय तो ॥ एह बटु इहां रहेतां ॥ सा०॥ जाणशु आगें जे थाय तो ॥ ५ ॥ क मला एणीपरें चिंतवी ॥ सा० ॥ भांखे भाइनें एम तो ॥ कमलसुंदरी दीजी यें ॥ सा०॥ पूरो प्रतिज्ञा नेम तो ॥ ६ ॥ जिम तिम राखो एहनें ॥सा०॥ एणी परें करीय विचार तो ॥ नरपति बटु तेडी कहे ॥ सा०॥ तुम विज्ञान अपार तो ॥७॥ जे नवि दीठी न सांभली ॥सा०॥ तेह कला तुम पास तो॥ एकज नाटकनी कला ॥ सा० ॥ देखाडी सुविलास तो ॥ ८ ॥ माहारी उन्नति बहु करी ॥सा०॥ बहोंत्तेर कला निधान तो ॥ शोल कलायें चंइमा ॥सा०॥ नवि होये तुम समान तो ॥९॥ रहेवु मुज पासें तुमें ॥सा०॥ इष्ट दर्शन तुम मुझ तो ॥ अंगीकार वाडव करे ॥सा०॥ पण नवि लहे कोइ गुझ तो ॥१०॥ सहु निज निज थानक गया ॥सा०॥ स्तवता तास विज्ञान तो ॥ वधते प्रेमें बटुप्रिया ॥सा०॥ कमला करी सनमान तो ॥ ११ ॥ राखे पुत्रीनी परें ॥सा०॥ करे नित्य प्रीति आलाप तो ॥ राज्य लाभादिकथी घ णो ॥सा०॥ लहे संतोषनो व्याप तो ॥ १२ ॥ कमलसुंदरी हवे एकदा ॥सा०॥ कहे निज मातनें एम तो ॥ ब्राह्मणनें मुज नरपति ॥सा०॥ हजीअ न आपे केम तो ॥ १३ ॥ आप प्रतिज्ञा पूरवा ॥सा० ॥ सज्जन न करे वार तो ॥ नाटकथी रीझी तेणें ॥सा०॥ बहु वांछे भरतार तो ॥१४॥ राणीयें कह्यो रा यनें ॥सा०॥ निजपुत्री अभिप्राय तो ॥ भूपति सांभली हरषियो ॥सा०॥ तस आशय शुभ गाय तो ॥१५॥ एक दिन शेठ सेनापति ॥सा०॥ मंत्री सामंत परिवार तो ॥ बेठो पूरीने सभा ॥सा०॥ दीपतो भूभरतार तो ॥ १६ ॥ ब्रह्म वैश्रवण ते आविया ॥सा०॥ देई नृपनें आशीष तो ॥ बेठो रायनें ढूकडो

ते मुनिराजनें, दूर ठमी नार रेलो ॥ श्र० ॥ सयम लेइ सुखीया थ या, पाम्या नवपार रेलो ॥ श्र० ॥ २० ॥ नवमी चोथा खममां, नांखी ए म ढाल रेलो ॥ श्र० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो,श्रागें वात रसाल रेलो ॥ श्र० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रचमायें दीठो प्रबल, जुजगम जयकार ॥ श्रागण श्रागल श्रावीयो, कीनाशनें श्रनुकार ॥ १ ॥ क्रोधें ते देखी करी, तनु वर्द्धन ताम ॥ करी मलपिंमनी गोलिका, नाखे सन्मुख जाम ॥ २ ॥ नकुल थया ते ततक्षणें, नाग कश्यो नवखम ॥ चमक्यो मदन ते चित्तमां, चमाथीश्रा प्रचम ॥३॥ जोतां जोतां नोलीया,सर्व थया विसराल ॥ नाना रस वेदे मनें,चिते मदन रसाल॥४॥ श्रहो चमाना कोपथी,श्राव्यो प्रचमा पास ॥ शरण थइ ए मुजनें, राख्यो देइ श्राश्वास ॥ ५ ॥ पण जो दैवयोगें करी, कोपे प्रचमा एह ॥ तो कोण शरण हवे तदा, जाउ केहनें गेह ॥ ६ ॥ वाहालो पण कोपे न ही, एहवो कुलेज कोय ॥ तो नारीनें कुनारजा, नवि कोपे केम होय ॥७॥ ए राक्षसिणी दोय जणी, ठांमी जाउं परदेश ॥ श्राप कुशलनें कारणें, त्य जीयें राज्यनें देश ॥ ८ ॥ यत ॥ त्यजेदेक कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुल त्यजेत् ॥ ग्राम जनपदस्यार्थे, श्रात्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ ए देशी ॥

॥ एम चितवीनें नीकल्यो रे सुहजन ॥ साथें बहु धन लेय ॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ मदन नमे देशातरें रें सु० ॥ स्वेछायें गत खेय ॥ पु० ॥ १ ॥ केइक वासर वही गया रे सु० ॥ पृथिवी जोतां तास ॥ पु० ॥ नमतो नमतो श्रा वियो रे सु०॥ नगर नाम सकाश ॥पु०॥ २ ॥ जीते निज लखमीयकी रे सु०॥ सुरपुरी लकावास ॥ पु०॥ तेह नगर उद्यानमां रे सु०॥ बेठो श्रशोक सकाश ॥ पु० ॥ ३ ॥ इण श्रवसर एक श्रावियो रे सु०॥ जानुदत्त एणें ना म ॥ पु० ॥ शेठमांहे शिरोमणि रे सु०॥ बोले ते हवे श्राम ॥ पु० ॥ ४ ॥ म दन सुखें तु श्रावियो रे सु० ॥ कुशल श्रछे सुखशात ॥ पु० ॥ चालो निजघर जाइयें रे सु०॥ मानो श्रमची वात ॥ पु०॥ ५ ॥ नाम सुणी चित्त चमकियो रे सु०॥ शु जाणे मुज नाम ॥ पु०॥ चाल्यो नगरमां तेहशु रे सु०॥ पोहोतो तेहनें धाम ॥ पु० ॥ ६ ॥ शेठ करावे तेहनें रे सु० ॥ स्नान नोजन नलि

नाम कुशस्थल जाणीयें, बहु पुण्य प्रवेश रेलो ॥ अ० ॥ ३ ॥ तिहां कुल पुत्र सोहामणो, रूपें जिस्यो काम रेलो ॥ अ० ॥ मदन नामें प्रसिद्ध जे, लखमीनु धाम रेलो ॥ अ० ॥ ४ ॥ किहांहीथकी बालकालथी, विद्या बहु पामी रेलो ॥ अ० ॥ क्रोधमुखी कुटिला घणु, नारी गुणें जामी रेलो ॥ ॥ अ० ॥ ५ ॥ नारी दोय सोहामणी,जाणीयें रति प्रीति रेलो ॥ अ० ॥ च म्पा प्रचम्पा नामथी, तेम गुणथी प्रतीति रेलो ॥ अ० ॥ ६ ॥ प्रेम घणो बि हु उपरें, तेहनें पण प्रेम रेलो ॥ अ० ॥ पण बेहु शोक्यो कलह करे, शो क्य धर्म ए नेम रेलो ॥अ०॥७॥ यत ॥ दोहो ॥ शोक्य वैर अति आकरां, जेहवां तीखा तीर ॥ चालां शूल तणीपरें, परें परें दाखे पीर ॥ १ ॥ पूर्वढा ल ॥ मदन वारे पण नवि रहे,कोपनें वली मान रेलो ॥ अ० ॥ राखी प्र चम्पा नारिनें, पासें गामने थान रेलो ॥ अ० ॥ ८ ॥ एक एक दिनना निय मथी, रहे मदन तेवार रेलो ॥ अ० ॥ मदन ते नियम चूके नही,एम क रतां केवार रेलो ॥ अ० ॥ ए ॥ कारण कोइक पामीने, परचम्पा गेह रेलो ॥ अ० ॥ एक दिन अधिको तिहां रह्यो, धरी तास सनेह रेलो ॥ अ० ॥ ॥ १० ॥ आव्यो चम्पानें घरे, कण खांमती तेह रेलो ॥ अ० ॥ आवतो दीठो निजपति, क्रोधें नरी देह रेलो ॥ अ० ॥ ११ ॥ मुशलु नाख्युं सन मुखें,मुखें एणीपरें नास रेलो ॥ अ० ॥ रे रे दुष्ट अनागीया,तुज नहि इहां वास रेलो ॥ अ० ॥ १२ ॥ दुष्ट प्रचम्पा तुजनें, घणु प्राण आधार रेलो ॥ अ० ॥ जा तेहने घर सुखथकी, रहेजे धरी प्यार रेलो ॥ अ०॥१३ ॥ ते देखी बीहिनो अति, नागो तेणीवेला रेलो ॥ अ० ॥ थोडी नूमिका ज ई करी, पूठें जूवे हेला रेलो ॥ अ० ॥ १४ ॥ सर्पनयंकर देखीयो, फणा टोप विशाल रेलो ॥ अ० ॥ स्थूल मूशल सम आवतो, जाणीयें महा काल रेलो ॥ अ० ॥ १५ ॥ नागो सविशेषें वली, परचम्पा पास रेलो ॥ अ० ॥ बीहो तेणीयें आवतो, नवि माये श्वास रेलो ॥अ०॥१६॥ पूछे केम नयभ्रांत तु, आव्यो ततकाल रेलो ॥ अ०॥ मदन कहे चम्पा घ री, पूठें तुं काल रेलो ॥ अ० ॥ १७ ॥ सांजली परचम्पा कहे, मत नय मन आण रेलो ॥ अ० ॥ तु मुज प्राणथी वालहो, हु करशुं त्राण रेलो ॥ अ० ॥ १८ ॥ धीरो था कांय नय नथी, एहनो श्यो चार रेलो ॥अ०॥ एम कही आश्वास्यो तेणें, नारीचरित्र अपार रेलो ॥अ०॥१ए॥ धन्य धन्य

ग दुर्गम कचरे ॥ गिरि नदीयो अति विषम छे वाटें, जावा चित्त केम पसरे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ शरद कालें जब पाउस उतरे, तब जाजो तुमें स्वामी ॥ वात सुणीनें मान्युं मदनें, स्त्रीने वश होये कामी ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जोगसुखें हवे काल गमावे, शरद रुतु जब आवे ॥ तब जावा उत्कंठित पूछे, जाउं जो तु फरमावे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ कांइ विचार करीनें मान्युं, सबल साथे आपे ॥ करी सुंगधि करंबो विधिशु, मदननें साथें थापे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ कुशस्थल भणी चाल्यो वेगें, लेइ करबो तेह ॥ जातां थयो मध्यान्ह समय तब, कोइ गामें गयो एह ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ तास उद्यानें सरोवर तीरें, तरुमूलें विश्राम ॥ नाही देवगुरु संभारी, इछे भोजन काम ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चितवे जो कोइ आवे अतिथि, नयणें इणहिज काल ॥ तो तस ग्रास अर्द्ध आपीनें, पुण्य करु ततकाल ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ परनें शब्द करीनें भुंजे, जगमां ते धन्य प्राणी ॥ अतिथि सविभाग कह्यु तेणें, लखमी करतल आणी ॥स्वा०॥ ॥ १४ ॥ एम चितवतां दीठो पासें, देवकुलथी नीकलतो ॥ जटा मुकुटनें भस्म विलेपित, गाम भणी सल सलतो ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ तपसी देखी हरख्यो हृदयें, बोलाव्यो बहु मानें ॥ आप्यो करंबो आहार प्रमाणें, वली वलियो निजथानें ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ भूख्यो तपसी खावा बेठो, तेह सरोवर तीरें ॥ खावा मदन आरंभे जेते, लेई समीप ते नीरें ॥स्वा०॥१७॥ एहवे ठीक थई तब चिते, कांइ विलंब ते कीजें ॥ एहवे योगी बकरो हूउ,करब प्रभाव वदीजें ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयप्रभावें, चोथे खमें ढाल ॥ बारमी पद्मविजय कहे पुण्यें, होवे मगलमाल ॥ स्वा० ॥१९॥३३॥

॥ दोहा ॥

॥ बें बें करतो बोकडो, चाल्यो नगर सकाश ॥ मदन लह्यो विस्मय घणुं, देखी तेह विलास ॥ १ ॥ किहां जाये छे बोकडो, जोउ पूठें जाय ॥ एम चितीनें चालीयो, कौतुक मन नवि माय ॥ २ ॥ मदन बोकडो बिहु जणा, पोहोता नयर मझार ॥ पेठो बकरो भवनमां, जिहां विद्युतलता नार ॥३ ॥ मदन जोवा छानो रह्यो, कोइ थानक ते पास ॥ जोउ बकरो शुं करे, पेशी नें आवास ॥ ४ ॥ बकरो आव्यो जाणीनें, विद्युतलता दीये द्वार ॥ लेइ लकुटने मारवा, उठी वधी नार ॥ ५ ॥ बूब पाडे ते बोकडो, तब बोले

ते नार ॥ निरपराध मुजने त्यजी,रे तुज पडो धिक्कार ॥६॥ बहुकालें पण पूर्व नी, नारीथी विरम्यो नांहि ॥ चाल्यो त्यां उत्कंठथी, शुं जोइ आव्यो आंहि ॥७॥

॥ ढाल तेरमी ॥ करेलडां घड देनें ॥ ए देशी ॥

॥ नारी कहे मुसलें करी, दया करीनें आज ॥ मारु नहीं नरता जणी, जाणी महोटु अकाज ॥ १॥ नविकजन सुणजो रे ॥ नारीचरित्र विचित्र, हृदयमां मुणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ बीहीनो चमा मुशलथी, गयो प्रचमा पास ॥ मुज मारतां हवे कहो, चित्तमा केहनी आश ॥ न० ॥ २ ॥ कहीक हीनें एम मारती, मलीयो लोक अपार ॥ मदन विचारे चित्तमां, अहो अहो चरित्र अपार ॥ न० ॥ ३ ॥ करंबो जो खातो कदा,माहारी पण ए रीत॥ लोक बुबारव सांनली,देखी एह अनीत ॥ न० ॥४ ॥ रे रे मूढ पशुजणी, मारे ठे तु केम ॥ वणिक कुलें तु उपनी, केम हिसा करे एम ॥न० ॥५॥ तव पाणी मत्री करी, छांटयु तेहनें जाम ॥ नस्मगुण्ति जटा धरो, करप योगी थयो ताम ॥ न० ॥६॥ लोक देखी पूछे इश्युं, नगवन् शी ए वात ॥ तव ते आंसु नाखतो,नांखे निज अवदात ॥ न० ॥ ७ ॥ बीहीकें तपसी नासतो, विस्मय पाम्यो लोक ॥ विद्युतलतानें उपन्यो, मनमांहे घणु शोक॥ ॥ न० ॥ ८ ॥ धिग धिग निरपराधी ए, तपसी मास्यो आज ॥ नवि जाणुं किहांही गयो, पति जाणी ए अकाज ॥ न० ॥ ए ॥ मलशे अथवा नहीं मले, ते माहारो नरतार ॥ में जाण्यु शिक्षा देई,नोग नोगवशुं सार ॥न०॥ ॥ १० ॥ मनना मनोरथ मनमां रह्या, जनमां थयो अपवाद ॥ पतिविरहिणी हु थई,किहां करुं शोरनें वाद ॥ न० ॥ ११॥ पर्दोक खवाणो पण नहीं, हार्थे दाधो जेम ॥ ए उखाणो मुज थयो,कहो हवे करियें केम ॥न०॥ ॥ १२ ॥ मदन विचारे देखीनें,निज चरित्रे करी एह ॥ चमा प्रचमा बेहु जणी, जीती कपटणी गेह ॥ न० ॥ १३ ॥ योगीनें पण गम्य नहीं, नारीचरित्रनो अंत ॥ धिग धिग विषयी जीवनें, तो पण तिहां राचंत ॥न०॥१४॥ राक्षसणी सापण वली,वाघणी जीती एण ॥ जे विश्वास करे नरा,ते पशु नर रूपेण ॥न०॥१५॥ पुण्यें त्रणथी बूटीयो,हवे करु निज काज॥एम चिंतवतो आवीयो, नाम वसंती पुरी पाज ॥न०॥१६॥यत ॥ पच्यंते लघने रोगा , फल कालेन पच्यते ॥ कुमित्रे पच्यते राजा,पापी पापेनपच्यते॥१॥ पूर्वढाल॥ तेरमी चोथा खंममां, पद्मविजयकहीढाल ॥ पुण्यें मति समली हुवे,पुण्यें मगलमाल॥

॥ दोहा ॥

॥ गौरी घर घर वारणे, ईश्वर मानुष्य मात ॥ रंना वन वन देखीयें, धनदनी केइ कहु वात ॥ १ ॥ गौरी ईश्वर रंना धनद,सहुने हसती तेह ॥ नाम हसती तेहनु,सुरपुरी अधिक छे एह ॥ २ ॥ तस उद्यानमां चैत्य छे, जाणे मेरुगिरिंद ॥ कनकथंन पंचालिका, जिहां श्रीरूषन्न जिणंद ॥३॥

॥ ढाल चौदमी ॥ नवि तुमें वदो रे, सुमतिनें शांति जिणंदा ॥ ए देशी॥

॥ मदन देउलमां पेगे हरखे,रूषन्न जिनेसर दीग॥ जनम मरण टाले नवि जननां, मनमां लागा मीग ॥ १ ॥ जिणवर निरखी लाल,हियडे हर्ष धरीजें ॥ जिनगुण परखी लाल, नरनव सफल करीजें ॥ ए आंकणी ॥ नवसायरमां नमता नननें, आलंबन जिनराया ॥ देवनो देव सुरासुर वंदित, पूरव पुण्यें पाया ॥ जि० ॥ २ ॥ हाथे नही हथियार न माला,नहीं उत्संगें वामा ॥ अविकारी अकषायी मुज्ञा, निर्नयीनें गुणधामा ॥ जि० ॥ ॥ ३ ॥ एह सरूप न जगमां दीसे, सफल थयो अवतार ॥ नयन कृतारथ माहारां हूआं, धन्य हुं जग शिरदार ॥ जि० ॥ ४ ॥ नवसायरनो पार हुं पाम्यो, फुर्लन जिनपद पामी ॥ नवनय कारण नवडुःख वारण, हवे थयो शिवगतिगामी ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम बहु मानें जिनवर प्रणमी, बेगे तिण हिज गम ॥ वणिकपुत्र इण अवसर आव्यो, धनदेव तेहनु नाम ॥ जि० ॥ ६ ॥ तेपण परमातम प्रणमीने, मनमां उल्लसित नावें ॥ मदननें धनदेव रंग मंमपमां,हरखे विहु जण आवे ॥ जि०॥ ७ ॥ पूछे धनदेव स्नेह धरीनें, साधर्मिक तस जाणी ॥ नइ तमें आव्या कहो किहांथी, जिन मुख जोवा जाणी ॥ जि० ॥ ८ ॥ फुःख हृदयमां तुम बहु देखु, तव चिंते ते एम ॥ कोइ महातमा मुजने पूछे, आणी बहुलो प्रेम ॥ जि० ॥ ए ॥ बोल्यो मदन नइ हु आव्यो, नगरसकाशथी जाणी ॥ फुःख कारण मुज हृदयनु पूछ्यु, ते सांनल गुणखाणी ॥जि०॥१०॥ वात लज्जा जेहवी छे तो पण, तुमचु दरिसण देखी ॥ स्नेह घणो दीगे तेणें नाखु, वीतु सर्व उवेखी ॥जि०॥११॥ यत ॥ वर न राज्य न कुराजराज्य, वर न मित्र न कुमित्रमित्र ॥ वरं न दारा न कुदारदारा, वरं न शिष्योन कुशिष्यशिष्य ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ निजवृत्तांत सर्व तेणें नांख्यु, धनदेव बोल्यो तिहारें ॥ केटलु मुज फुःख आगल ताहारु, तुजथी अधिक फुःख माहारे ॥ जि० ॥ १२ ॥

माहारी वात घणी अचरजनी सुणतां अचरज थाय ॥ नार्या माहारे तुम थी अधिकी, सुणतां तुज दुःख जाय ॥ जि०॥ १३ ॥ मदन कहे कहो तुम नार्यानी, वात ते विस्मयकारी ॥ धनदेव कहे ते कहिये सुणजो, हर्ष धरी नरनारी ॥ जि० ॥ १४ ॥ चोथे खमें चौदमी नाखी, श्रीजयादवें रास ॥ पद्मविजय कहे गुणिगुण सुणतां, होये लील विलास ॥जि०॥१५॥३७५॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नयरीमांहे वसे, धनपति नामें शेठ ॥ निश्चल श्रीजिनधर्ममां, बीजु जाणे वेठ ॥ १ ॥ मुनिजननी सेवा करे करे वली पर उपकार ॥ गुण रागी गिरुउं घणु, श्रीमतमां शिरदार ॥२॥ लखमी नाम सोहामणु, नाम तिस्यो परिणाम ॥ लखमी घर आगण वसे,सकल कलानु धाम ॥३॥ एह वी नारीशु शेठजी, उभय लोक अविरुद्ध ॥ साधतां सुत दोय थया, तेह सदा सुविशुद्ध ॥ ४ ॥ तिहा पहेलो धनसार छे, बीजो छे धनदेव ॥ यौवन वय आव्या बिहु, स्वामी कार्त्तिक महादेव ॥ ५ ॥

॥ढाल पदरमी॥ गेब सागरनी पाल,उभी दोय नागरी माहारा लाल॥ए देशी॥

॥ दोय कला हवे शीख्या, यौवनवय आवीया माहारा लाल ॥ रूप लावण्य विशिष्ट, कन्या परणावीया मा०॥ नित्य नित्य निज व्यापार,करे ते बेहु जणा मा०॥ काल गमावे एणी परें,सहुए एकमना मा०॥१॥जीवलोकनें मरण, अतें आवे सदा मा०॥ समय समय विणासे रस, रूपनें संपदा मा०॥ धनपति शेठ आयु निल, अथिर जाणी करी मा० ॥ शत्रु मित्र समभाव, हृदयमांहे धरी मा० ॥ २ ॥ थई विरक्त ससारथी, सहु जीव खामणां मा०॥ मन एकाग्रें पंच, परमेष्ठि सुमरणां मा०॥ पंथ साध्यो परलोकनो, धनपति वाणीये मा० ॥ मरण लघुं एम उत्तम,श्रावक जाणीयें मा० ॥ ३ ॥ निज भरतार वियोग,शोक हवे बहु करे मा० ॥ लखमी पण घरवास, बीहामणु चित्त धरे मा०॥ बहु सवेग विषयथी,विमुखी नित्य रहे मा०॥ तपथी विशेषें शोषवी, काय मरण लहे मा० ॥ ४ ॥ मात पिताना मरणथी, शोक करे घणो मा०॥ नवि सुख पामे किणही, गम चित्त दोय तणो मा०॥ तजीयो सकल व्यापार,हवे एणे अवसरें मा०॥ श्रीमुनिचद मुणींद, आव्या पुर परिसरें मा० ॥ ५ ॥ तेणें उपदेश कह्यो एम, भोलो केम करो मा० ॥ एवडो शोक सभार, धरो चित्तमां खरो मा० ॥ नवि ससार सरूप,

निरूपण चित्त करो मा० ॥ चरथिर सकल संसारमां, सर्वेने यम ह रो मा० ॥ ६ ॥ नित्यपंथी ए प्राण, शरीर ए चल छठे मा० ॥ यौवन चपल मरण ध्रुव, अनुक्रमें सवि गछे मा० ॥ एक जिनेश्वरजावित, शरण ते धर्म छे मा० ॥ तेह आधार गति स्थिति, अवर अधर्म छे मा०॥ ७ ॥ तेह सुणीनें शोक,मद करी घर गया मा० ॥ निजघर कार्य व्या पारमां, बिहुंये सक्त थया मा०॥ बिहुंनी नारी ते घरमां, नित्य कलह करे मा० ॥ बेहु जण समजो भिन्न, भिन्न राखे घरें मा०॥ ८ ॥ जाते दिन एक दिन, पूछ्यु वृद्ध भाइयें मा०॥ केम उदवेग सहित तुज मनडुं पाइयें मा०॥ तव लघु भाइ कहे मुज, नारीनुं डुःख घणुं मा० ॥ तेणें मुज उदवेग थाय, तनु डुर्बलपणुं मा० ॥ ए ॥ महोटो भाइ कहे तुं,मन मत डुःख करे मा०॥ कन्या बीजी परणावुं,तेहथी सुख धरे मा ०॥ लघु भाई कहे एमज, करो जेम सुख-लहु मा०॥ एह वात तुम आगल, जाजी शी कहुं मा०॥ १० ॥ तव वृद्ध भाइयें कोइक, कुलवती कनी मा०॥ परणाव्यो धनदेवनें, बीजी शोजा बनी मा० ॥ चोथे खंमें ढाल, पंदरमी ए कही मा०॥ पद्मविजय कहे श्रीगुरु, उत्तमथी लही मा०॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ३ए१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अभिनव परणी नारिशुं,जोगवे नवला जोग ॥ जावि जावना योगथी, सरखो मल्यो संयोग ॥ १ ॥ स्वेछाचारी नारि ते, पहेली सरखी एह ॥ चित्त संतोष न उपन्यो, धनदेवनें तिहां रेह ॥ २ ॥ मन चिंते निर्जाग्य हुं, घर उठघो गयो रत्न ॥ तिहां पण जावि जावथी, लागी बहोत अगन्न ॥ ३ ॥ तास परीक्षा कारणें, जोवे तास चरित्र ॥ एक दिन बेठो धूजतो, ना रीनें कहे एणि रीत ॥ ४ ॥ शीतज्वर मुज आवियो, वेशी न शकुं तेण ॥ ॥ वहेली शय्या पाथरो, शयन करुं हुं जेण ॥ ५ ॥ प्रगुण करी शय्या तेणें, धनदेव सूतो जाम ॥ पावरण सीरष प्रमुख, उढाडयां तस ताम॥६॥ ॥ ढाल शोलमी ॥ जांजरीया मुनिवर, धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥ ॥ तेणे समे सूरय आथम्योजी,रातें थयो अंधकार ॥ आछादे सवि दीपनें जी, गुहड करे घूतकार ॥ १ ॥ सोजागी सयणा, सांजलो नारीचरित्र ॥ ए आंकणी ॥ घोरनाद कपटें करीजी, उंघे तिहां धनदेव ॥ तव मोहोटी ल घुने कहेजी, सांजल रे तुं हेव ॥ सो० ॥ २ ॥ तुं परवार उतावलीजी,

आपणने ठे काम ॥ तव ते काम वतावलीजी, करीने प्रगुण थइ ताम ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ घोर निद्रा आव्यो वहीजी, जाणी ते वोय नारि ॥ घरमां थी ते नीकलीजी, घर उद्यान सहकार ॥ सो० ॥ ४ ॥ ते उपर वोई चढी जी, पाठलथी धनदेव ॥ तेने अनुसारे गयोजी,हलुवे हलुवे हेव ॥सो०॥५॥ तेहज आंवे वस्त्रथीजी, वांध्यु आप शरीर ॥ वेगे पृथिवी उपरेजी, साह स धरीने धीर ॥ सो० ॥ ६ ॥ मत्र सजाव्यो तेणीयेंजी, शक्ति अचित्य ठे मत्र ॥ कडीनें आंवो गयोजी, चाल्यो ते गगनांत ॥ सो० ॥ ७ ॥ जलजंतु वीहामणोजी, रयणायर मध्यनाग ॥ रत्नद्वीप रलियामणोजी, अवरद्वीप वडनाग ॥ सो० ॥ ८ ॥ तस शिर मुकुट मणिसमुजी, नगर रयणपुर त ड ॥ रतनें मंडित घर घणांजी, सहस गमे ठे जड ॥ सो० ॥ ए ॥ विद्या धर वासो जिहांजी, रूपें जीत्यो अनग ॥ विद्याधरी रूपेंकरीजी, रति हा री एकग ॥ सो० ॥ १० ॥ तिण नगरी उद्यानमांजी,उतरीयो सहकार ॥ धनदेव तिहांथी नीकलीजी, दूर गयो कोइ ठार ॥ सो० ॥ ११ ॥ नार्यांठे पण कतरीजी,पेठी नगर मजार ॥ धनदेव पण पूठें थयोजी,तास चरण अ नुसार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कौतुक नगरीमां जुवेजी, नानाविध मनोहार ॥ निज इछायें विचरतीजी, पूठे तस चरतार ॥ सो० ॥ १३ ॥ तेह चरित्र जोतां थकाजी, चित्तमां चमक्यो एह ॥ जाणे स्वर्गमां आवीयोजी, स्वपन परे लहे तेह ॥ सो० ॥ १४ ॥ चोथे खमें ए कहीजी, शोलमी ढाल रसा ल ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथीजी, होवे मंगलमाल ॥ सो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर ते नयरमां, श्रीपुंज नामें शेठ ॥ बीजा सहु व्यवहारिया, मानु एहथी हेठ ॥ १ ॥ चार पुत्र उपर सुता, श्रीमती नामें तास ॥ तिलक समी त्रिहु लोकमां, रूप लावण्यनो वास ॥ २ ॥ एहवी नारी न पामीयो, क्षीणदेह तेणें काम ॥ हलुये हलुये अनग थयो, ते दुःखथी मानु आ म ॥ ३ ॥ विद्या कला सरवे तिहां, स्पर्द्धायें कस्यो वास ॥ सौजाग्य स्था नक ए समुं, नवि लाधु कोइ पास ॥ ४ ॥ सार्थवाह वसुदत्त तिहां, तेहना पुत्रने तेह ॥ कस्यो विवाह हवे परणवा, मांमयो उत्सव गेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ राग खंजाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ सारथवाहनो पूत, वस्त्र अमूलिक अगें धरेजी ॥ रयणतणा अल

कार,तास किरण अति विस्तरेंजी ॥१॥ सांबेला श्रीकार, पदेशा वाघा जरक शीजी ॥ नाटक करे वर पात्र, जाणे रंना उर्वशीजी ॥ २ ॥ वाजे विवध वाजित्र, सरणाइ टहके घणीजी ॥ साजन मलियो साथ, मगल गावे जान णीजी ॥ ३ ॥ बोले विरुद अनेक, लोक जोवा बहु आवीयो जी ॥ श्रीफलनें वली पान, वरराजा कर नावीयोजी ॥ ४ ॥ वींजे चामर पास, बत्र धस्युं शिर उपरेंजी ॥ नोबत गडगडे ठदि, चहुटे चाले एणी परेंजी ॥ ५ ॥ देखी नारीचरित्र, धनदेव चिंते इण समेजी ॥ वलशे जब ए नारि, तव व लशुं हु अनुक्रमेंजी ॥६॥ जोतो उत्सव तेह, श्रीपुजशेठ घर आंगणेजी ॥ उंनो तोरणें तेह, दीसे ते रलीयामणेजी ॥ ७ ॥ एण अवसर वरराय, तुरंग चढघो शोनें घणुजी ॥ वसुदत्त सुत श्रीपुज,शेठनु सोहावे आंगणुंजी ॥ ८ ॥ लोक तणी नीडनाड, जोवा मलीयो ठे घणोजी ॥ थन्न ते नगीयो ताम, तीखी धार तोरण तणोजी ॥ ए ॥ पडीयो तिहाँ तेह, नवितव्यता योगें करी करीजी ॥ लाग्यो ते उत्तमांग,वर ततकाल गयो मरीजी ॥ १० ॥ वसुदत्त परिजन जेह, तेह शोकातुर बहु थयोजी ॥ रोवे सवि परिवार, शिर कूटे पीटे हियोजी ॥ ११ ॥ सहु गया ते निजघेर, हवे श्रीपुज चित्त चिंत वेजी ॥ स्यो आव्यो अंतराय, कहो हा शुं करीयें हवेजी ॥ १२ ॥ शी गति होशे धूय, खेद करे चित्त आपणजी ॥ निजपरिवारनें साथ, चिंतवे एणी परें मापणेंजी ॥ १३ ॥ यत ॥ प्रारब्धमन्यथा कार्यं, दैवेन विदधेऽन्यथा ॥ कोवेत्ति प्राणिनां प्राच्य, कर्म्मणां विषमां गतिम् ॥१ ॥ पूर्व ढाल ॥ परणे नहीं जो आज, लगनें तो ए अनागणीजी ॥ एम लोकें परसिद्ध, सकलकी कन्या नणीजी ॥ १४॥ नहीं परणे नर कोय,सहुनें जीवित वालहुंजी ॥ पर णावु कोइ आज,कन्यानाग्य शास्त्रे कह्युंजी ॥१५॥ सयण कहेकाहि खेद,तुम नें करवो नवि घटेजी ॥ विण नावी नवि होय,नावि नाव ते नवि मटेजी ॥ ॥ १६ ॥ वीजानें धो एह, सांनली चित्तमां हरखियोजी ॥ निजनरनें करे आण, लावो कोइ नर परखियोजी ॥ १७ ॥ ते नर ततक्षण ताम, वर जो वानें नीकल्याजी ॥ राजमार्गे सवि ठाम, जोतां कोइनें नवि मल्याजी ॥१८॥ इण अवसर धनदेव, नयणें पडियो तेइनेंजी ॥ दिव्यरूपधर जेह, आव्यो ते नर यौवनेंजी ॥ १९ ॥ लाव्या शेठनें पास, निजपुत्री सम निरखि योजी ॥ प्रार्थना करे तास, शेठीयो देहे हरखीयोजी ॥ २० ॥ चोथे खमें

आपणने छे काम ॥ तव ते काम वतावलीजी, करीने प्रगुण थइ ताम ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ घोर निद्रा आव्यो वहीजी, जाणी ते बोय नारि ॥ घरमां थी ते नीकलीजी, घर वद्यान सहकार ॥ सो० ॥ ४ ॥ ते उपर दोई चडी जी, पाछलथी धनदेव ॥ तेने अनुसारे गयोजी,हलुवे हलुवे हेव ॥सो०॥५॥ तेहज आवि वस्त्रथीजी, वांध्यु आप शरीर ॥ वेगे पृथिवी उपरेजी, साह स धरीने धीर ॥ सो० ॥ ६ ॥ मत्र सनाख्यो तेणीयेंजी, शक्ति अचिंत्य छे मत्र ॥ कडीनि आंबो गयोजी, चाल्यो ते गगनांत ॥ सो० ॥ ७ ॥ जलजंतु बीहामणोजी, रयणायर मध्यनाग ॥ रत्नद्वीप रलियामणोजी, अवरद्वीप वडनाग ॥ सो० ॥ ८ ॥ तस शिर मुकुट मणिसमुजी, नगर रयणपुर त ब ॥ रतनें मन्डित घर घणांजी, सहस गमे छे जब ॥ सो० ॥ ए ॥ विद्या धर वासो जिहांजी, रूपें जीत्यो अनग ॥ विद्याधरी रूपेंकरीजी, रति हा री एकग ॥ सो० ॥ १० ॥ तिण नगरी वद्यानमांजी,उतरीयो सहकार ॥ धनदेव तिहांथी नीकलीजी, दूर गयो कोइ ठार ॥ सो० ॥ ११ ॥ नारीउं पण कतरीजी,पेठी नगर मजार ॥ धनदेव पण पूठें थयोजी,तास चरण अ नुसार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कौतुक नगरीमां जुवेजी, नानाविध मनोहार ॥ निज इच्छायें विचरतीजी, पूठे तस नरतार ॥ सो० ॥ १३ ॥ तेह चरित्र जोतां थकांजी, चित्तमां चमक्यो एह ॥ जाणे स्वर्गमां आवीयोजी, स्वपन परे लहे तेह ॥ सो० ॥ १४ ॥ चोथे खंडें ए कहीजी, शोलमी ढाल रसा ल ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथीजी, होवे मगलमाल ॥ सो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर ते नयरमां, श्रीपुंज नामें शेठ ॥ बीजा सहु व्यवहारिया, मानु एहथी हेठ ॥ १ ॥ चार पुत्र उपर सुता, श्रीमती नामें तास ॥ तिलक समी त्रिहु लोकमां, रूप लावण्यनो वास ॥ २ ॥ एहवी नारी न पामीयो, क्षीणदेह तेणें काम ॥ हलुये हलुये अनग थयो, ते दुखथी मानु आ म ॥ ३ ॥ विद्या कला सरवे तिहां, स्पर्द्धायें कस्यो वास ॥ सौनाग्य स्था नक ए समु, नवि लाधु कोइ पास ॥ ४ ॥ सार्थवाह वसुदत्त तिहां, तेहना पुत्रने तेह ॥ कस्यो विवाह हवे परणवा, मांड्यो उत्सव गेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ राग खनाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ सारथवाहनो पूत, वस्त्र अमूलिक अगें धरेजी ॥ रयणतणा अलं

तोऽप्ताग क च ॥ सूनुर्धनमतेर्नाम्या,धनदेवोऽन्यगात्श्रियं ॥१॥ ढाल ॥ ह संती नगरी किहां सु० ॥ किहां रतनपुर ठाम ला० ॥ किहां आंबो गगनें चल्यो सु० ॥ किहां कह्यो धनदेव नाम ला० ॥ १०॥ कांइक कार्य उद्देशी नें सु० ॥ नीकलीयो हवे तेह ला० ॥ आंबे चढी ते दोय जणी सु० ॥ म नमां दर्प धरेय ला० ॥ ११॥ आंबे पूर्वपरें रह्यो सु० ॥ नारीयें गणियो मत ला० ॥ चाल्यो आकाशें आंवलो सु०॥ पोहोतो निज घर तंत ला०॥ ॥ १२ ॥ उतर्यो निज उद्यानमां सु० ॥ धनदेव छानो ताम ला०॥ घरमां जई सूतो वली सु० ॥ शय्यायें करी आराम ला० ॥१३॥ उंढी निद्रा नर थयो सु० ॥ आवी हवे दोय नार ला० ॥ नरनिद्रायें देखियो सु०॥ सूतो निज नरतार ला० ॥ १४॥ शंका रहित सूती बेहु सु०॥ जागी क्षणकमां जाम ला० ॥ थयो प्रजात रयणी गई सु० ॥ सूरय उग्यो ताम ला० ॥ ॥ १५ ॥ सवि अंधकार नसाडियो सु० ॥ चमकिरण दिन नाह ला० ॥ व लगी घर कारज जणी सु०॥ धंधो घरनो अपाह ला० ॥ १६ ॥ किमहिंक हवे लघु नारियें सु० ॥ सोड बाहिर रह्यो हाथ ला० ॥ कंकण सहित ते देखीयो सु० ॥ विवाहवतो नाथ ला० ॥१७॥ मोहोटीनें देखाडीयो सु० तव कहे महोटी वाण ला० ॥ तें तिहां कर्युं ते सवि मल्युं सु० ॥ देखी एहनो पाण ला० ॥ १८ ॥ किमहिंक आव्यो तिहां कणे सु० ॥ परण्यो कन्या ताम ला०॥ जाण्युं एणे आपणु सु०॥ सवि वृत्तांत ते आम ला०॥ ॥ १९ ॥ मत बीजे मनमांहिथी सु० ॥ करशुं तस प्रतिकार ला० ॥ कर तु तो विहिशुं किशुं सु० ॥ सघलु थाशे सार ला० ॥ २०॥ श्रीजयानंदना रासमां सु० ॥ चोथे खंमें ढाल ला० ॥ अढारमी पभें कही सु० ॥ आग ल वात रसाल ला० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बिहिक म कर तु बापडी, करुं एहनो उपचार ॥ सात गांठ देइ मैं त्रीनें, दोरो कर्यो तैय्यार ॥१॥ धनदेवनें भावे पगें, नारियें बांध्यो ताम ॥ मूरखनें निर्दयीपणु, कूड कपटनु धाम ॥ २ ॥ मंत्र तणा प्रजावथी,सूडो थयो ततखेव ॥ देखी निज सूडापणु,दीन वदन धनदेव ॥ ३ ॥ नवि छोडशुं कंकण करें, नवि सांजरिशुं जेण ॥ धनदेव मनमा चिंतवे, शंका आवी तेण ॥ ४ ॥ रातिवृत्तांत जाणी करी, सूडो कीधो आम ॥ एणे चरित्रे ए नारिमें,

ढाल, सत्तरमी शोहामणीजी ॥ पद्मविजय कही एह, श्रीजयानंद रासज तणीजी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रार्थना सुणी शेठनी, चिंते चित्त मझार ॥ ए रूपवती देखीयें, जेहवी पूरव नार ॥ १ ॥ क्षेम कुशल निज वांछते, पूरव छंमवी नार ॥ पण नारी विण माहारो, अफल थयो संसार ॥ २ ॥ अतिथिनें वली प्राहुणा, न लहे आदर मान ॥ नारी विना हाली समो, पुरुष ते विटल समान ॥ ३ ॥ तात करे एम प्रार्थना, आदर करी अपार ॥ एहवी केम छंडुं हवे, नारी रति अनुहार ॥ ४ ॥ एम करी हाकारो जण्यो, न्हवराव्यो धनदेव ॥ कारिय विलेप न वदनें, वस्त्र पहेर्यां ततखेव ॥ ५ ॥ आनूषण अंगें धर्यां, पहेरीनें फुल माल ॥ श्रीमती कन्या परणियो, हर्षे थइ उजमाल ॥ ६ ॥ शेठ कन्या धनदेवनें, आणंद वर्त्यो एम ॥ देखी जमाई रूअडो, शेठ धरे बहु प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ वाडी फूली अति जली, मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ धनदेव चिंतातुर थयो, सुणो सयणां रे ॥ बेठो देखे बाहार, लाल सुणो वयणां रे ॥ दोय नार्यो धनदेवनी सु० ॥ फरि फरि नयर मझार ला० ॥ १ ॥ सांजली कौतुक अजिनवुं सु० ॥ विवाह जोवा काज ला० ॥ महोटी न्हानीनें कहे सु० ॥ रात घणी छे आज ला० ॥ २ ॥ जोइयें उत्सव हे जल्यु सु० ॥ लघुयें पडिवज्युं तेह ला० ॥ जोवे बेहु जणी रंगसुं सु० ॥ लघु बोली सुणो एह ला० ॥ ३ ॥ देव देवी सम मनहरू सु० ॥ वरवहू अतिहि उदार ला० ॥ आर्यपुत्र सम देखीयें सु० ॥ महोटी कहे तव नार ला० ॥ ४ ॥ जोली तुं कांहि नवि लहे सु० ॥ सरखा नर बहु होय ला० ॥ आर्यपुत्रनें सारिखो सु० ॥ दीसे बीजो कोय ला० ॥ ५ ॥ शीतज्वरें करी पीडियो सु० ॥ तेतो सूतो गेह ला० ॥ निद्रामांहे आवीयो सु० ॥ नही पियाबल एह ला० ॥ ६ ॥ किहांथी आव्यो होय इहां सु० ॥ क्षण एक रही तेणे ठाय ला० ॥ कौतुक देखी बेहु जणी सु० ॥ सहकार सामी जाय ला० ॥ ७ ॥ उंच गोंखें बेठो हवे सु० ॥ नवपरिणित स्त्री युत ला० ॥ धनदेव शंका धारतो सु० ॥ गमन नारीनुं युत्त ला० ॥ ८ ॥ श्रीमती वस्त्रनें छेहडे सु० ॥ श्लोक ते लखियो एक ला० ॥ कुंकुम रसथी सहिनाणी सु० ॥ करी निपुणाइ छेक ला० ॥ ९ ॥ यत ॥ कहसंती कथारत्न, पुरं पू

तोऽन्राग क च ॥ सूनुर्धनपतेर्जाग्या,धनदेवोऽन्यगातृश्रियं ॥१॥ ढाल ॥ व सती नगरी किहां सु० ॥ किहां रतनपुर गाम ला० ॥ किहां श्रांबो गगनें चल्यो सु० ॥ किहां कहो धनदेव नाम ला० ॥ १०॥ कांइक कार्य उद्देशी नें सु० ॥ नीकलीयो हवे तेह ला० ॥ श्रांबे चढी ते दोय जणी सु० ॥ मनमां हर्ष धरेय ला० ॥ ११॥ श्रांबे पूर्वपरें रह्यो सु० ॥ नारीयें गणियो मत ला० ॥ चाल्यो श्राकाशें श्रांबलो सु०॥ पोहोतो निज घर तंत ला०॥ ॥ १२ ॥ उतर्यो निज श्यानमां सु० ॥ धनदेव छानो ताम ला०॥ घरमां जई सूतो वली सु० ॥ शय्यायें करी श्राराम ला० ॥१३॥ उंढी निज्रा नर थयो सु० ॥ श्रावी हवे दोय नार ला० ॥ नरनिद्रायें देखियो सु०॥ सूतो निज जरतार ला० ॥ १४॥ शंका रहित सूती बेहु सु०॥ जागी क्षणकमां जाम ला० ॥ थयो प्रजात रयणी गई सु० ॥ सूरय उग्यो ताम ला० ॥ ॥ १५ ॥ सवि अंधकार नसाडियो सु० ॥ चंद्रकिरण विन नाह ला० ॥ व लगी घर कारज जणी सु०॥ धंधो घरनो अथाह ला० ॥ १६ ॥ किमहिंक हवे लघु नारियें सु० ॥ सोड बाहिर रह्यो हाथ ला० ॥ कंकण सहित ते देखीयो सु० ॥ विवाहवतो नाथ ला० ॥१७॥ मोहोटीनें देखाडीयो सु० तव कहे महोटी वाण ला० ॥ तें तिहां कह्यु ते सवि मल्युं सु० ॥ देखी एहनो पाण ला० ॥ १८ ॥ किमहिंक श्राव्यो तिहां कणे सु० ॥ परण्यो कन्या ताम ला०॥ जाण्युं एणे श्रापणु सु०॥ सवि वृत्तांत ते श्राम ला० ॥ ॥ १९ ॥ मत वीजे मनमांहिथी सु० ॥ करशु तस प्रतिकार ला० ॥ कर शु तो बिहिशुं किशुं सु० ॥ सघळु थाशे सार ला० ॥ २०॥ श्रीजयानंदना रासमां सु० ॥ चोथे खंमें ढाल ला० ॥ अढारमी पभें कही सु० ॥ श्राग ल वात रसाल ला० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रिहिक म कर तु बापडी, करु एहनो उपचार ॥ सात गांठ देइ मंत्रीनें, दोरो कर्यो तैय्यार ॥१॥ धनदेवने मावे पगें, नारियें वांध्यो ताम ॥ मूरखनें निर्दयीपणु, कूड कपटनुं धाम ॥ २ ॥ मंत्र तणा प्रजावथी,सूडो थयो ततखेव ॥ देखी निज सूडापणु,दीन वदन धनदेव ॥ ३ ॥ नवि छोडयुं कंकण करें, नवि सांजरियुं जेण ॥ धनदेव मनमां चिंतवे, शंका श्रावी तेण ॥ ४ ॥ रातिवृत्तांत जाणी करी, सूडो कीधो श्राम ॥ एणे चरित्रे ए नारिमें,

असजाध्य नहीं काम ॥ ५ ॥ मन चिंते हा हारियो, मानवनो अवतार ॥ पशुपणु हु पामियो, एम ध्याये तेणी वार ॥ ६ ॥ कडवा जाये जेटले, क रथी चांप्यो तास ॥ एणि परें बोले पापिणी, क्रोध तणो आवास ॥ ७ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ वटाउनी देशी ॥

॥ आंखे समजावे अन्यनें रे, करे वली अन्यशु वात ॥ अन्य हृदयमां धारती, कांइ नारी कुटिल कुजात रे, जो होये पोतानो भ्रात रे, वली जो होये निजनो तात रे, तेहने पण वचवा जात रे, एहवा गुण जगत वि ख्यात रे ॥ १ ॥ सयण सलूणे सांभलो मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ कोपनी न होये ए कदा रे,मूकी निजपति राय ॥ रांक साथें रमे रंगशुं,तस जाणे जी वित प्राय रे,नदीनी परें नीची जाय रे,सापण परें कुटिल सदाय रे,राक्षसिणी परें खावा धाय रे, जिहां मन मान्युं त्यां ढजाय रे ॥स०॥२॥ क्षण एक रोवे क्ष ण हसे रे,क्षण देखावे राग ॥ क्षणमां विरागिणी थइ रहे,क्षणमां कहे मीठी वाग रे,क्षणमां कटु वचननो लाग रे, क्षण रूसे तूसे अथाग रे, क्षणमां करे निजघर ताग रे, क्षणमां दिये निजपति दाग रे ॥स०॥३॥ निजपति परदेशें जतां रे, परम होये सुख देह ॥ मुख कहे तुम विण केम रहु रे, आ सूनु ढंढेर छे गेह रे, तुमशुं मुज अतिश्य सनेह रे, घडी वरस समी मुज एह रे, हवे थाशे कहो करु तेह रे, हवे दुःखना वरसशे मेह रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारीरंग पतंग श्यो रे, जातां न लागे वार ॥ जेम वादलनी छांहडी, जेम वीजलीनो चमकार रे, जेम राज्यमान अल्पवाररे, जेम कपटी ध्यान विचार रे, नहीं साचु वचन किवार रे, अशुचि अपवित्रभंमार रे ॥स० ॥५॥ पंखी पगलु आकाशमां रे,जलमां मत्स्यपद जोय ॥ तेम नारीना हृदयनो, जन न लहे मारग कोय रे, बुद्धें सुरगुरु यदि होय रे, ताराशुं गणित करे लोय रे, एहनो पार न पामे सोय रे, क्षण हसती क्षणमां रोय रे स०॥६॥ धीठ हृदय नारी हवे रे,बोले एणी परें वाण ॥ अम चरित्र जोवा भणी, तें कीधु एम मम्राण रे, सूतो जूठो ज्वर आण रे, अम साथें परद्वीप गाण रे,आवी पछ इयो फनी पाण रे, आवी सूतो ढंढधु वस्त्र ताण रे ॥ स०॥ ७ ॥ तेहनुं फल हवे देखजे रे, ते विण न वले शान ॥ एम करी पांजरे घालियो, सूडानें देइ अपमान रे, बहु मचन प्रहारनुं दान रे, सांभले सूडो निजकान रे, लघु मोटीनुं करे बहु मान रे, तुम सम नहीं अवर को गाम रे ॥ स०॥८॥ पर

परिजन देखी घणुं रे, ध्रुक करे पश्चात्ताप ॥ धिग् मुज सूडानो नव लह्यो, मुज आवी पोहोतु पाप रे, न कस्यो परमेष्टीनो जाप रे, तेणें पाम्यो एम सताप रे,हवे परवश शुं करु आप रे,नवि आमां आवे माय बाप रे स०॥ ॥ ए ॥ घर कारय करतीथकी रे, रांधे जब ते नार ॥ तब नाजी ठमका वती, तेहना होये ठमकार रे,लावी सूडो तेणी वार रे,विहिवरावे शस्त्रनी धार रें, कहे साजन तु निरधार रे, करु एहवो तुज परकार रे ॥ स०॥१०॥ तुजने मारी एणी परें रे, एक दिन एह हवाल ॥ ठमकावीशुं तुजने, एम बोले ते विकराल रे, सुणी पामे नय असराल रे, नित्य नित्य ए डु खजं जाल रे, लहेतो काढे कोइ काल रे, जाणे मलीया छे नरकपाल रे स०॥ ॥ ११ ॥ धन्यधन्य ते नर राजिया रे, जाणी एहवी नारि ॥ दूर रह्या महा नाग्य ते, जाणो जेम जंबूकुमार रे, वली वयरस्वामी अणगार रे, चोथे खंर्मे ए सार रे, ढाल उगणीशमी अधिकार रे, कहे पद्मविजय धरी प्यार रे ॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे जे रत्नपुरें थयो, ते सुणजो अधिकार ॥ शेठें जाण्युं किहां गयो, श्रीमतीनो नरतार ॥ १ ॥ गयो ते पाछो नावियो, खोलाव्यो बहु गाम ॥ विहाणे दीठो जे लख्यो, श्लोक मनोहर ताम ॥ २ ॥ तथाहि ॥ हसंती पुरें धनपति, शेठनो सुत धनदेव ॥ व्योम मार्गे आवी करी, परणी गयो ततखेव ॥ ३ ॥ तेय सुणी शेठें हवे, श्रीमती रोती जेह ॥ आशासना देइ एम कहे, इहां तेडावु तेह ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ वींछीयानी देशी ॥

॥ एकदिन एक सारथपति, सागरदत्त नामें शेठ रे ॥ व्यापारनें अर थें निहां जतो,हसती पुरी जिहां शेठ रे ॥ १ ॥ जूउ जूउ कर्मविटंबना ॥ ए आंकणी ॥ तेहने श्रीपुंजें आपियो, बहुमूल्य रयण अलंकार रे ॥ कहे धनदेवनें तुमें आपजो, करी आदर अति सतकार रे ॥ जू० ॥ २ ॥ कहेजो सदेशो एणी परें, तुमें आवो एणे गाम रे ॥ निजनारी सनालो मोदशुं, तुम न घटे एहवु काम रे ॥ जू० ॥ ३ ॥ हवे सागरदत्त पण चालियो, उल्लंघ्यो सागर जहाज रे ॥ पोहोतो हसती नयरीयें, तिहां करे व्यवसायनां काज रे ॥ जू० ॥ ४ ॥ धनदेव घर गयो अन्यदा रे, नवि दीठो

असत्साध्य नहीं काम ॥ ५ ॥ मन चिंते हा हारियो, मानवनो अवतार ॥ पशुपणुं हुं पामियो, एम ध्याये तेणी वार ॥ ६ ॥ कडवा जाये जेटले, करथी चांप्यो तास ॥ एणि परें बोले पापिणी, क्रोध तणो आवास ॥ ७ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ वटाउनी देशी ॥

॥ आखे समजावे अन्यनें रे, करे वली अन्यशुं वात ॥ अन्य हृदयमां धारती, कोइ नारी कुटिल कुजात रे, जो होये पोतानो भ्रात रे, वली जो होये निजनो तात रे, तेहने पण वचवा जात रे, एहवा गुण जगत विख्यात रे ॥ १ ॥ सयण सलूणे सांभलो मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ कोपनी न होये ए कदा रे,मूकी निजपति राय ॥ रांक साथें रमे रंगशु,तस जाणे जीवित प्राय रे,नदीनी परें नीची जाय रे,सापण परें कुटिल सदाय रे,राक्षसिणी परें खावा धाय रे, जिहां मन मान्युं त्यां जाय रे ॥स०॥२॥ क्षण एक रोवे क्षण हसे रे,क्षण देखावे राग ॥ क्षणमां विरागिणी थइ रहे,क्षणमां कहे मीठी वाग रे,क्षणमां कटु वचननो लाग रे, क्षण रूसे तूसे अथाग रे, क्षणमां करे निजघर ताग रे, क्षणमां दिये निजपति दाग रे ॥स०॥३॥ निजपति परदेशें जतां रे, परम होये सुख वेद ॥ मुख कहे तुम विण केम रहुं रे, आ सूनुं ढंढेर छे गेह रे, तुमशुं मुज अतिश्य सनेह रे, घडी वरस समी मुज एह रे, हवे पाछो कहो करु तेह रे, हवे दुःखना वरसशे मेह रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारीरंग पतंग स्यो रे, जातां न लागे वार ॥ जेम वादलनी छांहडी, जेम वीजलीनो चमकार रे, जेम राज्यमान अल्पवाररे, जेम कपटी ध्यान विचार रे, नहीं साचु वचन किवार रे, अशुचि अपवित्रभंमार रे ॥स० ॥५॥ पंखी पगलु आकाशमां रे,जलमां मत्स्यपद जोय ॥ तेम नारीना हृदयनो, जन न लहे मारग कोय रे, बुद्धें सुरगुरु यदि होय रे, ताराशुं गणित करे जोय रे, एहनो पार न पामे सोय रे, क्षण हसती क्षणमां रोय रे स०॥६॥ धीठ हृदय नारी हवे रे,बोले एणी परें वाण ॥ अम चरित्र जोवा भणी, तें कीधु एम मंमाण रे, सूतो जूठो ज्वर आण रे, अम साथें परद्वीप गण रे,आवी पक डयो कनी पाण रे, आवी सूतो ऊढचु वस्त्र ताण रे ॥ स०॥ ७ ॥ तेहनुं फल हवे वेखजे रे, ते विण न वले शान ॥ एम करी पांजरे घालियो, सूडानें केइ अपमान रे, बहु वचन प्रहारनुं दान रे, सांभले सूडो निजकान रे, लघु मोटीनु करे बहु मान रे, तुम सम नहीं अवर को गाम रे ॥ स०॥८॥ पर

परिजन देखी घणुं रे, शुक करे पश्चात्ताप ॥ धिग् मुज सूडानो नव लह्यो, मुज आवी पोह्योतुं पाप रे, न कस्यो परमेष्टीनो जाप रे. तेणें पाम्यो एम सताप रे,हवे परवश शुं करु आप रे,नवि आमां आवे माय वाप रे स०॥ ॥ ए ॥ घर कारय करतीथकी रे, रांधे जव ते नार ॥ तव नाजो ठमका वती. तेहना होये ठमकार रे,लावी सूडो तेणी वार रे,विहिवरावे शस्त्रनी धार रे, कहे सालन तु निरधार रे, करु एहवो तुज परकार रे ॥ स०॥१०॥ तुजने मारी एणी परें रे, एक दिन एह हवाल ॥ ठमकावीशुं तुजने, एम वोले ते विकराल रे, सुणी पामे नय असराल रे, नित्य नित्य ए डु खजं जाल रे, लहेतो काढे कोइ काल रे, जाणे मलीया ठे नरकपाल रे स०॥ ॥ ११ ॥ धन्यधन्य ते नर राजिया रे, जाणी एहवी नारि ॥ दूर रह्या महा नाग्य ते, जाणो जेम जबूकुमार रे, वली वयरस्वामी अणगार रे, चोथे खंम्में ए सार रे, ढाल उगणीशमी अधिकार रे, कहे पद्मविजय धरी प्यार रे ॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे जे रत्नपुरें थयो, ते सुणजो अधिकार ॥ शेठें जाण्युं किहां गयो, श्रीमतीनो नरतार ॥ १ ॥ गयो ते पाठो नावियो, खोलाव्यो वहु ठाम ॥ विहाणे दीठो जे लख्यो, श्लोक मनोहर ताम ॥ २ ॥ तथाहि ॥ हसती पुरें धनपति, शेठनो सुत धनदेव ॥ व्योम मार्गे आवी करी, परणी गयो ततखेव ॥ ३ ॥ तेय सुणी शेठें हवे, श्रीमती रोती जेह ॥ आशासना देइ एम कहे, इहां तेहातुं तेह ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ वींठीयानी देशी ॥

॥ एकदिन एक सारथपति, सागरदत्त नामें शेठ रे ॥ व्यापारनें अर थें निहां जतो,हसती पुरी जिहा ठेठ रे ॥ १ ॥ जूठ जूठ कर्मविटवना ॥ ए आंकणी ॥ तेहने श्रीपुंजें आपियो, वहुमूल्य रयण अलकार रे ॥ कहे धनदेवनें तुमें आपजो, करी आदर अति सतकार रे ॥ जू० ॥ २ ॥ कहेजो सदेशो एणी परें, तुमें आवो एणे गाम रे ॥ निजनारी सनालो मोदशुं, तुम न घटे एहवु काम रे ॥ जूं० ॥ ३ ॥ हवे सागरदत्त पण चालियो, उल्लघ्यो सागर जहाज रे ॥ पोह्योतो हसती नयरीयें, तिहां करे व्यवसायनां काज रे ॥ जू० ॥ ४ ॥ धनदेव घर गयो अन्यदा रे, नवि दीठो

धन देव रे ॥ तव पूछे तेहनी नारिनें, नाखो मुजनें ततखेव रे ॥ जू० ॥ ५ ॥ धनदेव किहां छे दाखवो, तव बोली ते सुणो नार रे ॥ देशांतरें व्यापारें गयो, आवशे ते दिन दश बार रे ॥ जू० ॥ ६ ॥ कहे सार्थवाह नारी प्रत्यें,श्रीपुंजें दीधो अलकार रे ॥ धनदेव जमाइने कारणें,श्री मती फूरे तस नार रे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते कारण तेड्या छे तिहां, तव बोली ते वेहु नार रे ॥ ए वात तो तेहु कहेता हता, उत्सुकता चित्त बहु धार रे ॥ जू० ॥ ८॥ पण कार्यवशें देशांतरे, जावु पडियुं ततकाल रे ॥ वातां ते णें एणी परें नाखीयुं, धरी हर्षनें थईउजमाल रे ॥ जू० ॥ ए ॥ रत्नपुर थी आवे जो कोइ, आपजो तस ए शुकराज रे ॥ मुज नारी नवोढा रम णनें,वली प्रेम उपावण काज रे ॥ जू० ॥ १० ॥ लेजो वली ससरो मोक ले, एम कही आप्यु तस हाथ रे ॥ शुक सहित रूडुं ते पांजरु, लीधी अ लकृतिनी आथ रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ हवे सागरदत्त ते नयरमां, करी क्रय वि क्रय व्यवहार रे ॥ चढीयो घर जावा प्रवहणें, क्रमें सागर पाम्यो पार रे॥ ॥ जू० ॥ १२ ॥ उतरी हवे नयरमां सचस्यो, पोहोतो श्रीपुंजनें गेह रे ॥ कह्यु सर्व वृत्तांत ते शेठनें, जे नारीयें नाख्युं तेह रे ॥ जू० ॥ १३ ॥ आ शुकपिंजर तेणें आपियु, नारीनें रमवा हेत रे ॥ ते लेइनें अति मोदश्युं, नि जपुत्रीनें देइ सकेत रे ॥ जू० ॥ १४ ॥ नरतार प्रसाद ए पामीनें, शुकशु र मती सुरसाल रे ॥ चोथे खंडें ए वीसमी, पद्मविजयें नाखी ढाल रे ॥ जू०॥

॥ दोहा ॥

॥ रमतां रमतां एकदा, दवरक दीठो पाय ॥ विस्मय पामी छोडीयो, त व तिहां अचरिज थाय ॥१॥ मूलरूपें धनदेव ते, देखी हर्ष न माय ॥ वि स्मय लइने पूछती, प्रणमी निजपति पाय॥ २ ॥ स्वामी ए अद्भुत कि श्युं, कहो मुजने अवदात ॥ ते कहे जिम देखो तुमें, तिमहिज छे ए वात ॥ ३ ॥ हमणां अधिक म पूछशो, सांनली एह विचार ॥ हर्षे जई निज तातनें, नाख्यो तेह प्रकार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ आवो जमाई प्राहुणा जयवताजी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपुंजशेठ हवे हर्षशुं जयवताजी ॥ जोइ जमाई रूप गुणवताजी ॥ अति हर्षित सहु कुटुंब ते ॥ ज० ॥ सांनली तेह स्वरूप ॥ गु० ॥१ ॥ अ ति आदर सन्मानथी ज०॥ रहेवाने आवास गु० ॥ आप्यो स्वर्ग विमान

ग्यो ज० ॥ बहु धन पूरित ग्राम गु० ॥ २ ॥ तिहां धनदेव सुखें रहे ज० नवपरिणित लेइ नार गु० ॥ स्वेच्छायें अति स्नेहथी ज० ॥ जोगवे जोग श्रीकार गु० ॥ ३ ॥ जाणे पुण्य उदयथकी ज०॥ पाम्यो फरी अवतार गु० करे व्यवसाय घणा तिहां ज० ॥ सकलकला जंमार गु० ॥ ४ ॥ लाज घणो तेहमां थयो ज० ॥ इव्यपात्र हुउं ताम गु० ॥ काल केतोहिक निर्गमे ज० ॥ रहेतां तिणहिज गाम गु० ॥ ५ ॥ इंइजाल सुपना समो ज०॥ एह अनित्य संसार गु० ॥ आयु क्ष्यें तिणें कारणें ज०॥ ञेठ गया यम हार गु० ॥ ६ ॥ जाई जोजाई एकमनां ज० ॥ श्रीमती ऊपर राग गु० ॥ अल्प थयो तिहां अनुक्रमें ज० ॥ विरुई वोले वाग गु० ॥ ७ ॥ यत ॥ स्त्री पीयर नर सासरें, संयमीया सहवास ॥ एता होय अलखामणा, जो मंमे थिर वास ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीमती निज जरतारशुं ज० ॥ जावानें परिणाम गु० ॥ मन चिंते जरतारनुं ज० ॥ केहवु रहेवा गाम गु० ॥ ८ ॥ केहवी होय नारी अछे ज० ॥ जोउं तास स्वरूप गु०॥ उत्कंठित चित्त तेहशु ज० ॥ कहे पतिने करी चूप गु० ॥ ए ॥ जनकनु घर निज स्वामीजी ज० ॥ नवि देखाडो केम गु० ॥ सासरे रहेवु नारीने ज० ॥ जनकगृहें नर नेम गु० ॥१०॥ यश कीर्त्ति पामे घणी ज०॥ अन्यथा होये अपमान गु० ॥ तव बोल्यो धनदेव ते ज०॥ अवसरें मेलशु तान गु० ॥ ११ ॥ धीरजवती श्रीमती ज० ॥ मौन करी रही ताम गु० ॥ वली कालांतरें एकदा ज० ॥ श्रीमती कहे सुणो स्वामि गु० ॥ १२ ॥ त्रण जातिना पुरुष छे ज० ॥ जघन्य उत्तम नर जात गु० ॥ त्रीजा मध्यम जाणीयें ज० ॥ प्रथम श्वसुर गुणें ख्यात गु० ॥ १३ ॥ निजगुण ख्यात उत्तम कह्या ज० ॥ मध्यम बाप गुणेण गु० ॥ तेणें तुमनें रहेतां इहां ज०॥ श्वसुर तणे इव्येण ॥गु०॥ १४॥ उत्तमता नवि एहमां ज०॥ वली सुणो त्रण प्रकार गु०॥ बाप गुणें उत्तम कह्या ज० ॥ मध्यम मात प्रकार गु०॥ १५॥ नारीगुणें जे विस्तस्या ज० ॥ तेह जघन्य कहेवाय गु०॥ यद्यपि गुणवंता तुमें ज०॥ सकल कलाना ठाय गु० ॥ १६ ॥ समरथ इव्य उपार्जवा ज० ॥ तो पण एम कहेवाय गु०॥ जमाई श्रीपुत्र शेठनो ज०॥ कहे जननो समवाय गु०॥ ॥ १७ ॥ तेणें जो उत्तम पुरुषना ज० ॥ मारगनी करो चाह गु० ॥ जनमनूमि तो अनुसरो ज०॥ शु कहियें घणु नाह गु०॥ १८ ॥ खंम त्रीजे एक

धन देव रे ॥ तव पूछे तेहनी नारिनें, नांखो मुजनें ततखेव रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ धनदेव किहां छे दाखवो, तव बोली ते सुणो नार रे ॥ देशांतरें व्यापारें गयो, आवशे ते दिन दश बार रे ॥ जू० ॥ ६ ॥ कहे सार्थवाह नारी प्रत्यें,श्रीपुंजें दीयो अलंकार रे॥ धनदेव जमाइने कारणें,श्री मती फूरे तस नार रे ॥ जु० ॥ ७ ॥ ते कारण तेड्या छे तिहां, तव बोली ते वेहु नार रे॥ ए वात तो तेहुं कहेता हता, उत्सुकता चित्त बहु धार रे ॥ जू० ॥ ८॥ पण कार्यवशें देशांतरें, जावु पडियु ततकाल रे ॥ जातां ते णें एणी परें नांखीयुं, धरी हर्षनें थईउजमाल रे ॥ जू० ॥ ए ॥ रत्नपुर थी आवे जो कोइ, आपजो तस ए शुकराज रे ॥ मुज नारी नवोढा रम णनें,वली प्रेम उपावण काज रे ॥ जू०॥ १०॥ लेजो वली ससरो मोक ले, एम कही आप्यु तस हाथ रे ॥ शुक सहित रूडुं ते पांजरु, लीधी म लकुतिनी आथ रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ हवे सागरदत्त ते नयरमां, करी क्रय वि क्रय व्यवहार रे ॥ चढीयो घर जावा प्रवहणें, क्रमें सागर पाम्यो पार रे॥ ॥ जू० ॥ १२ ॥ उतरी हवे नयरमां सचर्यो, पोहोतो श्रीपुंजनें गेह रे ॥ कह्यु सर्व वृत्तांत ते शेठनें, जे नारीयें नांख्युं तेह रे ॥ जू० ॥ १३ ॥ आ शुकपिंजर तेणें आपियुं, नारीनें रमवा हेत रे ॥ ते लेइनें अति मोदथी, नि जपुत्रीनें देइ सकेत रे ॥ जू० ॥ १४ ॥ जरतार प्रसाद ए पामीनें, शुकशु र मती सुरसाल रे ॥ चोथे खंडें ए वीशमी, पद्मविजयें नांखी ढाल रे ॥ जू०॥

॥ दोहा ॥

॥ रमतां रमतां एकदा, दवरक दीठो पाय ॥ विस्मय पामी ओडीयो, त व तिहां अचरिज थाय ॥१॥ मूलरूपें धनदेव ते, देखी हर्ष न माय ॥ वि स्मय लइने पूछती, प्रणमी निजपति पाय ॥ २ ॥ स्वामी ए अद्भुत कि श्युं, कहो मुजने अवदात ॥ ते कहे जिम देखो तुमें, तिमद्विज छे ए वात ॥ ३ ॥ हमणां अधिक म पूछशो, सांभली एह विचार ॥ हर्षे जई निज तातनें, नांख्यो तेह प्रकार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ आवो जमाई प्राहुणा जयवताजी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपुंजशेठ हवे हर्षशु जयवताजी ॥ जोइ जमाई रूप गुणवंताजी ॥ अति हर्षित सहु कुटुंब ते ॥ ज० ॥ सांभली तेह स्वरूप ॥ गु० ॥१ ॥ अ ति आदर सन्मानथी ज०॥ रहेवाने आवास गु० ॥ आप्यो स्वर्ग बिमान

चाल्यू जाय, अनुक्रमें घूटी पग वोलाय ॥ रू० ॥ १५॥ ढींचणें आव्यु रे साथलो बूडती रे, कटितटने वली नाभि प्रमाण, उदर हृदयने कठने माण रू० ॥ १६ ॥ वधतुं वधतु रे नासायें अडयु रे, धनदेव मनमां अति खेदाय, केम थाशे जल वधतुं जाय ॥ रू० ॥ १७ ॥ श्रीमती भांखे रे न य मन माणजो रे,करुं एहनो हवे हु प्रतिकार,जो जो माहारो ए चमत्कार ॥ रू० ॥ १८ ॥ घुटडे एकें रे ते जल पी गई रे, जेम नवि धरतीयें जल देखाय, एक बिंडु नवि तेणें ठाय ॥ रू० ॥ १९ ॥ बेहु ते नारी रे श्रीमती पाय पडे रे,शक्तियें जीती तें एणी वार,तु विद्या गुणनो भंडार ॥रू०॥२०॥ तुजनें आराधु रे स्वामिनीनी परें रे, त्रणे प्रीति परस्पर जोडी, काम करे घ रनां मन कोड ॥ रू० ॥ २१ ॥ कुड विद्यायें रे त्रणे बराबरी रे,प्रीति घ णी नित्य वधती जाय, सरिखे शीलें सहु सम ठाय ॥ रू० ॥२२ ॥ होय सम त्रीजी रे स्वेछाचारिणी रे, अवगुणी सगें अवगुण थाय,गुण सघला तस नाशी जाय ॥ रू० ॥ २३ ॥ यत ॥ अंवस्सय निवस्सय, दोएह्वि समा गयाइ मूलाइ ॥ ससग्गीय विणठो, अंबो निवत्तण पत्तो ॥१॥ढाल॥ धनदेव चिंते रे मनमां एणी परें रे, जो ए बे सम त्रीजी थाय, तो हु शरण करु किहां जाय ॥ रू० ॥ २४ ॥ राक्षसी सरखी रे त्रणनें गणीनें रे, करुं हवे आतम केरु हित, जेम नवि होय मुज एहवी नीत ॥ रू० ॥ २५ ॥ चोथे खंडें रें ढाल बावीशमी रे, पद्मविजयें एम भांखी सार,धनदेव पाम शे जयजयकार ॥ रू० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ५५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कांइक कारय मिश करी,घर छोडणने हेत ॥ रूपचंदेवनें डेहरे,आव्यो धर्मसकेत ॥ १॥ ते धनदेव हु जाणजे,वेगे ताहारी पास ॥ सूडापणु में अ नुभव्यु, केवल दुःख आवास ॥ २ ॥ पशुता आवी ढूकडी, पण कोइ देव सयोग ॥ पशुपणु नवि पामीया, तेणें तुमें सुखीया लोग ॥ ३ ॥ में तो म हारा तनुथकी, दुःख अनुभवियुं जोर ॥ तेणें तुमथी मुज आकरां,जाणो कर्म कठोर ॥ ४ ॥ मदन सुणी रीज्यो घणु, विस्मय लही कहे एम ॥ तुम दुःख जाणी कीजीयें,आतम हित बिहु प्रेम ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ बे बे मुनिवर विहरण पांगर्या जी ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहां मुनिवर आवीयाजी, विमलवाहु जसु नाम रे ॥

वीशमी ज० ॥ पद्मविजयें कही ढाल गु० ॥ श्रीजयानंदना रासमां ज० ॥ सुणता मंगलमाल गु० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदेव नारी वयणथी, बोले एणी परे बोल ॥ श्वसुर तणे घर जे रहे, जाणुं तेह निटोल ॥ १ ॥ पण ठमका भाजी तणा, नवि वीसरिया मुज्ज ॥ हैडामां खटके घणा, शुं भांखुं हुं तुज्ज ॥ २ ॥ ते सांभली श्रीमती कहे, ठमकानी कहो वात ॥ तव ते धुरथी सवि कहे, ठमकानो अवदात ॥ ३ ॥

॥ढाल बावीशमी ॥ रूडीनें रढीयाली रे, वाहाला ताहारी वांसली रे ॥ एदेशी॥

॥ रूडीनें रढीयाली रे, सुगुणा श्रीमती रे, हसीनें बोली तव तेणी वार, एहनो श्यो गणवो चित्त भार ॥ रू० ॥ १ ॥ मुजनें देखावो रे ते तुम भारजा रे, शक्ति हुं जोउ केहवी तास, मुजनें जोवा अति पीपास ॥ रू० ॥ ॥ २ ॥ शंका मूकी रे चालो निजघरें रे, तुमने बाधा नहीं लगार, मुज सरिखी पासें थकां नार ॥ रू० ॥ ३ ॥ तेह सुणीने रे धीरय धारतो रे, इव्य करी सह्यु भेलुं ताम, साथें लेई पोतानी वाम ॥ रू० ॥ ४ ॥ सयणनें पूछी रे धनदेव चालियो रे, सागर ऊतरी पाम्यो पार, पोहोतो हसतीनपरी मझार ॥ रू० ॥ ५ ॥ बहुधन देतो रे दीन अनाथनें रे, गयहस्तीपरें पोहोतो द्वार, विस्मय पामी तव बेहु नार ॥ रू० ॥ ६ ॥ ए श्यो अचरजो रे आव्यो किहांथकी रे, शुक टलियो केम धरे सनेह, मलपतो आव्यो ए निजगेह ॥ ॥ रू० ॥ ७ ॥ एम विचारी रे बेहु भली थई रे, जाणीयें हैयडे हर्ष न माय, करे मंगल उपचार बनाय ॥ रू० ॥ ८ ॥ गौरव करती रे विनय देखावती रे, चित्रशालीमां लावी ताम, सिंहासन मांड्यु तेणें ठाम ॥ रू० ॥ ९ ॥ धनदेव बेठो रे साथें श्रीमती रे, कुशल खेमनी पूछे वात, धनदेव कहे मुज छे सुखशात ॥ रू० ॥ १० ॥ मोहोटी भाखे रे न्हानीनें सुणो रे, जल थी पखालो पियुना पाय, लघु पण शीघ्र थई जल लाय ॥ रू० ॥ ११ ॥ भक्तिथी न्हानी रे पाय पखालती रे, त्रांबाकूंमीमांहे तेह, ते जल महोटी ग्रही ससनेह ॥ रू० ॥ १२ ॥ मंत्रें मंत्री रे तिम आगोटीयुं रे, पृथिवी उपर बलथी ताम, मंत्रनो महिमा अचिंत्य छे आम ॥ रू० ॥ १३ ॥ वध वा लाग्युं रे पाणी वेल ज्युं रे, भय पाम्यो धनदेव अत्यंत, श्रीमती साहामुं जोवे तंत ॥ रू० ॥ १४ ॥ श्रीमती भाखे रे मत बीहीजे मनें रे, पाणी वधतुं

दीधी ताम रे ॥ ग्रहण आसेवना शिक्षा बिहुं ग्रहेजी, द्वादशांगी धरे जेम निज नाम रे ॥ ६०॥ १६ ॥ तीव्र तप चरण आराधे बिहुं मुनिजी, बिहुं जण स्नेह परस्पर धार रे ॥ गुरुकुल वासे वसता बिहुं जणाजी, प्रायें ते साथें करता विहार रें ॥ ६०॥ १७ ॥ अनशन आराधि गया सोहमेंजी, पंच पल्योपम आयु रसाल रे ॥ खम चोथे त्रेवीशमी ए कहीजी, पद्मविजय वर ढाल रे ॥ ६० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवनवें प्रीतिज घणी, करता कार्य अशेष ॥ तिहांथी चवी हवे कप नां, ते सांनलो सुविशेष ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ करकंडुनें करुं वंदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ मदनजीव हवे कपनो हु वारिलाल,महाविदेह मझार रे हु वारिला ल ॥ नयर विजयपुर शोहतु हु० ॥ अलकापुरी अनुहार रे हुं० ॥ १ ॥ समरसेन तिहां राजीयो हुं० ॥ विजया वली तस नार रे हुं० ॥ मणिप्रन नामें ते थयो हुं० ॥ सकल कला शिरदार रे हु० ॥ २ ॥ यौवन पा म्यो जेटले हु० ॥ परणाव्यो तस ताम रे हु० ॥ पलि देखी प्रतिबूजीयो हु० ॥ थाप्यो सुत निज गम रे हु० ॥३॥ मणिप्रन राज्यनें पालतो हु० वश कीधा बहु राय रे हु० ॥ सांमत मंत्रीश्वर घणा हुं० ॥ प्रेमें प्रणमे पा य रे हु० ॥ ४ ॥ काल गयो एम केटलो हु० ॥ गज चढीयो एक दिन्न रे हु० ॥ रयवाडीयें नीकल्यो हु० ॥ करी एकाग्र मन्न रे हुं० ॥ ५ ॥ एक स रोवर मोटकु हु० ॥ कमल विकस्वर मांहि रे हु०॥ गगन तारा गणनी परें हु० ॥ शोजे अतिशय त्यांहि रे हु० ॥ ६ ॥ देखी रमणिकता घणी हु० ॥ जोइ रह्यो चिरकाल रे हु० ॥ पायक पासें अणाविसु हु०॥ एक कमल त तकाल रे हुं० ॥ ७ ॥ राय गयो हवे आगलें हु० ॥ वलियो तेहज मग्ग रे हु० ॥ तेह सरोवर देखिसुं हु० ॥ शोजा गइ ते अलग्ग रे हु० ॥ ॥ ८ ॥ अहो अहो ए कहो श्यु थयु हु० ॥ पूछे परिजन राय रे हु० ॥ परिजन कहे सुणो नरपति हु० ॥ जेम शोजा कमलाय रे हु०॥ए ॥ कमल एकेक सहु लीये हु० ॥ तव ए नीपन्नु एम रे हु० ॥ सुणी राजा मन चिंत वे हु०॥ अहो ए सरोवर जेम रे हु०॥ १०॥ राजऋद्धि विण नर तथा हु०॥ न वि शोजे कोइ काल रे हु० ॥ ऋद्धि अशाश्वती जाणीयें हु०॥ सुपननें जे

वहु मुनिवरनें वृंदें परिवखाजी, साधुगुणें अनिराम रे ॥ इं०॥ १॥ पंच स
मिति सुमता सदाजी, त्रण गुपतिना धार रे ॥ दशविध साधु धर्म आ
राधताजी, नावना नावता वार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ जिनवर चैत्यमां जिनवर
वांदीयाजी, स्तवना करीनें स्तविया देव रे ॥ तेह समपमां मुनिवर आवी
याजी, जिहां मदन धनदेव रे॥ इ० ॥ ३ ॥ शिष्यें कवल प्राशुक पान
केंजी, पायखु आवी वेग ताम रे ॥ नक्तिथी विहु जणे मुनिवर वंदीयाजी,
करिय पचांग प्रणाम रे ॥इ०॥४॥ धर्मलान दीधो मुनिवरेंजी,ज्ञानें करी जा
णी तास चरित्र रे ॥ धर्मदेशना दीये प्रतिबोधिनीजी,सांजलो प्राणी कर्म वि
चित्र रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ जीवित तटिनीपूर समु कह्युजी, नटपेटक सम एह
कुटुंव परिवार रे ॥ शरदना अभ्रसमी लखमी कहीजी, धर्ममां जे मुजे ते
गमार रे ॥ इ०॥ ६ ॥ आपद कालें शरण न को होयेजी, स्वारथ तत्पर ए
परिवार रे ॥ सडन पडन विध्वंसी ए तनुजी, ललना कूड कपट आगार
रे ॥ इ०॥ ७॥ एणी परें विघ्न नख्या संसारमांजी, जीवने सुख नहीं लवलेश
रे ॥ विषयनुं सुख अणुसम ते मानतोजी, ते ललना आयत ठे सुविशेष
रे ॥ इ०॥ ८ ॥ ललना तो आपदानी ठे प्रिय सखीजी, सापण वाघण रा
क्षसिणीनें तोल रे ॥ स्वर्गनी नोगल नरकनी दीपिकाजी,राचे कोण पंमित
जेह अमोल रे ॥ इ०॥ ९ ॥ कार्य अकार्य न गणे प्राणियोजी, विविध प्र
कारनां करतो पाप रे ॥ तेहथी ए संसारमांहे नमेजी, खमतो ते चिहु ग
तिनां डुःख आपा रे ॥ इ०॥ १० ॥ ते कारण तुमें धर्म समाचरोजी, विष
यथी विरमी महानुनाव रे ॥ सर्व विरति रूडी अंगीकरोजी, धर्म कार्यमां
आणी नाव रे ॥ इ०॥ ११ ॥ निग्रह कीजें सर्व कषायनोजी, इंडिय जे ठे
चपल तुरंग रे ॥ डुर्दम दमीयें तपथी तेहनेंजी, गुरु कुलवासें वसीयें रंग
रे ॥ इ०॥ १२ ॥उपसर्गनें वली सहियें परिसहाजी,तो नवसायर तरियें न
व्य रे ॥ जनम जरा कल्लोलें न बूडियेंजी,निर्मल होय शुद्धातम इव्य रे ॥
इ०॥१३॥ सकल संसारिक डुःखने वामताजी,अकल अबाधित लहे निर्वाण
रे ॥ निर्द्वंद्वी शाश्वत सुखनें अनुनवेजी,विलसे वर केवल दंसणनाण रे ॥
॥ इ०॥ १४ ॥ देशना सांजली मन संवेगीयाजी, मदननें धनदेव प्रणमी
पाय रे ॥ कहे नव अंधकूआथी उद्धरोजी,' दीक्षा कर आलंबनें गुरु
राय रे ॥ इ०॥ १५॥ करो उपकार स्वामी अम रांकनेंजी, गुरुयें पण दीक्षा

तेणें, पाम्या यौवन वेश ॥ परणाव्या वेहु पुत्रनें, रत्नचूड सुविशेप ॥ ७ ॥ योग्य जाणीनें खगपति, रत्नचूडनें ताम ॥ पदवी दिये युवराजनी, राज्य चारना काम ॥ ८ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ इणे अवसर हवे एकदा रे,अशुन करमनें योग ॥ पूर्व निकाचित उदयथी रे, राणीनें थयो रोग ॥१॥ देखो गति कर्मनी रे,कर्मे सुख दुःख होय ॥ दे० ॥ ए आंकणी ॥ रतनमाला राणी तणे रे, अंगें ज्वर असराल ॥ जूख गइ अन्न नवि रुचे रे, टलवले जेम मछ जाल ॥ दे०॥२ ॥ दाह घणो अंगें थयो रे, बलती फूरे जोर ॥ क्षण पण निड़ा नवि लहे रे, थिर न रहे एक ठोर ॥ दे० ॥ ३ ॥ मुख कुमलाणुं मालती रे, फुल ते जेम कुमलाय ॥ राजवैद्य बहु तेडीया रे, विकल्प बहु करे राय ॥ दे० ॥ ४ ॥ औषध विविध प्रकारनां रे, करता तेह उपाय ॥ ॥ मन्त्रवादी मन्त्रे घणा रे, पण ते गुण नवि थाय ॥ दे० ॥ ५ ॥ राणीनें रोग व्यापीयो रे, वैद्यें जाणी असाध्य ॥ हाथ खंखेरी उठिया रे,कोइ उपाय न लाध ॥ दे० ॥ ६ ॥ अनुक्रमें आयु अथिरथी रे,गंमर्या तेणीयें प्राण ॥ तव आक्रंद ते उछल्यो रे, रोवे सहु तिणे ठाण ॥ दे० ॥ ७॥ राय आंसु नर लोयणे रे, करतो अनेक विलाप ॥ हा देवी तुं मुऊनें रे, केम नवि आपे जवाप ॥ दे० ॥ ८ ॥ पोक मेली राजा रूवे रे,बोले रोतो वाणि ॥ ककेली दल रातडा रे, हा तुज चरणनें पाणि ॥ दे० ॥ ९ ॥ नेत्र ते कमलनां दलसमा रे, चंद वयणी दे बोल ॥ कुंद सुदर दंत ताहरा रे, विद्रुम अधर अमोल ॥ दे० ॥ १० ॥ तुजने किहां हवे देखशुं रे, त्रिभुवन शून्य आज ॥ नासे तुज विण मुजनें रे,एम रोवे महाराज ॥दे० ॥ ११ ॥ दाघ देइ हवे तेहनें रे, शोच पुत्रशु राय ॥ रोतो न रहे कोयथी रे, न करे कांय व्यवसाय ॥ दे० ॥ १२ ॥ राज काज सवि छंमीयों रे,रहे योगीश्वर रीति ॥ मन्त्री प्रमुख सवि रायनें रे, एम समजावे नीति ॥दे० ॥ ॥ १३ ॥ तुम सरिखा धीर पुरुषनें रे,न घटे करवो शोक ॥ राज्य सीदायें तुम तणु रे,दुःखीयो होयें लोक ॥दे०॥१४॥ उत्पत्तिलयधुत सर्व छे रे,थिर नही जगमां कांय ॥ समजाव्यो समजे नही रे, अधिक धरे दुःख राय ॥ ॥ दे० १५ ॥ राणी सांजरे क्षण क्षणें रे,दुःख धरे तास वियोग ॥ शाता

म इंद्रजाल रे हु० ॥ ११ ॥ रमणिक जिम किंपाकनां हुं०॥ फल कडुआं परिणामरे हु० ॥ इत्यादिक चिंता परो हु०॥ चाल्यो आगल नाम रे हु०॥ ॥ १२ तव दीठा उद्यानमां हु० ॥ सूरिजिनेश्वर नाम रे हु० ॥ धर्म कथा कहेतां थकां हु० ॥ कीधो तास प्रणाम रे हु० ॥१३॥ देशना सांजली ह र्षथुं हु० ॥ सुतनें सोंपी राज्य रे हु० ॥ संयम लिये सूरिकने हुं० ॥ आप थया ऋषिराज रे हु० ॥ १४ ॥ तीव्र तपस्या आदरी हु० ॥ पाले शुद्ध आचार रे हु० ॥ गगनगामिनी उपनी हु० ॥ लब्धि बीजी प ण सार रे हु० ॥ १५ ॥ अवधिनाण वली उपनुं हु० ॥ जाणे जगत स्वभा व रे हु० ॥ विचरी पृथिवी पावन करे हु० ॥ लब्धि तणें परजाव रे हुं० ॥ ॥ १६ ॥ धनदेव हवे उपनुं हु० ॥ ते सुणजो अधिकार रे हु० ॥ नग वैता ढय शोहे घणुं हु० ॥ जोयण पचाश विस्तार रे हु० ॥ १७ ॥ जोयण पची श उंचो वली हुं० ॥ गगनशुं करतो वात रे हु०॥ निर्जर कण शीतल घणा हुं० ॥ फरशी पवन आयात रे हुं० ॥ १८ ॥ तेणे सुर किन्नर यक्षनां हुं० सुखीयां मिथुन उद्यान रे हु० ॥ रयणीयें ओषधि दीपती हुं०॥ दीपे दीप समान रे हु० ॥१९॥ तिहां नयर वर नामथी हु०॥ रथनेउर चक्रवाल रे हुं० ॥ प्रतिनवनें जिहां धूपना हु० ॥ धूम्र ते मेघनी माल रे हु० ॥२०॥ रयण मणि पंक्तितणां हु० ॥ प्रजा तें इंद्रचाप रे हु० ॥ गगनें विद्याधर मणि तणा हुं० ॥ किरण ते विजली व्याप रे हु० ॥२१ ॥ चोथे खंमें चो वीशमी हुं० ॥ श्रीजयानंदनें रास रे हु० ॥ ढाल पमें कही पुण्यथी हु०॥ होये लीलविलास रे हु० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ६०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर चक्री वडो, महेंद्र सिंह अनिधान ॥ बहुविद्याधर पय नमे, तेह महेंद्र समान ॥ १ ॥ दश दिशि जस कीर्त्ति घणी, करतो सबलो न्या य ॥ बंधुनें पण परिहरे, जो जाणे अन्याय ॥ २ ॥ न्यायवंतनें बंधुपरें, जाणे तेह नरिंद ॥ परनामाथी परमुहो, गुणगण केरो वृंद ॥३॥ राणी र यणमाला नली, पाणी पद्म समान ॥ खाणी सोहग गुण तणी, वाणी कोकि ल मान ॥ ४ ॥ रायहाणी कंदर्पनी, पद्मिणी मुखचंद ॥ रीसाणी दोषा वली, जाणी लोयण अरविंद ॥ ५ ॥ सुख नोगवतां दंपती, दोय पुत्र थया तास ॥ रत्नचूड मणिचूड तिम, करे कला अन्यास ॥६॥ साधि विद्या बहु

तव गुरु बोल्या ज्ञानथी, छे तुज मुज संबध रे ॥ एम कही धनदेव मदन नो,सर्व कह्यो प्रबध रे ॥ ए० ॥ १४॥ धनदेव ते तु उपन्यो, मदन ते मुजनें जाण रे ॥ सोहमथी आव्या विहु,ए संबध प्रमाण रे ॥ ए० ॥ १५ ॥ तुज प्रतिबोधन कारणें, हु आव्यो सुण राय रे ॥ आपण मित्र पूरव नवें, नारी नुं डुःख चित्तलाय रे ॥ ए०॥१६॥ संयम लेइ गुरुकुलें वस्या, उपन्या एक वि मान रे ॥ नारी तणें हवे कारणें,केम डुःख धरे अमानो रे ॥ए०॥१७॥ सां नली ईहापोह थया,जातिस्मरण पायो रे ॥ नरपति गुरुने वीनवे,जगवन् स त्य कहायो रे ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुज उपर अनुग्रह करी, पाउधाख्या मुनिरा य रे ॥ नवसायरमां बूडतां,कीधो मुज सुपसाय रे ॥ ए० ॥ १ए ॥ रत्नचू डनें थापियो, उत्सवथी निज गाम रे ॥ विरचावे जिनमंदिरें, पूजा अति अ जिराम रे ॥ ए० ॥ २० ॥ गुरुपासें दीक्षा ग्रही,श्रुत सायर लह्या पार रे ॥ तप तपता अति आकरा,अनिग्रह अनेक प्रकार रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ विद्या धर मुनि अनुक्रमें,लब्धि तणा जंमार रे ॥ बिहुं मुनि अनुक्रमें विचरता,शु क्लध्यान लहे पार रे ॥ ए० ॥ २२ ॥ क्षपकश्रेणि मांमी करी,पाम्या केव लज्ञान रे ॥ सकल कर्मनो क्षय करी पाम्या शाश्वत थान रे ॥ ए० ॥ २३ ॥ चोथे खमें छवीशमी,पद्मविजय एम ढाल रे ॥ ब्रह्मवैश्रवण वदे वली, आग ल वात रसाल रे ॥ ए० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनपति मदन डुविध तणु,चरित्र विचारे जेह ॥ इहनव परनव डु ख दीये, तरुणी केम ग्रहे तेह ॥ १ ॥ सांजली सहु विस्मय लह्या, चम क्या चातुर लोक ॥ राय कहे चित्त रीजीयुं, हृदयथी वाणी रोक ॥ २ ॥ वात कही वारू परें,नारीचरित्र निदान ॥ डुःखे तजाये देवता,मांमधु जेणे घर मान ॥ ३ ॥ निंदनीक सघली नही, अबला ए एकांत ॥ मुगतें गई म हिला घणी,पुष्ट घणु ते पंत ॥ ४ ॥ कर्मवशें सहु कोयनें, गुणनें दोष ग णाय ॥ आश्रव तस कारण अछे,निंदा आश्रव न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ सुंदर पापस्थानक तजो शोलमु ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर तुमें अमनें धुरें नांखियुं, वयण सनालो आप हो ॥ सुंदर सा मान्यनें घर नवि घटे, दोय प्रिया संताप हो ॥ १ ॥ सुंदर तुमें अम बहु उपकारिया ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर नहीं सामान्य पुरुष तुमें, जेहने पोहे

क्यांहिए नवि लहे रे,कठिन कर्मनो जोग ॥ दे०॥१६॥ चोथे खंमें ए कही रे, पंचवीशमी ढाल ॥ पद्म कहे मुनि आवशे रे, डुःख पाशे विसराल ॥ ॥ दे० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ५२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गगनगामिनी लब्धिथी, मणिप्रज जे अणगार ॥ गगन मारगथी आवीया, तास उद्यान मकार ॥ १ ॥ कुमर सहित वदन जणी, जाय विद्याधर राय ॥ परम हर्ष धरतो थको,प्रणमे मुनिवर पाय ॥२॥ बेठो निज उचित तासनें, मुनिवर दीये उपदेश ॥ जव्यजीव समजाववा,वली विशेष नरेश॥३॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ अग चार कह्यां दोहिलां, तिहां मानव अवतार रे ॥ दश दृष्टांतें दोहिलो, जमतां एणे ससार रे ॥ १ ॥ एमजाणी व्रत आदरो ॥ ए आंकणी॥ ते पामे पण दोहिलु, सांजलवु सिद्धांत रे॥ घांची मोची आहेडी तणा, जव वली म्लेच्छमां हूत रे ॥ ए० ॥ २ ॥ वाघरी माछी कसाइना, ढीपानें सूत्रधार रे ॥ सांजलवु किहांथी होये,पामी एह अवतार रे ॥ए०॥३॥ कुल पामे रोगी घणा, निरोगी कदी थाय रे ॥ सांजले श्रद्धा दोहिली,मिथ्यामति मुजाय रे ॥ ए०॥ ४ ॥ श्रद्धा पुर्ण्यें पामीयो, डुर्लज सयम सार रे ॥ विषय कषायमां राचियो, वली आरंज अपार रे ॥ ए०॥ ५ ॥ अणवाह्लालां आवी मले, तेम वाह्लालांनो वियोग रे, तेहनुं डुःख धरतो थको, न लहे तत्त्व संयोग रे ॥ ए०॥ ६ ॥ मोहें आकुल व्याकुलो, करे विषाद अनेक रे ॥ नवि जाणे इइ जाल ए, सुपनथकी अतिरेक रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ तीर्थंकर चक्री जिस्या, बलदेवनें वासुदेव रे ॥ कालें कोइ रह्या नहीं,जस करता सुर सेव रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ कुश अग्र जल बिंडुर्ज,चपल जीवित तेम जोय रे ॥ नेत्र कटाक्षनें सारिखा,प्रिय संगम तेम होय रे ॥ ए० ॥ ए ॥ गिरि नदी कल्लोल सारिखी,लखमी अथिर असार रे ॥ यौवन गज कर्ण सारिखु,रूप सध्यारंग धार रे ॥ ए० ॥ १० ॥ देशना सुणी कहे खगपति, स्वामी सुणो मुज वात रे ॥ तुम देखी मुज हियडले, हर्ष आणद न मात रे॥ दे० ॥ ११ ॥ शोक गयो मुज वेगलो, हियडुं हसवा जाय रे॥ तुम मुखचंद्र विलोकवा, अधिक पिपासा थाय रे ॥ ए० ॥ १२ ॥ वात न जाये ते कही,शुं कारण तस होय रे ॥ तुमशुं पूरव जव तणो, स्वामि सबंध छे कोय रे ॥ ए० ॥ १३ ॥

कायक उचित प्रकार हो ॥ सुं० ॥ तु०॥ १८॥ सुं०॥ नगिनी जो दीधी कौ लनें, तो ए अनरथ कीध हो ॥ सु० ॥ देउ जो पुत्री तस कुलें,तो अनरथ प्रसिद्ध हो ॥सुं०॥तु०॥१९॥सुं०॥ ए नृप शूरवीर घणो, कोश सैन्य बलसार हो॥सुं०॥ मीठे वयणे निषेधीयें,न्याय युक्ति अनुदार हो॥सुं०॥तु०॥२०॥सु०॥ एम विचार करी कहे, नइ करीमें शोध हो ॥ सुं० ॥ निम्नकुमरी कोइ था नके, नवि पाम्यो तस बोध हो ॥ सुं०॥ तु०॥ २१॥ सुं०॥ कुमरनें जे साजो करे, निजपुत्री देउ तास हो ॥ सु० ॥ एह प्रतिज्ञा कारणें, दीधी ब्राह्मणनें खास हो ॥सु०॥तु०॥२२॥सुं०॥ कुमरीनें पण ए गम्यो, देखी कला विलास हो ॥सु०॥ ए सम अवर न को गुणी,जोतां जोडी न जास हो ॥सुं०॥तु०॥ ॥ २३ ॥ सु० ॥ चोथे खर्मे ए कही, सत्तावीशमी ढाल हो ॥ सुं० ॥ पद्मवि जय कहे सांजलो, सुणतां मंगलमाल हो ॥ सु०॥ तु०॥ २४ ॥ सर्व ॥६७२॥

॥ दोहा ॥

॥ निम्नकनें नली दीकरी,दूत कहे केम दीध ॥ नृप कहे निम्नज नणी, पूरवें अर्पण कीध ॥१ ॥ ब्राह्मण वारु निम्नथी,वदे दूत तव वाणि ॥ क्रो धवशें ए कीधलुं,जगतीपति कहे जाणि ॥२॥ प्रतिज्ञा अमें पालवा, कीधुं एहवुं काम ॥ वक्रपणे दूतज कहे,अवलुं कीधुं आम ॥ ३ ॥ राजकुमर अ तरंग छे, ब्राह्मण बाह्य सरूप ॥ मारग पाधरो मूकीनें, विरुद्ध करो विरूप ॥ ४ ॥ रूपें हरव्यो रतिपति, किहां ए कुमर स्वरूप ॥ नटविद्या प्रमुखें नि खर, किहां ए ब्रह्म कुरूप ॥५॥ उपकारीनें आपीयें,दक्षिणा धननुं दान ॥ राजकुमरी ए विप्रने, पण देवी न प्रधान ॥ ६ ॥

॥ ढाल अघावीशमी ॥ उलगडी आदिनाथनी जो ॥ ए देशी ॥

॥ दूतनें कहे हवे नरपति जो, करी प्रतिज्ञा लेह जो ॥ लेह युगांतें नवि फरे जो, निर्वहेवुं धरी नेह जो ॥ ॥ दू०॥१ ॥ यत ॥ दिग्गजकूर्म्मकुला चल, फणिपतिविधृतापि चलति वसुधेयं ॥ प्रतिपन्नममलमनसां, न चलति पुंसां युगांतेपि ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सहु सम्मत में ए कयुं जो, हवे न करो अन्य विचार जो॥ दूत कहे हेत तुम कहुं जो,मानो वचन ए वार जो॥दू०॥ ॥ २ ॥ वलीयाशुं सज्जनपणुं जो,राखीयें तो सीझे काज जो ॥ कन्या राज कुमारनें जो, नहीं आपो तो नहीं रहे लाज जो ॥ दू० ॥ ३ ॥ बलथी लेशे जो कदा जो, कोण वारणहारो तास जो ॥ शूरवीर ते नृप

नारि हो ॥सुं०॥ प्रार्थनाजग करे नहीं,सज्जन कोइ प्रकार हो॥सु०॥तु०॥२॥ सु०॥ मुज पुत्री अंगी करो,तव बोले नृदेव हो ॥सुं०॥ एम छे तो पण पर खीयें, अवसरें जाणशु देव हो सु०॥ तु०॥ ३ ॥ सु०॥ कायक प्रतिज्ञा मा हरे, ते जिहां नवि पूराय हो ॥ सु० ॥ तिहां लगें तुमें नवि बोलवुं, एम सुणी चुप रह्यो राय हो ॥ सु० ॥ तु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ राय मंत्री मुख हर खिया,सांजली कन्या तेह हो ॥ सु० ॥ मोद लही मनमां घणु, अंगीक री ससनेह हो ॥ सु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ एक दिन राय सजा करी, बेठ सहु परिवार हो ॥ सु०॥ तेणे समे प्रणमी वीनवे, आवीने प्रतिहार हो ॥ सु०॥ तु०॥ ६ ॥ सु० ॥ दूत आव्यो पद्मरथ तणो, ते आवे के जाय हो ॥ सु० ॥ मोकल वहेलो तेहनें, एणी परें बोले राय हो ॥ सु०॥तु०॥७॥ सुं०॥ मोकल्यो दूत ते आवियो, परपद देखे ताम हो ॥ सु० ॥ रत्न आजूपण जलकतां, रूपें जेहवो काम हो ॥ तु०॥ तु०॥ ८ ॥ सु०॥ मंत्री सामतनें शे ठीया, सेनापति सज्जवाह हो ॥ सु० ॥ अंग रक्षक विविधायुधें, परिवर्यो नृप उन्साह हो ॥ सु०॥ तु०॥ ९ ॥ सु० ॥ बेठो कनकसिंहासनें, चामर छत्र धरंत हो ॥ सु० ॥ ब्रह्म वैश्रवण पासें रह्यो दूत ते नृप प्रणमंत हो ॥ सु०॥ तु० ॥ १० ॥ सु०॥ पंमित कथकनें डुर्धरा,वकतरीआ वड वीर हो ॥ सु०॥ शोजा अधिकी इंद्रथी, चमक्यो देखी नृप नीर हो ॥ सु०॥तु०॥११॥ ॥सु०॥ दृष्टि सज्ञायें बेसाडीयो, पूछे नृप सुखशात हो ॥ सुं० ॥ जगिनीपतिनें वली कहे,तुज आगमनी वात हो ॥ तु०॥तु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ ते कहे तुम पसायथी, मुजनें छे सुखशात हो ॥ सु०॥ तुम जगिनीपति सुखें रहे, हवे सुणो मुज अवदात हो ॥ सु० ॥ तु० ॥ १३ ॥ सु०॥ तुम पासें मुज मोक ल्यो, सांजलो कारण तेह हो ॥सु०॥ दैवयोगें क्रोध उपनो, पुत्री उपर मुज वेह हो ॥ सुं० ॥ तु०॥ १४ ॥ सु० ॥ विजय सुंदरी दीधी जिल्लनें, तेह गयां कोइ ठाम हो ॥ सु० ॥ खोल करी घणी तेहनी,वन वाडी पुर गाम हो ॥ सु०॥ तु०॥ १५ ॥ सु०॥ खबर न लाधी तेहनी, तेणे नित्य खेद ते थाय हो ॥ सु०॥ तुमें पण तस जोवरावजो, विविध प्रकारनां ठाय हो ॥ सु०॥ तु०॥१६॥सु०॥ वात सुणो एक माहरी, छे तुम पुत्री जेह हो ॥सु०॥ पद्म दत्त मुज पुत्रनें, परणावो तुमें तेह हो ॥ सु० ॥ तु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ तेह वचन श्रवणें सुणी, नरपति करे विचार हो ॥ सु० ॥ उत्तर एहनें आपीयें,

सघलो तेहनो अवदात जो ॥ नरपति सुणी कोप्यो घणुं जो, अग्निमा मधु नो पात जो ॥ हू० ॥ २० ॥ चोथे खर्मे ए कही जो, अठावीशमी रुडी ढाल जो ॥ पद्म कहे मद छांमीयें जो, मदथी होये बहु जजाल जो ॥ हू०॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ सैन्य मेल्यु तिहां सामटु, वाज्यां रण वाजित्र ॥ गजवर वेगे गेलछु, चाल्यो सैन्य विचित्र ॥ १ ॥ अति उत्साह इलापति, छत्र चामर छाजंत ॥ गाजे वाजित्रें गगन, हैयडे दर्प धरत ॥ २ ॥ शब्द शकुन वारे सकल, पण न रह्यो पल एक ॥ कमलप्रन नृपनें निकट, आव्यो अति अविवेक ॥ ३ ॥ हाथी त्रीश हजारछुं, रथ पण त्रीश हजार ॥ त्रीश लाख वली तुरंगछुं, चचल पवन प्रचार ॥ ४ ॥ त्रीश कोडी पायक तुरत, आव्यो मेली आम ॥ सांनली निज मत्री सहित,करे विचार एह काम ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणत्रीशमी ॥ जीहो जाणु अवधि प्रयुजीने ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कमलप्रन कहे मत्रीनें, लाला बलीयाछुं नरी बाथ ॥ जीहो कोप मानशुं बोलीया,लाला केम रहेशे एह साथ ॥ १ ॥ नविकजन जोजो पुण्य प्रकार॥ ए आंकणी॥ जीहो मत्री कहे जे कीधलु,लाला अण कीधु नवि होय ॥ जीहो पर परानव न सही शके,लाला क्षत्रीकुलनो कोय ॥ न० ॥ २ ॥ जीहो दोष देखी नास्तिक कुलें, लाला कन्या नवि देवराय ॥ जीहो अणघटती ए कांइ नथी,लाला सैन्य करो समुदाय ॥ न० ॥ ३ ॥ जीहो वप्र सज्ज करी जूफीयें, लाला नरीयें कणने नीर ॥ जीहो नृप कहे न गरथी नीकली, लाला युद्ध करु इण तीर ॥ न० ॥ ४ ॥ जीहो गढमां रहीनें जूफीयें, लाला देशनग निज थाय ॥ जीहो शत्रु देशनें आक्रमे, लाला वीरपी केम सहेवाय ॥ न० ॥ ५ ॥ जीहो ब्रह्मवे अवण कहे त दा,लाला नूपें कही सत्य वात ॥ जीहो नय मनमां मत राखजो,लाला जय थाशे सुखशात ॥ न० ॥ ६ ॥ जीहो जीतछु हु ए एकलो,लाला रहो सघ ला सुखमांहि ॥ जीहो नाटकनी परें देखजो,लाला सगर मुज उत्साहिं॥न०॥ ॥७॥ जीहो सांनली नरपति हरषियो,लाला मेली सैन्य अपार ॥जीहो पंच परमेष्टी समरतो,लाला करे मगल उपचार ॥न० ॥ ८ ॥ जीहो चामर छत्र धरावतो,लाला वेगे ते गजराज ॥ जीहो शुन शकुनें ते नीकल्यो, लाला पुरबाहिर नरराज ॥ न० ॥ ९ ॥ जीहो विविध आयुद्ध धरी रथ चढ्या,ला

ति जो, प्रतिवीर ते तृण छे जास जो ॥ डू० ॥ ४ ॥ तेहनां सैन्य समु इमां जो, तुम बल साथुचूर्ण प्रमाण जो॥ तेह आक्रमशे तुझनें जो, तव नवि थाशे कोइ त्राण जो ॥ डू० ॥ ५ ॥ तेमाटे तुज राज्यनी जो, जीववानी जो होये चाह जो ॥ तो कन्या द्यो नृपकुमरनें जो, एहज सीधो छे राह जो ॥ डू० ॥६॥ सांजली रायनें उपन्यु जो, बहु क्रोध तथा अजिमान जो ॥ कहे रे दूत तु बोलवा जो, घणो निपुण ने वली सावधान जो ॥डू० ॥ ७ ॥ मुज आगल पण बोलतो जो, धीठाई धरीनें जोर जो ॥ पण निज स्वामीनें नवि कहे जो, उपदेश वचन करी सोर जो ॥ डू०॥ ८॥ क्षत्री कुल मेलु करे जो, ते क्षत्री पङ्क्तिमां नाहीं जो ॥ नास्तिकमां अग्रेसरी जो, कम अतर केम उत्साहि जो ॥ डू० ॥ ए ॥ तेहथी सज्जनता करे जो, कुलवंतनें आवे लाज जो ॥ पापी अन्यायीनें नहीं रहे जो, चिरकाल लखमीनें राज जो ॥ डू०॥ १० ॥ यत ॥ तरुवत्तटिनी तटोज्ञतं, प्रमदाहृतगुह्यमत्रवत् ॥ जल वस्त्र मृदामनाजने, न चिर तिष्ठति पापिषु श्रिय ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ शूरता ते निज गेहमां जो, पण शूरता नहीं संग्राम जो ॥ सहेजें तृण सरिखा थशे जो, गली जाशे सघलु धाम जो ॥ डू०॥ ११॥ तेहनां सैन्यने सायरें जो, साथुचूर्णे ते बीजा राय जो ॥ पीवा ते सायर जणी जो, मुज वडवानल सम काय जो ॥ डू०॥ १२ ॥ कोण बीहे छे एहथी जो, निज जीवित रुगो एह जो ॥ तो सन्नद्ध थइ आवजो जो, संग्रामें जोइशुं तेह जो ॥ डू० ॥ १३ ॥ निग्रह योग्य छे माहरे जो, मुज जाणेजीनें अपमान जो ॥ कीधु पण में राखिसुं जो, स्वाजन्यपणु बहु मान जो॥ डू० ॥ १४ ॥ मदमातो ठकुराइथी जो, जो लोपे स्वज्ञनपणु तेह जो ॥ तो खीरखांम घृत जोजनें जो, जूख्याने आप्यु एह जो ॥ डू०॥१५॥ जा वहेजो निज स्वामीनें जो, कहेजे तुं माहारी वाण जो ॥ कौजकुलें नवि दीजीयें जो, ए कन्या अनरथ जाण जो ॥ डू० ॥ १६ ॥ करजो जेम जाणो तुमें जो, तव बोल्यो ब्राह्मण वाणि जो ॥ अहो राजन अतिशय क्षमा जो, तुमथी दीठी गुण खाण जो ॥ डू०॥ १७ ॥ एम कहे पण दूतनें जो, हजी गल हस्त न कीध जो ॥ कोइक सुजटें ते सांजली जो, दूतनें गल हस्त ते दीध जो ॥डू०॥ १८॥ दूतनें क्रोध चढयो घणो जो, देखी निज अपकार जो ॥ चाल्यो पाछो वेगशुं जो, अमरष धरतो अपार जो ॥ डू० ॥१ए॥ पद्मरथ राजानें कह्यो जो,

हित केइ थया,लाला कर पद रहित अनेक ॥ जीहो निजसैन्यें औषधि व र्छें, लाला सज्ज करे ते छेक ॥न०॥२६॥ जीहो चक्र गदा मुजर वली, ला ला खड्ग ते थया अर्कतूल ॥ जीहो शत्रु सैन्य लही त्रासने, लाला देखी ते प्रतिकूल ॥ न० ॥ २७ ॥ जीहो केइक मुखे तरणां दीये, लाला केइक मूके शस्त्र ॥ जीहो केइ जलाश्रयें केइ वली,लाला पहेरे नारीनां वस्त्र ॥ ॥ न० ॥ २८ ॥ जीहो केइक गव्हरमां गया,लाला केइ लीये जपमाल ॥ जीहो केइक शरण तेहनु करे, लाला मारो रखे कृपाल ॥ न० ॥ २९ ॥ जीहो नमो अरिहंताण कहे, लाला कपट श्रावक थई तेह ॥ जीहो मूके तेहनें जीवता, लाला कुमर कृपानो गेह ॥ न० ॥ ३० ॥ जीहो अरिहंत नामें विशेषथी,लाला मूके आणी प्यार ॥ जीहो पुण्यें जयलक्ष्मी वरे, लाला कोइ न लोपे कार ॥ न०॥ ३१ ॥ जीहो चोथे खमें एणीपरें,लाला उगण त्रीशमी ढाल ॥ जीहो पद्म कहे श्रोता घरें,लालाहोजो मंगलमाल॥न०॥३२॥

॥ दोहा ॥

॥ सैन्य विसस्थल निज सबल, देखी तेह नरिंद ॥ चढी क्रोधें आवियो, सुनटनां सार्थे वृंद ॥ १ ॥ ब्रह्म वैश्रवण प्रत्यें वदे,आज सुगाल अनत ॥ निक्षा कण दीये नामिनी, मागी खाउं मरणांत ॥२॥ ताम्रनाजन देउ ति णवती, पर कामें केम प्राण ॥ ठांमे ठोकरवावथी, एहवो केम अयाण ॥ ३॥ ब्रह्म जाणी अवेखियो,मारंतां तुज मुक्त ॥ लाजे थाण ते लोकमां, तेणें नवि मारु तुक्त ॥ ४ ॥ नाथ अछु सेना तणो, मारे तेहनें केम ॥ क्रोध करी तव द्विज कहे, पृथिवीपति सुणो प्रेम ॥ ५ ॥ जिहां पराक्रम जो इयें, तिहां ब्रह्म क्षत्री न हेत ॥ कुलनुं काम ताहारे किश्यु, जाण श्यु युद्ध सकेत ॥ ६ ॥ परनिंदानो प्रेम तुज, माहारे पराक्रम प्रेम ॥ सेना नाथ त णो हवे, आणु अंत हु एम ॥ ७ ॥ ताहरां प्राणथकी तुरत, सारो करुं सगाल ॥ प्रेतपति घर प्रेमथी,जाय सहु जंजाल ॥ ८ ॥ विधि निक्षा देशे नली, ताहारु राज्य तैय्यार ॥ नहीं ताम्रपात्रनु काम मुज, वली सांनलो विचार ॥ ९ ॥ पुत्री वधथी पापीया, नवि बीहिनो मनमांहि ॥ ब्रह्महत्या नी वातथी, समजावे मु आंहिं ॥ १० ॥ ब्रह्म जाणी अवेखियो, ए कायर अवदात॥ परउपकार पराक्रमें, करवो मुज एकांत ॥ ११ ॥ रविद्रुम चक्र वारिद वली, दृष्टांतें तु देख ॥ धर्म द्वेषें करी आंधली,निजपुत्री निरवेष

ला नृपनें पूर्वे जाय ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवण शोने घणो,लाला युद्ध सामग्री समजाय ॥ न० ॥१०॥ जीहो पूरवें कमलायें कह्युं,लाला तुमें कोइ अगम सरूप ॥ जीहो मुज नरतार मत मारजो,लाला यद्यपि आग अनूप ॥ ॥ न० ॥ ११ ॥ जीहो निजनारी पण एम कहे,लाला मत मारेजो रे तात ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवणें अंगीकर्युं, लाला तास वचन विख्यात ॥न०॥१२॥ जीहो शीघ्र थइ साहामो नई,लाला जे निज देशनी सीम ॥ जीहो ह य गय रह नट अर्द्ध छे,लाला पण उत्साह असीम ॥ न० ॥१३ ॥ जीहो बिहु दल सुनट उत्सव परें,लाला माने निजनिज गाम ॥ जीहो शस्त्रजाग रिका जागता, लाला सूर उदय थयो ताम ॥ न० ॥१४ ॥ जीहो रण वा जितर वाजीयां,लाला दोय सैन्यमां ताम ॥ जीहो नादें त्रिजग फणी सल सल्या,लाला गज गया गव्हर गाम ॥ न० ॥ १५ ॥ जीहो कौतुक जोवानें मल्या,लाला राक्षसनें नूत प्रेत ॥ जीहो सन्नद्ध बद्ध थई मल्या, लाला दोय सुनट रण हेत ॥ न० ॥ १६ ॥ जीहो हय गय रथ नट बिहु तणा, लाला निजनिज गाम रहत ॥ जीहो अग्रसेनानी बिहु तणा, लाला मांहो मांहि मिलत ॥ न० ॥ १७ ॥ जीहो गजवर शोहे गिरि समा, लाला रथ ते जाणु विमान ॥ जीहो सुनट पडे वली उछले,लाला दीसे सिद्द समान ॥ न० ॥ १८ ॥ जीहो गरुड परें हय हींसता,लाला गज गर्जारव जोर ॥ जीहो रथ चित्कार घणा होये,लाला सुनट तणा बहु शोर ॥ न०॥१९॥ जीहो अट्टाट्ट हास्य नूत व्यंतरा, लाला फूटयु मानुं आकाश ॥ जीहो नट मुग्दरें हस्ती पच्या, लाला पक्षछेद नग खास ॥ न० ॥ २० ॥ जीहो पाप ह परें रथ नांजता,लाला बाण मम्डप तिहां होत ॥ जीहो आतप तिहां पसरे नही,लाला शस्त्र अग्नि उद्योत ॥ न० ॥ २१ ॥ जीहो एम नैरव स ग्राममां,लाला हार्युं कमलप्रन सैन्य ॥ जीहो कमलप्रन उठे हवे,लाला रातो रोष रसेन ॥ न० ॥ २२ ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवण वदे तदा, लाला श्यो तुम उद्यम एह ॥ जीहो मुज बेठां सुखमां रहो,लाला एम वारी नृप तेह ॥ न० ॥ २३ ॥ जीहो रथ बेठो विविधायुधें, लाला चाल्यो वरसे बाण ॥ जीहो कवच सहित हणे सुनटनें,लाला केइकनां शिरत्राण ॥ न० ॥२४॥ जीहो लोहत्राणर्युं हाथीया,लाला पाखर सहित तुरंग ॥ जीहो समकालें सहस्रो गमे,लाला लागे अलक्षित अंग ॥ न० ॥ २५ ॥ जीहो मस्तक र

॥ शू० ॥ १७ ॥ शूरवीर जय इब्रता, थाको नृपति ताम रे ॥ माया विप्र थाको नहीं, गजशुं हरि जिम हाम रे ॥ शू० ॥ १८ ॥ मुष्टियें माख्यो हृद यमां, मूर्छा लह्यो तव नृप रे ॥ मुखथी तेम लोही वमे, पडियो काष्ठ स रूप रे ॥ शू० ॥ १९ ॥ शूर सुनट लाखो गमे, नृपनें लेवा आवे रे ॥ तव वाडव वर्षा तिहां, बाण तणी वरसावे रे ॥ शू० ॥ २० ॥ शस्त्र सवे तस जांजीयां, नाग मृग परें तेह रे ॥ बाणें आकुल व्याकुला, अति उत्सुक प ण जेह रे ॥ शू० ॥ २१॥ सग्रामें क्षय कालमां,स्वामीनें न लेवाय रे ॥ भ्रू सञ्ज्ञा करी सुनटनें, प्रेरे कमलप्रन राय रे ॥ शू० ॥ २२ ॥ पद्मरथ राजा प्रत्यें, बांधी निज रथें घाले रे ॥ तेहना सुनट देखी करी,चिंतवे एम तेणें कालें रे ॥ शू० ॥ २३ ॥ हवे जूजवु शें कारणें,एहनुं शरण करीजें रे ॥ ए म करी द्विजशरणु करे, द्विज पण तास वदीजें रे ॥ शू० ॥ २४ ॥ बीहिक म करो स्वामी अबु,एम आशासना देवे रे ॥ जयजय शब्द थया तिहां,पु ष्पवृष्टि सुर खेवे रे ॥ शू०॥ २५ ॥ डुंडुनि वाजे आकाशमां, जयवाजां बहु वाजे रे ॥ कमलप्रन नृप सैन्यमां, जयजय शब्द विराजे रे ॥ शू० ॥ २६॥ अरिहा देव गुरु नि स्पृही, धर्म केवलीनो नांख्यो रे ॥ जेहना हृदयमांहे व स्या,जय पण तेहनो दाख्यो रे ॥ शू० ॥ २७ ॥ चोथे खंमें त्रीशमी, पद्म विजय कही ढाल रे ॥ धर्म करो नवि प्राणीया,धर्मथी मगल माल रे ॥२८॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रण तत्त्व जस चित्त नहीं, ते लहे दुःख अनत ॥ सुखनाजन न वि संनवे, केम करे कर्मनो अत ॥ १ ॥ सासू वयण सनारीने, वली निज वधूनी वात ॥ औषधिथी कीधो अवल, वाडवें जग विख्यात ॥ २ ॥ निग हित करीनें नाखीयो, पिंजरमां नूपाल ॥ मत नास्तिकनो मूकशे, ठठीश तव ठगाल ॥३॥ शत्रुसैन्य निजसैन्यमां,सज्ज कस्या सवि जीव ॥ औषधि जल सींची एणें,ते लह्या हर्ष अतीव ॥४॥ अहो स्वपर सरिखा अठे,उत्तम करे उप कार ॥ एम स्तवना अतिशय करे, प्रमुदित थई अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ जीरे म्हारे जाग्यो कुंवर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे म्हारे कमलप्रन हवे राय, कुमरनें आलिंगन करे जीरे जी ॥ जी० ॥ स्तवना करे एम तास,तुम सम कोण अम उपगरे जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ अहो तुम शक्ति अगाध, अहो शूरवीर गनीरपणु नीरे जी ॥

॥ १२ ॥ वली नास्तिक थइ वांछतो,पुत्री श्राद्धनी प्रेम ॥ तस फल देखाडुं तनें, जो तु करियें जेम ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७६० ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥ धवल शेठ लइ भेटणु ॥ ए देशी ॥

॥ क्षत्रीवट हवे दाखवो, गुण तो फलथी जणाय रे ॥ उत्तम नर स्तव नवि करे, सांजल तु नरराय रे ॥ १ ॥ शूरपणु जूउं शूरनु ॥ ए आंकणी॥ क्रोध अग्नि दीप्यो घणु, वरसे जडोजड बाण रे ॥ ब्रह्मवेश्रवण करे तदा, खमो खम प्रमाण रे ॥ शू० ॥ २ ॥ सुजट नृपतिनां कोडयो गमे, बाण मूके समकाल रे ॥ ते सहुनें ब्रह्म एकलो, बाणे वींधे ततकाल रे ॥ शू० ॥ ॥ ३ ॥ व्याधथी मृगपरें नासता, जाय दिशो दिश जागा रे ॥ लेता मूकता बाणनें,नवि देखे कोइ लागा रे ॥ शू० ॥ ४ ॥ श्रद्भुत शक्ति देखी करी, सहुये विस्मय पाया रे ॥ जाग्य तणी स्तवना करे,श्रहो बल श्रतिशय जाया रे ॥ शू० ॥ ५ ॥ कमलप्रजना सुजटनें, श्रति वधिउं उत्साह रे ॥ नर ह्या वाख्या ते सहु, पेठा सगरमांह रे ॥ शू० ॥ ६ ॥ कुमरने नृप वेहु लडे, जूफे सैन्य ते दोय रे ॥ सुजट मस्तक बहु गगनमां,राहुमय परें होय रे ॥ शू० ॥ ७ ॥ शस्त्र मूकी जा मूकीयो, कायरनें नवि मारु रे ॥ जो क्षत्री पणु धारतो, तो बल जोउ ताहारु रे ॥ शू० ॥ ८ ॥ बाल तु फोकट कां मरे, जा तु मूक्यो जाणी रे ॥ वीर तु शर वींध्यो थको,जूफे छे एम बाणी रे ॥ शू० ॥ ए ॥ छगो छगो मारो तुमें, मारो मारो एम जांखे रे ॥ शोर बकोर घणो थयो कविजन केतु दाखे रे॥शू०॥१०॥ रायनुं धनुष छेद्यु हवे, छत्र चामर शिरत्राण रे ॥ राय ग्रहे श्रजिनव धनु, तेहथी चलावे बाण रे॥शू० ॥ ११ ॥ धनुष वाडवनु छेदीयुं, वाडव श्राणी रीश रे ॥ लेइ मोघर रथ जांजीयो, हवे कोपे पृथिवीश रे ॥ शू०॥ १२ ॥ विप्रनो रथ खंमो खम कर्यो, गदा करी चकचूर रे ॥ ब्राह्मणें धनुष द्विधा कर्युं, श्राणी श्रतिशय शूर रे ॥ शू० ॥ १३ ॥ खड्गघात तव नृप करे, ते ब्राह्मण वचावे रे ॥ खड्ग वाडवनुं छेदीयुं, वलट पालट एम थावे रे ॥ शू० ॥ १४ ॥ श्रमर्ष धरी ब्राह्मण तदा, नृपनें एम बोलावे रे ॥ मल्लयुद्ध करीयें विहु, नृप पण सन्मुख श्रावे रे ॥शू०॥१५॥ भुजास्फोट पदघातथी, ते पृथिवी कपावे रे ॥ कुर्कुट परें उपडे पडे, विस्मय सहु तिहां पावे रे ॥ शू० ॥ १६ ॥ तर्जना करे गाजे घणु, उठे श्राजोटे दोय रे ॥ उपर श्रध थाये वली, वलगे विछडे दोय रे

अपराधी नरतार, पतिव्रता सेवु धर्मे ॥ जीरे जी ॥ १८ ॥ जी० ॥ नृप कहे एह अनाथ,दीनशुं क्रोध घटे नहीं जीरे जी ॥ जी०॥ प्रणामांत होय क्रोध, सज्जन ते कहीयें सही जीरे जी ॥१९॥जी०॥ क्रोध शक्ति तुम वीर, हवे प्रसाद ते दाखवो जीरे जी ॥ जी० ॥ कीजें नृपस्वरूप, ए श्रम वचन ते राखवो जीरे जी ॥ २०॥ जी०॥ विप्र कहे जो एह, जैनधर्म चित्तथी करें जीरे जी ॥ जी०॥ तो करुं मूलस्वरूप,पूछो एहने दील खरे जीरे जी ॥ ॥ २१ ॥ जी० ॥ पूछ्यु तेहनें ताम, चेष्टायें कहे ए खरुं जीरे जी ॥ जी०॥ मूकुं नास्तिक वाद, जैनधर्म साचो करुं जीरे जी ॥ २२ ॥ जी० ॥ ब्रह्मवै श्रवणें कीध, मूलगु रूप औषधियकी जीरे जी॥ जी०॥ निगड भजावी ताम, आश्वासना दीये प्रतीतकी जीरे जी ॥ २३ ॥ जी० ॥ सिंहासनें ते राय, वेसाड्यो आनद पयो जीरे जी ॥ जी० ॥ कमलप्रभ मुख राय, प्रणमे चित्र हृदय नयो जीरे जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ सोंप्युं सघलु सैन्य, ते प्रणमे अति नेहशुं जीरे जी॥जी०॥ बोले तव नृपाल,नीचु मुख करी तेह शुं जीरे जी ॥ २५ ॥ जी० ॥ एकत्रीशमी ढाल, चोथे खमें ए कही जीरे जी ॥जी०॥ पद्मविजय सुरसाल, भाखी जिम शास्त्रे लही जीरे जी॥२६॥

॥ दोहा ॥

॥ गदगद स्वरथी नृप वदे,नमवा योग्य हुं नांहि ॥ महा पाप पंकिल मनें,केम जाणु जश्युं क्यांहि ॥ १॥ दीठुं सांभल्युं नहीं कदा,कीधुं कर्म कठोर ॥ पुत्री हत्या करी पापीयें, अध करी वली ढोर ॥ २ ॥ निष्ठनी कीधी भामिनी,किहांये गइ कोइ ठाय ॥ ए पातक उदय थयुं, कीधुं कर्म न जाय ॥३॥ उग्रपाप पुण्य उदयथी,आव्यु तुरत अचान ॥ सहसगमें भट साखथी, पकड्यो वाडवें पाण ॥ ४ ॥ मर्कट कीधो मानवी,ए दुःखनो श्यो अंत ॥ मरण श्रेय मुजनें अछे,सर्वप्रकारें संत ॥ ५ ॥ प्रगुण करो चय पेशीयें,एम सुणी अवनीपाल ॥ कमलप्रभ कहे सांभलो,रूडी वात रसाल॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ वडुयें जींत्यो एम जाणीयें, कुमलाउं मत स्वामी ॥ भर्त्तादिक पराभव लह्या, बाहुबली सुख पामि ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी ॥ ए आंकणी ॥ वडुउ मात्र म जाणजो,दिव्यपुरुष कोइ एह ॥ तेतो अवसरें जाणशु,तव बोले द्विज तेह ॥ क० ॥ २ ॥ एतो फूल उग्यां अछे, फल तो नारकमांहि ॥ व

जी० ॥ पूरवपुण्य पसाय, अमे कृतार्थ थया घणु जीरे जी ॥ २ ॥ जी० ॥ घुणाक्षरनें न्याय,तुमें एक विधि निपजावीया जीरे जी ॥जी०॥ नृप चढ्यो गजवर खंध,साथे कुमर बेसारीया ॥ ३ ॥ जी० ॥ पेसें नगरीमांहे, विविध वाजित्र वजावतो जीरे जी ॥ जी० ॥ ब्राह्मण शत्रु सैन्य, नगर आसन्न ते थापतो जीरे जी ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंत्री सेनानी मुख्य, परिकर सार जोई क री जीरे जी ॥ जी० ॥ राखे तेहमांथी आप, सेवा कारण चित्त धरी जीरे जी ॥५॥जी०॥ घर घर तोरण माल,स्वस्तिक मुक्ताफलें करे जीरे जी ॥जी०॥ नाटक नव नव भांति, ध्वज आपण घरने शिरें जीरे जी ॥ ६ ॥ जी० ॥ पृथिवीपति द्विजयुक्त, चामर छत्र धरावता जीरे जी॥जी०॥ महा महोत्सव मंमाण,नृप मंदिर क्रमें पावता जीरे जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ मंत्री सामंत सहु लोक, विसर्ज्या निजघर गया जीरे जी ॥ जी० ॥ परिवर्यो निज परिवार, द्विज पण निजघर आवीया जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ राजवर्गी पुर लोक, ब्रह्मवैश्रवणना गुण स्तवे जीरे जी ॥जी०॥रणकथा तेह सनारि, करे आ लाप ते नव नवे जीरे जी ॥९॥जी०॥ पंजर रथमां थापि,तेडाव्यो पद्मरथ प्रत्यें जीरे जी ॥ जी० ॥ हुकम करी द्विजराज, भुंजाव्यो अवसर थते जीरे जी ॥ १० ॥ जी०॥ बीजे दिन हवे भूप, वेगा अर्द्धासनें द्विज मली जीरे जी ॥ जी० ॥ मेली सभा तेणी वार, तेडयो पद्मराजा वली जीरे जी ॥११॥जी०॥ काढी पंजर बाहेर, बोलावी द्विज एम कहे जीरे जी॥जी०॥ पुत्री विटंबण पाप, तुज सरिखा एणी परें लहे जीरे जी ॥ १२ ॥ जी० ॥ हजीय न आव्यो अंत, फल देखावुं ते हवे जीरे जी ॥ जी० ॥ औषधि मस्तकें थापि, मर्कट कीधो वाडवें जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोह शृंख ला आणी,घाली गले कौतुक करी जीरे जी ॥जी०॥ सभा लोक सहु देखि, हर्षे जोवे फरी फरी जीरे जी ॥ १४ ॥ जी०॥ निज नरनें कहे विप्र, राय मार्गे त्रिक चाचरें जीरे जी ॥ जी० ॥ फेरवो घर घर हाट, जेम वली फ री न समाचरे ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥ जी०॥ मारो कोरडा तास, ते सहु नर अंगीकरे जीरे जी ॥ जी० ॥ लेई जाये जाम, तव कमला आंसु फरे जीरे जी ॥ १६ ॥ जी० ॥ पतिविडंबना देखी, कहे निज नृप भ्राता भणी जीरे जी ॥जी०॥ मुज तुज थाय अपवाद,वात वारो अनरथ तणी जीरे जी॥ १७॥ जी०॥ कमला कहे सुणो वत्स, मात वचनें मूको तुमें ॥ जीरे जी ॥ जी०॥

मुज एह ॥ तातक्रोध ते ततक्षणें, हितकारी हुवं देह ॥ २ ॥ सांजली व यण सनेहथी, आलिंगे अवनीश ॥ बोले वेसारी खबर, पूछे नव पृथिवीश ॥ ३ ॥ निछ्न नणे तव सांजलो, जिम उंलखी निज जात ॥ मुज उंलखे कांइ महीपति, तव कहे पृथिवी तात ॥ ४ ॥ लक्षालक्ष तुमें लखु, स्याद्वाद जेम सूत्त ॥ रूप कमलाने ऋद्धि तुम, केम लहीयें आकूत ॥ ५ ॥ पंमित पण परखे नहीं, शक्ति तुमारी स्वामि ॥ पुत्री जे आपी प्रथम, रूपें ते अनिराम ॥ ६ ॥ कमलप्रज मुख एम कहे, कीधु कारिमुं रूप ॥ निछ्न तणु तेम वंजननुं, नारीनु तेमज अनूंप ॥ ७ ॥ विप्र वखत एहवुं नही, लक्षणें लखीयें एम ॥ तव पद्मरथ बोलतो, आणी अधिको प्रेम ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडीजी ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी अरज स्वामी अरज सुणो एक अम तणीजी, कहे पद्म कहे पद्मरथ राजान हो ॥ जेम कीधुं जेम कीधु स्वरूप ते निछ्ननुं जी, तेम दाखवो तेम दाखवो मूल सस्थान हो ॥स्वा०॥१॥ मुंजावो मुंजावो केटलु अम प्रत्येंजी, मायानिछ्न मायानिछ्न ते बोले तब हो ॥ जव चूरणें जव चूरणें आंधली निज सुताजी, करी तहारे करि तहारे में साजी सुलब्ध हो॥स्वा०॥२॥ तिहां कीधी तिहां कीधी प्रतिज्ञा क्रोधथी जी, देव शिक्षा देयं शिक्षा ए नरराय हो ॥ तिहां सुधी तिहां सुधी प्रगट न थायवुं जी ॥ निजरूपें निज रूपें में कांइ गाय हो ॥स्वा०॥३॥ ते कीधुं ते कीधु धार्युं जे हतुं जी, तुम दीधु तुम दीधु छुःख असराल हो ॥ ते खमजो ते खमजो पूज्य तुमें अछोजी, हवे थयो हवे थयो प्रतिज्ञा पाल हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ हवे परगट हवे परगट थाउं एम कहीजी, निज दाख्युं निज दाख्युं मूल स्वरूप हो ॥ निज परनें निज परनें नानारूप करणथी जी, नवि जाणे नवि जाणे प्रजा तेम नृप हो ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ रूप देखी रूप देखी नृपादिक हरखीयाजी, मोद पामी मोद पामी स्तवे गुणरूप हो ॥ अहो नाटक अहो नाटक एणेहिज कीधलु जी, वरणवीयें वरणवीयें छुं गुणकूप हो ॥स्वा०॥६॥ लाज मूकी लाज मूकी आवी सुणी वारता जी, धरी हर्ष धरी हर्षनें लई वरमाल हो ॥ नृपकुमरी नृपकुमरी कुमर तणे गले जी, नाखे अति नाखे अति प्रेम विशाल हो ॥स्वा०॥७॥ रुडो वरियो रुडो वरियो सहु एम नांखतां जी, वाज्यां तव वाज्यां तव मगल तूर हो ॥ वंदिजन वंदिजन बोले बिरुदावली जी,

चनें कहेवाये ते नहिं, एहवा नोगवशो त्यांहि ॥ क० ॥ ३ ॥ आ नव सुख व सुख दीये, आदरो श्रीजिनधर्म ॥ दीठां पापनां फल तुमें,मूको नास्तिक क में ॥ क० ॥ ४ ॥ राणी मनावो रूठी तुमें, नोगवो आपनुं राज्य ॥ श्रीजिन धर्म प्रनावथी,सरशे सघलां रे काज ॥ क० ॥ ५ ॥ नृप सांनली तस वयण हां,चित्तमां पाम्यो समाधि ॥ कहे पुत्रीशुद्धि पामीनें, करशुं वचन आरा धि ॥ क० ॥ ६ ॥ पामी आणा नरतारनी, बहुनार्यां कहे एम ॥ जयसुंद री कसु ते खरु, किं विजयसुदरीयें केम ॥ क० ॥ ७ ॥ राय चिंते ए आ णे किश्युं,ज्ञानीयें नांख्युं होय एह ॥ अथवा विजय ए सुंदरी,रूपांतरथी रहे ह ॥ क० ॥ ८ ॥ अथवा कमलापासें रहे, सांनलीयुं तस पास ॥ नृप क हे संकटमां हु पड्यो,ते न रखाणो रे खास ॥ क०॥ ए ॥ तो परजा सुख थी सुखी,केम कहेवाये रे एम ॥ पुण्यें सुखीया रे बहु परें, पापें मुज सम नेम ॥ क० ॥ १० ॥ सा कहे जो एम तो तुमें,पुण्य करो नही केम ॥ पुत्री पीडा जो तुम नडे, तो पूछो बहु प्रेम ॥ क० ॥ ११ ॥ निमित्त बलें कह शे सवे, अतीत अनागत वात ॥ पूछे नृप मलशे कदा, पुत्री थाशे सुख शात ॥ क० ॥ १२ ॥ करी आम्बर बहु कहे, क्लेश न कीजें नृपाल ॥ ल गन बलें एम तुम कहु, मलशे ते ततकाल ॥ क० ॥ १३ ॥ पण अम दं पतीनें तुमें,कांइ उलखो छो के नांहि ॥ नृप कहे तुम गुणें उलखु,तुमें अधि का जगमांहि ॥ क० ॥ १४ ॥ तव विवाहनें अवसरें,जेहशु निजनुं रूप ॥ प्रगट करीनें उनो रह्यो, पक्षीमूल स्वरूप ॥ क० ॥ १५ ॥ रूपवती शिरसुं दरी, कुरूपी निज एह ॥ क्रोधने मानें विढंबीयो,दीधी निजनें जेह ॥क०॥ ॥ १६ ॥ सा कहे हवे मुंज उलखो, तव नृप वदन नमाय ॥ उलखुं हुं हु नली परें,बोले एणि परें राय ॥ क० ॥ १७ ॥ दुर्बुद्धिमांहे शीरोमणि, शुं देखाहुं हु मुख ॥ विस्मय खेद चिंता नर्यो, वली कांइ आणंद सुख ॥ क०॥ १८ ॥ विविधरसें नर्या रायना,प्रणमे सुदरी पाय ॥ बोले सुदरी जे हवे, ते आगल कहेवाय ॥ क०॥ १९ ॥ चोथे खंमें बत्रीसमी, पद्मवि जय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥क०॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ म म करो खेद महीपति, कर्यो तुमें जे क्रोध ॥ सुखदायक मुज सा मटो, थइ रह्यो थिर थोज ॥ १ ॥ क्रोध न जो मुजनें करत, तो केम पति

हो ॥ कमलप्रन कमलप्रन गौरव बहु करे जी, नृपनें ये नृपनें ये वस्त्र अलंकार हो ॥ स्वा० ॥ २० ॥ पद्मरथनें पद्मरथनें छत्र चामर दीये जी, पामी आणा पामी आणा कुमरनी ताम हो ॥ निज सेना निज सेनामां पोहोंचिया जी, हवें कमल हवे कमल सुंदरी नाम हो ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ निज पुत्री निज पुत्री कमलप्रन राजीयो जी, परणावे परणावे करी मनो हार हो ॥ देश आपे देश आपे पराणे कुमरनें जी, नवोढानें नवोढानें दीये ते सार हो ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ गज घोडा गज घोडा तो लीधा नहीं जी, रहे नृपना रहे नृपना दीधा आवास हो ॥ रतनें करी रतनें करी दान देतो थकोजी, पूरवपरें पूरवपरें करे विलास हो ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ पद्मरथ पण पद्मरथ पण आपे जमाइनें जी, विवाह समय विवाह समय उचित एक देश हो ॥ आपे तस आपे तस पुत्रीनें देश ते जी, कमलानें कम लानें मनावे नरेश हो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ नाइयें पण नाइयें पण सत्कारी घणु जी,कमलप्रन कमलप्रन कुमर ए दोय हो ॥ पूजीनें पूजीने विदाय क रे हवे जी,सैन्यशुं ते सैन्यशु ते प्रिया लेइ सोय हो ॥स्वा०॥२५॥ निज न यरें निजनयरें पोहोतो ते नृपतिजी, गुरु पासें गुरुपासें सुणी उपदेश हो ॥ शुनभावें शुनभावें धर्म अंगीकरे जी,श्रावकनां श्रावकनां व्रत धरे देश हो ॥ स्वा०॥२६॥ चिंतामणि चिंतामणि पाम्यो हुं मानतो जी, वधाधिक वंधाधिक पाम्यो जेह हो ॥ ते आपद ते आपद तत्त्वथी संपदा जी, धर्मपाम्या धर्म पाम्याथी माने तेह हो ॥ स्वा० ॥२७॥ रतिप्रीति रतिप्रीतिशुं काम परें रमे जी, दोय नारी दोय नारीशु कुमर विलास हो ॥ मूल अनिधा मूल अनि धा कोइ जाणे नहीं जी,गुणथी कहे गुणथी कहे नाम ते तास हो ॥स्वा०॥ ॥२८॥दानलीला दानलीला धन ठकुराइथी जी,बलरूप बलरूप कला गुणग्रा म हो ॥ लोक क्षत्रीनु लोक क्षत्रीनुं तेज देखी घणुजी,कहे छत्र कहे छत्र वै श्रवण ते नाम हो ॥ स्वा० ॥२९॥ बहुमित्र बहुमित्र स्नेही थया कुमरनेंजी, नक्तिवंतो नक्तिवंतो सहु परिवार हो ॥ लोक रीझे लोकरीझे देखी एहनी जी, लखमीनें लखमीनें पर उपगार हो ॥३०॥ एम चोथे एम चोथे खंमें तेत्रीशमी जी,ढाल पूरी ढाल पूरी थइ चोथे खम हो ॥ सत्यविजय सत्यविजय पन्यास संवेगीया जी,ज्ञानक्रिया ज्ञानक्रिया जास प्रचम हो ॥ स्वा० ॥ ३१ ॥ तस शिष्य तस शिष्य कपूरविजय कवि जी,क्षमाविजय क्षमाविजय ते तेहना

सहुनें सुख सहुने सुख वाध्यां नूर हो ॥ सा०॥ ७ ॥ आवी कमला आवी कमला राणी ते सुणी जी, विजय सुंदरी विजय सुंदरी प्रणमे पाय हो ॥ मातानें मातानें हर्षे आलिंगती जी, आंसु आवे आंसु आवे हर्ष नराय हो ॥ सा०॥ए॥ जन्म सफलो जन्म सफलो आज अमारडो जी, पया पूरा पया पूरा मनोरथ आज हो ॥ गई आपद गई आपद सुख संपद मली जी, आज सीधां आज सीधां सघलां काज हो ॥सा०॥१०॥ सासूनें सासूनें कुमर नमे वली जी, आशीष दीये आशीष दीये बहु सास हो ॥ लही कुमर लही कुमरनी आणनें पुत्रीशुं जी, पोहोती ते पोहोती ते निज आवास हो ॥सा०॥ ॥ ११ ॥ सहु देखी सहु देखी शीश धूणावतां जी, हवे कमल हवे कमल प्रन राजान हो ॥ मंमाव्यो मंमाव्यो उत्सव नयरमा जी, नेट लेवे नेट लेवे देवे दान हो ॥ सा०॥ १२ ॥ खमावी खमावी श्वसुरनें प्रणमतो जी ॥ प्रतिबोधन प्रतिबोधन काजें कुमार हो ॥ कहे सेवक कहे सेवक अन्य राजा तुमें जी, तुमें दाता तुमें दाता अन्य याचनार हो ॥ सा० ॥ १३ ॥ फल पुण्यनें फल पुण्यनें पापनां ए सवे जी, घरलखमी घरलखमी यावक करे शस हो ॥ हृदयें बुद्धि हृदयें बुद्धि शरीरें सौनाग्यता जी, यश दश दिश यश दश दिश बल होय अंश हो ॥सा०॥१४॥ एह जिनना एह जिनना धर्मशुं फल अडे जी, नीच कुलमां नीच कुलमां जन्म दोनाग्य हो ॥ रोगनिर्धन रोगनिर्धननें कुकुटंवता जी, वध अपजश वध अपजशनें नहीं ताग हो ॥सा० ॥ १५ ॥ अणवाहलां अणवाहलां सहेजें आवी मले जी, वाहालांनो वाहालांनो थाय वियोग हो ॥ ए पाप ए पाप तणां फल देखजो जी, परानवनें परानवनें वली बहु शोग हो ॥सा०॥१६॥ विपुलाशय विपुलाशय शास्त्रना जाणडो जी, सुकुलीना सुकुलीना अतिय विवेक हो ॥ करो सफलो करो सफलो नव जिनधर्मेथी जी, इह परनव इह परनव जिनधर्मे ठेक हो ॥सा०॥१७॥ पुण्यनां फल पुण्यनां फल पामी तुम सुताजी, तुमें दीठु तुमें दीठु नयणें साक्षात हो ॥ हवे करवी हवे करवी ढील न धर्ममां जी, नृप बोले नृप बोले सत्य ए वात हो ॥सा०॥१८॥ प्रतिबूझ्यो प्रतिबूझ्यो तुम वयणथी जी, गुरुपासें करु गुरुपासें अंगीकार हो ॥ मत करजो मत करजो संशय एहमां जी, धन्य तुमनें धन्य तुमनें कहे कुमार हो ॥ सा० ॥ १ए ॥ आपदायें आपदायें पण बूझे नहीं जी, डर्जननें डर्जननें कहे बहु वार

आ० ॥ एम बावन चैत्यो चौमुखाजी ॥ ३ ॥ एकसो चोवीश जिनजाण, एक एक देहरे जाण, आ० ॥ अडतालीशनें चोराव सयांजी ॥ ४ ॥ शोल अठे वली जइ, सोहम ईशान जे इंइ, आ०॥ अड अड तस अग्र महीषी नाजी ॥ ५ ॥ शोल प्रासाद वली तेह, प्रणमो आणी नेह, आ० ॥ शोना तस केती कहुंजी ॥ ६ ॥ आगममां विस्तार, कहेतां नावे पार,आ०॥ मानप्रमाण तणो बहुली ॥७॥ अठाइ महोत्सव त्यांहि,करशे अति उत्साहि, आ० ॥ चैत्रमास ठे ते वतीजी ॥ ७ ॥ मलशे सुरना वृंद,तिम विद्याधर इंइ, आ० ॥ उत्सव महोत्सव बहु थशेजी ॥ ए ॥ अठाइनुं पर्व, विद्याधर सुपर्व, आ० ॥ शाश्वतु जाणी आराधशेजी ॥ १० ॥ धन्य तेह नर नार, शाश्वतु पर्व ए धार, आ० ॥ त्रिकरण शुद्धे आराधशेजी ॥ ११ ॥ ते कारण ए लोक, जाये जिनवर उंक, आ० ॥ सांजली कुमर ते चितवेजी ॥ १२ ॥ क्रीडायें काढु काल, हु पण प्रणमुं दयाल आ० ॥ घर जइ नारीनें एम कहेजी ॥ १३ ॥ वृद्ध नारीशु वोय, चित्त समाधि जेथी होय, आ०॥ करजो धर्म कथा सदाजी ॥ १४ ॥ नंदीश्वरनी यात्र, करवा निर्मल गात्र, आ० ॥ विद्याधर साथें जशुंजी ॥ १५ ॥ रहेजो तुमें सुखमांहिं, तुरत आवु हु आंहि, आ० ॥ साथ जाये ठे उतावलोजी ॥ १६ ॥ जक्ति विनयथी ताम, माने वचन दोय वाम, आ० ॥ वेशी पर्व्यंकें चालीयोजी ॥ १७ ॥ खेचर उंचा जाय, कुमर पर्व्यंक खलाय,आ०॥ जंबूद्वीपनी जगतीयें जी ॥ ॥ १७ ॥ जाणे धर्म अंतराय, कुअर मन खेदाय, आ० ॥ गगनगामिनी इष्ठतो जी ॥ १ए ॥ विद्या जो होय पास, जाउ मन उल्लास, आ० ॥ एम चिंती पाठो वल्यो जी ॥ २० ॥ एक नगर उद्यान, चैत्य सोवन शुजवान, आ० ॥ मणिकलशें गगनें अडघुंजी ॥ २१ ॥ तीर्थ उल्लघन थाय, आशातना चित्त लाय, आ० ॥ उतस्यो देठो धरतीयेंजी ॥ २२ ॥ चैत्यमां पेठो तेह, विधिपूर्वक ससनेह, आ० ॥ रयणमयी रुषन प्रनुजी ॥२३ ॥ देखी करे परणाम, स्तवना करे अनिराम, आ० ॥ रोम रोम तनु उल्लसेजी ॥२४॥ पांचमे खंमे ढाल,नांखी प्रथम रसाल,आ०॥ पद्मविजय पुण्ये करीजी॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ चैत्य बाहेर चित्त चमकतो, नीकलीयो निरधार ॥ देखे तिहां दृष्टें करी, रूडा राजकुमार ॥ १ ॥ वीणा वश करे वरु, रसिकनें रसनु नाण ॥

शिष्य हो ॥ जिनविजय जिनविजय विबुधवर तेहना जी,अत जगमां बत जगमां चढती जगीश हो ॥स्वा०॥३२॥ तस शिष्य तस शिष्य उत्तमविजया ब यो जी,सिद्धांत शिरोमणि सिद्धांत शिरोमणि सार हो ॥ तस सेवक तस सेवक पद्मविजय कहेजी, सुणतां होय सुणतां होय जयजयकार हो ॥स्वा०॥३३॥

॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजय गणिविरचिते श्री श्रीजयानद केवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गगनगतिपल्यंकवलसकलश्रकमलपुर प्राप्ति कमलप्रनजूपपुत्राद्युपकारस्वपुत्रीविजयसुंदरीपितृपश्चरथजयपूर्वकप्र तिबोध कमलसुंदरीपरिणयन वर्णनोनामा चतुर्थ खंम समाप्त ॥ खंम त्रण मलिने गाथा ॥२१२ए॥ चतुर्थखंमे गाथा ॥ए७६॥ सर्वगाथा ॥३०१५॥खंम त्रय उक्तश्लोक ॥४३॥ चतुर्थे उक्तश्लोक ॥१०॥सर्वे थइ उक्त श्लोक ॥ ४ए ॥ सवइयो एक,समस्या एक,दोहो एक,सर्वढाल ॥१०४॥ चतुर्थखंम संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥पंचमखंम प्रारंज॥

॥ दोहा ॥

॥ नदीश्वर प्रमुखें नमु, शाश्वतजिन शुन ध्यान ॥ रूपन चंडानन रु श्रडा, वारिषेण वर्द्धमान ॥१॥ पंचम खंम प्रेमें करी,श्रोता सुणो सुजाण॥ आगें आगें रस अवल, चित्तमां जुर्च पहिचाण ॥ २ ॥ एकदिन क्रीडा उ द्यानमां, क्रीडा करवा काज ॥ मानिनीनें निज मित्रशुं, सघलो लेइ साज ॥ ३ ॥ दीग तिहां विद्याधरा, मानातीत विमान ॥ देवपरें तिहां देखतो, आकाशें असमान ॥ ४ ॥ किहां जाये कोढयो गमे, चित्तमां करे विचार॥ एक विद्याधर आवीयो, वावीमां पीवा वारि ॥५॥ पाणी पाय प्रिया प्रत्यें, तव जइ तिहां कुमार ॥ पूढे तेहनें प्रेमशुं,कहो ए किश्यो विचार ॥ ६ ॥ कहो जाये केणे कारणें, एवडा खेचर एह ॥ तेह कहे तुमें सांजलो, जि ण कारण जाय जेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ द्वीप नदीसर नाम, आठमो ते अनिराम,आठे लाल ॥ बावन चोमु खें सोहतो जी ॥ १ ॥ चार दधिमुख सार, एक अंजनगिरि धार, आ०॥ रतिकर आठ मनोहरु जी ॥ २ ॥ एकदिशें ए तेर,चिहुं दिशें नहीं कांइ फेर,

मरी आगल सहु खलीया हो राज ॥ सां० ॥ १९ ॥ ते कुमरोनें शीखवा सारु, नृपें धन आप्युं अति वारु, उपाध्याय पया देदारु हो राज ॥सां०॥ ॥ २० ॥ कहे क्षत्रि कुमार शीखावो, उद्यानमां जाइ रखावो, पण लोकनें घणु न देखावो हो राज ॥ सां० ॥ २१ ॥ तेणें उद्यानें उपाध्याय, शिखवे ठे कला इणे गाय, अन्यास शुवान कराय हो राज ॥ सां० ॥ २२ ॥ म हीनें महीनें नृपाल, परीक्षा करे सुविशाल, कुमरी आगें सहु बाल हो राज ॥ सां० ॥ २३ ॥ केइ शीखतां नागा जाय,केइ शीखवानें स्थिर थाय, तेणें गत आगत करे नाय हो राज ॥सां०॥ २४ ॥ तुमें पूछो ते में नांखी, कांहीं नवि कणीम राखी,कुमर पण थाय अनिलाखी हो राज ॥सां०॥२५॥ पल्यंक उव्यो गुप्त गामें, वज्रादिक आयुध वामें, कौतुक करवानें कामें हो राज ॥ सां० ॥ २६ ॥ औषधीथी वामण रूप, लोकनें होय हास्य सरूप, अलंकारनें वस्त्र अनूप हो राज ॥ सां० ॥ २७ ॥ पाठकनें कीध प्रणाम, आ शीष दीधी तेणें ताम, पूछे पाठक हवे आम हो राज ॥सां०॥ २८ ॥ खंम पांचमे बीजी ढाल, कही पद्मविजय सुरसाल, सुणतां होय मगलमाल हो राज ॥ सां० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोण ठो आव्या किहांथकी, शे कामें कहो साच ॥ पाठक एम पूछे थके, वामन बोले वाच ॥ १ ॥ नयर देश नेपालमां, विजय पत्तन वर नाम ॥ क्षत्रीय अगज हु खरो, वामन कर्म ए वाम ॥ २ ॥ कुकुणक नाम कह्यो मुनें, यौवन पाम्यो जाम ॥ कला नहीं कोइ मुज कनें, धन तो तातने धाम ॥ ३ ॥ कोइ न दीये कन्या कदा, वामन रूप विचार, पण तातनें प्रिय अति घणो, आप्या वस्त्र अलकार ॥ ४ ॥ कला ग्रहण कामें चल्यो, आव्यो फरतो आंहिं ॥ नाटयादिक मुजनें कला, आपो धरी उत्साहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ थारा माथा उपर मेह, ऊबूके वीजली हो लाल ॥ ऊबूके वीजली ए ॥देशी॥

॥ तेह सुणीनें राज कुमर हसता सहु हो लाल ॥ कु० ॥ अहो अहो आव्यो गात्र, नाग्य गुरुनु वहु हो लाल ॥ना०॥ एहनें नणावे नृप, कन्या देशे खरी हो लाल ॥क०॥ तेहथी सतोष दान, देशे गुरु घर नरी हो ला ल ॥ दे० ॥ १ ॥ कन्या केरु नाग्य, घणु ए वर मल्यो हो लाज ॥घ०॥ ए

करे अभ्यास कला तणो, गीत नृत्य गुण जाण ॥ २ ॥ जाणुं गंधर्व मन मल्या, जाता आवता जाण ॥ पूछे कोइक पुरुषनें, कहो इहां किश्युं मंडाण ॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥ सत्तरमुं पापनु थान ॥ ए देशी ॥

॥ कहे पुरुष ते सांभलो वाण, लखमीपुर नयर ते जाण, अपमान म ही कोइ वाण हो राज ॥ १ ॥ सांभलो वयण रसाला ॥ ए आंकणी ॥ ने श्री पतिनामें राय, देखी वक्रराइ अचरिज थाय, श्रीपति पण लाजें नराय हो राज ॥ सां० ॥ २ ॥ त्रण कन्या तेहनें थाय, तेहनी जूदी जूदी माय, नरप तिनें आवे दाय हो राज ॥ सां० ॥ ३ ॥ स्त्री सर्वनु लेइ परमाणुं, सारसा रघी ए घडी जाणुं, तेणें सर्व स्त्री लाजनु ठाणु हो राज ॥ सां० ॥ ४ ॥ पूर वें पुण्य केवुं कीधुं, तेणें एहनु रूप न सीधु, देवी चितवे दान न दीधुं हो राज ॥ सां० ॥ ५ ॥ फरी लहीयें मनु अवतार, तप दान दीजें अपार, एहवुं रूप लहीयें निरधार हो राज ॥ सां० ॥ ६ ॥ विप्र नामकला विलास, कला वेदि अनुत्तर खास, जैनधर्ममां मति ने जास हो राज ॥ सां० ॥ ७ ॥ गंभी र घणो गुणवत, धन आपी तस चूकत, जणवा कुमरी दिये खत हो राज ॥ सां० ॥ ८ ॥ जैनधर्मी मातनें तात, उपाध्याय जैन विख्यात, जैनधर्मी कु मरीयो थात हो राज ॥ सां० ॥ ए ॥ जणी थोडा दिनमां तेह, ते प्रज्ञा नु मानुं गेह, त्रण रूपें सरसती एह हो राज ॥ सां० ॥ १० ॥ पहेली ना टयकलानी धार, नृप नाम दीये श्रीकार, नाटयसुंदरी जगमां सार हो राज ॥ सां० ॥ ११ ॥ नाटकथी जीते कोय, वली जैनधर्म जग होय, वरु करी य प्रतिज्ञा सोय हो राज ॥ सां० ॥ १२ ॥ बीजी गीत कलायें रूडी, गी तसुंदरीनाम न कूडी, तस एह प्रतिज्ञा चडी हो राज ॥ सां० ॥ १३ ॥ जैनगीत कला मुज जीतें, वरुं तेहनें जग वदीते, करी एह प्रतिज्ञा नीतें हो राज ॥ सां० ॥ १४ ॥ नृप नादसुंदरी दीये नाम, त्रीजीनु अति अभि राम, तेतो वीणा नाद गुणधाम हो राज ॥ सां० ॥ १५ ॥ मुज नाद क लायें जीपे, वली जैनधर्मी अति दीपे, वरु एह प्रतिज्ञा समीपें हो राज ॥ सां० ॥ १६ ॥ नृप पडह वजावे ताम, मुज कन्या प्रतिज्ञा आम, ए वात विस्तरी गाम गाम हो राज ॥ सां० ॥ १७ ॥ निज परराज्यें दूत मूके, वा त सनलावे नवि चूके, सुणी ते पण आवी ढूके हो राज ॥ सां० ॥ ॥ १८ ॥ सहु क्षत्री कुमर तें मलीया, मन गमता अभ्यासमां जलीया, कु

एह सीपारश माहारी, करो तुमें वेगथी हो लाल ॥ क० ॥ सा पण दान वशीकृत, ते अतिरेगथी हो लाल के ॥ ते० ॥ १० ॥ कहेश्युं भुजपति नें तव, निज थानक गयो हो लाल के ॥नि०॥ नाहे लेइ घर दास, दासी परिवृत्त नयो हो लाल ॥ दा० ॥ जिनपूजादिक रक्त, आवे पाठक कने हो लाल ॥ आ०॥ पाठकनें कहे नारी, सुणो तुमें एक मनें हो लाल ॥ सु०॥ ॥ ११ ॥ जेहनु अद्भुत दान, जणावो वामणो हो लाल ॥ ज० ॥ एहवो नही दानेसरी, जन मन कामणो हो लाल के ॥ज०॥ सहु मली आपे तो पण, इण समोवड नहीं हो लाल के ॥ इ० ॥ बहु मूकी तुमें एक, जणा वो रही अहीं हो लाल ॥ ज०॥ १२ ॥ पाठक कहे नवि जगमां, ककण ए हवु हो लाल के ॥ क० ॥ पूर्वे दीधु सुजनें, ए पण तेहवु हो लाल के ॥ ॥ ए० ॥ आप्युं नारीनें ते पण, पहेरे दोय करें हो लाल के ॥ प०॥ निज आतमनें माने, अप्सरा उपरें हो लाल के ॥ अ० ॥ १३ ॥ पाठक कहे हु जणावीश, एहने यत्नथी हो लाल के ॥ए०॥ पण नवि समजे कांइ, बहु प्रयत्नथी हो लाल ॥ व० ॥ सा कहे अग लालित्यनें, स्वर वली जोइयें हो लाल के ॥ स्व०॥ नाटक गीत आवे तव, सहु मन मोहियें हो लाल के ॥ स० ॥ १४ ॥ वीणानो अभ्यास, करावो केम नहीं हो लाल ॥क०॥ पाठक कहे त्रणे जग, वात वेगें वही हो लाल ॥ वा० ॥ तंति कुबेल जूनु तुबडु, होशे सा कहे हो लाल के ॥ हो० ॥ सहीयो दम होये ते, केणी परें नि वेंदे हो लाल के ॥ के० ॥ १५ ॥ नविन वीणा देउ एम कही, एकांतें रही हो लाल के ॥ ए० ॥ शोखवे तेहनें गात्र, हांसी चित्तमां लही हो लाल ॥ हां० ॥ आव्यो परीक्षा समय, हवे सहु आवीया हो लाल ॥ ह० ॥ राय परिखद नगरनां, लोक ते नावीयां हो लाल के ॥ लो० ॥ १६ ॥ आवे पाठक गात्र, सहुथु परवरी हो लाल ॥ स०॥ तव वामण कहे वात, सुणो एक मुज खरी हो लाल ॥ सु० ॥ आवु तुमची साथ, पासें वेसाडजो हो लाल ॥ पा० ॥ नाटयादिक अवसरें मुज, मत वीसारजो हो लाल के ॥ म० ॥ १७ ॥ पाठक कहे तुज पास, वेगं लाछु घणो हो लाल ॥ वे० ॥ आण करु केम नहीं, अभ्यास कला तणो हो लाल ॥ अ० ॥ कोडी मूल्य नो हार, पाठकनें आपियो हो लाल ॥ पा० ॥ तव मान्यु सवि तेह, हर्ष बहु व्यापीयो हो लाल ॥ ह० ॥ १८ ॥ मन चिंते सवि जनमां, एहह न

हवु रुप न विश्वमां,तेणें सहु जय टल्यो हो लाल ॥ते०॥ सांजली गम्मा वयण,गुरु लाज्यो पणु हो लाल ॥ गु० ॥ गुरु कहे पाठ कला नहीं,तुब योग्यतापणु हो लाल के॥तु०॥२॥ करथी उतारी ककण,पाठकनें दीये हो ला ल के ॥पा०॥ लाख सवानु देखी,ते गुरु हरख्या हइये हो लाल ।ते०॥ शी खवे नाट्यकला गुरु तेहनें श्रादरें हो लाल के ॥ते०॥ पण ते कुमार परें, मृत्तिकामर्दन करे हो लाल ॥ मृत्ति० ॥ ३ ॥ पदघातें कपावे, पृथिवी ज ह्नले हो लाल के ॥ पृ० ॥ कडुक परें वली गिरि, शिला परें खलजले हो लाल ॥ शि० ॥ पदना करे धबकार, तेणें जन सहु हसे हो लाल ॥ ते० ॥ शीखवतां दिन दोय, त्रण एम नीकसे हो लाल ॥ त्र० ॥ ४ ॥ खेद लही गुरु कहे तुज, नाटय न श्रावडे हो लाल के ॥ ना० ॥ जण तु गीत करे तव, ते मुज श्रावडे हो लाल के ॥ते०॥ गुरु कहे तुजनें केहवु, श्रावडे तव कहे हो लाल के ॥श्रा०॥ विरुत मुख ध्वनि करी कहे, जिम हास्यता लहे हो लाल के ॥ जि० ॥ ५ ॥ यत ॥ पच नियहा सुरइ पविहा, कविह्स्स हि हा, तउ सनिविहा ॥ पंनिश्च कविह जग्गं एगस्स सीस, अघो हसती किल तीह सेसा ॥१॥ पूर्वढाल ॥ सांजली गीतनें गात्र,सहु खडखड हसे हो लाल ॥स०॥ अहो श्रहो गीतनें गानतु, माहापण चितवसे हो लाल ॥मा०॥ एणे गीतें नृप कुमरी, परणशे एहनें हो लाल ॥ प० ॥ श्रधिक जण्यानु काम, ते शुं छे जेहनें हो लाल के ॥ ते० ॥ ६ ॥ तो पण श्रधिक वानथी,पाठक हरखता हो लाल के ॥ पा० ॥ ग्राम रागादिक यत्नथी, तेहनें वरसता हो लाल के ॥ ते० ॥ पण नवि समजे कांइ, घणे यत्ने करी हो लाल ॥ घ० ॥ खेद लही त्रण षट दिनें,गुरु कहे हितधरी हो लाल ॥गु०॥७॥ वीण कला तुम शीखवु, ल्यो वीणा करें हो लाल के ॥ ल्यो० ॥ एम करी शीखवे वीण, कला गुरु घणपरें हो लाल ॥ क० ॥ ततक्षण त्रूटी तांत, बीजी वीणा दीये हो लाल ॥बी०॥ नाख्युं तुंबडु जांजी, तदा त्रीजी लीये हो ला ल ॥ त०॥ ८ ॥ दम जाज्यो त्रीजी वार,गुरु तव डुःख धरे हो लाल ॥गु० तुजनें न श्रावडे कांइ, वीसर्ज्यो ततपरें हो लाल ॥ वी०॥ वाल्यो कलागु रु गेह,-पाठकणीनें मल्यो हो लाल ॥ पा०॥ कंकण श्रापी अन्य, हेजें ते हशु हल्यो हो लाल ॥ हे० ॥ ए ॥ पामी विस्मय ताम, पूछे कारण किश्युं हो लाल ॥ पू० ॥ ते कहे तुजपति मुझ, जणावे नेहश्युं हो लाल ॥ ज०॥

नाटघसुंदरी, नाचवानें काम ए ॥ चित्त हरती विभ्रमनां तिहां, जाणना मद गालती ॥ नाटक विविध प्रकार करती, कुमर दोप देखावती ॥ ६ ॥ढाल॥ नासा अधरनें रे, नयन तारा पयोधर वली ॥ चलावती रें, तेमज कपोलनें सलसली ॥ देखी विपरीत रे,कपोल नयन तारा जग ए ॥ वामन तव रे, वारें तुमुल उछरंग रे ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ बोले वामन सुणो सुंदरी, प्रथम शास्त्र रीतें कखु,पठी तो विपरीत कीधु,नयन तारा जग धखु ॥ एहवो जाव शास्त्रें कह्यो ठे, तव चमकी कहे सा सुणो ॥ जरतशास्त्रे विधि कह्यो ठे, एहमां दोप न को गणो ॥ ८ ॥ ढाल ॥ कहे वामन रे, मत कहो एहवी वात रे ॥ कठे मादरे रे, जरतशास्त्र आयात रे ॥ मुनि जरतें रे, नवि जांख्यो ए जाव रे ॥ तेहना श्लोक रे वामन बोल्यो ताव रे ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ तव कहे सुंदरी भ्रांति थइ हशे, वामन कहे होये नहीं ॥ भ्रांति सूक्ष्म विज्ञानमांहि,पण जाणु एण विध सही ॥ परीक्षार्थें कखु एणी परें, पण सजामां मृग वसे ॥ नहीं सूक्ष्म विज्ञान ज्ञाता, जे देखी हैडु हसे ॥१०॥ढाल॥ लोक जांखे रे,गुरु अनुग्रह एहनें अठे, नाटघसुंदरी रे, दोप निहाली निज पठें ॥ करे नाटक रे,नखाग्रें धरी फूल रे ॥ उपर नाचती रे, वात घणी अमूल रे ॥ ११ ॥ त्रुटक ॥ कला करीनें सर्व जीत्या, जय जय रव तव उछल्यो, वर चिंतातुर नूप बोले, उपाध्यायजी सांजलो ॥ परीक्षा विण कोइ तुमचो,ठात्र ठे के नहीं हवे ॥ हवे दानप्रीणित कहे पाठक,एह वामन सजवे ॥ १२ ॥ ढाल ॥ नूप चिंतवे रे, वामनमां नवि सजवे ॥ कदी सजवे रे, मत जीतो कोइ कैतवें ॥ मुज पुत्री रे, वामननें वरशे कदा, छु खं थाशे रे, मुज मनमांहे बहु तदा ॥ १३ ॥ त्रुटक ॥ तोहे सवेह टालवानें, वामननें आणा करी ॥ नाटघकला जो जाणतो होये, तो उठो चित्तमां धरी ॥ बुजुक्षितनें जेम परमान्ने, निमत्रणा कोइ करे ॥ वामन नाटक करण उठे, हर्प हैयडे अति धरे ॥ १४ ॥ ढाल ॥ कला सघली रे, करी हवे शी करशे कला ॥ नथी मृत्तिका रे, खुदशे एम चिंतवे खला ॥ हांसी करतां रे,केइक जांखे एणी परें ॥ ठो नाचतो रे,शाने निपेधो परपरें ॥१५॥ ॥ त्रुटक ॥ हास्य थाशे लोकनें घणु, वगोवाशे ए खरो ॥ ते सुणी वामन सहु उवेखी, नाटघ करवा तत्परो ॥ पंच परमेष्टी नमीनें, गायन वादक मानवी ॥ परीक्षा करी सज्ज करतो, कला करवा अजिनवी ॥ १६ ॥ ढा

पामीयो हो लाल के ॥ ए० ॥ ते एणें एक पलकमां, मुजनें पामीयो हो लाल के ॥ मु० ॥ ए आश्चर्य सहित गुरु वामन लेइनें हो लाल के ॥ वा० ॥ वेग परीक्षा समर्पे. आशीष देइने हो लाल के ॥ आ० ॥ १९ ॥ नृपना कुवर सवे राज, वर्गीय आवीया हो लाल के ॥ व० ॥ निज निज परिछद लेई, कन्या चित्त जावीया हो लाल ॥ क० ॥ वारे तव कोलाहल, नृप आणा लही हो लाल के ॥ नृ० ॥ कहे प्रतिहार सुणो सना, लोक आव्या अहीं हो लाल के ॥ लो०॥ २०॥ नाटयकला निज दाखवी, जीते जे कुअरी हो लाल ॥ जी० ॥ तेहज परणे नृपनी. ए नाटयसुंदरी हो लाल के ॥ ए० ॥ पंचमे खमें ढाल, त्रीजी ए मन वसी हो लाल ॥त्री०॥ पद्मविजय कहे सांजलो, नविजन उल्लसी हो लाल के ॥ न० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सामग्री सवि साथ लइ, आव्या कुमर अनेक ॥ एक एकथी अधिक रस, विज्ञानी सुविवेक ॥ १ ॥ नाचे नव नव जातशु, कौतुककारी केम ॥ वरणवीयें वयणें करी, पण कहुं कांइक प्रेम ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ढाल॥ एक नाचे रे, धनुष पणछ उपर रही ॥ एक नाचे रे, खड्ग धारा उपर सही ॥ कोइ वाणाग्रें रे,कोइ नलाग्रें जाणीयें ॥ हवे कोइक रे, जल नाजन शिर आणीयें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ आणी जलनें हाथ गोलक, चलावे तेम पगथकी चक्र नमाडे नाच करतो, हस्तादिकें सहु रह्या चकी ॥ कोइक करनें दत मांहे, खड्ग त्रण ग्रही करी, किरणें करीनें भ्रमण करतो, अलातपरें चित्तमां धरी ॥ २ ॥ ढाल ॥ कोई अधोमुख रे, ऊर्ध्वपादें मुख लां धरे ॥ रमतां तिहां रे, गोल नचावे निज करें ॥ निज मस्तके रे, नाटक करतो एणीपरें ॥ खड्ग नमाडे रे, कोइक मेली दोय करें ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ चली पादांगुलें चक्र फेरवे, शिर धरी जल नाजन ॥ बिहु खंध उपर दीपिका धरी, नाचीयें नूंगल वादन ॥ मणि व्रात जीव्हाग्रें परोवे, करे नाटक एणीपरें,राय प्रमुख सहु लोक देखी,शिर धूणी शंसा करे ॥४॥ढाल॥ हस्तादिके रे,नाटयसुंदरी विपर्यास रे ॥ देखावे रे,दूषण तेहमां तास रे ॥ वामन पण रे,मुख मरडे करे हास्य रे ॥ रूडु कीधु रे,तुम सम कोण करे खास रे ॥५॥ त्रुटक ॥ हवे सुंदर वेश धरीनें, नृप आणा पामी ए ॥ सामग्रीई

मंदादिन्नेदत ॥ तस्याश्छिड्कसस्पर्शं, वर्शोनोत्पद्यते किल ॥२॥ एव वेगेपि वीणाया, नालर्ब्धाद्स्तु वर्जनात् ॥ शट्यादीनां तथा तुव, छ्रद्विर्वृत्तादिकेगु ऐ ॥३॥ तंत्रीछ्रद्विर्वजिस्नायु, वालाद्युचिततत्कृते ॥ इत्यादि वेणुसारंगी, त्रिसर्यादिष्वपीष्यते ॥ ४ ॥ दोहा ॥ इत्यादिक शास्त्रे अति,विस्तर ठे व्याख्यान ॥ केतु कहियें इहां कहो, गांधर्वनु सुणो गान ॥ ए ॥ नहीं डुर्बल थूळज नहीं, गल मुख रोग न होय ॥ यौवन मुदित निरुज वली,कहियें गायन कोय ॥ १० ॥ तिल कलमाषने तेल गुड, खाय नहीं वली खाय ॥ साकर दूध सगत पिये, गद्गदी तेहज गाय ॥ ११ ॥ सात प्रकारें स्वर वली, त्रण ग्राम वली तह ॥ ग्रामें ग्रामें सग गणो ॥ एकवीश मूर्छना एह ॥१२॥ साते षटरागें सहित, एम वेंतालीश एह ॥ श्रीरागादिक षट सवे, रागिणी षट्क करेह ॥ १३ ॥ पट्रागिनी पटत्रीश होय,रागिणी रग मजार ॥ नेद घणा तेहमां जलो,अनिनव होय विचार ॥ १४ ॥ अनुक्रमें हु जणियो अबु, काळें ते कहेवाय ॥ प्रायें निंदा स्तुतिपणें, गीत सकल गवराय ॥१५॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सारग ॥ हम मगन जए प्रजुध्यानमां ॥ ए देशी ॥

॥ सहु मगन जए तस गानमां,सज्जन मुख निंदा नवि होवे, छ्रु कहियें ते मानमां ॥ स्तुति पण द्विविध ठता अठता गुण,ते सुणजो सहु शानमां ॥ सहु० ॥ १ ॥ विवाहादिक कारणें अठता,गुण गाये अनिमानमां ॥ ते पण मरपादोपथी सज्जन, नवि नांखे निज वाणिमां ॥ सहु० ॥ २ ॥ अठता गुण केइ विविधप्रकारें, गावे देव अज्ञानमां ॥ केइक अगना धरे उत्संगें, केइ धरे शस्त्र पाणिमां ॥ स० ॥ ३ ॥ केती वात कहु अज्ञानकी, दृष्टिरागना वानमां ॥ बुधजन अगीकरे नहीं कोई, सम्यक् दृष्टि नानमां ॥स०॥ ॥ ४ ॥ अरिहंत शासनमां जे नीरागी,जेह ठता असमानमां ॥ ते गुणथी पावन जीह्वा करु, सांजलो तुमें सहु कानमां ॥ स० ॥ ५ ॥ दोष अढार रहित जे देवा, गुरु निस्पृह रह्या ध्यानमां ॥ एम कही सहुनी हासी अवगुणी, निज सम पुरुष ले तानमां ॥ स० ॥ ६ ॥ वामन गीत गाये हवे एहवां, अधिक सुधारस पानमां ॥ हाहा हूहू देव गायन जे, श्रोतानें करे अपमानमा ॥ स० ॥ ७ ॥ एक ध्यानें सवि लीन थइनें, श्रोता रहे तेणे टाणमां ॥ उत्कृष्टे रसें गान थयु तव,निड़ा लही अचानमां ॥स०॥८॥ नृप प्रमुखनां शस्त्र अलंकृति, लेई मूक्या कोइ थानमां ॥ वली हांसीका

ल ॥ सामग्री युत रे, विश्वमोहन नाटक करे ॥ उल ताकता रे, अत्र अनेक परें परें ॥ पण दूषण रे, हस्तकादिकमां नवि लहे ॥ एक चित्त रे, जोवे सन्ना चित्त गहगहे ॥ १७ ॥ त्रुटक ॥ करी नाटक वली नत्रमें, फूल उपर सूची धरी ॥ तेह उपर कुसुम उपर, नाचतो रंगें करी ॥ वामेतर पा दश किरण दिये, आंखे फूल लीये तदा ॥ हर्षे बोले सहु सन्ना तिहां, जी त्यो जीत्यो ए सदा ॥१८॥ढाल॥ जय जय रव रे, वाजित्र नाद बहु थया ॥ वंदि बोले रे, गायन गीत तत्पर नया ॥ अर्थाने रे, दान दीये अउलक पणे ॥ नाट्यसुंदरी रे, रीजी लक्ष्मी कौतुक घणे ॥ १९ ॥ त्रुटक ॥ नाट्य सुंदरी वरे वामन, देव कहे साधु वसु ॥ नूप चिंतवे खेद धरीनें, हे हे देव अवसु कसु ॥ एणे वामन वर्यो हवे दोय, राजकुमरनें जो वरे ॥ प्रतिहारनें हवे तुमुल रोकी, एणी परें आज्ञा करे ॥ २० ॥ ढाल ॥ नूप आणथी रे, कुमारोनें एणी परें उच्चरे ॥ गीतसुंदरी रे, एह कलामां सहु धुरें ॥ जेह जीते रे, कर ग्रहण एहनु करे ॥ गीतकुशला रे, सांनली जैनधर्मी शिरें ॥ २१ ॥ त्रुटक ॥ सांनली जिन सामग्री सयुत, गावे अतिहर्षे करी ॥ चोथी ढाल ए खंम पचम, पद्मविजयें चित्त धरी ॥ नांखी जे जे रसें गावे, तन्म यता सघला थया ॥ जाण पुरुष ते गीत लीना, नूख तृषादिक गत नया २२

॥ दोहा ॥

॥ चढते रस ते चतुर नर, गातां विरम्या गीत ॥ निजपुत्रीनें नरपति, प्रेरे धरतो प्रीत ॥ १ ॥ गीतसुंदरी हवे गायतां, मनुज थया रसमग्न ॥ निद्रा पाम्या नर सवे, अतिमूर्छित जेम अज्ञ ॥ २ ॥ संकेतित दासी सवे, आयुध प्रमुख अपार ॥ नूपादिकना नली परें, लेइ गोपवे लगार ॥ ३ ॥ गाइ रही गीतसुंदरी, तव ते जाग्या ताम ॥ खड्गादिक खोले खरा, मन जाणे गइ माम ॥ ४ ॥ मान देइनें मानिनी, आपे सघला आण ॥ जय जयरव जीत्या तणो, प्रगट्यो जग परमाण ॥ ५ ॥ पूछे नूप पाठक प्रत्यें, वर नवि पामी वाम ॥ वरमालाशुं वामणो, देखाड्यो उद्दाम ॥ ६ ॥ वामननें नरपति वदे, गाइ जाणे गीत ॥ तास स्वरूप कहो तुमें, राखी सखरी रीत ॥ ७ ॥ गुरुप्रसादें गीतनु, सखरुं लहुं स्वरूप ॥ संक्षेपें तुमनें सपे, नांखुं सुणजो नूप ॥ ८ ॥तथाहि श्लोक ॥ गांधर्वं त्रिसमुछान, तंत्रीवेणुनरोद्भव ॥ वीणात्रिसरिका सार, त्र्यायातंत्र्यात्वनेकधा ॥ १ ॥ रागोविजृंनमाणोतु, ईदि

कन्या जीती एम जय जय रव, लोकें कह्यो स्वयमेव ॥ तु० ॥ ६ ॥ खेद ल
ह्रीनें राजा पूछे, उपाध्यायनें जाम ॥ पूरव परें वामन देखाडे, उपाध्याय
पण ताम ॥ तु० ॥ ७ ॥ वामन दोय मालायें रमणिक,उन्नो आगल आय ॥
वीणा वजाववा वामननें तव, नृपति आणा थाय ॥ ॥ तु० ॥ ८ ॥ तव वा
मन तिहां वीणा मागे, रायपुरुष तव एक ॥ वीणा आपे नृपवयणथी,
वामन कहे सुविवेक ॥ तु० ॥ ए ॥ वीणादममांहे छे कीडो, पाम्यो कौतुक
नृप ॥ नागीनें ते कीट देखाव्यो, सहुयें दीठो अनूप ॥ तु० ॥ १० ॥ बीजी
वीणा आपी तेहनुं, तुंबडु कडुउं नांखे ॥ ते पण नागी तास देखाव्यु,प्रत्य
क्ष जाणी साखें ॥ तु० ॥ ११ ॥ त्रीजी वीणा तांत मांहे छे, सूक्ष्म दे
खो वाल ॥ चोथीनो दम जलमां नीनो,तेह रह्यो घणो काल ॥तु०॥१२॥
एम अनेक दूषवी वीणा, लीधी कोइक सार ॥ अलवे वीण वजावे वामन,
लोक लहे चमत्कार ॥ तु० ॥१३॥ शु कानें अमृत ए वरस्यु,अथवा मूक्यो
इंड ॥ पृथिवी लोकनें सुख देवानें,ए तप महिमावृंद ॥ तु० ॥ १४ ॥ लय
आणंदें सुख अछेतें, निद्रा पाम्यो लोक ॥ पूर्वे संकेतित महावत गजने, म
दिरा पाई थोक ॥ तु० ॥ १५ ॥ कान बांधीनें हाथी मूक्यो, आव्यो सत्ना
आसन्न ॥ पण आव्यो नवि जाण्यो कोइयें,उन्नो रह्यो चासन्न ॥तु०॥१६॥
अंकुशनें प्रहार पडे पण, नवि चाले मृगमात ॥ घात देइ देइनें थाका,
तव माहावतना व्रात ॥ तु० ॥ १७ ॥ जय जय शब्द करे तव महावत,
लोकें पण तव कीध ॥ वीणा नाद रह्यो तव सुंदरी, वरमाला गले दीध ॥
॥ तु० ॥१८॥ नादसुंदरी एम विचारे, जीताणी हुं आज ॥ फूलवृष्टि देवी
शिर करती, जय जय वामनराज ॥ तु० ॥ १९ ॥ दान दीये याचकनें
वांछित, लोक वखाणे दान ॥ अहो कलाने अहो चतुराई, वामन गुण नि
धान ॥ तु० ॥ २० ॥ गुणवंतो एहवो नें रूपें,वामन छे ए दोष ॥ विधिनें
जराजीर्णतानो ए, दोष तणो थयो पोष ॥तु०॥२१॥यत ॥ शशिनि खलु
कलंक कटका पद्मनाले, प्रिययुवतिवियोगोऽङ्गनंगत्व सुरूपे ॥ जलधिजल
मपेयं पंमिते निर्धनत्व,धनवति कृपणत्व रत्नदोषी कृतांत ॥१॥ पूर्वढाल ॥
अथवा वामन रूपें कोइक, दीसे दिव्य सरूप ॥ वादलथी जेम छायो दी
से, अद्भुत जिम दिन नूप ॥ तु० ॥ २२ ॥ वामनमां एहवा गुण न धरे,
विधि जिम अमृत सार ॥ काचा कुंभमांहे जिम न धरे,जाण पुरुष निरधा

रक नर मस्तक,मूके जे पंच प्रधानमां ॥ स० ॥ ए ॥ वेदे रसांतर नहीं ते
हज रस, कोइ न जाणे तेणे करी ॥ गाई रह्यो तव चमतकार लही,जो
जीत्यो कहे फरी फरी ॥ स० ॥१०॥ सहु मगन थइ कहे चित्त धरी ॥ ए
आकणी ॥ जय वाजित्र गाज्यां जय जय रव थयो,वामनें मुज कला हरी ॥
एम चिती वरमाला नाखे, वामन गले गीतसुंदरी ॥ स० ॥ ११ ॥ नृप
कुलदेवीयें बहु परशस्यो, तिह शिर पुष्पवृष्टि जरी ॥ निज शिर मुंमित दे
खो लाज्या, नाशी गया हांसी खरी ॥ स० ॥ १२ ॥ आयुध वस्त्र अलंक
ति आपे,दासीयो धन आदरी ॥ दासीयो पण वामन प्रशंसे,अमनें पण ए
णें उधरी ॥स० ॥ १३ ॥ नृप चिंते हलकाइ मुज थइ, वेहु पुत्री वामन व
री ॥हरखु जो कोइ राज्यकुमर वरे, जीतीनें नाद सुंदरी ॥ स० ॥१४॥ एम
विचारी उद्घोषणा करे, वामनें वरी दोय कुमरी ॥ जीते कोइ कुमर नाद
सुंदरी, सहुमां थइ अग्रेसरी ॥स०॥ १५ ॥पंचम खमें पंचमी ढालें, पद्म
विजय उत्तम चरी ॥ श्रीजयानंदना रासमां नाख्युं, आगल सुणो श्रोता
वरी ॥ स० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वामनें अमनें लाजव्या,एम मन आणी खेद ॥ नृप तथा कुमर भला,
अधिको धरत उमेद ॥ १ ॥ नाना राग निपजावता,तेहनें नादें तेह ॥ प
रिहरी सर्व व्यापारनें, सभा थया ससनेह ॥ २ ॥

॥ ढाल छठी ॥ तुम तो भलें बिराजोजी ॥ सिद्धाचलके ॥
॥ वासी साहेब,भले बिराजोजी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें तो जोजो जोजो रे,वीणाने बजावे ॥ तुमें तो०॥ सहुये अनुक्रमें
तेह बजावे, साभले सहु जय लाय ॥ एक एकथी चढीयाती वाजे, चित्र
परें भजाय ॥ तु० ॥ १ ॥ निद्दितनी परें सहुये घूमे, कोइक बजावे ताम॥
उत्कर्षे रसें तेह कला थई, कुमर तणे परिणाम ॥तु०॥२॥ पूर्वसंकेतित महा
वत महागज,मूके छूटो जाम ॥ गर्जारव करतो ते आवे,नाठी सभा तेणें ठा
म ॥ तु० ॥ ३ ॥ नादना रसथी वाहालुं सहुनें, जीवित अतिशय होय ॥
नादसुंदरीनें हवे आणा, नरपति आपे सोय ॥ तु० ॥ ४ ॥ वीण बजावे ना
दसुंदरी, कानें अमृत समान ॥ गज थभाणो सभा लोक पण, थभाणा ग
ई शान ॥ तु० ॥ ५॥ विस्म्यो नाद तदा तिहां महावत,गज खेंचे ततखेव ॥

एणें एम ॥ समकालें कला वाखवी हो नाई, कन्या लीधी त्रण नेम रे, सुणो मोरा नाई ॥वा०॥२॥ फोकट पाठनो श्रम कस्यो हो नाइ,जो जाणता ए वात ॥ तो आगलथी मारता हो नाई, तो उपद्रव नवि थात रे ॥ सु०॥ ॥३॥ हजीय गयुं कांही नथी हो नाइ, ए निराश्रय छे एक ॥ कन्या लीये ते न खमी शकु हो नाइ, मारीयें धरी मन टेक रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुल शील कोइ जाणे नहीं हो नाइ, कन्या लीये कुरूप ॥ हांसी पामीयें पंच मां हो नाइ, शुं करशे एह नृप रे ॥ सु०॥ ५ ॥ माया अपराधी एहनें हो नाइ, मारंतां नवि दोष ॥ मारतां देखी मूकशे हो नाइ,वरमाला करी शोष रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ करिय विचार आणा लइ हो नाइ, शूरपाल एक राय ॥ मुख्य कहे वामन प्रत्यें हो नाइ, सांजल तु हितदाय रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ सझाध्याय छे श्रम तणो हो नाइ, तेणें कहियें हित वात ॥ नाटक तो छे सोहिलु हो नाइ, मर्कट मोर विख्यात रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कोकिल चामाला दिक पणु हो नाइ, गाय मनोहर गीत ॥ वीण ताल वजावता हो नाइ, एतो सर्व प्रतीत रे ॥ सु०॥ ए ॥ पण राय कन्या नवि वरे हो नाइ, तेम तुं पण नहीं योग्य ॥ सुवर्ण घटा नवि सोहियें हो नाइ, खरकंठे सयोग रे ॥ सु०॥ १०॥ क्षीर नोजन नवि श्वाननें हो नाइ, उटगले मणिहार ॥ तेम तुजनें राजकन्यका हो नाइ,नवि सोहे किरतार रे ॥ सु०॥ ॥ ११ ॥ माला मूक ते कारणें हो नाइ, वर तुज योग्य जे नार ॥ नाटकिया परें कला करी हो नाइ,जीव तु एणे ससार रे ॥ सु०॥ १२ ॥ अन्यथा तुज मरवु थशे हो नाई, जाणे तु सवि तेह ॥ तव क्रोधें वामन कहे हो नाई, सांजलो हु कहु जेह रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ नाग्य कला नहीं तुम्हमा हो नाई, हजी अ न जाणो केम ॥ कलावादें नकारा कस्या हो नाई, रणजीवित छेउ तेम रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ मुज नारी जेह निरखशे हो नाई, तस जोशे जमराय ॥ शूरपाल कहे वामणा हो नाई, जो होंशें रण कराय रे ॥ सु०॥ १५ ॥ तो ले शस्त्र तु हाथमां हो नाई,वामन बोले ताम ॥ सुर असुरपति जे होवे हो नाई, आघा आवो आम रे ॥ सु० ॥१६॥ शस्त्र परिश्रम तुमें कस्यो हो नाई, मुज जीतणनें काज ॥ पण चपेटो मुज हाथनो हो नाई, नवि खमी शके सुरराज रे ॥ सु०॥ १७ ॥ तो तुम शशला कपरें हो नाई, शस्त्र तणु शुं काम ॥ ऐरावत शुंढापरें हो नाई, मुज कर शस्त्रनें गम रे ॥ सु० ॥१८ ॥

र ॥ तु० ॥२३ ॥ कन्यानी ए धिक् प्रतिज्ञा,धिक् विधिनिर्मित काम ॥ धिक् मुजने जेणे श्राणा दीधी, धिग् ए कुमर निकाम ॥ तु०॥ २४ ॥ प्रबे क न्या रूप अनोपम, वाहाली जीवन प्राण ॥ देवथकी वामण ए वरियो,जो कर्मादे हुइ हाण ॥ तु० ॥ २५ ॥ कांइ धर्यु नें कांइ चिंतव्यु उजपे कोव दैव ॥ देव प्रमाणें आत्मपरिणति, चाले जेह सदैव ॥ तु० ॥ २६ ॥ य त ॥ प्रारब्धमन्यथा कार्य,मिद निर्व्यूढमन्यथा ॥ इद जातमसजाश्च, दैव को लधितु क्षम ॥१॥ अन्नह चिंतियमाण,वदय पडगेण अन्नहा जाय॥ चितोदय विवरीय, तम्हा नो चिंतए मुणिदा ॥२॥ अवश्यजावेह्यऽनवमइम दा ,यया दिशा धावति वेधस स्पृहा॥तृणेन वात्येव तयानुगम्यते,जनस्य चि त्तेन नृशा वशात्मता॥३ ॥ यन्मनोरथगतेरगोचरो,यत् स्पृगति न गिर क वेरपि ॥ स्वप्नवृत्तिरपि यत्र डुर्लना,हेलयैव विदधाति तद्विधि ॥४॥ पूर्वढाल॥ एम चितातुर राजा पूछे,कला गुरुनें एम ॥ देश जाति कुल एहनी जांखो, जाणो यथारथ जेम ॥ तु० ॥ २७ ॥ पंचम खर्मे उठी ढालें, श्रीजयानदनें रास ॥ पद्मविजय कहे सुणतां होवे,घर घर लील विलास ॥ तु०॥२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास मातेरो मुज कनें,आव्यानें थयो आज ॥ पूछ्युं गुरु कहे में प्र थम,कोण तु आव्यो शे काज॥१॥ विषय नेपाल विजयपुरें, क्षत्रीपुत्र डु ख्यात ॥ कला शीखवा कारणें, आव्यो बु एकांत ॥२ ॥ अधिक स्वरूप न एहनु, जाणे कोइ सुजाण ॥ दिव्य अलकरणादिकें,दानें धनद प्रमाण॥३॥ कला प्रयत्न घणुं करी, शीखवियो साक्षात् ॥ अमनें मूर्खपणु अति,एटला दिन आख्यात ॥ ४ ॥ हमणां तो एणें दोंशथी, कला देखावी कोय ॥ जे देखीनें सहु जना, चमत्कार चित्त होय ॥ ५ ॥ अलख स्वरूप ए उलखो, गुरु कहे एहनुं गूढ ॥ चतुर होय ते चिंतवे, मानवी न लहे मूढ ॥ ६ ॥ वाणी सुणी विकल्प करे, नरपति चित्त अनेक ॥ वैरी परें ए वामणो, अमनें थयो अतिरेक ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १८२ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जिनवचनें वैरागीयो हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ राजकुमर हवे चिंतवे हो जाई,लघजा मली लही खेद ॥ वामणे आ पण विगोविया हो जाई, कीधो नाकनो छेद रे, सुणो मोरा जाई ॥ १ ॥ वामणे उगीया वे ॥ ए आंकणी ॥ मूर्खपणु देखावीयु हो जाई,आगलथी

गयुं सवि नाजी ॥ सहुनें प्राण पोतानां वाहाला,कोइ न उठघो गाजी के ॥ आ० ॥ १२ ॥ श्रीपति राजानो सेनानी,सेना नागी जाणी ॥ राय आणाथी शस्त्र नरीनें, रथ लाव्यो तिहां ताणी के ॥ आ० ॥ १३ ॥ तेहनें उठनें वली उठघा, निज निज सेना लेइ ॥ क्रोधें चढिया चमपालादिक, युद्ध करण आव्या केइ के ॥ आ० ॥ १४॥ थंन नमाडे निज अग पाखलि, शत्रु शस्त्र न लागे ॥ शत्रुसेना हणतो तिहां चाल्यो, पकडे सुनटनें पागें के ॥ आ० ॥ १५ ॥ चक्रपरें नमाडी उछाले, दूर पडयो तस लेई ॥ नूमि पछाडी मूर्छित कीनो,वली नर मोकले केइ के ॥ आ० ॥ १६॥ मूर्छित तेहावी चिकित्सा करे, वली कोइ रथ शस्त्रे नरियो ॥ तिहां वेरी सारथीनें प्रेरे, शत्रु सैन्यें सचरियो के ॥ आ० ॥ १७ ॥ चमपालादिक वाण वरसता, ते नट रथनें रूधे ॥ वामन चोक फेर वरसे शर,मानु सुनट निज नूधे के ॥ आ० ॥१८ ॥ हय गय नट वींधे सग्रामें, रथ नांगी धनु छेदे ॥ चमपालनु तुम सुम विद्धु, मुफे क्षुरप्रें खेदें के ॥ आ० ॥ १ए ॥ वामन उपर खड्ग लेइनें, चमपाल करे घात ॥ वामन वचावी ते खड्गनें, जूंटीनें करे मुष्टिघात के ॥ आ० ॥ २० ॥ मूर्छा पमाडी तेहनें वस्त्रें, बांध्यो फकडी जाम ॥ दृढरथ कठघो वामन साथें,वाण वरसे विद्धु ताम के ॥ आ०॥२१॥ क्षुरप्रें वामन तस मुंमे, लज्जायें नागो तेह ॥ एणी परें सात सुम्म करी मूक्या, नाग सहु गतनेह के ॥ आ० ॥ २२ ॥ बीजा पण कुमरोयें विचार्यु,वामणे सहुनें हणिया ॥ नहीं कोइ गरास वधारे न कीर्त्ति,मरणमां किम जाउ गणिया के ॥ आ०॥ २३ ॥ एम जाणी जीवितना इछक, नाग जीवित लेइ ॥ तास सेनानें धीरय आपे,आशासना घणी देइ के ॥आ०॥२४॥ फूलवृष्टि करे वामन उपर, व्यंतर देव रसाल ॥ पद्म कहे ए पंचम खमें, आठमी ए थइ ढाल के ॥ आ०॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीपतिराजा सज्ज हुवे, एहवु देखी एथ ॥ आवी प्रधान आखे इसु, कहो जाशो तुमें केथ ॥ १ ॥ एम उद्धतपणुं आचरी, आवरु जागे आल ॥ मुमे मस्तक वामणो, केम करो तेहशुं काज ॥ २ ॥ ए वामननें आगलें, सहु नट तृणा समान ॥ मरवानु केम मन करो,समजण आणो शान ॥ ३ ॥ सैन्य सहित समजावशो,वामन वारु रीत ॥ शी कीर्त्ति थाशे

विक्रम ते वक्तर नवु हो नाई, नाग्य सखाई जाण ॥ रे तुमें मुज नवि उंलख्यो हो नाई, हजीय लगी हो अजाण रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ सातमी पां चमा खममां हो नाई, पद्मविजये कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां हो नाई, थाशे मंगलमाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सन्नद्ध थाउ तुमें सवे, शस्त्र लियो संग्राम ॥ कौतुक तुम पूरुं रूं, देखो तुमें उद्दाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ पारी रे जातनुं फूल स्वरगथी ॥ ए देशी ॥

॥ डुर्जय जाणी सहु सन्नद्ध थया, निज निज वल लेइ साथें ॥ मुंमित शिर पांच आवी आगल, टोप आछादित माथे कें ॥ १ ॥ आवो के अरियें के, साहामा सहु पहेलां के, हारें वाहाला अमें लडशुं एह साथें रे ॥ एह साथें एह साथें अम वयरी, देखो पराक्रम केहवु रे ॥ ए आंकणी ॥ क्रोधें बलतां पांच ते बोले, एहनें हाथे हणशुं ॥ निज सेना लेइ आव्या वचमां, अमें शरम नवि गणशुं के ॥ आवो के० ॥ २ ॥ हांसी करतो वामन बोले, मुंमित शिर लजाणा ॥ आव्या ते रुडुं, कहुं हवे तुम, लाज लेउं जाउ अजा णा के ॥ आ० ॥ ३ ॥ एम सांजली क्रोधें चढया पांचे, वरसे बाणनी श्रेणी, व्योम पूरे बीजा पण बाणें, बाया करी नानु तेण के ॥ आ० ॥ ४ ॥ वामन सिंह उठयो तव साहामो, पंच परमेष्टि संजारी ॥ थंन उपाडी ते मृग उ पर, धाइ चोट करे नारी के ॥ आ० ॥ ५ ॥ गिरि शृंग परें गजनें तिहां पा डे, माहावतनें ते नमाडी ॥ पारेवा परें गगनें उबाले, केईक नूमि पछाडी के ॥ आ० ॥ ६ ॥ मूर्छावंतनें दयालु न मारे, पापड परें रथ नांजे ॥ ध नुष मोघर नालां असिनें गदा, चूरण करतो गाजे के ॥ आ० ॥ ७ ॥ क्षण गगनें क्षण धरतीयें दीसे, सैन्य आगें क्षण मांहे ॥ क्षणमां अतें रिपुबल हणतो, वीर्यवंत उत्साहें के ॥ आ० ॥ ८ ॥ थंन मुष्टि पदघात करीनें, सादि निषादिनें मारे ॥ पडतां उपडतां नवि लखीये, मार पडे संजारे के ॥ आ० ॥ ए ॥ मारवा उठयानें हवे वामन, घातें मूर्छा आपे ॥ कह्नास्कंध पाद दय विचमां, ते पांचेनें थापे के ॥ आ० ॥ १० ॥ उठाली पल्लीनें ते सोंपे, मानु थापण कीधी ॥ दासीयो पासें ते बधावे, वली प तियें आणा दीधी के ॥ आ० ॥ ११ ॥ शीतल उपचारें जीवाडया, सैन्य

हूउं, हवे नृपति कहे वात ॥ म० ॥ १५ ॥ जेम गुण प्रगट कस्या तुमें पोतें, तेम प्रगटावो रूपजी ॥ दाक्षिणथी ओषधी प्रनावें,कीधु शुद्ध स्वरूप ॥ ॥ म०॥१६॥ ते देखी सहु विस्मय पाम्या,आनद अंग न मायजी ॥ जय जय शब्द कोलाहल हूउं, वाजित्र गीत गवाय ॥ म० ॥ १७ ॥ इण अवसर कोइ दूरथी आव्यो, वंदी उलखी नाषेजी ॥ नाग्यें नमतां दीठा तुमने, छत्र वैश्रवण प्रकासे ॥ म० ॥ १८ ॥ लखमी वरषी जग तृप्तो कस्यो, ते सुणी पूछे रायजी ॥ छत्र वैश्रवण कहो कोण नांख्यो,अम मन कौतुक थाय ॥ म० ॥ १ए ॥ तव वदी पद्मरथ राजानी,पुत्री परणवा आदेंजी ॥ कमलप्रन नृपालनी पुत्री, परण्या लगें अविवादें ॥ म० ॥ २० ॥ चित्रकारी चरित्र कस्युं सघलुं, तव सहु करे विचारजी ॥ आपण नवि हास्या पामरथी,एतो मोहोटो कुमार ॥ म० ॥ २१॥ सहु नेला मली कुमरनें कहे, अपराध कीध अन्नाणेंजी ॥ ते खमजो अपराध तुमारुं, कोइ स्वरूप न जाणे ॥ म० ॥ २२ ॥ कुवर पण अपराध खमावे, प्रीति वधि मांहो मांहिजी ॥ कन्या एह स्वरूप देखीने,हेप धरे उत्साहिं ॥ म० ॥ २३ ॥ नृपति निज चित्रशालामांहि, देइ परिवारने राखेजी ॥ एक दिन पाणीग्रहणनें हेतें, नरपति एणी परें नांखे ॥ म० ॥ २४ ॥ पाणीग्रहण करो कन्यानु, कुवर कहे तव वाणीजी ॥ माहारे नाही प्रयोजन एहनु,माहारे छे बहु राणी ॥ ॥ म० ॥ २५ ॥ कलाकरण रणजय तो केवल, कौतुकथी में कीधुजी ॥ अण जाणे कुलें पुत्री देवी, ए नवि किहांये प्रसिद्ध ॥ म० ॥ २६ ॥ कलावत कोइ राजकुमरनें, कन्या आपो एहजी ॥ एहनी पण महेनत थाये सफली, तव नृपति कहे तेह ॥ म० ॥ २७ ॥ रुद्ध कस्यु एम देवीयें नांख्युं, प्रतिज्ञा पण पूरीजी ॥ बलात्कारथी एम मनावी, विघ्न सवे चकचूरी ॥ म० ॥२८॥ शुनलगनें परणावे त्रणे, महामहोत्सवथी रायजी ॥ गज रथ घोडा पायक आपे, सुंदर मदिर ठाय ॥ म०॥२ए॥ घर वाखरो वली देश ते आपे, क्रीडा करे स्त्रीसगेंजी ॥ साते क्षेत्रे धन ते वावरे, देव गुरु पूजे रंगें ॥ म०॥३० ॥ आय प्रमाणें वय ते करतो,एहनां पुण्यथी वाधेजी॥ राज्य राजानु जन गुण गाये, नित्य नित्य एम आराधे ॥ म० ॥ ३१ ॥ परदेशें पण जयश्री पामे पुण्यवत जे प्राणीजी ॥ आदर करीने पुण्य करो नवि, जिनशासन एम जाणी ॥ म० ॥३२॥ नवमी ढाल ए पंचम खमें,पचम खम पण हूउं जी ॥

कहो, जो न थई तुम जीत ॥ ४ ॥ जीतता मूकशे जाणिने, ससरो वामन सत्य ॥ सुख केम दाखशो मानमां, मोटी राखो मत्य ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी॥ सांजल रे तु सजनी म्हारी,रजनी किहां रमी आव्यां जी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल रे तु राजन वयणां,मंत्रीश्वर एम जांपेजी ॥ प्रजु होय ते हित कारी जाणे, सेवक सत्य प्रकाशे ॥ १ ॥ मर नवि धरियेंजी ॥ पूर्वे अपर स वि वात, चिंतवी करियेंजी ॥ ए आंकणी ॥ शस्त्र विना एकलडे एणे, कुमर वि डव्या सबलाजी ॥ एहनें आगल शक्र सरीखा, दीसे अतिशय नबला ॥ ॥ म० ॥ २ ॥ कलावतनें वलीयो एहवो, कन्या जाग्ये पाम्योजी ॥ वर ए ह वेंतु थानक पामी, खेद कहो केम जाम्यो ॥ म० ॥ ३ ॥ एह पराक्रम एह कला वली, एह दयानें दानजी ॥ वामनमां गुण विण नवि संजवे, सत्य क हु राजान ॥ म० ॥ ४ ॥ विद्यादिक शक्ते करी वामन, क्रीडा करे धरतीयें जी ॥ महापुरुष कोइ इछारूपी, ए अनुमान वरतीयें ॥ म० ॥ ५ ॥ कुल देवी पण कुसुमवृष्टि करे, एह अर्थ पण धारोजी ॥ प्रारथीयो कलापरें कर शे, सहजरूप निरधारो ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रार्थना करो तेहनी एहनें, वाणी सुणी हितकारीजी ॥ हर्ष लही वाजित्र वजडावे, नरपति चित्त विचारी ॥ ॥ म० ॥ ७ ॥ वही बिरुदावली बोलते, गायन गीत ते गावेजी ॥ मंत्रीप्रधा न सहित हवे नृपति, वामन पासें आवे ॥ म० ॥ ८ ॥ दान देतो तेहनें ते वामन, रथथी उतरी प्रणमेजी ॥ श्वसुर आशीष दीये जमाइनें, आलिंग न दीये क्षणमें ॥ म० ॥ ए ॥ कनकासन उपर बेसाडी, सुख जय पूछे रा यजी ॥ वामन कहे संग्राम कलामां, हु नवि जीत्यो प्राय ॥ म० ॥ १० ॥ पण मुज हृदयें पंच परमेष्ठी, मंत्र वसें छे मोहोटोजी ॥ सुर पण वश हो य महं पण न नडे, विघन तणो थाय त्रोटो ॥ म० ॥ ११ ॥ उपद्रव न होयें छुष्ट नृपनो,लखमो चाली आवेजी ॥ सांजली पर्षदा जैनधरमनें, स्तव ता अतिशय जावें ॥ म० ॥ १२ ॥ वीर बांध्या ते सघला मूक्या,मुक्मुक्तित चम्पालजी ॥ तेहनी हांसी करतो कुंवर, हास्य करें नरपाल ॥ म० ॥ ॥ १३ ॥ चम्पाल हसतो तव बोले, पंचथी ७ ख नवि धरीयेंजी ॥ औष धी जलथी हय गय जट सहु, वामनें साजा करीयें ॥ म० ॥ १४ ॥ प्रायें कृपालु सुजटने उपरें, सापेक्ष मूक्या घातजी ॥ तेणें बहु जननो घात न

एम विचारी दया करे,मूकावी तेह चोर ॥ घर लावी न्हवरावीयो, तेम नो जन छुन गोर ॥ चो० ॥ १० ॥ क्षण रहीनें तस पूछियु, कोण तु केम करे चोरी ॥ कुमरनें उलखो चोर ते, उगी हैयामां होरी ॥ चो० ॥ ११ ॥ नीचुं मुख करीनें रहे,तव बोले कुमार ॥ अजय दीधुं तव बोलियो,गद गद वय ण प्रकार ॥ चो० ॥१२॥ पापीनु चरित्र सुणाववु, योग्य नहीं शुं नांखु ॥ रूपस्वरें करी उलखी, कुमर कहे सुण आखु ॥ चो० ॥ १३ ॥ बांधव माहारो रूअडो, नामें सिंह कुमार ॥ एहवी अवस्था केम लह्या, नाखो तेह विचार ॥ चो० ॥ १४ ॥ स्नेहें आलिंगन करी, वेशी पूछे वात ॥ पा लीनु राज्य किहां गयुं, केम व्रणनो व्रात ॥ चो० ॥ १५ ॥ कपट पोतानु गोपवे, कहे कल्पी वात ॥ सुता तुमें देवी मदिरें,हु पोहोरीयो रात ॥चो०॥ ॥ १६ ॥ सिंह दीठो में आवतो, तेहनें करवा त्रास ॥ पूठें दूर गयो वही, पाछो वलीयो उल्लास ॥ चो० ॥ १७ ॥ जमतां मारग जूलीयो, थयो जब परजात ॥ देवी देहरे तव आवियो, मनमां धरी भ्रांत ॥ चो० ॥ १८ ॥ तु मनें नवि दीठ तदा,जोया पर्वत पालि ॥ जलधिमां रत्न गया परें,आशा त्रू टी नाली ॥ चो० ॥१९॥ तुज वियोगें पाछु पालिनें,इण समय महासेन ॥ मुज धरतीनें दाबतो, आव्यो लेई सेन ॥ चो० ॥ २० ॥ हु पण साहामो निकल्यो, युद्ध एहछुं कीधो ॥ मुज लसकर हारी गयुं, मुज बांधी लीधो ॥ ॥ चो० ॥ २१ ॥ जाजरो कीधो प्रहारथी,नाख्यो बदीखाणे ॥ राज्य करे वे पालिनु, मन मद बहु आणे ॥ चो० ॥ २२ ॥ चामडे मढीयो मुजनें, गिरि टुक चढावी ॥ नाख्यो पलाशपत्रे पडयो, कर्में होय जे जावी ॥चो०॥२३॥ जावी जावथी वरसीयो, मेघ अकालें ताम ॥ चरम गध तव उठल्यो,आवी शीयाल ते गाम ॥ चो० ॥२४॥ चरम जख्युं तेणें बायरो, आव्यो चेतना पामी ॥ मूर्छा गइ अजाग्यथी, डु ख तणो विशरामी ॥ चो० ॥ २५ ॥ डु खीयानें मरण ते दोहिलु, जमतो पुरवर गाम ॥ इहां आवी जिक्षा जमु, व्रणें जर्जर आम ॥ चो० ॥ २६ ॥ जूख्यां त्रण दिन वही गया, जिक्षा न वि लाधी ॥ चोरी कीधी एणी परें,जूखें देहडी दाधी ॥ चो० ॥ २७ ॥ यत बुभुक्षित किं न करोति पाप, क्षीणानरा नि करुणा नवति ॥ आख्याहि जद्रे प्रियदर्शनस्य, न गगदत्त पुनरेति कूप ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ आगल तु में जाणो सवे,जीवाडयो बहु वार ॥ उरणीयो न थाउ किमे,दासपणे पण

एकांपिमनी पुण्यप्रनावें, ठपराजण तम जूउ ॥ म० ॥ ३३ ॥ श्रीगुरु उत्तम विजय पसायें, पद्मविजय एम नापेजी ॥ श्रीजयानंदना रासमां जाणो, दिन दिन अधिक ठन्नासें ॥ म० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ २६७ ॥

॥ इति श्रीमडुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते श्री श्रीजयानंदकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे नाटघसुंदरी,गीतसुंदरी,नादसुंदरी,परिणयन नामा पंचम खंम समाप्त ॥ चतुष्कखंम मलिने गाथा ॥३२१५॥ पंचमखंमे गाथा ॥२६७॥ सर्वगाथा ॥३२८२॥ पूर्वखंमचतुष्के उक्तश्लोक ॥४ए॥ पंचम खंमे उक्तश्लोक ॥१०॥ सर्वश्लोक ॥५ए॥ सवईउ एक,समस्या एक,डुहो एक॥

॥ अथ षष्ठखंम प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ प्रभु शोलमा, दान अनय दातार ॥ पदकज प्रणमुं पासना, चिंता चूरणहार ॥ १ ॥ पंच खंम पूरण कस्या, चढते रंगें चंग ॥ हवे बठो कहु दोंशथी, आणी मन ठन्नरंग ॥ २ ॥ क्रीडा वनमां क्रीडतां, धर्म करंतां धीर ॥ काल केतो एक काढतो,व्यवहारें वड वीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ कडुआं फल ठे क्रोधनां ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन रमवा निकल्यो, श्रीजयानंद कुमार ॥ रमवानें ठद्यानमां, तिहां देखे तेणी वार ॥ १ ॥ चोरी व्यसन ठे आकरु ॥ ए आंकणी ॥ खर उपर अवले मुखें, शिर पटियां पाडी ॥ बेसाडी राख चोपडी, मुखें मेश लगाडी ॥चो०॥ २॥ आक्रोश ताडना बहु करे, ठोकरां धूल उमावे ॥ कांकरा नाखे अति घणा,फूटु वाजु वजावे ॥चो०॥३॥ व्रण जर्जरित जूरव्यो घणु, नरक वानकी आवे ॥ पापनी मूर्त्ति ते बनी,मारवा लेइ जावे ॥ चो०॥४॥ वध्य मंमन देखी करी, कोटवालनें पूछे ॥ कोण ए केम विटंबना, एहनें यो शुं ठे ॥ चो० ॥ ५ ॥ तेह कहे आज रातिमां, व्यवहारी गेह ॥ खातर देइ इव्य काढीयुं, जन जाग्या तेह ॥ चो० ॥ ६ ॥ लोकें कोलाहल कस्यो, अमें पोहोता ताम ॥ रायनी आणथकी अमें, मारवा जाउ आम ॥ चो० ॥ ॥ ७ ॥ पापनां फल एहवां कह्यां, चोरनी गति पण एह ॥ तव कुअर मन चिंतवे, एह अनित्यनु गेह ॥ चो० ॥ ८ ॥ दाता नाम ठे माहरु, ए चोरी करे एम ॥ पीडा पामे अति घणी, वांक तेह माहारो नेम ॥ चो० ॥ ए ॥

करे रे,एवडो कुअर आदर मान॥ एहनें नाई रे एहवा नवि होये रे,वली की धु बहु धननु दान ॥छु०॥८॥ एक दिन पूछे रे कुमरनें नृपति रे, एहनें केम करो आदर मान ॥ गुणथी अधिका रे बीजा ठामीनें रे,सिंह शीयालनें एह उपमान ॥ छु०॥९॥ कुमर कहे नाई माटे आदर करुं रे,पण नवि माने ते राय ॥ एक दिन राय पूछे सिंहसारनें रे, कौतुकथी निरमाय ॥ छु०॥१०॥ ते पण अवसर पामी माया करी रे, बोले एणी परें वाण॥ में उपकार कर्यो पूर्वें घणो रे, माने छे तेह जाण॥ छु० ॥ ११ ॥ वधती वात कहे वाये नहीं इहां रे,सम दीधा छे ते माट ॥ कुमरें निपेध्यो छे वली तुमनें रे, छुःख थाये इण वाट ॥ छु० ॥ १२ ॥ नृपति कौतुक आशका नव्यो रे, नृप कहे तोहे नांख ॥ जो मुज मानतो होय कोइ रीतिथी रे, तो कांइ छानु म राख ॥ छु० ॥ १३ ॥ कुमरथकी तुम आणा मोटकी रे, स्वामीद्रोहनु पाप ॥ में सांनळिषु छे तेणें नाखियें रे, सांभळो कहु ते आलाप ॥ छु०॥ ॥ १४ ॥ विजयपुरें जय नाम राजा तणो रे,सुत हु त्यागी अथाग ॥ ते कारण चोरी पण हु करु रे, तव नृप कहे धरी राग॥ छु० ॥ १५ ॥ अहो निज दोप कहे छे केहवो रे, सत्यवादी शिरदार ॥ एणी परें राय विचारे निज मनें रे, हवे आगल कहे सिंहसार ॥ छु० ॥ १६ ॥ मधुगीत नामें गायन रूअडु रे, उपनो कुल ते चमाल ॥ मधुर स्वरें करी रायनें रीजवे रे, करे प्रसाद नृपाल ॥ छु० ॥ १७ ॥ सुरगीत नामें सुत थयो तेहनें रे, सो नागी शूरवीर ॥ वालपणकी पण सुस्वर अति घणो रे, प्रज्ञावत सुधीर ॥ छु० ॥ १८ ॥ सौभाग्यादिक गुण आगर थयो रे, पंकजमां जेम गध ॥ नीचकुलें पण तेहनें तस पिता रे, शीखवे ते रागवंध ॥ छु० ॥ १९ ॥ मुज आगल गाये सुस्वरें रे, दान देउ सुविशाल ॥ बीजी कला इछे पण को नहीं रे, पाठवे जाणी चमाल ॥ छु० ॥ २० ॥ देशांतर जावानुं मन करे रे, पण धन नहीं निज पास ॥ मुज पासें माग्यु धन में तदा रे, चितव्यु करे ए अन्यास ॥ छु० ॥ २१ ॥ शीखी कला मुजनें देखाडशे रे, आप्यु में धन कोडी ॥ जइ विशालपुरें विद्या नण्यो रे, धन आपी मन कोडि॥ छु०॥ २२॥ स्त्रीपणु निज लोकमां दाखतो रे, दाखवी कलानें विज्ञान ॥ कोइक इष्ट आराधी सुर लिये रे, औपधि जाज्वल्यमान ॥ छु० ॥ २३ ॥ इष्टरूप करतो पृथिवी नमे रे, रीजवे लोकनां वृंद ॥ मनोवांछित धन मेल्यु लोकथी

धार ॥ चो० ॥ २८ ॥ पद्मविजय पहेली कही, छट्ठे खंडें ढाल ॥ श्रीजया नंदना रासमां, आगल वात रसाल ॥ चो० ॥ २९ ॥ सर्वगाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन अगोचर वालहा, पूरवलुं मुज पाप ॥ पामुं आपद पग पगें, अधम संगति लही आप ॥ १ ॥ यत ॥ अधमसंगतिदुर्मतिदूरुषता, प्रतिपदं वधबंधपराजव ॥ प्रियवियुक्त्यरिनीतिदुरापद, खलु फलानि हि दुष्कृतशाखिन ॥१॥ दोहा ॥ कुमर सुणी किरपालुउं, कहे तुमें न करो खेद ॥ सहुनें विपद संसारमां, न लहे पण निर्वेद ॥ २ ॥ रमणिक राज्य नें ऋद्धि ए, ताहारु जाणी तहत्ति ॥ लखमी पण तेहज लहो, निजसुं नु जे निरत्ति ॥ ३ ॥ व्रण टाल्यां औषधि वनें, आपे वस्त्र अलंकार ॥ दाता कल्पपादप परें, गंभीर गुण गणधार ॥ ४ ॥ नाईपणुं जनमां नणु, परगट राखे पास ॥ सोंप्यां काम एहनें सवे, आदर करी उल्लास ॥ ५ ॥ लहीनें धन लखको गमे, न मले नाइ निदान ॥ निजदेश चिंतक नारिनें, अशुं मत करे अचान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ तट यमुनानुं रे अति रलियामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरें दीधुं रे धन विलसे सदा रे, लोकमां मान थयो सिंहसार ॥ संपदा कुमरनी देखी चित्त बले सदा रे, निज आपद संजारे गमार ॥ १ ॥ दुर्जन ते सज्जन न होये कदा रे ॥ ए आंकणी॥ देखी देखी दुबलो ते होय रे, जेम जवासो वरषा काल ॥ देखी तेज कुमरनुं रविपरें रे, अस्त वांछे जेम घूक ते काल ॥ दु० ॥ २ ॥ मन चिंते संपद मुज नवि मली रे, तो हरु एहनी कोय उपाय ॥ शत्रुवध तो उवेखुं नहीं रे, मारुं तो ए सवि मुज थाय ॥ दु० ॥ ३ ॥ नृपसेवाथी काम सिज्के सवे रे, एम चिंती हवे कुमरनी साथ ॥ जइनें रायनी सेवामां रहे रे, अनुक्रमें नरपति कीधो हाथ ॥ दु० ॥ ४ ॥ दुष्टनो आशय मालम नवि पडे रे,कचरामां जेम कंटक होय ॥ मुखथी मीठो धीठो हृदयमां रे,तेहनी रीति न जाणे कोय ॥दु०॥५॥ जाण कुमर प्रिया जाणी दुष्टता रे, कुमरनें कहे पण माने नांहि ॥ सज्जन ते सहुनें सज्जन लहे रे,दुष्ट तेनें सहु गणे दुष्ट मांहि ॥दु०॥६॥ सूर्य अजु आलुं देखे सदा रे,घूक ते देखे नित्य अंधकार ॥ जे जेहवो होये ते तेहवो होये रे, चोर तथा शाहुकार ॥ दु० ॥ ७ ॥ लोक विसारे रे चोरनें केम

तें, राजमार्गे थइ जाते रे ॥ धि० ॥ वेह्नु जण मलीनें मारजो तेह, कोइ आगल कहे जो म एह रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ अंगीकार करी ते आदेश, रह्या छानक परें ते देश रे ॥ धि० ॥ सावधान थई वगर विचारें, रहे ते ताकी तेवारें रे ॥धि०॥७॥ कोइ नर मूके श्रीजय पासें, ते जइ एम प्रकाशें रे ॥ धि० ॥ कांइक कार्यनो करवा विचार, नृप तेडे एणी वार रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ सरलपणे सुणी श्रीजयानद, धरतो विनय अमद रे ॥ धि० ॥ मूकी शय्या धरी विशवास, जव जावानें उल्लास रे ॥ धि०॥ ए ॥ निपुण स्त्रीयो तव कुम रनी बोले, सरल नहीं तुम तोले रे ॥ पिउ प्राण आधारा ॥ नीतिशास्त्रना जाण कहाउ, नविअ विचार मन लाउ रे ॥ पि० ॥ १० ॥ श्यो अवसर आ आलोच केरो, पाछली रात अंधेरो रे ॥ पि० ॥ तेडवानो नहिं अवसर स्वा मी, तुमें गुणगणना धामी रे ॥ पि० ॥ ११ ॥ नर नारीनी न शसा करियें, सरलपणु नित्य धरियें रे ॥ पि० ॥ वनसपति जे फूले अकालें,अरिष्ट थाये शरवाले रे ॥ पि० ॥ १२ ॥ दुष्ट कारण विण इणहिज वेला, तेडे न एम एकेला रे ॥ पि० ॥ नृपचित्त जूडुनें जूदी वाणी, किरिया जिन्न वखाणी रे ॥ पि० ॥ १३ ॥ जूडु फल वेश्यानी रीतें, खबर पडे नहीं चित्तें रे ॥ पि०॥ ते कार्य कहो केणी परें करीयें, जेहमां सशय धरीयें रे ॥ पि० ॥ १४ ॥ नृप विश्वास न करीयें विशेषें, त्रण अवगुण जस देखे रे ॥ पि० ॥ सर्वे कार्य करता सिहसार,मोकलो तस इण वार रे ॥ पि० ॥ १५ ॥ इये कार्मे कहो आवशे एह, इण अवसर जाशे न जेह रे ॥ पि० ॥ न्याय युक्त ए सांजली वात, कुमर चित्त हरखात रे ॥ पि० ॥ १६ ॥ तेडी सिहने नांखे एम, नृप तेडे तुम नेम रे ॥ पि० ॥ पूडवा तेडयो सुजनें राय, घात कुम रनो उपाय रे ॥पि०॥१७॥ नोखिश मन मान्यु तिहां जाई, सिह चिंते एम नाई रे ॥ पि० ॥ तुरगारूढ थइ हवे चाल्यो, अर्द्धमारगें जइ माहाल्यो रे ॥ पि० ॥ १८ ॥ दोय पासें दोय बाणथी मार्यो, पडियो मूर्छायें धार्यो रे ॥ पि० ॥ नाई डोहलु फल एह पायो, पर चिंतव्युं निज थायो रे ॥ पि० ॥ ॥ १ए ॥ ते पुरुषें जइ राजानें आख्यु, काम कर्यु तुमें नांख्यु रे ॥ पि० ॥ प्रायें नृपनें न होय विवेक, दर्पे लह्यो अतिरेक रे ॥ पि० ॥ २० ॥ यत ॥ विवेकोड्झन प्रायो, विशेषो महतामिह ॥ धनाढधनृपदैवेषु, स मनागपि नेक्ष्यते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कोलाहल सुणी कोटवाल आयो,बाहार मोकले

रे, करी उपकार अमद ॥ डु० ॥ २४ ॥ कोइ उत्कृष्ट कलाथी परणावो रे, राजकन्या गाम गाम ॥ नाग्यकला गुण आगल कोण जूए रे, जातिनें कुल अनिराम ॥ डु० ॥ २५ ॥ मुज संगतिथी शीख्यो वाननें रे, बानें दोष ढकाय ॥ फरतो फरतो इहां आव्यो पढें रे, तुमथी गानु न कोय ॥ डु० ॥ ॥२६॥ बहे खमें बीजी ढालमां रे, डुर्जन एहवा होय ॥ पद्मविजय कहे तत विश्वासडो रे, मत करजो तुमें कोय ॥ डु० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विण उलखे वारू परें, मूकाव्यो एणें मुक्क ॥ लाव्यो निजघर लक्षणें, उलख्यो मुज ए गुरू ॥ १ ॥ देई धन दोलत तदा, सहुमां कस्यो सतकार ॥ एकांतें मुज आखियुं, सुण रे तु सिंहसार ॥ २ ॥ मुजकुल मत परकाश जे, सम दीधा सो वार ॥ वचनें एम विलखो थई, बांध्यो बहु प्रकार ॥ ३ ॥ राखे पासें रीतिशु, विणचिंते विशवास ॥ करे बहु मान मन कातियें, आपे नहीं अवकाश ॥ ४ ॥ तुम आणा वशथी तुरत, गोप्य कह्यु गोसामि ॥ गुणवंत कुल गणियें नहीं, अप्रसन्न मत हो आम ॥ ५ ॥ सांनली नृप विस्मय लह्यो, मनमां क्रोध न माय ॥ वांबित फल्यां विचारीनें, सिंह उल्लास सवाय ॥ ६ ॥ सिंह विसर्ज्यो मुजपरें, क्रोधें नृप अकुलाय ॥ जैन नूपनें पण जुउ, दोष त्रण डुखदाय ॥ ७ ॥ यत ॥ तस्मिन् डुर्बलकर्णत्व, मविमृश्य विधायता ॥ स्वैरत्व चेति जैनेपि, सति दोषास्त्रयोनृपे ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ माहारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चिंते क्रोध नरायो, जुउ मुज कुल एणे वटलायो रे ॥ धिक् धिक् ए जमाइ ॥ पापीयें बहु नृपकुल वटलाव्यां, सहुनें डुख एणी परें आप्यां रे ॥ धि० ॥ १ ॥ कुल नवि पूछयु रानस वृत्तें, कुमरीयो दीधी मन प्रीतें रे ॥ धि० ॥ पंक्तियें बेशीनें नोजन करीयें, कहो केम एणी परें पिंम नरीयें रे ॥ धि० ॥ २ ॥ क्षत्र वैश्रवण ए नाम धरावी, करी धूर्त्तविद्या एणें गावी रे ॥ धि० ॥ पद्मरथ पद्मप्रन लेतरीया, महारां पण वस्त्र वेतरियां रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ राज्यांतरमां वात विस्तरशे, तो मुज निंदा करशे रे ॥ धि० ॥ कुल मुज तजशे ने हांसी करशे, ए केम मुज प्रवहण तरशे रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ आजज मारीयें रयणीयें एह, तो आबरु रहे रेह रे ॥ धि० ॥ एम चिंतवे दोष घायक तेडे, विश्वासीनें तेडी नेडे रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ तुरगारूढ जे आजनी रा

पामे मनमां खेद,चिंते रे विपरीत कारज केम थयुंजी ॥ चितव्युं कांय नें नी पन्युं कांय,दैववांके सहु वांकु थइ गयुंजी ॥३॥ यत ॥ अन्नह चिंतियमाण, उदय पउंगेण अन्नहा जायं ॥ चितोदय विवरीयं,तम्हा नो चितए सुणिहा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मारण योग्य न आव्यो एह, पालन योग्य ते हितुउं एम मुउंजी ॥ गोप्य जे वात ते थइ परगट,काम न सीधु माहारुं किम हूउंजी ॥ ४ ॥ खाधु अनहयनें न गयो रे ताव, व्रतनो रे भंग थयो ए चित्त दहेजी ॥ गोत्रनो ध्वस कस्यो वली राज्य, बलीया रे वयरी आवीनें अ हेजी ॥५॥ हाथ बल्या नें न खवाणो पोंक,ए दृष्टांत ते माहारे नीपन्यु जी॥ मारवो प्रगटपणे करी जोर, एहवु रे नरपति चित्तमां उपन्युं जी ॥ ६ ॥ सुनट सहस गमे सन्नद्ध बद्ध, मोकले सूतो मारो एहनेंजी ॥ सहस गमे म ली आव्या रे तेह, कुमरनी पोलें मह वहु जेहनेंजी ॥ ७ ॥ लोह मोघर थी भांजे रे पोल, तेटले पोल उघाडी कुमरभटेंजी ॥ तेहशुं रे करवा मां मयु युद्ध, वींटया रे तेहने वलनें उत्कटेंजी ॥ ८ ॥ कुमरभटें वहु देखा डयो त्रास, नाग रे नृपभट नृपना गेहमांजी ॥ कुजमां जेम पेसे रे शीयाल, शक्ति न रही लव लेश ते देहमांजी ॥ ए ॥ कुमर भटें अम नसाव्या रे स्वामि, रविकर जेणी परें महोटुं तम हणेजी ॥ सांनली क्रोधें चढियो रे राय, भेरी वजडावे विहाणें मह घणेजी ॥ १० ॥ युद्ध करणनें मलिउ रे सैन्य, जाग्यो रे कुमर कृत्य विहाणां तणांजी ॥ करीनें रे रमवा सोगठ पास, वेसे रे नारीने कहि वयणां घणां जी॥११॥ सैन्य सहित नृप आवतो जाण, तूरीनो कटुक ध्वनि सुणी कानमांजी ॥ नयथी रे भ्रांत थइ कहे वाणी, सांनलो स्वामी कहु ते शानमांजी ॥ १२ ॥ नृपभट तुम भटें भगव्या रे स्वामि, क्रोधें रे नूप भराणो आवियोजी ॥ तुमचो रे निग्रह करवा काज, सैन्य लेइने केम नवि भावियोजी ॥ १३॥ क्रीडानो अवसर नहीं इण वार,ल्यो करवाल ते शत्रु कारणें जी ॥ अमने रे रमवा मन नवि थाय, बीहीकें रे मन नवि रहे अम धारणें जी ॥ १४ ॥ वोले रे लीलायें हसीनें कुमार, शस्त्र विना वहु कुमरने जीतीया जी ॥ वलीया रे वलथ आव्याता तेह,माहारी भुजायें सहुये विगूतीया जी ॥ १५ ॥ क्रीडा करो तुमें निर्भय चित्त, क्रीडा रे करवा वेठी पण मनेंजी ॥ स्त्रीना स्वभावथी शका रे धार, सैन्य सजावे दाखवी नयननेजी ॥ १६ ॥ कुमरनां म

नररायो रे ॥ पि० ॥ कोइक नरें कही कुमरने वात, सांजली मन खेदात रे ॥ पि० ॥ २१ ॥ नारियो कहे स्वामी तुमें दीठु, नृपनु कार्य अनीठु रे ॥ पि० ॥ मान्युं न होत जो अमचु वयण, शी गति होत अम सयण रे ॥ पि० ॥ २२ ॥ आजथी रहेजो हवे सावधान, राजडुर्बल होय कान रे ॥ पि० ॥ खलसगति थई रायनें चूनी, एह वात नहीं कूडी रे ॥ पि०॥२३॥ सरस्वती स्त्री तेणें तुम चित्त खेले, नरनें दूरें मेहेले रे ॥ पि० ॥ कुमर कहे स्त्रीनें एम वयणा, तुमें मुज छो जेम नयणा रे ॥ पि० ॥ २४ ॥ नारीनें एम आनद पमाडी, वचनयुक्ति कही जाडी रे ॥ पि० ॥ पतिव्रता जे भामिनी होय, जर्त्ता सम नहीं कोय रे ॥ पि०॥ २५॥ छठे खर्मे त्रीजी ढाल, सुणतां मगलमाल रे ॥ पि० ॥ पद्मविजय कहे आगल देखो, डुर्जन स ज्ञान विशेषो रे ॥ पि० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ए८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवतो सिंह होयें यदि, तो लावो ततकाल ॥ मोकले एम कही मानवी, श्रीजयानद सनाल ॥ १ ॥ जाय्या तास खेतो थको, ओषधि जल तव आण ॥ सज्ज कियो छांटी छजपरें, उत्तम नर एम जाण ॥ २ ॥ य त ॥ उपकारिणि वीतमत्सरे वा, सदयत्व यदि तत्र कोऽतिरेक ॥ अहिते सहसापराधलुब्धे, सदय यस्य मन सतां स धुर्य ॥ १ ॥ दोहा ॥ मरण आवे क्षण क्षण मनें, मूकावे ए मुज्ज ॥ एहथी शी आपद अधिक, सिंह विचारे सुज्ज ॥ ३ ॥ धातायें आपद धरी, अन्यस्थानक अण पाम ॥ पुण्य रहित मुज उपरें, मानुं मूकावी माम ॥ ४ ॥ दूबली वाडें देखीयें, अथवा छिद्र अनेक ॥ अथवा काम एणें कर्युं, अंधारे अविवेक ॥ ५ ॥ एहज अर्थे एणें कर्यो, बहु सत्कार बनाव ॥ जाण्यो धूर्त में आजथी, जेणें कर्यो एह जमाव ॥ ६ ॥ उपकारनें लहे अपक्रिया, तेह नीच तेणि वार ॥ सूर्य किरण जास्वर घणु,तम लहे घूक तेवार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रह्यो रे आवास डूवार ॥ ए देशी ॥

॥ जीवाडी सिंहनें सूता कुमार,निर्जय थइनें सिंहपरें तदाजी ॥सूतो न बीहे मृगथी रे सिंह,पण तस पत्नी शंक धरे सदाजी ॥१ ॥ सुजटोनें कहे तुमें थाउ सावधान, जालवो पोल प्राकार जली परेंजी ॥ रायनें जइ कहे कोइक वात, सिंह मार्यो कोइ वैरीयें एणी परेंजी ॥ २ ॥ राजा रे

॥ हारे माहारे महापराक्रमी वासुदेव सम कोय जो, कुलतो गुण ल क्षणनें नाग्यथी जाणीयो रे लो ॥ हां० ॥ एहने मस्तक थई कुसुमनी वृ ष्टि जो, कुलदेवीयें घोष करी जे वखाणीयो रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ ए सवि वीसरियुं केम राजन तुम जो, अविवेकें असमजस करवा मांमियुं रे लो ॥ हां० ॥ नरमां तुमें नृप तेम गुणमांहे विवेक जो, दोषमां तेम अविवेक ए, माहापण छांमियुं रेलो ॥ २ ॥ यदुक्तं ॥ सगुणमपगुण वा कुर्वता का र्यजातं परिणतिरवधार्या, यत्नत पंमितेन ॥ अतिरजसकृतानां, कर्मणा माविपत्ते, र्नवति हृदयदाही शल्यतुल्योविपाक ॥ १ ॥ तथा ॥ सहसा विदधीत न क्रिया,मविवेक परमापदां पदम् ॥ वृणुते हि विमृश्यकारिण,गु णलुब्धा स्वयमेव सपद ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ हां० ॥ लीलायें क्रीडा कर तो वेगे तेह जो,एणि परें तुमें तो उद्यम मांमयो छे वृथा रे लो ॥हां० ॥ लीलायें तुम बल नगवे जास सुनट जो, नाग्य परीक्षा कीजें एणी रीतें यथा रेलो ॥ ३ ॥ हां० ॥ तुम सेनाशुं डुर्जय जाणो एह जो, यूथ सहि त करी सिंहने जीते केणी परें रेलो ॥ हां०॥ कुमर ससैन्य सग्राममें जीत्या एण जो, तेम सेनापतिने पण ए विलखो करे रेलो ॥ ४ ॥ हां० ॥ एह दया जो न करे तेणें काल जो, जीवतो कोण रहे एह वात विचारीयें रे लो ॥ हां०॥ राज्यधणी कहो तुमें पण केणीपरें होत जो, कुमर विटक्षणा थइ ते सवि सत्तारीयें रेलो ॥ ५ ॥ हां० ॥ बिरुदावली बंदी बोल्यो के णी रीत जो, कोटि अनेक सुनटशुं पद्मरथ जे हतो रे लो ॥ हां० ॥ जी त्यो वामण रूपें एकण पिंम जो, तेहशु रण करीने कोण जगमां जीततो रें लो ॥ ६ ॥ हां०॥ सैन्यनें मारशे क्रोध चढयो जब एह जो,निंदा पामशो सकल नृपमांहे तुमें रे लो ॥ हां० ॥ जीववु दोहिलुं तेणें तुम अ मनें खेम जो,वांछो तो तजो एह अकारय कहु अमें रे लो ॥ ॥ ७ ॥ हां० तुमनें हणतां अमें जीवाशे केम जो, सांनली सचिवनी वाणी निहिनो मनमां घणु रे लो ॥ हां०॥ सिंहनी वात ते कूडी हृदयमां धारि जो, बोले रे तव नरपति वयण सोहामणु रे लो ॥ ॥ ८ ॥ हां० ॥ तुमें प्रत्युत्त का सुकर्तुं नांख्यु वयण जो, पण ते पापीयें माहारो स्नेह उतारीयो रे लो ॥हां०॥ मनडु माहारु न मले एहशु कोय जो,चली तुमें जाता मुजनें एणी परें वारियो रे लो ॥ ए ॥ हां० ॥ जइनें पूछो सम्यग् कुल अवदात जो,

दिर सन्मुख ताम, जाता रे वेगे सचिवादिक सहुजी ॥ काल आवे जब मो धानें ताम, जाय रे वाघरीवाडे ते वहुजी ॥ १७ ॥ आवीने प्रणमे नृपना पाय, वीनवे कर जोडी एम रायनेजी ॥ सैन्यशुं चाल्या कोण अरि काज, कोनें रे मारशो एणी परें धायनेंजी ॥ १८ ॥ रायें रे जांख्युं सवि विरतं त,सिंहें जे नांख्युं सघलुं ते सुणीजी ॥ जांखे रे सचिव ते खलनी रे वा णि, सांजली अवगुणो केम न तुम गुणीजी ॥१९॥ कारण विण खल श त्रु कहाय, धरतो रे मत्सर परगुण देखीनेंजी ॥ कांटा रे साहामो जाये कं ट, फल फूलें पूरी वाडी उवेखीनेंजी ॥२०॥ यत ॥ खलोमृगयते दोषान्, गुणपूर्णोपि वस्तुन ॥ वने पुष्पफलाकीर्णे, करज कटकानिव ॥ १ ॥ पू र्वं ढाल ॥ पापी रे खल पण तेहथी अधिक,खलनी जे वात सुणो कानें क रीजी ॥ खलनी रे पूठ पूरे तेह जीव, मानु रे दुर्गति जातां मन धरीजी ॥ २१ ॥ महोटा ते विरुद्ध न सांजले कान,आपें उपानकें मुख जांजे तदा जी ॥ कटक सरिखा खलनें रे जाणी,आदर न दीये सत खलनें सदाजी ॥ ॥ २२॥ यत ॥ कटकानां खलानां च,सदृश्येव प्रतिक्रिया ॥ उपानन्मुखभं गोवा, दूरतोवा विसर्जन ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सांजले सज्जन खलनी न वात, जो कदी सांजले पण चित्त नवि धरेजी॥ कुजनी परें नवि वासे क सार, जोजो रे सद्भुये जुजगतणे गरेंजी ॥ २३ ॥ ठठे रे खंमें चोथी ढाल, नांखी रे पद्मविजय सोदामणीजी ॥ श्रीजयानदना रासमां सार, सज्जन गुण अगीकरो ए सुणीजी ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ १२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेजोमयी पूजित जनें, पण मले लोह प्रसग ॥ अग्नि कूटाये आफ णी,ए खल सग एकत ॥ १ ॥ खलसगें आपद खरी, पामे महोटा प्राय ॥ कांकरी घट छिद्रित करे, जल नें शोजा जाय ॥ २ ॥ तुंब ते जलमां जाय त लें, मध्यम मृत्तिका सग ॥ तेणें नवि सांजलवुं तुमें, वयण जे खलनुं व्यं ग ॥ ३ ॥ असनाव्य नवि आखियें, जोइयें युक्तायुक्त ॥ वारु कुल वध्य चोरनुं, संजालो वली सूक्त ॥४॥ यत ॥ खल सत्क्रियमाणोपि,ददाति कलहं सतां॥ दुग्धधौतोपि किं याति,वायस कलहंसतां ॥ १ ॥दोहा॥ गिरुठने गुणव त ए,जामाता एह जाण ॥ दुष्ट कुल तस दाखिवुं,पण केम थाय प्रमाण ॥५॥ ॥ ढाल पांचमी ॥ हांरे मारे जोबनीयानो लटको दाहाडा चार जो ॥ए देशी॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सैन्य तणो तुमें, अकस्मात् आरंज ॥ रण करवानें रीजथी, आव्या एह अचन ॥ १ ॥ सिद्धवात सवि सामटी,मूलथकी मम्हाण ॥ कही ते सांजली कुमरियो, बोली बुद्धिनी खाण ॥ २ ॥ सकल शौर्य सपन्न ए, धैर्यादिक गुण धार ॥ लक्षणें चक्री ए लख्यो, सवि सज्जन शिरदार ॥ ॥ ३ ॥ नीचकुलें जो नर हुआ,कोण कहो कुलवंत ॥ मुर्खाईयें मरवा तणी, कहो कोण होंश करत ॥ ४ ॥ चिंतामणि सरिखो चतुर,परिगल पुण्यें पामी ॥ उपरागो करो आपणी, घहेलो दीसे निगाम ॥ ५ ॥ दुर्जन एह दुरात्मा, सिंह ते जाणो शियाल ॥ अमें तो पूर्वे उंलख्यो,जली परें जूपाल ॥ ६ ॥ वार वार अमें विनयथी, कह्युं विचित्र प्रकार ॥ पण सौजन्यपणा थकी, माने नहीं कुमार ॥ ७ ॥ कपटथकी एणे कुमरनें, रीजवीयो नरराय ॥ न त्यजे जोलो नाह ए,जेम शशि कलंक न जाय ॥ ८ ॥ तुमें पण मान्यो तेणें तुमें, आपद लह्या अपार ॥ जिहां कपोत वेसे जदा, शाखा सूके तिवार ॥ ए ॥ यत ॥ कपटी चित्त न दीजीयें,पेट पेशी बुध लेत ॥ पेली थाग बनायकें, पीठें गोथां देत ॥ १ ॥ काज विचारी कीजीयें, जेम नोल वर दृष्टांत ॥ शुद्धसगम ऋतु नेहनृप, जट तिय श्वानप्रधान ॥ कटत जटत व यत मदत,फिर पीछें पछतान ॥ २ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ हरणी जव चरे लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी कुमरी कहे लालनां ॥ सांजलो तात वयण अवधार ॥ ए वर वारू रे लालनां ॥ हुओ जो निज पर कुशलनें लालनां ॥ ल० ॥ तो रीजवो ए कुमार ॥ ए० ॥ १ ॥ अमें हित कहीयें तुम तणे ला० ॥ ल० ॥ कटु पण मानो वाण ॥ ए० ॥ रोग शमाववा कारणें ला० ॥ ल० ॥ कटु औषध करे आण ॥ ए० ॥ २ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ला० ॥ ल० ॥ आमवर कह्यो एह ॥ ए० ॥ मूकतां लाज आवे घणी ला० ॥ ल० ॥ मान नडे बहु देह ॥ ए० ॥ ३ ॥ तात जक्ति तुम चित्त होये ला० ॥ ल० ॥ तो पति कुल निरधार ॥ ए० ॥ पूछीनें मुजनें कहो ला० ॥ ल० ॥ तो थाय जयजय कार ॥ ए० ॥ ४ ॥ तात वचन मानी करी ला० ॥ ल० ॥ विनय जक्ति धरी स्नेह ॥ ए० ॥ पूछे कुल तव ते कहे ला० ॥ ल० ॥ केदेशे सिंह ते एह ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ नारी कहे सुणो स्वामीजी ला० ॥ ल० ॥ एणें कह्यो सर्वे उपाधि

जेम मन निर्मल थाय विघन दूरें टले रे लो ॥हां०॥ सचिव कहे केम उत्तम भाखे नाम जो,तो केम कुल कहेशे भली शूर घणो बलें रे लो॥१०॥ हां० ॥ तो पण तुम आणायें जाशुं तह जो, कहेशे तो आवी तुमनें ज खशु रे लो ॥ हां० ॥ प्रणमी नृप गया कुमरनी पास प्रणाम जो, करी नें कहे तुम उत्तरें अमृत चाखशुं रे लो ॥ ११ ॥ हां० ॥ तुमें शत्रुनें वि ह्या देवा शूर जो, गुरुजनना भक्ता नतवत्सल छो सदा रे लो ॥ हां० ॥ जगम कल्पवृक्ष सम तुम जो जोप जो,अर्थीने देतां तुमें नवि थाको कदा रे लो ॥ १२ ॥ हां० ॥ निजकुल भाखो प्रार्थना न करो लोप जो, दुष्ट पापी कोइयें नृपनें भरमावियो रे लो ॥हां०॥ तुम वयणे करी सहुना सशय जाय जो, अमें तुम पूछु जे नूपें फरमावियो रे लो ॥ १३ ॥ हां० ॥ कु मर कहे सुणो न करु प्रार्थना भग जो,मुज कुल मुज कर भाखशे समार्मे करी रे लो ॥ हां० ॥ उत्तम नर ते फलथी दाखवे वश जो,पण नवि भाखे कोइ काले कर्ठे धरी रे लो ॥ १४ ॥ हां० ॥ वैरी केरो थाशे तिहां वि नाश जो, तुम सरिखा सज्जन ते वृद्धिपणु लहे रे लो ॥ हां० ॥ सज्जन थइनें सैन्य सहित नूपाल जो, आवो तुमें जेम मुज भुजा मुज कुल कहे रे लो ॥ १५ ॥ हां० ॥ सांभली प्रणमी नूपनी पासें आय जो, सकलाव्युं ते सुणीनें नृप मन खेदियो रे लो ॥ हां० ॥ आम्बर करी आव्यो केम जवाय जो, युद्धे पण नवि सिद्धि एम मन वेदीयो रे लो ॥ १६ ॥ हां० ॥ थयो उजयथी भ्रष्ट कहो गति कोण जो, एम चिंतातुर देखी सचिव ते बोलीया रे लो ॥हां०॥ इह समाणो समार्मे अति शूर जो,कुल केम प्राणे भाखे जग तृण तोलीया रे लो ॥१७॥हां०॥ कुल पूछे शुं गुणथी सर्व जणाय जो,रत्नाकरथी उपन्यो मणि तेजें कहे रे लो ॥हां०॥ जो तुम आणा होय तो मीठे वयण जो, दीर्घ रोष टाल्यु जेम प्रसन्नपणु लहे रे लो ॥ १८ ॥ हां० ॥ लावु कुमरनें स्वामी तुमचे पास जो, इण अवसर तिहां कुमर आण लही करी रे लो ॥ हां० ॥ आवी पुत्री त्रणे राय हजूर जो, प्रणमी पाव पिताना सभ्रम बहु धरी रे लो ॥ १९ ॥ हां० ॥ कुमरी कहे हवे तात नें निपुण वचन्न जो, ते कहेवाये आगल सुणजो रंगथी रे लो ॥ हां० ॥ छट्ठे खंडें पांचमी ढाल रसाल जो, पद्मविजय कही श्रीगुरु उत्तमसंगथी रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सैन्य तणो तुमें, अकस्मात् आरंन ॥ रण करवानें रीजथी, आव्या एह अचन्न ॥ १ ॥ सिहवात सवि सामटी,मूलथकी महाण ॥ कही ते सांनली कुमरियो, बोली बुद्धिनी खाण ॥ २ ॥ सकल शौर्य संपन्न ए, धैर्यादिक गुण धार ॥ लक्षणें चक्री ए लख्यो, सवि सज्जन शिरदार ॥ ॥ ३ ॥ नीचकुलें जो नर हुस्या,कोण कहो कुलवंत ॥ मुखाइयें मरवा तणी, कहो कोण होंश करंत ॥ ४ ॥ चिंतामणि सरिखो चतुर,परिगल पुल्यें पामी ॥ अपरागे करो आपणी, घहेलो दीसे निगाम ॥ ५ ॥ डुर्जन एह डुरात्मा, सिह ते जाणो शियाल ॥ अमें तो पूर्वें उंलख्यो,नली परें नूपाल ॥ ६ ॥ वार वार अमें विनयथी, कयुं विचित्र प्रकार ॥ पण सौजन्यपणा थकी, माने नहीं कुमार ॥ ७ ॥ कपटथकी एणे कुमरनें, रीजवीयो नरराय ॥ न त्यजे नोलो नाह ए,जेम शशि कलंक न जाय ॥ ८ ॥ तुमें पण मान्यो तेणें तुमें, आपद लह्या अपार ॥ जिहां कपोत वेसे जदा, शाखा सूके तिवार ॥ ९ ॥ यत ॥ कपटी चित्त न दीजीयें,पेट पेशी बुध लेत ॥ पेली थाग वनायकें, पीछें गोथा देत ॥ १ ॥ काज विचारी कीजीयें, जेम नोल वर दृष्टांत ॥ शुद्धसगम रुतु नेहनृप, नट तिय श्वानप्रधान ॥ कटत जटत अ अत महत,फिर पीछें पछतान ॥ २ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ हरणी जव घरे लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी कुमरी कहे लालनां ॥ लजां हो तात वयण अवधार ॥ ए वर वारू रे लालनां ॥ इछो जो निज पर कुशलनें लालनां ॥ ल० ॥ तो रीजवो ए कुमार ॥ ए० ॥ १ ॥ अमें हित कहीयें तुम तणे ला० ॥ ल० ॥ कटु पण मानो वाण ॥ ए० ॥ रोग शमाववा कारणें ला० ॥ ल० ॥ कटु ओषध करे आण ॥ ए० ॥ २ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ला० ॥ ल० ॥ आमवर कह्यो एह ॥ ए० ॥ मूकतां लाज आवे घणी ला० ॥ ल० ॥ मान नडे बहु देह ॥ ए० ॥ ३ ॥ तात नक्ति तुम चित्त होये ला० ॥ ल० ॥ तो पति कुल निरधार ॥ ए० ॥ पूछीनें मुजनें कहो ला० ॥ ल० ॥ तो थाय जयजयकार ॥ ए० ॥ ४ ॥ तात वचन मानी करी ला० ॥ ल० ॥ विनय नक्ति धरी स्नेह ॥ ए० ॥ पूछे कुल तव ते कहे ला० ॥ ल० ॥ केदेशे सिह ते एह ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ नारी कहे सुणो स्वामीजी ला० ॥ ल० ॥ एणें कह्यो सर्व उपाधि

॥ ए० ॥ पापी नाम छु वञ्चरो ला० ॥ ल० ॥ नामें होये माहा ख्वारि ॥ ॥ ए० ॥ ६ ॥ तातनी वात सवे कही ला० ॥ ल० ॥ सुणी कहे ताम कुमार ॥ ए० ॥ छु एहवो ए खल श्रठे ला० ॥ल० ॥ में तो कर्यो सत्कार ॥ए० ॥ ७ ॥ ए केम एहवु श्राचरे ॥ ला० ॥ ल० ॥ त्यजवो दूरथी तेह ॥ए० एम चिंती कहे नारीनें ॥ ला० ॥ ल० ॥ सांजलो कहु ते जेह ॥ए० ॥ ८ श्रोपधी ल्यो ए मुजथकी ला० ॥ल० ॥ पूतली शिर श्रारोप ॥ ए० ॥ जे मन माने ते पूढियें ला० ॥ ल० ॥ ते नवि करशे लोप ॥ ए० ॥ ए ॥ श्रतीत श्रनागत सहु कहे ला०॥ल०॥साजली श्रचरिज थाय ॥ए०॥ श्रोषधी दे तातनें ला० ॥ ल० ॥ पासे श्रावी सुखसाय ॥ ए० ॥ १० ॥ सर्व सजा जोतां थकां ला० ॥ ल० ॥ शिर श्रोपधि ठवी ताम ॥ ए०॥ पूछे पूतलीनें हवे ला० ॥ ल० ॥ कुमरनु कुल नाम ठाम ॥ ए०॥ ११ ॥ मानुषिणीनी परें कहे ला० ॥ ल० ॥ विजयपुराधिप राय ॥ए०॥ विजय राय सुत सुरुरु ला० ॥ ल० ॥ श्रीजयानंद कहाय ॥ ए० ॥ १२॥ वर क्षत्री कुल उपन्यो ला० ॥ल० ॥ गुणनिधि महिमा निधान ॥ ए० ॥ सांजली हरख्या सहु जना ला० ॥ ल० ॥ चमक्यो सुणी राजान ॥ ए० ॥ १३ ॥ मंगलवाजां वाजीयां ला० ॥ ल० ॥ जय जय जणे नर नार ॥ ए० ॥ मान मूकी नरपति हवे ला० ॥ ल० ॥ श्राम खमावे कुमार ॥ ए० ॥ १४ ॥ निजपुत्रीनें खमावतो ला० ॥ ल० ॥ निज श्रपराध नूपाल ॥ ए० ॥ सहु निज निज थानक गया ला० ॥ ल० ॥ एकदिन सजा विचाल ॥ ए० ॥ १५ ॥ पूछे मंत्रीनें नरपति ला० ॥ ल० ॥ कहो छुं ए इंद्रजाल ॥ ए० ॥ पूतली बोली नवि सुणी ला० ॥ ल० ॥ ए श्रचरिज असराल ॥ ए० ॥ १६ ॥ मंत्री कहे ए कुमरना ला० ॥ ल० ॥ नाग्यथी श्रोषधि पाम ॥ ए० ॥ देव पेसे ते बलथकी ला० ॥ ल०॥ पूतली बोले श्राम ॥ ए० ॥१७॥ तो पण जो संशय होये ला० ॥ ल० ॥ तो शतबुद्धि प्रधान ॥ ए० ॥ बुद्धिचंद्र सुत तेहनो ला० ॥ल० ॥ द्विज बुद्धि श्रसमान ॥ ए० ॥ १८॥ ज्योतिष प्रमुख जाणे घणुं ला० ॥ ल० ॥ निपुण नें तुम जक्तिवंत ॥ ए० ॥ विजयपुरें तस मोकली ला० ॥ ल० ॥ निर्णय कीजें महंत ॥ ए० ॥ १ए ॥ सांजली नृप हर्षित थयो ला० ॥ ल० ॥ शीखवी मोकल्यो तास ॥ ए० ॥ नवमे दिन फरी श्रावबु ला० ॥ ल० ॥ करिय प्रतिज्ञा खास ॥ ए० ॥ २० ॥ सात पुरुषद्दं

पालीयो ला० ॥ ल० ॥ करने बेशा वेगवत ॥ ए० ॥ शो योजन उपर रह्यु ला० ॥ ल०॥ विजयपुरें पोहोचत ॥ ए० ॥ २१ ॥ वेष निमित्तियानो करी ला० ॥ ल० ॥ पुस्तक राखी पास ॥ ए० ॥ प्रतिहार राय आणायकी ला० ॥ ल० ॥ पेसवा दीधो तास ॥ए०॥ २२ ॥ छठी छठा खंमर्मां ला०॥ ल० ॥ पद्मविजय कही ढाल ॥ ए० ॥ निमित्तियो विस्मय लह्यो ला० ॥ ल० ॥ देखी सजा विशाल ॥ए०॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सौधर्मी सरिखी सजा, स्फटिक जीत अति फार ॥ रत्नधरा रत्नीयाम णी, मनगमती मनोहार ॥ १ ॥ बेगा बांधव वेहु तिहां, सेनानी सामत ॥ शेठ मत्रीश्वर सामटा, मलीया बहु माहत ॥ २ ॥ सोहे मणि सिंहासणे, पायक सेवे पाय ॥ इन्द्र समा अवनीपति, सुर जेम सर्व सखाय ॥३ ॥ आयु धनें अलकारशुं, अगरक्क अनिराम ॥ ऊर्ध्वे आयुधथी वयमी, करे रक्षा नृप काम ॥ ४ ॥ सौधर्मेनें ईशान सम, चामर ढलके चार ॥ नाना देशथी नवनवां, प्राभृत आवे अपार ॥ ५ ॥ छत्र शिरें छाजे घणु, राय तथा युव राय ॥ जयने विजयशु जोडलुं, शशि सूरय समजाय ॥ ६ ॥ आशीर्वाद देई इश्यो,सर्वज्ञ आपो सिद्धि ॥ नव ग्रह सुख द्यो नवनवां,वली विशेषें वृ द्धि ॥ ७ ॥ यत ॥ सर्वज्ञ शिवमातनोतु सविता, चारोग्यमिन्दु श्रियं ॥ नौम शत्रुजय बुधश्चविशद बोध धियं गी पति ॥ सौजाग्यं नृगुज शनिश्चवि छुतां,राहु प्रतापंश्च यं,केतु कीर्त्तितती सुखानि च गुरुस्तुभ्य सदा नूपते ॥१॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्रथम जिनेसर पूजवा ॥ ए देशी ॥

॥ नूसज्ञार्ये आपतो ॥ साजन महारा ॥ वेसवा आसन ताम हो ॥ वेगो निज परिवारशु ॥सा०॥ पूछे तव धरा स्वामि हो ॥१॥ जलें जलें आया तुमें, अम मन जाया तुमें, पंमित राया तुमें प्रीछियें ॥ साजन माहारा जांजो अम्ह संदेह हो ॥ ए आंकणी ॥ किहांना वासी किहांथी आवीया ॥ सा०॥ जावु किहां कहो तेह हो ॥ शु शुं जाणो शास्त्रथी ॥ सा० ॥ अम मन पूछवु ए ह हो ॥ज०॥२॥ विप्र कहे सुणो राजीया ॥सा०॥ वसियें सुरंगपुर गाम हो ॥ देश जोतां आव्या इहां ॥ सा० ॥ निरखवा तुमचुं गाम हो ॥ ज० ॥३॥ नयन कृतारथ अम थयां ॥ सा० ॥ दीगे तुम देदार हो ॥ जाणु अष्टांग निमित्त वलें ॥ सा० ॥ त्रण काल सुविचार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ फल मूकी

तस श्रागलें ॥सा०॥ श्रतिशय करी बहुमान हो ॥ वे प्रण प्रश्न पूछी करी ॥ सा० ॥ पूछे ते तत्त्वविज्ञान हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ देहमात्रथी जिन्न हुं ॥ ॥ सा० ॥ दोय श्रमें सुत दोय हो ॥ सिद्धसार छे प्रथमनें ॥ सा० ॥ श्रीज यानद बीजो होय हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ पहेलो श्रन्यायकारी घणो ॥ सा० ॥ काढी मूक्यो श्रमें वास हो ॥ डुर्गंध मल श्रगें उपज्यो ॥ सा०॥ केम नवि ब जीयें तास हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ बीजो निमित्तिये जांखीयो ॥ सा० ॥ राज्य योग्य गुणवत हो ॥ सहु जननें घणु वालहो ॥ सा० ॥ ॥ जीवथी श्रधि क कहत हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ कल्पवृक्ष श्रकूर ज्यु ॥ सा० ॥ राखीयें बत्न श्रपार हो ॥ पण कूड कपटथी जाइनें ॥ सा० ॥ लेई गयो सिद्धसार हो ॥ ॥ ज० ॥ ए॥ ते पण सरल हृदयथकी ॥ सा० ॥ वगर कहे तेह साथ हो ॥ चाल्यो खोल करी घणी ॥ सा० ॥ पण श्राव्यो नवि हाथ हो ॥ ज० ॥ ॥१०॥ विशालपुरें तेह सांजल्या ॥ सा० ॥ करता कला श्रन्यास हो ॥ श्रबे ल्या श्रमें सहजथी ॥सा०॥ तिहांथी गया कोइ वास हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ खबर न लाधी तेहनी ॥ सा० ॥ काम नहीं सिद्धसार हो ॥ श्रीजयानद जडघो नही ॥ सा० ॥ जेम समुडें रत्नसार हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ तेणें श्रमें डुखीया बहु श्रछु ॥ सा० ॥ निमित्त प्रमुख जोइ-जाण हो ॥ मिलन श्रा शायें जीवियें ॥ सा० ॥ स्वास मात्र धरु प्राण हो ॥ज०॥१३ ॥ निमित्त श कुनने स्वपननी ॥सा०॥ श्रग फुरण वली जेह हो ॥ देव उपासनथी कहो ॥ सा० ॥ क्षेम प्रमुख होये तेह हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ श्राव्यो नही घर ए व ली ॥सा०॥ शुद्धि मात्र नवि लब्ध हो ॥ श्रावे तो राज्य थापी श्रमें ॥सा०॥ तपोवन दृष्टिबद्ध हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ सायें नीकलवा कारणें ॥ सा० ॥ राज्य लीये नवि जाय हो ॥ तप वय जाप श्रमारडु ॥ सा० ॥ तेणें श्रम मन खेदाय हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ हय गय रथ गयां वाहुडे ॥ सा० ॥ द्रव्य कुटुब परिवार हो ॥ पण नरजव नवि बाहुडे ॥सा०॥ तेणें विनति श्रवधा र हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ जीवे छे के नही ते कहो ॥सा०॥ किहां छे ते मल शे केम हो ॥ मलशे केवारें ते कहो ॥सा०॥ श्राणी श्रम पर प्रेम हो ॥ ॥ज०॥१८॥ एम कही पुत्र वियोगथी ॥सा०॥ रुदन करे नरराय हो ॥ दग्ध पत्तर जलयोगथी ॥ सा० ॥ जेणी परें धूम वमाय हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ चहबुद्धि श्राम्बर करी ॥सा०॥ मांमी लगन धरी ध्यान हो ॥ कहे नृपने

खेद कां करो ॥ सा० ॥ पुत्रवियोग चित्त आण हो ॥ न० ॥ २० ॥ पुत्र सुखी छे तुम तणो ॥सा० ॥ नांखुं लगन विन्नाण हो ॥ चोथाना स्वामीना योगथी ॥ सा० ॥ सुख पामे अप्रमाण हो ॥न०॥२१ ॥ दशमपतिनी दृष्टि छे ॥सा०॥ नोगवे राज्य महंत हो ॥ वली तेम सप्तम पति देखे ॥सा०॥ तेम त्रण ग्रह देखत हो ॥न०॥२२॥ नरपति पुत्री त्रणनो ॥ सा० ॥ ए जोगें नरतार हो ॥ सांनली नृप आणंदियो ॥ सा० ॥ पूछे वलीय विचार हो ॥ न० ॥ २३ ॥ कहो किहां छे तव निमित्तियो ॥ सा० ॥ मेषादिक गणी राशि हो ॥ होठ फरकावी बोलीयो ॥सा० ॥ लखमीपुर वसे वास हो ॥ ॥ न०॥२४ ॥ पूतलीनें नृप वयण ते ॥सा०॥ मलियो एकाकार हो ॥ वर्ण सस्थाननें वय कहे ॥ सा० ॥ सांनली हर्ष अपार हो ॥ न० ॥ २५ ॥ हो य नाई तव वरसता ॥ सा० ॥ कनकमणि अलंकार हो ॥ वस्त्र तथा फल फूलनी ॥सा० ॥ वृष्टि करी श्रीकार हो ॥ न० ॥ २६ ॥छठे खमें सातमी ॥ ॥ सा० ॥ श्रीजयानदनें रास हो ॥ पद्मविजयें कही ढाल ए ॥सा०॥ सुण तां लील विलास हो ॥ न० ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विसर्ज्यो रीतिशुं, चडबुद्धि चल्यो जाय ॥ महीपतिनी ते मार्गमां, श्लाघा करे समवाय ॥ १ ॥ अहो उदारता एहनी, अहो अमह नाग्य अ मान ॥ अद्भुत वचन कला इसी, दाखवी जेणें लधुं दान ॥ २ ॥ लखमी पुरें लीलाथकी, श्रीपतिराय सकाश ॥ नवमे दिन आवी नमे, पूछे नृप तस पास ॥ ३ ॥ हर्षवत होंशें करी, वारू कह्यु वृत्तांत ॥ दानजिन्न जिन्न दाखवें, धनद परें धीवत ॥ ४ ॥ वाप तिस्या वेटा होये, एह वात खरी अत्र ॥ कुमर दानमांहे किरयु, चित्रकारी जे चरित्र ॥ ५ ॥ कहे हांसीथी केई जना, ए सघलो आरंन ॥ देतें चित्रबुद्धि हतो, एहमां नांहि अचंन ॥६॥

॥ ढाल आठमी ॥ साहेबजी श्रीसिद्धाचल नेटीयें हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबजी ॥ खेद आणद विस्मय घणो होजी,बहु रस मय थयुं चित्त साहेबजी ॥ साहेबजी ॥ नूपति नवि बोली शके होजी,एणे समे सुणो शुन रीत सा० ॥१ ॥सा०॥ पुण्यवत एम परखीयें होजी ॥ ए आंकणी ॥ सा०॥ श्रीजयानदनें तेडवा होजी, पुरुष आव्या परधान सा० ॥ सा० ॥ श्रीजय रायें मोकल्या होजी, ठना गोपुर थान सा० ॥ २ ॥ सा०॥ पुण्य०॥ सा०॥

एम पोलीये नृप वीनव्यो होजी, नृप कहे मोकल वेग सा०॥ सा०॥ मेत्री सहित ते आणिया होजी, वस्त्र आनरणे सतेग सा० ॥ ३॥ सा० ॥ पु०॥ सा० ॥ नृप नमी उचितासनें होजी, बेठा तव नरराय ॥ सा० ॥ सा०॥ क्षेम कुशल पूछे तदा होजी, प्रीति घणी परखाय सा०॥ ४ ॥ सा०॥ पु०॥ सा० ॥ ते नृपनें एम विनवे होजी, तुम मित्र नृप युवराय ॥ सा०॥ सा०॥ कुशली पुरजनशुं अछे होजी, वरते छे सुख साय सा० ॥ ५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ तेहुयें एम कहेवराविशुं होजी, सानलो स्नेह रसाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ श्रीजयानद अम जीव छे होजी, कल्पवृक्षनी माल सा०॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ पु०॥ सा० ॥ तुमें उन्नति एहनी करी होजी, निर्मितियानें वयण सा० ॥ सा० ॥ जाएयुं अमे जली रीतिशु होजी, तुमें अमचा खरा सयण सा० ॥ ७ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ चंद सूरय लगें थिर करी हो जी, अम्ह कुलशु तुम प्रीति सा०॥ सा०॥ मोकलो अम पासे हवे होजी, तो मानु दीघ जीवित सा० ॥ ८ ॥ सा० ॥पु० ॥ सा० ॥ अमें वियोगें त पाइया होजी, शीतल करो तुमें भ्रात सा० ॥ सा० ॥ नहीं उपकार वीसारीयें होजी, त्रीजा भ्रात अम ख्यात सा० ॥ ए ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ अम्ह सम काम कहेजो सदा होजी, सांनली कहे नूपाल सा० ॥ सा० ॥ तुम वच अमृत अभिनवु होजी, पीतां थांउ तृपाल सा० ॥ १० ॥सा०॥ ॥ पु० ॥ सा० ॥ तुमें कह्यु ते रूडु थशे होजी, रयण अमूलक सार सा० ॥ सा० ॥ नेटणु लेवे नरपति होजी, जे तेणें कीधु उवार सा० ॥ ११ ॥ ॥सा०॥पु०॥सा०॥ तास उतारो करावियो होजी,मोकल्या कुंअर पास ॥सा० ॥ सा० ॥ प्रतिहारें जणाव्युं सवे होजी, कुमरनें घरो उल्लास सा०॥१२॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ प्रणमे ते नर जेटले होजी, कुमर सनामां ताम सा० ॥ सा० ॥ उना थई मलिया सहु होजी, निन्न निन्न उलखी नाम सा० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ हर्ष तणा आंसु जरे होजी,आसनें बेशीने वात सा० ॥ सा० ॥ पितृ पितृभ्राता नणी होजी, पूछे कुशल सु खशात सा० ॥ १४ ॥ सा० ॥पु० ॥ सा० ॥ साते सुख छे तेहनें होजी, पण एक तुम वियोग सा० ॥ सा० ॥ ते पीडे नृपनें घणुं होजी, सनारे बहु लोग सा० ॥ १५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ जाणजो पत्रथकी सहु होजी, एम कही आपे लेख सा० ॥ सा० ॥ कुमर चढावी मस्तके होजी,

वांचे हर्ष विशेष सा० ॥ १६ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ स्वस्तिश्री नमी देवनें होजी, जे सर्वज्ञ महेश सा० ॥ सा० ॥ होशें विजय पाटणथकी होजो, श्रीजयनाम नरेश सा० ॥१७॥ सा०॥ पु० ॥ सा० ॥ श्रीविजयनाई सह लिख्यो होजी, लखमी पुरवर गाम सा० ॥सा० ॥ मदिर मालिये सोहतुं होजी, तिहां श्रीजयानद नाम सा० ॥ १८ ॥ सा० ॥ पु० ॥सा० ॥ तेह कुमरनें स्नेहथी होजी, हर्षे आलिंगन देय सा० ॥ सा० ॥ नाखुं खेम कुशल अबे होजी, तुम खेम कुशलनु ध्येय ॥ सा० ॥१९ ॥ सा०॥ पु० ॥सा०॥ समाचार एक प्रीठजो होजी, विगर जणावें अम सा० ॥ सा०॥ सिद्धसार साथें गया होजी, करवु न घटे तुम सा० ॥ २० ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ खलसग करवो नवि घटे होजी,सज्जननें डुखदाय सा० ॥ सा० ॥ राज्यनो जीवित तु अबे होजी, खेद घणो अम थाय सा० ॥ २१ ॥ सा०॥पु०॥ ॥ सा० ॥ सपदा तुं पाम्यो घणी होजी, अम सन्नारे न केम सा० ॥ सा० ॥ जगत्नो एह स्वनाव बे होजी, पण तुज न घटे एम सा० ॥ २२ ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ सा० ॥ महोटा मोहोटा लही होजी, अधिक पुष्टि करे तात सा०॥ ॥ सा० ॥ अधिक उदय लही चद्रमा होजी, समुद्र पुष्ट करे जात सा० ॥ ॥ २३ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ कष्टें दिवस अमें काढीयें होजी, तुज विरहो डुखदाय सा० ॥ सा० ॥ राज्यधुरा नवि वही शक्रु होजी, गलियो बलद जेम गाय सा० ॥ २४ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ सहाय करो आवी हवे होजी, जो होय अह्म परें नक्ति सा० ॥ सा० ॥ तो महा नृपनपरें तुमें होजी, देखाडो निज शक्ति सा० ॥ २५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ वांची पत्रनें आवजो होजी, पाणी पीजो अम देख सा० ॥ सा० ॥ ए लिख्यु सहस्स गुणु जाण जो होजी, श्रु घणु लखीयें विशेष सा० ॥ २६ ॥ सा०॥ पु०॥ ॥ सा० ॥ बहे खमें आठमी होजी, पद्मविजय कही ढाल सा० ॥ सा० ॥ श्रीजयानदना रासमां होजी,सुणतां मगलमाल सा०॥२७॥सा०॥पु०॥२५३॥

॥ दोहा ॥

॥ वांची पत्र विवेकथुं, चितवे चित्त मझार ॥ तातनें डुख देवा तणु, कारण थयो करार ॥ १ ॥ वारू अचेतन वृक्ष ते, पत्र पल्लव फलदाय ॥ पंथी रविकर तापिया,सघलानें सुखदाय ॥२॥ सपदा लही स्वपिता नणी, सुखकर न थयो सक्र ॥ डुख वियोगनु दाखिवु, रह्यो नहु निज रक्र ॥

॥ ३ ॥ जइ सुख करिये जोपणुं, एणी पेरें करी आलोच ॥ स्नान जोबन साथे करे,वर पुरुषाणु विकोच ॥४॥ वेत्रीयें वात सवे वदी,नरपतिनें निर्धार॥ राजा चिंते रागथी,किमहिक जागें कुमार ॥५॥ मुज नरें कह्यो ते सहु मलो, तेहे पितरियो तात ॥ रहेशे नहीं मुज राज्यनो, वृद्धि कारक विख्यात ॥६॥

॥ ढाल नवमी ॥ सासू पूछे रे वहुअर वात,माला किहां छे रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा चिंते स्वजनके वयरी,वाला महारा॥कोण जाणे यशे केहवो रे ॥ सोजागी प्रियदर्शन सुखकर, जगमां न जडे एहवो रे ॥ १ ॥ कहो केम करीयें रे, जेम तेम करीनें एह,समजावी धरीयें रे॥ ए आंकणी॥ चिंतामणि मुज हाथें चढीयो, वा० ॥ म मूर्खें ते हाखो रे ॥ अज्ञानें अमृत ढोलीनें, प्रतिकूल कखो न विचाखो रे॥ क० ॥ २ ॥ महाप्रनावी विश्वमां नूषण,वा० ॥ पुरुष रतन नवि जाण्यो रे ॥ पूतली जेह अचेतन ते पण, स्तवती मन नवि आण्यो रे ॥ क०॥३॥ पुत्री विधवा आपद न गणी, वा०॥ राज्यविरोध अनेक रे ॥ पुरुष चिंतामणि हाणी में न गणी, सघलो गयो विवेक रे॥ क० ॥ ४ ॥ एम चिंतवतां हृदय सघट्यी, वा० ॥ मूर्छा पाम्यो राय रे ॥ पडियो पृथिवीयें सिंहासनथी, मंत्री प्रमुख अकुलाय रे॥ क०॥ ॥ ५ ॥ शीतल उपचारें थयो साजो, वा० ॥ पूछे सहुअं एह रे ॥ नरपति निज कुकर्म ते निंदे, परपदमां कहे तेह रे॥ क०॥ ६ ॥ सुणो सहु क्रूर ई कुकर्म करतां, वा० ॥ अविवेकी अज्ञान रे ॥ कृतघ्नी मुज सरिखो नहीं जग मां, ए सम नहीं परधान रे ॥क० ॥ ७ ॥ मुज अपराधीनी नहीं शुद्धि, वा० ॥ मरण विना कोइ रीतें रे ॥ खड्ग काढीनें मरण करेवा, वा०॥ मूके निज गले नीतें रे ॥ क० ॥ ८ ॥ सचिवें फूटावी खड्ग ते लीधुं,वा० ॥ शत बुद्धि तव बोले रे ॥ छुं असमंजस राजन मांड्यु, कोइ नहीं तुम तोलें रे॥ क० ॥ ए ॥ न्यायी धर्म उन्नति तुमें करता, वा० ॥ विश्वतणो आधार रे ॥ जोलाशे मरवा केम इछो, कर्म तणा सहु प्रकार रे॥ १० ॥ यत ॥ कस्य भ्राम्यति नो बुद्धि ,कर्मणा को न खंमित ॥ नामुचत् भ्रातरं हंतु, चक्रं किं नरताधिप ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ शास्त्र जाण पण करमें मुजे, वा०॥ निंदा प्रशंसा थाय रे॥ पापनी शुद्धि मरणें न होये, तपथी कर्म सवि जाय रे॥ क०॥ ११ ॥ आत्मप्रदेशें कर्म रह्युं छे, वा० ॥ मरण शरीर विनाश रे॥ पाप टालो प्रायश्चित्त आदरी, जाई गुरुनें पास रे॥ क० १२ ॥ जीवतां ए

सवि वात निपजाये, वा० ॥ तेथें चिरजीवो स्वामी रे ॥ एम कह्यु पण नाना विकल्प, न करे नोजन पामी रे ॥ क० ॥१३॥ ते सानलीनें पुत्रीयो आवी, वा० ॥ प्रणमी एणी परें नासे रे ॥ न घटे तात ए तुमनें करवु,दोष नहीं तुम पासें रे ॥ क० ॥१४॥ ए कारय सवि खलसगतिनु, वा०॥ नित्य वहे गिरिमा पाणी रे ॥ कठिन हतो पण खाडा पाडे,ए केम वात न जाणी रे ॥ क० ॥ १५ ॥ नीचुं वदन करी कहे राजा वा० ॥ दूर रहीनें बोलो रे ॥ मुख न देखाडी शकीयें तुमनें,केम मुजनें तुमें जीलो रे ॥क० ॥१६॥ में तुम विधवापणुं उवेखी, वा० ॥ काम कर्युं में नूंडु रे ॥ तुमनें जमाइनें मुखथी देखाडु, कहो में कह्यु छुं रूडुं रे ॥क०॥ १७ ॥ कुमरी कहे स्यो खेद करो हो, वा०॥ तुमें धन खरची अमनें रे ॥ कला नणावी निपुण करी घणु, ए शोना सवि तमनें रे ॥ क० ॥ १८ ॥ अमची प्रतिज्ञानो जे सागर वा० ॥ विश्वोत्तम ए टाली रे ॥ कोण पूरत ए वातनो मनमां,हरख करो हो सनाली रे ॥ क० ॥ १ए॥ छोरु कछोरु होये पण मावित्र, वा० ॥ हीणां न होये क्यारें रे ॥ ते विपरीत करंतां नृप कहे, संतोष्यो सुप्रकारें रे ॥क०॥२०॥ पण लाजु हु जमाईथी अधिको, वा० ॥ सांनली गइ पति पासें रे ।। वात सुणावी मोकले पतिने,ते पण आवे उल्लासें रे ॥क०॥ २१ ॥ लज्जानम्र नूपतिनें प्रणमी वा०॥ कहे मुख एणी परें वाणी रे ॥ कन्या त्रणनें राज्य दीधु तुमें, सागर सम तुमें प्राणी रे ॥ क० ॥ २२ ॥ एक खलित खलना प्रेरणाथी, वा० ॥ विधिवशथी थयु एहवु रे ॥ भ्रांतिथकी कहो कोण न नूले,तो दुःख करवु केहेवु रे ॥क०॥ २३ ॥ पश्चात्तापें कर्म खपे वली,वा० ॥ जेम बाहुबली नरत रे ॥ घात उद्यम ते पश्चात्तापें, कर्म विलय थया तरत रे ॥क०॥२४ ॥ म करो खेद नें काम करो निज,वा०॥ स्वस्थ तुमें जब थाउ रे ॥ परजा स्वस्थ थाये तब सघली, एह विचार मत जाउ रे ॥क०॥ २५॥ एहवां वयण सुणी कहे नूपति, वा० ॥ तुम अमृत सम वाणी रे ॥ सांनली दुःखनो ताप गयो मुज, तुम सम को नहीं नाणी रे ॥ क० ॥ २६ ॥ नाग्यवंत तु हु अविवेकी, वा० ॥ जगमां जोडी न लाधे रे ॥ खलसंगति मूको तुमें कहु,ए अम हृदयमां बाधे रे ॥ क० ॥ २७॥ कुमरें मान्यु नृप प्रणमीनें, वा०॥ निजघर गया कुमार रे ॥ छठे खंमें नवमी ढालें, पद्मविजय कहे जयकार रे ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ २७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अशन करे अण इछतो,करे न राज्यनुं काम ॥ पाप बुद्धि करक थम, धारीनें रहयो धाम ॥ १ ॥ सिंह मारवा सुनटनें, आण करे अवनीश ॥ चोर परे खर चाढीनें, राखशो मां करी रीश ॥ २ ॥ तेमज करे ते तुरतमां, जाएयुं कुमरें जाम ॥ तव चिंते डुःख तातनें, उपजशे अभिराम ॥ ३ ॥ कही प्रधान मुखे कुमर, मूकावे महानाग ॥ प्रेरणा करे प्रधान तव, लही अवसरनो लाग ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥अम घर मांमव सीअलो ए ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर पूछे तव रायनें ए, राय कहे सुणो वात ॥ साहेब सुणो डुखकरु ए॥ प्राण अमारा लेइ चलो ए,तुम विण ते न रहात ॥सा०॥१॥ लह्या उद्वेग मुज पापथी रे, मानु न रहे मुज पास ॥ सा० ॥ कुमर कहे तव वीकथी रे, करवा नृप उल्लास ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमथी अधिक न तात छे ए, रहेछ सुख आवास ॥सा०॥ करिय प्रणाम घरें गयो रे, चिंतवे ज्ञान प्रकाश ॥ सा० ॥ ३ ॥ जाछु जो नृप उवेखीनें रे, तो करशे निजघात ॥ ॥सा०॥ राज्यनो इछक पण नथी ए, एम नजरें आयात ॥ सा० ॥ ४ ॥ जीवे मुज गुणवातथी ए, तेणें नवि मूकी जवाय ॥ सा०॥ सिंह अर्थी छे राज्यनो ए, तेणें ए करे छे उपाय ॥सा०॥५॥ तात पर्दे पुत्रज रहे ए, ए हमां कांइ न विचार ॥ सा० ॥ संतोषाशे खल वली ए, एम चिंतवी छुप्र कार ॥सा०॥ ६ ॥ सिंहनें कहे नाई सांजलो ए, तुमें जाउ निजधाम ॥ ॥ सा० ॥ राज्य पितानुं नोगवो ए, माहारे नहीं राज्यकाम ॥ सा० ॥७॥ हुतो रहेशुं तेणे इहां ए,एम करी मोकले तास ॥ सा० ॥ युक्ति करी सम जावीया ए, तेह प्रधाननें खास ॥सा०॥८॥ पत्र लखे निज तातनें ए, आपे प्रधाननें एह ॥ सा० ॥ सत्कारी विसर्जिया ए, सिंह सघातें तेह ॥सा० ॥ ॥ ए ॥ विजयपत्तन पोहोता वली ए, रायनें करे परणाम ॥ सा० ॥ हेतु नवि आव्या तणो ए, नांखे विस्तारें ताम ॥ सा० ॥ १० ॥श्रीपति आग्रह सवि कह्यो ए, कुमरनां वयण रसाल ॥सा० ॥ सिंहसारनें बोलावता ए, योग्य वयणें नूपाल ॥ सा०॥११ ॥ आपे प्रधान कागल प्रत्यें रे, वांचतां हर्ष न माय ॥सा०॥ स्वस्तिश्री जिनवर नमी ए, विजयपत्तन वर ठाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ पूज्य आराध्य काका प्रत्यें ए, तेम श्रीविजय निज तात

॥ सा० ॥ लखमीपुरवरथी लखे ए, श्रीजयानद तुम जात ॥सा०॥१३॥ प्रणमी साष्टांगें नक्तिथी ए, अंजलि करी शिर गाय ॥सा०॥ विधियें विनयथकी नमी ए, विनति करे वित्त लाय ॥सा०॥१४॥ पूज्य प्रसादें कुशल अछे ए, शुन चिंतन अनुनाव ॥सा०॥ पूज्यप्रसाद पत्र दीजीयें ए, जेम उल्लसे मुज नाव ॥ सा० ॥ १५ ॥ कार्य सुणो समाचारनुं ए,तापित तात वियोग ॥ सा० ॥ अमृत सींचे जीवियो ए, जे तुम पत्र सयोग ॥ सा० ॥ १६ ॥ जीवीशु हवे आगलें ए, ते तुमचे सुपसाय ॥ सा० ॥ मुज वियोग न सही शके ए, ते समजावी राय ॥ सा०॥ १७॥ थोडादिन मांहे आवशुं ए,प्रणमुं तातना पाय ॥सा०॥ ध्यान करु नित्य तातनु ए, लीलामां दिन जाय ॥ सा० ॥१८॥ सिंहसारनें मोकल्यो ए, ते स्थानक उद्देश ॥सा०॥ शीखामण नित्य कहावजो ए,शिर धरु तुम आदेश ॥सा०॥१९॥ विज्ञप्तिनें आव्या नहीं ए, हर्ष खेद घणो थाय ॥सा०॥ परिकरने दोय बांधवा ए, सुख डुःख मिश्रित पाय ॥सा०॥२०॥ पूछयाथी तेह पुरुष कहे ए, श्रीपद्मरथ नूपाल ॥ सा० ॥ पुत्री पाणीग्रहणथी ए, मांमी कहे सुरसाल ॥ सा० ॥ २१ ॥ चरित्र कुमारनुं सांनली ए, (डुःखदायी सिंहसार,) पर्षदा तेम दोय राय ॥ सा० ॥ चित्र आनदमयी थइ रे,कुमर प्रशंस कराय ॥ सा० ॥ २२॥ सिंहसार निंदे सहु ए,हवे नरपति देइ मान ॥सा०॥ विसर्ज्यो सिंहसारशुं ए,सहु गया निज निज थान ॥सा०॥२३॥ दशमी ढाल खम्मां ए,पद्मविजय कही ढाल ॥सा० ॥ श्रीजयानदना रासमां ए,सुणतां मंगलमाल ॥सा०॥२४॥ सर्वगाथा॥३१५॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन जयराजा इश्युं, चिंते चित्त मझार ॥ नाइनें राज्य नावे नहीं, कह्यो नवि आव्यो कुमार ॥ १ ॥ अथवा निज करें अरजतो, राज्य लखमी रणमांहि ॥ आवे केम ते इहां कणे, आदर धरी उत्साहिं ॥ २ ॥ परअर्जित नवि मांस पण,सिंह लीये ज्यु शीयाल ॥ वय ते तप विण व्यतिक्रमे, आ नव जाये आल ॥ ३ ॥ एह राज्यनो ए धणी, निमित्तिये निरधार ॥ नाख्यो छे ते नली परें,वितथ न थाय किवार ॥ ४॥ आखे पराक्रम एहनु, एहज अरथ अवक्ष ॥ दोशे मोकल्यो सिंहनें,नृप थावाने नवक्ष ॥ ॥ ५ ॥ आपी आपद बहु एणें, महोटी जे मरणंत ॥ पापी दूरें पेखीयो, डुःखदायी जे डुरंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ गो वाठरूआं चारती, आदिरनो अवतार ॥ रुडु गोकलीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ आपु राज्य हु एहनें, जाइनें मूकु पास ॥ एहन रुडु ठे ॥ सिंह देशे एहनें, मार्ग चलावशे तास ॥ ए० ॥ १ ॥ जो परजाने पीडशे,तो न वि सहेशे कुमार ॥ ए० ॥ एम चिंतवीने थापीयो,राज्य ते सिंहसार ॥ए० ॥ २ ॥ जाइने प्रार्थना करी, राख्या घरमां तेह ॥ ए०॥ सिंह पण आग्रह करी, काको राख्या गेह ॥ ए० ॥ ३॥ पुत्रमिलन आशये रह्या, हवे श्री जय राजान ॥ए०॥ महाजट गुरु पासे करे, तापस व्रत आदान ॥ ए० ॥ ४ ॥ नाम रतनजट आपियु, हवे श्रीपति जे राय ॥ ए० ॥ राज्य चिंता कांइ नवि करे, धर्मे काल गमाय ॥ ए०॥ ५ ॥ वनपालक हवे एकदा, कहे आवी राजान ॥ ए० ॥ धर्मप्रज्ञ सूरिवरू, पाउ धारीया उद्यान ॥ ए० ॥६॥ पूर्वे वैरागी हता, वली सांजली एह वात ॥ ए० ॥ दूधमांहे साकर परें,म नमां हर्ष न मात ॥ ए० ॥ ७ ॥ दान आपी संतोषियो, वेगे गजवर सं ध ॥ ए० ॥ कुमर सामत मत्री मुखा, ठत्र चामर सबध ॥ ए०॥ ८ ॥ अंते उरछु आवीया, पचाजिगम प्रकार ॥ ए० ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइनें, गुरुनें करे नमस्कार ॥ ए० ॥ ए ॥ धर्मलाज गुरुयें दियो, बेसे यथोचित ठाय ॥ ए० ॥ धर्मदेशना गुरु दीये, धर्म सदा सुखदाय ॥ ए० ॥ १० ॥ आपद नासे वेगली, शिवसुख करतल आय ॥ ए०॥ बाह्य अंतर अरि मित्र जे, जवमां नवि उलखाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ मोह अंतर शत्रु अछे, बाह्य जन काविक होय ॥ए०॥ तेह तज्यां सुख उपजे,तेणें तजीयें सहु कोय ॥ए०॥१२॥ संवेगादिक मित्र जे,अंतरगुरु ते बाह्य ॥ए०॥ इह जव परजव सुख दीये,एहज जाणो ग्राह्य ॥ ए० ॥ १३ ॥ इत्यादिक सुणी देशना, अवधिज्ञानी गुरु पास ॥ ए०॥ प्रतिबोध्या बहु जव्यनें, पाम्या जिनधर्म वास ॥ ए०॥ १४ ॥ केइ श्रावक केइ संयमी,केइक समकितवंत॥ ए० ॥ केइ कदाचिक अजिमही, जइकनें गुणवंत ॥ ए० ॥ १५ ॥ नृप अति संवेगीयो, चित्तमां करे वि चार ॥ए०॥ बाह्य अरि मित्रन उलख्या, अंतर वात अपार ॥ए०॥१६ ॥ बाह्य अंतर परिग्रह प्रत्यें, तेणें ठांमी जंजाल ॥ ए० ॥ जैन दीक्षा अगी करु, अंतरशत्रुनें टाल ॥ ए० ॥ १७ ॥ एम चिंती गुरुनें कहे, लेउ दीक्षा तुम पास ॥ ए० ॥ पुत्र अजावें कुमरनें, थापे राज्य उल्लास ॥ ए०॥१८॥

दीक्षा लेवंरावे तदा, उत्सव करी अपार ॥ ए० ॥ अमारि पढा मह्हीना लगें, संघपूजा करी सार ॥ ए० ॥ १ए ॥ अठाई महोत्सव करे,देइ दीनने दान ॥ ए० ॥ सूरि वचन वैराग्यना, सांजलीयां जेणें कान ॥ ए० ॥ २० ॥ पांचशें राजकुमर तदा, तेम राणी शत पांच ॥ ए० ॥ निर्मम राज्य विषय त्यजी, मोह तणो परपंच ॥ ए०॥ २१ ॥ स्नानादिक मंगल करी, वस्त्र आ भरण अनेक ॥ ए० ॥ चामर छत्र धरावतो, गज बेगो सुविवेक ॥ ए०॥ २२॥ तूर अनेक वाजी जते, अढलक देता दान ॥ ए० ॥ लोक प्रशंस करी जते, आव्या नृप उद्यान ॥ ए० ॥ २३ ॥ मंगल धवल गाई जते, गज रथ नट बहु कोडि ॥ ए० ॥ बंदी बिरुद बोली जते, देइ आशीष कर जोडि ॥ ए०॥ ॥ २४ ॥ सरवे लोक खमावीनें, लोच करी गुरुपास ॥ ए० ॥ कहे नवसा यर तारीयें, करुणानिधि आवास ॥ ए० ॥ २५ ॥ आगम विधिथी दाखीया, देइ तेहनें उपदेश ॥ ए० ॥ किरिया शिक्षा नली परें,शास्त्र नणे सुविशेष ॥ ए० ॥ २६ ॥ नूपनें घणुं स्तवता थका, पोहोता निज निज गेह ॥ ए० ॥ श्रीजयानंद गुण रागीया, मुनि पर धरता नेह ॥ ए० ॥ २७॥ हवे सिद्धांत नणता थका, करता उग्र विहार ॥ ए०॥ तप द्वादश नेदें करे,गीतारथ पद धार ॥ ए० ॥ २८ ॥ योग्य जाणी सूरिपद दीये, परिकर दीधो सर्व ॥ ए०॥ नव्यजीव प्रतिबोधता, विचरे मही निर्गर्व ॥ ए० ॥ २ए॥ जिनशासन पर नावता, लब्धि तणो नंमार ॥ ए० ॥ केवलज्ञान लही करी,शिववधू वरिया सार ॥ ए० ॥ ३० ॥ श्रीजयानंदना रासमां, उठे खंमें ढाल ॥ ए० ॥ पद्म कहे अग्यारमी, सुणतां मंगलमाल ॥ ए० ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ ३५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंदनी नृप सवे, सेवा करे सुखदाय ॥ विविध देशनें वश क री, राज्य वधारे राय ॥ १ ॥ जिनमत प्रौढता जगतमां, पुण्यवंत पृथिवीश॥ कर टाले न्यायज करे, दान दिये निश दीश ॥ २॥ प्रजा सुखी तव संपजे, सुर तिम सुरनो स्वामि ॥ तृण समान गणे ते तदा मद अहंकार उद्दाम ॥३॥

॥ ढाल बारमी ॥ सुगुण सुगुण सोनागी जंबूद्वीपमां होजी ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन एकदिन नृपनें वीनवे होजी, आवीनें वनपाल ॥ मावित्र मा वित्र तुमचा उद्यानमां होजी, आव्या ठे एणे काल ॥ ए०॥१॥ सायें सा थे परिकर पोढलो होजी, सांजली हर्षे न माय ॥ दान दान दीये तस ह

पेनु होजी, अगे पुलकित थाय ॥ ए० ॥ २ ॥ चाल्यो चाल्यो नृप पालो ष को होजी,हय गय विण परिवार ॥ उत्सुक उत्सुकतायें टक्या नहीं होजी, गया उद्यान मजार ॥ए०॥३॥ हर्ष हर्ष आंसुयें पखालतो होजी, प्रणमे म वित्र पाय ॥ देइ देइ आलिगन चुंबता होजी, आशिष बहु दीये माय ॥ ए० ॥ ४ ॥ आनद आनद लहीनें पूछता होजी, खेम प्रश्नादिक वात ॥ रा णी राणी त्रणे जाणी करी होजी,आवी करे प्रणिपात ॥ ए०॥ ५ ॥ वहुरो वहुरो देखी आणदीया होजी,आव्यो हवे परिवार ॥ तातनें तातनें गज बेस रिया होजी, मात सिंहासन धार ॥ ए० ॥ ६ ॥ पोतें पोतें छत्र नृपनें धरे होजी, गौरव करी बहु मान ॥ लाव्या लाव्या नृप निजमदिरें होजी बेस विष्टर थान ॥ ए० ॥ ७ ॥ पाछ पाछ पीठें वेशी करी होजी, उत्संगें पद लाय ॥ देखी देखी सजा अति रीजती होजी, सहुनें करे विदाय ॥ ए० ॥ ॥ ८ ॥ पूजा पूजानें स्नान नोजन करे होजी, साथे सहु परिवार ॥ अव सरें अवसरें पूछे तातनें होजी, स्नेह नक्ति अपार ॥ए०॥ए॥ ऋद्धि ऋद्धिनें परिकर थोडले होजी, आववु केम अकस्मात ॥ आंसु आंसु मिश्र आंखें कहे होजी, सांजल वत्स तु वात ॥ ए० ॥ १० ॥ राज्य राज्य देइ सिंहसा रनें होजी, भ्राता तापस थाय ॥ थातां थातां तापस मुज वारियो होजी, सिंहें विनय देखाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ नक्ति नक्ति देखावे तेहवी होजी, वीतो केतोक काल ॥ माया मायावीनुं मन नवि लखु होजी, डष्टनु मन विक राल ॥ ए० ॥ १२ ॥ एकदिन एकदिन आलोचन मिषें होजी, तेडयो मुज नें एकांत ॥ हुं पण हु पण विश्वासें गयो होजी, एकल धरी मन खांत ॥ ए०॥ १३ ॥ पूर्वे पूर्वे रचित सामग्रीयें होजी, बांधी बंधन मुक्क ॥ बद्दी बंदी खानें मुज नाखीयो होजी, तिमहिज माता तुक्क ॥ ए०॥ १४ ॥ महारा म हारा वस्ता नाखीयां होजी,बांधी गुप्तज थान ॥ केइक केइक नाशीनें गया होजी, पामी अवसर तान ॥ ए० ॥ १५ ॥ माहारु माहारु घर लूटयु एणें होजी, निज वश कीधलो देश ॥ चोकी चोकीमाहे हु रहुं होजी, विवर न लहु लवलेश ॥ ए० ॥ १६ ॥ परजा परजा बहु मुज रागिणी होजी, जाणी राज्यनो नाश ॥ तेणें ए तेणें ए काम कघु तृषा होजी, मिथ्या मि थ्या निवास ॥ए०॥१७॥ सेवक सेवक सुरदत्त माहरो होजी,बीजो वीरदत्त नाम ॥ माहरा माहरा नक्तिवता घणा होजी, नाशी गया कोइ गाम ॥

ए० ॥ १८ ॥ सेवक सेवक पण मुज मित्र ने होजी, नामें नरपति धीर ॥ तेहनें तेहने घर ते विहु रह्या होजी, साहस वड गनीर ॥ ए० ॥ १ए ॥ दीधी दीधी सुरंग तिहांथकी होजी, यावत गुप्ति थान ॥ काढें काढें स ज्जन नर परखीयें होजी कीधी मुज तेणें शान ॥ ए०॥ २० ॥ प्रिया प्रिया सहित मुज काढीयो होजी, लाव्या रात्रियें गेह ॥ स्वामी स्वामीनी नक्ति एम जाणीयें होजी, न गणे प्राणनो नेह ॥ ए० ॥ २१ ॥ पूर्वे पूर्वे सामग्री करी होजी, नाशी श्राव्या मुज सग ॥ सर्वे सर्वे सत्त्व धरी करी होजी, धरता चित्त उमग ॥ए०॥ २२ ॥ धीर धीर शूरवीरशु चव्या होजी,कोइक स्था नक पाम ॥ श्राव्या श्राव्या सकेतिक नर सहु होजी,यानादिकशु ते गाम ॥ ए० ॥ २३ ॥ सज्जन सज्जन सघले माहरा होजी, श्राव्या श्रनुक्रमें एथ ॥ स्वजन स्वजन केइक ठे गुप्तिमां होजी, 5 खीया ठे हजी तेथ ॥ ए० ॥ २४ ॥ तेहनें तेहने मूकाववा योग्य तु होजी, सांनलो तेह कुमार ॥ खेद खेद प्रमोद श्राश्चर्यथी होजी,चिते चित्त मकार ॥ ए० ॥ २५ ॥ कीधो कीधो उपकार में केटलो होजी,पण 5र्जन सिहसार ॥ प्राण प्राण बहु वार उगारियें होजी, खल नवि निज निरधार ॥ ए०॥ २६ ॥ यत ॥ धूम पयो धरपद कथमप्यवाप्य, वर्षावुनि शमयति ज्वलनस्य तापं॥दैवादवाप्य खल नीचजन प्रतिष्ठां, प्राय स्ववंधुजनमेव तिरस्करोति ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ खेद खेद करो शे मुज उतां होजी,करशु सर्वनी सार ॥ देशुं देशु शिक्षा नलि ना तिशु होजी, जे कर्त्ता श्रपकार ॥ ए० ॥ २७ ॥ करशु करशु प्रसाद ते उपरें होजी, जेणें तुम कस्यो उपकार ॥ त्रणे त्रणे सुनट बोलाविया होजी,गुण स्तवे वार वार ॥ए०॥२८॥ स्वामी स्वामी नक्ता तुम सत्त्वनें होजी,वरणवीयें कहो केम ॥ तेहना तेहना कुटुवनें तेहीनें होजी,करे सत्कार ते एम ॥ए० ॥२ए॥ वस्त्र वस्त्र श्रानरणादिक घणां होजी,दीये प्रत्येकें तास ॥ देश देश एकेक दिये त्रणनें होजी, ते लह्या हर्ष उल्लास ॥ए०॥३०॥ यत ॥ सुवर्ण पुष्पां पृथिवी, मुचिन्वति नरास्त्रयं॥शूरश्रकृतविद्यश्च,यश्चजानाति सेवितु॥१॥ ॥ पूर्वढाल ॥ निजवश निजवश देश ते जइ करे होजी,सेवे दोय राजान॥ बीजा बीजा साथें श्राव्या तेहनें होजी,करता ग्रासनु दान ॥ए०॥३१॥ उठे उठे खंमें बारमी होजी, पन्नें नाखी ए ढाल ॥ सुणजो सुणजो श्रीजयान दना होजी, रासमां वात्त रसाल ॥ ए० ॥ ३२ ॥ सर्वगाथा ॥ ३८४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीखामण सिंहसारन, श्रीजयानंद सनूर ॥ माणस निज मूकावक, दूत मोकले दूर ॥ १ ॥ विसजयपुरें जइ वेगशुं, कहेजे एणीपरें काम ॥ राज्य भ्रंश भय राखीनें, हाथें थयो हराम ॥ २ ॥ ते दीधुं इरा तातनें, लोपी सहुनी लाज ॥ राज्य पाम्यो में रंगशुं, कीधुं अवलुं काज ॥३॥ देइनें आदान करु, वारू नहीं ए वात ॥ मूकजे स्वजन ते माहरां, आगल सुणी अवदात ॥ ४ ॥ हरिनुं मांस जंबूक हरे, कहेवी वात कहाय ॥ न मूके तो निग्रह करु, एहमां नहीं अन्याय ॥ ५ ॥ कूतरो पय कुत्सित करे, ताडना पामे तेह ॥ लेख लखी एम मोकले, आगल कहुं वली एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडीजी ॥ ए देशी ॥

॥ वली सुणजे वली सुणजे महारा तातनुंजी, लूट्युं धन लूट्युं धन तें अणी वध हो ॥ तिम स्वजन तिम स्वजननें सत्कारी घणुंजी, मोकलजे मोकलजे टाली धध हो ॥ १ ॥ जगमांहे जगमांहे श्रीजयानंद जयोजी ॥ ए आकणी ॥ एम न करे एम न करे तो युद्धने सज थजे जी, दूतमुख थी दूतमुखथी जाणे सिंहसार हो ॥ वांची पत्र वांची पत्रनें कंप्यो हृदय मां जी, नयनीत नयनीत थयो ते अपार हो ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रीविजय श्रीविजयरायनुं धन सवेजी, वली स्वजन वली स्वजननें दिये बहुमान हो ॥ वली भेटणुं वली भेटणुं श्रीजयानंदनेजी, लखे लेख लखे लेख मूकी अभिमान हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ देश नृपनो देश नृपनो पाछो आपीयोजी, दूतनें कहे दूतनें कहे नरम वचन्न हो ॥ दूत स्वजन दूत स्वजन पोहोता सहु नृपकने जी, वात सघली वात सघली सुणे नृप कन्न हो ॥ज०॥४॥ देखी जाणी देखी जाणीनें हरखें ते बहुंजी, नृप आपे नृप आपे स्वजनने देश हो ॥ एक दिवसें एक दिवसें श्रीजयानंदनेंजी, माय ताय माय ताय पूछे सुविशेष हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ विजयपुरथी विजयपुरथी गया ते विनयकीजी, कहो चरित्र कहो चरित्र जे निपन्युं तुम्म हो ॥ इहाविण इहाविण तात आणाथ की जी, कहे कुमर कहे कुमर चरित्र सुणो अम्म हो ॥ ज०॥ ६ ॥ सुणी मावित्र सुणी मावित्र आणंदमय थयांजी, सुतनकें सुतनकें श्रीविजय राय हो ॥ चित्त चमक्या चित्त चमक्या बहु नृप सेवतांजी, काढे सुखमां काढे सुखमां काल अमाय हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ सर्वांग सर्वांग राज्यनें पालता

जी, निज अर्जित निज अर्जित राज्य विशाल हो ॥ निज तातने निज ता तनें आग्रह बहु करीजी,राज्य आपे राज्य आपे सुत नूपाल हो॥ज०॥८॥ नृप उत्तम नृप उत्तमनें निरीह घणो जी ॥ पुत्र प्रेम पुत्र प्रेम दाक्षिण्यें ते ह हो॥ करे अंगी करे अंगीनें श्रीजयानंदनेंजी, युवराज्यें युवराज्यें ठवे ससनेह हो ॥ज०॥ ए ॥ कोइ आणा कोइ आणा न लोपे ते बिहु तणीजी, समसिंहासनें समसिंहासने बेसंत हो ॥ वेष नूपण वेष नूपण न्याय तेजें करीजी, दोय सरिखा दोय सरिखा महापुण्यवंत हो ॥ज०॥१०॥ नीमकांत नीमकांत गुणें दोय सोहताजी, चंद्र सूरय चंद्र सूरय के दोय इंद्र हो ॥ पिता पुत्र पिता पुत्रस्नेही सुखमां रहेजी ॥ एक दिवस एक दिवस श्रीश्रीज यानंद हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ देश साधवा देश साधवानी इछा करीजी, राज्य चिंता राज्यचिंता पिता शिर थापी हो ॥ शक्र विक्रम शक्रविक्रम राज्य चू डामणिजी, सहु नृपमा सहु नृपमां अति परताप हो ॥ ज०॥ १२ ॥ मध्य खंमें मध्यखंमें लीलायें साधीयोजी, चक्रपुरनो चक्रपुरनो नृप चक्रसेन हो॥ जयपुरनो जयपुरनो जयी शत्रुजय करेजी, अति बलीयो अति बलीयो जी तायें केन हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ जयंती जयंती नयरीनो धणी जी, जयंत जयंत शत्रु करे अंत हो ॥ पुरंदरपुर पुरंदरपुर पति नरकेशरी जी, नीमरा जा नीमराजा नोगवती कंत हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ सुमंगल सुमंगल कौशल नो पति जी, नंदीपुरनो नंदीपुरनो नरपति नंद हो ॥ सूर्यपुरनो सूर्यपुरनो सुरमही पतीजी, वली पृथिवी वली पृथिवीचंद्र कलाचंद हो ॥ज०॥१५॥ रूपराजा रूपराजा प्रमुख सेवक कस्याजी, एम साधी एम साधी नूप अ नेक हो ॥ सैन्य सायर सैन्य सायर लइनें आवीयाजी, मध्यखंम मध्यख म साधी सुविवेक हो॥ज०॥१६॥ तात प्रणमे तात प्रणमे निजपुर आवीनें जी, सेवा करता सेवा करता निर अहंकार हो ॥ राजराजा राजराजा नो बिरुद वहेतो थकोजी, प्रसिद्धि प्रसिद्धि लहे सुविस्तार हो ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ ससरानें ससरानें पासेंथी तेडावतो जी, निजपरणी निजपरणी पूरवली नारि हो ॥ लेखमांहे लेखमांहे निशानी प्रमुख लखीजी, ससरा पण ससरा पण सुणीअ तिवार हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ प्रभुरीतें प्रभुरीतें सेव वो एहनें जी, सज्जनाइयें सज्जनाइयें सेववो सार हो ॥ एम चिंतवी एम चिंतवी सहु लइ नेटणां जी, निजकुमरी निजकुमरी लेई हार हो ॥ज०॥

॥१ए॥ मणिमजरी मणिमजरी लेइ आवीयो जी,श्रीविशाल श्रीविशाल पुरनो नाथ हो ॥ अतेउर अतेउरशु आवी नमेजी. दीये पुत्री दीये पुत्री हाथो हाथ हो ॥ ज० ॥ २० ॥ हेमपुर हेमपुर धणी सौनाग्यमजरी जी, पद्मरथनृप पद्मरथनृप आवे वेग हो ॥ निज विजय निज विजयसुदरी लावि यो जी, अतेउर अतेउर लेइ सतेग हो ॥ ज०॥ २१ ॥ कमलप्रन कमलप्रन लेइ निज कुवरीजी, कमलसुंदरी कमलसुदरी रति अनुहार हो ॥ श्रीजय प ण श्रीजय पण आदर आपता जी, वासग्राम वासग्राम आपे तस सार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ रमणीशु रमणीशु रमतो नित्यप्रत्येंजी, राज्य सोंपी रा ज्य सोंपी तातनें ताम हो ॥ श्रीजय पण श्रीजय पण नूपति रगशुंजी, सुख नोगवे सुख नोगवे अति उद्दाम हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ तस शोना तस शोना सिरिवल देखीनेंजी, ससरादिक ससरादिक लहे चमत्कार हो ॥ उठे खमें उठे खमें ढाल ते तेरमीजी,कहे पद्म कहे पद्म सुणयो जयकार हो॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानद सना करी, तातशु वेगा ताम ॥ ससरा प्रमुख मलि स वे, अचरिज लहे अनिराम ॥ १ ॥ एणे अवसर तिहां आवीयो,दूरदेशथी दक्ष ॥ गायन पेटक गुणी घणु, सुकठ तेहमां सुलक्ष ॥ २ ॥ मधुरध्वनि गाये मोजमां,वली एक तेहनें वाम ॥ सर्वकला सावधान जे,गीतना स्वरनें ग्राम ॥ ३ ॥ नरताशु गावा नणी,तुरत मेलवे तान ॥ राजसनामां रंगशुं, आव्या अवसर जाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मोहनगारा हो राज, रूडा माहारा सांनल सुगुणा सूडा ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुण सौनागी हो राज, वारू म्हारु गीत सुणो सुखकारू ॥ ए आं कणी ॥ पदमरथ राजा तणीजी, पुत्री दोय निधान ॥ लघु आपी तिहां निश्नें जी,इतर वीधी राजान के ॥ सु० ॥ १ ॥ तिहांथी मांमीनें कहेजी, गायन घर गई जाव ॥ सुख इु ख पूर्वेनु सांनलुजी, रुदन कर्युं तेणें ताव के ॥ सु० ॥ २ ॥ सुकठ कहे रोवे किश्युंजी, रंगमांहें करे नंग ॥ आ अवसर हे दाननोजी, साजन मलियो संग के ॥ सु० ॥ ३ ॥ यत ॥ तुह गीय गु णेण रंजिआ, सुचिरं सुदरी कामदायया ॥ कह रोइसि इुक्कया खया, व सरे नो सुलहो खणो पुणो ॥१॥ पूर्वढाल ॥ रोतु मूकी गायतीजी, किम

कहि गदगद वाणी ॥ गीतनां उलथी सर्वनेंजी, चित्रकारी गाय गान के ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ तथाहि ॥ किहपउम पुर किह पउमपहु, किह पिअडा च गिण निह्न गहु ॥ जयसुंदरि गायण घरिहिं गया, हह गायइ धणकन्नि व इव हया ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ निज चरतार अनिधा सुणी जी,विस्मित पद्म रथ राय ॥ चोंपथी जुवे नृप जेटले जी, निजसुता उलखे ताय के ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ वत्स वत्स रे तु किहांजी, केम आवी इण गाय ॥ एम विलपती वलगी गलेजी, आवी एहनी माय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ वेहु परस्पर रोवतां जी, आव्यो तेहनो ताय ॥ ते पण उलखी रोवतां जी, प्रणमे तातना पाय के ॥ सु० ॥ ७ ॥ करुणामय ते सन्ना थइजी, जाणवा तत्त्वस्वरूप ॥ नृपनें पूछे ए किश्युं जी, तव न्नांखे एम नृप के ॥ सु० ॥ ८ ॥ ने कन्या मुज तेह नें जी, आपी समस्या एक, पूरी अनुकूल पहेलीयें जी, चित्तमा धरीय वि वेक के ॥ सु० ॥ ९ ॥ -वीजी प्रतिकूल पूरती जी, रीश चढी मुज ताम ॥ कारिमा निह्ननणी तदा जी, आपी हीणे गाम के ॥ सु० ॥ १० ॥ वूगो ज यसुंदरी नणीजी, नरकेशरी नृप जात ॥ आपी हर्षे राखीयो जी, केइक दिन वहीजात के ॥ सु० ॥ ११ ॥ शीख दीधी में एकदा जी, लेइ प्रिया ग यो घेर ॥ गातां हमणां उलखी जी, जयसुदरी एणी पेर के ॥ सु० ॥ १२ ॥ स्वर अनुसारें जाणीयें जी,पुत्री छ खमां लीन ॥ आगल कु जाणु नहीं जी, एहज कहेशे अदीन के ॥ सु० ॥ १३॥ नृप आणायी सा कहे जी, नर्त्तांछं निज सहेर ॥ नोग क्रीडा मुजशुं करेजी, अति आसक्त निजघेर के ॥ सु० ॥ १४ ॥ वसत ऋतुमां अन्यदा जी, कुसुमाकर उद्यान ॥ दोय गाउ ते नय रथी जी, रमवा गया तेणे थान के ॥ सु० ॥ १५ ॥ क्रीडाघर तिहां सुदरु जी, ढांकी कुसुमनी माल ॥ रंनास्तने सोहतु जी, दीसे शय्या सुकुमाल के ॥ सु० ॥ १६ ॥ नोग सामग्री लेइ सवे जी, दोय मासनें काज ॥ दूर सु नट चोकी रह्या जी, दासी वृंद चिहु पाज के ॥ सु० ॥ १७ ॥ गीत नाटक वारांगना जी, करती अतिहिं रसाल ॥ नोगासक्तमां एणी परेंजी, काढे रीज मां काल के ॥ सु० ॥ १८ ॥ एणें अवसर हवे अन्यदा जी, सहसकूटनो स्वामी ॥ सैन्य सहित तिहां आवीयो जी, महासेन एणें नाम के ॥ सु० ॥ ॥ १९ ॥ लुटवा कोइक गामनें जी, पण तस हुवो जाण ॥ खाली आव्या ते फरीजी, आव्या अम तेणें ठाण के ॥ सु० ॥ २० ॥ तुम जमाइ लहवा ग

याजी, रात्रि समे तव तेह ॥ नाठो जमाड तुम तणोजी, छटग्रु केलीगेह के ॥ सु० ॥ २१ ॥ मुज पकडी लेइ गयो जी, कहे मुज करशुं नार ॥ शील जगना जयथकी जी,त्रण दिन कीधो न आहार के ॥सु०॥२२ ॥ पल्लिपति कहे तुझने जी, आपशुं तुज जरतार ॥ धन लेइ तेणे कारणे जी, कर हुं सुखमां आहार के ॥ सु०॥ २३ ॥ जाणी समाधान में कयुजी, आहार करी विशवास ॥ हवे जे आगल नीपजे जी, ते सुणो कर्म विलास के ॥ सु० ॥ २४ ॥ ठठे खमे चौदमी जी, पद्मविजयें कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रास जी, आगल वात रसाल के ॥ सु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पल्लीपतिनी जे प्रिया,शोक्य ए माहारुं शाल ॥ पर्वतमाथी पाथरी,औषधी लावी आल ॥१॥ जोजनमां जेली दीये,जलोदर वाध्यु जोर॥ वैद्य औषध विण गद कह्यो, केम टले कर्म कठोर ॥ २ ॥ सुकठ उपर समजणे, ढेवारी फे दान ॥ गीत सुणी रगें करी, शोक्यनी आणी शान॥ ३ ॥ पल्लिपति पोतें तदा,धारी एहवु ध्यान ॥ शाता करवा सोंपतो, विजयसुंदरी शुज वान ॥ ४॥ रूप लोभें रंगें ग्रही, सज करशु एम शान ॥ पसखम्म पत्तन पामीयो,इभ्य तणुं करी दान ॥ ५ ॥ वारु सुमति वैद्य ठे, मालम करी गद मूल ॥ रेच प्रमुख देइ रोगनें, उपशम करे अनुकूल ॥ ६ ॥ सुमतिनें संतोषीयो, माननी कीधी मुक्त ॥ गीत शीखव्यां गेलछुं, गाव गीत ए युक्त ॥ ७ ॥ नृपादिकनें जली परें,रीजवी लेउं रिद्धि ॥ महाधनी मुजपति थयो, सर्वकला परसिद्ध ॥८॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ सजवजिन अवधारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ जाणी श्रीजयानंदनें, मलीय बहुला राय सोजागी ॥ आव्या तव तुमें जाणीयां, सहस्यो दुःख समवाय सोजागी ॥ १ ॥ मद मत करजो मानवी ॥ ए आंकणी ॥ चरित्र पोतानुं जणाववा, गायु गीत नवीन ॥ सो० आगल वात सवे लहो, शुं कहुं तुमें गो प्रवीण सो०॥ म० ॥ २ ॥ विजयसुंदरी निझनें, दीधी शु थयुं तास सो० ॥ किहां ठे खबर न तेहनी, बहु दुःखनो आवास सो० ॥म०॥३॥ निझ नहीं ते नृप कहे, एतो राजकुमार सो० ॥ जाग्य परीक्षा कारणें, तादृशरूपनो धार सो० ॥ म० ॥४॥ मुज जीत्यो जगजीत तो, श्रीविजयनृप पूत सो० ॥ राजेंद्र श्रीजयानंदजी, जे राखे घरसूत सो०॥ म० ॥ ५ ॥ जावे पासें ए रही, नृपतिनु बहु मान

सो० ॥ विजयसुंदरी बहेनडी, तादृरी जो असमान सो० ॥ म० ॥ ६ ॥ अंगुलीयें देखाडतो, मलवा जाये जाम सो० ॥ वलगी कर्ते वहीनें,विजय सुंदरी ताम सो० ॥ म० ॥ ७ ॥ रोवे तव ते बिहु जणी, रुधी रुदन तिवार सो० ॥ विजयसुंदरी एम कहे, धन्य तुज शीयल आचार सो० ॥ म० ॥ ॥ ७ ॥ तेहिज वात साची कही,ते दिन सभा मझार सो० ॥ देव गुरु धर्म तत्त्वनो, महिमा अगम अपार ॥सो०॥म०॥ए॥ में समस्या पूरी तदा, तेह अतात्त्विक जाण सो० ॥ फल विहुनें तेहवां थयां, कार्य कारण परमाण सो० ॥ म० ॥ १० ॥ नास्तिकवादें हु हणी, रुडु मनाववा तात ॥सो०॥ पूरी समस्या तेहनुं,फल आपद आयात सो० ॥ म० ॥ ११ ॥ नृप प्रसन्न अप्रसन्नथी,न होय सुख दुःख कोय सो० ॥ सुख दुःख पुण्यनें पापथी, इहां दृष्टांत अम होय सो० ॥ म० ॥ १२ ॥ वात सुणी ते बेहु तणी, एम कहे श्रीजयानद सो० ॥ परषदानें समजाववा, धुणतां धर्मजिणंद सो० ॥म०॥१३॥ विस्मय लोक लह्यां घणो,हवे सुकठ बोलाय ॥ सो० ॥ इछित धन आपी करी, विजयसुंदरी आदाय सो० ॥ म० ॥ १४ ॥ आपी तेहना तातनें,ते पण घरमां लाय सो० ॥ शास्त्रविधें तस शुद्ध करी, घरमां राखे ताय सो० ॥ म० ॥ १५ ॥ तेहना नगरथी तेडियो, नरकुंजर जे राय सो० ॥ तबको देइ बहु आपतो, विजयसुंदरी सुपसाय सो० ॥ म० ॥ ॥ १६ ॥ ससरादिकथी लाजतो, लेइ प्रिया निज पाणि सो० ॥ वीर नव्य निजपुरें गयो, हर्ष घणो मन आणि सो० ॥ म० ॥ १७ ॥ प्रीति वधारी सहु प्रत्यें,करी आदर सत्कार सो० ॥ वोसज्यां निजपुरें गया, करता धर्म विचार सो० ॥ म० ॥ १७ ॥ राज्य सोंपी निज तातनें, कुमर प्रियासुं केलि सो० ॥ करता धर्म लोपे नहीं, चित्तहु तेहमां भेली सो० ॥म०॥१ए॥ वनपालक आवी कहे, फूल्यो नृप वसत सो० ॥ कोकिलडा टहुका करे, चदनवास वमत ॥ सो० ॥ म० ॥ २० ॥ चपक चोखा फूलीया, तेम पुन्नागनी श्रेणि सो० ॥ अली झंकार करी रह्या, करु विनति तुम तेण सो० ॥ म० ॥ २१ ॥ नृप श्रीविजय ते सांभली, कहे निजपुत्रनें एम सो० ॥ वय वीत्युं क्रीडातणु, तेणें रमवा जाउं केम सो० ॥ म० ॥ २२ ॥ तेणें तुमें नीकलो क्रीडवा, तुम विण जन नहीं जाय सो० ॥ तात आणा शिर धरें, धारी कुवर राय सो० ॥ म० ॥ २३ ॥ अतेउर परिवारशुं,

सामग्री सवि लेय सो० ॥ नगर लोकशुं निकल्या, देता दान अमेय सो० ॥ ॥म०॥ २४ ॥ छठे खर्म ए कही, पन्नरमी वर ढाल ॥ सो० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल सो० ॥ म० ॥२५॥ सर्वगाथा ॥४३॥

॥ दोहा ॥

॥ निज निज ऋद्धे नीकल्या, पुरजन बहु परिवार ॥ वाजित्र बहुविध वाजते, नवरंग गीत गाय नार ॥ १ ॥ नाटकीया बहु नाचता, खेला खेले खांत, खजूर प्रमुख खाय खायने, तरुण रमे एकांत ॥ २ ॥ रंनाघर रंगे सूवे, प्रतिपादपपुष्प पाणि ॥ वसत किणविध वरणवु, जिहां बहु कामनु जाण ॥३॥ क्रीडासरें बहु क्रीडतां, नर नारी निर्वाण ॥ सींचे जल शृंगी घणु, गाये वसतनां गाण ॥ ४ ॥ क्रीडा करी कांठे रह्या,शोनावे सरपाल॥ सिंहासनें सोहे अति, नरनारीशु नृपाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ शारद बुद्धि दायी ॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ इण अवसर आव्यो, जिल्ल एक कर चाप ॥ व्याघ्रचर्म ते पहेर्यो, दीन करे आलाप ॥ श्वान रज्जुयें बांध्यो, मोरपिछ धर्यां माथे ॥ बाणजाया विहु दिश, केइ जिल्ल तस साथें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तेहमांथी एक आवी प्रणमे, नरपति पूछे ताम ॥ कोण तुमें तव जिल्ल कहे सुणो, माहारी वात ते आम ॥ चमसिंह पल्लिपति राज्यें, यमडुर्ग पर्वत स्वामि ॥ सिंहव्याघ्र नामें सुत तेहने,तात ते परजवगामि ॥२॥ढाल॥ बिहु जाइयें लीधु, वहेंची राज्य उदार ॥ सिंह लीये तव बलथी,राज्य तथा वर नारि ॥ ते डुःखथी जमतो, वनमां मृगें जीवतो, तुम पासें आव्यो, ते हुं अरज करंतो ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ ते जाइ मुज क्रीडा करतो,सिंह आव्यो इण वनमां ॥ मुज पत्नीशुं रमतो बलीयो, डु पण बलुं घणु तनमां ॥ डुर्बलनुं बल राजा जाणी, आव्यो हुं तुम पासें ॥ तुम सैन्यनो कोलाहल सुणीनें, रखे ते इहांथी नासे ॥ ४ ॥ उक्तं च ॥ डुर्बलस्य बल राजा,बालस्य रुदन बल॥ बल मूर्खस्य मौनत्व, तस्करस्यानृतं बल ॥ १ ॥ डुर्बलानामनाथानां, बालवृद्धतपस्विनां ॥ अनार्यैपरिनूतानां,सर्वेषां पार्थिवोगति ॥२॥ शकट पंचहस्तेन दशहस्तेन वाजीन ॥ कुंजर शतहस्तेन, देशत्यागेन डुर्जन ॥ ३ ॥ आचार कुलमाख्याति, देशमाख्याति जाषितं ॥ सन्ज्रम स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति जोजन ॥ ४ ॥ दूधेंतो धात वधे,घीयें वधे कोपरी ॥ गोलें तो गुंबर ब

धे, घेंशें वधे उफ री ॥ १ ॥ ढाल ॥ तेणें कारण चालो, एकाकी तुमें राय ॥ जो शक्ति होवे,तो विलंब बहु थाय ॥ ते डुष्टनें मारी,माहारी प्रिया मूकावो, सज्जन उपकारी, माहारुं राज्य अपावो ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सज्जन पर आपद देखीनें, अधिकु सौजन्य धारे ॥ ग्रीषमें तरु नव पल्लव होवे, आतप सहुनो वारे ॥ ते सांजलीनें राजा कोप्यो, मुज धरतीमां अन्याय ॥ केम करे एहवु माहारा राज्यनें, मोहोटुं कलंक ते थाय ॥६॥ढाल॥ देखाड तु मुजने, एहवो निग्रह कीजें ॥ क्षण मात्र न सहीयें,एणी परें राय वदीजें ॥ ठाना निकलिया, विप्रशुं लेइ समशेर ॥ महोटा जे बोले, तेहमां न पडे फेर ॥ ७ ॥त्रु० ॥ वन निकुंजनें मुख जई बोले,विप्ररायनें एम ॥ आ वनमा ठे माहारो नाई,तेणें हु पेसु केम ॥ बीहीक लागे तेणे इहांहिज रहेशुं, एम सुणी पेसे राय ॥ वनमां सघले खोल्यो पण ते, न लह्यो किणही गाय ॥ ८ ॥ ढाल ॥ नृप पाठो आव्यो, विप्र तिहां नवि देखे, नृप एम विचारे, इंड्जाल ए लेखे ॥ पुरनणी जव आवे, गगनथी एक विमान ॥ आव्यु तेहमांथी, नीकल्यो खेचर प्रधान ॥ ए ॥ त्रु०॥ आवि नृपने प्रणमी बोले, शाने करो विचार ॥ ए सघली माया ठे माहारी, हु लाव्यो एणें गार ॥ तेहनु कारण सांजल नरवर, वैताढ्यें नगर पचाश ॥ दक्षिणदिशि तेहमां रथनूपुर, चक्रवाल ते खास ॥१०॥ ढाल ॥ तिहां पवनवेग हु,बहुविद्याधर स्वामी ॥ दक्षिणदिशि खग सहु, माहारी आणाना कामी ॥ वज्रवेग माहारे सुत, बहुविद्या जेणें साधी ॥ कर्यु पाणीग्रहण, कीर्त्ति जगमां वाधी ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ हेमगिरिशृंगें हेमपुर थाप्यु, तिहां क्रीडे सुविशाल ॥ ठठे खमें पद्मविजयें कही, रंगें शोलमी ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां रूडी, सुणतां मंगलमाल ॥ पुण्यनां बलथी आगल वातो, सुंदर घणु सुरसाल ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४एद ॥

॥ दोहा ॥

॥ बलियो विद्यावलयकी, परिवृत बहु परिवार ॥ वसे जालंधर पुर वडुं, सुवर्ण मणिग्रह सार ॥ १ ॥ सार सूरि तस स्वामिनी,कामाक्षी श्रीकार ॥ योगिनी वृंद पूजे जिका, परिछदरूप अपार ॥ २ ॥ नगर मध्ये जुवनें रही, तेह जुवनपुर ताम ॥ पीठ सुवर्ण मणिमय प्रवर, योगिनी पीठ जग नाम ॥ ३ ॥ आराधक तिहां आवीनें, साधि योगिनी सहित ॥ पीठनें चिहु दिशि

परिसरें, वसे योगिणी वहनित्त ॥ ४ ॥ चोसठ ऋद्धिवंती चतुर, परगट बहु परिवार ॥ नाम ए तेहनां निरखीयें, सुणजो तास विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ हारे हारे साहेबा रे, गोकुल गामनें गोंदरे, जनला नदकिशोर रेलाल ॥ ए देशी ॥

॥ हारे हारे साहेबा रे, १ वाराहीने वली २ वामनी रे, ३ गारुडी ४ इंद्राणी नाम रे लाल ॥ ५ आग्नेयी ६ व्यामा वली रे, ७ नैरुती सातमे नाम रे लाल ॥१॥ योगिणी जगमां जागती रे लाल ॥ ए आंकणी ॥हा०॥ ८ वारु णी ९ वायव्या कही रे, १० सौम्या ११ ईशानी जाण रे लाल ॥ १२ ब्रह्म णी १३ वैष्णवी तेरमी रे, १४ माहेश्वरी मन आण रे लाल ॥योगि०॥२॥ हा० ॥ १५ वैनायकीनें १६ शिवा सुणी रे, १७ शिवदूती शिरदार रे ला ल ॥ १८ चामुंडी १९ जया जाणीयें रे, २० विजया २१ अजिता धार रे लाल ॥योगि०॥३॥हा०॥ २२ अपराजिता २३ हरसिद्धिनें रे, २४ कालिका २५ चंडाविचार रे लाल ॥ २६ सुचंडा छवीशमी रे, करे उपकार अपकार रे लाल ॥ यो० ॥ ४ ॥ हा० ॥ २७ कनकदंता २८ सुदंता २९ उमा रे, ३० घंटा ३१ सुघंटा सार रे लाल ॥ ३२ मांसप्रिया ३३ आशापुरी रे, ३४ लो हिता ३५ अंबा उदार रे लाल ॥ यो० ॥ ५ ॥ हा० ॥ ३६ अस्थिभक्षी ३७ नारायणी रे, ३८ नारसिंही सुप्रसिद्ध रे लाल ॥ ३९ कौमारी ४० वानरती सुरी रें, ४१ अंगा ४२ वंगा रिद्ध ईद्ध रे लाल ॥ यो०॥ ६ ॥ हा० ॥ ४३ दीर्घ दंष्ट्रा ४४ सुदंष्ट्रा नली रे, ४५ प्रभा ४६ सुप्रभा वरदाय रे लाल ॥ ४७ लं बा ४८ लंबोष्ठी ४९ भद्रा वली रे, ५० सुभद्रा वर काय रे लाल ॥ यो० ॥ ॥ ७ ॥ हा०॥ ५१ काली ५२ रौद्री ५३ रौद्रमुखी रे, ५४ कराली वली तेम रे लाल ॥ ५५ विकराला ५६ साक्षी भली रे, ५७ विकटाक्षी धरे प्रेम रे लाल ॥ यो० ॥ ८ ॥ हा० ॥ ५८ तारा ५९ सुतारा ६० रजनीकरी रे, ६१ रंजना ६२ श्वेता सुजाण रे लाल ॥ ६३ भद्रकालीनें ६४ क्षमाकरी रे, ए चोशठ प्रमाण रे लाल ॥ यो० ॥ ९ ॥ हा० ॥ काम रूपी ए पूजे जिके रे, ते जगमां पूजाय रे लाल ॥ विविध प्रकार वरदायिनी रे, दुःख दारिद्र पलाय रे लाल ॥ यो० ॥ १० ॥ हा० ॥ अणिमा लघिमा ऐश्वर्यता रे, व शिता गरिमा आदि रे लाल ॥ शक्ति विविध छे तेहनी रे, नवि पोहोंचे कोइ वादी रे लाल ॥ यो० ॥ ११ ॥ हा० ॥ पर्वत वननें समुद्रमां रे, इह

नदीनें कासार रे लाल ॥ द्वीप प्रमुखमां ए रमे रे, दिव्य शक्ति सा धार रे लाल ॥ यो० ॥ १२ ॥ ह्रां० ॥ कोपी नर लोकमां करे रे, मरकी प्रमुख उप सर्ग रे लाल ॥ तूठी दीये बहु संपदा रे, पुत्र कलत्रना वर्ग रे लाल ॥ यो० ॥ १३ ॥ रांकनें बीहिवरावे घणु रे, महोटानें दीये मोद रे लाल ॥ वेपक्रिया बहु जातिनी रे, करती विविध विनोद रे लाल ॥ यो० ॥ १४ ॥ ह्रां०॥ हेम शृंगगिरि क्रीडा तणु रे,योगिणीनुं ठे गाम रे लाल ॥ भुजपुत्रें अणजाणतां रे, तिहां वास्यु वर गाम रे लाल ॥ यो० ॥ १५ ॥ ह्रां० ॥ योगिणीयो को पी तदा रे, मरकी अतिशय कीध रे लाल ॥ लोक नाठां उपद्रवथकी रे, लेइ निज निजनी ऋद्धि रे लाल ॥ यो० ॥ १६ ॥ ह्रां० ॥ योगिणी वश क रवा नणी रे, श्रीपर्वतमां जाय रे लाल ॥ वज्रवेग विद्याधरू रे, तिहां ज्वालामालिनी गाय रें लाल ॥ यो० ॥ १७ ॥ ह्रां० ॥ तेहनी दृष्टि आगल रही रे, करे तिहां जापनें ध्यान रे लाल ॥ लाख बीलां होमे तिहां रे, करे मन इच्छित दान रे लाल ॥ यो० ॥ १८ ॥ ह्रां० ॥ एह रीति देवी तणी रे, वज्रवेग पण ताम रे लाल ॥ सामग्री सवि मेलीनें रे, वेगे जापनें गाम रे लाल ॥यो०॥ १९ ॥ ह्रां० ॥ योगिणी जाणे ते सवे रे, सातमे दिन तिहां आय रे लाल ॥ करे प्रतिकुल उपसर्गनें रे, पण न खोनाणो जाय रे ला ल ॥ यो० ॥ २० ॥ ह्रां०॥ ठे खंमें ए कही रे,सत्तरमी वर ढाल रे लाल॥ पद्मविजय कहे सांनलो रे, आगल वात रसाल रें लाल ॥ यो० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जालिम तुमें योगिणी कहे, रूप अनोपम धार ॥ तूठी छु तुम उपरें, साहसिकमां शिरदार ॥१॥ नत्तीं तुम करी नोगवु,नोग नला मन नावि ॥ रूप लखमी सफली करु, परगट अवसर पावि ॥२॥ सेवा करशुं साचली, छुर्लन दैवत नोग ॥ नर रूपें नोगवी नवल, शुन पामी संयोग ॥३॥ क्लेश फोकट कहो कोण करे,ध्यान तपादिक धार ॥ मोदक पामी मानवी,वाल न रांधे किवार ॥४॥ आलिंगन दे उठि तु,रागिणी अमें रसाल ॥ खारां जल पीधां खरां, नलां अमृत तु नाल ॥ ५ ॥ एम कही नाटक आदस्यु, गाये मोहन गीत ॥ नेउर कंकण रण फणे, चमके जिणथी चित्त ॥ ६ ॥ काम उद्दीपन कारिमु, सांनली लागो स्वाद ॥ कंदर्पनें वश थई करी, नवि बोले

ज्यां नाद ॥ ७ ॥ हसती बांधे होंशथी, निगडित करीनें नार ॥ निज वन मां नाखियो, क्रीडा करे फिवार ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५३० ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ तुं कुलमांहे ऊपनी, ऊपजीनें तें खोयु हो परियागतनुं पाणी हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ में ते जाणी वातडी, विविध प्रकारें पुजा हो, स्तवना पण बहु कीधी हो राज ॥ पुत्र मूकावण कारणें, सतोषी घणु तेहनें हो, पण नवि जाये लीधी हो राज ॥ १ ॥ हवें वैताढ्यनो अधिपति, उत्तरश्रेणिमां सार हो, गगनवल्लभपुर राजे हो राज ॥ चक्रायुध तिहां राजियो, सर्व विद्याधर स्वामी हो, चक्री नाम ते गाजे हो राज ॥२ ॥ ज्योतिषीमां सूर्य परें, कल्प वृक्ष जेम तरुमां हो, हरि जेम मृगमां वलियो हो राज ॥ मेरु जेम पर्वत मांहे, तेम ए सम अथ अधिको हो, बल विद्यायें न कलीयो हो राज ॥ ३ ॥ विद्याधरमां को नहीं, नूचरनी शी वात हो, उत्तय श्रेणि तस सेवे हो राज ॥ मुजरो करी में विनव्यो, मुज सुतनें मूकावो हो,तव मुज उत्तर देवे हो राज ॥४॥ मूकावीश तुज पुत्रनें, योगिणीनो शो नार हो, एणी परें मुजनें नाख्यो हो राज ॥ एम बहु वार में प्रेरीया,एहनो एहज मुजने हो, उत्तर फरि फरि दाख्यो हो राज ॥५॥ विषयादिक परमादथी,महोटानें शुं क हीयें हो,शक्तिनो सन्नव आवे हो राज ॥ पण मुज सरिखा मानवी,शक्ति अश क्ति न जाणे हो, कांयें सहु चित्त नावें हो राज ॥६॥ वज्रसुंदरी माहरे,सुर सुंदरीने सरखी हो, सुर जूवे अनिमेष नयणें हो राज ॥ पुत्रनी अनुजा तेह ले,सर्वगुणें करी सरखी हो, शु कहु जाझु वयणें हो राज ॥ ७ ॥ जैन धर्म रुचि तेहनें, जैनकलामां कुशला हो, नाटयकला सुविशेषें हो राज ॥ नंदनवननी धरतीयें, बहुतरुमांहे कल्प हो, वृक्षनी श्रेणिनें लेखे हो रा ज ॥८॥ चक्रायुद्ध ते सांनली,दूतमुखें मुज याचे हो, तव में चित्त विचायुं हो राज ॥ बहु पत्नी होये जेहनें, त्रिगुणाधिक जस वये हो, तेहनें देवी न धार्युं हो राज ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ वपु शील कुल वित्त, वयो विद्या सना थता ॥ एतानि यस्य विद्यते,तस्य देया निजा सुता ॥ १ ॥ मूर्ख निर्धन दूर स्थ, बहुनार्याशिवार्थिनां, त्रिगुणाधिकवर्षाणां, चापि देया न कन्यका ॥ ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ जेम तेम ना न कही शकु, पृथिवीनो पति बलीयो हो, दूतनें उत्तर वाल्यो हो राज ॥ योगिणीयें मुज पुत्रनें,राख्यो ले ते उःख हो,

मुज हृदयमां साल्यो हो राज ॥ १० ॥ सांजरे नहीं विवाहनी, वात ते सु जनें स्वामी हो, सुत मूकावो माहारो हो राज ॥ सर्व पछी सारु थशे, दूतें पण जई जांख्युं हो,दीधो छे एम लाहरो हो राज ॥ ११ ॥ माहारी सजा मां एकदा, निमित्तियो एक आव्यो हो, जाव्यो चित्तमां काजें हो राज ॥ फल पुष्पादिक ढोश्यां, देइ सत्कारने पूछ्युं हो, कारय दोय मुज राज्यें हो राज ॥ १२ ॥ मुज सुत कोण मूकावशे, कोण मुज पुत्री वरशे हो, कहो ते चित्तमां धारी हो राज ॥ निमित्तियो कहे ए बिहु, एकज प्राणी करशे हो,में कह्यु ताम विचारी हो राज ॥ १३ ॥ उंलखशुं कहो केणी परें,निमि त्तियो कहे सुणजो हो,वांधी पद्मरथ नृप हो राज ॥ जेह पमाडशे धर्मनें, वली श्रीपतिनृप जींते हो, निजकला दाखी अनूप हो राज ॥ १४ ॥ कन्या त्रण तस परणशे, ते तुज सुत मूकावी हो, तुज पुत्री पण वरशे हो रा ज ॥ सांजली बहु आणदियो, ए जाणु एह काम हो,एवहा महोटां करशे हो राज ॥ १५ ॥ फल अलकारें तापियो, में हवे कीधी तेहनी हो, छुद्धि ते सघले जाणी हो राज ॥ ज्ञानी वचननें लक्षणें,तुजने उंलखी निश्च हा, मिश करी लाव्यो ताणी हो राज ॥१६॥ मात पिता जो तुज जाणे,तो जा वा नवि आपे हो,लाव्यो तेणें एकाकी हो राज ॥ पुत्र मूकावो माहरो,अव नीमां उपकारी हो, मूको सर्व ते वाकी हो राज ॥ १७ ॥ नदी जल वहे पण नवि पिये, वृक्ष फले नवि खावे हो, जोगवे रयण न खाणी हो रा ज ॥ पर उपकारनें कारणें, सतना जनम ते कीधा हो, एहवी ग्रंथे वाणी हो राज ॥ १८ ॥ क्लेश पोतानो नवि गणे, पर उपकारनें माटे हो, सज्जन तरुवर सरिखा हो राज ॥ छाया फल दीये पर जणी, खमे तडकानें शीत हो,वली खमे अतिशय वरषा हो राज ॥१९॥ दु ड खियामां शिरोमणि,सम रथ परदु ख हणवा हो, तु मल्यो बिहुनो योग हो राज ॥ हवे निज उ चित करो तुमें, साजली चिंते राजा हो, परउपकारी लोग हो राज ॥ २०॥ शूरनें जेम सग्रामनो, नैयायिकनें साहमो हो, वादी आवे जेम हो राज ॥ दानशाला मली क्षुधितनें, रोगीने मल्यो वैद्य हो, डुर्गतिनें निधि प्रेम हो राज ॥ २१ ॥ अवसर पर उपकारनो,महोटा पुरुषनें आवे हो, उत्सव स रिखो जाणे हो राज ॥ एक दिशि पर उपकारनें,वीजी दिशि सहु पुण्य हो, तोले सुर कोइ टाणे हो राज ॥ २२ ॥ पर उपकार वधे घणो,सविजाग नवि

कीजे हो, पुण्य उपार्जन वेला हो राज ॥ जोना मात्र ने शूरनें, तेहनो परिवार हो, काम करे एकेला हो राज ॥ २३ ॥ एम विचारीने कहे, पर पकारनें काजें हो. हुं समरथ हु एक हो राज ॥ एम कही खेट विमानमां, वेशी चाल्यो साथे हो, महोटो धरिय विवेक हो राज ॥ २४ ॥ लेख सहित कोइ खेटनें, पवनवेग ते मूके हो, नृपना तातनी पासें हो राज ॥ धीरज देवा कारणें, श्रीनगें पोहोता तेह हो, आगल मंगल थाशे हो राज ॥२५॥ छठे खमें अढारमी,श्रीजयानंदनें रासे हो,पद्मविजयें कही ढाल हो राज ॥ सुणता शाता उपजे,पुण्यवंतनी वात हो,दिन दिन रंग रसाल हो राज २६

॥ दोहा ॥

॥ पवनवेग कहे नृपप्रत्यें, विद्यावारु एक ॥ मुज पासे छे मोटकी, साधो ते सुविवेक ॥१॥ साधवा हु समरथ नहीं,ज्वालामालिनी जोर ॥ वश पासे विद्यायकी, नमशे करी निहोर ॥ २ ॥ योगिणी पण वश जेहनें, सा सथी ते सधाय ॥ तेणें ए ल्यो तुमें तुरतमां, साधन विधि समुदाय ॥ ३ ॥ नृप लेइने एम भणे, बीजांदिक बहु वार ॥ कोण होमशे मुजनें कहो, पापी पाप अपार ॥ ४ ॥ सत्त्वें विद्या सिऊशे, सत्त्व धरी सहु सार ॥ एम कही विधें आराधवा, ततक्षण थया तैय्यार ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ५९१ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ पत्नीसंयुत पोसह लीधो ॥ ए देशी ॥

॥ स्नानादिक करी उपवास कीधो, देवीनी पूजा करीजी ॥ साधर्मिणी बुद्धे विविध प्रकारें, नक्ति घणी चित्तमां धरीजी ॥ १ ॥ क्षेत्राधिष्ठायक प्रमुखनां काउस्सग्ग, करीनें सुख पूरवदिशेंजी ॥ आतम रक्षा करी परमेष्टी पदथी, देवी मंदिरें उपविशेजी ॥ २ ॥ झाजनें आसन पद्मासन करी, विद्या जाप हवे करेजी ॥ मन थिर राखी ध्यान धरीनें, मुद्रा प्रमुख विधि धरेजी ॥ ३ ॥ बीजे दिन हवे योगिणी जाणी, आवे तिहां शंका करेजी ॥ जो ए विद्या सिद्ध ते थाशे, तो अमें वश थाशुं खरीजी ॥ ४ ॥ प्रतिकूल उपसर्ग करवा मांमे, खोजना करवा कारणें जी ॥ साप सहिकडो महोटी काया, फुत्कारा नस धारणेजी ॥ ५ ॥ वींटी वींटी करडे नृपनें, दाढथी नांगे निर्विष होयजी ॥ नांगे दाढनें मणि पण त्रूटे, उंसरे तिहां न फरी जूयेजी ॥ ॥ ६ ॥ जैननी रक्षाने परजावें, परानव करी शकीया नहींजी ॥ पंच परमेष्ठि पण मंत्र ते मोहोटो,एहवो महिमा जग नहीं कहींजी ॥ ७ ॥ गर्जारव

करता गज मूके, वींधे दंतुसलें करीजी॥ शूंढानें वली चरणे मर्दे, पण न चाल्या दृढता धरी जी ॥ ८ ॥ घोर शब्द करता वाघ मूके, तीखी दाढें विदारताजी॥ नखथी घात करी करी थाका, पण रोम पण न सचारता जी॥ ९॥ ज्वलती अग्नि विकूर्वे योगिणी, त्रट त्रटकार घणा करेजी॥ धूम्र आडाथी अंधित दिशिगण, ज्वाला चिहुं दिशि सचरेजी ॥ १०॥ महा तापें पण ध्यानें न चलीयो, अचलपरें नरराजीयोजी ॥ रौद्ररूप करी आवे ते द्दवे, नादथी पर्वत गाजीयोजी ॥ ११ ॥ ज्वलती आंख्यो भयंकर दाखे, वदनें अगनि ते वरसतीजी॥ पर्वत दरि सम वदन देखाडे, सत्त्वव त सत्त्वकर सतीजी॥ १२ ॥ डम डम वाजे डमरुक वाद्य, पहलंदा उठे घणाजी॥ अट्टाट हास्यथी फेत्कार मूके, वध तूटे गगन तणाजी॥ १३ ॥ हाथमां भालां खड्गनें तोमर, मोघर कपावे घणुजी॥ पदघातें करी धरती कपावे, वयण बोले मुखें ते भणुजी ॥ १४॥ अम्ह पूज्या विणु विद्या साधे, रे मूढ उठ तु जा परोजी॥ नहीं तो मारशु तुजनें कहेती, दाखवें भय तस आकरोजी ॥ १५॥ मारवा दोडे करे प्रहार, लागें तस अंगें नहींजी॥ ध्यान एकाग्रें जैननी रक्षा, सत्त्व धरे चित्त गहगहीजी॥ १६॥ तेह पुरुषथी देवें न चाले, कोण मातर ते योगिणीजी ॥ १७॥ त्रण दिवस एम उपसर्गे काढया, रोम मात्र पण नवि चल्योजी॥ खेद लहीनें चितवे चित्तमां, एतो मेरु सम अटकल्योजी॥ १८॥ दिव्यांगनानां रूप करीनें, सर्व अलंकारें सोहतीजी ॥ चंदा वयणी कमल पांखडी, आंख डीथी मनमोहतीजी॥ १९॥ कंचन वरणी रूप यौवन वय, सुभग आ कार सवि अगनाजी॥ कंचुकडी पीनस्तनी वली, पहेर्यां वस्त्र नाना रंगनां जी ॥ २० ॥ हसगति जस कोकिल स्वरथी, गीत गाये एम उच्चरेजी ॥ जयजय स्वामी अहो तुज धीरज, सत्व शौर्य गुण सहु शिरेंजी॥ २१ ॥ अम अपराध ते खमजो स्वामी, उपसर्ग कारणें अमें कर्खोजी॥ हेतु सां भल नर अमें खोळु, रूप यौवनथी अलकस्योजी॥ २२ ॥ सत्ववंत तु उ पसर्गे न चल्यो, स्वामी करी क्रीडा करुंजी॥ अम नारीपणे अगीकर तु, तुज आणा अमें शिर धरुंजी॥ २३ ॥ नरनें दुर्लभ भोग ते सुरना, स्वेच्छायें तुमें भोगवोजी॥ तादारे वश अमें सघली जाणे, जन्म लगें ते जोगवो जी॥ २४ ॥ धन धन श्रीजयानंद नृपतिनें, इणे वचने पण थिर रह्याजी॥

प्रतिकूल अनुकूल विविध प्रकारें, कीधा उपसर्ग सहु सह्याजी ॥ २४ ॥ छ्ठे खमें उगणीशमी ए,ढाल पद्मविजयें कहीजी ॥ योगिणीयो वली जे जे बोले, ते सांनलो आगल सहीजी ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्लेश विद्या साधन करे, थानें अमें हु सिद्ध ॥ सहु विद्या अमची सधे, निपजे वली नवनिध ॥ १ ॥ आपु बहु विद्या अमें, पारसिद्ध तम नाव ॥ जेहथी वश करी जगतनें, छुगतें थाशो जमाव ॥२॥ मनवंछित मनो हारिणी, नारी परणो अनेक ॥ आकरषु जगने अमें, उपल जे होये छेक ॥ ३ ॥ दूर ते पासें दाखवु, अम नोगनो अनुनाव ॥ जरा न आवे तस श रा, वलक्षयनो न बनाव ॥ ४ ॥ हानि न इंड्रियनी होये, आमय नावे अं ग ॥ काम सेवे कदर्प वधे, रूडो करियें रंग ॥ ५ ॥ सुख नोगव अम साथ तु, शक्रनें इंद्राणी सोय ॥ बहुरूपें सुगपत् बहु, होंशें रमवु होय ॥ ६ ॥ विविध वचन एहवां सुणी,जगतनें मोहे जेह ॥ नरीयें जलनृत कुनमां, तेम नृप न ढव्या तेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ वेण म वाइश रे, विठल वारुं तुजने ॥ ए देशी ॥

॥ हृदयनें स्तन आगल कांइ नीडे, कांइक चुंबन करती ॥ कांइक आ लिंगन वली करती, नयणें नेह धरती ॥ १ ॥ अमें नलें दीठा रे, मनमो हन प्रनु तुमनें ॥ ए आंकणी ॥ वीणावंशने पडह वजावे, नाटक करे अम वाली ॥ गीत गाये एम मोहन केरां, फूदडी दीये दीये ताली ॥अमें०॥२॥

॥ अथ गीतं ॥ आवी चोशठ योगिणी, नित्य विलसु नवनव नोगिणी ॥ अमें कामज्वर रोगिणी, रति न लहु तुम वियोगिणी ॥ १ ॥ एम गाये रंगें कामिणी, नव यौवन नझे योगिणी ॥ अमें रंना गोरीअ अंगिणी, सोना गी नरशुं रंगिणी ॥ २ ॥ तुम रूप सौनाग्यें राचती, इहां आवी हर्षे ना चती ॥ तुं प्रियतम पामी मलपती, नवि मूकुं कहमवि जीवती ॥ ३ ॥ वर चंपक सोवन गोरडी, गुण गाती नांजर नोलडी ॥ पयसेव करेशु तोरडी, अमें बु सोहग ठोरडी ॥ ४ ॥ अम अंग सुगंधें महमहे, दिशि पसरें परि मल जे वहे ॥ नव पउमणी मालती केवडो, हिमवालुअ मृगमद केवडो ॥ ५ ॥ अम पायें नेऊर रणझणे, कर कंचन कंकण रणरणे ॥ उरें मो तीहार सुलहलहे, तुम देखी हैयडां गहगहे ॥ ६ ॥ अम कानें कुमल कल

हसें, तनु मनमथ कंमू खल नले ॥ अम माथें फलके राखडी,गले फबकती माणिक पदकडी ॥ ७ ॥ अति शोहती निलवट तिलकडी, मणिमेहलें मोहे कटितडी ॥ भुजें अगद ज्यु अलि मणि जडी, अम सांजल पियुडा वातडी ॥ ८ ॥ अम अंगुली दीपे मुद्दडी, तुम विरहें नावे निद्दडी ॥ मणि सोवन खलकती चूडली, प्रिय पामीअ पुण्ये रूअडी ॥ ए ॥ उत्कंठित आवी वहेल डी, घण लाम्ह ते प्रेम गहेलडी ॥ रंगें नाचु लोहत बांहडी, तुम करशु हाथे ढांहडी ॥ १० ॥ अमें कत तुमारी दासडी, शिर वहेशु तुमची खासडी । तुम लोपु आण न लीहडी, उर धरशु तोरी शीखडी ॥ ११ ॥ अम सा हासु जोय ने सामिया, ते अलवें अमें सवि पामियां ॥ अमें देवदेवीनी सामिणी,तुज आवी शे वर कामिणी ॥ १२ ॥ उठ उठनें कता करी कृपा, अम परण तुं मेहेली हवे त्रपा ॥ अमें तेवड तेवडी वेहेनडी, सवि एकमनी सवि नानडी ॥ १३ ॥ अमें काल विलंबण नवि सहु, तुम आगल परमज हवे कहु ॥ अम जीवितनें धरि हाथडी, कर तेहीनें आपण साथडी ॥१४॥ सुरसुंदरी चग सोनागिणी, कत कां कवेखे सुरागिणी ॥ अमें जीवुं शरणें तुम तणे, हवे पडिवज जोइणि एम नणे ॥ १५ ॥ इति गीतं ॥

॥ पूर्वढाल ॥ सुस्वर जनकुतुहलनें काजें, नृपनुं जे वड शील ॥ दृढता कहेवा गीत ए जांख्युं, जिनधर्मे प्रियनी लील ॥ अ० ॥ ३ ॥ सना जोइनें कहेवुं सघले, जेम तेम कहेवु नाहीं ॥ राग वसतादिक वर ढालें, गावा सुस्वरें आहि ॥अ०॥ ४ ॥ अग हारादिक विभ्रमें मोहन, मृतकदर्प जगावे ॥ एहवां त्रण दिवस लगें गाइ, तनमय तान लगावे ॥अ०॥५॥ गाइ गाइनें थाकी सघली,नाची नाची खेहाणी ॥ वज्रनें टंक न लागे तेम नृप,रोम न चलियुं जाणी ॥ अ०॥६ ॥ सातमे दिन हवे तूठी देवी,महाज्वाला अभिधानें॥ शिर उपर करे सूरय वदयें, पुष्पवृष्टि बहु मानें, मेंतो नलें दीठो रे॥म०॥७॥ ए आंकणी ॥ करती दश दिशिमां अजुआलु, रूप प्रगट देखावे ॥ सिद्ध विद्याशु जब ते आवी, योगिणी नाठी जावे ॥ में०॥८ ॥ महाज्वाला मधुरे स्वर बोले, हू तूठी तुज राय ॥ शील ध्यान थिरता तुज देखी,पण सुण तु थिर थाय ॥ में० ॥ ए ॥ हे वत्स वर देइ नवि शकीयें, विधि कीधा विणु तुजनें ॥ जो वर इछे तो विधि कर तुं, नृप कहे विधि कहो मुजनें ॥ में० ॥१०॥ एक जीवनु मांस जो आपे, तो मुज ऊपजे प्रीत ॥ राय कहे हु जैन हु जा

चो, सहु जीव माहारा मित्त ॥ में० ॥ ११ ॥ विण अपराधी जीव न मारुं, जो तुज जोइयें मांस ॥ तो मुज तनु छेदीनें आपुं, इयानें करे विसास ॥ ॥ में० ॥ १२ ॥ देवी कहे तो एमज कर तुं, तव नृप लीये करवाल ॥ छेदे वरु तव खड्ग वजालो, लीये देवी उजमाल ॥ में० ॥ १३ ॥ देवी कहे हुं पण हु जैनी, मांसनो खप नहीं माहारे ॥ दया सत्वनें जैन धर्म तुज, परख्यो में धरी प्यारें ॥ में० ॥ १४ ॥ जगत वीर साधर्मिक माहारो, पा वसिद्धि देउ विद्या ॥ योगिणी प्रमुख आकर्षणी ले तु, तव नृप प्रणमे अनिद्या ॥ में०॥१५॥ पूजा देई विधि पूर्वक विद्या,लिये हर्षे नृपाल ॥ देव ता प्रमुख त्रिविध हरे उपद्रव, वाजुबध तेणें ताल ॥ में०॥ १६ ॥ सूर्यहा स वली खड्गने आपे, चक्र दिये वर धार ॥ वैरी चक्र निकंदन करवा, शस्त्र शिरोमणि सार ॥ में० ॥ १७ ॥ शक्ति शस्त्र आपीनें देवी, अदृश्य मान ते थाय ॥ दिव्य मूर्ति हवे पूजे राजा, स्तवना करे सुखदाय ॥ में० ॥ ॥ १८ ॥ ज्वालामालिनी विद्या बोले, लक्षादिक जप होम ॥ करतां पण को इकनें सीफुं, बहुनें थाउ जेम व्योम ॥ में० ॥ १९ ॥ ताहरे अल्प प्रयासें सीधी, दृढधर्मा तुज जाणी ॥ आकर्ष्या सुर आवशे ताहरे, विद्या तिजशे शाणी ॥ में० ॥ २० ॥ एम कही रायनां दिलमां पेठी, इच्छित आपे समरी ॥ विश्वमां अर्थ ते आपे रूठी, बलवती ए अमरी ॥ में० ॥ २१ ॥ हवे दे वीनी मूर्ति पूजी, वली जे देव होय पासें ॥ वली प्रमुखें सतोषी निसरे,देव गृहथी उल्लासें ॥ में० ॥ २२ ॥ छठे खंडें वीशमी जांखी, पद्मविजय कहे ढाल ॥ सुंदर ए तुमें श्रोता सुणजो, आगल वात्त रसाल ॥ में० ॥ २३ ॥ ए ढालना दोहा सात अने वच्चमां गीतनी गाथा पंदर मली पीस्तालीश गाथा थइ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर परिवारशु, प्रणमे आवी पाय ॥ सिद्ध विद्या थइ सुखथकी, प्रश्न नृप पूछाय ॥ १ ॥ नृप पधारथयो जगो,चमत्कार लह्या चित्त ॥ स्तव ना नृपनी सहु करे, परगट धरता प्रीति ॥ २ ॥ पूजी जिन प्रणमी गुरु,सा गर सम गंभीर ॥ आहार करे दिन आठमे, विद्याधरशुं वीर ॥ ३ ॥ अपर विद्या आपे वली, शुभ मुहूर्त्त शुभवार ॥ आकाशगामिनी आदि दे, सि द्धविद्या श्रीकार ॥४॥ मासे सिजे मेहनतें, ते साधे ततकाल ॥ शील तथा

वली सत्वनें,परजावें नरपाल ॥ ५ ॥ धरणीधव जालंधरें, पवनवेगशुं पत्त ॥ पोतें रही विद्या प्रगट, सनारे धरी सत्त ॥ ६ ॥ तस अनुजावें ते तुरत, आकर्षणी आय ॥ जगतीपति कहे योगिणी,सांजलो रे सुखदाय ॥७॥ पवनवेगना पुत्रनें, मूको हृदये मानि ॥ नहीं तो हुं मूकु नहीं, सुणजो साची वाणि ॥ ८ ॥ अगदना अनुजावथी, उपद्रव न कस्यो अंश ॥ मूकुं कहे मूको तुमें, स्वामी तुमें शुनवश ॥ ए ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ मूके श्रीजयानदजी रे, योगिणी गइ निज गाम ॥ मनना रंगी ॥ बेडी नांगी तेहनी रे,लावी नृप पुर ताम ॥ १ ॥ सुखना सगी ॥ आवो आवो रे सजन सुखसगी, कीजें वात एकांतें सुरंगी, गुणीसगें वाधे प्रीति ॥मन० ॥ ए आंकणी ॥ नूपतिनें वली तातनें रे, चरणे लागो तेह ॥म०॥ पवनवेग निजपुत्रनें रे, आलिंगे घणे नेह ॥ सु० ॥आ०॥ २ ॥ पुत्र आगल सघलो कहे रे, निज व्यम अवदात ॥ म० ॥ नूपनें लाष्यो एणी परें रें, ते सघली कही वात ॥ सु० ॥ आ०॥ ३ ॥ कोइ न मूकावी शक्यो रे, योगिणी घरथी तुज ॥ म० ॥ राजराजायें मूकावियो रे, मेहेर करी बहु मुज ॥सु०॥आ०॥४॥ प्राण दीयां वत्स तुजनें रे, वज्रवेग सुणी एम ॥म०॥स्तवना करे नर रायनी रे, वज्र वेग धरी प्रेम ॥ सु० ॥ आ० ॥ ५ ॥ जाये गगनें जे टले रे, योगिणी बोले ताम ॥ म० ॥ नाग्यें अम तुम पामीया रे, आवो अमचे धाम ॥ सु० ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्राहुणा गति करु तुम तणी रे, नूपति करे विचार ॥ म० ॥ प्रार्थना नंग न कीजीयें रे, एम करी कहे हाकार ॥ सु० ॥ आ० ॥ ७ ॥ योगिणी निज हाथें करी रें, स्नानादिक प्रतिपत्ति ॥ ॥ म० ॥ अमृत सम आहारें करी रे,करती अतिशय नत्ति॥सु०॥आ०॥८॥ गीत नाटकें संतोषिया रे, हुवे रहेवानें रात ॥ म० ॥ वाराही नुवनें नूपति रे,राख्या जगत विख्यात ॥ सु० ॥ आ० ॥ ए ॥ विद्याधर ब्राह्मी घरें रे, रातें राख्या दोय ॥ म० ॥ शय्या सुगधी मृडु घणी रे, तिहां सूआस्या सोय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १० ॥ कामाक्षा स्वामिनी कन्हे रे,जोगिणी जइ कहे तेह ॥ म० ॥ निज परानव आकर्षवु रे, हरथी लीधो जेह ॥ सु०॥ आ०॥ ॥ ११ ॥ कामाक्षा कहे क्रोधथी रे, शीलभ्रष्ट करु तास ॥ म०॥ तुमनें सोंपुं बांधिनें रे, इछित करो करी दास ॥ सु०॥ आ०॥ १२ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक

सवे रे, देखी माहारुं रूप ॥ म० ॥ मूळाइ रहे मनथकी रे, कोण मातर नर नूप ॥ सु० ॥ आ० ॥ १३ ॥ एम आश्वासना देइनें रे,आवी जिहां छे नूप ॥ म० ॥ विश्वमोहन परगट करे रे, कामाक्षा निज रूप ॥ सु० ॥ ॥ आ० ॥ १४ ॥ काम जगावे योगिणी परें रे, एहवी चेष्टा करत ॥ म० ॥ चार पोहोर नोग प्रार्थना रे, करी पण नवि खोन्नत ॥ सु० ॥ आ० ॥ १५ ॥ शील अमृत जेणें स्वादीयु रे, ते केम ठांनयु खाय ॥ म० ॥ जैन जीवित तजे आपणुं रे, परस्त्रीयें पण न लेपाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १६ ॥ थाकी प्रात समय हवे रे,शीलथी अचरिज थाय ॥ म० ॥ स्तवना करती आपी यो रे, लोह मोघर वज्रकाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १७ ॥ अक्षय बाण नाथा बिहु रे, वज्रपृष्ठ धनु दाय ॥ म० ॥ आग्नेय नाग पाशादिका रे, दिव्य श स्त्र समुदाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १८ ॥ आप्यां अनेक शस्त्र नूपनें रे, ठहे खंर्ने ढाल ॥ म० ॥ एकवीशमी परें कहीरे,शीलथी मगल माल ॥ सु० ॥ आ० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुष्ट ज्वर कम्मू हरे, वन्हिदाह व्रण जाय ॥ शीत आतप जल क्लेश सवि, सहरे उपजे साय ॥ १ ॥ सर्व अगें सुख दे फरस, अविनाशी उद्योत ॥ नहीं मलिन नयुर नही, जेहनी जागती ज्योत ॥ २ ॥ एहवां वस्त्र ते आपती, वारु करी वखाण ॥ आपे बहु अलंकारनें,पुण्य तणे परिमाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हमचडीनी देशी ॥

॥ मरकी वारवा मुकुट ते आपे, कुंमल ज्वरने टाले ॥ कुष्टादिक व्याधि हरे तेहवा, कंठ आनूषण आले रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥ जेर हरण मुद्रा ते आपे, वली केयूर उदार ॥ शाकिणी माकिणी व्यंतर प्रमुखना, दोषने टालण हार रे ॥ ह० ॥ २ ॥ घातनां व्रण पूराये सहेजें, कटक जडाव ते आपे ॥ सर्व वश थाये वली एहवो, हार गलामां थापे रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ जे वांकां होय ते थाये सरलां, आपे कटि कंदोरो ॥ एम सप्रनाव अलकृत रे तां, वाध्यो पुण्यनो जोरो रे ॥ ह० ॥ ४ ॥ देवता तूग छे नवि आपे, वली रायनुं शील ॥ तास प्रनावथकी होये सघले, जयजयकार सलील रे ॥ ह० ॥ ५ ॥ अर्ध्यपूजा दीधी जव रायें, तव ते अदृश थाय ॥ जइ योगिणीनें कामाक्षा कहे, हैयहेहर्ष न माय रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ शील चलाववा हेतें एह नो, बहु उद्यम में कीधो ॥ पण न चलावी शकी हुं एहनें, एह केम जाये

लीधो रे ॥ ह० ॥ ७ ॥ वायुथकी जेम मेरु न चले, तेम ए धर्मे धीर ॥ आराधी सत्कार करो तुमें, एह महा वडवीर रे ॥ ह० ॥ ८ ॥ उत्तम क्षेत्र एहनें जाणी, वावो बीज ए गाम ॥ फलवलु ए बोहोलुं थाशे, आवशे आगल काम रे ॥ ह० ॥ ९ ॥ तास वचन प्रमाण कर्युं तव, तेह गइ गुण काम ॥ कामाक्षा निज थानक पोहोती, शुद्ध वासना धाम रे ॥ ह० ॥ १० ॥ तेह पीठ उपर क्षण वेग, दोय विद्याधर राय ॥ योगिणीयो मुख आगल आवे, चमत्कार चित्त लाय रे ॥ ह० ॥ ११ ॥ सघली नेली मली खमावे, आपे ते अलंकार ॥ दिव्य वस्त्र तेम भिन्न भिन्न सवि, आपे अति धरी प्यार रे ॥ ह० ॥ १२ ॥ ते सघलु अंतेउर काजें, दिव्य शस्त्र दिये ताम ॥ अदृश प्रमुख शक्ति बहु आपे, करती सहु गुणग्राम रे ॥ह०॥१३॥ पूजा स्तवना करी सतोषी, वज्रवेगें सुरनारी ॥ तेहवें मत्सर रहित थइ वली, रायनु दाक्षिण्य धारी रे ॥ह०॥१४॥ हेमकूट गिरि उपरें आपे, नृप वयणें तस गाम ॥ अर्घ्य दिये तव अदृश थाये, जाये निज निज धाम रे ॥ ह०॥ ॥ १५ ॥ सरसां गीत ए नृप चरित्रनां, बांधे रासा बंध ॥ गिरि वन प्रमुखें क्रीडा करती, योगिनी गाय प्रबंध रे ॥ ह० ॥ १६ ॥ खेचरी योगिणी पासें शीखे, एह चरित्र रसाल ॥ खेचरी पास मनुष्यणी शीखे, चित्त धरी प्रेम विशाल रे ॥ ह० ॥ १७ ॥ प्रसिद्ध थयुं ए चरित्र भुवनमां, हवे ते त्रिहु जण आवे ॥ हेमकूट नग उपर हेमपुर, पूरव रीतें वसावे रे ॥ ह० ॥ १८ ॥ श्रीजगुर्णे एम विद्या औषधि, पाम्या वली सत्कार ॥ आपद सघली दूर पलाणी, हूआ जयजयकार रे ॥ ह० ॥ १९ ॥ एम जाणीनें शील धरो तुमें, इह परभव सुखकारी ॥ शीलें विघन टले वली संपद, आवे अति उपकारी रे ॥ ह० ॥ २० ॥ छठे खंमें बावीशमी ए, नांखी रूडी ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां सुणतां, होवे मंगलमाल रे ॥ ह० ॥ २१ ॥ सत्यविजय पन्यास संवेगी, कपूरविजय तस शिष्य ॥ तास शिष्य श्रीखिमाविजय वर, चढती जास जगीश रे ॥ ह० ॥ २२ ॥ तास शिष्य पंमित जिनविजयो, सोभागी शिरदार ॥ पंमित उत्तमविजय सोभागी, समता गुण भंमार रे ॥ ह० ॥ २३ ॥ तेहना चरण कमलें अलि सरिखो, पद्मविजय ए भाख्यो ॥ छठो खंम ए पूरण कीधो, गुणिजनें चित्तमां राख्यो रे ॥ह०॥२४॥ ६८७ ॥

सवे रे, देखी माहारुं रूप ॥ म० ॥ मूंझाइ रहे मनथकी रे, कोण मातर नर नूप ॥ सु० ॥ आ० ॥ १३ ॥ एम आश्वासना देइनें रे,आवी जिहां छे नूप ॥ म० ॥ विश्वमोहन परगट करे रे, कामाक्षा निज रूप ॥ सु० ॥ ॥ आ० ॥ १४ ॥ काम जगावे योगिणी परें रे, एहवी चेष्टा करत ॥ म० ॥ चार पोहोर नोग प्रार्थना रे, करी पण नवि खोन्नत ॥ सु० ॥ आ० ॥ १५ ॥ शील अमृत जेणें स्वादीयुं रे, ते केम ढांकयुं खाय ॥ म० ॥ जेन जीवित तजे आपणुं रे, परस्त्रीयें पण न लेपाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १६ ॥ थाकी प्रात समय हवे रे,शीलथी अचरिज थाय ॥ म० ॥ स्तवना करती आपी यो रे, लोह मोघर वज्रकाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १७ ॥ अक्षय बाण नाथा बिहु रे, वज्रपृष्ठ धनु दाय ॥ म० ॥ आग्नेय नाग पाशादिका रे, दिव्य श स्त्र तसुदाय ॥ सु० ॥ आ० ॥ १८ ॥ आप्यां अनेक शस्त्र नूपनें रे, ढले संगें ढाल ॥ म० ॥ एकवीशमी पर्से कही रे,शीलथी मगल माल ॥ सु० ॥ आ० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुष्ट ज्वर कमू हरे, वन्हिदाह व्रण जाय ॥ शीत आतप जल क्लेश सवि, सहरे उपजे साय ॥ १ ॥ सर्व अगें सुख दे फरस, अविनाशी उ द्योत ॥ नहीं मलिन नगुर नही, जेहनी जागती ज्योत ॥ २ ॥ एहवां वस्त्र ते आपती, वारु करी वखाण ॥ आपे बहु अलकारनें,पुण्य तणे परिमाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हमचडीनी देशी ॥

॥ मरकी वारवा मुकुट ते आपे, कुंमल ज्वरने टाले ॥ कुष्टादिक व्याधि हरे तेहवा, कठ आनूषण आले रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥ फेर हरण मुद्रा ते आपे, वली केयूर उदार ॥ शाकिणी माकिणी व्यंतर प्रमुखना, दोषने टा लण हार रे ॥ ह० ॥ २ ॥ घातनां व्रण पूराये सहेजें, कटक जडाव ते आपे ॥ सर्व वश थाये वली एहवो, हार गलामां थापे रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ जे वांकां होय ते थाये सरलां, आपे कटि कदोरो ॥ एम सप्रनाव अलंकृत दे तां, वाध्यो पुण्यनो जोरो रे ॥ ह० ॥ ४ ॥ देवता तूग ग्रं नवि आपे, वली रायनुं शील ॥ तास प्रनावथकी होये सघले, जयजयकार सलील रे ॥ ह० ॥ ५ ॥ अर्घ्यपूजा दीधी जब रायें, तब ते अदृश थाय ॥ जइ योगिणीनें कामाक्षा कहे, हैयडेहर्ष न माय रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ शील चलाववा हेतें एह नो, बहु उद्यम में कीधो ॥ पण न चलावी शकी हुं एहनें, एह केम जाये

शल देशल काजें रूडी, साधर्मिणी वर धन्या ॥ न० ॥ ७ ॥ तेणें पण पर णावी नली नाते, सागर ते हवे जाणी ॥ देशलनें ते जेम जेम देखे, डु ख लहे मत्सर आणी ॥ न० ॥ ७ ॥ नामें शेठ तिहां वैश्रमण, तेहनें पुत्र ठे चार ॥ धन धनपतिनें धवल ठे त्रीजो, सुजश चोथो गुणधार ॥ न०॥ ए॥ परणाव्या चारेनें तातें, सोंप्यो सवि व्यापार ॥ शेठ करे निज आतम साध न, पामवा नवोदधि पार ॥ न० ॥ १०॥ काल गयो बहु एणी परें करतां, अते धर्मना जाण ॥ मरण उचित करणी करवानें, स्वजन तेडे तेणें टाण ॥ न०॥ ११ ॥ सात लाख द्रव्य साते क्षेत्रे, आपे शेठ ते हर्षे ॥ चार पुत्र बोला वी नांखे, रहेजो प्रीतें सरिखे ॥ न० ॥ १२ ॥ प्रीतें सहु निर्वाह थशे तुम, बाहिर वात न पडशे ॥ नेला रहेतां कोइक कालें, कदी कोइ आपडशे ॥ न० ॥ १३ ॥ त्यारें जूदा रहेवु पडशें, तव घरनें चिहुं खूणे ॥ कलश एके को दाट्यो ठे में, ईशानादिक कूणे ॥ न०॥ १४ ॥ ते लेहेजो अनुक्रमें वहें ची, पण सक्लेश न करजो ॥ जो सक्लेश करो तो सहुये, शीखामण नली धरजो ॥ न० ॥ १५ ॥ एम शीखामण सहुनें आपी, विधियें धर्म आरा धी ॥ दृढता धरीनें शेठें सुरगति, लहेजें सुखमां साधी ॥ न०॥ १६ ॥ चारे पुत्रे प्रीतें काढयो, तातवयणें चिरकाल ॥ नारीना प्रेर्या जूदा थावा, कलश लीये सनाल ॥ न० ॥ १७ ॥ निज निज नामांकित ते लेवे, पहेले मृत्तिका खम्म ॥ बीजामां हाड त्रीजामां कागल, हवे चोथामां प्रचम्म ॥ न०॥ १७ ॥ कचन मणि नरियां ते देखी, त्रणें कीध विचार ॥ तात धर्मी पण जूठं ठेतरीया, विश्वासें तेणी वार ॥ न० ॥ १ए॥ लघुनें सघली ल खमी आपी, वचना न होये प्रमाण ॥ लखमी जूदी वहेंची लीजें, चारे नाग समान ॥ न० ॥ २० ॥ वेंचवा लघु पासें त्रण मागे, पण ते लघु नवि आले ॥ साखीया स्वजनने साख पुरावी, क्लेश करे ततकालें ॥ न० ॥ ॥ २१ ॥ स्वजन जोइनें चित्त विचारे, ए शुं कहीयें नाइ ॥ साखी आपण प ण अणघटती, वात ते करियें कांइ ॥ न० ॥ २२ ॥ ऊगडो नवि नांग्यो ए कोयथी, स्वजनशुं गया राजद्वार ॥ सघलो व्यतिकर तिहां सनलाव्यो, सां नली करे विचार ॥ न० ॥ २३ ॥ एकें कणा पांचशें मत्री, करवा बेठा न्या य ॥ पण कोइ नहीं समरथ चूकववा, तव चितवे ते राय ॥ न० ॥ २४ ॥ सागर प्रमुख ते सघला थाका, पुरमां पडह वजावे ॥ जे कोइ एह विवा

चारण मुनिवर तिहां मल्याजी, ज्ञानी गुरुना नम्या पाय ॥ परिछदसुं तस परिसरेजी, बेठो हु चित्त लगाय ॥श्री०॥२१॥ मुनिवरें देशना तव करीजी, पुण्यथी देव जिनराय ॥ गुरु मले शुद्ध चारित्रीयाजी धर्म तस नावित पाय ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मन अनुजाइ ललना मलेजी, परिछदने घणे स्नेह ॥ पुत्र विनीत पुण्यें मलेजी, हवे सुणो पापथी जेह ॥ श्री०॥ २३ ॥ नीच कुलें जन्म दरिद्रताजी, वचन निष्ठुर घण रोग ॥ वध पराजव अपयश घणो जी, डुष्ट कुटुंब संयोग ॥ श्री० ॥ २४ ॥ पाप ठांमी ते कारणेजी, धर्म करियें नित्यमेव ॥ इष्ट पामे नें अनिष्ट टलेजी, जस मन श्रीजिनदेव ॥ ॥ श्री० ॥ २५ ॥ सातमे खंम पहेली कहीजी, पद्मविजयें वर ढाल ॥ श्री जयानंदना रासमांजी, धर्मथी मंगलमाल ॥श्री०॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २३॥

॥ दोहा ॥

॥ सांजली मुनि वयणां सखर, कहे नृप केंम करु धर्म ॥ पत्नीवियोग पीडे घणु, करु वध बहु कर्म ॥ १ ॥ प्रसन्न थइ नांखो प्रभु, कामिनी अपहरि केण ॥ कारण शु नें छे किहां, जहशे के नही जेण ॥२॥ योग्य पुत्री नरता जीको, नांखो मुज नगवंत ॥ वली तुम देखी मुह वधे, ते कहो सहु विरतंत ॥ ३ ॥ महानाग्य कहे मुनिवरु, पूरव नव परबंध ॥ जाणु ज्ञानें जगतनें, सांजलो एह संबंध ॥ ४ ॥ संदेह जाशे सामटो, इणहिज नरतें आम ॥ शेठ पूरणनइ सिद्धपुरें, धर्मवंत धनधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बेहले नार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ दोय पुत्र तेहनें थया सुंदर, कौशल वेशल नाम ॥ बालथकी समकिती व्रतवंता, जैनधर्मसुं काम ॥ १ ॥ नविजन नाव धरीनें एह, सांजलो चरित्र रसाल ॥ सांजली कर्म न करशो कोइ, जेहथी नवभंजाल ॥ न० ॥ ॥ २ ॥ गुणदत्त शेठ वसें तिण पुरमां, जैनधर्मी गुणवंत ॥ गुणमाला नारी गुणसुंदरी, पुत्री बहु रूपवंत ॥ न०॥ ३ ॥ देव गुरुनी नक्ति करे घणु, बालथी धर्में राती ॥ देवराज नृपनो एक सागर, मंत्री मिथ्यामति माती ॥ न० ॥ ४ ॥ चैत्यथकी नीकलतां दीठी, गुणसुंदरीनें तेणें ॥ जाची पण नवि आपी तातें, मिथ्यात्वी छे जेणें ॥ न० ॥ ५ ॥ कौशलनें परणावी तातें, कन्या गुणवती नामें, विधिपूर्वक पूर्णनइ आराधी, पोहोता सुरवर धामें ॥ न०॥ ६ ॥ कोइक दिवस पछी, हवे जाचे, गुणदत्त शेठनी कन्या ॥ कौ

पच्चक्रियां, ए खर कर्म विचार ॥ आ० ॥ १३ ॥ मंत्रीमुद्रा विण नर राजी यो, मुख्यपणे करे तास ॥ सर्व कार्यमां पूछे एहनें, घरनो व्यय दीये खा स ॥ आ० ॥ १४ ॥ बीजा मंत्री बहु ईर्ष्या करे,सागर वली सुविशेष ॥ एक इभ्यना सहु अनिलाषिया, तिहां ईर्ष्यानें रे द्वेष ॥ आ०॥ १५ ॥ एक दिन मंत्री कहे नररायनें, रिपुमर्दन जेह राय ॥ दुर्दम बलीयो आण माने नहीं, देवगिरि तस ठाय ॥ आ० ॥ १६ ॥ कौशल मोकलीयें तेणें कारणें, संधि करे बुद्धिमंत ॥ ग्रास खाये ते बलवंतो होय, परीक्षा पण होये तं त ॥ आ० ॥ १७ ॥ तेहनें योग्य ते नेटणु आपीयें, सागरने कहे ताम ॥ एह दिशें अपूर्व ते मोकलो, एटलु करो अम काम ॥ आ० ॥ १८ ॥ जा त्य अश्व वस्त्रादिक मोकलो, सांजली सहु हरपंत ॥ ईर्ष्यायें तस वधनें इ छतां, करंमीयो एक अर्पंत ॥ आ० ॥ १९ ॥ कनककुंन तेहमां धूलें नस्यो, मुद्रा देइने तास ॥ आप्यो तेणें पण सरलपणे ते ग्रह्यो, तेहनो धरी विश्वा स ॥ आ० ॥ २० ॥ कौशल लेइनें रे नृप आणाथकी, देवगिरि पोहोतो ति हां नृप ॥ प्रणमी आगल नेटणु मूकतो, नृप जाणे ए अनूप ॥आ०॥२१॥ सुखप्रश्नादि करे पूछे नृपति, कौशल कहे सुणो स्वाम ॥ संधि मेल करण मुज मोकल्यो, देवराय मुज श्याम ॥ आ० ॥ २२ ॥ मित्राइयें करी रे प्रीति धरी घणी, नेटणुं मोकल्युं एह ॥ तव करंमक उघाडी जोईयो, चित्तमां धरी अति नेह ॥आ०॥२३॥ सातमे खंमें रे ढाल त्रीजी कही, श्रीजयानंदनें रा स ॥ पद्मविजय कहे सांजलतां थकां, पामे लीलविलास ॥आ०॥२४॥८९

॥ दोहा ॥

॥धूली नस्यो पृथिवी धरे, दीठो कुंनदेदार ॥ कोप्यो नृप कौशल प्रति, वयण कहे तेणि वार ॥ १ ॥ तुज स्वामी उन्मत्त थयो,मरवानु करे मंत्र ॥ नेटणें धूल नरी करी, प्रानृत जूउ प्रछन्न ॥ २॥ क्रोध राक्षसने वलि करु, तुज परिवार समेत ॥ वध्य नहीं नृप मंत्रवी, शु करु ए संकेत ॥ ३ ॥ तुज स्वामीनें जइ तुरत, सजलावे धरी शान ॥ आवु छुं उतावलो, तेणें युद्धनु करे तान ॥ ४ ॥ चित्तमां कौशल चिंतवे, नीति में लधी न्याय ॥ ईर्ष्यायें कस्यु एणी परें, एह मारणनो उपाय ॥ ५ ॥

॥ढाल चोथी॥ यात्रा नवाणु करीयें विमलगिरि, यात्रानवाणु करीयें ॥ए देशी॥

॥ नाग्य तुमारु नारी ॥ नूपति जी॥ नाग्य तुमारु नारी ॥ हसतो हसतो

दनें जाजे, तस मंत्रि शिर गाजे ॥ ज० ॥ २५ ॥ सातमे खंमें पद्मविजय क ह्यो, बीजी ढाल रसाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां रूडी, सुणतां मंगलमा ल ॥ ज० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥६४॥

॥ दोहा ॥

॥ कौशल सांजली कानमां,पडह ग्रहे निज पाणि ॥ नृप आगल नमिनें कहे, सांजलो राय सुजाण ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ आगो रंग लाग्यो रे, माणिगर महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नरराजा रे वाद हु टालशुं, कगडो वांको ठे अति एह ॥ कोयनें खबर पडे तो टालजो, हु टालु नि संदेह ॥१॥ आठो न्याय करजो रे, शेठ तुमें सोजागी ॥ ए आंकणी ॥ एम कहे राजा रे तेहनें वयणडु,तव तेणें ते ज्या ते जाइ चार ॥ पूछे तात तुमारो जीवतां, स्यो श्यो करता व्यापार ॥ आ० ॥ २ ॥ खेती वाडी हु करतो तदा, पहेलो बोले ए रीति ॥ शेठ कहे अन्न केटलु तुम्ह थतु, ते कहे धरी प्रीति ॥ आ० ॥ ३ ॥ लाख मूडा अन्न आवतु माहरे, पन्नर लाख ते मूल ॥ बीजो कहे हु आपण माहरे, पशु व्यापार अनुकूल ॥ आ० ॥ ४ ॥ वेचु तुरगादिक दश सहस्रना,लाज पनर लाख थाय ॥ त्रीजो कहे हु व्याज वटतरें, आपु मरुलिक राय ॥ आ० ॥ ५ ॥ पनर लाखनो लाज तेहमां होये, चोथो कहे मुज कोश ॥ सों प्यो हतो तस मूल जो कीजियें, पनर लाखनो जोस ॥ आ० ॥ ६ ॥ कौ शल कहे नृपनें सुणो स्वामी, जे जे कामनो दक्ष ॥ ते ते काम सोंप्युं ए चारनें, सहुनें पन्नर लक्ष ॥ आ० ॥ ७ ॥ माटी कलशथी खेतर जा णीयें, हाड कलशें पशुवृंद ॥ कागलथी नामें लेखे करी, धन पामे सुख कंद ॥ आ० ॥ ८ ॥ परगट दीधी लखमी चोथा प्रत्यें, कोश तणो अधिका र ॥ एहने हतो तेणें तातें आपियो, नवि आवडे को व्यापार ॥ आ० ॥ ॥ ९ ॥ सरिखे जागें सरिखे आपियुं, मूर्ख करे रे विवाद ॥ चारे जाइ सां जली हर्षित थया, सहु गया मूकी विषाद ॥ आ० ॥ १० ॥ कौशलनी बु द्धिनें वरणवे, चारे धरता ते प्रीति ॥ तात उपर बहु आदर उपन्यो, तात जाणे बहु नीति ॥ आ० ॥ ११ ॥ चमत्कार पाम्यो तस बुद्धिथी, राय कहे सुणो शेठ ॥ ल्यो मंत्रीमुद्रा तुमें हर्षेशु, मंत्री सहु तुम हेठ ॥ आ०॥१२॥ कौशल कहे मुद्रा लेउ नहीं, हु श्रावक व्रत धार ॥ राज्य नियोगादिक में

परें, सत्य तो तुज वच थाय ॥ नू० ॥ गजने थजावे देइ आणा, कार्ये कारण जणाय ॥ नू० ॥ १७ ॥ कौशल गयो गजवरनी पासें, लेई परिछद समुदाय ॥ नू० ॥ परगट आण देई निज नृपनी, हृदयमां मंत्र सोहाय ॥नू०॥ ॥ १८ ॥ तास प्रजावथी तेह मतंगज, मंत्रबलें थंजाय ॥नू०॥ चमत्कार पाम्यो ते राजा, मंत्री प्रत्यें बोलाय ॥नू०॥१९॥ तुज बूलि सरखी दिव्य वस्तु नही, मह्रारा घरमां कांय ॥नू०॥ तेहिज हाथी जेटणें आप्यो, बहु सत्कार कराय ॥नू०॥२०॥ एहवी वेला अमनें संजारजो, छुं कहीयें वारं वार ॥ मंत्रीश्वर छुं कहीयें वारंवार ॥ ए आंकणी ॥ परिछद सहित पहेरामणी करतो, वस्त्र तथा अलंकार ॥ म०॥ २१ ॥ अनुक्रमें सिद्धपुर परिसर पोहोता, तिहां कीधा उतार ॥ म०॥ पूर्वमंत्रीश्वर सांजली बीहिना, आप करणी संजार ॥ म० ॥ २२ ॥ साह्रामा आवीने ते खमावे, बहु पश्चात्ताप धार ॥म०॥ गजवर आगल करीने चाल्या, नृपनें करे नमस्कार ॥ म०॥ २३ ॥ नृप पूछे सुखशाता तेहनें, मंत्री करे उच्चार ॥ म० ॥ तुम परतापें सुखशाता छे, कह्यो सघलो अधिकार ॥ म० ॥ २४ ॥ धूलिवृत्तांत ते गोपवी राख्यो, सज्जनता अनुसार ॥ म० ॥ बलीया रायशुं मेल सुण्यो वली, गजवर जेट विचार ॥ म० ॥ २५ ॥ असजाव्य एह वात सुणीने, नृपनें हर्ष अपार ॥ म० ॥ सातमे खमें चोथी ढालें, पद्मविजय जयकार ॥ म०॥२६॥१२०॥

॥ दोहा ॥

॥ तुष्टमान तेह उपरें, देशलजाइनें देश ॥ आपे बहु आग्रह करी, लेवे नहीं ते लेश ॥१॥ पांचसु व्रत पच्चख्खु अछे, ते केम जांगे तेह ॥ सत्कार्यो स्तवना करी, गयो आपणे गेह ॥ २ ॥ मंत्रीमां मह्रोटो थयो, सत्याधिक वली स्नेह ॥ पोहोंचाडे नृप पाधरु, मोरथकी जेम मेह ॥ ३ ॥ धूल वात धरणीधवें, सांजली कोइक पास ॥ पाप छानुं परगट हाये, विरूप लसण जेम वास ॥४॥ यत ॥ बीज चद मुस्ति लुरे, अब्रह्म लसणनी वास ॥ छानु पाप जाते दिनें, किमहिक होय प्रकाश ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सोना केरु वेडलुं, मारुजी वाव खोदाव ॥ रूपला इढाणी हेठ, वावडली पातालनी, पाणीडां नरु रे तलाव ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चिंतवे एणी परें, जेटणु लइ गयो धूल ॥ पण कोइ बुद्धि प्रजाव, कारय करी आवीयो, नृपने कस्रो अनुकूल ॥१॥ सर्व जमार जो वीजीयें,

कौशल बोले, एणे वयणें निरधारी ॥ नू० ॥ च्यार बुद्धिनिधि चतुर विचक्षण, बुद्धि उपनी अति सार। ॥नू०॥१॥ राय कहे तु एम केम बोले, इरषें दृढता धारी ॥नू०॥ कनक कुंभमां रज कोण भरशे, चित्तमां जुर्ड विचारी ॥ नू० ॥ २ ॥ नृप कहे कहो तुमें तेहनु कारण, कौशल कहे अवधारी ॥ नू०॥ तुम प्रसाद होये तो हु भाखु, नृप कहे कहो सहु म्हारी ॥नू०॥ ३ ॥ मंत्री कहे सिद्धपुरमां जाणो, उपद्रव थइ बहु मारी ॥ नू०॥ अचलरेख्या देवी आराधि, नरपति थइ उपगारी ॥ नू० ॥ ४ ॥ बहु चौटानी धूल भेली करी, देवीयें तिहां अवतारी ॥ नू०॥तुष्टमान थइ एणी परें भाखे, करजो तिलक सुखकारी ॥नू०॥५॥ मरकी उपद्रव सघलो टलशे,तुमनें कहु हित आणी ॥ नूपतिजी तुमनें कहु हित आणी ॥ए आंकणी॥ व्यंतर शाकिनी विविध उपद्रव, विविधनी होशे हाणी ॥नू०॥६॥ रायें पूजा करी रज लीधी, शिर धरी तेहनी आण ॥ नू० ॥ नगरलोक वली अतेउरनें, तिलक करावे जाण ॥ ॥ नू० ॥ ७ ॥ सहुना उपद्रव पुरमा टलीया, हवे तुम प्राभृत दाण ॥ नू० करवानें तुम पासें मोकल्यो, रज भरी कुंभ प्रमाण ॥ नू०॥ ८ ॥ मृगमदथी पण ए बहु मूली,श्यां करु अतिही वखाण ॥ नू० ॥ वात सांभलीनें ला ज्यो राजा, प्रीति धरे अप्रमाण ॥ नू० ॥ ए ॥ कोइ आगल तुमें वात न करजो, नरपति कहे एम वाण ॥ नू० ॥ राजस वृत्तियें में एम भाख्यु, अ विचारें इण ठाण ॥ नू० ॥ १० ॥ तेहनु तिलक करे निजभालें, बहु गुण तेहनो जाणि ॥ नूपतिजी बहु गुण तेहनो जाणि ॥ ए आंकणी ॥ चपटी चपटी देइ परिवारनें, वली जे अतेउर राणी ॥ नू०॥ ११ ॥ तुष्टमान थइ कौशजनें कहे,अहो अहो तुं भलो प्राणी ॥नू०॥ तुज स्वामीनें जइने तु कहे जे, आपणी प्रीति मचाणी ॥ नू०॥ १२ ॥ जावज्जीव अखंमित जाणे, नही जाये ते खम्भाणी ॥ नू० ॥ अम सरिखु जे काम होये ते,कहेवरावजो निज जाणी ॥ नू० ॥ १३ ॥ पूछे नृप तुज रायनी आणा, शक्ति ते केहवी पिछाणी ॥ नू० ॥ कौशल कहे शुं कहीयें तेहनु, पशुयें पण सुप्रमाणी ॥ नू० ॥ ॥ १४ ॥ मुज नृपनी आणा जो दीजें, गज पण माने वाणी ॥ नू०॥ एणें अवसर तिहां गजवर छूटो, कल कल वाणी सभलाणी ॥ नू० ॥ १५ ॥ सेवकनें नृप पूछे शु ए, सेवक कहे सुणो राय ॥ नू०॥ गज छूटो अहिरावण सरिखो, उपद्रव बहुत कराय ॥ नू० ॥ १६ ॥ नरपति कहे कौशलनें एणी

खर तस पुत्र, यौवन आव्यो यदा, विद्या कलानो नमार ॥२०॥ कन्या ब त्रीश परणावीयो, नव नव खेले रे खेल ॥ देशल देव चवी थयो, चउगति पणे, तुं ते करतोजी केल ॥ २१ ॥ पूरवनवें जे नामिनी, गुणसुंदरी जे नारि ॥ तुज वियोगें तेह लीये, व्रत तप तपी बहु, वरषा लगें सार ॥ २२ ॥ चोथे स्वर्गें सुर थयो,तिहांथी चवियो रे तेह ॥ शेठनो पुत्र थयो, चंद्रमुख नामें खरो, रूपकला गुण गेह ॥ २३ ॥ धर्मधीर गुरुनें कनें, नोगवी नोग उदार ॥ दीक्षा लेइ सिद्धांत नल्यो, बहु तप तपी, देव थयो श्रीकार ॥२४॥ पांचमे देवलोकें सुखी, तिहांथी चवि तुज नारि ॥ चडमाला अनिधानथी, स्नेह पूरव तणो, इहां तुमनें निर्धार ॥ २५ ॥ सातमे खर्मे पांचमी, पद्म विजय कही ढाल ॥ श्रीजयानदना रासमां, नविजन सांनलो, आगल वात रसाल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर जे पूर्वें सचिव, मिथ्या दृष्टि महंत ॥ आरंन परिग्रह अति करी, प्रथम नरक पहोचंत ॥ १ ॥ नरकमांहेथी नीकली, सारग प्रमुख अ सख्य ॥ नव कीधा बहु नांतिना, शु कहु तेहनी सख्य ॥२॥ दुखियो ब्राह्मण दरिद्रता, परिव्राजक पणुं पाम ॥ हवे सुणो तिहांथी जे हवु, कही यें तेहनु काम ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ लवण समुद्रनें वैताढ्य पासें रे, वनराजी घणुं शोहे विकाशें रे ॥ वज्रकूट पर्वत छे तह्य रे, बहु देवता क्रीडा करे यह्य रे ॥ १ ॥ त्रण योजन पोहोलो नें लबाण रे, उचानु पण एहिज माण रे ॥ तेहनें गर्नें नुवन छे एक रे, गाउ अद्धु पोहोलु सुविवेक रे ॥ २ ॥ लांबो पण एक गाउ जाणो रे, मणिमय कांति उद्योत पिछाणो रे ॥ सरोवर वन वापी तिहां शोहे रे, इंद्रिय सुखकारी मन मोहे रे ॥ ३ ॥ पृथिवीनें पर्वत अर्द्ध विराजे रे, नर नें अगम्य ते थानक छाजे रे ॥ चार देवीउं वज्रमुख नामें रे, क्रीडा करे ते सुर तेणे गमें रे ॥ ४ ॥ तिहां उपजे तस नाम ते एह रे, हवे मत्री जीव ब्राह्मण जेह रे ॥ परिव्राजक मरी वज्रमुख थाय रे, तुज नारीनें ते हरि जाय रे ॥ ५ ॥ पूरव अन्यासथी धरतो राग रे, क्रीडा करणनो पामी लाग रे ॥ दृढ सस्कारनु बीज जे होय रे, जन्मांतरें ते आवे जोय रे ॥६॥

पण न वले उपकार ॥ देशादिक देउ तेह,न सेवे कोइ परें, एणी परें मनमा रे धार ॥ २ ॥ राय प्रसाद बहु धरे, सागर दमघो रे सोय ॥ एणद्विज मोक ली धूल,ए अपराधी घणो,ए सम पापी न कोय ॥ ३ ॥ सागर चित्तमां चित वे, देशलें माहारी वात॥राय आगल कहि तिण,धरें द्वेष आकरे,देशलशुं धरे घात ॥ ४ ॥ नारीनो द्वेष ठे धुरथकी, वली तस अधिको रे थाय ॥ पोतें करी अपराध, ढाले शिर पारके, अधम ते अवगुण गाय ॥ ५ ॥ प्रीतिदान नृप मोकले, एकदिन कौशल गेह ॥ घृतना दश सहस कुंन, मूडा तेम शाली ना, आणी अतिशय स्नेह ॥ ६ ॥ व्रतथी वमणा आवीया, व्रीहिकण व्रत नें रे नंग ॥ देशलनें कहे एम, सहस पांच मोकलो, पाछा व्रतनें रे रंग ॥७॥ अथवा धर्ममां वावरो, पण नवि राखो रे एह ॥ व्रत आपणनुं नंग, था य तेम मत करो, चूकजो मत तुमें रेह ॥ ८ ॥ एम कही कौशल गया, दे शल चिंतवे ताम ॥ राज्यकुलें गयुं जेह, ते पाछु नहीं फरे, केम मोकलीयें ते आम ॥ ए ॥ एम चिंतवीनें अधिक जे, आपे निज परिवार ॥ थापण देतें तेह, विश्वास नाइ प्रत्यें,उपजावे धरी प्यार ॥ १० ॥ एम बहुवार क स्यो एणे, व्रतमांहे अतिचार ॥ आयु पूरु करी देशल, व्यंतर ते थयो, रुधि अलपनें असार ॥ ११ ॥ तिहांथी दलिद्र ब्राह्मण थयो, वली थयो दलि द्रीनें घेर ॥ वणिककुलें धन काज, उपाय करे अति, क्लेश करे बहु पेर ॥ ॥ १२ ॥ पण नवि पामे पायको, व्रतखंमन फल जोय ॥ कौशल निरति चारें, श्रावक धर्म पालतो, महावैरागी होय ॥ १३ ॥ धर्मगुप्त गुरुनें कनें, आदरे ते व्रत नार ॥ त्रिकरण योगें आराधी, सातमे कल्पें थया, रुद्धि त णो नहीं पार ॥ १४ ॥ सत्तर सागर आयखे, तेह थयो सुरराय ॥ व्रत आ राधन ए फल, जाणी आराधजो,जेम लहो सुखसाय ॥ १५ ॥ अवधि ज्ञा नथी देवता, नाइ तणुं डुःख जाणी ॥ रुद्धि देखाडी आप, सविज्ञ दीक्षा ग्रहे, जाणी नवडुःख खाण ॥ १६ ॥ तप कीधु अति आकरु, सातमे-देव लोकें देव ॥ नाइयें कस्यो उपकार, धर्मना रागथी, सुख नोगवे नित्यमेव ॥ ॥ १७ ॥ पूरव नव अन्यासथी, एण नव पण बहु स्नेह ॥ जिनपूजा वली तीर्थे, यात्रा बहु करे,पुण्य संचय करे तेह ॥ १८ ॥ सुसमां थया तेह देव ता, कौशलनी सुणो वात ॥ वैताढ्यें मणिमंदिर, पुरनो राजियो, विद्याधर कहेवात ॥ १ए ॥ मणिधर नामें ते थयो, मणिमाला तस नारि ॥ मणिशे

मैं ठे तेथें व्रत नावे रे ॥ १२ ॥ लेजे दीक्षा वहेलो जाइ रे,मोक्ष ते जइयें सायें सखाइ रे ॥ सांनली पूर्वे नव संनारे रे, आसक्त नहीं पण प्रिया मन धारे रे ॥ १३ ॥ मुनि प्रणमीनें हुं गयो गेह रे, मुनि विचरे बीजे गाम तेह रे ॥ वज्रवेग मूकावण हार रे, ते दिनथी खोळुं हु प्यार रे ॥२४॥ विद्याधरथी वात्त हु जाणी रे, आव्यो तुम पासें मन आणी रे ॥ सातमे खर्मे ठठी ढाल रे, पद्म कहे सुण्यां मगलमाल रे ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥१७०॥

॥ दोहा ॥

॥ रखे प्रारथना ए करे, एणी परें मन अवधार ॥ कामकुनादिक सहु करे, प्रारथनायें प्यार ॥ १ ॥ हुं चेतन अचेतन तणो, अंतर स्यो होय एथ ॥ प्रार्थना विण प्रथमथी, प्रारंन्या शुनपंथ ॥ २ ॥ वत्सव माहरे आवीयो, नाग्य उदय महानाग्य ॥ दोय कार्य इहां देखीयें, पर उपकार परा ग ॥ ३ ॥ बीजु डुष्ट निग्रह बने, उत्तम तृप्ति उपकार ॥ नृपहण्य द्विज अन्नथी, वणिक लाने व्यवहार ॥ ४ ॥ कामें वेश्या स्त्री कलहें, लांच नियोगी लेय ॥ खल ठलथी तृप्तो खरो, दाता दानने देय ॥ ५ ॥ श्रीमत रोगी सांनली, वैद्य हर्ष लहे वेग॥तेम तुज काम करु तदा, तृप्ति लहु अति रेग॥६॥

॥ ढाल सातमी ॥ योगमाया गरबे रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ सांनलो वली एक वातडी जो, केम सहे अन्याय ते नृप जो ॥ देवनो पण बीहीकण थइ जो, तो प्रजानु शु स्वरूप जो ॥ १ ॥ धीरजें सहु आवी मले जो ॥ ए आंकणी ॥ जइ परवत चूरण करुं जो, जीतु सुर डुष्ट ते जाय जो ॥ विजय रायनो उपन्यो जो, तो वाळु ताहरी जाय जो ॥ धी० ॥ २ ॥ पवनवेग सायें लेइ जो, वली चडगतिशुं जेह जो ॥ वज्रकूट नग उपरें जो, सात्विक आव्यो सत्वगेह जो ॥ धी०॥ ३ ॥ उच्चस्वरें बोले तिहां जो, रे अधम डुष्ट परनारी जो ॥ लेइ पेगो पातालमां जो, अहि जेम बिलमां लेई हार जो ॥ धी०॥ ४ ॥ सन्नद्धबद्ध थइ आव्य तु जो, जो समरथ ठे संग्राम जो ॥ नहीं तो नारीनें आपीयें जो, अन्यथा फेडु तुज गाम जो ॥ धी० ॥ ५ ॥ त्रण वार एम बोलीयो जो, पण परगट न थयो देव जो, क्रोधथकी तव धमधम्यो जो, गिरि चूरवा मांम्यो हेव जो ॥ धी० ॥ ॥ ६ ॥ तथाहि ॥ मुजर कामाह्वा दियो जो, जेहनु बल वज्र समान जो ॥ शृंगशीला पाडे घणी जो, महावृक्ष समूलां अमान जो ॥ धी०॥७ ॥ शृंगशी

राग वल्हायो ते वली जागे रे, सबंधी देखी लय लागे रे ॥ मेघ देखी जेम हडकवा थाय रे, ते सुर पोहोतो अपने गाय रे ॥ ७ ॥ प्रार्थना कर तो जोगनी तेह रे, सती अन्य इछे न धरे नेह रे ॥ काल काढवा एणी परें जासे रे, ब्रह्मचर्य व्रत मुज एक मासे रे ॥ ८ ॥ विद्या कामें ए में कीधु रे, ते केम जाये मेल्युं लीधुं रे ॥ एम करतां जो लोपिश शील रे, तो जीव चांपी मरण लहुं लील रे ॥ ए ॥ एहमां काइ संदेह न जाणे रे, सांजली सुर बीहिनो तेणे टाणे रे ॥ जोग आशायें पडख्यो मास रे, आशायें जीवे जाव वष्मास रे ॥ १० ॥ जैन सती न चलावीयें देवें रे, जैनधर्मनें जे नित्य सेवे रे ॥ हवे कौशल सुर खेचर जेह रे, मणिशेखर क्रीडा करे तेह रे ॥ ११ ॥ एक दिन धर्मरुचि अणगार रे, आव्या नगर उद्यान मजार रे ॥ प्रणमी तेहना जक्तें पाय रे, धर्म सांजल्यो चित्त लगाय रे ॥ १२ ॥ वैराग्यें वासित थइ लीधी रे, दीक्षा जैननी जेह प्रसिद्धि रे ॥ धीर पुरुष ते न करे ढील रे, धर्मकार्यमां उद्यमशील रे ॥ १३ ॥ सुव्रता गणिनी पासें दीक्षा रे, तेहनी नारी लेइ धरे शिक्षा रे ॥ अनुक्रमें मुनिवर थया चउनाणी रे, ते हु विचरतो आव्यो जाणी रे ॥ १४ ॥ वियोगथी तु पीडाणो रे प्रति बोधवा आव्यो ए टाणो रे ॥ ते पण पूर्वजवनो नेह रे, तुऊने पण उपजे छे तेह रे ॥ १५ ॥ बुऊ तु विरमी विषय विकार रे, लेइ चारित्रनें था अण गार रे ॥ सातमा देवलोकना जोग रे, जोगव्या विविध ते देवी संयोग रे ॥ १६ ॥ मनुष्यना जोग तो अशुचि जंमार रे, तेहमां केम मूऊयो एणी वा र रे ॥ सागरोपम सरिखा जिहां काल रे, तृप्ति न पाम्यो ते जोग रसाल रे ॥ १७ ॥ बिंडु सम नर जोग ते आगें रे, अल्प आयु केम तरष ते जागे रे ॥ ते सांजली में जाख्युं एम रे,बधु परें तुमें राख्यो प्रेम रे ॥ १८ ॥ क ल्पवृक्ष परें तुमें उपकारी रे, तुम वाणी मुजनें हितकारी रे ॥ पण हु ना रीनें स्नेहें बधाणो रे, वली सुर हरि गयो तेणें पीडाणो रे ॥ १ए ॥ हु न त्यजी शकु तेणें मुज दाखो रे, नारी वाल्यानो उपाय ते जाखो रे ॥ कन्या वर कोण थाशे एह रे, कहो मुजनें सघलु करु तेह रे ॥ २० ॥ थइ कृता र्थी रही कोइ काल रे, लेशुं दीक्षा परम दयाल रे ॥ मुनि कहे पवन वेग सुत जेह रे, वज्रवेग मूकावशे तेह रे ॥ २१ ॥ योगिणी घरथी स्वशक्तें राय रे, ते तुज पुत्रीनो वर थाय रे ॥ ताहारी नारीनें तेह मूकावे रे, जोग क

॥ दोहा ॥

॥ शीलें नवनिधि संपजे, शीलें सिद्ध शियाल ॥ शीलें सुरसान्निध करे, शील धरो सुरसाल ॥ १ ॥ शीलें सर्प होय रासडी, शीलें आग शमंत ॥ शीलें थल होये सागरें,शील आनूपण संत ॥ २ ॥ नेत्र ज्वालज्यें निरख तो, क्रोधीनें महाक्रूर ॥ रे रे कां मरवा तणुं, शरण करे ठे शूर ॥ ३ ॥ शे ल नांजे तुं शूरथी, आणुं ताहारो अंत ॥ मूरख तुं महीपति कहे, तुज क रु अंत ए तंत ॥ ४ ॥ परस्त्री लेइ पातालमां, उंदर औषधी लेय॥ बिल पे से बलवंत तिम, ठटके केम छुटेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल रे मुज वात शोदामणी, मुज वेगां अन्याय जीरे ॥ दैववशें तें कीधु एवडुं, पण तें नवि छूटायजी रे ॥ सां०॥१ ॥ चहुगति नीरे पत्नी आप तुं, मत कर मरवानु मन्नजी रे ॥नग चूरयो पण नवि छूटो थयो, चू रे मोघर तुज तन्न जीरे ॥ सां० ॥ २ ॥ देव कहे क्रोधें करी एहवु, तु बा लक नरमात जीरे ॥ सिंहथी मृगली मूकाववा मन करे, तुंहिज मूढ ए णि वात जीरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मोघर उपाडी हणवा नणी, नृप उपर सुर धायो जीरे ॥ पवनवेगादिक वीहीकथी नासता, नृप पुंठे सहु आयो जी रे ॥ सां०॥ ४ ॥ नरपति विद्यायें सहु थनीया, वज्रमोघर लेइ धाय जीरे ॥ घात मोघरना रे मांहो मांहे पडे, मानुं गगन फोडाय जीरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ बहु वेला एम मोघरे जूजीया, निज मोघरें नरराय जीरे ॥ सुर मोघर ते रे चूरी नाखीयो, तब ते क्रोधें नराय जीरे ॥ सां० ॥ ६ ॥ ज्वलती लेइ करवालनें दोडीयो,सूरय हासें नृप जीरे ॥ रंनास्तंनपरें खम्डित करी,लीला यें धरी चूप जीरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ दिव्य त्रिशूल गदादिक शस्त्रथी, युद्ध करे ते अनेक जीरे ॥ नागपाशथी रे बांधे परस्परें, सघले नृप जय टेक जीरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ समकेत शीलनें जिनशासनी वली, न परानव करे इवो जीरे ॥ तो ए सुर किंकरनु छु गजु, जे पडयो परस्त्री फंदो जीरे ॥ सां०॥ए ॥ नृप मस्तकमां रे तरु लेइ फूडीयो, पुष्प वेराणां ताम जीरे ॥ मानु सुर वृष्टि करे फूलनी, कुमर शिरें अनिराम जीरे ॥ सा०॥ १० ॥ नृप पण तरु लेइ तस तरु नांजतो, तब ते शिलायें युद्ध जीरे ॥ युद्ध करे बेहु तेह सुनट पइ,रोषथकी अतिक्रुद्ध जीरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ शिलायें वली मुष्टिय चूरतो,

लाना घोषथी जो, विश्वनें पण उपजे त्रास जो ॥ पृथिवी गाजे मेघ ज्युं जो, ऊलके सायर जलराशि जो ॥ धी०॥८॥ त्रास लहे जलचर बहु जो, उबले तिहां जलकल्लोल जो ॥ ज्योतिषी नासे वेगला जो, करता मांहे मांहे हलबोल जो ॥ धी० ॥ ९ ॥ नदी इह जल बहु उबले जो, उन्मार्गें चाले तेह जो ॥ गाम नगर वहेवरावता जो, बहु वायरे उडे खेह जो ॥ धी०॥१०॥ शिला चूर्ण बहु उबले जो,तेणे दिशा अधारी थाय जो॥ सूरज जांखो देखोयें जो, मानु नृप प्रतापें हराय जो ॥ धी० ॥ ११ ॥ धूज्या बहु बीजा गिरि जो, मानु नयथी कंप्या जोर जो॥ निऊरणां आंसु ऊरे जो, निजजातिनु दुःख धरे घोर जो ॥ धी० ॥ १२ ॥ पर्वत चूरतां कपती जो, क्षय थाय छे निज आधार जो॥ वसुमती मानु ते नयें जो,केम थाशे एम अवधार जो ॥ धी० ॥ १३ ॥ शृग पडघाना शब्द जे जो, पृथिवी धड धड करे सोर जो ॥ शेषनाग धरे कष्टथी जो, पृथिवीने करी बहु जोर जो ॥ धी०॥ ॥ १४ ॥ पडती शिला चूरण करे जो, वनराजी वृक्ष समुदाय जो ॥ गज सिंह प्रमुख सावज घणा जो,ते नयथी नाग जाय जो ॥ धी० ॥ १५ ॥ व्यंतर किन्नर देवता जो, जे क्रीडा गुफामां करंत जो ॥ शक्रवज्रभ्रांतें करी जो, हा हा करता ते नासत जो ॥धी०॥ १६ ॥ योगिणी नूतनी अंगना जो,वली व्यंतर प्रेतनी नारि जो ॥ आक्रंद करतां नासती जो, जगनें ते खोननाकारि जो ॥ धी० ॥१७॥ चार घडी थइ चूरता जो, पोहोतो सुर नवननी पास जो ॥ विद्या नाम्य बल आकरु जो, नृपनें ब्रह्मचर्यनो वास जो ॥ ॥ धी० ॥ १८ ॥ घोर शब्द सुणी तेहना जो, निज आलय जोइ ताम जो ॥ शीतज्वरें जेम कंपतो जो, वज्रमुखचन्द्र मुख थयु श्याम जो ॥ धी०॥ १९॥ ए शुं ए शुं चिंतवे जो, संभ्रांत थइ मन मांहि जो ॥ विनंग ज्ञानें जोवतो जो,ए अद्भुत शुं थयुं आंहि जो ॥ धी० ॥ २० ॥ नवि थयुं नें नवि थायशे जो,क्रोधें धमधमतो देव जो, दोडयो निज परिवारशुं जो,शीघ्र आव्यो तिहां स्वयमेव जो ॥ धी० ॥ २१ ॥ धन्य ए नृपनां धैर्यनें जो,वली शीलव्रतो ससनेह जो ॥ वात छे अद्भुत जेहनी जो, नवि कहेवाये मुखें तेह जो ॥ धी० ॥ ॥ २२ ॥ सातमे खंडें सातमी जो, ढाल पद्मविजय कही प्यार जो ॥ शीलथी सवि कारय सरे जो, शीलथी होय जयजयकार जो ॥धी०॥२३॥२०७॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलें नवनिधि संपजे, शीलें सिद्ध शियाल ॥ शीलें सुरसान्निध करे, शील धरो सुरसाल ॥ १ ॥ शीलें सर्प होय रासडी, शीलें आग शमंत ॥ शीलें थल होये सागरें, शील आनूपण सत ॥ २ ॥ नेत्र ज्वाजल्यें निरख तो, क्रोधीनें महाक्रूर ॥ रे रे कां मरवा तणुं, शरण करे ठे शूर ॥ ३ ॥ शैल नांजे तुं शूरथी, आणुं ताहारो अंत ॥ मूरख तुं महीपति कहे, तुज क रु अत ए तंत ॥ ४ ॥ परस्त्री लेइ पातालमां, उंदर औषधी लेप॥ बिल पेसे बलवत तिम, ठटके केम छुटेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल रे मुज वात शोहामणी, मुज वेगां अन्याय जीरे ॥ दैववशें तें कीधु एवडु, पण तें नवि बूटायजी रे ॥ सां०॥१ ॥ चउगति नीरे पक्षी आप तुं, मत कर मरवानु मन्नजी रे ॥नग चूक्यो पण नवि बूटो थयो, चूरे मोघर तुज तन्न जीरे ॥ सां० ॥ २ ॥ देव कहे क्रोधें करी एहवु, तु बालक नरमात जीरे ॥ सिंहथी मृगली मूकाववा मन करे, तुहिज मूर्ख एणि वात जीरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मोघर उपाडी हणवा नणी, नृप उपर सुर धायो जीरे ॥ पवनवेगादिक वीहीकथी नासता, नृप पुंठे सहु आयो जी रे ॥ सां०॥ ४ ॥ नरपति वियार्यें सहु थनीया, वज्रमोघर लेइ धाय जीरे ॥ घात मोघरना रे मांहो मांहे पडे, मानु गगन फोडाय जीरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ बहु वेला एम मोघरे जूफीया, निज मोघरें नरराय जीरे ॥ सुर मोघर तेरे चूरी नाखीयो, तव ते क्रोधें नराय जीरे ॥ सां० ॥ ६ ॥ ज्वलती लेइ करवालनें दोडीयो,सूरय हासें नूप जीरे ॥ रत्नास्तंनपरें खमित करी,लीलायें धरी चूप जीरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ दिव्य त्रिशूल गदादिक शस्त्रथी, युद्ध करे ते अनेक जीरे ॥ नागपाशथी रे बांधे परस्परें, सघले नृप जय टेक जीरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ समकेत शीलनें जिनशासनी वली, न परानव करे इहो जीरे ॥ तो ए सुर किंकरनु शु गजु, जे पडयो परस्त्री फहो जीरे ॥ सां०॥९ ॥ नृप मस्तकमां रे तरु लेइ फूडीयो, पुष्प वेराणा ताम जीरे ॥ मानु सुर वृष्टि करे फूलनी, कुमर शिरें अनिराम जीरे ॥ सां०॥ १० ॥ नृप पण तरु लेइ तस तरु नांजतो, तव ते शिलायें युद्ध जीरे ॥ युद्ध करे बेहु तेह सुनट थइ,रोषथकी अतिक्रुद्ध जीरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ शिलायें वली मुष्टियें चूरतो,

तास शिलानां वृंदो जीरे ॥ तस रजथी मुख मस्तक पूरिसुं, तोपण मूके न
ददो जीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ वज्रवदन हवे शस्त्रनें मूकतो, पामी खेद अपार
जीरे ॥ मुष्टियें मुष्टि रे युद्ध करे तदा, मदथी करता होकार जीरे ॥ सां० ॥
॥ १३ ॥ युद्ध करंता रे मुष्टिघातथी, पृथिवी द्रुम कपावे जीरे ॥ विहु विह
फरता वेहु नट गाजता, सर्व दिशा गर्जावे जीरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ देव म
ल्या कौतुकथी गगनमां, वेहु पडता आवे वेग जीरे ॥ उपडता जेवा जाण
देवता, एम करे बहु चेष्टा जीरे ॥ सां० ॥ १५ ॥ नमतां दृष्टि नमे जो नार
नी,शूरवीरनी साथ जीरे ॥ कोण न चाले रे बुद्धिमंत कहो,जस हेतु होय
हाथ जीरे ॥सां०॥१६॥ युद्ध करे एम सुर नरराजीयो, एणी परें गयो बहु
काल जीरे ॥ दुष्ट अन्यायीयो रे देवता जाणीनें, चिंतवी ते नूपाल जीरे ॥
सां० ॥ १७ ॥ पग पकडीनें रे मस्तकें फेरवी, शिला उपर पछाडे जीरे ॥
वस्त्र धूवे जेम धोबी तेणी परें, वेदनथी बुब पाडे जीरे ॥ सां० ॥ १८ ॥
छातीयें पग देइनें दृढ रह्यो, बोले एणी परें वाणी जीरे ॥ तुजमां बळ हो
य तो देखाडजे, रे रे अधम अन्नाणी जीरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ ताहारा इष्टनें
तु संनारजे, नहीं तो आप तु नारि जीरे ॥ आक्रंद करतो रे सुर एणी परें
कहे, तु माहारो आधारो जीरे ॥ सां० ॥ २० ॥ जगतमल्ल हवे मुजनें मूक
तु, ताहारो हु बु दास जीरे ॥ तेह कृपालु रे कृपापात्रनें, नरपति मूके ता
स जीरे ॥ सां०॥ २१ ॥ जय जय शब्द करे तिहां देवता, कुसुमवृष्टि तिहां
कीधी जीरे ॥ देवता जइनें लाव्यो नारीने, नूपने नेटणे दीधी जीरे ॥सां०॥
२२॥ आठमी ढाल ए सातमा खंममां, श्रीजयानंदनें रास जीरे ॥ पद्मविजय
कहे सांजलतां थकां, होवे लील विलास जीरे ॥ सां० ॥ २३ ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निजअपराध निर्जर हवे,खमावे बहु खांत ॥ पवनवेग मुख पामिया,
अतिशय हर्ष एकांत ॥ १ ॥ सहु परिवारशु सुर हवे, प्रणमे नरपति पाय
॥ कर जोडीनें सुर कहे, तुं समरथ तुं ताय ॥२॥ तुही पराक्रमी तुं नथी, वा
सुदेववत बयला ॥ सुर असुरा तुज सारिखो, मनुजमांहे न मयाल ॥ ३ ॥
कोइ न जीत्यो मुज कदा, तुरत जीत्यो तु मुज ॥ मूक्यो कृपा करी मुजनें,
तेणें शु देव तुज ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरवो केएणें कोराव्यो के ॥ नवजीना लाल रे॥ए देशी ॥

॥ तुजनें आपी कृतारथ थाउ के,गुणगण धामरे ॥ एहतु जगमां कांइ न पावं के ॥ तुजवर नाम रे ॥ बोले तव नरपति वाणि के ॥ गु० ॥ माहा रे नही कांइ प्रमाण के ॥ तु०॥ १ ॥ मिथ्यामत महाउ खकार के ॥गु०॥ ते गंभो नरकनुं द्वार के ॥ तु० ॥ मुनिजाषित जाणुं जेह के ॥ गु० ॥ चउग तियें कहयु तस तेह के ॥ तु० ॥ २ ॥ पूरव नव हितनें काजें के ॥ गु० ॥ सांजलीयो ते सुरराजें के ॥ तु०॥ महाकष्टमयी संसारे के ॥गु०॥ आरंज प रिग्रह परकारें के ॥ तु० ॥ ३ ॥ उ ख ठेववा धर्मनें पूछे के ॥गु०॥ कहो सु खकारी धर्म शु छे के ॥ तु० ॥ त्रण तत्त्व स्वरूप सुणावे के ॥ गु० ॥ तेहने मिथ्यात्व वमावे कें ॥तु०॥४॥ नृप वयणथी समकेत पाम्यो के ॥गु०॥ नृ पनें तव शिरथी नाम्यो के ॥तु०॥ देव गुरु पूजा करे अंगी के ॥गु०॥ गुण वत थयो नृप संगी के ॥तु०॥५॥ तु बोधिनो दाता मुज के ॥गु०॥ शु आ पुं हुं हवे तुज के ॥तु०॥ तुज देवा योग्य न दान के ॥गु०॥ तें शिव सुख दीधुं प्रधान के ॥तु०॥६॥ पण आपुं शक्ति प्रमाण के ॥ गु० ॥ चिंतामणि दीये तेणे ठाण के ॥तु०॥ एहनु स्वरूप सुणो स्वामि के ॥ गु०॥ एह रयण सचारे नाम के ॥ तु० ॥ ७ ॥ जेहवां रूप इछे मनमां के ॥ गु० ॥ निज परनां निपजे क्षणमां के ॥ तु० ॥ ते पण निपजे बहु रूप के ॥गु०॥ वली विद्या कामित रूप के॥ तु० ॥ ८ ॥ साधन सहित आपे तेह के ॥ गु० ॥ नृपें दोय ग्रह्यां ते जेह के ॥ तु० ॥ विधिपूर्वक लेइ राय के ॥ गु० ॥ सुर रायनी स्तवना कराय के ॥ तु० ॥ ए ॥ नृप कहे धन्य तु सुरराय के ॥ गु० ॥ बोधि पाम्यो ने परस्त्री त्यजाय के ॥ तु० ॥ चउगतिनें मैत्री कराय के ॥ गु० ॥ सघलो अपराध खमाय के ॥ तु० ॥ १० ॥ अदृश्य थयो ते सुर ताम के ॥ गु० ॥ चउगतिनें सोंपी वाम के ॥तु०॥ हरखी कहे एणी परें वा णि के ॥ गु० ॥ मुज कन्यानो ग्रहो पाणि के ॥ तु० ॥ ११ ॥ श्रीजयानंद कुअर राय के ॥ गु० ॥ सहु विसरजे निज ठाय के ॥ तु० ॥ चउगतिनें पव नवेग ताम कं ॥ गु० ॥ कानमां कहे सांजलो आम के ॥ गु०॥ १२ ॥ मुज कन्या पाणिग्रह थाय के ॥ गु० ॥ तुज पुत्री लेइ ते ठाय के ॥ तु० ॥ आव जो तव चउगति नूप के ॥ गु०॥ नृपनें नमी तस अनुरूप के ॥ तु०॥१३॥ निज धाम गयो प्रिया लेइ के ॥ गु०॥ ते सांजली सजन मिलेइ के ॥ तु०॥

तास शिलानां वृंदो जीरे ॥ तस रजथी मुख मस्तक पूरिउं, तोपण मूके न दवो जीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ वज्रवदन हवे शस्त्रनें मूकतो, पामी खेद अपार जीरे ॥ मुष्टियें मुष्टि रे युद्ध करे तदा, मदथी करता होकार जीरे ॥ सां०॥ ॥ १३ ॥ युद्ध करंता रे मुष्टिघातथी, पृथिवी डुम कपावे जीरे ॥ बिहु दिश फरता वेहु नट गाजता, सर्व दिशा गर्जावे जीरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ देव म ल्या कौतुकथी गगनमां, वेहु पडता आवे वेग जीरे ॥ उपडता उचा जाय देवता, एम करे बहु चेष्टा जीरे ॥ सां० ॥ १५ ॥ नमतां दृष्टि नमे जो नार नी,शूरवीरनी साथ जीरे ॥ कोण न चाले रे बुद्धिमत्त कहो,जस दैवु होय हाथ जीरे ॥सां०॥१६॥ युद्ध करे एम सुर नरराजीयो, एणी परें गयो बहु काल जीरे ॥ डुष्ट अन्यायीयो रे देवता जाणीनें, चिंतवी ते नृपाल जीरे ॥ सां० ॥ १७ ॥ पग पकडीनें रे मस्तकें फेरवी, शिला उपर पछाडे जीरे ॥ वस्त्र धूवे जेम धोबी तेणी परें, वेदनथी बुब पाडे जीरे ॥ सां० ॥ १८ ॥ गतीयें पग देइनें दृढ रह्यो, बोले एणी परें वाणी जीरे ॥ तुजमां बल हो य तो देखाडजे, रे रे अधम अन्नाणी जीरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ ताहारा इष्टनें तु संभारजे, नहीं तो आप तु नारि जीरे ॥ आक्रंद करतो रे सुर एणी परें कहे, तुं माहारो आधारो जीरे ॥ सां० ॥ २० ॥ जगतमल्ल हवे मुजनें मूक तुं, ताहारो हु छु दास जीरे ॥ तेह कृपालु रे कृपापात्रनें, नरपति मूके ता स जीरे ॥ सां०॥ २१ ॥ जय जय शब्द करें तिहां देवता, कुसुमवृष्टि तिहां कीधी जीरे ॥ देवता जइनें लाव्यो नारीने, नृपने भेटणे दीधी जीरे ॥सां०॥ २२॥ आठमी ढाल ए सातमा खम्डमां, श्रीजयानदनें रास जीरे ॥ पद्मविजय कहे सांजलतां थकां, होवे लील विलास जीरे ॥ सां० ॥ २३ ॥ ३३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निजअपराध निर्जर हवे,खमावे बहु खांत ॥ पवनवेग सुख पामिया, अतिशय हर्षे एकांत ॥ १ ॥ सहु परिवारशु सुर हवे, प्रणमे नरपति पाय ॥ कर जोडीनें सुर कहे, तुं समरथ तुं ताय ॥२॥ तुहो पराक्रमी तुं नथी, बा ह्लिप्यवत बयला ॥ सुर असुरा तुज सारिखो, मनुजमांहे न मथाल ॥ ३ ॥ कोइ न जीत्यो मुज कदा, तुरत जीत्यो तु मुज ॥ मूक्यो कृपा करी मुज्कनें, तेणें शु देवं तुज्क ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंडित पद्मविजयगणिविरचिते श्री श्रीजयानंदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे पंचमव्रतनिरतिचारसातिचार पालनविषये कौशलदेशलनिवर्शनगर्जनवज्रकूट गिरिचूर्णनवज्रसुखसुरविज यंतचिंतामणि महाविद्या प्रदानवज्रसुंदरीचंद्रसुंदरीपाणिग्रहणवर्णनोनामा सप्तम खंड समाप्त ॥ षट्खंड गाथा ॥३७६७॥ सप्तम खंडे गाथा ॥२६६॥ सर्वगाथा ॥४२३५॥ षट् खंडे वक्त श्लोक ॥७७॥ सप्तम खंडे वक्तश्लो क बे, सर्व वक्त श्लोक ॥ ८० ॥ सवइयो एक, समस्या एक, दोहा बे ॥

॥ अथाष्टमखंड प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अभिनव सूरय उगियो, शांतिनाथ भगवान ॥ त्रण जगतुनां डुःख ते, टाले तमोवितान ॥ १ ॥ प्रणमी पदकज तेहनां, आखुं आठमो खंड ॥ सांभलतां जे उघशे, तेहनें दंड प्रचंड ॥ २ ॥ उंघे ने उंघुं नहीं, कहे तस दोहोलुं पाप ॥ उघमांहे जूठुं भलुं, ए महोटो संताप ॥ ३ ॥ जेह जगाडे तेहशुं, उलटो आणे क्रोध ॥ दोष परंपर एणी परें, बाधे जाये बोध ॥४॥ उघणनुं श्रुत उघशे, नवि उघो ने काम ॥ उंघण मृतकनी वानगी, तेहथी अधिको आम ॥ ५ ॥ धूणे भूआनी परें, व्यंतर पेगे जेम ॥ जागतां हांसी करे, तेणें कहो उघीयें केम ॥ ६ ॥ तेम विकथा वर्जो वली, विकथा न क रो जेण॥विकथा ते वितथा करे, नवि सुणवा दिये जेण॥७॥तेहथी उध्योरूअ डो, जे नवि सांभले आप॥स्वपर न सांभलवा दिये, तेणें ए महोटुं पाप ॥ ८ ॥ निद्रा विकथा परहरी, सांभलो चतुर सुजाण ॥ खंड खंड चढतुं अछे, श्रीजय पुण्यप्रमाण ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ प्रथम गोवाला तणे भवेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन उपवनमां गयाजी, श्रीजयानंद कुमार ॥ आठ विद्याधर नर पतिजी, आवि करे नमस्कार ॥ १ ॥ भविक जन जुठ जुठ पुण्य विशेष ॥ दिन दिन चढतु अशेष ॥ भ० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ बेसारे सिंहासनेंजी, पवनवेग नरराय ॥ सुख प्रश्नादिक पूछताजी, मनमां आनंद थाय ॥ भ० ॥ ॥ २ ॥ श्रीजयानंदनें आगलेंजी, ते आठेनुं स्वरूप ॥ पवनवेग नृप वर्णवे जी, सांभलजो तुमें भूप ॥ भ० ॥ ३ ॥ दक्षिणश्रेणी वैताढ्यमांजी, जाणो सघला रे एह ॥ ४ ॥ भोगरति ए राजीयोजी, भोगपुरी धणी जेह ॥ भ०॥

वत्सव करे नव नव रंगें के ॥ गु० ॥ हवे श्रीजयतातनें सगे के ॥ तु० ॥ १४ ॥ योगिणी दीधा अलंकार के ॥गु०॥ वली विनति पत्र उदार के ॥ तु० ॥ खेचर साथे ते मूके के ॥ गु० ॥ विश्वास हेतें नवि चूके के ॥ तु०॥१५॥हवे पवनवेगादिक सगें के॥गु०॥वैताढ्यें आव्या मनरंगें के॥तु०॥ तिहां शाश्वत चैत्यनें वांदे के ॥ गु० ॥ रोमांचित थइ आणंदे के ॥ तु० ॥ १६ ॥ गौरव करी प्रार्थना करतो के ॥ गु०॥ निज नयर लावे मन हरतो के ॥ तु० ॥ पवनवेग दक्षिण श्रेणें के ॥ गु०॥ चउगति बोलाव्यो तेणें के ॥ तु० ॥ १७ ॥ सुता चउसुंदरी तास के ॥ गु० ॥ निज वज्रसुंदरी खास के ॥ तु०॥शुज मूहूर्तें दोय परणावे के॥गु०॥बहु आग्रहथी सुख पावे के ॥तु०॥ ॥ १८ ॥ चक्रायुध नये सखेवे के ॥ गु० ॥ बहु गज अश्वादिक देवे के ॥ तु० ॥ शत्रुमर्दिनी विद्या एक के ॥ गु० ॥ ले पवनवेग घर ठेक के ॥ तु०॥ ॥ १९ ॥ पण डुखथी सधाये तेह के ॥गु०॥ नवि साधी शके तेणें एह के ॥तु०॥ शील सत्त्वनें जाग्य विशाल के ॥गु०॥ उत्कृष्ट एहनु जाल के॥तु०॥ ॥२०॥ नृपनें विधि सहित ते आपे के ॥गु०॥ वली मणिघरमां नृप थापे के ॥तु०॥ दोय नारीशु जोग विलास के ॥गु०॥ तिहां रहेतां सुख आवास के ॥तु०॥२१॥ चक्रायुधशुं युध थाय के ॥गु०॥ सैन्यशु तिहां आवजो जाय के ॥तु०॥ एम कहीनें चउगतिने वात के ॥ गु० ॥ पवनें मोकल्यो सुखशात के ॥तु०॥२२॥ जैनधर्मे प्रजावें राय के ॥ गु० ॥ दोय नारीशु सुखमां गाय के ॥ तु०॥ कौशल देशल दोय जाय के ॥ गु० ॥ पंचमव्रत केरे पसाय के ॥ तु० ॥ २३ ॥ आराधि विराधि फल पाया के ॥ गु० ॥ तेम श्रीजयानंदजी राया के ॥तु०॥ चोथा व्रतथी अरि झींपे के ॥ गु०॥ तेम पालो जेम पुण्य दीपे के ॥ तु० ॥ २४ ॥ सातमे खंमें ए जाखी के ॥ गु० ॥ सत्यवचनथी शास्त्र ले साखी के ॥ तु० ॥ कीर्त्ति जस कपूर समान के ॥ गु० ॥ श्रीजया नंद रास प्रधान के ॥ तु० ॥ २५ ॥ ए नवमी ढाल रसाल के ॥ गु० ॥ ए सातमो खंम विशाल के ॥ तु० ॥ श्रीखिमाविजय गुरु नाम के ॥ गु० ॥ शिष्य जिनविजय गुणधाम के ॥ तु० ॥ २६ ॥ तस उत्तम विजय सुशिष्य के ॥ गु० ॥ कहे पद्मविजय सुजगीश के ॥ तु० ॥ सुणतां होये मंगलमाला के ॥ गु० ॥ वली घर घर लछि विशाला के ॥तु०॥ २७ ॥ सर्वगथा ॥२९६॥

॥ इति श्रीमडुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते श्री श्रीजयानदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबधे पंचमव्रतनिरतिचारसातिचार पालनविषये कौशलदेशलनिदर्शीनगर्नेवज्रकूट गिरिचूर्णनवज्रसुखसुरविज यंतचितामणि मद्दाविद्या प्रदानवज्रसुंदरीचड्सुंदरीपाणिग्रह्णवर्णनोनामा सप्तम खंम समाप्त ॥ षट्खंम गाथा ॥३ए६ए॥ सप्तम खंमे गाथा ॥२६६॥ सर्वगाथा ॥४२३५॥ षट् खम्मे उक्त श्लोक ॥७०॥ सप्तम खंमे उक्तश्लो क वे, सर्व उक्त श्लोक ॥ ७० ॥ सवइयो एक, समस्या एक, दोहा वे ॥

॥ अथाष्टमखंम प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अजिनव सूरय उगियो, शांतिनाथ नगवान ॥ प्रण जगत्नां ङख ते, टाले तमोवितान ॥ १ ॥ प्रणमी पदकज तेहनां, आखुं आठमो खम्म ॥ सांनलतां जे उघशे, तेहनें दंम प्रचम्म ॥ २ ॥ उंघे ने उघुं नहीं, कहे तस दोहोलुं पाप ॥ उघमांहे जूतुं नलुं, ए मद्दोटो सताप ॥ ३ ॥ जेह जगाडे तेहशुं, उलटो आणे क्रोध ॥ दोष परंपर एणी परें, वाधे जाये बोध ॥४॥ उघणनुं श्रुत उघशे, नवि उघो ने काम ॥ उघण मृतकनी वानगी, तेहथी अधिको आम ॥ ५ ॥ घूणे नूआनी परें, व्यतर पेठो जेम ॥ जागतां हांसी करे, तेणें कहो उघीयें केम ॥ ६ ॥ तेम विकथा वर्जो वली, विकथा न क रो जेण॥विकथा ते वितथा करे, नवि सुणवा दिये जेण॥७॥तेहथी उल्यो रूअ डो, जे नवि सांनले आप॥स्वपर न सांनलवा दिये, तेणें ए मद्दोटु पाप ॥ ८ ॥ निद्रा विकथा परहरी, सांनजो चतुर सुजाण ॥ खम्म खम्म चढतु अठे, श्रीजय पुण्यप्रमाण ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ प्रथम गोवाला तणे नवेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन उपवनमां गयाजी, श्रीजयानद कुमार ॥ आठ विद्याधर नर पतिजी, आवि करे नमस्कार ॥ १ ॥ नविक जन जुर्ज जुर्ज पुण्य विशेष ॥ दिन दिन चढतु अशेष ॥ न० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ वेसारे सिंहासनेंजी, पवनवेग नरराय ॥ सुख प्रश्नादिक पूठताजी, मनमां आनद थाय ॥ न० ॥ ॥ २ ॥ श्रीजयानदनें आगलेंजी, ते आठेनु स्वरूप ॥ पवनवेग नृप वर्णवे जी, सांनजजो तुमें नूप ॥ न० ॥ ३ ॥ दक्षिणश्रेणी वेताढ्यमांजी, जाणो सघला रे एह ॥ १ ॥ नोगरति ए राजीयांजी, नोगपुरी धणी जेह ॥ न०॥

॥ ४ ॥ वज्रपुरीनो राजीयोजी, २ चडवाहु नरराय ॥ रत्नपुरीनो ए पतिवली, ३ महावाहु सुख दाय ॥ न० ॥ ५ ॥ ४ चडवेग चोथो लह्योजी, एहनुं पुर मणिधाम ॥ नगर वीरपुरनो धणीजी, ५ रविप्रन जेहनु नाम ॥ न० ॥६॥ ६ रत्नचूड नृप पुरतणु जी, रत्नालय अनिधान ॥ कनककूट पुर सातमुवी, ७ तडितवेग राजान ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरगिरि चूड आठमो जी, ८ श्रीष हान नूपाल ॥ चार चार पुत्री हवीजी, सवि बत्रीश रसाल ॥ न०॥ ८ ॥ माता सहुनी जूजूइजी, सरखी वयनी रे प्राय ॥ सरिखी रूप कला गुणें जी, रूपें रंजा हराय ॥ न० ॥ ए ॥ साथे ते नेली नणीजी, मांहोमाहे रे प्रेम ॥ करे प्रतिज्ञा सहु मलीजी, एकपति करणनो नेम ॥ न० ॥ १० ॥ रूप अनुत्तर जाणिनेंजी, ते कन्या बतरीश ॥तेहना तातनें मोकलेजी,दूत चक्रायुध ईश ॥ न० ॥११॥ पुत्र अमारानें दीयोजी, तुम कन्या अनुरूप॥ उत्तर आप्यो तेहनेंजी, सर्व मली एक रूप ॥न०॥१२॥ मेल लहेणां देवा तणोजी, जोवरावीनें रे स्वामि ॥ आवी उत्तर वालशुजी, तुम चरणें शिर नामि ॥ न० ॥१३॥ नोगरति नगरें थयाजी,नेला आठे रे मित्र ॥ कहो शुं करवु आपणेजी, थाठे एकज चित्त ॥ न० ॥ १४ ॥ तिन्न नर्त्ता इहें नहींजी, कुमरीयो मनमांह ॥ एक कुमरनें जो दीजीयेंजी, मनमां धरी उत्साह ॥ न० ॥ १५ ॥ बीजी स्त्री ईर्ष्या करेजी,तेणे नवि सूजे रे कांय ॥ जो नवि दीजें सर्वथाजी, तो ए क्रोधें नराय ॥ न० ॥ १६ ॥ राज्य जीवित सहु अपहरेजी,रूठो ए महाराय ॥ संकटमां आवी पडयाजी,उत्तर कहो श्यो कराय ॥ न० ॥१७॥ एण अवसर तिहां आवियोजी,एक निमित्तियो रे जाण ॥ करी बहु माननें पूछियुंजी, विषम कार्य गति ठाण॥न०॥१८॥ निमित्त जोइ निमित्तियोजी, बोल्यो एणी परें वाण ॥ चक्रायुधनो नय तु मोजी, म म करो निमित्त प्रमाण ॥न०॥१ए॥ राज्य अल्पदिन एहनुजी, तव पूछे फरी तेह ॥ मरण के शत्रु एहनोजी,राज्य जशे कहो केह ॥न० ॥ २० ॥ ज्ञानी कहे ए पामशेजी, महा पराजव दुखखाणी ॥ वात अ सनव सांनलीजी, पूछे फरी तिण ठाण ॥ न० ॥ २१ ॥ कोण शत्रु एहनो थशेजी, ज्ञानी बोले रे ताम ॥ वज्रवेग मूकावशेजी,जे योगिणीनें धाम ॥ ॥ न० ॥ २२ ॥ वज्रकूट नग चूरिनेंजी, चडगतिनी रे नारि ॥ देव वज्रमु ख जीतीनेंजी, मूकावशे निरधार ॥ न०॥ २३ ॥ तेहनें कन्या आपजोजी,

योग्य जणी ते रे सर्व ॥ राजाधिराज ते थायशेजी, मोहोटो नृप गतगर्व ॥ ज० ॥ २४ ॥ सांजली हर्षी आपियुजी, दान विसर्ज्यो रे तास ॥ चढ गति देखी अमोजी, कस्यो निरधार ते खास ॥ ज० ॥ २५ ॥ निज स्वारथ हेतें अमोजी, आव्या तुमची रे पास ॥ ए कन्या परणी तुमोजी, सफल करो अम आश ॥ ज० ॥ २६ ॥ पहेली आठमा खंममांजी, पद्मविजय कही ढाल ॥ पुण्यवत प्राणी लहेजी, सघले मगल माल ॥ ज० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आवो अह्म पुर साहेवा, म म करो प्रार्थना जंग ॥ चक्रायुध जयें पर णीयें, एकांतें मनरंग ॥ १ ॥ श्रीजयानद कहे तदा, चक्रायुध जय धारि ॥ परणवु जे ठानां रही,स्वाद किश्यो अवधारि ॥ २ ॥ पहखो जय टलवा लगें, एम कही कस्या विदाय ॥ पवनवेग कहे कानमां, सांजलो रे तुमें जाय ॥ ३॥ चक्रायुध सगर समे, सैन्य सामग्री समेत ॥ वहेला लइने आवजो, ए तुम अम सकेत ॥ ४ ॥ सहुयें ते अगीकरी, पोहोता निज निज धाम ॥ हवे वैताढयनी उपरें, सिद्धकूट अजिराम ॥ ५ ॥ पवनवेग अनुमति तिहां,आव्या श्री जयानद ॥ सुर खेचर दीधी तदा, विद्या जे आणद ॥ ६ ॥ सिद्ध प्रतिमानें आगलें, साधवा मांमे तेह॥विधिथी अल्पकालें करी, सिद्ध थइ गुणगेह ॥ ७॥

॥ ढाल बीजी ॥ साहेबा पचमी मगल वार, प्रजातें चालवु रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ साहेवा विद्याधर बहु साथ के, परिवृत आवीयो रेलो ॥ साहेवा पवनवेग पुरें खेचरी, वृदें वधावीयो रेलो ॥ साहेवा सुखथी महोलमां अथवा, सजामा क्रीडा करे रेलो ॥ साहेबा प्रिया सहित मनमोजमां, जेम इन्ना धरे रेलो ॥ १ ॥ साहेबा पवनवेग दिन बीजे, बेठो सजा करी रेलो ॥ साहेवा चक्रायुधनो दूत, आव्यो तेणी पुरी रेलो ॥ साहेवा आव्यो सजामकार, पवनवेग वधियो रेलो ॥ साहेवा कनकासन वेइ हरपें, तास वेसाडियो रेलो ॥२॥ साहेबा सुख प्रश्नादिक वात, पूछे चक्री तणी रेलो ॥ साहेवा आगम कारण पूछे, बोल्यु सवि अवगणी रेलो ॥ साहेवा तेह कहे सुणो चक्री, तुम आणा करे रेलो ॥ साहेव वज्रसुदरी तुम कन्या, मुज स्यर्यवरे रेलो ॥ ३ ॥ साहेवा मोकल्यो सांजली एम, के मनमां खलजल्यो रेलो ॥ साहेवा तो पण धीरय धारि, पवन कहे सांजलो रेलो ॥ साहेवा जो तुम मनमां एम, तो केम विलव कस्यो रेलो ॥ साहेवा श्रीजयें पुत्र मूकावी

॥ ४ ॥ वज्रपुरीनो राजीयोजी, ३ चंड्वाहु नरराय ॥ रत्नपुरीनो ए पतिजी, ३ महाबाहु सुख दाय ॥ न० ॥ ५ ॥ ४ चंड्वेग चोथो लह्योजी, एहनुं पुर मणिधाम ॥ नगर वीरपुरनो धणीजी, ५ रविप्रन्न जेहनु नाम ॥ न० ॥६॥ ६ रत्नचूड नृप पुरतणु जी, रत्नालय अनिधान ॥ कनककूट पुर सातमुंजी, ७ तडितवेग राजान ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरगिरि चूड आठमो जी, ८ श्रीष इान नूपाल ॥ चार चार पुत्री हवीजी, सवि बत्रीश रसाल ॥ न०॥ ८ ॥ माता सहुनी जूजूइजी, सरखी वयनी रे प्राय ॥ सरिखी रूप कला गुणें जी, रूपें रंना हराय ॥ न० ॥ ए ॥ साथे ते नेली नणीजी, मांहोमांहे रे प्रेम ॥ करे प्रतिज्ञा सहु मलीजी, एकपति करणनो नेम ॥ न० ॥ १० ॥ रूप अनुत्तर जाणिनेंजी, ते कन्या बतरीश ॥तेहना तातनें मोकलेजी,दूत चक्रायुध ईश ॥ न० ॥११॥ पुत्र अमारानें दीयोजी, तुम कन्या अनुरूप॥ उत्तर आप्यो तेहनेंजी, सर्व मली एक रूप ॥न०॥१२॥ मेल लहेणां देवा तणोजी, जोवरावीनें रे स्वामि ॥ आवी उत्तर वालशुंजी, तुम चरणें शिर नामि ॥ न० ॥१३॥ नोगरति नगरें थयाजी,नेला आठे रे मित्र ॥ कहो शुं करवु आपणेजी, थाउं एकज चित्त ॥ न० ॥ १४ ॥ निन्न नर्त्ता इबे नहींजी, कुमरीयो मनमांह ॥ एक कुमरनें जो दीजीयेंजी, मनमां धरी उत्साह ॥ न० ॥ १५ ॥ बीजी स्त्री ईर्ष्या करेजी,तेणे नवि सूजे रे कांय ॥ जो नवि दीजें सर्वथाजी, तो ए क्रोधें नराय ॥ न० ॥ १६ ॥ राज्य जीवित सहु अपहरेजी,रूगे ए महाराय ॥ सकटमां आवी पडयाजी,उत्तर कहो श्यो कराय ॥ न० ॥१७॥ एण अवसर तिहां आवियोजी,एक निमित्तियो रे जाण ॥ करी बहु माननें पूबियुजी, विषम कार्य गति गण॥न०॥१८॥ निमित्त जोइ निमित्तियोजी, बोल्यो एणी परें वाण ॥ चक्रायुधनो जय तु मोजी, म म करो निमित्त प्रमाण ॥न०॥१ए॥ राज्य अल्पदिन एहनुजी, तव पूबे फरी तेह ॥ मरण के शत्रु एहनोजी,राज्य जशे कहो केह ॥न० ॥ २० ॥ ज्ञानी कहे ए पामशेजी, महा पराजव डु खखाणी ॥ वात अ सनव सांनलीजी, पूबे फरी तिण गण ॥ न० ॥ २१ ॥ कोण शत्रु एहनो थशेजी, ज्ञानी बोले रे ताम ॥ वज्रवेग मूकावशेजी,जे योगिणीनें धाम ॥ ॥ न० ॥ २२ ॥ वज्रकूट नग चूरिनेंजी, चड्गतिनी रे नारि ॥ देव वज्रमुख जींतीनेंजी, मूकावशे निरधार ॥ न०॥ २३ ॥ तेहनें कन्या आपजोजी,

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहेवा शुद्ध वंश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहेवा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहेवा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहेवा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहेवा ज्ञान धर्म धृति कीर्त्ति, के जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहेवा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहेवा नक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहेवा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रभु रेलो ॥ साहेवा इत्यादिक उपदेश, के सांनली नृविभु रेलो ॥ साहेवा कां इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहेवा पाछो उत्तर तास, के एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहेवा आठमे खमें ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहेवा श्रीजयानदनें रासें के, पद्मविजय नणी रेलो ॥ सा हेवा जैन मारगना जाण,के आगम सांनले रेलो ॥ साहेवा काममदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हु आवियो, कामथी न करु काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना वलवु कर्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणाजग नरेंइनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इहां जमाइ जीवतो, तो कहु ते करे सो य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुध दासीपति, मौलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपु हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, छे कलावती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपनानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंमित नें परधान रे॥ विनीत ॥ हाकारो न णी उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें नरी ॥ ए आंकणी ॥ सनलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानदनें तेह रे ॥ वि०॥ विस्तारें सनलावतां, चक्रायुध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ पृ०॥

के, मुजनें उपगर्यो रेलो ॥ ४ ॥ साहेवा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें सें कनी रेलो ॥ साहेवा दीधी कन्या तास, के परण्यो ते धणी रेलो ॥ साहेवा पुत्र मूकावो मुज, के एम बहु कह्यु रेलो ॥ साहेवा पण मुज वचन स्वामियें, मनमां नवि लह्यु रेलो ॥ ५ ॥ साहेवा दूत कहे जो परणी, के पण मोक लो तमें रेलो ॥ साहेवा तो तुम तूसशे स्वामि के, वली कहेशुं अमें रे लो ॥ साहेवा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेलो ॥ साहेवा घटती वातनु वयण, के मुखथी खोलीयें रेलो ॥ ६ ॥ यत ॥ सकृत् ज ल्पति राजान , सकृत् जल्पति पंमिता ॥ सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेवा कन्यानु मागु होय, के एहनु नहीं कदा रेलो ॥ साहेवा दूत कहे ए बलियो, के तुम रुसशे जदा रेलो ॥ सा हेवा ससरा जमाइनी जांखो, के गति तुम शी थशे रेलो ॥ साहेवा पवन कहे जे थानार, के थाशे जावि वशें रेलो॥७॥साहेवा प्राण जते पण एह,के नवि थाये किमे रेलो ॥ साहेवा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रे लो ॥ साहेवा उक्ति युक्तियी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेलो ॥ साहेवा तुमें गे चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेलो ॥ ८ ॥ साहेवा दूत गयो हवे ताम, के चक्रीनी कनें रेलो ॥ साहेवा पवन ते मत्रीनें पूछे, के वली चितवी मनें रेलो ॥ साहेवा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेलो ॥ साहेवा मत्री मूके बहु साथ, के वादनें जींपतो रेलो ॥९॥ साहेवा दूतें च क्रीनें वात, के सजलावी यदा रेलो ॥ साहेवा क्रोधयकी धमधमियो, के च क्रायुध तदा रेलो ॥ साहेवा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रे लो ॥ साहेवा इद्यी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेलो ॥ १० ॥ साहे वा कुलवतामां धोरी, के जयवता रहो रेलो ॥ साहेवा तुमथी अनीति अ न्याय, के सहु दूरें रहो रेलो ॥ साहेवा खेचर नर सुर असुर, के युगम म ली सदा रेलो ॥ साहेवा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्त्ति सपदा रेलो ॥ ॥ ११ ॥ साहेवा चइ उज्ज्वल तुज्ज कीर्त्ति,के जगमां विस्तरी रेलो ॥ साहे वा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेलो॥साहेवा अद्भुत रू प लावण्य, के कोडीगमें कनी रेलो ॥ साहेवा घर घर दीसे तेह, के रूपें रंजा बनी रेलो ॥ १२ ॥ साहेवा इञ्चायें परणी तेह,के जोगवो सुख घणु रेलो ॥ साहेवा परस्त्रीयी जाये कीर्त्ति के, आवे लघु पणु रेलो ॥ १३ ॥ साहेवा

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहेबा शुद्ध वश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहेबा कुलनें कलक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहेबा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहेबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहेबा ज्ञान धर्म धृति कीर्त्ति, के नाणवा तत्परा रेलो ॥ साहेबा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहेबा नक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहेबा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रनु रेलो ॥ साहेबा इत्यादिक उपदेश, के सांनली नृविहु रेलो ॥ साहेबा कां इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहेबा पाठो उत्तर तास, के एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहेबा आठमे खर्म ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहेबा श्रीजयानदनें रासें के, पद्मविजय नणी रेलो ॥ साहेबा जैन मारगना जाण,के आगम सांनले रेलो ॥ साहेबा काममदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥८०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करु काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना बलवु कह्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणानग नरेंइनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खप होय ॥ इछे जमाइ जीवतो, तो कहु ते करे सो य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुध दासीपति, मौलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, ठे कलावती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुदरी आवीनें, मुज वृत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपनानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पमित नें परधान रे॥ विनीत ॥ हाकारो न णी उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें नरी ॥ ए आकणी ॥ सननलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानदनें तेह रे ॥ वि०॥ विस्तारें सननलावतां, चक्रायुध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ पृ०॥

॥ २ ॥ हवे पवनवेग मंत्री सहु, श्रीश्रीजयानंद एकांत रे ॥ वि० ॥ वात वि चार करता कहे, श्रीजय मत मन करो भ्रांति रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ३ ॥ जे चक्रायुध तुमनें कह्युं, ते करियें अंगीकार रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरी राखो गो पवी, थोडो काल गेह मकार रे ॥ वि० ॥ ए०॥ ४ ॥ वज्रसुंदरीनुं करी रूप हु, केटली लेइ साथे नारि रे ॥ वि० ॥ चक्रायुध पासे जइ करी, नणावीश तस कनी सार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥५॥ सघलुं करशुं रूडुं श्रमे, जेम उचित हशे तेम तेह रे ॥ वि० ॥ हुं कार्य करीश सवि एकलो, कांइ फिकर म कर शो एह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ६ ॥ एम कही सहु निज निज घर गया, तव चक्रीना पुरुष प्रधान रे ॥ वि०॥ श्राव्या तस पवनवेग करे, प्रतिपत्ति तथा बहु मान रे ॥ वि० ॥ ए०॥७ ॥ ते कहे चक्री एणी परें कहे, में केहेवराव्युं ठे जेह रे ॥ वि० ॥ वज्रसुदरी मूको शीखाववा, वली वीजुं कह्युं जेह तेह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ८ ॥ जो न करे तो हु श्रावीयो, युध करवा याजे तै ग्यार रे ॥ वि० ॥ राज्य मूकीनें जाजो तुमें, त्रीजी गतिनो नहीं ठार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ए ॥ कहे पवनवेग शुं वोलीया, कोण नवि माने प्रभु श्राण रे ॥ वि० ॥ करी सामग्रीनें मोकलुं, श्राजनो दिन पहखो जाण रे ॥वि०॥ ॥ ए० ॥ १० ॥ उतारो श्राप्यो एम कही, श्रशनादिक युक्ति श्रपार रे ॥ ॥ वि० ॥ संतोष्या नली नांतिशुं, अवसर थयो रातनो त्यार रे ॥ वि०॥ ॥ए०॥११॥ तव श्रीजय पांचशें पुरुषनें, परीक्षा करी जेह युवान रे॥वि०॥ शस्त्र शास्त्रमां कुशल जे, काढयो ते करी विज्ञान रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १२ ॥ वीरांगद महाबाहु जे,सुघोष प्रमुख विदित्त रे ॥वि०॥ स्त्रीनां रूप करे तदा, थया श्राप समान विचित्त रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १३ ॥ वस्त्र आनूषण सा रिखां, विद्यायें ते करे रूप रे ॥ वि० ॥ वज्रसुदरीनां जेहवुं, श्राप रूप करे नरनूप रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १४ ॥ चिंतामणि रत्न प्रनावथी, रूडां वस्त्र त था श्रलंकार रे ॥ वि० ॥ कुलेन नहीं वज्रसुदरी, गोपवी वली गेह मझार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१५॥ पवनवेग प्रात समे, ते परधाननी साख रे ॥वि०॥ कारिमी पुत्रीनें कहे, सांनलो तुमें महारी नाख रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १६ ॥ नाटक कला शिखावीनें, करजो स्वामी संतोष रे ॥ वि० ॥ सा कहे तात श्राणा करु, एहमां नहीं कांइये मोष रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१७॥ शस्त्र गुप्त राखी करी, वेग सहुये विमान रे ॥वि०॥ नाटयसामग्री प्रगट पणे, पोहो

ता चक्रीनें थान रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१७॥ मूकी उद्यानमां ते नरा, जइ कहे चक्रीने वात रे ॥ वि० ॥ दासीयो तेडवा मोकले, हैयडे तस हर्ष न मात रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १९ ॥ पर्वतमां कोइ थानकें जइ, मूके गोपवी ते शस्त्र रे ॥ वि० ॥ कारमी स्त्रीयो मूकी करी, पहेरी अलंकृति वस्त्र रे ॥वि०॥ ॥ ए० ॥२०॥ राय हजूर ते आवीया, ते वदन अधोमुख राखि रे ॥ वि०॥ वज्रसुंदरी उनी रही, हवे लाजथी घूंघट दाखि रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ २१॥ बहु नारी घडी घडीनें थयो, धाता विज्ञाननी सीम रे ॥ वि०॥ नीपजावी छे पछी एहनें,जगमां नही एहवु नीम रे ॥ वि० ॥ ए० ॥२२॥ नरपति एणी परें चित्त चिंतवी,अहो एह रूप प्रमाण रे ॥ वि० ॥ खाण कलानी ए हशे, नृत्य करवानी आण रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ २३ ॥ त्रीजी आठमा खम मां,वर पद्मविजय कही ढाल रे ॥ वि० ॥ श्रीश्रीजयानंदना रासमां, वात सुणजो हवे सुरसाल रे ॥वि०॥ए०॥२४॥ सर्वगाथा ॥९१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप आणाथी ते हवे,गीत वात मनोहार ॥ सर्वस्त्रीयें करी परवरी, नाटक करे उदार ॥१॥ देखी नृप मुख चमकियो, वस्त्र अनें अलंकार ॥ देखी देखी रीजतो, देवा दान अपार ॥ २ ॥ ग्रास दास्यादिक बहु दीये, देइ आदर मान ॥ रहेवा आवास आपतो, जाणे स्वर्ग विमान ॥ ३ ॥ सोंपी पुत्री शीखवा, चक्रसुंदरी जेह ॥ निज परिवारें परवरी, रहे आवासें तेह ॥ ४ ॥ वज्रसुंदरी शीखवे, नाटक कला अभ्यास ॥ निज सम चक्रसुंदरी प्रत्यें, नित्य नित्य राखी पास ॥ ५ ॥ प्रज्ञायें सरसति समी, सोजागिण सुविनीत ॥ सरलनापिणी गुणवती, शीखे धरती प्रीति ॥ ६ ॥ योगिणीवृन्द ते गावती, श्रीजयकुमर चरित्र ॥ माया नारी सहु मली,स्वर पद वर्ण विचित्र ॥ ७ ॥ चरित्र विचित्र सुणी करी, कन्या कुमरशुं राग ॥ धरती पूछे हे सखी,कोण श्रीजय महाजाग ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ न्हानोके न्हानो नाहलो रे, न्हानो चांपानो छोड ॥
॥ न्हानो० ॥ ए देशी ॥

॥ जे तुमें गावो गीतमा रे,श्रीजयानंद कुमार ॥ लागी मोहनीरे ॥ चक्री के चक्री समोवडें रे, जग नहीं एहवो उदार ॥ ला० ॥ १ ॥ ते मुज नांखो कोण छे रे, तव ते बोली नारि ॥ला०॥ योगिणीगण गाती थकी रे, पर्वत

केली मझार ॥ ला० ॥ २ ॥ ते अमें सांनली शीखियां रे, पण नवी कंन खु तास ॥ला०॥ पण वज्रसुंदरी वर समो रे, उत्तम गुण आवास ॥ ला० ॥ ॥ ३ ॥ ज्ञानीयें उत्कृष्टो कह्यो रे, इणहीज नरत मझार ॥ला०॥ सनवीर्ये एम सांनली रे, देखी कलादिक वार ॥ ला० ॥४॥ वज्रसुंदरीशुं रीजती रे, इछे रहेवु तस पास ॥ ला०॥ नाग्य होये जो माहरु रे,तो एहवो धव खास ॥ ला० ॥ ५ ॥ वज्रसुंदरी नेली रहु रे, पण हवे परण्यो तेह ॥ ला० ॥ तात धरे द्वेप तेहशु रे,केम आपे मुज एह ॥ ला० ॥ ६ ॥ तेणें हु अनागिणी मावडी रे, एम मन धरती शोक ॥ ला० ॥ आमण दूमणी ते रहे रे, रवि विरहें जेम कोक ॥ला०॥७॥ तव ते देखी पूछती रे, कारमी नारीयो एम ॥ ॥ ला० ॥ रे वत्स तु रंजा समी रे, इछे पुरंदर प्रेम ॥ला०॥८॥ सा कहे सांनलो बेहेनडी रे,चइ अदेवा निज पाणि ॥ ला० ॥ हांसी थाये जेम तेणी परें रे, शुं असाध्य वखाण ॥ ला० ॥९॥ नारियो कहे तु सांनले रे, वज्रसुंदरी एह ॥ ला० ॥ एहनें असाध्य कांइ नथी रे, इछे ते करे जेह ॥ला०॥ ॥ १० ॥ दीठी कला तें जेहवी रे,जगतनें जीतणहार ॥ ला० ॥ तेहवु पराक्रम जाणजे रे, फेर पडे न लगार ॥ला० ॥११॥ पण मन थिर नवि सनवे रे, ताहरुं अम मनमांहि ॥ ला० ॥ नारीनु चित्त चपल होये रे,कपि परें थिर नही क्यांहि ॥ ॥ ला० ॥ १२ ॥ चपल चित्त अर्थी करे रे, कोण विषम ए काम ॥ ला० ॥ सा कहे स्तनसगति परें रे, माहारु मन दृढ म म ॥ ला० ॥ १३ ॥ जेम दरिद्री धनरागीयो रे,अमृत रोगी मान ॥ला०॥ तरश्यानें अमृत परें रे, तेम माहारे बहु मान ॥ ला० ॥ १४ ॥ नारियो कहे जो एम छे रे,तो तुं था तैयार ॥ ला० ॥ ते पण आवी उतावली रे, लइ निज धन सुख लार ॥ ला० ॥ १५ ॥ नारियो सहु सनलावती रे, श्रीजयानदने वात ॥ ला० ॥ ततक्षण रचीया विमानमां रे, बेसाडी ते ख्यात ॥ ला० ॥ १६ ॥ चाल्यो गगनमां तेहवे रे, महोल उपर रही एम ॥ ला० ॥ उद्घोषणा करे आकरी रे, सुणजो आणी प्रेम ॥ ला० ॥ १७ ॥ रे चक्री रे खेचरा रे, वीर तणु तुज मान ॥ला०॥ लेइ जाय चक्रसुदरी रे, सनलावी तुम कान ॥ ला० ॥ १८ ॥ बलवता जो छो तुमें रे,तो श्रीजयानद राय ॥ ला० ॥ पासेंथी मूकावजो रे, छल न करुं एणें गय ॥ ला० ॥ ॥ १९ ॥ एम कही नगर उद्यानमां रे, आवी ग्रस हथीयार ॥ला०॥ मगा

वे बहु जातिना रें, श्रीजयानंद कुमार ॥ला०॥१७॥ आठमे खंमें चोथी क
ही रे, पद्मविजयें वर ढाल ॥ ला० ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे, पुण्यें मग
लमाल ॥ ला० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सांभली विस्मय लह्यो,चिंतवे खेचर राय ॥ अहो पराक्रम नारिनुं, अहो अनीति कराय ॥ १ ॥ बहु सुभटनें मोकले, कन्या वालवा काम ॥ माया स्त्रीशुं जूझिया, धरता अतिशय माम ॥ २ ॥ हार्या ते नागथका, आव्या चक्री पाय ॥ स्त्रीयें हरव्या लाजथी, मुखथी नवि बोलाय ॥ ३ ॥ पण रुधिरें खरडया थका, देखी क्रोध भराय ॥ महाबल मोकले विस्मयें,पा यकना समुदाय ॥ ४ ॥ केइ विमान मांहे रह्या, केइ बेग गजराज ॥ तुरग चढ्या केइ तेजछु, लेइ निज निज साज ॥ ॥५ ॥ युद्ध करंता तेहशुं, नाठा सुभट जे नारि ॥ राखो अम्ह कहेता थका, जिहां छे श्रीजयकुमार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ जाउं जाउं रे रुठडा नाथ, तुमशुं नहीं बोलुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानदजी अतीया, कांइ युद्ध करणने काज रे ॥ स्त्रीरूपें आवी भडयो, कांइ बलवतो महाराज ॥ १ ॥ गुणगणवतो रे, मारो मारो रे करे हुंकार ॥ गु० ॥ लेइ लेइ रे कर हथियार ॥ गु० ॥ शूरवीर थइ शिरदार ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ गदा लेइने चूरतो, कांइ पापड परें विमान रे ॥ महाब लशुं गज पाडतो, कांइ पर्वत शिला समान ॥ गु०॥ २ ॥ गरुड परें हय ले इने, कांइ गगनें भमाडे तेह रे ॥ चचा पुरुष तणीपरें, कांइ पाडे सुभटनें जेह ॥ गु० ॥ ३ ॥ केलिनु वन जेम हाथीयो, कांइ हिम जिम कमलनी ख म रे ॥ स्त्रीरूपें कुमरें तदा, कांइ त्रासव्यो तेज प्रचम ॥ गु० ॥ ४ ॥ मूकी मन नाशि गया, कांइ भिन्न भिन्न सहु जाय रे ॥ रुधिर झरंता लाजता, कांइ आव्या जिहां नरराय ॥ गु० ॥ ५ ॥ स्त्रीयें हरव्या ते लाजथी, कांइ मुख न देखाडे आय रे ॥ तेह स्वरूप चरथो सुणी, कांइ नरपति खेद भ राय ॥ गु० ॥ ६ ॥ खेद लाज विस्मय घणो, कांइ क्रोधथी व्याकुल थाय रे ॥ पुत्री पाछी वालवा, कांइ उठे पोतें राय ॥ गु० ॥ ७॥ स्त्री उपर ए ना खतां, कांइ लाजे छे मुज बाण रे ॥ मोहोटो अपजश चिंतवी, कांइ वेगा तिणहिज ठाण ॥ गु० ॥ ८ ॥ पवनवेग खेचर पति, कांइ भोगरत्यादिक आठ रे ॥ बोलाव्या ते आविया, कांइ बहु बलनो करी ठाठ ॥ गु० ॥

केली मजार ॥ ला० ॥ २ ॥ ते अमें सांभली शीखियां रे, पण नवी कंन खु तास ॥ला०॥ पण वज्रसुंदरी वर समो रे, उत्तम गुण आवास ॥ला०॥ ॥ ३ ॥ ज्ञानीयें उत्कृष्टो कह्यो रे, इणहीज भरत मजार ॥ला०॥ सजवींयें एम सांभली रे, वेखी कलाविक वार ॥ ला० ॥४॥ वज्रसुंदरीशुं रीजती रे, इछे रहेवु तस पास ॥ ला०॥ भाग्य होये जो माहरुं रे,तो एहवो धव खास ॥ ला० ॥ ५ ॥ वज्रसुंदरी भेली रहुं रे, पण हवे परण्यो तेह ॥ ला० ॥ ता त धरे द्वेप तेहशु रे,केम आपे मुज एह ॥ ला० ॥ ६ ॥ तेणें हु अभागिणी मावडी रे, एम मन धरती शोक ॥ ला० ॥ आमण दूमणी ते रहे रे, रवि विरहें जेम कोक ॥ला०॥७॥ तव ते देखी पूछती रे, कारमी नारीयो एम ॥ ॥ ला० ॥ रे वत्स तु रना समी रे, इछे पुरंदर प्रेम ॥ला०॥८॥ सा कहे सां भलो वेहेनडी रे,चइ अहेवा निज पाणि ॥ ला० ॥ हांसी पाये जेम तेणी परें रे, शु असाध्य वखाण ॥ ला० ॥९॥ नारियो कहे तु सांभले रे, वज्र सुंदरी एह ॥ ला० ॥ एहनें असाध्य कांइ नथी रे, इछे ते करे जेह ॥ला०॥ ॥ १० ॥ दीठी कला तें जेहवी रे,जगतनें जीतणहार ॥ ला० ॥ तेहवु परा क्रम जाणजे रे, फेर पडे न लगार ॥ला० ॥११॥ पण मन थिर नवि स भवे रे, ताहरु अम मनमांहि ॥ ला० ॥ नारीनु चित्त चपल होये रे,कपि प रें थिर नही क्यांहि ॥ ॥ ला० ॥ १२ ॥ चपल चित्त अर्थे करे रे, कोण विषम ए काम ॥ ला० ॥ सा कहे स्तनसगति परें रे, माहारु मन दृढ ठा म ॥ ला० ॥ १३ ॥ जेम दरिद्री धनरागीयो रे,अमृत रोगी मान ॥ला०॥ तरश्यानें अमृत परें रे, तेम माहारे बहु मान ॥ ला० ॥ १४ ॥ नारियो कहे जो एम छे रे,तो तुं था तैयार ॥ ला० ॥ ते पण आवी उतावली रे, लइ निज धन सुख सार ॥ ला० ॥ १५ ॥ नारियो सहु सभलावती रे, श्रीजयानदने वात ॥ ला० ॥ ततक्षण रचीया विमानमां रे, बेसाडी ते ख्यात ॥ ला० ॥ १६ ॥ चाल्यो गगनमां तेहवे रे, महोल उपर रही एम ॥ला०॥ उद्घोषणा करे आकरी रे, सुणजो आणी प्रेम ॥ ला० ॥ १७ ॥ रे चक्री रे खेचरा रे, वीर तणु तुज मान ॥ला०॥ लेइ जाय चक्रसुंदरी रे, सभलावी तुम कान ॥ ला० ॥ १७ ॥ बलवता जो छो तुमें रे,तो श्रीजया नद राय ॥ ला० ॥ पासेंथी मूकावजो रे, छल न करुं एणें ठाय ॥ ला० ॥ ॥ १८ ॥ एम कही नगर उद्यानमां रे, आवी उत हर्षीयार ॥ला०॥ मंगा

वे बहु जातिना रें, श्रीजयानद कुमार ॥ला०॥१७॥ आठमे खमें चोथी कही रे, पद्मविजयें वर ढाल ॥ ला० ॥ श्रीजयानदना रासमां रे, पुर्ल्ये मगलमाल ॥ ला० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ ११७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सांजली विस्मय लह्यो, चितवे खेचर राय ॥ अहो पराक्रम नारिनुं, अहो अनीति कराय ॥ १ ॥ बहु सुनटनें मोकले, कन्या वालवा काम ॥ माया स्त्रीशुं जूजिया, धरता अतिशय माम ॥ २ ॥ हार्या ते नाठाथका, आव्या चक्री पाय ॥ स्त्रीयें हरव्या लाजथी, मुखथी नवि बोलाय ॥ ३ ॥ पण रुधिरें खरडया थका, देखी क्रोध जराय ॥ महाबल मोकले विस्मयें, पायकना समुदाय ॥ ४ ॥ केइ विमान मांहे रह्या, केइ वेग गजराज ॥ तुरग चढया केइ तेलशुं, लेइ निज निज साज ॥ ॥५ ॥ युद्ध करंता तेहशुं, नाठा सुनट जे नारि ॥ राखो अम्ह कहेता थका, जिहां ठे श्रीजयकुमार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ जाउं जाउं रे रुठडा नाथ, तुमशुं नहीं बोलु ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानदजी उठीया, कांइ युद्ध करणने काज रे ॥ स्त्रीरूपें आवी नडयो, कांइ बलवतो महाराज ॥ १ ॥ गुणगणवतो रे, मारो मारो रे करे हुकार ॥ गु० ॥ लेइ लेइ रे कर हथियार ॥ गु० ॥ शूरवीर थइ शिरदार ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ गदा लेइने चूरतो, कांइ पापड परें विमान रे ॥ महाबलशु गज पाडतो, कांइ पर्वत शिला समान ॥ गु०॥ २ ॥ गरुड परें हय लेइने, काइ गगनें नमाडे तेह रे ॥ चचा पुरुष तणीपरें, कांइ पाडे सुनटनें जेह ॥ गु० ॥ ३ ॥ केलिनुं वन जेम हाथीयो, कांइ हिम जिम कमलनी खंम रे ॥ स्त्रीरूपें कुमरें तदा, कांइ त्रासव्यो तेज प्रचम ॥ गु० ॥ ४ ॥ मूकी मन नाशि गया, कांइ निन्न निन्न सहु जाय रे ॥ रुधिर करतां लाजतां, कांइ आव्या जिहां नरराय ॥ गु० ॥ ५ ॥ स्त्रीयें हरव्या ते लाजथी, कांइ मुख न देखाडे आय रे ॥ तेह स्वरूप चरथी सुणी, कांइ नरपति खेद न राय ॥ गु० ॥ ६ ॥ खेद लाज विस्मय घणो, कांइ क्रोधथी व्याकुल थाय रे ॥ पुत्री पाठी वालवा, कांइ उठे पोतें राय ॥ गु० ॥ ७॥ स्त्री उपर ए नाखतां, कांइ लाजे ठे मुज वाण रे ॥ मोहोटो अपजश चितवी, कांइ वेगा तिणहिज ठाण ॥ गु० ॥ ८ ॥ पवनवेग खेचर पति, कांइ नोगरत्यादिक थाव रे ॥ बोलाव्या ते आविया, कांइ बहु बलनो करी ठाव ॥ गु० ॥

केली मझार ॥ ला० ॥ २ ॥ ते अमें सांजली शीखियां रे, पण नवी ऊंन खु तास ॥ला०॥ पण वज्रसुंदरी वर समो रे, उत्तम गुण आवास ॥ला०॥ ॥ ३ ॥ ज्ञानीयें उत्कृष्टो कह्यो रे, इणहीज जरत मझार ॥ला०॥ सजवीर्यें एम सांजली रे, देखी कलादिक वार ॥ ला० ॥४॥ वज्रसुंदरीशुं रीजती रे, इछे रहेवु तस पास ॥ ला०॥ जाग्य होये जो माहरु रे,तो एहवो धव खास ॥ ला० ॥ ५ ॥ वज्रसुंदरी जेली रहु रे, पण हवे परण्यो तेह ॥ ला० ॥ तात धरे रूप तेहशु रे,केम आपे मुज एह ॥ ला० ॥ ६ ॥ तेणें हु अनागिणी मावडी रे, एम मन धरती शोक ॥ ला० ॥ आमण दूमणी ते रहे रे, रवि विरहें जेम कोक ॥ला०॥७॥ तव ते देखी पूछती रे, कारमी नारीयो एम ॥ ॥ ला० ॥ रे वत्स तुं रंजा समी रे, इछे पुरंवर प्रेम ॥ला०॥८॥ सा कहे सां जलो वेहेनडी रे,चह अहेवा निज पाणि ॥ ला० ॥ हांसी थाये जेम तेणी परें रे, शुं असाध्य वखाण ॥ ला० ॥९॥ नारियो कहे तुं सांजले रे, वज्र सुंदरी एह ॥ ला० ॥ एहनें असाध्य कांइ नथी रे, इछे ते करे जेह ॥ला०॥ ॥ १० ॥ दीठी कला तें जेहवी रे,जगतनें जीतणहार ॥ ला० ॥ तेहवु परा क्रम जाणजे रे, फेर पडे न लगार ॥ला० ॥११॥ पण मन थिर नवि सं जवे रे, ताहरु अम मनमांहि ॥ ला० ॥ नारीनु चित्त चपल होये रे,कपि प रें थिर नही क्यांहि ॥ ॥ ला० ॥ १२ ॥ चपल चित्त अर्थें करे रे, कोण विषम ए काम ॥ ला० ॥ सा कहे स्तनसगति परें रे, माहारु मन दृढ म म ॥ ला० ॥ १३ ॥ जेम दरिद्री धनरागीयो रे,अमृत रोगी मान ॥ला०॥ तरश्यानें अमृत परें रे, तेम माहारे बहु मान ॥ ला० ॥ १४ ॥ नारियो कहे जो एम छे रे,तो तुं था तैयार ॥ ला० ॥ ते पण आवी उतावली रे, जइ निज धन मुख लार ॥ ला० ॥ १५ ॥ नारियो सहु सजलावती रे, श्रीजयानदने वात ॥ ला० ॥ ततक्षण रचीया विमानमां रे, बेसाडी ते ख्यात ॥ ला० ॥ १६ ॥ चाल्यो गयनमां तेहवे रे, महोल उपर रही एम ॥ला०॥ उद्घोषणा करे आकरी रे, सुणजो आणी प्रेम ॥ ला० ॥ १७ ॥ रे चक्री रे खेचरा रे, वीर तणु मुज मान ॥ला०॥ लेइ जाउं चक्रसुवरी रे, सजलावी तुम कान ॥ ला० ॥ १८ ॥ बलवता जो छो तुमें रे,तो श्रीजया नद राय ॥ ला० ॥ पासेंथी मूकावजो रे, छल न करु एणें गय ॥ ला० ॥ ॥ १८ ॥ एम कही नगर उद्यानमां रे, आवी शुज हर्षीधार ॥ला०॥ ममा

स्य थयुं जनमांहि ॥ अथवा मुज उत्सव थयो, जेणें आव्यो ए आंहि ॥ ॥ ३ ॥ कमू जशो मुज कर तणी, मुज प्रताप वर आग ॥ वयरी इंधण पामीनें, अथवा दीपवा लाग ॥ ४ ॥ अथवा स्त्री आगल करी, सुनट जूझशे जेह ॥ मुज रण कौतुक पूरवा, केम समरथ छे तेह ॥ ५॥ आप शक्ति अण जाणतो, आव्यो मुज पुर पास ॥ शिक्षा देइ लेउं पुत्रीनें, एहनें करु निराश ॥६ ॥ एम चिंती चक्री हवे, वजडावे रण नेरि ॥ सुनट सवे तव सज थया, सांनली नादने सेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल छठी ॥ लाल पीयारीनो सादेवो रें ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी मोरा रे, गज उपर चढे जेटले रे, पूर्वाचल जेम सूर लाल ॥ मस्तक मुकुट पडि गयो रे, तेटले गयुं मानु नूर लाल ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणें सहु नीपजे रे ॥ ए आंकणी ॥ स्वा० ॥ लघु वडी नीति सार्थे करे रे, नयनी परें गजराज लाल ॥ छींक थइ सन्मुख तदा रे, वारे शकुन ते काज लाल ॥ पु० ॥ २ ॥ स्वा०॥ वस्त्रे पग स्खलितं तदा रे, चामरधारिणी नार लाल ॥ चामर तस करथी पडयु रे, सूचवे अतिअ असार लाल ॥पु०॥३॥ स्वा०॥ कारण विण चलियो तदा रे, छत्र तणो जेह दम लाल ॥ सचिव तें देखीनें नृपप्रत्यें रे, विनवे तेज प्रचम लाल ॥पु०॥४॥स्वा०॥ ए अपशकुन ते एम कहे रे, रणयात्रा नवि थाय लाल ॥ सांनलो विनती अम्ह तणी रे, वेसो आसन गाय लाल ॥ पु०॥५॥स्वा० ॥ वेग खेचर पति तदा रे, हित कोण माने न सयण लाल ॥ बोले सचिव स्वामी सुणो रे, हितकारी अम वयण लाल ॥ पु० ॥ ६ ॥ स्वा० ॥ शत्रु सैन्य नांज्या तुमें रे, लीलायें शूरवीर लाल ॥ नवि नांज्युं सैन्य तुम तणु रे, वलवत तुम धीर लाल ॥ पु० ॥ ॥७॥स्वा०॥ नारी एह न सनवे रे, परिकर पण नहीं नारी लाल ॥ पवन वेगादिक रानिया रे, स्त्रीनें आवे नवि ल्हार लाल ॥ पु० ॥ ८ ॥ स्वा० ॥ नोगरत्यादिक नूपति रे, विद्याधर तणा वार लाल ॥ महानट मानी आवे नही रे, नारी पूठें अवधार लाल ॥ पु० ॥ ए ॥ स्वा० ॥ वज्रसुदरी वर एह छें रे, देवांगना गुण गाय लाल ॥ तुम वचनें परानव लही रे, आव्यो श्रीजयराय लाल ॥ पु०॥ १० ॥ स्वा०॥ अपजश आपवा तुम्हनें रे, नारियोनां करी रूप लाल ॥ नारियें जींत्यो ए चक्रीनें रे, एहवु मन धरी नूप लाल ॥ पु०॥ ११ ॥ स्वा०॥ ककण मौलि अक्षर कहा रे, समरथ क्षत्री

॥ ए ॥ चंड्गति वली आवीयो, कांइ लेइ बहु परिवार रे ॥ मित्रादिक सं वधथी, कांइ नृप विद्याधर वार ॥ गु० ॥ १० ॥ दक्षिण श्रेणिना राजवी, कांइ पवनवेगछु मेल रे ॥ तस वोलाव्या आविया,कांइ तन मन तेहमां चे ल ॥ गु० ॥ ११ ॥ प्रायें दक्षिण श्रेणिना, कांइ पवनवेग सहु लेय रे ॥ सै न्य घणु नेलु करी, कांइ आव्यो पूर्व सकेय ॥ गु० ॥ १२ ॥ चक्रायुध पण खोनियो, कांइ देखी तेह बनाव रे ॥ त्राण रहित जेम नय लहे, कांइ जे म शनि मकर स्थिति दाव ॥ गु० ॥ १३ ॥ काहला त्रट त्रट वाजती, कांइ नीषण वहें नाद रे ॥ शस्त्र लेइ नट धावता, करे बूवारव सविषाद ॥ गु० ॥ ॥ १४ ॥ कायर सुनट ते नासता, कांइ नय कोलाहल जास रे ॥ केई बालक लेइ रोवती, कांइ तरलाक्षी लेइ त्रास ॥ गु० ॥ १५ ॥ आलान मूल उमेलिनें, कांइ नाग तिहां गजराज रे ॥ अश्वस्वार नाखी दीये, कांइ अश्व ते न खमे ताज ॥ गु० ॥ १६ ॥ नीषण नांकारव करी, कांइ गायो त्रोडी राश रे ॥ वृषननें महीषी तेम नमे, कांइ नयविव्हल लही त्रास ॥ गु० ॥ १७ ॥ पाणिहारी अगें कपती, कांइ फोडे घट समुदाय रे ॥ आनूषण खसीनें पडे, कांइ नारि न जाण्या जाय ॥ गु० ॥ १८ ॥ नासतां ढोर ते पाडतां, कांइ नरनारीनें पंथ रे ॥ हाल कल्लोल नगरी थइ, कांइ स्थिर नहीं कांइ अथ ॥ गु० ॥ १९ ॥ त्रुटया हार मोती तणा, कांइ पुज ते मानु एह रे ॥ कुअर आववा कारणें, कांइ स्वस्तिक पूरवा जेह ॥ गु० ॥ ॥ २० ॥ केइ कहे जूउ नारिथी, कांइ नगर खोनाणु एम रे ॥ कोइ कहे ए नट अछे, कांइ नारी करे एम केम ॥ गु० ॥ २१ ॥ इड तथा लोकपाल ए, कांइ शत्रुपक्षें थाय रे ॥ नवि जीताये कोइ कहे, कांइ चक्रायुधें जीता य ॥ गु० ॥ २२ ॥ मत बीयो केइक कहे, कांइ एहनो कहो स्यो नार रे ॥ आपणा स्वामी आगलें, कांइ सहुए तृण अनुदार ॥ गु० ॥ २३ ॥ आठमे खंमें पांचमी, कांइ पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ पुण्यपसायें जीवनें, कांइ हो वे मंगलमाल ॥ गु० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ १४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ परचक्रागम सांनली, देखी पुरनो क्षोन ॥ कहे कोण मरवा आवि यो,पाडवा घरनो मोन ॥१॥ चर आवी कहे चक्रीनें,पवनवेगादिक नाम ॥ चक्री कहे रंना अहो, नगर खोनावे आम ॥ २ ॥ सीमा लघी माहरी, हा

उठी आठमा खंमर्मा रे, पद्मविजय कही ढाल लाल ॥ श्रीजयानंदना रास मां रे, पुण्यथी मंगलमाल लाल ॥ पु० ॥ २८ ॥ स्वा० ॥ सर्वगाथा ॥१८४॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रि वाणी एम सांभली, बोल्यो खेचर राय ॥ अनिष्ट शंका चित्त मां धरी, स्नेह कारणें कहो आय ॥१॥ परनारी हरणथी करी, परणावु वली एह ॥ श्यो महिमा माहारो रहे, अपत्य न राखे जेह ॥ २ ॥ पवनवेगनी दीकरी, विद्याकला उन्माद ॥ चेष्टा एहवी आचरे, उतारुं एह नाद ॥ ३ ॥ नारीनें न होये बुद्धही, पूर्वापरनो विचार ॥ अथवा स्त्री रूपें हजो, श्रीजयानंद कुमार ॥ ४ ॥ विद्याधर चक्री किस्यो, एहनो भय करुं मन्न ॥ भय न धरु मनमां जरा, सांभलजो रे स कन्न ॥ ५ ॥ नृप सुर कीटक प्राय ते, देवीयो कीटिका प्राय ॥ तेणें जीत्या तो श्युं थयुं, मुजनें नवि जीताय ॥ ६ ॥ शिलावटपरें चूरीयो, एणे पर्वत तो कांय ॥ दिव्यशस्त्र मुज आगलें, एहथी नवि रहेवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ सुगुण सुगुण सोभागी जबूद्विपमां होजी ॥ ए देशी ॥

॥ अही अही भरतमांहे रह्या होजी, नर सुर खेचर कोय ॥ आण आण उलघे माहरी होजी, दीठो न सांभल्यो सोय ॥ अ० ॥ १ ॥ विद्या विद्या दिव्य शस्त्र भलां होजी,बाहुबल मुज जेह ॥ दीठुं दीठु किहांये तुमें ते कहो होजी, श्यु बीवरावे एह ॥ अ० ॥ २ ॥ इह इह चद विरोचन यदि होजी, होय जनार्दन जोय ॥ तेहनें तेहनें पण जीतु सदा होजी, ए कोण मातर होय ॥ अ० ॥ ३ ॥ सेवक सेवक चिरकालें रही होजी, नारी अनुसर्यो जेह ॥ वयरी वयरी पवनवेग देखीनें होजी, मुज चक्र न सहे तेह ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ त्रास त्रास पमाडु हु केहवो होजी, हरि जेम मृगनां वाल ॥ सचिव सचिव बोले ते सांभली होजी, सांभलो तुमें भूपाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सैन्य सैन्य विद्याधरनां सहु होजी, तेडावो धरी नेह ॥ तेज तेजस्वी पण एकलो होजी, पामे पराभव तेह ॥ अ०॥ ६ ॥ फरतो फरतो गगनें एकलो होजी, सूरय राहु ग्रसाय ॥ अल्प अल्प परिछेदें चद्रमा होजी, पूनमें राहु महाय ॥ अ० ॥ ७ ॥ बीजें बीजें बहुपरिवारशु होजी, राहु न आवे पास ॥ भूप भूप सुणी गरवें करी होजी, वक्र वक्र मुखे सवि स्वास ॥अ०॥ ॥८॥ पण ते पण ते मान्य तेणे करी होजी, मान्यु वचन प्रमाण ॥ एकलो

जे होय लाल ॥ एह परानव आकरो रे, वीर खमे नहीं कोय लाल ॥ पु० ॥ १२ ॥ ॥ स्वा० ॥ सांनलीय जनगीतमां रे, एहना तो अवदातें ला ल ॥ श्रीविशाल नृप रीजव्यो रे, बुद्धि पराक्रम वातें लाल ॥ पु० ॥ १३ ॥ स्वा० ॥ गिरिमालिनी प्रमुखा सूरी रे, वश कीधी प्रतिबोधि लाल ॥ गिरि चूड सुर कोल रूपथी रे, जीत्यो ए लक्ष्योधि लाल ॥ पु० ॥ १४ ॥ स्वा० ॥ जीत्यो एणें क्षेत्रपालनें रे, मलयमाल ते देव लाल ॥ औषधियो तेणें दी धी घणी रें, समकेती थइ करे सेव लाल ॥ पु० ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ विप्र रूपें वली जींतीयो रे, पद्मरथ नरराय लाल ॥ कोडघो सुनटथी एकले रे, नास्तिक नृपनें वधाय लाल ॥ पु० ॥ १६ ॥ स्वा० ॥ वानर करीनें विडबी यो रे, प्रतिवोध्यो वली तेह लाल ॥ सहु कुटुंब जेनु कयु रे, वाध्यो अति ससनेह लाल ॥ पु० ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ वली वामन रूपें जींतीयो रे, राज कुमार अनेक लाल ॥ श्रीपतिरायनी कन्यका रे, जीती कलायें विवेक ला ल ॥ पु० ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ परण्यो तिहां त्रण कन्यका रे, वली योगिनी योगें परण्यो लाल ॥ खोच्यो नहीं तेह देखीनें रे, अतर आतम हरख्यो ला ल ॥ पु० ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ वज्रवेग मूकावीयो रे, बलथी योगिणी पास लाल ॥ महाज्वाला कामाक्षा वली रे, न पडघो तेहनें पास लाल ॥ पु० ॥ ॥ २० ॥ स्वा० ॥ योगिणी सहित ते तूथियां रे, दीधां दिव्य ते शस्त्र ला ल ॥ वली शक्ति दीधी नक्तिथी रे, आनूषण वली वस्त्र लाल ॥ पु० ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ चूर्यो वज्रकूट पाहाडनें रे, जीत्यो वज्रमुख नाम लाल ॥ षड्ग तिनी जे नामिनी रे, ते मूकावण काम लाल ॥ पु० ॥ २२ ॥ स्वा० ॥ सा त्विकमांहे शिरोमणि रे, मूकावी तस नारि लाल ॥ स्त्री रूपें ए डुर्जय घणो रे, श्रीजयानद कुमार लाल ॥ पु० ॥ २३ ॥ स्वा० ॥ कोप म करजो प्रसादथी रे, कन्या कोइने देवी लाल ॥ वर एहवो जडशे नहीं रे, वात कें कण मौलि केहवी लाल ॥ पु० ॥ २४ ॥ स्वा० ॥ वीसारी सवि वातनें रें, कन्या एहनें दीजें लाज ॥ स्वार्थे लाव्यो एहने इहां रे, पवनवेग वदी जें लाल ॥ पु० ॥ २५ ॥ स्वा० ॥ परणी जाशे निज राज्यमां रे, तुम्ह उपर धरी स्नेह लाल ॥ सेवक पवनवेगादिका रे, प्रीति विशेषें धरेह लाज ॥ पु० ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ पालो निष्कंटक राज्यनें रे, एकांतें नवि कीजें ला ल ॥ जो रति अवसर जोइनें रे, हितकारी ए कहिजें राज ॥ पु० ॥ २७ ॥ स्वा० ॥

तडितवेग कौशल वली, कलाचड हरिवीर ॥ १ ॥ पवन अंगद महाकीर्त्ति तेम, सुजसार्ने वलवीर ॥ नदन प्रथु सुनीषण वली, कृतांतास्य महाधीर ॥ ३ ॥ धूमकेतु धूमाक्ष तेम, गजरथ वेग एह ॥ नरपति बहुजट परिव र्या, नीसरीया रणनेह ॥ ४ ॥ मदन कासरनें महायशा, कामकेतु वली नीम ॥ तपन प्रताप तथा रमण, नहि पराक्रमनी सीम ॥ ५ ॥ कामनद न अक्षोज तेम, इत्यादिक नरराय ॥ सिंहयुक्त रथें नीकले, इत्यादिक समु दाय ॥ ६ ॥ सुजट लखो गमे सामटा,देखी बीहे वीर ॥ कायर नवि देखी शकें, वली नाखु माहाधीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ मोरा साहेब हो श्रीशीतल नाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ हवे व्याघ्र हो जोडया रथ जास के,नाम सुणो तुमें तेहनां ॥ प्रल्हा दनें हो शत्रुदम अकुश के, त्रास दीयें नाम जेहनां ॥ १ ॥ चम्रवेग हो म हापाणि सुचक्र के, वज्रकेतन वली जाणीयें ॥ गदाधरनें हो वली चपल जोधार के, पराक्रमथी वखाणीयें ॥ २ ॥ लखो एहवा हो व्याघ्र रथ सयु क्त के, सहुने तृण सम जे गणे ॥ अश्व रथमां हो वेशानें जाय के, हुका रा सुखथी जणे ॥ ३ ॥ नीष्म क्रोधन हो रणचड महाशूर के, सागरनें व ज्रायुधो ॥ सुतेजा हो पूर्णचड महाअस्त्र के, शतायुध कुलिशायुधो ॥ ४ ॥ इत्यादिक हो लक्ष गमे राजान के, अश्वरथे ते नीसरे ॥ उत्साहें हो उच्छ लता जेह के, रण उत्सुकता बहु धरे ॥ ५ ॥ बल सिंह हो कामांकुर हो य के, धूममाली चोथा वली ॥ शतायुध हो वज्रमाली होय के, विजय द्रु रत दुर्द्धर मली ॥ ६ ॥ महाचक्र हो चक्रधारी नाम के, खेचर नृप मानी पणे ॥ इत्यादिक हो विमान आरूढ के, नीकल्या परिवृत जट घणे ॥७॥ गजसिंह हो गजानद गजदेव के, गजप्रज गजवीर दाखीयें ॥ गजप्रीति हो गजध्वज गजकेलि के, गजवेग गजसेन जाखीयें ॥ ८ ॥ गजक्रम हो गजानन वजवत के, गजविक्रम प्रमुख घणा ॥ लखो लेखे हो गज वाहन जास के, शत्रु करे दीयामणा ॥ ए ॥ हयवेग हो महावाजि नरिंद के, हयवाहन खेचरपति ॥ महा अश्व हो हयवीर हयानद के ॥ हयसा र हयोदय नृपतति ॥ १० ॥ अश्ववीर हो अश्वसेन राजान के, अश्वानद अश्वें चढयो ॥ अश्वविक्रम हो हयसेन हयअस्त्र के, लखो गमे रणमां च ढयो ॥११॥ सिंह सिंहगति हो सिंहविक्रमसार के, सिंहवाहन सिंह केस

एकलो जय अर्थी थको होजी, सुजवलनु बहु माण ॥ अ०॥ ए॥ अनु शत्रुनें कहेवराविउं होजी,थाउं हुं अम्ह सङ्ग ॥ त्रण त्रण दिवस पहलो तुमें होजी, पछे सम्रामनु कङ्ग ॥ अ० ॥ १० ॥ साथें साथे मूके बोय भे णिमा होजी, दूत नृपालनें ताम॥ सेना सेना लेइ सहु आवीया होजी,च क्रीनें करे प्रणाम ॥ अ० ॥ ११ ॥ आदर आदर बहु नृपनें दियो होजी, सैन्य सहित हरषत ॥ तत्पर तत्पर रण करवा नणी होजी, नृपनी शिक्षा सुणत ॥अ०॥१२॥ चोथे चोथे दिन चक्री हवे होजी, स्नान पूजा विरचंत ॥ नोजन नोजन करे मनमोदशुं होजी, मगलाचार करत ॥ अ० ॥ १३ ॥ युद्धनी युद्धनी सामग्री सवे होजी, मेलवी ते नरनाह ॥ गजवर गजवर उपर हरखशु होजी, वेसे धरत उत्साह ॥ अ० ॥ १४ ॥ छत्र छत्र चामर वींजो जते होजी, निकलीयो पर बाहार ॥ विविध विविध शस्त्रें नस्यो रथ तदा होजी, सन्नद्ध थाइ तैयार ॥ अ०॥ १५ ॥ चक्र चक्रवेग महावेगनें हो जी, वीरांगद एणें नाम ॥ महाबल महाबल सुषेणनें सुमुखा होजी, नव कुमर अनिराम ॥अ०॥१६॥ धीर धीर सेननें दृढायुधा होजी, महायुद्धने चङसेन ॥ सुधीर सुधीर नानु वज्ञानना होजी,नूवीरनें महासेन ॥अ०॥१७॥ शूर शूर वीर रविप्रन नामथी होजी,सिंहनें चङमुख तेम॥ वज्ञा वज्ञाङ्ग वज्ञ माली वली होजी, शनि महाबाहु सप्रेम ॥अ०॥१८॥ महावीर्य महावीर्य चङकेतन तथा होजी, वली चङान विचार ॥ पुत्र पुत्र इत्यादिक चक्रीना होजी, विक्रमी बार हजार ॥ अ० ॥ १ए ॥ गजरथ गजरथ शार्दूल उपरें होजी, तुरगनें वली वराह ॥ विविध विविध वाहनें आवी मल्या होजी, विविध आयुद्ध धरी चाह ॥ अ० ॥ २० ॥ तूर तूर वाजे समकालमां हो जी, नादें गगन नराय ॥ मेघ मेघ प्रलयना शब्दनें होजी, मानुं उलघी जाय ॥ अ० ॥ २१ ॥ नगर नगरवासी बहु नट वडा होजी, नीकल्या रण कर णाय ॥ एक एकथी जाये आगलें होजी, पंखी परें ते उजाय ॥अ०॥२२॥ आठमा आठमा खममां सातमी होजी, ढाल ए नाखी उदार ॥ पद्म पद्म विजय कहे पुण्यथी होजी,होवे जयजयकार ॥अ०॥२३॥ सर्वगाथा॥२१२

॥ दोहा ॥

॥ सेनानी नट कोटिशुं, परवारीयो परिवर ॥ चक्रवेग सिंहरथें करी, नीसरीयो ते बाहार ॥ १ । वज्र कठ महाभुज नला, नानुकेतु नरवीर ॥

अंपा करे, मूकी गगनावास ॥ १ ॥ सुनट तणी जे मावडी, तिम वली प्रेयसी नारि ॥ देव देवी लक्षो गमे, मानत करे तिवार ॥ २ ॥ मात जननीनें प्रिय वहू, जय लखमीनें देत ॥ मगल विचित्र प्रकारनां, करे ते वीर सकेत ॥ ३ ॥ नालें तिलक तदा करे, मगल केरुं मात ॥ नाग्य लखमी रेखा परें, नीसरतां कहे वात ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ टेकरी रही रे, शहेर नरुअचकें मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ दल दोय मलियां रे चक्री पुरके मेदान ॥ बहु सललसलीयां रे फुरके नेजा नीशान ॥ ए आंकणी ॥ जब संग्राममां जावा शूर, मायनें पय प्रणमे वड नूर, मात नणे बहु स्नेहनें पूर, वीरनी पुत्री रे हु वली वीरनी नार, वीर छे भ्राता रे तुं हवे वीरपणुं धार, तो याउ मातारे मानु धन्य अवतार ॥ द० ॥ १ ॥ कोइ कहे सुन आणी स्नेह, पूठ म देजे माहरी देह, मरण जीवन छे ताहरी एह ॥ कोइ कहे नारी रे वीरपत्नी पुत्री मात, हवे थाउं जननी रे जो पाये वीर तु भ्रांत, तो जग गावे रे ताहरा जस अवदात ॥ द० ॥ २ ॥ माहरे शोक विना हता नोग, हवे संग्रामनो तुज संयोग, जय लखमी अथवा देवलोग ॥ अप्सरा साथें रे शोक्यपणु मुज थाय, कोइ कहे एहवु रे पण मुज छुःख नही कांय, पण जयलखमी रे थाय तो अति सुखदाय ॥ द० ॥ ३ ॥ कोइ कहे जाउ हु तब तेह, बोली शु जूठु कहो एह, नवि निकलियो तु कदी रेह, नीकलीश नाहीं रे माहरा हृदयथी दूर, तुं मुज राखे रे ताहरा हृदय हजूर, तो संग्रामें रे अहियो होये नरपूर ॥ द० ॥ ४ ॥ नमिश्र कटाक्ष लूटे जे नाह, ते मुजथी अधिको किण राह, मुजथी अधिको जयश्रीनाह, जग सहु बोले रे जेहनी कीर्त्ति अथाह, ते सुखें लावो रे मुजनें हर्षे उत्साह ॥ मुज पण तेहशुं रे प्रीति घरणनी छे चाह ॥ द० ॥ ५ ॥ आलिंगन देतां कहे कोय, हमणां स्नेह देखावो सोय, जयलखमी वरशो जब तोय, अप्सरा अथवा रे मलशो तुमनें जेवार, खबर ते पडशे रे स्नेहनी तुमची तिवार, साहमु जोशो रे के नहीं जोशो किवार ॥ द० ॥ ६ ॥ गज कुंनस्थल मोती स्वामि, तुज जयलखमी केरे गाम, स्वस्तिक पूरणनु मुज काम, लावजो तेणें रे कोइक बोले ए रीति, तो मुज रहेशे रे तुमशु जनमनी प्रीति, नहींतर रहेशे रे माहारु मन्हेणु नित्य नित्य ॥ द० ॥ ७ ॥ इत्यादिक कहेती जे नारि, तेहनें आश्वासना

री॥ सिंहवीर हो महासिंह सिंहास्य के, सिंहकेतु जीते अरी॥ १२॥ सिंहमाली हो सिंहकेतन नृप के, नृसिंह सिंहसेन शूरथी॥ चाले रणमां हो सिंहवाहन एह के, साज लेइ सपूरथी॥ १३॥ व्याघ्रमाली हो महा व्याघ्र व्याघ्रास्य के,व्याघ्रविक्रम चाले हवे॥ व्याघ्रसेन हो वाघें चढ्या एह के, एक एकथी विरुदें स्तवे॥१४॥ शार्दूलो हो हरिशार्दूल नाम के॥ शार्दूलानद सोहामणा॥ शार्दूलानन हो शार्दूलें चढ्या जेह के, कदीय न थाये वियामणा॥ १५॥ शार्दूलविक्रम हो चढीया शार्दूल के, केइ चढीया महा अही॥ अष्टापदें हो केइ वाहन वराह के, केइ पासें चढ्यो ऊक नहीं॥ ॥ १६॥ विविध वाहनें हो विविध हथियार के, विविध चिन्हथी चालीया॥ कोहघो गमे हो पायक नरराय के, उत्सुकता रणे म्हालीया॥ ॥१७॥ परवरियो हो खेचर चक्रीराय के, मदथी अशकुन नवि गणे॥ सेनानो वली हो कोलाहल नाद के, तूरनो पोहोतो गयणांगणे॥१८॥ पुर सीमायें हो उतरीया आय के, कुमर सैन्यनें ढूकडा॥ जाणी कुमर हो खेट चक्री सचक्र के, न खसे रणें यदि टूकडा॥ १९॥ कुवर कटके हो मल्या खेचरवृंद के, अक्षोहिणी शत मित्त मल्यु॥ चक्रीनें हो एक सहस ते जाण के, अक्षोहिणी माणज कल्यु॥२०॥ यत॥ सेना चा क्षोहिणी नाम, खागाऽष्टैकद्विकैर्गजै २१८७० रथैश्वै २१८७० न्योहयैस्त्रिघ्नै, ६५६१० पंचघ्नैश्च पदातिनि १०९३५०॥ पूर्वढाल॥ सहस एकवीश हो आगशें सित्तेर के, हाथीनें रथ वर कह्या॥ सहस पांसठ हो छशें दश पाय के, त्रिगुणा हय चरित्रें लह्या॥ २१॥ एक लाखनें हो त्रणशें नव सहस के, पंचास पायक जाणीयें॥ अक्षोहिणी हो एकनु परिमाण के,पंच गुणा मन आणीयें॥ २२॥ बे कोडिनें हो वली लाख अढार के,सित्तेर सहस उपर वली॥ गजनें रथें हो सरिखा वोय होय के,तुरग सुणो कहे केवली॥२३॥ छ कोडिनें हो छप्पन वली लाख के, दश हजार चक्री तणा॥ दश कोडीनें हो साडी त्राणु लाख के, जाणो ए पायक जना॥२४॥ खंम आठमे हो आठमी वर ढाल के, सांजलो पद्मविजय कही॥ श्रीजयना हो रासमां नवि लोक के, सम्यक रीतें सद्दही॥ २५॥ सर्वगाथा॥ २४५॥

॥ दोहा॥

॥कलकल शब्द ते सांजली, रवि रथ हय लह्या त्रास॥ पश्चिम समुद्र

थाशे रे कर्मशत्रु जय काज, मोह नृप जीतो रे पहेरी चारित्र साज, जीती ने पामो रे नविजन शिवपुर राज ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ २६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वज्रसदृश सन्नाहथी, गजकर परिवृत सार ॥ घूघरी चिहुं दिशि घमकती, पाखर अतिशय फार ॥ १॥ मदिरा पाइ वनमत्त कस्या, शुमामां वीया तास ॥ मोघर नाला प्रमुख जे, उलाले आकाश ॥ २ ॥ दंतूशलें बाध्यां खड्ग, लोह पंजर बिहु पास ॥ तेहमांहे धनुर्धर रह्या, वड शाखायें अहिराश ॥ ३ ॥ सन्नद्धमहावत उपरें, वेग सोहे जास ॥ पक्षवता पर्वत शिरें, वेग गरुड सकाश ॥ ४ ॥ पगमां नेउर खणखणे, घटाना टणकार ॥ करता गुलगुल शब्दनें, सिंदूरें शणगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ तुंगिया गिरिशिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ सुनट एणीपरें करे सजाइ,पाखस्या तेम तुरंग रे ॥ अश्ववार सुत मानु गोविंद, गरुड चढियो रंग रे ॥सुन०॥१॥ उछलता पाखस्या दीसें,सायर जेम कल्लोल रे॥नलिनीदल सेवाल सयुत,उछले अति लोल रे ॥सु०॥२॥ गुलगुले गजतुरग हेषे, सन्नद्ध करता जाम रे ॥ शकुन मानी गज तुरगनें,पूजे आदरें ताम रे॥सु०॥३॥ रथवरा वली करे वर्मित, मानु क्रीडा गेहरे ॥ जय श्रीने खेलवाने, दृढकरे घनस्नेह रे ॥४॥ सारथीनें केइ आपे, निज अधिक सन्नाह रे ॥ रथिक सुधे तेह थाशे, साखीया उछाह रे ॥सु०॥५॥ बकतर मांहे तनु न माये, सगरनें उछरंग रे ॥ आप वाहन सज्ज करता, विविध मननें उमग रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ स्तंभ ध्वजना दृढ करे केइ, निजनिज वाहनें धारिरें ॥ महासुनट हुं प्रगट करवा, ते ध्वज बहु परकार रे ॥सु० ॥ ७ ॥ विविध शस्त्रें रथ नरे नट, रणमां सबल एह रे॥ उट बक्तरें नरे केइ, आप वारण तेह रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ केइक कक्कट नवि पहेरे, नहीतो आवे कलंक रे ॥ वीराधिवीरपणु रहे नहीं, एहवी धारी शंक रे ॥ सु०॥९॥ केइ शूरा शस्त्र मूके, मन धरी अनिमान रे ॥ पाहु सुदि प्रमुखें लडशु,साहमा वीर समान रे ॥ सु०॥ १०॥ परवालो जल नरी चाले, प्रपा चालती तेह रे ॥ खाद्य प्रमुखें शकट नरियां, क्षुधित देवा जेह रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ औषधि घृत घूणि लेवे, केइ पर उपकार रे ॥ उत्सुकता ठे पण न चूके, विवेकी कोइ वार रे ॥ सु०॥१२॥ नाटकिया परें शस्त्रधारि, पूठ अरिनें दीध रे ॥

वेइ सार,महा उत्साह ते धरी अपार, जस करी आगें रे नीकल्या बहुन विचार, नारी रूपें रे श्रीजयानंद कुमार, हवे करे रातें रे रणना बहु ज्प चार ॥ द० ॥ ८ ॥ पवनवेग सुत जे वज्रवेग, सहु खेचर अनुमति सुविवेक, सेनानी थापे वडवेग ॥ तेह दलमांहे रे शस्त्र जागरिकायें धीर, शस्त्रनें पूजे रे पूर्वें थया वडवीर, जेहनी करे वातो रे जेणें उताख्यां अरिनीर ॥ द० ॥ ९ ॥ संग्रामें शस्त्रज परधान, तेणें शस्त्र थापे पट्टनें थान, चक्र खड्ग धनु वज्र स मान, त्रिशूल कुंता रे तोमर मल्लिका सीर, परशुने शक्ति रे जल्लिका धरे व डवीर, जडमाल नामे रे मुष्टि अर्थ गजीर ॥ द० ॥ १० ॥ जुशने कुरिका मूसल नाम, पाश गदा तरवार उद्दाम, घन पट्टिश मुजर अजिराम, डुस्फो ट लुटि रे करवालिकानें कुदाल, शकुनें गुलिका रे कणय कपन्न सुविशाल, अर्द्ध गोफणनें रे कर्त्तरी जेद कराल ॥द०॥ ११॥ परपत्रक यष्टि अजिधान, ए बत्रीश आयुध बहु मान, पवित्र जलें करावंवा स्नान,चंदन लीपे रे अरचे पुष्पनी माल, धूप उखेवे रे गीत नाटक सुरसाल, वली तस प्रणमे रे स मरे तस रखवाल ॥ द० ॥ १२॥ बकतर टोप प्रमुख जे होय,तस संस्का र करे सहु कोय, रात वोलावी एणी परें जोय,मित्र जाणीनें रे कौतुक जो वानें काज,उदयाचलनें रे शिर आव्यो दिनराज, शूरनें देखी रे, शूर थया अति प्राज ॥ द० ॥१३॥ जेरी मादलनें कंसाल, तलिमा जंजा ढक्का जा ल, हुडुक्क मृदंग वाजित्र सजाल, शखनें काहला रे जल्लरी पडह प्रकार,स रमुखो करटो रे डमरुक जानक श्रीकार, वईरी वाजे रे त्र्यंबक प्रमुख उदा र ॥ द० ॥ १४ ॥ दोय दलमां एम वाजे तूर, सांजली वाधे सुजटनें नूर, सायर खोजाणो मानुं क्रूर, वज्रे हणीयो रे पर्वतनो जेम नाद,जलजीव त्रा ठा रे नाग गज वनमाद, परवत कंप्या रे शलशल्या शेष अविवाद ॥द०॥ ॥ १५ ॥ कछप दढ थइ पृथिवी जार, पूठें धरता कष्टें तिवार, दशदिशा गा ज रही जयकार, गिरिगुफा गाजे रे फूटे मानुं आकाश, सिंह ते पेसे रे दरी मांहे लही त्रास, दूरें पेठा रे महोरग ठांमी आवास ॥द०॥ १६॥ वनजेंसा ते नाठा जाय,जांजे वृक्षतणा समुदाय, सुरगण जोवानें तिहां आय, नादें दीप्या रे सुजट ते रण करणाय, उत्साह पामी रे दोय दलना सक्क पाय, क्षण क्षण वाधे रे सुजटनें हर्ष न माय ॥ द० ॥ १७ ॥ आठमे खंडें नवमी ढाल, जांखी पद्मविजय सुरसाल, जेम ए सुजट थया उजमाला, तेम तुमें

थाउ रे कर्मशत्रु जय काज, मोह नृप जीतो रे पहेरी चारित्र साज, जीती ने पामो रे नविजन शिवपुर राज ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ २६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वज्रसदृश सन्नाहथी, गजकर परिवृत सार ॥ घूघरी चिहुं दिशि घमकती, पाखर अतिशय फार ॥ १॥ मदिरा पाइ उनमत्त कस्था, शुंमामां दीया तास ॥ मोघर नाला प्रमुख जे, उलाले आकाश ॥ २ ॥ दंतूशलें बांध्यां खड्ग, लोह पंजर बिहु पास ॥ तेहमांहे धनुर्धर रह्या, वड शाखायें अहिराश ॥ ३ ॥ सन्नद्धमहावत उपरें, वेग सोहे जास ॥ पक्खवता पर्वत शिरें, वेग गरुड सकाश ॥ ४ ॥ पगमां नेउर खणखणे, घटाना टणकार ॥ करता गुलगुल शब्दनें, सिंदूरें शणगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ तुंगिया गिरिशिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ सुनट एणीपरें करे सजाइ,पाखस्था तेम तुरंग रे ॥ अश्ववार शुत मानु गोविंद, गरुड चढियो रंग रे ॥सुन०॥१॥ उछजता पाखस्था दीसे,सायर जेम कल्लोल रे॥नलिनीदल सेवाल सयुत,उछले अति लोल रे ॥सु०॥२॥ गुलगुले गजतुरग हेषे, सन्नद्ध करता जाम रे ॥ शकुन मानी गज तुरंगनें,पूजे आदरें ताम रे॥सु०॥३॥ रथवरा वलीकरे वर्मित, मानु क्रीडा गेहरे ॥ जय श्रीने खेलवाने, दृढकरे धनस्नेह रे ॥४॥ सारथीनें केइ आपे, निज अधिक सन्नाह रे ॥ रथिक शुद्धे तेह थाशे, साखीया उछाह रे ॥सु०॥५॥ बकतर मांहे तनु न माये, सगरनें उछरंग रे ॥ आप वाहन सज्ज करता, विविध मननें उमग रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ स्तंन ध्वजना दृढ करे केइ, निजनिज वाहनें धारिरें ॥ महासुनट छु प्रगट करवा, ते ध्वज बहु परकार रे ॥सु० ॥ ७ ॥ विविध शस्त्रें रथ नरे नट, रणमां सबल एह रे॥ उट बक्तरें नरे केइ, आप वारण तेह रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ केइक कंकट नवि पहेरे, नहीतो आवे कलंक रे ॥ वीराधिवीरपणु रहे नहीं, एहवी धारी शक रे ॥ सु०॥ए॥ केइ शूरा शस्त्र मूके, मन धरी अनिमान रे ॥ पाहु मुष्टि प्रमुखें लडशु,साहमा वीर समान रे ॥ सु०॥ १०॥ पखालो जल नरी चाले, प्रपा चालती तेह रे ॥ खाद्य प्रमुखें शकट नरियां, क्षुधित देवा जेह रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ औषधि नृत घूणि लेवे, केइ पर उपकार रे ॥ उत्सुकता छे पण न चूके, विवेकी कोइ वार रे ॥ सु०॥१२॥ नाटकिया परें शस्त्रधारि, पूठ अरिनें दीध रे ॥

देइ सार,मद्दा उत्साह ते धरी अपार, जस करी आगें रे नीकल्या बहुन विचार, नारी रूपें रे श्रीजयानंद कुमार, हवे करे रातें रे रणना बहु उप चार ॥ द० ॥ ८ ॥ पवनवेग सुत जे वज्रवेग, सहु खेचर अनुमति सुविवेक, सेनानी थापे वडवेग ॥ बेहु दलमांहे रे शस्त्र जागरिकायें धीर, शस्त्रनें पूजे रे पूर्वें थया वडवीर, जेहनी करे वातो रे जेणें उतार्यां अरिनीर ॥ द० ॥ ९ ॥ सग्रामें शस्त्रज परधान, तेणें शस्त्र थापे पट्टनें थान, चक्र खड्ग धनु वज्र स मान, त्रिशूल कुंता रे तोमर मक्षिका सीर, परशुने शक्ति रे नलिका धरे व डवीर, नडमाल नामे रे मुष्टि अर्थ गनीर ॥ द० ॥ १० ॥ नुशने छुरिका मूसल नाम, पाश गदा तरवार उद्दाम, घन पट्टिश मुग्गर अनिराम, इस्फो ट खुटि रे करवालिकानें कुदाल, शकुनें गुलिका रे कणय कपन्न सुविशाल, मद्द गोफणनें रे कर्त्तरी जेह कराल ॥ द० ॥ ११ ॥ परपत्रक यष्टि अनिधान, ए उत्रीश आयुध बहु मान, पवित्र जलें कराववा स्नान,चंदन लीपे रे अरचे पुष्पनी माल, धूप उखेवे रे गीत नाटक सुरसाल, वली तस प्रणमे रे स मरे तस रखवाल ॥ द० ॥ १२ ॥ बकतर टोप प्रमुख जे होय,तस सत्का र करे सहु कोय, रात वोलावी एणी परें जोय,मित्र जाणीनें रे कौतुक जो वानें काज,उदयाचलनें रे शिर आव्यो दिनराज, शूरनें देखी रे, शूर थयो अति प्राज ॥ द० ॥ १३ ॥ नेरी मादलनें कसाल, तलिमा नना ढक्का ना ल, हुडुक मृदग वाजित्र सनाल, शखनें कालहा रे जल्लरी पडह प्रकार,ख रमुखी करटी रे मंमरुक नानक श्रीकार, दद्दरी वाजे रे त्र्यंबक प्रमुख उदा र ॥ द० ॥ १४ ॥ दोय दलमां एम वाजे तूर, सांनली वाधे सुनटनें नूर, सायर खोनाणो मानुं क्रूर, वज्रें हणीयो रे पर्वतनो जेम नाद,जलजीव त्रा ठा रे नाठा गज वनमांद, परवत कंप्या रे शलशल्या शेष अविवाद ॥ द० ॥ ॥ १५ ॥ कछप दृढ थइ पृथिवी नार, पूठें धरता कष्टें तिवार, दशदिशा गा ज रही जयकार, गिरिगुफा गाजे रे फूटे मानुं आकाश, सिंह ते पेसे रे दरी मांहे लही त्रास, दूरें पेठा रे मद्दोरग छांमी आवास ॥ द० ॥ १६ ॥ वननेसा ते नाठा जाय,नांजे वृक्षतणा समुदाय, सुरगण जोवानें तिहां आय, नादें दीप्या रे सुनट ते रण करणाय, उत्साह पामी रे दोय दलना सङ्घ थाय, क्षण क्षण वाधे रे सुनटनें हर्ष न माय ॥ द० ॥ १७ ॥ आठमे खंमें नवमी ढाल, नांखी पद्मविजय सुरसाल, जेम ए सुनट थया उजमाला, तेम तुमें

बाण तूंणीर अक्षय बिहु दिश धरे, वज्र पृष्ट धनुष सव्य पाणि धारे ॥ अजन गिरि समा गजवर ऊपरें, इंद्रसम सोहतो छुतिथि वारे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांच शे शूर सौवेपथी तेणी परें, थइ सुसन्नद्ध गजवर आरोहे ॥ सुजट वर विकट कोडघो गमे बिहु दिशें, परिवस्यो मानु प्राकार सोहे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ विचित्र वाहनें रह्या विविध आयुध धरा, विचित्र ध्वजधारका सैन्य राजा ॥ कुमर नरराय ते सर्वशुं परिवस्या, सोहता शूर जेम तेज ताजा ॥ श्री० ॥ ॥ ६ ॥ मेरु गजदंत मुख अचलथी परिवस्यो, अहव नद्दशालवनथी विराजे ॥ तेणी परें कुमर नरराय खगरायशुं, बिहुं दिशें परिवस्यो परम राजे ॥ श्री०॥७॥खेट चक्रायुधो चक्री पण श्रावको,श्रीवीतरागनी पूज करतो, नमन स्तवना विधियें करी जिनतणुं,जिनपणुं याद करी ध्यान धरतो॥खेट०॥८॥ ए आंकणी ॥ दीप्रशिरस्त्राण सन्नाह मणि जडित ते, पहेरीयो राहु ठाया मां चवो ॥ तेणी परें दीपतो गर्वे करी जीपतो, इहनें चइ रवि कुण नागिदो ॥ खेट० ॥ ए ॥ पार्श्वद्वय सोहतां, बाण जाथे करी, हाथमां धनुष संग्राम सजीयो ॥ श्वेत सामज चढघो मानुं अद्रिरावणें, एह देखीनें मार्तंड लजीयो ॥खेट०॥१०॥ कुमर सन्नद्ध थइ विविध वर वाहनें, परिवस्यो तरु वरो जंबू जेम, जंबूवलयें करी सहसगमे कुमरथी, परिवस्यो वीर लखोयें तेम ॥ खे०॥११ ॥ सैन्य चतुरंग सग्राममां सज्ज थइ, वींटीयो जंबूमध्य मेरु रीतें ॥ अहव सायरपरें हय गय जलचरा, बिहु दिशें नीर कल्लोल नीतें ॥ ॥खे०॥१२॥खेट चक्री यथा श्रीजयानद तथा,निज निज सैन्य परिवार जुत्ता ॥ दोय तेम दीपता धातकी खममां, दोय मेरु निज वन सजुत्ता ॥ खेट चक्री यथा० ॥ ए आंकणी ॥१३ ॥ कल्पतरुनी परें दान दीये याचकां, सूर्य परें सर्वनां तेज लोपे ॥ निज निज सुजटशुं दृष्टि दीये स्नेहथी, शत्रुनें देखे कल्पांत कोपे ॥ खे० ॥ १४ ॥ महापराक्रमी गणे शत्रुनें तृण परें, शत्रुनें हरिपरें क्रूर नयणें॥ छत्रधारीजते चामरें वीजतें, सैन्यमां एम कहे सुणत सयणें ॥ खे० ॥ १५ ॥ आठमे खंड अग्यारमी ढाल ए, श्रीजयानदनें रास नाखी ॥ पद्मविजयें जली जविजने सानली, विशद परें कौतुकें चित्त राखी ॥ खे० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज निज सैन्यमां एहवो, करता वेहु संकेत ॥ युद्ध करे नहीं तेह

आपकुलमां अजस आप्यो, जनम लही शुं कीध रे ॥ सु० ॥१३॥ तीरथ संगर समुं नाही, जीवतां जस श्री थाय रे ॥ मूआं स्वर्ग लहे तेणे करी, ए सम तीरथ न थाय रे ॥ सु० ॥१४॥ दीपे क्षणएक रयणी दीवो, रवि दिनें विधु राति रे ॥ समामें जश जेह पाम्यो, युग लगें कीर्ति अमात रे ॥सु०॥ ॥१५॥ शत्रुजय करता तुमारा, विघन थाशे दूर रे ॥ वैतालिक एम बिरुद बोले, दान दीये तस पूर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ एम वैतालिक वाणी सुणतां, पूज्यनी आशीष रे ॥ शुकन रूडे हरषिया ते, द्विगुण उत्साह जगीश रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ हवे श्रीजयानंद केरा, कटकमां जट जेह रे ॥ समामें वज्रमालनां कहु, नाम सुणजो तेह रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ ढाल दशमी पवावि जयें, जाखी ए मनोहार रे ॥ आठमे खमें रामगिरिमां, सांजलतां जयकार रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ सर्वगाथा ॥ २ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वज्रवेगना सैन्यमां, रण रसीया महावीर ॥ सिद्ध युक्त रथमां रह्या, सहसगमे अतिधीर ॥ १ ॥ व्याघ्र रथे बेठा थका, बलगर्वित योधार ॥ चंडोदय मुख खेचरा, रणमां करे अवतार ॥ २ ॥ गज रथ बेसी नीकल्या, पवनवेगादिक राय ॥ गणता तृणपरें शत्रुनें, सेनानीनो ताय ॥ ३ ॥ तुरग रथे बेठा थका, नोगरस्यादिक जूप ॥ रथ शस्त्रे पूख्या घणुं, चाल्या मन धरी धूंप ॥४॥ श्रीधर श्रीपति अरिजयो, कांत दमनें नंद ॥ विक्रम जय अपराजिता, अजित तथा आनंद ॥५॥ मणिचूडनें नरव्याघ्र तेम, अचल प्रमुख राजान ॥ गज बेसी सन्नद्ध थइ, मन धरता अजिमान ॥ ६ ॥ गज वाजि हरि व्याघ्र तेम, शार्दूल महीषनें नाग ॥ लक्षोगमे निज वाहनें, खेचर नृप महाजाग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ श्रीजयानंद आनंदमां जगजयो, जामिनी रूपथी शत्रु धूजे ॥ स्नान करी धौत धरी नमन वंदन करी, मोदथी श्रीजिनराज पूजे ॥ श्रीजया०॥१॥ इष्ट परमेष्टि सजारी नवकारनुं, ध्यान धरी हृदयमां लीन थावे ॥ वज्र सन्नाह उन्नाहथी पहेरीयो, सर्वदिश मणिय जास्कर सोहावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ दीप्त मणि लोह वेष्टित शिरस्त्राणजे, शिर धरे मेरुपरें शृंग सोहे ॥ मेघघन परिवर्यो वीजली सहित मानुं, देखतां सुजटनां चित्त मोहे ॥ श्री० ॥ ३ ॥

एजे, मूक आयुध कहुं एह गूढ ॥ सु० ॥ १० ॥ कहे प्रतिपक्षी तव वच नें छुं राचतो, निज करें आप पराक्रम देखाउ ॥ रूशीयो तुम यमराय एम जणोयें, तुम निह्नाडे विधि एम लखाउ ॥ सु० ॥ ११ ॥ बाण धोरणी ति हां विस्तरी चिहुं दिशें, विचित्र आयुध वरसे तिवारें ॥ पवनथी पक्षीपरें वि विध आयुध चले, गगनें मारग जतां कोण वारे ॥ सु०॥ १२ ॥ गगन नमी वृक्ष उपर पडे पंखीया, वीर उपरें पडे तेम शस्त्र ॥ बाणमय खड्ग मय कुत गदा चक्रमय, शूलमय शक्तिमय कहीक अस्त्र ॥ सु० ॥ १३ ॥ विविध शस्त्रें तदा घोर सगर थयो, केलि कडुक परें सुनट पडिया ॥ जूमें आलो टता किहांये मातंग तेम, किहांयक तुरग जमराय नडिया ॥ सु० ॥ १४ ॥ शीर्षनें हस्त पादादि कहीं रडवडे, शत्रु हणवा केइ सैन्य पेसे ॥ नभरथें कुसुमनी वृष्टिपरें करी तणा, कुंन नेघाथी मानु मोती वरसे ॥सु०॥ १५॥ कौतुकी व्यंतरा भ्रमत गगनें फरे, वाजते मरुकें खेत्र पाला ॥ माकिनी शा किनी काकिनी हासिका, कौतुकें केली करती उत्ताला ॥ सु० ॥ १६ ॥ वि चित्र रूपें कर ताल देती थकी, योगिणी कौतुकें नाच करती ॥ विकट अ ट्टाट्टहासें मांस अर्थणी, राक्षस राक्षसी गगन फिरती ॥ सुं० ॥ १७ ॥ आ मिषगिरधरा गृध्रवर पंखीया, शत्रुशालापरें चिहुंदिशि फिरंता ॥ कुमर रू पानिधि देखी नट तुरग सुख, शस्त्र पीडित तणे करुण करता ॥ सु०॥ १८॥ औषधी नीर देइ मोकले खेचरा, सज्ज करे दोय सैन्ये ते नीरें ॥ द्विगुण उत्साहथी तेह फरी जूजता, काल अनादि अभ्यास पीरें ॥ सु० ॥ १९ ॥ पूर्व अभ्यासथी विरमें नहीं प्राणिया, कोह अभिमानीउ सुजन एह ॥ धि क् पडो कर्मनें धिक् हो ससारनें, जो करे धर्ममां चित्त रेह ॥ सु० ॥ २० ॥ तो कोण कर्मने कोण ससार छे, अहव अणुनोदयें मरण पामे ॥ केइ परा नव लहे अगक्षय केइ लहे, पाप परनावथी दुःख वामे ॥ सु० ॥ २१ ॥ घोर रणमांहे पण केइ अक्षत रहे, पुण्यथी जयपताका वरंत ॥ ढाल ए वारमी आठमा खंममां, नाखी पद्में जय जय करंता ॥ सु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक पूर्वज निज तणा, तेहना जयनें काम ॥ केइक ठरणीआ थ वा, निज स्वामीनें नाम ॥ १ ॥ क्रोध अमर्ष अभिमानथी, विविध आयुधना धार ॥ युद्धकरण उठ्या फरी, दुर्द्धर विविध प्रकार ॥ २ ॥

ने, मारवो नहीं कोइ हेत ॥ १ ॥ वली जे शस्त्र मूकी दीये, अथवा दीन जे होय ॥ अथवा नासतो ने पडयो, तेह न मारशो कोय ॥ २ ॥ समपंकि सहुयें रह्या, लही निजस्वामि आण ॥ दुर्द्धर वाजित्र नादथी, सैन्य प्रेरणा जाण ॥ ३ ॥ वाजि क्रम गदा घातथी, पृथिवी भार भराय ॥ शेष नागमां फण सहस, तेहनें पीडा थाय ॥ ४ ॥ कच्छप पृष्ठ कठिन घणुं, प्राणनो संशय तास ॥ दाढ वराहनी दृढ घणी, पामी पीडा राश ॥ ५ ॥ अपूरव संगम जाणीनें, मांहो मांहे मलवा धाय ॥ पूर्वापर सायर परें, एम सहु उत्सुक थाय ॥ ६ ॥ कोइ उत्सुकतायें करी, सहुथी आगल जाय ॥ वाले पाछो तेहनें, प्रतिहारज ववकाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ सुभट वर विकट कंकट धरी मोदशुं, एक एक आगलें ते उजाये ॥ रेणु पण आगलें सहुथकी दोडती, शत्रुनें अधपणुं करत प्राये ॥ सु० ॥ १ ॥ चिन्ह हरि करि कपि मेष द्रुम शिखि तणा, उलखी दूरथी देखी तेह ॥ नाम पूर्वक वरे ते एक एकनें, कीर्त्ति जस पामशुं मारी एह ॥ सु० ॥ २ ॥ काल बहुथी मल्या बांधवनी परें, एक एक शत्रु आह्वान करता ॥ अमर्से नानी वेहु मांहोमांहे मल्या, मान वश अमरष बहुत धरता ॥ सु० ॥ ३ ॥ पांखवता गिरिवर समा करिवरा, तुरग ते पांखथा गुरुड जेम ॥ न्याय युद्धें लडे साहाम साहामा समा, गज तुरग रथ सुभट लडत तेम ॥ सु० ॥ ४ ॥ भूरिरण तूर ढक्का हुडुक्का वली, काहला प्रमुख भंभानें भेरी ॥ तास पडछंदथी गिरि गुफा गाजती, बधिर होवत महा कर्ण सेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रेत जेम मांस भक्षण होये उत्सुका, विविध आयुध धरी वीर धावे ॥ विषम अम मत करो रेणुए संगरें, गल मदें मानु तेहनें समावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कोटिगमे सुभट आव्हान परस्परें करे, जेम भुजास्फोट गजगाज होते ॥ क्रोध आमर्ष दुर्धर्ष भीषण रवें, देवदेवारव तणा शब्द जोते ॥ सु० ॥ ७ ॥ रथ घणत्कार धनुना टणत्कार जे, खड्ग खाट्कार अट्टट्टहासें ॥ तूरनादे गिरि दरि पडछंदथी, स्फोट ब्रह्मांम सरिखो प्रकाशे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगतनें क्षोभना तेह थी उपजे, कौतुकि जननें आव्हान करता ॥ विविध शब्दें करी, गगन पृथिवी भरी, जय जय शब्दथी सैन्य फरता ॥ सु० ॥ ९ ॥ आवरे आय उनो रहे रहे इहां, नाशिरे नाशि वहेलो रे मूढ ॥ जून वहेलो थइ हण्यो हण्यो जा

॥ दोहा ॥

॥ निद्रा सुनट आलिंगीनें, सुखमां करे विलास ॥ रण चिंता शोकज म ली, तव थयो निद्रा नाश ॥ १ ॥ रण कौतुकीने विघन किम ॥ करियें एम विचार ॥ पूर्ण कौतुक देखाववा, क्षणदा गइ निरधार ॥ २ ॥ कोण नाग कोण जय लह्या, मरण लह्या कोण जीव ॥ उदयाचलें रवि देखवा, आ व्यो मानु अतीव ॥३॥ पूरवपरें रण तूर वली, वाज्या कटकें दोय ॥ मद्दा उत्साहें उनय ते,रण करवा सज्ज होय ॥ ४ ॥ दोय सेनानी आगल रह्या, दोय नायक विचमाह ॥ पूर्वपरें मलिया बेहु, धरता अति उत्साह ॥५॥

॥ ढाल चौदमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ बाण विज्ञाण मद्दा जाण जे नूवि सुनट, बाणथी तेणें आकाश न रीयो ॥ काल कल्पांतें मानु पक्कवता अद्दो, केइ बाणे रिपु नेद करीयो ॥ ॥ बा० ॥ १ ॥ केइ सधा धरे एक शस्त्रज तणी, तेणे गदा मुजर चक्र हणि या ॥ अहो वली एक बाणे करी शत्रुनां, आवतां शस्त्र मनमां न गणीयां ॥ बा० ॥ २ ॥ बाणें करी शस्त्र सघलां हण्यां शत्रुनां, शत्रु तेहथी उदवे ग पामे ॥ शस्त्र लेइ मुकवा शक्ति नांही रही, केइ धमता रहे क्रोध धा में ॥ बा० ॥ ३ ॥ केइ व्याकुल थका शस्त्र लेइ नवि शके, वदनमां तरणां देइ तेह वेसे ॥ केइ बाणे समपक्ति स्थित बहु हणे, वाहण हय गज प्र मुख नूघन पेसे ॥ बा० ॥ ४ ॥ केइ शर शत्रु छेदे निज शरें करी, तेहनां चाप छेदी ते हणता ॥ वादि प्रतिवादि जेम तर्कशास्त्रें हणे, वादीने उक्ति प्रयुक्ति नणता ॥बा०॥५॥ वीर धोरी केइ निज कलायें करी, बाणे शत्रु ह णी गगनें जाये ॥ कष्टथी सुर असुर त्रास पामी करी, नासता चित्त न्रम मोल थाये ॥ बा०॥ ६ ॥ सुनट शिर वीर बाणे हण्यां उछले, राहु मानु देव स्त्री वदन चंद ॥ देखी ग्रसवा नणी जाय आकाशमां, नीती लहे देव ना रिनां वृंद ॥ बा० ॥ ७ ॥ केइ बाणें वपु विहुं दिशें परिवरयु,वेगें उछलता मा नु पांख आवी ॥ स्वर्गमां जायवा एह उद्यम करे, वात ए सहु तणे चित्त ना वी ॥ बा० ॥ ८ ॥ बाण करिवर तनु विहु दिशें वलगीया, शैलेंद्रो सहित चा लत दीसे ॥ अहव रुधिर स्रवत निर्जरणां करे,गिरिवरा सोहता गेरु मि पें ॥ बा० ॥ ९ ॥ पूर्वना नयथकी चक्राना खेचरा, वरसता विविध आयुध समीपें ॥ समुद्रवेलायें जेम वेग नदी उतरे, तेम कुमर सैन्य नागुं प्रतीपें ॥

॥ ढाल ॥ तेरमी कडखानी देशीमां ॥

॥शूर वडवीर माहाधीर ठग्या फरी, सारथी सहित योधारमारे॥इय नवि मारिया चित्त दया धारिया, तेह रथे आप वेसे तैयारे ॥ शू० ॥ १ ॥ केइ भर्दे शस्त्र मूकी निज करें करी, दोय शत्रु दोय हाथ जाले ॥ परस्परें तेह आस्फालीनें पारिया, क्रोधथी प्रेतपतिधाम घाले ॥ शू०॥ २ ॥ सपदेने पदे पत्ति जेम कुर्कुटा,परस्परें बाणथी मरण पामे,गर्वथी केइ मदझरत लेइ हाथिया, गगनें उगाले मानुं मेघगामे ॥ शू० ॥ ३ ॥ नांगी रथचक्र लेइ हाथ मां अरि हणे, चक्री पणजाणे बहु चक्रो आया ॥ सुजट उद्भट महा क्रूर पणें देखीयें, चक्रिजट बहुत आश्चर्य पाया ॥ शू०॥ ४ ॥ रणमहा गोरमां कुमर सैन्यें तदा, चक्रीनु सैन्य अमनु नसाडयु ॥ वार्द्धिवेला परें उलसु तेह पण, जैत्रवाजित्र देवें वजाडयु ॥शू०॥५॥ तूररणजीतनां कुमर कटकें थया, जय जयारव करे सुजट सर्व ॥ शूरनिज नामथी शूर पराजव लही, अपर सायर पडे गलित गर्व ॥शू०॥ ६ ॥ मूकी समाम सेनापति आणथी, स्व स्व उतारे सहु सुजट आवे ॥ पखी जेम नीडमां सर्व सध्या समे, कुमर करुणा हवे चित्त लावे ॥ शू० ॥ ७ ॥ कवगत प्राण जे सुजट हय गय सुखा, सक्क औषधी जलें करे तिवार ॥ पतित रणभूमिमां शस्त्र घातीत थका, शोध तेहनी करावे कुमार ॥ शू० ॥ ८॥ जीवता जाणी दोय सैन्यमां चिन्हथी, स्वपर अविनागथी ते जीवावे ॥ औषधि जल प्रचुर मोकली निज नरें, परोपकृति सज्जन मन सोहावे ॥ शू०॥ ए ॥ कुमर महामहोत्सवें जय जय रव थके, बंदिजन बिरुद बोले विशेषें ॥ कटकमां नृपति स्त्री मगल गावतां, परिवर्दें आवे आवास देशें ॥ शू० ॥ १०॥ नरेंद्र चक्रायुधो शोधि रणभूमिका, जाय परिवारशुं निज उतारे ॥ जीवता शल्यथी व्यथित जे प्राणीया, कुमरजल गंटिसुं तेणें तिवारें ॥ आप मंत्रित जल दीध धारें ॥ शू० ॥ ११ ॥ सक्क हूआ सुजट दोय सैन्य तेणे निशि समे, निद्र करता ते विश्राम पामे ॥ योग्य आहारें करी हय गय सुख लहे, तेरमी ढाल एक ही आरामें ॥ आठमा खंडमां पद्म नामे ॥ शू० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥२५७॥

इतिश्री जयानंदराजर्षिचरित्रे चक्रायुध खेटक चक्रवर्ती युद्धाधिकारे सामान्यतो युद्धरूपं प्रथमदिनयुद्ध ॥

धनुष लावी नवुं नोगरति केरडुं, ठेदिवुं धनुष कर्णांत ताणी ॥ वा० ॥ ४ ॥ नोगरति शस्त्र तामस तणुं मूकतो, तेह्थी तास अधार थाय ॥ दिनकर शस्त्रे उद्योत निज सेन्यमां, करीने वाणें करी गगन ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ तेह्थी व्याकुलो नोगरति मूकतो, जलधर शस्त्र सेनानी त्यारें ॥ पवन शस्त्रे करी, तेह जलधर प्रत्यें, आप शक्ते करी दूर मारे ॥ वा० ॥ ६ ॥ धनुष ठेदी वली कवच तस ठेदीयुं, बाणे जर्जरित करी नाग पासें ॥ बांधीनें पकडी लीयें ताम नृप कुमरने, आव्यो सेनानी वज्रवेग पासे ॥ वा० ॥ ७ ॥ बाणथी ताडीयो ह्रदयमां पीडियो, नोगरति मूकी क्रोधें नराणो ॥ वज्रवेगशु लडे दोय सरिखा मल्या, जयसिरि केरडो मन मोलाणो ॥ वा० ॥ ८ ॥ केहनें हुं वरु एम संशय पडी, एणी परें आवने पण पिठाणो ॥ पवनवेग आवीनें आठे लेइ गयो, कर्मनी वात कोइ निव्व जाणो ॥ वा० ॥ ए ॥ रायनें आगलें ते गव्या तव नृपें, ठेदीया पाश अदीना ते रायें ॥ गारुडी विद्यायें सज्ज औषधि जलें, हाथ फरसें अधिक तेज थाये ॥ वा० ॥ १० ॥ पूर्वथी धैर्य उत्साह वधियो घणो, सूर्यकर स्पर्शथी जेम पाषाणा ॥ पूरव पराजव थकी धावीया ते फरी, करण संग्राम खेदें नराणा ॥ वा० ॥ ११ ॥ देखी सेनानी दोय जूऊता सहु जना, निज निज सैन्य सहु युद्ध करता ॥ केइ शर विफल जाये शत्रुशरें खलितथी, धर्म इन्ना ज्युं अल्प सत्त्व धरता ॥ वा० ॥ १२ ॥ दोय सेनानी हवे जुद्ध करतां थकां, धनुष वज्रवेगनु शरथी ठेदे ॥ नविन धनुषें करी तेह चमवेगनु, धनुष ठेदे शरें धरीय खेदें ॥ वा० ॥ १३ ॥ चमवेग मवथकी नविन धनु लावीनें, क्षुरप्रशस्त्रें वज्रवेग केरो ॥ नांजी रथ पाडी सारथि सिहनें हणे, जाम वज्रवेग रथ ले नलेरो ॥ वा० ॥ १४ ॥ ताम बाणे वज्रवेगनें ताडियो, लहीय मूर्ग वली जाम मारे ॥ नोगरति ताम आवी अकस्मातथी, चमवेगनें शरें दीये प्रहारे ॥ वा० ॥ ॥ १५ ॥ चक्रीनो पुत्र मणिमाली तिहां आवियो, चक्रीदत्त जलें करी सज्ज कीधो ॥ नोगरति लेइ गयो वज्रवेगनें तदा, श्रीजय रायनें सोंपी दीधो ॥ वा० ॥ १६ ॥ ठांटी औषधी जलें सज्ज कीधो तिहां, नोगरति विणु हवे सात राजा ॥ सात चक्री तणा राजवी मोटका, जीतिया सबल जे तेज ताजा ॥ वा० ॥ १७ ॥ बांधी निज सैन्यमां मोकलें तेह नृप, कर्मथी जीतनें हार पामे ॥ शुन अशुन कर्म फल जाणीनें नवि जना, पुण्य करो जे

वा० ॥ १० ॥ जोगरत्यादि आठे तेह देखीनें, रण करण उठीया बाण वरसे ॥ तेह अमरष धरी सैन्य सजा जूऊता, जाणे सहु एम कहो मुं इक रहो ॥ वा० ॥ ११ ॥ बाणनी श्रेणीथी शत्रुबल ढांकीउ, गान बीजें मानुं मेघ चढीयो ॥ केइ ए बाणने सुनट वचावता, कोइक सन्मुख आइ नि डीयो ॥ वा० ॥ १२ ॥ शत्रुनां वर्म नेदी ते बाणावली, हृदयमां पेसतां तेम जाणो ॥ जेम मिथ्यात्व तृष्णा प्रत्यें ठेदता, शुणगुरु गुरु वचन चित्त आणो ॥ वा० ॥ १३ ॥ बाण कोइ शत्रुने एक दिशें पेसीनें, नीकले अन्य दिशें आरपार ॥ इष्ट बुद्धिने जेम गुरुवचन नवि टके, कोइनें नवि हवे खल प्रकार ॥वा०॥१४॥ जोग रत्यादि तृण परें गणे शत्रुने, विहुं दिशें प्रलपरज रीति व्यापे ॥ केइ मदसाथ रथ प्रवर नांजे तदा, केइ केतु जुज साथ कापे ॥वा० ॥ १५ ॥ केइ मनोरथ समा मस्तक ठेदता, सत्व साथें केइ धनुष नागे ॥ विक्रम साथ खम्गघा केइ शस्त्रनें,पार्श्व परें हृदय केइ शूल लागे ॥वा०॥ ॥ १६ ॥ जोगरत्यादि सार्थे एम जूऊता, उसरे चक्री सेना तिवारें ॥ जव्य जेम धर्मथी उसरे तेणी परें, चौदमी ढाल ए नांखी प्यारें ॥ आतमे खम्ग वित्तथी वदारें ॥ वा०॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ३८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चम्गवेग सेनापति, नट कोडघोडुं जेह ॥ सिंहयुक्त रथ बेशीनें, अमरषें देखी तेह ॥ १ ॥ सैन्यने धीरज आपतो, उठयो रण संग्राम ॥ जोगरत्यादिकथुं लडे, एहवा नृप उद्दाम ॥ २ ॥ अक्षोन कासर रमण नृप, मदन तपनने नीम ॥ नाम प्रतापसिंह रथथकी, युद्ध करणनें नीम ॥३॥

॥ ढाल पंदरमी॥कडखानी देशीमां ॥

॥ बाण बहु माण आणी सेनानी हवे, केइना कर पद नाजें वींधे ॥ केइनां मुख शिर केइनी नासिका, कोइक सुनट प्रतिशत्रु वींधे ॥वा०॥१॥ जोगरतियें सेनाधिपति रुंधियो, चइबाहु मदनसार्थे लागो ॥ रोकीयो तपनने महा बाहुराजीए, चइवेग नीमने करिय नागो ॥वा०॥२॥ चइचूडरायें परताप नें वींटीउ,रत्नचूडें तेअक्षोन नृप॥ तेम तडितवेग कासर प्रत्यें वलगीयो,रमण चडाननें करीय चुप ॥वा०॥३॥ एम नृपति बहु नृप सहामा अडया,सुनटना बाण तेसर्पे पीधा॥वीरनां प्राण वायुथी मदहुं नखा,दशीनें शत्रु अचेत कीधा ॥वा०॥४॥ जोगरति चाप चंम्गवेगनुं ठेदतो,जव्यमिथ्यात्व जेम गुरुनी वाणी॥

धनुष लावी नवु नोगरति केरडुं, ठेदिसुं धनुष कर्णांत ताणी ॥ वा० ॥ ४ ॥ नोगरति शस्त्र तामस तणुं मूकतो,तेहथी तास अंधार थाय ॥ दिनकर शस्त्रे उद्योत निज सेन्यमां, करीने वाणें करी गगन ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ तेहथी व्याकुलो नोगरति मूकतो, जलधर शस्त्र सैनानी त्यारें ॥ पवन शस्त्रे करी, तेह जलधर प्रत्यें, आप शक्ते करी दूर मारे ॥ वा०॥ ६ ॥ धनुष ठेदी वली कवच तस ठेदीयुं, वाणे जर्जरित करी नाग पासें॥ बांधीनें पकडी लीयें ताम नृप कुमरने, आव्यो सेनानी वज्रवेग पासे ॥ वा० ॥ ७ ॥ वाणथी ताडीयो हृदयमां पीडियो,नोगरति मूकी क्रोधें नराणो ॥ वज्रवेगशु लडे दोय सरिखा मल्या, जयसिरि केरडो मन मोलाणो ॥ वा० ॥ ८ ॥ केहनें हुं वरु एम सशय पडी, एणी परें आवने पण पिठाणो ॥ पवनवेग आवीनें आठे लेइ गयो, कर्मनी वात कोइ निन्न जाणो ॥ वा० ॥ ए ॥ रायनें आगलें ते ठाव्या तव नृपें, ठेदीया पाश अहीना ते रायें ॥ गारुडी विद्यायें सज्ज औपधि जलें,हाथ फरसें अधिक तेज थाये ॥ वा० ॥ १० ॥ पूर्वथी धैर्य उत्साह वधियो घणो, सूर्यकर स्पर्शथी जेम पाषाणा ॥ पूरव परानव थकी धावीया ते फरी, करण संग्राम खेदें नराणा ॥ वा० ॥ ११ ॥ देखी सेनानी दोय जूफता सहु जना, निज निज सैन्य सहु युद्ध करता ॥ केइ शर विफल जाये शत्रुशरें खलितथी, धर्म इन्ना ज्युं अल्प सत्त्व धरता ॥ वा० ॥ १२ ॥ दोय सेनानी हवे युद्ध करतां थकां, धनुष वज्रवेगनु शरथी ठेदे ॥ नविन धनुषें करी तेह चमवेगनुं, धनुष ठेदे शरें धरीय खेदें ॥ वा० ॥ १३ ॥ चमवेग मदथकी नविन धनु लावीनें, क्षुरप्रशस्त्रे वज्रवेग केरो ॥ नांजी रथ पाडी सारथि सिहनें हणे, जाम वज्रवेग रथ ले नलेरो ॥ वा० ॥ १४ ॥ ताम वाणे वज्रवेगनें ताडियो, लहीय मूर्छा वली जाम मारे ॥ नोगरति ताम आवी अकस्मातथी, चमवेगनें शरें दीये प्रहारे ॥ वा० ॥ ॥१५॥ चक्रीनो पुत्र मणिमाली तिहां आवियो, चक्रीदत्त जलें करी सज्ज कीधो ॥ नोगरति लेइ गयो वज्रवेगनें तदा, श्रीजय रायनें सोंपी दीधो ॥ वा० ॥ १६ ॥ ठांटी औषधी जलें सज्ज कीधो तिहां, नोगरति विणु हवे सात राजा ॥ सात चक्री तणा राजवी मोटका, जीतिया सबल जे तेज ताजा ॥ वा० ॥ १७ ॥ बांधी निज सैन्यमां मोकले तेह नृप, कर्मथी जीत नें हार पामे ॥ शुन अशुन कर्म फल जाणीनें नवि जना, पुण्य करो जे

हयो अशुन वामे ॥ वा० ॥ १७ ॥ चड्वाह्णादि ते वीर तेम जूजीया, चक्रीसेना जेम हार पामी ॥ थाक ते देखतां सूर्यने सक्रम्यो, शांति हेतम तपन स्नान कामी ॥ वा० ॥ १९ ॥ पश्चिम सायरें मानु श्रम टालीयो, दोय सेनानि निज सैन्य मांहि ॥ आण करे कर्मथी जय पराजय जहे, जाउं सहु निज निज ठाम ज्यांहि ॥ वा० ॥ २० ॥ मद उत्साह कांइ सत्त वीर वधने, रणधरा शोधीयो सार लीधो ॥ चक्री खेचरचमू जागते पगथ की, जेम तेम रयणी विश्राम कीधो ॥ वा० ॥ २१ ॥ मगल पाठके वीर गु ण बोलते, श्रीजयें ओषधी नीर लेइ ॥ पूरव परें सज्ज करे सुनट पहरें दनें, चक्री पण निज चमूमांहे देइ ॥ वा० ॥ २२ ॥ मदनमुख राजीया ओषधी नीरथी, सज्ज करी लोह पिंजरमें घाते ॥ पवनवेग राजीये ते ज वल गाजीयें, रहे सावधान ते सर्व वातें ॥ वा० ॥ २३ ॥ पनरमी ढाल ए आठमा खममां, श्री जयानदना रासमांहि ॥ चरित्रमांहि लही पद्मविजयें कही, नविजनें सईही धरि उछांहि ॥ वा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४०७ ॥ इति श्रीश्रीजयानद केवलीचरित्रे द्वितीयदिने नोगरत्यादिसुहृदष्टकाधि जयनामा बाणेरेव युद्धाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयश्रीयोग्य राजा अछे, युद्धविना नवि तेह ॥ युद्ध अवकाश देवा नणी, उदयाचल रवि एह ॥ १ ॥ मगल तूरथी जागीया, रणरसीया महा वीर ॥ पूर्वपरें दोय सैन्यना, सज्ज हुआ साहस धीर ॥ २ ॥ निजसेनानी हुकमथी, उतस्या रण करणाय ॥ दोय सेनानां नट वडा, सन्मुख आव्या धाय ॥ ३ ॥ इधणे अगनि धनें नृपति, परअन्नें नूदेव ॥ मद्यप मद्यें वीर रणें, तृपति न पामे येव ॥ ४ ॥ चिन्हें उजलखी उजलखी, बोलावे युद्ध का म ॥ परनिंदे निज गुण स्तवे, उरा आवो आम ॥ ५ ॥ भुजास्फोट करता थका, गगन उछाले बाण ॥ पांखवता मानुं सर्प ए, युद्ध करे असमाण ॥ ६ ॥ वाहन गजवर प्रमुख जे, युद्ध करे मांहोमांहि ॥ स्वामि पराक्रम निज तणु, संक्रमिय ए आंहि ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ धवलशेठ लेइ नेटणु ॥ ए देशी ॥

॥ शुंढमां खड मोघर मुखा, वतूशस्त्रें करे घाय रे ॥ मेघपरें गाजे घणु, कोहनें जय नवि थाय रे ॥ १ ॥ रणरंग मच्यो एणी परें ॥ ए आंकणी ॥

सिंहनाद सुणी नाजीया, साहामो साहामा सिंह रे ॥ पन्नग फण आफोट
ता, नाखे फुंकारा अबीह रे ॥ रण० ॥ २ ॥ मणिसधि त्रूटी पडे, सूअर क
रता कलेष रे ॥ वाढार्ये हणता थका, घुर्घुर शब्द अशेष रे ॥ रण० ॥
॥ ३ ॥ इत्यादिक पशुवृंदना, काल अनादि अन्यास रे ॥ वीरसर्गे क्रोधें करी,
स्वामि प्रेरण पण तास रे ॥ रण० ॥ ४ ॥ प्राण ते तृण समोवड गणे,जि
हां लगें शत्रु न मारे रे॥पशु पराक्रम देखीनें, वीर अधिक रस धारे रे ॥
॥ रण० ॥ ५ ॥ चक्रीसैन्य पराक्रमथकी, नरपति सैन्य ते नागे रे ॥ वीरां
गद प्रमुखा बहु, आवी साहामा लागे रे ॥ रण० ॥ ६ ॥ वीरागद मुख पां
चशें, स्वामि निवारी नक्के रे ॥ स्त्री रूपें जे पराक्रमी, शत्रु बोलावे शक्के
तें रे ॥ रण० ॥ ७ ॥ बाण सेतांने मूकतां, नजरें कोइ न देखे रे ॥ शत्रु
शिर उपरें पडे, जाणे नाम विशेषें रे ॥ रण०॥ ८ ॥ मरण लह्या बहु बाण
थी, केइक कपटें सूता रे ॥ मरणनो नय जग मोटको, कोइक रुधिरें चूता
रे ॥ रण० ॥ ए ॥ रथविहूणा ते रथी थया, रथि विहूणा रथ थाय रे ॥ तु
रग विना सादी थया, तुरगना सादी जाय रे ॥रण० ॥ १०॥ एम हाथी म
हावत विना, माहावत गज विण जोय रे ॥ योध विमान विना थया, वि
मान योध विण होय रे ॥ रण० ॥ ११ ॥ चक्रीनु बल ते निर्बल थयुं, गज
सिंह तव गज चढीयो रे ॥ देखी नीर करवा नणी, नरपति बलशुं अडी
यो रे ॥ रण० ॥ १२ ॥ बलियो होय ते आवजो, एम कहेतो मुख वाणी
रे ॥ गजानद मुख पाचशें, आव्या अवसर जाणी रे ॥ रण० ॥ १३ ॥ नि
जसैन्यने आश्वासता, गज बेसीनें आव्या रे ॥ तेहनें वीरांगदादिक मली,
रुधे अवसर फाव्या रें ॥ रण० ॥ १४ ॥ नारी रूपें जूफता, गजसिंहादिक
बोले रे॥ रंभा रण योग्यज नहीं, पाणीहारी थाउं मोले रे ॥ रण० ॥१५॥
सूत्र कांतो मांही रेंटीयो, वैरणी नारी न मारु रे ॥ तव माया नारी वदे,
हसत वदनें वच प्यारु रे ॥ रण० ॥ १६ ॥ वयरी नारी रंभाविषें, तेणे अ
में रंभा साची रे ॥ छुद्र करो अमणु तुमें, वात करु खरी राची रे ॥रण०॥
॥१७॥ छुद्रे तुमनें मारीनें, जलांजलिनें देवा रे ॥ पाणी तैयार कयु अछे,
नवि जाउ जल लेवा रे ॥रण०॥१८॥ वयरी बहुने बाधवा, सूत्र अमारे ते
यार रे ॥ शे कारण कांतु अमें, चित्तमां करजो विचार रे ॥ रण० ॥ १९ ॥
वीरांगद महावीर जे, बाणनो घन वरसावे रे ॥ स्त्रीरूपें जम रायनें, सतो

पे नसे नावें रे ॥रण०॥२०॥ गजसिंह पण निज बाणथी, शत्रु जम कर मूके रे ॥ नग विद्यायें वीरांगदो, पर्वत मूके न चूके रे ॥ रण० ॥२१॥ वज्र मूकी गजसिंह ते, पर्वत चूरण कीधो रे ॥ सिंह विकूर्वी मूकतो, वयरी ज्यांन गज लीधो रे ॥ रण० ॥ २२ ॥ वीरांगद विद्या बलें,अष्टापद सिंहमा ये रे ॥ शरनविद्यायें मूकतो, लडतां गजसिंह साथें रे ॥रण०॥२३॥ गज सिंह बाण गदा अति, मूके शस्त्र हजारो रे ॥ उपडे जाव आकाशमां, त व अष्टापद धारे रे ॥ रण० ॥२४॥ पाडयो देगे नखे हणी, वीरांगदें ना गपाश रे ॥ बांधी लीधो तेहनें, हवे महाबाहु खास रे ॥ रण० ॥ २५ ॥ गजानंद साथें कह्यु, बाणयुद्ध स्त्री रूपें रे ॥ ज्वलनवर्षिणी शक्तिथी, वरसे अगनि सरूपें रे ॥ रण० ॥ २६ ॥ प्रतिशस्त्रे ते निवारतो, तव महा बाहु तास रे ॥ मोहन शस्त्रे सुजावीनें, बांधी ग्रह्यो वर पास रे ॥रण०॥ ॥ २७ ॥ एम सुघोष मुख वीर जे, वयरीनें देइ खेद रे ॥ जर्जर करी प कड्या घणं, केता कहुं तस नेद रे ॥ रण० ॥ २८ ॥ नागपाशें ते पांच शें, निज शिबिरें सहु लाया रे॥ते देखी बलचक्रीनु,त्रासने नय बहु पाया रे ॥ रण० ॥ २९ ॥ आठमे खंमें शोलमी, ढाल कही सुरसालो रे ॥ प द्मविजय कहे रायना, सैन्यमां मंगलमालो रे ॥ रण० ॥ ३० ॥ ४४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पांचशें सुनट बांध्या गया,चक्रायुद्ध ते देखी ॥ क्रोध मानथी परिनभ्यो, उठे सर्व उवेखी ॥ १ ॥ मणिमाली त्रीजो तनुज, वीनवे करी परणाम ॥ कीडी उपर कटक छु, रंभा उपर राम ॥ २ ॥ उवेखी स्त्री जाणीनें, तेम एणे कर्यो उन्माद ॥ एहनें तेम ग्रह्या पुरुषनें, लावु म करो विषाद ॥३॥ तात निषेधी गज चड्यो, चाल्यो परदल मांहिं ॥ परदलनें दलतो थको, मारग दीये सहु त्यांहिं ॥४॥ कासर जेम कासारमां, मोहलतो आव्यो तत्र ॥ वी रांगदादिक पांचशें, सुनट मल्या छे जत्र ॥५॥ जइ तेहनें बोलावतो, रे तुमें कपट करंम ॥ नक छेडुं शिर मूकीनें, नवि उलखो रे रंम ॥ ६ ॥ तिरस्कार सुणी आपणो, युद्ध करे बलवंत ॥ महावीरनें सिंह नवि, पर धिक्कार सहंत ॥ ७ ॥ मणिमालीनें रुधतो, वीरांगद महावीर ॥ शरश्रेणि वरसावतो,नग उ पर जेम नीर ॥८॥ मणिमाली पण जूऊतो,वीरांगदशुं जोर ॥ वीरहाक वाजे तिहां,थइ रह्यो सोर बकोर ॥९॥ एके कण पांचशें,किरणमाली सुख भ्रात ॥

युद्धकरण मणिमालीना, पूर्वेथी आयात ॥१०॥ वीरांगद विण सुनट जे, पांचशें तेहशुं लग्ग ॥ गगन धरा दिशि विदिशिमां,शिलिमुख केरा वग्ग॥११॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ करेलणां घडदेने ॥ ए देशी ॥

॥ मणिमाली मूके हवे, शक्ति शस्त्र बहु जाल ॥ वीरांगद प्रतिशक्तिथी, तेह करे विसराल ॥ १ ॥ सुनट मल्ल जूके रे, जेहनुं पुण्य अगाध, तेहनो जय सूजे रे ॥ ए आंकणी ॥ विद्यायें सूअर प्रत्यें,घुर्घुर शब्द करंत ॥ वीरांगद वयरी न्नणी, ते उपद्रव सुमर्दंत ॥ सु० ॥ २ ॥ मणिमाली ते उपरें, मूके सिंह शोंमीर ॥ विद्यायें ते खाइ जाये, वीरांगद तव वीर ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ सिंह उपरें ते मूकतो,शरन्न ते आवे ताम ॥ सिंहनुं नक्षण ते करे, जोइ मणिमाली उद्दाम ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेघ गर्जारिव ते करे, शरन्न मरण लहे तेह ॥ मणिमाली शरथी हणे, वीरांगद गज जेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ पवन वेग आणी विये, सिंहयुक रथ ताम ॥ ते उपर बेसी हवे, मूके शरना माम ॥ सु० ॥ ६ ॥ पाछे गज मणिमालिनो, विद्यारथ तेणी वार ॥ करीनें वेगे शर घणां, वरसे ज्युं मेघ धार ॥ सु० ॥ ७ ॥ वीरांगदनां छेदीयां, अनुक्रमें धनुष ते सात ॥ बाण लेवानें मूकवा, शक्ति न रही तिलमात ॥ सु०॥ ॥ ८ ॥ बाण मूक्युं निज्ञा तणुं, तेणे ते उंघी जाय ॥ स्त्री नट सघलां उंघियां, नागपाशें ते बधाय ॥सु०॥ ए ॥ मणिमाली विद्यापटें, माछी जेम मछजाल ॥ लेवा जाये जेटले, पवनवेग तेणें ताल ॥ सु० ॥ १० ॥ बहु खेचर नेला करी, आप्यो तिणहीज गाम ॥ मणिमाली स्त्री नट तजी, लडवा आव्यो ताम ॥ सु० ॥ ११ ॥ नोगरत्यादिक नृपनें, पवन बोलावे तत्र ॥ विचित्र शस्त्रथी जूजता, द्विप जेम मृगपति सत्र ॥सु०॥१२॥ ते एकें निर्भेद कस्या, सूर्य जेम ग्रह वग्ग ॥ मणिमालीयें नाइ प्रेरियो, आप संग्रामें लग्ग ॥सु०॥१३॥ बांध्या स्त्री नट लेयवा, किरणमाली ततकाल ॥ चडगति ते जाणीनें, आव्यो तिहां नृपाल ॥ सु० ॥ १४ ॥ थननी विद्यायें थन्नीयो,गारुड विद्यायें ताम ॥ नागपाश सवि तूटीया,वली प्रबोधिनी अनिराम ॥ सु० ॥ १५ ॥ विद्याथी सहु जागीया, पट नेदीनें तेह ॥वही नृप पासें गया, धरता अतीय सनेह ॥ सु० ॥ १६ ॥ यान वस्त्र आपी करी, दीधो बहु सतकार ॥ नृप दयायें छोडतो, किरणमालीनें तिवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ थन्यो मूक्यो जाणीनें, करतो कोप अपार ॥ मणिमाली श्रीजयप्रत्यें, लेइ

देखशो आगल, तेहनी पेर ॥श०॥२५॥ सैन्यनी स्वामिनी नामिनी म जाण, एतो शिक्षा देवा देवता गण ॥ श०॥ २६ ॥ अकालें क्षय करे तुमचो एह, तेणे ए वचननो निश्चर केह ॥ श० ॥ २७ ॥ मुजथी के तुजथी तुज मुज मरण, युद्धमां जाणशुं, केहनु छे हरण ॥ श० ॥ २८ ॥ दावानल जेम वधे प्रचंम वाय, तेम चक्रवेग सुणी ज्वलती, निज काय ॥ श० ॥ २९ ॥ पण जस पुण्य तेहनो जय थाय, बीजा तो वचमां, गडथोलां खाय ॥श०॥३०॥ आठमे खमें अढारमी ढाल, सांजलतां पद्म कहे, मंगलमाल॥ श० ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रवेग मूके हवे, अगनि तणु ते बाण ॥ पवनवेग शर धोरणी, वरसे जलधर जाण ॥१॥ अग्रज जूजतो देखीनें, महावेग लघु नाय ॥ आव्यो तव तिहां चझगति तेहनें सन्मुख थाय ॥२॥ त्रीजो मणिमाली वली,आव्यो अवसर जाण ॥ नोग रति साहामो थइ, रुध्यो तिणहीज गण ॥३॥ प मवेग सेनानी जे,आव्यो धनुपनो धार॥वज्रवेग सेनानी ते,साहामो थयो तेणि वार ॥ ४ ॥ आठे परस्पर गरजता, दिग्गजपरें रण घोर ॥ बाण वडे सहस्रो गमे, त्रोडे शत्रु तोर ॥ ५ ॥ प्राण गयां जोइ केइनां, केइ पराक्रम धार ॥ कोड्यो गमे नट परस्परें, जूजे अति जूजार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठंगणीशमी ॥ जीहो जाण्युं अवधि प्रयुंजीनें ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो पवनवेगनां धनुष जे, लाला कापे ते वारं वार ॥ जीहो नव नव धनुष लेइ लडे, लाला चक्रवेगशुं अपार ॥ १ ॥ सज्जन नर जूउ जूउ पुण्य प्रकार ॥ जीहो पुण्यें मनवंछित मले, लाला पुण्यें होये जयकार ॥ ॥ स० ॥ २ ॥ जीहो चक्रवेगनां कापतो, लाला तपथी जेम कर्मजाल ॥ जीहो रथ नांगे ते परस्परें, लाला एम बहु काढे काल ॥ स० ॥ ३ ॥ जी हो पञ्चरनें गदा मोघरे, लाला बेहु जण करे चकचूर ॥ जीहो चक्रवेग गगनें जइ, लाला मूके शिला अविदूर ॥ स० ॥ ४ ॥ जीहो जीवनें मोह ट ष्णा परें, लाला पवन मोघर लेइ हाथ ॥ जीहो नांगे नवस्थिति दीर्घनें, लाला समकेत लाञ्चनें साथ ॥स० ॥ ५॥ जीहो चक्रवेग जे शस्त्रनें, लाला मूके महावहवीर ॥ जीहो ते ते पवन निष्फल करे, लाला जाणी चक्रवेग धी र ॥ स० ॥ ६ ॥ जीहो शक्ति शस्त्र सनारतो, लाला ज्वालानो नहीं पा र ॥ जीहो आवीनें करमां रह्यु, लाला करतुं त्रट त्रटकार ॥ स०॥ ७ ॥ जी

हो तेह नमाडी मूकतो, लाला पवनवेग परिवार ॥ जीहो तेह नि फल करवा भणी, लाला नाखे विचित्र हथीयार ॥ स० ॥ ८ ॥ जीहो पण ते सवि नि फल गयां, लाला हृदयें हणे तेह शक्ति ॥ जीहो पवन मूर्छा खाइ पडयो, लाला न लहे काहिये व्यक्ति ॥ स०॥ ए ॥ जीहो शक्ति आवी निज हाथमां, लाला पवन मूर्छागत जाण। जीहो नागपाशें ते बांधीयो, लाला स्नेह रागें जेम जाण ॥स० ॥ १०॥ जीहो चडगति बहुधा लडयो, लाला महावेग मूके शस्त्र ॥ जीहो आग्नेय तेहने उलवे, लाला मूकी वारुण अस्त्र ॥ स० ॥ ११ ॥ जीहो त्रिशूल महावेग मूकतो, लाला चडशरें करे छेद ॥ जीहो लीये गोल यंत्रे करी,लाला महावेग मूके अभेद ॥स०॥१२॥ जीहो चडगति हृदयें हण्यो, लाला बांध्यो मूर्छा रे वंत ॥ जीहो नागपाशें पवन परें, लाला कर्मनी गति छे अचिंत्य ॥ स० ॥ १३ ॥ जीहो मणिमाली पण एणीपरें, लाला बांधे भोगरति राय ॥ जीहो श्वासोश्वास न लेइ शके, लाला कर्मथी बलियो न थाय ॥ स० ॥१४॥ जीहो चमवेग सेनानीयें, लाला वज्रवेग पण तेम ॥ जीहो नागपाशें करी बांधीयो, लाला भावि वने ए नेम ॥ स०॥ १५ ॥ जीहो चक्रवेगादिक चारनें, लाला पवनादिकनें रे जाव ॥ जीहो लइ जातां वीरांगदें, लाला श्रीजय विनव्यो ताव ॥ स० ॥ ॥ १६ ॥ जीहो बाणधारा तिहां वरसतो, लाला आवी रुंध्या रे तेह ॥ जीहो वाणें ते सवि पीडिया, लाला चक्रवेगादिक जेह ॥ स० ॥ १७ ॥ जीहो बांध्या मूकी आविया, लाला युद्ध करणनें रे काज ॥ जीहो आकर्षिणी विद्या तिहां, लाला फोरवे श्रीजयराज ॥ स० ॥१८॥ जीहो आकर्षी ते चारनें, लाला लाव्या निजरथमांहि ॥ जीहो नागपाश ते त्रोडीया, लाला गारुड विद्यायें त्यांहि ॥स०॥ १ए ॥ जीहो वीरांगद औषधि जले, लाला सज्ज करे तेणि वार ॥ जीहो निज निज वाहन वेसी करी, लाल युद्ध करण योधार ॥ स०॥ २० ॥ जीहो पवनवेग चमवेगते, लाला श्रीजय साथें लडत ॥ जीहो देखीने बोलावतो, लाला क्रोधें रद पीसत ॥ स० ॥ २१ ॥ जीहो ते पण सिंह परें आवीयो,लाला क्रोधें बोले रे वाणि ॥ जीहो कूदे केम पर बलथकी, लाला यद्यपि कंठगत प्राण ॥ स० ॥ २२ ॥ जीहो सूर्य तापें रज उपण जे, लाला केतो काल रहंत ॥ जीहो बांधीनें मूकु नहीं, लाला मुज कर देख तु तंत ॥ स०॥ २३ ॥ जीहो जो मुज शक्ति जाणे न

ही, लाला तुज सुत पूठजे तेह ॥ जीहो प्राणसंशय मांहे पड्यो,लाला तुज मूकावे जेह ॥ स० ॥ २४ ॥ जीहो जा तुं मृत्यो जीवतो, लाला तुज मुज स्वामि रे एक ॥ जीहो स्वामी द्रोही न थाइयें, लाला धरीयें हृदय विवेक ॥ स० ॥ २५ ॥ जीहो पवन कहे परजयथकी, लाला अथवा जीत्यो रे बाल ॥ जीहो एक वार तेणें माचतो, लाला पूरव वात सजाल ॥ स० ॥ ॥ २६ ॥ जीहो बाल पीड्यो तें पापीयें, लाला हुं तुज मारण काम ॥ जीहो निज बालक पीडा नवि, लाला सिंह सही शके नाम ॥ स० ॥ २७ ॥ जीहो युक्ति प्रयुक्ति संग्राममां, लाला करवी न घटे रे कोय ॥ जीहो था साहामो तुजमां यदि, लाला कांय पराक्रम होय ॥ स० ॥ २८ ॥ जीहो सांभली कोपें कलकल्यो, लाला बाणें ठायो रे तेह ॥ जीहो ते पण वरसे बाणने, लाला जेम आषाढो मेह ॥ स० ॥ २९ ॥ जीहो चक्रवेग थाको तिसे, लाला पवनें माख्युं त्रिशूल ॥ जीहो मूर्छागत अही पाशथी, लाला बांध्यो ते प्रतिकूल ॥ स० ॥ ३० ॥ जीहो निज शिबिरें ते लेइ गयो, लाला श्रीजयानंद कुमार ॥ जीहो चक्रवेगादिकना सवे, लाला रथ भांगे तेणी वार ॥ स० ॥ ३१ ॥ जीहो बाणे श्रोणितछं नखा, लाला अनुक्रमें बांध्या तेह ॥ जीहो दया धरी नवि मारीया, लाला चउगतियें ग्रह्या एह ॥ स० ॥ ॥३२॥ जीहो नृप आणाथी लेइ गयो,लाला निज शिबिरें ततकाल ॥ जीहो किरणमाली हर्ष्यो घणुं, लाला वधु संगम सुरसाल ॥स०॥३३॥ जीहो सुभट तणा जे वल्कां, लाला रुधिरें रातो रवि थाय ॥ जीहो पवित्र थावा मानु कारणे, लाला पश्चिम समुद्रमां जाय ॥ स० ॥ ३४ ॥ जीहो निज निज स्वामी आणाथकी, लाला दोय सैन्य निज ठाम ॥ जीहो जयनें शोकना शब्दनो, लाला कोलाहल थयो ताम ॥ स० ॥ ३५ ॥ जीहो सेनानी चक्री करे, लाला महाबलवंत कुमार ॥ जीहो महाबल नामें चक्रीनें, लाला शोक तणो नहीं पार ॥ स० ॥ ३६ ॥ जीहो सुभट हस्त्यादिक सज्ज करे, लाला जे होय कंठगत प्राण ॥ जीहो श्रीजयानंदना सैन्यमां, लाला जय जयकार कल्याण ॥ स० ॥ ३७ ॥ जीहो आठमा खंडमांहे कही, लाला ओगणीशमी ए ढाल ॥ जीहो पद्मविजय पुर्ण्ये करी, लाला होवे मंगलमाल ॥ स० ॥ ३८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५६६ ॥ इतिश्रीजयानंदराजर्षिचरित्रे श्रीजयानंद खेचरचक्री महा युद्धाधिकारे चतुर्थदिनयुद्ध ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान पुण्य न करी शके, रात समे नर कोय ॥ तेणें मानुं क्रोधें अरुण थइ, अस्यो सूरय सोय ॥ १ ॥ वाहन शस्त्रादिक सहु, सुनटनें आपे नूप ॥ चिंतामणि परनाववी, महिमा जास अनूप ॥ २ ॥ पूरव परें वेहु सैन्यनी, सामग्री करी सर्व ॥ मलिया समर कारणें, चित्तमां धरता गर्व ॥ ३ ॥ शर संग्राम करी घणो, पवनवेगादिक राय ॥ नाशु चक्री बल तदा, ते सहु ना सी जाय ॥४॥ महाबल सेनानी तदा, उठ्यो पराक्रमें इंद ॥ मार मार करतो धस्को, नसव्या सुनटनां वृंद ॥ ५ ॥ जीताये नहीं अन्यथी, जाणी श्रीज यानंद ॥ शत्रुध्वान रवि आवियो, जेहनु तेज अमंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ सुण वांसलडी, वेरण थइ छु लागी व्रजनी नारने ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां धनुष टंकराव ते करतो, वली वरसी बाण मंऊप धरतो, तव परबल त्रासथी सहु मरतो ॥ १ ॥ सुणो सुनटोजी, श्रीजयानंद पराक्रम परपरें देखो ॥ जग जीतांजी, एहना पुण्य प्रबलनो नावे लेखो ॥ ए आं कणी ॥ जिण जिण दिशि नाखे ते बाण, तिण दिशि बहु सुनट वमे प्राण, कोण करिवरनें कोण केकाण ॥ सु० ॥ २ ॥ ते बाण घातें बीहिना वीर, वली महाबल सेनाधुं धीर, तिहां न करे कोइ कोइनी नीर ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ नासतां केइ पडियां वस्त्र, वली केइ सुनटनां केइ शस्त्र, नवि खबर पडे लागे अस्त्र ॥ सु० ॥ ४ ॥ सम कालें कुमर सहस वार, पांचे कणा म हा योधार, बीजा खेचर बहु परिवार ॥सु०॥ ५ ॥ वीर मानी विचित्र आयु ध धार, पांचशें नारी ते कुमार, उपर वरसे शिलीमुख धार ॥सु०॥७ ॥ रण कौतुकी बहु खेचर निरखे, तेम तेम कुमर चित्तमां हरखे, पोतें पण बाण श्रेणी वरखे ॥ सु० ॥ ७ ॥ एकलो पण बहु वीरनें मारे, पण कांय प्रयास न चित्त धारे, जेम मृगपति बहु मृगनें मारे ॥ सु०॥ ए ॥ कांइ आदि मध्य नमी आकाश, नमतो अरि सेना चिहुं पास, कोय खबर पडे नहीं कि हां वास ॥ सु० ॥ ए ॥ कोइनें मारे करतल घात, कोइनें वली पाटु प्रहार जात, कोइनें कूर्परें पृथिवी पात ॥ सु०॥ १० ॥ गदा मोघर खड्ग तथा दंम, मांहोमांहे अथडावे परचंम, करे जाजरा मूकी बहु कांम ॥ सु० ॥ ११ ॥ एम विविध आयुधें कस्या निस्त्राण, केइ शस्त्ररहित कगत प्राण ॥ दयाथी नवि मारे केइ जाण ॥सु०॥१२॥ महाबल प्रमुखनें दिये नागपाश, तेम एक

हो, लाला तुज सुत पूठजे तेह ॥ जीहो प्राणसशय मांहे पड्यो,लाला तुज मूकावे जेह ॥ स० ॥ २४ ॥ जीहो जा तु मूक्यो जीवतो, लाला तुज मुज स्वामि रे एक ॥ जीहो स्वामी द्रोही न पाइयें, लाला धरीयें हृदय विवेक ॥ स० ॥ २५ ॥ जीहो पवन कहे परजयथकी, लाला अथवा जीत्यो रे वाल ॥ जीहो एक वार तेणें माचतो, लाला पूरन वात सनाल ॥ स० ॥ ॥ २६ ॥ जीहो बाल पीड्यो तें पापीयें, लाला हु तुज मारण काम ॥ जीहो निज बालक पीडा नवि, लाला सिंह सही शके नाम ॥ स० ॥ २७ ॥ जीहो वक्ति प्रयुक्ति सग्राममां, लाला करवी न घटे रे कोय ॥ जीहो था साहामो तुजमां यदि, लाला कांय पराक्रम होय ॥ स० ॥ २८ ॥ जीहो सांजली कोपें कलकल्यो, लाला बाणें ठायो रे तेह ॥ जीहो ते पण वरसे बाणने, लाला जेम आषाढो मेह ॥ स० ॥ २९ ॥ जीहो चन्नवेग थाको तिसे, लाला पवनें माय्यु त्रिशूल ॥ जीहो मूर्छागत अही पाशथी, लाला बांध्यो ते प्रतिकूल ॥ स० ॥ ३० ॥ जीहो निज शिविरें ते लेइ गयो, लाला श्रीजयानद कुमार ॥ जीहो चक्रवेगादिकना सवे, लाला रथ नांगे तेणी वार ॥ स० ॥ ३१ ॥ जीहो बाणे श्रोणितर्छ नच्या, लाला अनुक्रमें बांध्या तेह ॥ जीहो दया धरी नवि मारीया, लाला चउगतियें ग्रह्या एह ॥ स० ॥ ॥ ३२ ॥ जीहो नृप आणायी लेइ गयो,लाला निज शिविरें ततकाल ॥ जीहो किरणमाली हर्ष्यो घणु, लाला बधु सगम सुरसाल ॥ स० ॥ ३३ ॥ जीहो सुनट तणा जे उछल्यां, लाला रुधिरें रातो रवि थाय ॥ जीहो पवित्र थावा माटु कारणे, लाला पश्चिम समुद्रमां जाय ॥ स० ॥ ३४ ॥ जीहो निज निज स्वामी आणाथकी, लाला होय सैन्य निज गाम ॥ जीहो जयनें शोकना शब्दनो, लाला कोलाहल थयो ताम ॥ स० ॥ ३५ ॥ जीहो सेनानी चक्री करे, लाला महाबलवत कुमार ॥ जीहो महाबल नामें चक्रीनें, लाला शोक तणो नहीं पार ॥ स० ॥ ३६ ॥ जीहो सुनट हस्त्यादिक सज्ज करे, लाला जे होय क्वगत प्राण ॥ जीहो श्रीजयानदना सैन्यमां, लाला जय जयकार, कल्याण ॥ स० ॥ ३७ ॥ जीहो आठमा खमांहे कही, लाला उंगणीशमी ए ढाल ॥ जीहो पद्मविजय पुर्ण्ये करी, लाला होवे मगलमाल ॥ स० ॥ ३८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५६६ ॥ इतिश्रीजयानदराजर्षिचरित्रे श्रीजयानद खेचरचक्री महा युद्धाधिकारे चतुर्थदिनयुद्ध ॥

लोढा तणो, चक्री गोल विरूप ॥ ए ॥ मूके नरपति उपरें, नरपति पण तेम तेह ॥ मोदकें मोदक नांगीयें, नूप कलानो गेह ॥ १० ॥ सूर्यहास्य चक्री लीये, खड्ग नरेंड् पण ताम ॥ चड्हास्यथी छेदतो, दम्न गदायें सग्राम ॥११॥ खड्ग मुष्टि पग मोघरें, युद्ध करे ते दोय ॥ नवि जींते ते दोयमां, फरी शर युद्ध ते होय ॥ १२ ॥ चक्री धरतीयें पाडीयो, रथ नांग्यो ततकाल ॥ नवनव रथथी जूझतो,ते नांगे नूपाल ॥ १३ ॥ एकवीश वार एम नांजीया, रथ चक्रीनां तेण ॥ पण विरमे नही रणथकी, महावीरव्रती जेण ॥ १४ ॥ चक्रीना रथ नांजीया, निजरथ नजण नीति ॥ लहीनें खेत्रांतरें गयो, रवि मानु चितवि चित्त ॥ १५ ॥ विरम्या बेहु सग्रामथी, निजनिज खंधा वार ॥ आवी सहुनें सऊ कस्या, पूरवपरें निरधार ॥१६॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ राग बगालो ॥

॥ चक्री चितातुर बहु होय, शोकमां आस्थानें रह्यो सोय ॥ साजन सांनलो ॥ पुत्र बंधाणा केम मूकाय, पूछे प्रधाननें खेचर राय ॥सा०॥१॥ कहे परधान सुणो हित 'आण, तो कहीयें तुम हितनी वाण ॥ साहिब सांनलो ॥ हितकारी मनगमतुं जेह, वयण जगतमां डुर्लन तेह ॥ सा० ॥ २ ॥ स्त्रीरूपें ए श्रीजयानद, मत जाणो तुमें स्त्रीनो वृद ॥सा०॥ बधन करतां तुम सुत सोय, तेणें कदाग्रह मूकवो होय ॥ सा० ॥ ३ ॥ मौलिककण मुख नाख्युं जे वयण, तेह खमावी कीजें ए सयण ॥सा०॥ तुम मन आवे जो विश्वास, तो वली आपो कन्या तास ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए छे उत्तमनें दयावत, तुम सुत मूकशे जाणो सत ॥ सा०॥ एटले जाशे आपणे थान, तुम राज्यनो इछक न निदान ॥ सा०॥ ५ ॥ सांनली मनमां धारी मान, विसर्ज्यो नृपें तेह प्रधान ॥ सा० ॥ मुज प्रतिज्ञा जाये केम, चक्री शीखवी दूतनें प्रेम ॥ सा० ॥ ६ ॥ पाठव्यो पवनवेगनें पास, पोहोता पवन उतारे आवास ॥ सा० ॥ चक्रीयें नाख्युं ते नाखे तास, तुमें छुना अम्ह सऊन खास ॥ सा० ॥ ७ ॥ चदन कापे आपे वास, सेलडी पीले रस दीये तास ॥ सा० ॥ तेम तुमें साचा सेवक अम्ह, एणी परें न घटे करवु तुम्ह ॥ सा० ॥ ८ ॥ तुमचे जमाइयें मुज सुत बध, लोक वचनें जाण्यो ए सबध ॥ सा० ॥ तेहनी सधि करो तुमें एम, मुज सुत मूकावो धरी प्रेम ॥ सा० ॥ ए ॥ मुज कन्या वली पांचशें अन्य, आपु नृपनी

शो कुमर एकज राश, ते देखी सहुनें पडी नाश ॥ सु० ॥ १३ ॥ ऊवेस्मा नासता सहु तेह, चूसह्मार्यें पवनवेग जेह, लेइ चाल्यो सहु बांध्या एह ॥ ॥ सु० ॥ १४ ॥ चोरनी परें खधा वार लावे, देखी चक्री निज चित्त नावे,अ हो महारा सुत बध्या नावे ॥ सु० ॥ १५ ॥ वली बीजा सुत नाग आवे, क्रोधें धमधमीयो एम धावे,जइ मूकावु एम कहेरावे ॥ सु० ॥ १६ ॥ ते रंभा कहो तुमें किहां गई,मस्तक छेडुं तत्पर थई,वली मारु हु एहनो पई ॥सु०॥ ॥ १७ ॥ मुज कुमर कहो ते किहां अछे,वीनी सवि वात करु पछें, एम क ही अरि शिबिर मांहे गछे ॥ सु० ॥१८॥ कोइ खलना तेहनें नवि करे, जा णीयें जम रूपांतर धरे, कोइ सुनट न एह आगल वरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ स हु सुनट दिशो दिश नासता, नयणें चक्रा ते पासता, बोले एम करुणा वासता ॥ सु० ॥ २० ॥ रे सुनटो तुम मगल थाउ, शत्रु होये ते पण कां जाउ, रंभा मुज शत्रुने बतलाउ ॥ सु० ॥ २१ ॥ मुजथी अधिको अथ स म नही, तेहनें नवि मारु हु अहीं, पण रंभा ते कहो छे कहीं ॥ सु० ॥२२॥ तव स्त्रीरूपें नरपति आवी,कहे ते रंभा हु सोहावी,तुज मारु तुज प्रिया रंभा वी ॥ सु० ॥ २३ ॥ जो पुत्रनें मलवाने कामें,तो मलशे करतां संग्रामें,जब त स सम तुज दिशा पामे ॥ सु० ॥ २४ ॥ आठमे खमें बेहु मलिया छे, ढाल विशमी वातोमें नलीया छे, कहे पद्म क्रोधें खलजलीया छे ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मरम वचन शस्त्रे करी,वींधाणो खगराय॥ मूके बाण जडोजडें,जेम वा दलीयें छाय ॥१॥ बाणवतो लीये तेहनें, दूर करी दिशि सर्व ॥ उज्ज्वल करी चूर्ण तेणे समे, सुनट थया ते सगर्व ॥२॥ पवनवेगादिक खेचरा, चड्गत्या दिक तेम॥चक्रीसुत साहामा थया, युद्ध करणनें प्रेम ॥३॥ बेहु सेना सगर थतें, पृथिवी नग कंपाय ॥ सागर मर्यादा तजे,दिशि अंधारी थाय ॥४॥ खे चरपति नरपति तणु, युद्ध मच्युं अति जोर ॥ एक एकनें गजे नही,नवि छे दाये कोर ॥ ५ ॥ वज्रपृष्ठ धनु जेहनें, अक्षय बाण तूणीर ॥ कामाह्मार्यें ज श दीउं, केम हारे नृप वीर ॥ ६ ॥ नव नवा शस्त्र वांछित दीये, तेह विद्या जस पास ॥ चक्री पण डुर्जय लह्यो, नवलो दैव विलास ॥ ७ ॥ चक्री धा प खंमित करे, वली चक्री नवलाय ॥ एम शत धनुष ते नवनवां,खम्मो खं म करे राय ॥ ८ ॥ शूल मूके खेचर पति, शूलें जेद नृप ॥ सहस्स भार

॥ ढाल बावीशमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ शूरनट क्रूर रण तूर अतिवाजते, चक्र केइ वक्र मूके कराल ॥ शक्ति अतिव्यक्ति वलका सहस मूकती, शस्त्र परस्परथकी अग्नि जाल ॥शू०॥१॥ कहींक मुजर पडे नड अडे विहु दिशे, गृद्ध पंखी नमे बहु आकाशें ॥ च क्रीना वीर प्रतिवीरने मारता, कोइ उनो रहे नाहीं पासें ॥ शू० ॥ २ ॥ सु नट सहार निराधार शंका धरी, श्रीजयानद नारी स्वरूपें ॥ सिहरथ बेसीनें परदल पेशीनें, तेजथी बहु सुनट कोडी झींपे ॥ शू० ॥ ३ ॥ राय समुदाय नोलावतो चक्री सुत, विसरचा बध पडियारे नाइ ॥ नाश नाशज करो पा शमां केम पडो, कां मरो मुग्ध जाउ पलाइ ॥ शू० ॥ ४ ॥ कोण सहे तनु वहे मुज चपेटो कहो, सुर असुर कोइ एहवो न देखु ॥ काष्ठ सम हय ग णुं चित्र सम नट नणु, मृत्तिका गज सम गज उवेखु ॥ शू० ॥ ५ ॥ शस्त्र तृण वस्त्रपरें खंम खंमित करुं,मारतां कोइ रक्षक न थाय ॥ मुग्ध तुम जग्ध करशो जमराजीयो, मुज चपेटो न इर्ई खमाय ॥ शू० ॥ ६ ॥ सांनली वचन ते देहडी तस बली, क्रोधथी मूकतां योध बाण ॥ तृण समा प्राण निज जाणी ऊंपा करे, श्रीजयानद तेहनें पिछाण ॥ शू० ॥ ७ ॥ नांजे रथ सद्य केइ सुनटनें पाडतो,केइ नट लेइ गगनें उगाले ॥ युद्ध करे शुद्ध रणनूमिमां चक्रधर, आवी श्रीजयतणा बाण खाले ॥ शू० ॥ ८ ॥ रोषथी तोष नहीं दोष स्वामी तणो, सैन्य पण दैन्यता बमी लडता ॥ मुष्टि बाहे असि शक्ति उत्साहथी,युद्ध करतां केइ सुनट पडता ॥ शू०॥ ९ ॥ दर्दरी वडवडे खांमा तिहां खड खडे, ढोल वली ढमढमे तब निसाण ॥ गमगमे वली दवामा तिहां दमदमे, जह्मरी ठम ठमे तिणहि टाण ॥ शू०॥ १० ॥ मृमरु वाजित्र योगिणी तिहां मममे, कोपें करी धम धमें वयरीवग्ग ॥ जूऊवा टम टमे कायर कम कमे, दिशो दिश गम गमे पामी खग्ग ॥ शू०॥ ११ ॥ जेम जेम नड निडे तेम तेम रस चढे, काहला त्रड त्रडे सार सहें ॥ बकतर कड कडे नट पडत लडथडे,त्र्पंबक त्रहत्रहे नूरि नहें ॥ शू०॥ १२ ॥ नूमि पडि या केइ फडफडे वडवडे, गिरि शिखर खडखडे नीर फलके ॥ बहु शिल्रा रडवडे नूमिका थडहडे, कुंत करवाल बहु तेज चलके ॥ शू० ॥ १३ ॥ गज घटा गडहडे प्रेत बहु हडहडे,धीर तिहां गहगहे चित्तमांहि ॥ तेह बहु जस लहे महा ध्वजा लहलहे, वृक्ष वली कडकडे पडत ढाहिं ॥ शू० ॥ १४ ॥

रूअडी कन्य ॥ सा० ॥ आपु अर्ध वैताढ्यनु राज, जामाता समजावो आज ॥ सा० ॥ १० ॥ मोली कंकण मुख दिवस ते सात, मुज आण पाले विख्यात ॥ सा० ॥ तो अम्ह बेहुने वाधे प्रीति, जनम लगें पालु एह नीति ॥ सा० ॥ ११ ॥ पवनवेग पण सांजली जेह, जइ नरपतिनें नांखी तेह ॥ सा० ॥ नृपतियें जे उत्तर दीध, पवन आवी ते दूतनें कीध ॥ सा० ॥१२ ॥ तुज स्वामीनें कहेजे नेम, तुज सुत बधव राखे ते एम ॥ सा० ॥ नहीं मुज कन्या केरु काज, वली वैताढ्य अर्धनु राज ॥ सा० ॥ ॥ १३ ॥ महारा नाम अंकित दिन सात, मुकुट वहे तुज नृप अवदात ॥ सा० ॥ अरधजरत आपु तुज राय, आपणे मेल ते कहेजे जाय ॥ सा० ॥ १४ ॥ दूतें जइ सजलावी वात, जूत नराड थयो खग तात ॥ सा० ॥ क्रोधें चक्री चिंतवे ताम, संधि करे नहीं वयणे साम ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ जितकाशी ए न गणे कोय, जेहनु मन गर्वित एम होय ॥ सा० ॥ चक्री शक्रनें कृष्ण न एह मनुष्य मात्र अहंकारनुं गेह ॥ सा० ॥ ॥ १६ ॥ बीजे शस्त्रे न जीत्यो जाय, विद्या शस्त्रें एह जीताय ॥ सा० ॥ ते शस्त्रें हणी लावु पूत, जे राखे माहारु घर सूत ॥ सा० ॥ १७ ॥ एम करतां जश माहरु थाय, अपजश अलक्ष्मी ते दूर पलाय ॥ सा० ॥ सुजट निद्रा सुख अनुजवे रात, एम करतां थयो हवे परजात ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ आठमे खमें जांखी ढाल, एकवीशमी ए राग बगाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यविशाल, आगल सांजलो वात रसाल ॥ सा० ॥ ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३२ ॥ इति श्रीजयानंद राजर्षिकेवलिचरित्रे श्री जयानंदनृपविद्याधर चक्रियुद्धाधिकारे पंचमदिनयुद्ध ॥

॥ दोहा ॥

॥ रणवाजां वली वाजीयां, बेहुनी सेना मांह ॥ नट जेम नादी शब्दथी, वधीयो जट उत्साह ॥१॥ करी रणसामग्री सुजट, आव्या ते युद्धमान॥ अल्पशस्त्रें बहु अरि हणे, मानु कृतांत अनुमान ॥ २ ॥ चक्रीबल जागु तदा, आव्या चक्री कुमार ॥ समकालें संग्राममां, धावे क्रोधें अपार ॥ ३ ॥ पवन वेगादिक रोकिया, दुष्ट विकल्प शुज ध्यान ॥ नृप जट मानुं क्रूर ग्रह, वक्र थया असमान ॥ ४ ॥ देखी चक्री कुमार ते, फोरवे विक्रम फार ॥ क्रम उमी उत्क्रम लहे, शत कणा सहस वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ शूरजट क्रूर रण तूर अतिवाजते, चक्र केइ वक्र मूके कराल ॥ शक्ति अतिव्यक्ति उलका सहस मूकती, शस्त्र परस्परथकी अग्नि जाल ॥शू०॥१॥ कहींक भुजर पडे नड अडे चिह्नु दिशे, गृद्ध पंखी नमे बहु आकाशें ॥ च क्रीना वीर प्रतिवीरने मारता, कोइ उनो रहे नाहीं पासें ॥ शू० ॥ २ ॥ सु जट सहार निराधार शका धरी, श्रीजयानंद नारी स्वरूपें ॥ सिद्दरथ बेसीनें परदल पेशीनें, तेजथी बहु सुजट कोडी झींपे ॥ शू० ॥ ३ ॥ राय समुदाय जोलावतो चक्री सुत, विसवा वध पहियारे जाइ ॥ नाश नाशज करो पा शमां केम पडो, कां मरो मुग्ध जाउ पलाइ ॥ शू० ॥ ४ ॥ कोण सहे तनु वहे मुज चपेटो कह्यो, सुर असुर कोइ एहवो न देखु ॥ काष्ठ सम हय ग ण चित्र सम जट जणु, मृत्तिका गज सम गज उवेखु ॥ शू० ॥ ५ ॥ शस्त्र ठण वस्त्रपरें खंम खंमित करुं,मारतां कोइ रक्षक न थाय ॥ मुग्ध तुम जग्ध करशे जमराजीयो, मुज चपेटो न इहें खमाय ॥ शू० ॥ ६ ॥ सांजली वचन ते देहडी तस वली, क्रोधथी मूकतां योध बाण ॥ तृण समा प्राण निज जाणी झंपा करे, श्रीजयानंद तेह्नें पिठाण ॥ शू० ॥ ७ ॥ जांजे रथ सज्ज केइ सुजटनें पाडतो,केइ जट लेइ गगनें उगाले ॥ युद्ध करे छुद्ध रणजूमिमां चक्रधर, आवी श्रीजयतणा बाण खाले ॥ शू० ॥ ८ ॥ रोपथी तोष नहीं दोय स्वामी तणे, सैन्य पण दैन्यता ठमी लडता ॥ मुष्टि बाहे असि शक्ति उल्लाहयो,शुद्ध करतां केइ सुजट पडता ॥ शू०॥ ९ ॥ दर्दरी दडदडे खांमा तिहां खड खडे, ढोल वली ढमढमे तव निसाण ॥ गमगमे वली ददामा तिहां दमदमे, जझरी ठम ठमे तिणहि टाण ॥ शू०॥ १० ॥ मरु वाजित्र योगिणी तिहां ममममे, कोपें करी धम धमें वपरीवग्ग ॥ जूझवा टम टमे कायर कम कमे, दिशो दिश गम गमे पामी खग्ग ॥ शू०॥ ११ ॥ जेम जेम जड जिडे तेम तेम रस चढे, काहला त्रड त्रडे सार सहें ॥ बकतर कड कडे जट पडत लडथडे,ध्यंबक त्रहत्रहे जूरि नहें ॥ शू०॥ १२ ॥ जूमि पडि या केइ फडफडे वडवडे, गिरि शिखर खडखडे नीर झलके ॥ बहु शिला रडवडे जूमिका धडहडे, कुंत करवाल बहु तेज चलके ॥ शू० ॥ १३ ॥ गज घटा गडहडे प्रेत बहु हडहडे,धीर तिहां गहगहे चित्तमांहि ॥ तेह बहु जस लहे महा ध्वजा लहलहे, वृक्ष वली कडकडे पडत दाहिं ॥ शू० ॥ १४ ॥

रूअडी कन्य ॥ सा० ॥ आपु अर्ध वैताढ्यनु राज, जामाता समजावो आज ॥ सा० ॥ १० ॥ मोली कंकण मुख दिवस ते सात, मुज आणा पाले विख्यात ॥ सा० ॥ तो अम्ह बेहुने वाधे प्रीति, जनम लगें पालु एह नीति ॥ सा० ॥ ११ ॥ पवनवेग पण सांजली जेह, जइ नरपतिनें नांखी तेह ॥ सा० ॥ नृपतियें जे उत्तर दीध, पवन आवी ते दूतनें कीध ॥ सा० ॥१२ ॥ तुज स्वामीनें कहेजे नेम, तुज सुत वचन नाखे छे एम ॥ सा० ॥ नहीं मुज कन्या केरु काज, वली वैताढ्य अर्धनु राज ॥ सा० ॥ ॥ १३ ॥ महारा नाम अंकित दिन सात, मुकुट वहे तुज नृप अवदात ॥ सा० ॥ अरधजरत आपु तुज राय, आपणे मेल छे कहेजे जाय ॥ सा० ॥ १४ ॥ दूतें जइ सजलावी वात, जूत नराड थयो खग तात ॥ सा० ॥ क्रोधें चक्री चिंतवे ताम, सधि करे नही वयणे साम ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ जितकाशी ए न गणे कोय, जेहनु मन गर्वित एम होय ॥ सा० ॥ चक्री शक्रनें रूष्ण न एह मनुष्य मात्र अहंकारनु गेह ॥ सा० ॥ ॥ १६ ॥ बीजे शस्त्रे न जीत्यो जाय, विद्या शस्त्रें एह जीताय ॥ सा० ॥ ते शस्त्रें हणी लावु पूत, जे राखे माहारु घर सूत ॥ सा० ॥ १७ ॥ एम करतां जश माहरुं थाय, अपजश अलछी ते दूर पलाय ॥ सा० ॥ सुभट निद्रा सुख अनुजवे रात, एम करतां थयो हवे परजात ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ आठमे सर्गे जांखी ढाल, एकवीशमी ए राग बंगाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यविशाल, आगल सांजलो वात रसाल ॥ सा० ॥ ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३१ ॥ इति श्रीजयानंद राजर्षिकेवलिचरित्रे श्री जयानंदनृपविद्याधर चक्रियुद्धाधिकारे पंचमविनयुद्ध ।

॥ दोहा ॥

॥ रणवाजां वली वाजीयां, बेहुनी सेना मांह ॥ नट जेम नादी शब्दथी, वधीयो जट उत्साह ॥१॥ करी रणसामग्री सुजट, आव्या ते युद्धमान॥ अ ल्पशस्त्रें बहु अरि हणे, मानु कृतांत अनुमान ॥ २ ॥ चक्रीदल जागु तदा, आव्या चक्री कुमार ॥ समकालें संग्राममां, धावे क्रोधें अपार ॥ ३ ॥ पवन वेगादिक रोकिया, दुष्ट विकल्प शुज ध्यान ॥ नृप जट मानु क्रूर ग्रह, वक्र थया असमान ॥ ४ ॥ देखी चक्री कुमार ते, फोरवे विक्रम फार ॥ क्रम उत्क्रमी उत्क्रम लडे, शत कणा सहस वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ शूरनट क्रूर रण तूर अतिवाजते, चक्र केइ वक्र मूके कराल ॥ शक्ति अतिव्यक्ति वलका सहस मूकती, शस्त्र परस्परथकी अग्नि जाल ॥शू०॥१॥ कहींक मुजर पडे नड अडे चिह्नु दिशे, गृध्र पंखी नमे बहु आकाशें ॥ च क्रीना वीर प्रतिवीरने मारता, कोइ बचो रहे नाहीं पासें ॥ शू० ॥ २ ॥ सु नट सहार निराधार शका धरी, श्रीजयानद नारी स्वरूपें ॥ सिहरथ बेसीनें परदल पेशीनें, तेजथी बहु सुनट कोडी कींपे ॥ शू० ॥ ३ ॥ राय समुदाय नोलावतो चक्री सुत, विसया वध पडियारे नाइ ॥ नाश नाशज करो पा शमां केम पडो, कां मरो मुग्ध जाउ पलाइ ॥ शू० ॥ ४ ॥ कोण सहे तनु वहे मुज चपेटो कहो, सुर असुर कोइ एहवो न देखु ॥ काष्ठ सम हय ग ण चित्र सम नट नणु, मृत्तिका गज सम गज उवेखु ॥ शू० ॥ ५ ॥ शस्त्र तृण वस्त्रपरें खंम खमित करु,मारतां कोइ रक्षक न थाय ॥ मुग्ध तुम जग्ध करशे जमराजीयो, मुज चपेटो न इहें खमाय ॥ शू० ॥ ६ ॥ सांजली वचन ते देहडी तस वली, क्रोधथी मूकतां योध बाण ॥ तृण समा प्राण निज जाणी कंपा करे, श्रीजयानद तेहनें पिढाण ॥ शू० ॥ ७ ॥ नांजे रथ सब केइ सुनटनें पाडतो,केइ नट लेइ गगनें उछाले ॥ युद्ध करे शुद्ध रणनूमिमां चक्रधर, आवी श्रीजयतणा बाण खाले ॥ शू० ॥ ८ ॥ रोषथी तोष नहीं दोय स्वामी तणे, सैन्य पण दैन्यता ठमी लडता ॥ मुष्टि वादे असि शक्ति सत्ताहयो,युद्ध करतां केइ सुनट पडता ॥ शू०॥ ९ ॥ दर्दरी दडदडे खांमा तिहां खड खडे, ढोल वली ढमढमे तव निसाण ॥ गमगमे वली दवामा तिहां दमदमे, जल्लरी झम झमे तिणहि टाण ॥ शू०॥ १० ॥ ममरु वाजित्र योगिणी तिहां ममममे, कोपें करी धम धमें वयरीवग्ग ॥ जूजवा टम टमे कायर कम कमे, दिशो दिश गम गमे पामी खग्ग ॥ शू०॥ ११ ॥ जेम जेम नड जिडे तेम तेम रस चढे, काहला त्रड त्रडे सार सदें ॥ बकतर कड कडे नट पडत लडथडे,ध्वंवक त्रहत्रहे नूरि नदें ॥ शू०॥ १२ ॥ नूमि पडि या केइ फडफडे वडबडे, गिरि शिखर खडखडे नीर छलके ॥ बहु शिला रडवडे नूमिका धडहडे, कुत करवाल बहु तेज चलके ॥ शू० ॥ १३ ॥ गज घटा गडहडे प्रेत बहु हडहडे,धीर तिहां गहगहे चित्तमांहि ॥ तेह बहु जस लहे महा ध्वजा लहलहे, वृक्ष वली कडकडे पडत ढाहिं ॥ शू० ॥ १४ ॥

वीर कर चलचलें रुधिर वहे खलखले,लोक बहु कलकले खम्युं न जाय ॥ नगरजन खलनले नाठा बहु कलहले, जेह जूजार चूके न घाय ॥शू०॥ ॥१५॥ हाथी शृंखलखलके हलके चलें, कायरा हाड अगें टलके ॥ नासता पूंठथी बाण मूके नही,एक भट तेजथी अति ऊलके ॥ शू०॥ १६ ॥ यान विण जे थया यान तेहने दीये,शस्त्र हीणाने आपेते शस्त्र ॥ क्षुधितनें खाद्य जल तृषितने आपता, वस्त्र हीणानें आपे ते वस्त्र ॥ शू०॥ १७ ॥ आगमे खम अखम बावीशमी,ढाल कही पद्मविजयें रसाल ॥ चक्रपति नरपति दोय हवे जूऊता,सांभलो तेह कहेशु विशाल ॥शू०॥१८॥ सर्वगाथा ॥६५५॥

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करंता परस्परें,भांजे रथ गदाघाय ॥ बाहुयुद्ध वली मुष्टि युद्ध, करता रोष भराय ॥ १ ॥ चक्री मूके महातरु, नरपति उपर जाम ॥ दां त पीसी रोषें करी, नृप पण तेम करे ताम ॥ २ ॥ पडी महा शिलायें चू रीया, पडी करे रजनी वृष्टि ॥ लोक माने उतपात ए,किम थाशे कहो तु ष्टि ॥ ३ ॥ चक्री गिरिवर मूकतो,नृप उपर तरु साथ ॥ कामाक्षा दत्त मो घरे, नृप चूरे लेइ हाथ ॥४॥ ते चूरणथी करहा परें, पडे पथरना खम ॥ लोक अकालें मानता, ए श्यो दैवनो दम ॥५॥ तेहमां तरुअरथी पडयां, कुसुम ते देवें कीध ॥ पुष्पवृष्टि मान्नु हर्षथी, नृप उपर परसिद्ध ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी कडखानी देशीमां ॥

॥ धीर महावीर सुख नीर आणी घणो, क्रुद्ध महा रौद्र ए शत्रु दीसे ॥ एह अजेय अमेय विक्रम धणी, केणी परें जीतु जेम हीयडु हीसे ॥ धी र० ॥ १ ॥ करिय विचारयें महारथें खेसीनें, शक्ति मूके महाज्वाल वम ती ॥ तेह निज शक्ति प्रतिशक्तिथी भेदतो, एणी परें भूपमति चित्त रम ती ॥ धी० ॥ २ ॥ चक्रधर चक्र अतिवक्र मूके तदा, नेत्र मीचे सुभट ते ह देखी ॥ मूके प्रतिचक्र भूशक्र तस सन मुखें, कौतुकी नासता तेह पे खी ॥ धी० ॥ ३ ॥ दोय चक्र खड खडे अग्नि कणीया जडे,हाह भींकें सु र असुर नासें ॥ उपडे नें पडे गृद्ध पंखी परें, केहनें चित्त विस्मय न ना से ॥ धी० ॥ ४ ॥ दलित मद शत्रुनो गलित अगनि सवे, दोय प्रतिहत पराक्रम थइनें ॥ विरमीआ युद्धथी न रमीया शकितथी, रह्यां निज स्वा मी पासें जइनें ॥ धी० ॥ ५ ॥ शस्त्र तामस तणु जामस नाव लहे, नृप

बिलमां अंधकार थावे ॥ राति अमावासनी जातिथी घन सहित, हय गय सुभट नयणें न आवे ॥ धी० ॥ ६ ॥ स्वपर अविशेष मांहो मांहे हणे, हय गय तेम पडे रथ ते भांजे ॥ नृप करें रवि करे सर्व उद्योत मय, जेह देखी सहस भानु लाजे ॥ धी० ॥ ७ ॥ बाण विज्ञाणथी नृप वरसे तदा, चक्री तव खोभीयो मन्न मांहि ॥ सांधवा मूकवा बाण समरथ नही, भेद्यो शिरस्त्राणनें वली सन्नाह ॥ धी० ॥ ८ ॥ शत्रु सैन्ये सुभट शिर तिहां रडवडे, क्षुधित जम केरडा कवल मानुं ॥ सुभटशरें मारीया मूर्छयें घारीया, गृद्ध आवे तिहां जाणी खाणु ॥ धी० ॥ ९ ॥ तास छद वायथी आय चेतन वली, नरपतिपत्ति हय गय न कोइ ॥ बाणथी वींधीयो चिधियो एहवो, सैन्यचक्री तणें नविअ होइ ॥ धी० ॥ १० ॥ प्राण सहु जीवने जाणी वाहालां घणु, नासता चक्रीना सैन्य वाला ॥ वयर करी केंरकरें चक्रीबलीया सम्रु, निरुता स्वामीनें लही जजाला ॥धी०॥ ११ ॥ खेचरपति नरपतियें बहु वारते, पाडीयो तोहि उठीने जूझयो ॥ शूर अतिक्रूर तेणें एहज एम अडे, एम सहु लोक चित्तमांहे बूझयो ॥ धी० ॥ १२ ॥ शस्त्र अधकार तिरस्कार करी टालतो, माहरी तेह उद्योत जीपे ॥ लाज धरी अस्तगिरिराजमां रवि थयो, पश्चिम समुद्रनें ते समीपें ॥ धी० ॥ १३ ॥ अहवा परताप मुज तापथी अधिक ए, मित्र मुज चक्रीने नृपति मारे ॥ एम गणी अस्त भणी सूर्य पश्चिम गयो, सैन्यमां दोय निज युद्ध वारे ॥ ॥ धी० ॥ १४ ॥ पूर्वपरें सक्क कस्था जेह घायें भस्था, राति सुख निद्रमां सहु गमावे ॥ ढाल त्रेवीशमी आठमा खंमर्मा, पद्म कहे हवे रवि पूर्व आवे पुण्य करवा परभात थावे, मगलतूर सहुये बजावे ॥ धी० ॥ १५ ॥ सर्व गथा ॥ ६७६ ॥ इतिश्रीश्रीजयानदराजर्षि केवलिचरित्रे श्रीजयानदनृप चक्रायुद्ध खेटचक्री द्वययुद्धवर्णनो नाम षष्ठदिनांतर्गतो युद्धाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूता जाग्या रवि किरणे,गुरु उपदेशें जेम ॥ मोहनिद्रा भवि जीवना, विलयें जाये तेम ॥ १ ॥ जयश्री योग्य छे नृपति, युद्ध विना नवि तेह ॥ तेणे रवि पूर्वाचल चढ्यो,मानु जोवा एह ॥२॥ बेहु सेनामां वाजीया, रण वाजित्र अनेक ॥ मथतां जेम सायर तणी, ध्वनि उठे अतिरेक ॥ ३ ॥ जेम शुद्ध धर्म उद्यम करे,पामी गुरु उपदेश ॥ तेम ते वाजित्र शब्दथी,रण उ

वम सुविशेष ॥ ४ ॥ आहमां वहु वेला जन्यो, विप्र अतृप्तो होय ॥ युद्ध कथा वहु सुनटें तेम, रण अण तृप्ता दोय ॥ ५ ॥ मार मार करता पक्ष, पसख्यो चक्री मार ॥ जखनां वालक जेम गले, पामी वग कासार ॥ ६ ॥ पवन पांचशें स्त्री सुनट, युद्ध करी वहु नांति ॥ विश अग्निम अहि पासथी, बांध्या ते एकांत ॥ ७ ॥ चइ गत्यादिक खेचरा, नोग रत्यादिक तेम ॥ न गवे सुनट लखोगमे, चक्र वर्त्तीना नेम ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चमर्दन दोर्दम दोनु लडे, खेचरा राय अवाय करतो ॥ आवीयो धा वीयो जेम मदें आंधलो, मयगल तरुगण कोडि दरतो ॥ च० ॥ १ ॥ बहु कुमर रोकतो वचनें अति टोकतो, नूप सहारतो सैन्य आवे ॥ चक्री कहे केम रहे दजीअ मुज आगलें, रे रे रंका न तु दूर जावे ॥च०॥२॥ स्त्रीपणे जाणी मन आणी ववेखी में, तादृश चित्तमां ते न आवे॥शक्र पण तृण प रे अपर कोण मुज शिरे, कोइ मुज आगलें बलें न फावे ॥च०॥३॥-यत ॥ वैद्या सति पदेपदे गदगणान् हंतु क्षमानेषजै, दानैर्डुर्गतदौस्थ्यसस्थितिह तो, ऽसख्यापुनर्लक्ष्मणा ॥ नत्वेषोस्तिजगत्सुयोप्यपनयेदोर्दमकरुपर्प, शस्त्रैर्मेस्थितवांश्रयोर्युधि यशोदत्तेऽथवा डुर्यश ॥ १ ॥ मृगैर्मृगारिर्भुजगैर्गुरु त्मान्, सुरैः सुरेंइस्तपनस्तमोन्नि ॥ अग्नि पतंगैर्मुरजिद्दैत्यै, र्येद्वत्तथा हं सुनटैर्न साध्य ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ मादरु बलनिर्बल थाय तुज वयपकी, जातुं मूकी तुज नारि जाणी ॥ नहितो विद्या नलें पतंग परे कां बले,नूपति कहे सुणो ताम वाणी ॥ ४ ॥ नूमि तुं लुठीयो ने वली ठगीयो, जीवतो तुज सुता वयणें मूक्यो ॥ नारिवध करण रण करण तु आवीयो, बल नि बल वातमां केम शक्यो ॥च०॥५॥ तुज सुनट तादरुं विकट बल देखाडुं, पूर्व षट दिवस पर्यंत मांहि ॥ वली अवशेष विशेष बल होयतो, फोरवो माचवो जेपो उछांहि ॥च०॥६॥ यत ॥ शूरा सति लदलशो छुजबज प्रो त्सर्पिदर्पो ट्धुरा ॥ शस्त्राणि प्रतिवीरजीवतरमाकुटाकवृत्तीन्यपि ॥ कोदमा यतसायके मयिपुनर्नि शूर जन्मा महि, शस्त्रकठणमेकमेव चहितं चक्रे धूर्त तद्द्विषा ॥१॥ पूर्वढाल॥ सांजली कलकली देहडी चक्रीनी,दोयपरस्परे बाण नाखे ॥ मेघविद्यायें अमोघ वरसी करे, चक्रिनृपसैन्यमा सुपरे दाखे ॥च० ॥ ७ ॥ पवनविद्यायें ते खवननूपति करे, चक्रीवली पवनविद्या प्रयुंजे ॥

शृंग गिरिशृंग करे नृपतितव अद्रि धरे, लक्ष्मगमे पान करे पवन पूजे ॥चं०॥ ८॥ चक्रधर वक्रतनु सर्प्प कोमघो गमे, नरपति खगपति मूके ताम ॥ वींछी चक्री करे नृपति मयूर धरे, वयरीनो नाश करे ते प्रकाम ॥ च० ॥ ए ॥ चक्रधर शस्त्र निद्रा अमद्दा धरे,नृपनें अगद वलें ते न लागे ॥ चक्री सैन्यें दृष्या निं दमां नवि गय्या, नृपतिबोध विद्यायें जागे ॥च०॥ १ ०॥ प्रबलबल सबल चक्री चमुशुं लडे, आग्नेय शस्त्र चक्रधर प्रकाशे ॥ त्रटत त्रटकार करे जलदथी स द्दरे,नृपविद्यातणो छे आवास॥च०॥ ११॥ बांधीयो नागपाशें नृपति सांधीयो, ते कमलनालपरे तुरत त्रोडे ॥ गरुड चक्री ठवे शत्रुनें जे खवे, नृप गोविंद अस्त्र तास जोडे ॥ च० ॥ १२ ॥ गरुड नाशि गयो चक्री नि फल भयो, मोहन शस्त्र ठवे खेचरेश ॥ मांहोमांहें वढे खबर को नवि पडे, तेह देखी द्दवे नरवरेश ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्वाला मालिनी वर विद्यायें टालीयुं, एम वि विध चक्रीविद्यानां शस्त्र ॥ नृप साहस धरी उलट विद्या फरी, मूकीनें वार तो तेह अस्त्र ॥ च० ॥ १४ ॥ उपलमां सफल नवि बीज वाव्यु होये, तेम नृपति उपरें नि फल हुआं ॥ भुजपराक्रम घणु ज्वालामालिनी तणु, योगि णीबल भिन्न भिन्न जूआं ॥ च० ॥ १५ ॥ औषधिबल कामाक्षा तणु सबल बल, ते कहो केणीपरें हार पामे ॥ खेद लही चक्रि वही चितवे एणीपरें, जीतीयें केम ए शत्रु गामें ॥ च० ॥ १६ ॥ एह अजय्य अध्यक्ष्यपणे देखी यें, नारिरूपें पराक्रमथी इह ॥ एहनें काज शुं राज्यमें अरजियु, कीडी सचि त तिसरखविद ॥ च० ॥ १७ ॥ अहव सकल्प विकल्प श्यो एहवो, सुभर माहरे छे असाध्य ॥ युद्ध करी श्रम धरीनें पछे मारशुं, एहथी कार्य थाशे सुसाध्य ॥ च०॥ १८ ॥ चक्रधर शक्र विक्रम रथें बेसीनें, नृप उपर बहु बाण वरसे ॥ नृप अनूप शर मूकी उपद्रव करे, भणित करे चक्रीनु अग हरषें ॥ च० ॥ १ए ॥ सुभर कर करें रुधिर अगें झरें, करी पराक्रम दीये नृप मा थे ॥ नयणमींची वयण सवे मूर्छा लह्यो,सैन्यमांहि हाहाकार साथे ॥च०॥ ॥ २० ॥ मारीयो धारीयो चित्तमां चक्रीयें, मोद लहि उठ्यो फरी घात क रवा ॥ ताम नृपाल तेणें ताल चेतन लही, उठीयो चक्री जमगेह धरवा ॥ च० ॥ २१ ॥ दीध कामाक्षायें लीध वज्र भेद कर, मूकीयो चक्रिशिर तेणे घाय ॥ लहीय मूर्छा अतुच्छा पडयो धरतीयें, छिन्न उद वज्जेजेम शिखरी था य ॥ च० ॥ २२ ॥ नागपाशें जडयो सुहडमधे घडयो, लेइ ते नवि शके श्वा

सोल्लास ॥ सुभट निषेधतो बाणथी वींधतो,ग्रहण नवि करण दीयें नृप ता
स ॥ च० ॥ २३ ॥ शरण करी मरणनु रणथी विरमे नहीं, निजतणुं सैन्य
ते साथ लडतु ॥ मोहनी मूकतो अवसर न चूकतो,परस्परें अपडाइ भूमि
पडतो ॥च०॥२४॥ तेहनें मारता नृपति वारता, अग्नि बूजे किश्युं धूम कूटे ॥
कंठगत प्राण तस त्राण नृपति करे, हृदयथी करुणता नृपति तूटे ॥चं०॥
॥२५॥ नृपति आकर्षिणी झटीति चक्रीप्रतें, खेवीनें पवननें सोंपी दीधो ॥
नृपति सैन्ये घणो तृपति आनद पणो, सुर असुरें जय जय शब्द कीधो
॥च०॥२६॥ आठमा खंममां रंग अखमममां, ढाल चोवीशमी पूर्ण कीधी ॥
पद्मविजयें नली नविजनें सांनली, श्रीजयानदनी हुइ सिद्धि ॥ एक छत्री
थइ राजऋद्धि ॥ जगतमां जश कीरति प्रसीद्धि ॥ पुण्यवता लहे नवे निधि
॥ च०॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७११ ॥ इतिपंमित प्रवर श्रीपद्मविजय गणि वि
रचिते श्रीश्रीजयानदराजर्षिकेवलीरासके खेचरेंद्र श्रीश्रीजयानदनृपति यु
द्धाधिकारे सप्तमदिनयुद्ध युद्धाधिकार समाप्त॥

॥ दोहा ॥

॥ फूलवृष्टि नृप उपरें, देवें कीधी ताम ॥ देव डुंडुनि आकाशमां, वाजे
अति अनिराम ॥ १ ॥ वाजां चिहुदिशें वाजीयां,हूर्व ते जयजय कार ॥ मो
द न माये अगमां, श्रीजयानद कुमार ॥ २ ॥ चक्रायुद्ध नररायनु, निनायक
थयु सैन्य ॥ नयनें खेद विह्वल घणु,अतिशय करतु दैन्य ॥३॥ रथीने अ
तिरथी सैन्यमा, कोडघो गमेछे जोय ॥ नाथ विना सहु रांकडा,खेचरनें नय
लहे तोय ॥ ४ ॥ राहु ग्रहे अप आथमें, जब ग्रहपति विन राज ॥ पण
खद्योत न ग्रह करे, दिवस सबधि प्राज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कोडी सोनैये कासिदी मारा वाजा जीरे ॥
करनारो नहीं कोय, जइनें कहेजो माहारा वाजाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानद आणाथकी, साजनीया जीरे, पवनवेग खगराय ॥ सुख
मां रहेजो साजनीआ जीरे ॥ चक्रीचमू जे नाशती ॥ सा० ॥ तस आशास
ना दाय ॥ सु०॥१ ॥ नासो मां नय मत करो ॥सा०॥ तुम अम स्वामी, छे
एक ॥ सु० ॥ श्रीजयानद नरराजीयो ॥सा०॥ ते अंगीकरो छेक ॥सु०॥२॥
निज निजराज्यनें नोगवो सा० ॥ तुम स्वामी पण एह सु०॥ नतवत्सल छे
मूकशे ॥सा०॥ करुणा केरो ए गेह ॥सु०॥३॥ पवननी वात सुणी करी सा०॥

श्रीजयनें करे नाथ सु० ॥ सैन्य खेचर चक्री तणुं सा० ॥ निर्भय रहे सहु साथ सु० ॥४॥ निगडवज्रपंजर दीयो सा० ॥ ज्वालामालिनी जेह सु० ॥ जडीयो निगडें चक्रीनें ॥सा०॥ पंजरमां रह्यो तेह सु०॥ ५ ॥ औषधि नीरे सज्ज करे सा० ॥ ढोडे वली नागपाश सु० ॥ गारुडविद्यायें करी ॥ सा० करुणानिधिनो आवास सु० ॥६॥ बंधन बीजा नट तणां सा० ॥ ढोडे सवेनां राय सु० ॥ औषधी नीरें सज्ज कस्या सा० ॥ स्वपर विनाश न कांय सु० ॥ ७ ॥ सर्व सैन्य प्रणम्यु हवे सा० ॥ मागध ब्रजगुण ग्राम सु०॥ बिरुदावली बोली जते सा० ॥ जयजयरव ठाम ठाम सु० ॥ ८ ॥ आसन्न सेवक पांचशें सा० ॥ स्त्रीरूपें परिवार सु० ॥ वाजित्रनाद सुणीजते सा० ॥खेटचक्रीरथें धार सु० ॥ ए ॥ गज बेशीने आवीयो सा० ॥ निज उतारे आवास सु० ॥ गायन गाये गीतनें सा०॥ विविधप्रकार विलास सु० ॥ १० ॥ खेचरभूप विसर्जिया सा० ॥ उतारे गया सर्व सु० ॥ राय करावे चक्रीनें सा० ॥ भोजन ठांमीनें गर्व सु० ॥ ११ ॥ स्नान पूजा जिननी करी सा०॥ सैन्यशु भोजन कीध सु० ॥ विविध मंगल उच्छवथकी सा० ॥ दान वछित बहु दीध सु० ॥ १२ ॥ दिवस राति वोली गया सा० वाज्यां मंगल तूर सु० ॥ सिंहासन बेठा तदा सा० ॥ श्रीजय पवनादिक भूर सु० ॥ १३॥ चक्रसुंदरी एणे अवसरे, राजनीया जीरे ॥ वीनवे करी मनोहार सु० ॥ मुको महारा तातने रा० ॥ हृदयें करुणा अवधार सु० ॥ १४ ॥ सुकीशुं नृपति कहे रा० ॥ मोकली खेचर ताम सु० ॥ वज्रपंजर मगावीयुं रा० ॥ आव्या खेचर स्वामि सु० ॥ १५ ॥ श्रीजय कहे चक्री सुणो रा० ॥ मौक्तिककण तेह सु० ॥ इष्ट नामांकित लावीयें रा० ॥ सहु नृप साखथी एह सु० ॥ १६ ॥ पवन जामातानें सुता रा०॥ पहेरे तुम धरी आण सु०॥ जो नवि घडीया होय तो रा० ॥ घडो हवे समरथ जाण सु० ॥ १७ ॥ पंजरमां पण ठो विछु रा० ॥ उतावल नथी कांय सु० ॥ बंधथी मारवो सोहिलो रा० ॥ पण नवि मारु ते ठाय सु० ॥ १८ ॥ ते तुजपुत्री वचनथी रा० ॥ समरथ हुं पण मुज सु० ॥ दया भाव चित्तमां वस्यो सा०॥तेणे नवि मारुं हुं तुज सु० ॥ १९ ॥ आठमा खंममांहे कही रा० ॥ पंचीशमी वर ढाल सु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी रा० ॥ होवे मंगल माल ॥सु०॥२०॥७३६॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप वचन चक्री सुणी, हैयडे दुःख न माय ॥ वज्रपात रणमां प की, मरम वचन दुःख दाय ॥ १ ॥ रोवे चक्री दुःख थकी, पवनवेग ते देखी ॥ चित्तमां करुणा आणीनें, बोले एम सुविशेष ॥ २ ॥ मत रोवो बहु कालना, तुमे अमचा गो स्वामि ॥ दयावत नृप बीनवी, मूकावुं तु आम ॥ ३ ॥ मुकावण प्रयोजन नही,चक्री कहे सुणो वात ॥ जगनीत्यो में जोगव्यो, सुचिर काल विख्यात ॥४॥ सुरनर साखे बांधियो, नारि मात्रें मुज ॥ एह पराजव नवि खमी, शकीयें कहुं तुं तुज ॥५ ॥ वीरनें मरण रुडु कयुं, जसके स्वर्गनो गार ॥ नविबंधन विटबणा, वली दुर्जन धिक्कार ॥ ६ ॥ साचो सेवक होय तो, खडग आपी मुज हाथ ॥ वध मोरु करु करथकी, निज मस्तकनें साथ ॥ ७ ॥ पवनवेग निश्चल लही, चक्री मरणनी वात ॥ कहे तुमे जाण पुरुष थइ, केम कहो ए अवदात ॥ ॥ ८ ॥ तुमनें नारे न बांधीया, श्रीजयानद कुमार ॥ सर्व विद्या निधि एह ठे, देवीदत्तवर सार॥ ए॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ तुम्हेतो नलें बिराजोजी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमेंतो नलें बिराजोजी, विद्याधरके चक्री तुमें तो नलें बिराजोजी॥ मान मरदियु योगिणी केरु, सर्वविद्या आवास ॥ गुण समुदाय ते नारिमां केम, होवे तेह विमास ॥ तु० ॥ १ ॥ महाज्वालानें कामाक्षा वली, वर ते एहनें नाम ॥ वज्रमुखादिक देव ते जीत्या, विक्रम तेजनु धाम ॥तु०॥ ॥ २॥ अगना रूप करीनें जीत्यो, ते तुम जणववा हेत ॥ खेद करो मत नारियें बांध्यो, मनमां धरी सकेत ॥ तु० ॥ ३ ॥ एह वचन अमृत छट कावे, कांइक पाम्यो शांति ॥ पवनवेग कहे कर्म तणो इहां, वांक अठे ए कांत ॥ तु० ॥ ४ ॥ गर्व अगनियें बाली नाख्यो, फूल्यो रुख विवेक ॥ जगत विख्यात ए तुम मत्रीश्वरें, समजाव्या अतिरेक ॥ तु० ॥ ५ ॥ स्त्री रूपें तुम लशकर जीत्युं, तोही न समज्या कांय ॥ पूर्वें स्वामि धरी में कहेवरा व्यु, सेवक रीति कराय ॥ तु० ॥ ६ ॥ पंमित सुपरधान मोकल्या, दीधो ब हु उपदेश ॥ ते अमृतथी गर्वहुताशन, नवि समियो लवलेश ॥ तु० ॥ ॥ ७ ॥ सामान्य जन पण दास नामांकित, सही न शके तो एह ॥ वीर पुरुष निज पत्नी पराजव, खमी शके कहो केह ॥ तु० ॥ ८ ॥ नारिबांध्यो

अपयश देवा, कीधुं नारि स्वरूप ॥ तेणे तुमें क्रोध अमर्ष गर्वादिक, दोष गांठ्यो प्रति रूप ॥तु०॥ ए ॥ मस्तक एहनी आण धरो तुमें, जेम मूके तुम राय ॥ अनन्यगतिक ए वात सुणी तस, आण धरे शिर गय ॥तु०॥ १० ॥ पवनवेग जइ राय वीनवे, कीजें कृपा दयाल ॥ शौर्यादिक गुण जेम देखा डया, रूप दाखो नृपाल ॥ तु० ॥ ११ ॥ टलवले सहु तुम रूप जोवानें, मुजवो केटलो काल ॥ बहु विद्याधर पण एम वीनवे,अजलि करी निज ना ल ॥ तु० ॥ १२ ॥ रूप स्वनावनु परगट कीधु, पांचशों सुनटनु तेम ॥ जो वा मलो तव सुनटनी कोडयो, दर्प आश्चर्य धरी प्रेम ॥ तु० ॥ १३ ॥ तूर प्रमोदनां वाजा सघले, मगल पाठ बोलाय ॥ चक्रसुदरी तत्त्वनो निर्णय, करती देखी राय ॥ तु० ॥ १४ ॥ पवनवेगादिक खेटक रायनी, प्रारथनायें नृप ॥ विद्यायें पंजर नेदीनें, निगड छेदे करी चूप ॥ तु० ॥ १५ ॥ मह्योटा पुरुषनें अति विडबन, अपराधि पण तोय ॥ करवु न घटे एम विचारी, मू क्यो चक्री सोय ॥ तु० ॥ १६ ॥ चक्रि नृपरूप देखीनें, हियडे दर्प न मा य ॥ वीसरी गयो ते सर्व परानव, अचरिज अतिशय थाय ॥ तु० ॥१७॥ चक्रीनें सिंहासन बेसाडे, पवनवेगादिक राय ॥ खेटेश्वर सघला आवीनें, प्रणमे चक्री पाय ॥ तु० ॥ १८ ॥ निज स्वामी मूकाणा जाणी, सैन्यनें दर्प अपार ॥ चक्रवेगादिक सुत चक्रीना, जे बांध्या तेणी वार ॥तु०॥१९॥ बीजा पण सहसो गमे बांध्या, मूक्या तेही तेह ॥ नागपाश ते छोडी ना ख्या, सत्क कर्या वली जेह ॥ तु० ॥ २० ॥ नृप चक्रीनें प्रणमे सघला, चक्री आणद थाय ॥ सकल लोक मन अचरिज हूउं, मगल तूर वजा य ॥ तु० ॥ २१ ॥ आठमे खंमें छत्रीशमी ए, पद्मविजयें कही ढाल ॥ श्री जयानदना रासमां रूडी, सुणतां मगलमाल ॥तु०॥२२॥सर्वगाथा॥७६७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तेही चक्रसुदरी,सोंपे चक्रीनें राय ॥ द्यो निज इछा होय तिहां, माहरे अर्थ न कांय ॥१॥ में तो कौतुक मात्रथी, कीधो एह प्रकार ॥ चक्र सुदरी निज तातनें, प्रणमी कहे विचार ॥ २ ॥ इछायें वर में वरी, तुमनें आपद दीध ॥ पापहेतु निज छोरुनो, खमो अपराध जे कीध ॥ ३ ॥ चक्रीकहे ताहरो नथी, इहां अपराध लगार ॥ प्रतिपद चइधेनु परें, तें उजवाल्यो नरतार ॥ ४ ॥ माही कन्या नृपतणी, वरे स्वयवर सार ॥ विश्वो

॥ दोहा ॥

॥ नृप वचन चक्री सुणी, हैयडे ङुख न माय ॥ वज्रपात रणमां च की, मरम वचन ङुख दाय ॥ १ ॥ रोवे चक्री ङुख थकी, पवनवेग ते देखी ॥ चित्तमां करुणा आणीनें, बोले एम सुविशेष ॥ २ ॥ मत रोवो बहु कालना, तुमे अमचा ठो स्वामि ॥ दयावत नृप नीनवी, मूकावु तु आम ॥ ३ ॥ मुकावण प्रयोजन नही,चक्री कहे सुणो वात ॥ जगजीत्यो में नोगव्यो, सुचिर काल विख्यात ॥४॥ सुरनर साखे बांधियो, नारि मा त्रें मुज्क ॥ एह परानव नवि खमी, शकीयें कहु हु तुज्क ॥५ ॥ वीरनें म रण रुडु कह्यु, जसके स्वर्गनो ठार ॥ नविबंधन विटबणा, वली ङुर्जन धिक्कार ॥ ६ ॥ साचो सेवक होय तो, खडग आपी मुज हाथ ॥ बध मो क्ष करु करथकी, निज मस्तकनें साथ ॥ ७ ॥ पवनवेग निश्चल लही, च क्री मरणनी वात ॥ कहे तुमे जाण पुरुष थइ, केम कहो ए अवदात ॥ ॥ ८ ॥ तुमनें नारे न बांधीया, श्रीजयानद कुमार ॥ सर्व विद्या निधि एह ठे, देवीदत्तवर सार॥ ए॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥ तुम्हेतो नर्ले बिराजोजी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमेंतो नर्ले बिराजोजी, विद्याधरके चक्री तुमें तो नर्ले बिराजोजी॥ मान मरदियुं योगिणी केरु, सर्वविद्या आवास ॥ गुण समुदाय ते नारिमां केम, होवे तेह विमास ॥ तु० ॥ १ ॥ महाज्वालानें कामाक्षा वली, वर ते एहनें नाम ॥ वज्रमुखादिक देव ते जीत्या, विक्रम तेजनु धाम ॥तु०॥ ॥ २॥ अगना रूप करीनें जीत्यो, ते तुम जणववा हेत ॥ खेद करो मत नारियें बांध्यो, मनमां धरी सकेत ॥ तु० ॥ ३ ॥ एह वचन अमृत ठट कावे, कांइक पाम्यो शांति ॥ पवनवेग कहे कर्म तणो इहां, वांक अठे ए कांत ॥ तु० ॥ ४ ॥ गर्व अगनियें बाली नाख्यो, फूल्यो रुख विवेक॥जग त विख्यात ए तुम मत्रीश्वरें, समजाव्या अतिरेक ॥ तु० ॥ ५ ॥ स्त्री रूपें तुम लशकर जीत्युं, तोही न समज्या कांय ॥ पूर्वे स्वामि धरी में कहेवरा व्यु, सेवक रीति कराय ॥ तु० ॥ ६ ॥ पंमित सुपरधान मोकल्या, दीधो ब हु उपदेश ॥ ते अमृतथी गर्वहुताशन, नवि शमियो लवलेश ॥ तु० ॥ ॥ ७ ॥ सामान्य जन पण दास नामांकित, सही न शके तो एह ॥ वीर पुरुष निज पत्नी परानव, खमी शके कहो केह ॥ तु० ॥ ८ ॥ नारिबांध्यो

म, पण जग जीते ए अचरिज गाम ॥ म० ॥ नाइयें जीत्यो नरतज राय, पण चक्रवर्त्तिपणु नवि जाय ॥ म० ॥ १३ ॥ खेद तजो तुमें महोटा राय, राज्य नोगवो निज जइ थिर थाय ॥ म० ॥ कोइक कर्मे थयो सग्राम, आपणे पण एक सांजलो आम ॥ म० ॥ १४ ॥ मुज मन वाधे अधिको नेह, तुम देखी न्राता परें एह ॥ म० ॥ तेणें पूरवनव जाणु एम, मित्र थ हो ज्ञानी लहे नेम ॥ म० ॥ १५ ॥ खेद पमाड्यो रणमां तुम्ह, ते अपराध खमो तुम्हें अम्ह ॥ म० ॥ श्रीजयवचनें खेद पलाय, खेटचक्री कहे सांजलो राय ॥ म० ॥ १६ ॥ निपजावी विधियें तुम एक, मूर्त्ति गुणवती सुविवेक ॥म०॥ शूरपणुं ने पर उपकार,सज्जनता नय धर्म विचार ॥म० ॥ ॥ १७ ॥ समरथ गुण स्तववा नहीं इद,तुमें तो महोटा महाराजेंइ ॥म०॥ क्रोध अज्ञान अने अनिमान, हुतो परवश खूतो निदान ॥ म० ॥ १८ ॥ पंमित पवनना ने परधान, शिक्षा दीधी मुज असमान ॥ म०॥ पण मद अध हाथीपरें तेह, अकुश नवि मानी में रेह ॥ म० ॥ १९ ॥ गुणवंता तुमें मानवा योग्य, में अपमान्या कर्म सयोग ॥ म० ॥ तुम अपराध न छे एम रेष, मुज अपराध खमो सुविशेष ॥ म० ॥ २० ॥ शलन पोतें वले दीपें जेह, दीवानो अपराध न तेह ॥ म० ॥ समरथनें वली तु लघु बाल, रणमां मार्‍यो न तें तेणे ताल ॥ म० ॥ २१ ॥ दयाधरम ताहरो अद्भुत, अपराधी उपर ए आकूत ॥ म० ॥ तुज उपर आवे मुज स्नेह, निश्चय परनव मैत्री सनेह ॥ म० ॥ २२ ॥ सत्तावीशमी नाखी ढाल, आठमा खमांहे सुरसाल ॥ म० ॥ गुणिजन मलिया गुण बहु थाय, पद्म कहे सहु खटपट जाय ॥ म० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७८७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुज उपर सुप्रसन्न थइ, मुज पुर करो पवित्र ॥ प्रार्थना नग नीरू तुमें, तुम्ह अदभुत चरित्र ॥ १ ॥ कुमरें मानी विनती, हवे खेचर नरराय ॥ सैन्य सहित पुरमां जइ, शणगारे चित्त लाय ॥ २ ॥ माणिक थननी श्रेणिमां, पचाली ध्रुव रूप ॥ चामर श्रेणी वींजती, रंजानें अनुरूप ॥३॥ फरके ध्वजा तिहां बिहु दिशें, घर घर तोरण माल ॥ मचाश्रेणि ते मांमियां, राज्य पथें सुविशाल ॥४॥ गीत गान गोरी करे,वाजित्र ध्वनि सगीत॥मच उल्लोचें सोहतां,मुक्ता शुद्ध पवित्त ॥५॥ चदन जलथी खेचरा, पथ करे छरकाव ॥ वस्त्र

नम गुणि आश्रयो, तुज गुणनो नही पार ॥ ५ ॥ गर्व दोष मादरे करी, पाम्यो आपद एह ॥ तुज प्रारथनाथी मनें. जीवतो मूक्यो जेह ॥ ६ ॥ तेणें सहु सुखकारी थयु, साधु वख्यो नरत्तार ॥ आणद लहो ए वातमां, न करो कांइ विचार ॥ ७ ॥

॥ढाल सत्तावीशमी॥ बाबा किसनपुरी, तुमविना मढीयां उजड पडी ॥ए देशी॥

॥ वात सुणाथी ताप गमाय, पुत्रीनें हवे चक्रधर राय ॥ मनहरप न माय, मलियाजी नर्ले रे तुमें अहोजी अहो ॥ ए आंकणी ॥ दासी परिवृत मोकले गेह, निज मातानें मली ससनेह ॥ मनहर्ष० ॥ १ ॥ श्याम वदन करी नीचु जोय, चक्री चितातुर बहु होय ॥ म० ॥ रे खगराय तुमें म म करो खेद, श्रीजय कहे सुणो तेहनो जेद ॥म०॥ २ ॥ तुमें उत्तम नरमां शिरदार, जय तो थयो काकताली प्रकार ॥ म० ॥ तुम सम सुनट न जगमां होय, सुर नर मांहे जोतां कोय ॥ म० ॥ ३ ॥ दिव्यबल हु सुनक्षु सयाम, एटलो काल काढयो तुमें आम ॥ म० ॥ एकले विद्याबलथी न कांय, जय पराजय तो कर्मथी थाय ॥ म० ॥ ४ ॥ जय अन्युदय लानादिक नाव, पुण्य प्रकृष्टना ए परनाव ॥ म० ॥ तप करतां कणिम करी कांय, तेणें पराजय पण एणी परें थाय ॥ म० ॥ ५ ॥ हेममां जडे अथवा वींधाय, मणि पण पत्थरनें नहीं कांय ॥ म० ॥ जय पराजय तेम शूरने थाय ॥ कायर तो मनमां मुजाय ॥ म० ॥ ६ ॥ एकवार हार्यो पण वीर, वीरपणु नवि जाय सुधीर ॥म०॥ फाल चूक्यो हरि एकज वार, पण मारे गजवरनां वार ॥म०॥ ॥ ७ ॥ सुरवरें मथियो सायर तोय, सागर कणिमता नवि होय ॥ म० ॥ महित मूकाणो जे वली सूर, पण ग्रहगणनो हरतो नूर ॥ म० ॥ ८ ॥ अमावास्या लोपाए चंद, पुष्ट करे अमृतें सुरवृंद ॥ म० ॥ गोधूम रेखा सहित पीडाण, पण सहु कणथी शिरोमणि जाण ॥ म० ॥ ९ ॥ घसीयो वैडूर्य न होये काच, हंस मलिन केम कागनी वाच ॥ म० ॥ गोत्रमां चक्र न चाले कोय, पण परनो सहार करे सोय ॥ म० ॥ १० ॥ अगनिनु जोर न जलमां थाय, पण सहुथी तेजवंत कहाय ॥ म० ॥ महादेव लिंग छेद्यु पण लोक, आराधे जन थोकें थोक ॥ म० ॥ ११ ॥ इंइपणु नवि जाये सार जो पण हुआं नग हजार ॥ म० ॥ रथ जोडे कृषि हरिनें नार, दैत्यनें मारे हरि निरधार ॥ म० ॥ १२ ॥ महादेवें बाम्यो छे का

परें सोहाय रे सो० ॥ मल्या खेचरना समवाय रे सो० ॥ निज पर वि नाग न जणाय रे सो०॥ ज० ॥ ८ ॥ सौधर्म ईशानेंड् परें रेलो, प्रणमे स हु तस पाय रे सो० ॥ हवे केइ विद्याधर राय रे सो० ॥ वैताढ्यमां व स्तु जे थाय रे सो० ॥ सार सार ते नेटणुं लाय रे सो० ॥ हय गय पत्ति समुदाय रे सो० ॥ ज० ॥ ए ॥ वस्त्र शस्त्र बहु मूलनां रे लो, नेटणां मूके ताम रे सो० ॥ आदर दीये तस अनिराम रे सो० ॥ विसर्ज्या ते जाये निज गाम रे सो० ॥ नृपना करता गुणग्राम रे सो० ॥ अतिशय आनंद मन पाम रे सो० ॥ ज० ॥ १० ॥ स्नानादिक किरिया करे रे लो,चक्री व यणें नूपाल रे सो० ॥ चक्री सेवा करे सुरसाल रे सो०॥ चक्री प्रार्थना क रे तिण ताल रे सो० ॥ चक्रसुंदरी दिये निज बाल रे सो० ॥ मनवंछित फल्यां ततकाल रे सो० ॥ ज०॥ ११ ॥ पूर्ववचन संनारतां रे लो, नोगर त्यादिक बत्रीश रे सो०॥ निज कन्या चढत जगीश रे सो०॥ पाणिग्रहण मानें नरईश रे सो० ॥ बीजा खेचर जेह अधीश रे सो० ॥ चित्त धारी वि श्वावीश रे सो० ॥ ज० ॥ १२ ॥ निज निज कन्या आपता रेलो,आठ अधि क मली हजार रे सो०॥ तेतो रूपें रति अनुहार रे सो०॥ तेहथी ज्योतिषी ज्ञान ववार रे सो० ॥ दिये लगन उत्तम मनोहार रे सो० ॥ शुक्लपक्षनें शुन तिथिवार रे सो० ॥ ज० ॥ १३ ॥ ग्रहबल जोइ आपियुं रेलो, देइ निमित्ति आनें दान रे सो० ॥ वली आदरनें बहुमान रे सो० ॥ निजनगरें जइ सा मान रे सो० ॥ करी आव्या सहु तेणें थान रे सो० ॥ चक्रीनें हर्ष अमान रे सो० ॥ ज० ॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण श्रीजय करे रेलो,करमोचन वेला दी ध रे सो० ॥ हय गय रथ पत्ति प्रसिद्ध रे सो० ॥ बहु आनूषण समृद्ध रे सो० ॥ मानु स्वर्गथी मोर्खे लिद्ध रे सो०॥ सहु खेटराय दीये निद्ध रे सो० ॥ ज०॥ १५ ॥ सुख विलसे मणिसौधमां रे लो,रमे पत्नीशुं नृप देव रे सो० जेम देवांगनाशुं देव रे सो० ॥ करे चक्री अहर्निश सेव रे सो० ॥ एहने पर उपकारनी टेव रे सो० ॥ तेहथी पाम्यो रूद्धि स्वयमेव रे सो० ॥ज०॥१६॥ श्रीविजयसिंह सूरीसरू रे लो, तेहना सत्यविजय पन्यास रे सो०॥ शिष्य क पूरविजय तस खास रे सो० ॥ जेहनु जग नाम प्रकाश रे सो० ॥ तस खि मा विजय शुनवास रे सो०॥ तेतो क्षमा तणो आवास रे सो०॥ज०॥१७॥ जिनविजय वर तेहना रेलो, तस पंमितप्रवर प्रधान रे सो० ॥ श्रीउत्तमवि

हेम मणि प्रमुखथी,हाट शणगारे साव ॥ ६ ॥ मणि मोतीना पूरीया, स्वस्तिक घर घर वार ॥ धूपघटी बहु महमहे, त्रिविध सुगध इव्य सार ॥ ७॥ फूल बिगायां पंथमें, थने फूलनी माल ॥ नगर सुगधमयी थयु, वितखो गगन विशाल ॥ ८ ॥ हवे नररायनें तेडवा, खगपति लेइ परिवार ॥ विनये आवी पधारीयें, लेइ परिवार सुसार ॥ ए ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ वलद नला छे शोरठी रे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति मानी विनती रे लो, साथें विद्याधर केइ कोडि रे सोनागी॥ वयरीना मद सवि मोडि रे सो० ॥ कोण आवे एहनी तोडि रे सो० ॥ जे हनी नही जगमां जोडी रे सो० ॥ कोण करशे एहनी होडि रे सो० ॥ १ ॥ जय जय नणे नर नारी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ श्वेतगर्जेइ उपर चढयो रे लो, अहिरावण शिर जेम इद रे सो० ॥ छत्र मिष सेवायें आव्यो चंद रे सो० ॥ वींजे चामर खेचरी वृंद रे सो० ॥ खीर सायर ऊर्मि अमद रे सो० ॥ चामर मिष सेवे नरिंद रे सो० ॥ ज०॥ २ ॥ कोडयो गमे तूर वाजते रे लो, जशनी परें व्याप्यु आकाश रे सो० ॥ गायन स्तवे गुण सुविलास रे सो०॥ बंदीबिरुदावली बोले तास रे सो०॥ गाये धवल मगल खीउ रास रे सो० ॥ थाये नाटक पग पग खास रे सो० ॥ ज० ॥ ३ ॥ खेचर बहु गगनें चले रे लो, मानु स्वर्गनें पृथिवी एक रे सो० ॥ कल्पवृक्षनी परें धरी टेक रे सो०॥ जाचकने दान अनेक रे ॥सो०॥ एतो धनद कहायो छेक रे ॥सो०॥ धरतो अतिशय सुविवेक रे सो०॥ज०॥४॥ चामर छत्रयुं गज चढयो रे लो, विद्याधर चक्रीराय रे सो०॥ तेतो परवर्यो छे लुवराय रे सो०॥ जणिमोतीना समुदाय रे सो० ॥ विद्याधरी वृंद वधाय रे सो० ॥ लुछणा हेम वस्त्र कराय रे सो०॥ज०॥५॥ अद्भुत रूप शोजा धरे रे लो,पहिर्या दिव्य वस्त्र अलंकार रे सो० ॥ राज्यपंथ उलघी उदार रे ॥ सो० ॥ आव्या चक्रीनें घरबार रे सो० ॥ उतरे गजवरथी तिवार रे सो० ॥ चक्री करावे बन धार रे सो० ॥ ज० ॥ ६ ॥ स्फटिक निषि कोइ स्थानकें रे लो, कहीं वैडूर्यमणिइो भ्रांति रे सो० ॥ पद्मराग कुट्टिम वन्हिकांति रे सो०॥ मरकत वध करी नूपांति रे सो०॥ नरपति जोतो मनखांत रे सो० ॥ पेठा चक्रीनें शांत रे सो० ॥ ज० ॥ ७ ॥ सना सौधर्म सना समी रेलो, मणि सिंहासनें नृप ठाय रे सो० ॥ पासें सिंहासनें खेटराय रे सो० ॥ रवि चंद

धार हो सुणो० ॥ १ ॥ तात खेचर चक्री तणा रा० ॥ पाय धाखा श्रया न हो सु० ॥ बहुपरिवारें परवख्या रा०॥ चक्रबल अनिधान हो सु० ॥२॥ सांजली नृपति हरषिया रा० ॥ श्रानद श्रंग न माय हो सु० ॥ हर्षदान दीये तेहनें रा०॥ शासन उन्नति थाय हो सु०॥ ३ ॥ पूर्वे अति वैरागीया रा० ॥ पाम्या पराजव जेण हो सु०॥ गुरु श्रागमन सुणी तदा रा० ॥ श केरा पयना एण हो सु०॥ ४ ॥ हर्षथी नृपनें खगपति रा० ॥ श्रतेउर प परिवार हो सु०॥ कोहथो गमे खग परिवखा रा० ॥ गज बेसी उत्रधार हो सु० ॥ ५ ॥ सूरि वांदवा नीकल्या रा० ॥ अनुक्रमें पोहोता उद्यान हो सु० ॥ पंचाजिगम ते साचवी रा० ॥ त्रण प्रदक्षिणादान हो सु० ॥ ६ ॥ वदे गुरुनें विधिपकी रा० ॥ गुरु पण दीये धर्मलाज हो सु० ॥ बेठा सुण वा धर्मनें रा० ॥ उचित थानक उत्साह हो सु०॥ ७॥ धर्मदेशना गुरु दी ये रा० ॥ जैनधर्म जगसार हो सु० ॥ श्रापे त्रिजुवन संपदा रा० ॥ त्रण जगत श्राधार हो सु० ॥ ८ ॥ सुख श्रर्थी सवि प्राणिया रा० ॥ पण सु ख दोय प्रकार हो सु०॥ अक्षय सुख पदेलुं कह्यु रा० ॥ निरुपाधिक अ विकार हो सु०॥ ९ ॥ विषयादिकथी उपनु रा०॥ बीजु सुखडुःख रूप हो सु० ॥ उत्तरयुं जिनशासन जेणें रा० ॥ ते न पडे नवकूप हो सु० ॥१०॥ प्रथमज सुख श्रगीकरे रा० ॥ विषयथी चिहु गति डुःख हो सु० ॥ शीत ताप ज्वर कमूर्ना रा० ॥ नरकमां डुःख वली नूख हो सु० ॥ ११ ॥ डुर्गंध फरस कठिन घणो रा० ॥ सुरकृत बहु संताप हो सु० ॥ ते डुःखथी बी हे नही रा० ॥ विषय श्रर्थे करे पाप हो सु० ॥१२॥ ताडननें वहेवरावबु रा० ॥ अहोनिशि तापनें शीत हो सु०॥ नूख तरषनें वायरा रा०॥ डुःख सहे तिर्यंच नित्य हो सु० ॥१३ ॥ निज परजातिनो जय घणो रा० ॥ पर वशपणु श्रसराल हो सु०॥ खमीया नें खमशे वली रा०॥ डुःख पण बीहे न बाल हो सु० ॥१४ ॥ ईर्ष्या पराजव निवलनें रा० ॥ देखी वली गर्ज्ज वास हो सु० ॥ ते डुःखथी लाजे घणो रा० ॥ डुं सुख देव श्रावास हो सु० ॥ १५॥ इष्ट वियोग अनिष्टनो रा० ॥ पामे वली संयोग हो सु० ॥ साते जय वली मनुजमां रा० ॥ कुपुत्रनें वली रोग हो सु० ॥ १६ ॥ वि रसता मानव जवतणी रा० ॥ कहेतां नावे पारहो सु० ॥ सरस करे धर्म श्रादरी रा० ॥ धन्य तेहनो श्रवतार हो सु० ॥ १७॥ महा पराजव शत्रुथ

जय अनिधान रे सो० ॥ तेहनो नाम परिणाम समान रे सो०॥ जेहनुं चि त्त ज्ञानने ध्यान रे सो० ॥ किरिया करता अनिदान रे सो० ॥ ज०॥१८॥ आठमा खंममांहे कही रेजो, ए अठावीशमी ढाल रे सो० ॥ खम पूरण थयो सुरसाल रे सो०॥ श्रीउत्तमविजयनो बाल रे सो० ॥ कहे पद्मविजय सुविशाल रे सो० ॥ सुणतां होये मंगलमाल रे सो०॥ज०॥१९॥८२५॥

॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणि विरचिते श्री श्रीजयानंदमहाराजाधिराजकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे चक्रायुधविद्याधर चक्रवर्त्तिजय चक्रसुधर्यादि बहुसहस्रकन्यापाणिग्रहणादि पुण्यफलप्रकटनात्तु जवनादि विवर्णनोनामा अष्टमो खंम समाप्त सप्तम खंमे गाथा ॥४२५॥ अष्टमखंमे गाथा ॥ ८२५ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०६० ॥ सप्त खंमे उक्त श्लोक ॥ ८० ॥ अष्टमखंमे उक्तश्लोक ॥ ५ ॥ सर्वं उक्त श्लोक ॥ ८५ ॥ सवैयो एक,समस्या एक, दोहा बे ॥ इत्यष्टम खंम समाप्त ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमखंम प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ प्रभु शोलमा,स्वर्णकाय सुखदाय ॥ मनमां वसतां आपदा, पन्नग दूर पलाय ॥ १ ॥ पुरुषादाणी पासजी,जे टाले जवपास ॥ इह जव पण नवि जीवनी, वंछित पूरे आश ॥ २ ॥ वचन सरस सरसति होये, गु णगुरु गुरु श्रुत दाय ॥ दीक्षा विद्या गुरु नमुं, जवतारण सुखदाय ॥ ३ ॥ आठ खंम एणी परें कह्या, नवलो नवमो खंम ॥ नवरसमय हुं वर्णवुं, सां जलो तेह अखंम ॥ ४ ॥ सांजलतां जे ऊंघशे, विकथा करशे जेह ॥ समू र्छिम परें हारशे, धर्म अर्थ वली तेह ॥ ५ ॥ अधवच उठी मत जशो,मत ढुलरावो बाल ॥ आमु अवलु मत जूउ, जो सुणो वयण रसाल ॥ ६ ॥ वदन प्रसन्न करी सांजले, समजे रहस्यनी वात ॥ पूर्वापर सवि मेलवे, श्रोता ते कहेवात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन बेठा सना करी राजनजी, चक्रीप्रमुख परिवारहो सुणो ध र्मस्नेही प्राणिया राजनजी ॥ वनपालक नृपालनें रा०॥ कहे विनती अव

धार हो सुणो० ॥ १ ॥ तात खेचर चक्री तणा रा० ॥ पाव धारया स्वया न हो सु० ॥ बहुपरिवारें परवस्या रा०॥ चक्रबल अनिधान हो सु० ॥२॥ सांजली नृपति हरखिया रा० ॥ आनद अंग न माय हो सु० ॥ हर्षदान दीये तेहनें रा०॥ शासन उन्नति थाय हो सु०॥ ३ ॥ पूर्वे अति वैरागीया रा० ॥ पाम्या परानव जेण हो सु०॥ गुरु आगमन सुणी तदा रा० ॥ श केरा पयना एण हो सु०॥ ४ ॥ हर्षथी नृपनें खगपति रा० ॥ अतेउर प परिवार हो सु०॥ कोहथो गमे खग परिवस्या रा० ॥ गज वेसी छत्रधार हो सु० ॥ ५ ॥ सूरि वांदवा नीकल्या रा० ॥ अनुक्रमें पोहोता उद्यान हो सु० ॥ पंचाजिगम ते साचवी रा० ॥ त्रण प्रदक्षिणादान हो सु० ॥ ६ ॥ वंदे गुरुनें विधियकी रा० ॥ गुरु पण दीये धर्मलान हो सु० ॥ वेग सुण वा धर्मनें रा० ॥ उचित थानक उत्साह हो सु०॥ ७॥ धर्मदेशना गुरु दी ये रा० ॥ जैनधर्म जगसार हो सु० ॥ आपे त्रिज़ुवन संपदा रा० ॥ त्रण जगत आधार हो सु० ॥ ८ ॥ सुख अर्थी सवि प्राणिया रा० ॥ पण सु ख दोय प्रकार हो सु०॥ अक्षय सुख पहेलु कह्यु रा० ॥ निरुपाधिक अ विकार हो सु०॥ ९ ॥ विपयादिकथी उपनु रा०॥ बीजु सुखडु ख रूप हो सु० ॥ उलख्युं जिनशासन जेणें रा० ॥ ते न पडे नवकूप हो सु० ॥१०॥ प्रथमज सुख अगीकरे रा० ॥ विषयथी चिहु गति डु ख हो सु० ॥ शीत ताप ज्वर कमूनां रा० ॥ नरकमां डु ख वली नूख हो सु० ॥ ११ ॥ डुर्गंध फरस कठिन घणो रा० ॥ सुरकृत बहु संताप हो सु० ॥ ते डु खथी बी हे नही रा० ॥ विषय अर्थें करे पाप हो सु० ॥१२॥ त्राडननें वहेवरावबु रा० ॥ अहोनिशि तापनें शीत हो सु०॥ नूख तरषनें वायरा रा०॥ डु ख सहे तिर्यंच नित्य हो सु० ॥१३ ॥ निज परजातिनो नय घणो रा० ॥ पर वशपणु असराल हो सु०॥ खमीया नें खमशे वली रा०॥ डु ख पण बीहे न बाल हो सु० ॥१४ ॥ ईर्ष्या परानव निबलनें रा० ॥ देखी वली गर्न वास हो सु० ॥ ते डु खथी लाजे घणो रा० ॥ र्छ सुख देव आवास हो सु ० ॥ १५॥ इष्ट वियोग अनिष्टनो रा० ॥ पामे वली संयोग हो सु० ॥ साते नय वली मनुजमां रा० ॥ कुपुत्रनें वली रोग हो सु० ॥ १६ ॥ वि रसता मानव नवतणी रा० ॥ कहेतां नावे पारहो सु० ॥ सरस करे धर्म आदरी रा० ॥ धन्य तेहनो अवतार हो सु० ॥ १७॥ महा परानव शत्रुथ

की रा० ॥ पुत्र कलत्र अविश्वास हो सु० ॥ मरणनीक अति आकरी रा० ॥ वली दुर्ध्यान अभ्यास हो सु० ॥ १८ ॥ परिग्रह आरंभ बहु करे रा० ॥ पाप करी अति घोर हो सु० ॥ मरण लहीनें परभवें रा० ॥ दुःख खमे अति जोर हो सु० ॥१९॥ वलीय कषाय अवीरता रा०॥ चालता राक्षस तेह हो सु० ॥ पूरव पुण्य खाली करे रा० ॥ विषय वेताल वली जेह हो सु० ॥ २०॥ नाश करे विवेकनो रा० ॥ राज्य ते नरकनुं ठाय हो सु० ॥ माचे राज्यमां पण नही रा० ॥ दुःखत्रायक कोइ थाय हो सु० ॥ २१ ॥ राज्यें मरण न राखीयु रा०॥ रोगनें भय विध्वस हो सु०॥ न कह्यो तो मद राज्यनो रा० ॥ करतां होय गुणभ्रंश हो सु० ॥२२ ॥ राज्यमां धर्म न करी शके रा० ॥ राज्यमां बहु जंजाल हो सु० ॥ पुत्र कलत्र सहु स्वारथी रा० ॥ लखमी अनित्य सभाल हो सु० ॥ २३ ॥ मोह स्थ जी राजऋद्धिनो रा० ॥ धर्म करो निराबाध हो सु०॥ धर्म ते बेहु भेदें कह्यो रा० ॥ गृही यतिधर्म सुसाध हो सु० ॥२४ ॥ पोहोंचाडे स्वर्ग बारमें रा०॥ अनुक्रमें शिवपद थाय हो सु०॥उत्कृष्टो गृही धर्म ए रा० ॥ बीजो तुरत शिव दाय हो सु० ॥२५ ॥ पण यतिधर्म आराधीयें रा० ॥ तुरत दीये देववास हो सु० ॥ दान पूजा गृही धर्ममां रा० ॥ श्रद्धा व्रत वली खास हो सु० ॥ २६ ॥ आवश्यक सघ पूजना रा० ॥ ए बेहु धर्ममां एक हो सु० ॥ यथाशक्ति अंगीकरो रा० ॥ अगें धरीय विवेक हो सु० ॥ २७ ॥ नरभव पामी दोहिलो रा० ॥ कोण करे धर्ममा ढील हो सु० ॥ मरण सी हीक केम गइ अछे रा० ॥ आधि व्याधिनी पील हो सु० ॥ २८॥ के फरी आवबु छे नही रा० ॥ के नही दुर्गति दुःख हो सु०॥ उद्यम न करो धर्मनो रा० ॥ जेहथी लहो शिवसुख हो सु० ॥ २९ ॥ नवमे खंडमें ए कही रा०॥ पहेली देशना ढाल हो सु० ॥ पद्मविजय सोहामणी रा० ॥ सुणतां मंगलमाल हो सु० ॥ ३०॥ सर्वगाथा ॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परें सांभली देशना, प्रणमे श्रीगुरु पाय ॥ कर जोडीनें वीनवे, श्रीजयानंदजी राय ॥ १ ॥ शक्ति नथी चारित्रनी, दुष्कर संयम भार ॥ समकेत मूज में आदर्यां,पहेलां अणुव्रत चार॥२॥ नियम ग्रह्यु तुम साखथी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ वली गुरु योगें प्रणमीने, करशुं नित्य आदार ॥३॥ पर

वदिनें नित्य आदरुं, ब्रह्मचर्य मनोहार ॥ आरंन वर्जुं ते दिनें, साधर्मिक सत्कार ॥४॥ चैत्र प्रमुख अठाइयें, वर्त्तावु अमार ॥ जिनप्रासादनें बिंब व ली, सहस्र गमे करु सार ॥ ५ ॥ पुस्तक वली लखावशुं, जिनवर नाषित जेह ॥ संघचतुर्विध पूजशु, विधि पूर्वक ससनेह ॥ ६ ॥ श्रावक व्रतधारी त णो, कर नवि लेशु कोय ॥ दानादिक वली आचरु, दीन अनाथ जे होय ॥ ७ ॥ जिनशासन परजावना, करशुं बहु प्रकार ॥ गुरु कहे राजन सांन लो, पालजो चित्त उदार ॥ ८ ॥ धर्मतत्त्वनु रहस्य ए, पाले कर्म क्षय था य ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य जे, एहथी बहु बधाय ॥ ९ ॥ निश्चल थइ आराध जो, मोक्षनां सुख होये जाव ॥ प्रणमी नरपति विनवे, अवसर पामी ता व ॥ १० ॥ एणे नव होशे के नही, नगवन चारित्र मुज्ज ॥ तव गुरु कहे तुज होयशे, हरप्यो सांजली गुज्ज ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ संयमथी सुख पामीयें ॥ ए देशी ॥

॥ खेचर चक्री एम नणे, विनयें वही पाय सुगुरुजी ॥ पाम्यो परानव सगरें, कांयक बूज्यो ताय ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम वयणां अति मीठडां ॥ ए आंकणी ॥ तुम वयणें हवे बूजीयो, लेशु संयम नार सु० ॥ राज्यथकी हु विरमियो, जाण्यो असार संसार सु० ॥ तु० ॥ २ ॥ राज्य स्वस्थ करी आ वशुं, तुम पासें निरधार सु० ॥ तावत्काल कृपा करी, रहेवु मुज उपकार सु० ॥ तु० ॥ ३ ॥ एम कही गुरुना पय नमी, केइक समकेत धार सु०॥ देशविरति केइ आदरी, आवे निज आगार सु० ॥ तु० ॥ ४ ॥ हवे विद्या धर राजियो, मंत्रीशुं करीय विचार ॥ राजनजी ॥ स्नेहथी श्रीजयानंद नें, बोलावे अति प्यार रा०॥ तु०॥ ५ ॥ राज्य तुमें वैताढ्यनु, मुज जीती नें लीध रा० ॥ ते कारण तुमनें हवे, करुं अनिषेक प्रसिद्ध रा० ॥ तु० ॥ ॥ ६ ॥ कहे श्रीजय मुज खप नही, निज राज्यें संतोष रा० ॥ आपो नि ज सुतने तुमें, योग्य बे ते सुविशेष रा०॥ तु० ॥ ७ ॥ दूरथकी पण तेह नी, रक्षा करशुं नित्य रा०॥ तुम परें हित धरशु सदा, चिंता न करवी चित्त रा०॥ तु०॥८॥ खेचर पति कहे सांजलो,तुम खोले बे एह रा०॥ राज्य तो एह तुमारडु एहमां नहीं संदेह रा० ॥ तु० ॥ ९ ॥ तुमें एहनें वली आप जो, तुम रुचि होये जेह रा० ॥ में पण एहवु सांनल्यु, सान्नलो कहिये तेह रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ नरत अर्द्धना अधिपति, तिम वैताढ्य समेत

की रा० ॥ पुत्र कलत्र अविश्वास हो सु० ॥ मरणनीक अति आकरी रा० ॥ वली दुर्ध्यान अन्यास हो सु० ॥ १८ ॥ परिग्रह आरंन बहु करे रा० ॥ पाप करी अति घोर हो सु० ॥ मरण लहीनें परनवें रा० ॥ दुःख खमे अति जोर हो सु० ॥१९ ॥ वलीय कषाय उदीरता रा०॥ चालता राक्षस तेह हो सु० ॥ पूरव पुण्य खाली करे रा० ॥ विषय वेताल वली जेह हो सु० ॥ २०॥ नाश करे विवेकनो रा० ॥ राज्य ते नरकनुं ठाय हो सु० ॥ माचे राज्यमा पण नही रा० ॥ दुःखत्रायक कोइ थाय हो सु० ॥ २१ ॥ राज्यें मरण न राखीयु रा०॥ रोगनें नय विध्वस हो सु०॥ न कह्यो तो मद राज्यनो रा० ॥ करतां होय गुणभ्रंश हो सु० ॥२२ ॥ राज्यमां धर्म न करी शके रा० ॥ राज्यमां बहु जंजाल हो सु० ॥ पुत्र कलत्र सहु स्वारथी रा० ॥ लखमी अनित्य सनाल हो सु० ॥ २३ ॥ मोह रूप जी राजरूद्धिनो रा० ॥ धर्म करो निरावाध हो सु०॥ धर्म ते बेहु नेदें कह्यो रा० ॥ गृही यतिधर्म सुसाध हो सु० ॥२४ ॥ पोहोंचाडे स्वर्ग बारमें रा०॥ अनुक्रमें शिवपद थाय हो सु०॥उत्कृष्टो गृही धर्म ए रा० ॥ बीजो तुरत शिव दाय हो सु० ॥२५ ॥ पण यतिधर्म आराधीयें रा० ॥ तुरत दीये देववास हो सु० ॥ दान पूजा गृही धर्ममां रा० ॥ श्रद्धा व्रत वली खास हो सु० ॥ २६ ॥ आवश्यक संघ पूजना रा० ॥ ए बेहु धर्ममां एक हो सु० ॥ यथाशक्ति अंगीकरो रा० ॥ अगें धरीय विवेक हो सु० ॥ २७ ॥ नरनव पामी दोहिलो रा० ॥ कोण करे धर्ममां ढील हो सु० ॥ मरण बीहीक केम गइ अठे रा० ॥ आधि व्याधिनी पील हो सु० ॥ २८॥ के फरी आववु ठे नही रा० ॥ के नही दुर्गति दुःख हो सु०॥ उद्यम न करो धर्मनो रा० ॥ जेहथी लहो शिवसुख हो सु० ॥ २९ ॥ नवमे खर्म्डे ए कही रा०॥ पहेली वेशना ढाल हो सु० ॥ पद्मविजय सोहामणी रा० ॥ सुणतां मंगलमाल हो सु० ॥ ३०॥ सर्वगाथा ॥३०॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परें सांनली देशना, प्रणमे श्रीगुरु पाय ॥ कर जोडीनें वीनवे, श्रीजयानंदजी राय ॥ १ ॥ शक्ति नथी चारित्रनी, दुष्कर संयम नार ॥ समकेत मूल में आदर्यां,पहेलां अणुव्रत चार॥२॥ नियम बहु तुम साखथी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ वली गुरु योगें प्रणमीने, करशु नित्य आहार ॥३॥ पर

वदिनें नित्य आदरुं, ब्रह्मचर्य मनोहार ॥ आरंन वर्जुं ते दिनें, साधर्मिक सत्कार ॥४॥ चैत्र प्रमुख अठाइयें, वर्त्तावुं अमार ॥ जिनप्रासादनें बिंब वली, सहस्र गमे करु सार ॥ ५ ॥ पुस्तक वली लखावशुं, जिनवर नाषित जेह ॥ संघचतुर्विध पूजशुं, विधि पूर्वक ससनेह ॥ ६ ॥ श्रावक व्रतधारी तणो, कर नवि लेशुं कोय ॥ दानादिक वली आचरु, दीन अनाथ जे होय ॥ ७ ॥ जिनशासन परनावना, करशुं बहु प्रकार ॥ गुरु कहे राजन सांनलो, पालजो चित्त उदार ॥ ८ ॥ धर्मतत्त्वनु रहस्य ए, पाले कर्म क्षय थाय ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य जे, एहथी बहु बधाय ॥ ए ॥ निश्चल थइ आराधजो, मोक्षनां सुख होये जाव ॥ प्रणमी नरपति विनवे, अवसर पामी ताव ॥ १० ॥ एणे नव होशे के नही, नगवन चारित्र मुझ ॥ तव गुरु कहे तुज होयशे, हरख्यो सांनली गुझ ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ संयमथी सुख पामीयें ॥ ए देशी ॥

॥ खेचर चक्री एम नणे, विनयें वंदी पाय सुगुरुजी ॥ पाम्यो परानव सगरें, कांयक बूज्यो ताय ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम वयणां अति मीठडां ॥ ए आंकणी ॥ तुम वयणें हवे बूजीयो, लेशुं संयम नार सु० ॥ राज्यथकी हु विरमियो, जाण्यो असार संसार सु० ॥ तु० ॥ २ ॥ राज्य स्वस्थ करी आवशुं, तुम पासें निरधार सु० ॥ तावत्काल कृपा करी, रहेवुं मुज उपकार सु० ॥ तु० ॥ ३ ॥ एम कही गुरुना पय नमी, केइक समकेत धार सु०॥ देशविरति केइ आदरी, आवे निज आगार सु० ॥ तु० ॥ ४ ॥ हवे विद्याधर राजियो, मंत्रीशुं करीय विचार ॥ राजनजी ॥ स्नेहथी श्रीजयानंदनें, बोलावे अति प्यार रा०॥ तु०॥ ५ ॥ राज्य तुमें वैताढयनुं, मुज जीतीनें लीध रा० ॥ ते कारण तुमनें हवे, करु अनिषेक प्रसिद्ध रा० ॥ तु० ॥ ॥ ६ ॥ कहे श्रीजय मुज खप नही, निज राज्यें संतोष रा० ॥ आपो निज सुतनें तुमें, योग्य ढे ते सुविशेष रा०॥ तु० ॥ ७ ॥ दूरथकी पण तेहनी, रक्षा करशुं नित्य रा०॥ तुम परें हित धरशुं सदा, चिंता न करवी चित्त रा०॥ तु०॥८॥ खेचर पति कहे सांनलो,तुम खोले ढे एह रा०॥ राज्य तो एह तुमारडु, एहमां नहीं संदेह रा० ॥ तु० ॥ ए ॥ तुमें एहनें वली आपजो, तुम रुचि होये जेह रा० ॥ में पण एहवु सांनल्युं, सानलो कहियें तेह रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ नरत अर्द्धना अधिपति, तिम वैताढय समेत

की रा० ॥ पुत्र कलत्र अविश्वास हो सु० ॥ मरणनीक अति आकरी रा० ॥ वली दुर्ध्यान अन्यास हो सु० ॥ १८ ॥ परिग्रह आरंज बहु करे रा० ॥ पाप करी अति घोर हो सु० ॥ मरण लहीनें परजवें रा० ॥ डुःख खमे अति जोर हो सु० ॥१९ ॥ वलीय कषाय उदीरता रा०॥ पालता राक्षस तेह हो सु० ॥ पूरव पुण्य खाली करे रा० ॥ विषय वेताल वली जेह हो सु० ॥ २०॥ नाश करे विवेकनो रा० ॥ राज्य ते नरकनुं गय हो सु० ॥ माचे राज्यमा पण नही रा० ॥ डुःखत्रायक कोइ थाय हो सु० ॥ २१ ॥ राज्यें मरण न राखीयु रा०॥ रोगनें जय विध्वस हो सु०॥ न कह्यो तो मद राज्यनो रा० ॥ करतां होय गुणन्नश हो सु० ॥२२ ॥ राज्यमां धर्म न करी शके रा० ॥ राज्यमा बहु जंजाल हो सु० ॥ पुत्र कलत्र सहु स्वारथी रा० ॥ लखमी अनित्य सनाल हो सु० ॥ २३ ॥ मोह त्यजी राजऋद्धिनो रा० ॥ धर्म करो निराबाध हो सु०॥ धर्म ते बेहु नेदें कह्यो रा० ॥ गृही यतिधर्म सुसाध हो सु० ॥२४ ॥ पोहोंचाडे स्वर्ग बारमें रा०॥ अनुक्रमें शिवपद थाय हो सु०॥उत्कृष्टो गृही धर्म ए रा० ॥ बीजो तुरत शिव दाय हो सु० ॥२५ ॥ पण यतिधर्म आराधीयें रा० ॥ तुरत दीये देववास हो सु० ॥ दान पूजा गृही धर्ममां रा० ॥ श्रद्धा व्रत वली खास हो सु० ॥ २६ ॥ आवश्यक सघ पूजना रा० ॥ ए बेहु धर्ममां एक हो सु० ॥ यथाशक्ति अगीकरो रा० ॥ अगें धरीय विवेक हो सु० ॥ २७ ॥ नरजव पामी दोहिलो रा० ॥ कोण करे धर्ममां ढील हो सु० ॥ मरण थी हीक केम गइ अछे रा० ॥ आधि व्याधिनी पील हो सु० ॥ २८॥ के फरी आववु छे नही रा० ॥ के नही डुर्गति डुःख हो सु०॥ उद्यम न करो धर्मनो रा० ॥ जेहथी लहो शिवसुख हो सु० ॥ २९ ॥ नवमे खर्डे ए कही रा० ॥ पहेली देशना ढाल हो सु० ॥ पद्मविजय सोदामणी रा० ॥ सुणतां मगलमाल हो सु० ॥ ३०॥ सर्वगाथा ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परें सांजली देशना, प्रणमे श्रीगुरु पाय ॥ कर जोडीनें वीनवे, श्रीजयानदजी राय ॥ १ ॥ शक्ति नथी चारित्रनी, डुष्कर सयम जार ॥ समकेत मूल में आदर्यां,पहेलां अणुव्रत चार॥२॥ नियम बहु तुम साखथी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ वली गुरु योगें प्रणमीने, करशुं नित्य आहार ॥३॥ पर

वदिनें नित्य आदरुं, ब्रह्मचर्य मनोहार ॥ आरंभ वर्जुं ते दिनें, साधर्मिक सत्कार ॥४॥ चैत्र प्रमुख अठाइयें, वर्त्तावुं अमार ॥ जिनप्रासादनें बिंब व ली, सहस्र गमे करु सार ॥ ५ ॥ पुस्तक वली लखावशुं, जिनवर नाषित जेह ॥ संघचतुर्विध पूजशुं, विधि पूर्वक ससनेह ॥ ६ ॥ श्रावक व्रतधारी त णो, कर नवि लेशुं कोय ॥ दानादिक वली आचरु, दीन अनाथ जे होय ॥ ७ ॥ जिनशासन परनावना, करशुं बहु प्रकार ॥ गुरु कहे राजन सांन लो, पालजो चित्त उदार ॥ ८ ॥ धर्मतत्त्वनु रहस्य ए, पाले कर्म क्षय था य ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य जे, एहथी बहु बंधाय ॥ ए ॥ निश्चल थइ आराध जो, मोक्षनां सुख होये जाव ॥ प्रणमी नरपति विनवे, अवसर पामी ता व ॥ १० ॥ एणे नव होशे के नहीं, नगवन चारित्र मुझ ॥ तव गुरु कहे तुज होयशे, हरख्यो सांनली गुझ ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ संयमथी सुख पामीयें ॥ ए देशी ॥

॥ खेचर चक्री एम नणे, विनयें वंदी पाय सुगुरुनी ॥ पाम्यो परानव सगरें, कांयक बूज्यो ताय ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम वयणां अति मीठडां ॥ ए आंकणी ॥ तुम वयणें हवे बूजीयो, लेशुं संयम नार सु० ॥ राज्यथकी हुं विरमियो, जाण्यो असार संसार सु० ॥ तु० ॥ २ ॥ राज्य स्वस्थ करी आ वशुं, तुम पासें निरधार सु० ॥ तावत्काल कृपा करी, रहेवुं मुज उपकार सु० ॥ तु० ॥ ३ ॥ एम कही गुरुना पय नमी, केइक समकेत धार सु०॥ देशविरति केइ आदरी, आवे निज आगार सु० ॥ तु० ॥ ४ ॥ हवे विद्या धर राजियो, मंत्रीशुं करीय विचार ॥ राजनजी ॥ स्नेहथी श्रीजयानंद नें, बोलावे अति प्यार रा०॥ तु०॥ ५ ॥ राज्य तुमें वैताढ्यनुं, मुज जीती नें लीध रा० ॥ ते कारण तुमनें हवे, करु अजिषेक प्रसिद्ध रा० ॥ तु० ॥ ॥ ६ ॥ कहे श्रीजय मुज खप नहीं, निज राज्यें संतोष रा० ॥ आपो नि ज सुतने तुमें, योग्य छे ते सुविशेष रा०॥ तु० ॥ ७ ॥ दूरथकी पण तेह नी, रक्षा करशुं नित्य रा०॥ तुम परें हित धरशुं सदा, चिंता न करवी चित्त रा०॥ तु०॥८॥ खेचर पति कहे सांनलो,तुम खोले छे एह रा०॥ राज्य तो एह तुमारडुं, एहमां नहीं संदेह रा० ॥ तु० ॥ ए ॥ तुमें एहनें वली आप जो, तुम रुचि होये जेह रा० ॥ में पण एहवुं सांनल्युं, सानलो कहिये तेह रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ नरत अर्द्धना अधिपति, तिम वैताढ्य समेत

रा० ॥ ज्ञानीयें जाख्यु में सांजल्यु,करु अजिषेक ते हेत रा०॥ तु०॥ ११ ॥ प्रार्थना जग न कीजीयें, थाये धर्म अंतराय रा० ॥ मौन करे तव नृपति, तव खेचरपति राय ॥ रा० ॥ तु० ॥ १२ ॥ थापी मणिसिंहासनें, सामग्री सवि युत रा०॥ पवनवेगादिक खेचरा, कोडयो गमे सयुत्त रा० ॥ तु० ॥ १३॥ राजाजिषेक करे तिहां,माहा महोत्सव विस्तार रा० ॥ चक्रवेगादिक पुत्रनें, सोंपे सेना जमार रा० ॥ तु० ॥ १४ ॥ प्रणमे खेटचक्री तदा, तेम सहु खेचर राय रा०॥ इड रूपांतरें आवियो, तेम शोजा तस थाय रा० ॥ तु० ॥१५॥ करे अठाइ महोत्सव वली, सघजक्ति सुविशाल रा० ॥ पडह अमारि वजावतो, मास लगें खगपाल रा० ॥ तु० ॥ १६ ॥ आठ सहस खग राजिया, राणीयो शोल हजार रा० ॥ सहु थयां सहु सामटां, लेवा सयम जार रा० ॥ तु० ॥ १७ ॥ शक्र तीर्थंकरनी परें, उत्सव श्रीजयानद रा० ॥ चक्रवेगादिकशुं करे, मगल स्नान खगेंद रा० ॥ ॥ तु० ॥ १८ ॥ देवदूष्य पहेरावतां, दीपता अति अलंकार रा० ॥ बेग प्रवर विमानमां, दीक्षा उत्सुक परिवार रा० ॥ तु० ॥ १९॥ अमर छत्र धरावता, चइवज्ज्वल अनुहार रा० ॥ कोडघो सुजटशुं नरपति, चाले आगल तेणि वार ॥रा०॥तु०॥२०॥ विद्या धरीकोडघो गमे, बेठी चाले विमान रा० ॥ गीत गान करती थकी, देता दीननें दान रा० ॥ तु० ॥ २१ ॥ बंदि बिरुद बोली जते, नाटक नवनव रग रा० ॥ देवता जय जय रव करे, हर्ष धरी उछरंग रा० ॥ तु० ॥ २२ ॥ वाजे देवनी डुदजि, पग पग देता दान रा० ॥ आव्या गुरु चरणे क्रमे, नगर बाहिर उद्यान रा० ॥ तु० ॥ २३ ॥ उतरीया ते विमानथी, सहु साथे करे लोच रा० ॥ गुरुने एणी परें विनवे, छांमी मन सकोच रा० ॥ तु० ॥ २४ ॥ जव सायरथी तारीयें, गुरुपण ते हुने ताम ॥ रा० ॥ विधिपूर्वक दीक्षादीये, सहुने गुरु गुण धाम ॥ रा० ॥ ॥ तु०॥ २५ ॥ वास सुगध गुरु दीये, सुरसघनें अजिराम रा० ॥ सहु मली तस मस्तक ठवे, जय जयकार उद्दाम रा० ॥तु०॥२६॥ हित शिक्षा सवि सघने, देशना दीये गुरुराय रा० ॥ वदी गुरुने नरपति, वदे चक्री ऋषिराय रा०॥तु० ॥ २७ ॥ नवमे खर्मे बीजी कही, पद्मविजय एम ढाल रा० ॥ उत्सव रंग वधामणां, घर घर मगल माल रा० ॥ तु० ॥ २८ ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रायुधनें खमावता, नरपति निज अपराध ॥ शेष मुनीश्वरने वली, प्रणमे नक्ति अगाध ॥ १ ॥ सहु निज निज थानक गया, गुरु विचख्या अन्य गाण ॥ बहुपरिवारें परवख्या, द्विविध शिक्षा दिये दाण ॥ २ ॥ श्रीजयानंद नृपति हवे, बहु विद्याधर वृंद ॥ चक्रवेग पवनादिका, सेवे हर्ष अमंद ॥ ३ ॥ वैताढ्यने अन्य द्वीपमां, वलीवासी वली जेह ॥ अन्य पर्वतना नावीया, सेवा अर्थे तेह ॥ ४ ॥ सेनाव्यूं जइ तिहां कणे, लीलायें जय कीध ॥ एम विद्याधर चक्रीनी, पदवी थइ परसिद्ध ॥५॥ सुखमां एम रहेतां थकां, गगन वल्लन पुरमांहि ॥ काल केतो एक काढीयो, धरता अंगउह्यांहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन सूतां हो राज, रयणी समयें हो राज, उपे के जागे रे नाखे सुरवर एणीपरें जी ॥ नृप कहे जागु हो राज, तव सुर बोले हो राज, गिरिचूड नामे रें,देव हुं आव्यो तुज घरे जी ॥१॥ तें प्रतिबोध्यो हो राज, इहां आव्यो हो राज, तेहनो हेतु रे,सांजल तुजनें हुं कहुं जी ॥ तापस बोधि हो राज, श्रावक कीधा हो राज, फरी तुमें नाव्या रे, वाट जूए तुमची सहुजी ॥ २ ॥ हेमप्रन्न सूरि हो राज, तेहनी वाणी हो राज, सांजली मनमां रे, तेह घणु वैरागीयाजी ॥ तापससुंदरी हो राज, विघननो हेतु हो राज, दीक्षा लेवा रे, सहु इछे चित्त जागीयाजी ॥ ३ ॥ ए प्रतिबंधे हो राज, व्रत न लेवाये हो राज, तेणे तिहां आवी रे, निजप्रिया निज पासें करोजी ॥ विघन ते टलशे हो राज, सहु व्रत लेशे हो राज, विण अपराधें रे,नारीवियोग शाने धरोजी॥४॥अ हम करीने हो राज,मुज आराध्यो हो राज, ज्ञानीनें वचनें रे, जाणीनें आव्यो इहांजी ॥ तुमनें जणव्यु हो राज, गयो एम कहीनें हो राज, गुण सनारी रे, पल्लीना नृप चिंतवे तिहांजी ॥ ॥ ५ ॥ मात पितानें हो राज, मलवा मनहु हो राज, तेणें वर खेचर रे, तेही विचार करी हवेजी ॥ चक्रीसुतनें हो राज, चक्रवेगनें हो राज, उत्तर श्रेणीनो रे, अधिपति करी राज्यें ठवेजी ॥ ६ ॥ बीजा नाइनें हो राज, उचित ते दीधां हो राज,नगर पुरादिक रे,थापी सहु संतोषीयाजी ॥ अधिपति कीधो हो राज, दक्षिण श्रेणीनो होराज, पवनवेगने रे, नरपतियें घणु पोषीयोजी ॥ ७ ॥ ग्रास पूरवला हो राज, सहुने दीधा हो राज,केइनें दीधा

रे, वलीअ नवा सेवक जणाजी ॥ निष्फल न होयें हो राज, कीधी सेवा हो राज, गुणनिधि साहेब रे, सजारे ते सहु तणीजी ॥ ८ ॥ विरुद्ध स मावी हो राज,योग्य खेचरनें हो राज,पूठी वहुलु रे,सैन्य सहित नृप वाली याजी ॥ वेशी विमानें होराज,सवि प्रिया साथे होराज,पवनवेगादिक राय रे, चक्रवेगथी म्हालीयाजी ॥ ए ॥ खगपति कोडयो होराज, साथे चाल्या होराज, अनुक्रमें आव्या रे, तापस आश्रम जिहां कणेजी ॥ प्रतिपत्ति क रीनें होराज, तापस तोष्या होराज, रोती आश्वासे रे, निज प्रियानें धैरय घणेजी ॥१०॥ हेमप्रज गुरुजी होराज, ज्ञाने जाणी होराज, व्रतनो अव सर रे, अनुग्रह करीने पधारीयाजी ॥ गिरिचूडदेव हो राज,नरपति मलीने हो राज, करता उत्सव रे, बहुविध मनमां धारियाजी ॥ ११॥ हेमजट प्र मुख हो राज,तापस सघला हो राज, लेवे दीक्षा रे,शिक्षा गुरुनी चित्त धरे जी ॥ करे प्रशंसा हो राज, तापस केरी हो राज, करकज जोडी रे, विनय धरी बहु आदरेंजी ॥१२॥ मुनिवर प्रणमी हो राज,नारीनें लेइ हो राज,ल खमी पुरनें रे, बाहिर आव्या ते वहीजी ॥ गगन ते गयुं हो राज,विद्याधर थी होराज, नरपति विजय रे, जाणे शत्रु आव्यो सहीजी ॥ १३ ॥ युद्ध सामग्री होराज, निकले करीनें होराज, विद्याधर दोय ताम रे, श्रीजयान दजी मोकलेजी ॥ प्रणमी जाखे होराज,तुम सुत आया होराज,लखमी ली ला रे, श्रीजयानदनी को कलेजी ॥ १४ ॥ हर्ष आश्चर्य होराज, नृपति पा मे होराज,बहुली ऋद्धि रे, पुत्र आगमन सुणी करीजी ॥ उचित ते आपी होराज, करिवरें बेशी होराज, साहामा आवे रे, चित्त प्रमोद घणो ध रीजी ॥ १५ ॥ उतरे विमानथी होराज, श्रीजयानद होराज, प्रणमे तात नां रे, चरण सरोज सुहंकरुजी ॥ खेचर सहुए हो राज, सहुप्रिया साथें होराज, प्रणमे नृपनें रे, बोलावे वयण मनोहरुजी ॥ १६ ॥ नवमे खमें होराज, त्रीजी ढाल होराज, श्रीजयानदनें रे, रासें पद्मविजय कहीजी॥ हर्षे मलिया होराज, सुखमां जलीया होराज, पुत्रपितायें रे, अतर प्री ति बहु लहीजी ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ एए ॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्र जयंत परें विहु, पेठा नयर मझार ॥ प्रिया सहित माता प्रत्यें, प्रणमे हर्षे अपार ॥ १ ॥ पुत्र पुत्रवधु देखीनें, मनमां हर्ष न माय ॥ श्री

जयपूर्वीपर प्रिया, बोलावे चित्त लाय ॥ २ ॥ मधुर वय प्रिय सांनली,धरती अतिशय प्रीति ॥ गौरी गिरीश चइकुमुदिनी,गज रेवानी रीति ॥३॥ श्रीविजयनी परषदा, माहे अवसर पामि ॥ पवनवेग श्रीजयतणुं, चरित्र कहे अनिराम ॥ ४ ॥ सांनली चित्तमां चमकिया, परषदनें वली ताय ॥ स्तवना करता सहु जना, हैयडे दर्प न माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ आबु अचल रलियामणो रे, जिन राजे ढे ॥ ए देशी ॥

॥ मध्यखंम हवे साधवा ॥ जश गाजे ढे ॥ श्रीजयानद राजान, ठकुराइ ढाजे ढे ॥ पहेला पूरव दिशनणी ॥ जश० ॥ साथें सामत प्रधान ॥ ठ० ॥ १ ॥ सेना चतुरगी करी ॥ ज० ॥ सहु राजवी कीधा जेर ॥ ठ०॥ पूरव सायर तट लगें ॥ ज० ॥ बलवती जस समसेर ॥ ठ० ॥ २॥ वग कलग कालिगना ॥ ज० ॥ देशना जीत्या सहु राय ॥ठ० ॥ पग पग जश थन रोपीया ॥ ज० ॥ नाम सानली नमवा आय ॥ ठ० ॥ ३ ॥ महेंइनाथ मुख राजिया ॥ ज० ॥ जे कोइनी न माने आण ॥ ठ० ॥ जोर करी ते जीतीया ॥ ज० ॥ थाप्या पोतें ते गण ॥ ठ० ॥ ४ ॥ लीधा दमनें नेटणां ॥ज०॥ हवे कांते कांते जाय ॥ठ०॥ पुगी तांबूल प्रमुखनां ॥ज०॥ वृक्षे शोनित वनराय ॥ ठ० ॥ ५ ॥ दक्षणदिश आव्या हवे ॥ ज० ॥ कावेर प्रमुख जे देश ॥ ठ० ॥ जीती नेटणे लीधलां ॥ ज० ॥ मुक्ताफल प्रमुख अशेष ॥ ठ० ॥ ६ ॥ जात्यवत लाखो गमे ॥ ज०॥ मानुं सूरयना केकाण ॥ ठ० सहस्र गमे गजराजीया ॥ ज० ॥ आपे नृप मानी आण ॥ ठ० ॥ ७ ॥ मरिच चदन नें एलची ॥ ज० ॥ सैन्यनें पण नोगमां थाय ॥ ठ० ॥ सह्य दर्डर मलयगिरि ॥ ज० ॥ उलघे श्रीजयराय ॥ठ०॥८॥ केरलादिक नृपजीतिनें ॥ ज० ॥ पश्चिम दिश आव्या जाम ॥ ठ० ॥ युद्ध करीनें जीतीआं ॥ ज० ॥ पारसी परमुख नृप ताम ॥ ठ० ॥ ए ॥ मूके प्रणमी नेटणां ॥ ॥ ज० ॥ जिहां दिनकर तेज घटाय ॥ ठ० ॥ अनिनव सूरय देखीनें ॥ज० मानु पश्चिम समुद्रमां जाय ॥ ठ० ॥ १० ॥ हवे उत्तरदिश साधतो ॥ ज० ॥ कांबोज नें हूण जे देश ॥ठ०॥ युद्ध परानव बहु लह्या ॥ज०॥ पण जीत्या सर्व नरेश ॥ ठ० ॥११॥ हय गय सार ते नेटणा ॥ज०॥ बहु इव्य देइ लख कोडि ॥ ठ० ॥ प्रणमी पदकज सेवता ॥ ज० ॥ सहु सेवे होडाहोडि ॥ठ०॥ ॥ १२ ॥ कैलास रायनें जीतीया ॥ज०॥ हिमाचल नग पर्यंत ॥ ठ० ॥ दोय

खंम दोय पासना ॥ ज० ॥ जीत्या ते दम आपंत ॥७० ॥ १३॥ त्रण खंमा धिप थइ करी ॥ ज० ॥ सहु सैन्य युक्त राजान ॥ ७० ॥ पाछा वली प्रौढो त्सवें ॥ ज० ॥ सार्थे पागीआनें परधान ॥ ७० ॥ १४ ॥ निज नगरें आव्या तिहां ॥ ज० ॥ सहु विद्याधर नरराय ॥७०॥ करे अनिषेक सुविस्तरे ॥ज० अर्द्धचक्रि पदवी थाय ॥ ७० ॥ १५ ॥ गुणवती कन्या गणी ॥ ज० ॥ सह स्रोगमे आपे नूप ॥ ७०॥ परणे ते जयानदजी ॥ ज०॥ अप्सरा पण जी ते रूप ॥ ७० ॥ १६ ॥ राज प्रासादिक सर्वनें ॥ ज० ॥ जेहनें योग्य हुता जेह ॥ ७० ॥ तेहनें ते ते आपीया ॥ ज० ॥ थइ प्रसन्न ने आणी नेह ॥ ॥ ७० ॥१७॥ जे जे जेम परण्या हता ॥ ज० ॥ लघु वृद्ध क्रमें कीधी ता स ॥ ७० ॥ परिछद प्रासादिक सहु ॥ ज० ॥ नृप आपे योग्य जे जास ॥ ७० ॥ १८ ॥ चक्रवेगादिक आवीया ॥ ज० ॥ खेचरपतिनें सतकार ॥ ७० ॥ देई सहु विसर्जीया ॥ ज०॥ सहु गया निज राज्यनें गार ॥७०॥ ॥ १९ ॥ सेवकपणु श्रीजयतणु ॥ ज० ॥ धरता जाणी उपकार ॥ ७० ॥ सुख नोगवता स्वर्गना ॥ज०॥ नित्य पामे जयजयकार ॥७०॥२०॥ नवमा खममांहे कही ॥ ज० ॥ ए चोथी ढाल रसाल ॥ ७० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ ज० ॥ नित्य पामे मगलमाल ॥ ७० ॥ २१॥ सर्वगाथा ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रिया सहस्रोशुं रमें, पण रतिसुंदरी नारि ॥ संनारे नरपति तदा, प ण संदेह लगार ॥ १ ॥ गणिका माता कारणें, मूक्यां बहु थयो काल ॥ शील अक्षत केम संनवे, एहवु हृदयें सार ॥ २ ॥ तास परीक्षा कारणें,शू रदत्त अनिधान ॥ रूपकलावतो घणु, नृपनो मित्र युवान ॥३॥ स्थानक ते विश्वासनु, रतिसुंदरीनें पास ॥ करी परीक्षा लावीयें,एम कही मोकल्यो ता स ॥ ४॥ बहुधन देइ बोलावीयो पल्यंक बेशी जाय ॥ रत्नपुरें पोहोतो व ही,उतरीयो शुन गाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ बहुधन देइ परिछद कर्यो रे, नाडे लीधु गेह ॥ चितना रागी ॥ रति माला गृह ढूकडु रे, वसीयो घरमां तेह ॥ चि० ॥ १॥ आवो आवो रे स यण शुनमित्ता, करियें वात एकांतें एकचित्ता, सयणवातें घणु सुख थाय ॥ चि० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ गणिकाने शील किहां थकी रे, स्वामि करे

इहां राग ॥ चि० ॥ महोटानें कह्यो कोण कहे रे, क्षणमां करुं विराग ॥ ॥ चि० ॥ आ० ॥ ३ ॥ भ्रष्ट करु शीलथी हवे रे, कोइक करीनें उपाय ॥ चि० ॥ दासी रतिमाला तणी रे, एकांतें बोलाय ॥ चि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन आपीनें वश करी रे, पूछे एणी परें वात ॥ चि०॥ एहनें घर नवि दे खायें रे, कोइ पुरुष आयात ॥चि०॥आ०॥ ५ ॥ शुं कारण तेहनु कहो रे, दासी बोलें ताम ॥ चि० ॥ रतिसुंदरीने परणीयो रे, श्रीविलास जस नाम ॥ चि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ आव नगर नृपें आपीयां रे,ते दीधा निजनारि ॥ ॥ चि० ॥ केटलो काल जोग जोगवी रे, तीरथ नमन मिपकार ॥ चि० ॥ ॥आ०॥ ७ ॥ किहांए गयो ते नावीउ रे, खवर न लाधी कांय ॥ चि० ॥ रतिसुंदरी पासें रही रे, रतिमाला निजमाय ॥ चि० ॥ आ० ॥ ८ ॥ सजा रे नित्य निज कला रे, नहीं इहां पुरुष प्रवेश ॥ चि० ॥ शूरदत्त सुणि च मकीयो रे, अहो किम शील कुल वेश ॥ चि० ॥ आ० ॥ ए ॥ मधुरस्वरें निशि गायतो रे, काम दीपन जेणें थाय ॥ चि०॥ चतुराइ घणी केलवे रे,वे शी गोंखने ठाय ॥चि०॥ आ० ॥ १० ॥ फल पत्रादिक शुज करी रे, जेह अपूरव होय ॥ चि० ॥ नित्य दासी करें मोकले रे, प्रीतिकरणनें सोय ॥ ॥ चि० ॥ आ० ॥ ११ ॥ रतिसुंदरी पण सवि लीये रे,देखी ते सस्कार ॥ ॥ चि० ॥ तेह कलाथी चमकती रे, आप कला जमार ॥ चि० ॥ आ० ॥ ॥ १२ ॥ एकदिन दासीनें पूछतो रे, सांजली माहारां गीत ॥ चि० ॥ रीजे छे तुज स्वामिनी रे,के नवि रीजे चित्त ॥ चि० ॥ आ० ॥ १३ ॥ दासीक हे रीजे खरी रे,पण नवि स्तवती तेह ॥ चि० ॥ देवगुरु विण किम स्तवे रे, सती शिरोमणी जेह ॥ चि० ॥ आ० ॥ १४ ॥ शृंगार रस मय ताहरु रे, छे सुंदर गीतगान ॥ चि० ॥ पण तेहने चित्त नवि गमे रे, नवि मांमे तेह कान ॥ चि० ॥आ०॥१५॥ शूरदत्त कहे कामिनी रे, तुज स्वामिनी मुज प्रेम ॥चि०॥ कोइ उपायथी कीजीयें रे,सा कहे करीयें केम ॥चि०॥आ०॥१६॥ एह सतीना स्वप्नमां रे, परनर उपर राग ॥ चि० ॥ लेश मात्र आवे नही रे, तेणे नवि आवे लाग ॥ चि० ॥ आ० ॥१७॥ शूरदत्त कहे सांजलो रे, लेइ जाउ मुज तह्य ॥ चि०॥ सा कहे कोइ नर तिहां कणे रे,पेसी शके न ही जह्य ॥ चि० ॥ आ० ॥ १८ ॥ तिहां केम लेइ जाव तनें रे, साजली मौ न कराय ॥ चि०॥ दासी गइ निज थानकें रे, चितवे अन्य उपाय ॥चि०

॥ आ० ॥१ए॥ सनारतां तस सांनरुं रे, श्रीजयें औषधि दीध ॥ चि० ॥ रूप करी नारी तणु रे, जाउ वठित सिद्ध ॥ चि० ॥आ० ॥ २० ॥ एकदिन दासीनें कहे रे, तीरथे जाशुं काल ॥ चि० ॥ गगनगामिनी विद्याधकी रे, जिनवर नमशु नाल ॥ चि० ॥ आ० ॥ २१ ॥ मुज सम रूप कला अछे रे, मधुरस्वरें करे ज्ञान॥चि० ॥ मूकी जाशु मुज प्रिया रे, सस्नेही इण थान ॥चि०॥ आ० ॥ २२ ॥ पगवधन पथे होये रे, तेणे नवि लेउ संग ॥चि० नित्य आवी तुमे तेहशु रे, रमजो करजो रंग ॥ चि० ॥ आ० ॥ २३ ॥ पांचमी नवमा खममां रे, पद्मविजय कही ढाल ॥ चि० ॥ सांनलो श्रोता जन सवे रे, आगल वात रसाल ॥ चि० ॥ आ० ॥ २४ ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दासी हा कही घर गही,तेणे कयुं नारी रूप ॥ औषधि वल अति आकरु, जाणु न जाय सरूप ॥ १ ॥ निजथानक मधुरस्वरें, गावे गीत रसाल ॥ दासी पण नित्य आवती, आप वचन सनाल ॥ २ ॥ नित्य विनोद करे तेहशुं, दिवसें गमावे काल ॥ जैनगीत रजनी समे, गावे गुण सुरसाल ॥ ३ ॥ रीजि जहे ते सांनली, रतिसुंदरी धरी प्यार ॥ पूछे दासीनें तदा, कोण ए गावे नार ॥ ४ ॥ नरता परदेशें गयो,धनवती ए नार ॥ आतम रमाढे आपणो, गीत गान करे सार ॥ ५ ॥ अधिको कांइ जाणु नही,एहवु कहेती जाम ॥ रतिसुंदरी तव एम कहे, तेडो एहनें आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ देवानंद नरिंदनो रे जिन रंजना लाल ॥ ए देशी ॥

॥ माया स्त्री तेडी हवे रे॥ मनमोहना लाल ॥ आवी करे परणाम रे ॥ चित्त सोहना लाल ॥ दासीयें दीधे आसनें रे ॥ म० ॥ बेठी सुख आराम रे ॥ चि०॥१ ॥ कुक्कर गाम जे पामवु रे ॥म०॥ ते पामी हरषंत रे ॥ चि० ॥ रूप देखी विस्मय लही रे ॥ म० ॥ कदर्प्पमय एकांत रे ॥ चि० ॥ २ ॥ चातुर चित्तथी गोपवी रे ॥ म०॥ नवि परकाश विकार रे ॥ चि०॥ आदर करी रति सुंदरी रे ॥ म० ॥ पूछे कुशल खेम सार रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ रतिसुंदरी पूछे हवे रे ॥ म०॥ कहो तुम जेह स्वरूप रे ॥ चि०॥ बहेनी कोण तुम किहां रहो रे ॥ म०॥ किहां परण्यां अनुरूप रे ॥ चि०॥ ४ ॥ सकल करो ते वारता रे ॥ म० ॥ ते कहे सांनलो वात रे ॥ चि०॥ राजकुमरी हुं वालही रे ॥ म० ॥ परणो विद्याधर जात रे ॥ चि० ॥ ५ ॥ लीलायें इहां

रहेतां थकां रे ॥ म० ॥ देतो अढलक दान रे ॥ चि० ॥ मुजशुं रतिसुख
जोगवे रे ॥ म० ॥ काढे काल अमान रे ॥ चि० ॥ ६ ॥ आबु तीरथ वां
दिनें रे ॥ म० ॥ गयो मुज मूकी एथ रे ॥ चि० ॥ द्रव्य धणु मूकी करी
रे ॥ म० ॥ नवि जाणु गया केथ रे ॥ चि० ॥ ७ ॥ पूर्वे परदेशी इहां रे ॥
म० ॥ वसतो थो एणे गेह रे ॥ चि० ॥ तेह गयो तव अम्हें रह्या रे ॥
म० ॥ मूकी मुज अति स्नेह रे ॥ चि० ॥ ८ ॥ द्रव्य घणुं विलसुं तेणें रे ॥
म० ॥ सुखिणी बहु परिवार रे ॥ चि० ॥ शील पालुं थिर चित्तथी रे ॥
म० ॥ वाट जोउं नरतार रे ॥ चि० ॥ ए ॥ वात सुणी रीजी घणु रे ॥
म० ॥ साधर्म्मिणी तस जाण रे ॥ चि० ॥ आपणे सखीपणुं जाणजो
रे ॥ म० ॥ नित्य आववु एणें ठाण रे ॥ चि० ॥ १० ॥ कथा वार्त्तादिक
कही तुमें रे ॥ म० ॥ मुज मन करवो प्रमोद रे ॥ चि० ॥ माया स्त्री ह
वे नित्य करे रे ॥ म० ॥ गमनागमन विनोद रे ॥ चि० ॥ ११ ॥ निज
घर नररूपें रहे रे ॥ म० ॥ देखी रूप सरूप रे ॥ चि० ॥ सजारे क्षण क्ष
ण प्रत्यें रे ॥ म० ॥ पडियो कर्दर्पकूप रे ॥ चि० ॥ १२ ॥ पुरुषपणे प
रवश थयो रे ॥ म० ॥ चिंतवे चित्त मजार रे ॥ चि० ॥ अहो एक वार
संगम लहु रे ॥ म० ॥ तो सुख पामु अपार रे ॥ चि० ॥ १३ ॥ तेणें तस अ
रथी थइ करी रे ॥ म० ॥ तस घर रहे चिर काल रे ॥ चि० ॥ विविध कला
कौतुक करी रे ॥ म० ॥ रीजवे प्रेम विशाल रे ॥ चि० ॥ १४ ॥ धरम क
था पण बहु करे रे ॥ म० ॥ कामकथा विचें थाय रे ॥ चि० ॥ जेम ते
म वश करे तेहनो रे ॥ म० ॥ तेम करे जोइ अनिप्राय रे ॥ चि० ॥ १५ ॥
क्षीर आहारमां जेम होये रे ॥ म० ॥ नेग कदन्ननो अश रे ॥ चि० ॥ पण
पुण्य पुष्टि करे घणी रे ॥ म० ॥ तेणे करती परगस रे ॥ चि० ॥ १६ ॥
हलुयें हलुयें वधारती रे ॥ म० ॥ कामकथा अनिराम रे ॥ चि० ॥ जेम
जेम रुचि वधे तेहनी रे ॥ म० ॥ तेम तेम करे कथा काम रे ॥ चि० ॥ १७ ॥
जेम जेम प्रीतिवती थइ रे ॥ म० ॥ रतिसुंदरी धरी प्रेम रे ॥ चि० ॥ पर
वडे वचनें तेहनें रे ॥ म० ॥ रीजवे तस मन तेम रे ॥ चि० ॥ १८ ॥ ढ़ही
नवमा खममां रे ॥ म० ॥ पद्मविजय कही ढाल रे ॥ चि० ॥ शीलवती र
तिसुंदरी रे ॥ म० ॥ पामशे मंगल माल रे ॥ चि० ॥ १९ ॥ १३८ ॥

॥ आ० ॥१ए॥ संभारतां तस सांभरयु रे, श्रीजयें औषधि वीध ॥ चि० ॥ रूप करी नारी तणुं रे, जाउं वछित सिद्ध ॥ चि० ॥आ० ॥ २० ॥ एकदिन दासीनें कहे रे, तीरथें जाशुं काल ॥ चि० ॥ गगनगामिनी विद्यावकी रे, जिनवर नमशुं न्हाल ॥ चि० ॥ आ० ॥ २१ ॥ मुज सम रूप कला अछे रे, मधुरस्वरें करे ज्ञान॥चि० ॥ मूकी जाशुं मुज प्रिया रे, सस्नेही इण थान ॥चि०॥ आ० ॥ २२ ॥ पगबधन पथें होये रे, तेणे नवि लेउ सग ॥चि० नित्य आवी तुमें तेहशुं रें, रमजो करजो रग ॥ चि० ॥ आ० ॥ २३ ॥ पांचमी नवमा खममां रे, पद्मविजय कही ढाल ॥ चि० ॥ सांभलो श्रोता जन सवे रे, आगल वात रसाल ॥ चि० ॥ आ० ॥ २४ ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दासी हा कही घर गही,तेणे कयु नारी रूप ॥ औषधि वल अति आकरु, जाणुं न जाय सरूप ॥ १ ॥ निजथानक मधुरस्वरें, गावे गीत रसाल ॥ दासी पण नित्य आवती, आप वचन संभाल ॥ २ ॥ नित्य विनोद करे तेहशुं, दिवसें गमावे काल ॥ जैनगीत रजनी समे, गावे गुण सुरसाल ॥ ३ ॥ रीजि लहे ते सांभली, रतिसुंदरी धरी प्यार ॥ पूछे दासीनें तदा, कोण ए गावे नार ॥ ४ ॥ भरता परदेशें गयो,धनवती ए नार ॥ आतम रमाडे आपणो, गीत गान करे सार ॥ ५ ॥ अधिको कांइ जाणु नही,एहवु कहेती जाम ॥ रतिसुदरी तव एम कहे, तेडो एहनें आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल छठी ॥ देवानद नरिंदनो रे जिन रजना लाल ॥ ए देशी ॥

॥ माया स्त्री तेडी हवे रे॥ मनमोहना लाल ॥ आवी करे परणाम रें ॥ चित्त सोहना लाल ॥ दासीयें दीधे आसनें रे ॥ म० ॥ बेठी सुख आराम रे ॥ चि०॥१ ॥ कुकर गाम जे पामवु रे ॥म०॥ ते पामी हरषत रे ॥ चि० ॥ रूप देखी विस्मय लही रे ॥ म० ॥ कदर्प्पमय एकांत रे ॥ चि० ॥ २ ॥ चातुर चित्तथी गोपवी रे ॥ म०॥ नवि परकाश विकार रे ॥ चि०॥ आदर करी रति सुदरी रे ॥ म० ॥ पूछे कुशल खेम सार रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ रति सुंदरी पूछे हवे रे ॥ म०॥ कहो तुम जेह स्वरूप रे ॥ चि०॥ बहेनी कोण तुम किहां रहो रे ॥ म०॥ किहां परण्यां अनुरूप रे ॥ चि०॥ ४ ॥ सकल करो ते वारता रे ॥ म० ॥ ते कहे सांभलो वात रे ॥ चि०॥ राजकुमरी हुं वालही रे ॥ म० ॥ परण्यो विद्याधर जात रे ॥ चि० ॥ ५ ॥ लीलायें इहां

रहेता थका रे ॥ म० ॥ देतो अढलक दान रे ॥ चि० ॥ मुजशुं रतिसुख भोगवे रे ॥ म० ॥ काढे काल अमान रे ॥ चि० ॥ ६ ॥ आबु तीरथ वां दिनें रे ॥ म० ॥ गयो मुज मूकी एथ रे ॥ चि० ॥ द्रव्य घणुं मूकी करी रे ॥ म० ॥ नवि जाणुं गया केथ रे ॥ चि० ॥ ७ ॥ पूर्वे परदेशी इहां रे ॥ म० ॥ वसतो थो एणे गेह रे ॥ चि० ॥ तेह गयो तव अम्हें रह्या रे ॥ म० ॥ मूकी मुज अति स्नेह रे ॥ चि०॥ ८ ॥ द्रव्य घणु विलसु तेणें रे ॥ म० ॥ सुखिणी बहु परिवार रे ॥ चि० ॥ शील पालुं थिर चित्तथी रे ॥ म० ॥ वाट जोउ भरतार रे ॥ चि० ॥ ए ॥ वात सुणी रीजी घणु रे ॥ म० ॥ साधर्म्मिणी तस जाण रे ॥ चि० ॥ आपणे सखीपणुं जाणजो रे ॥ म० ॥ नित्य आववु एणें ठाण रे ॥ चि० ॥ १० ॥ कथा वार्त्तादिक कही तुमें रे ॥ म० ॥ मुज मन करवो प्रमोद रे ॥ चि० ॥ माया स्त्री ह वे नित्य करे रे ॥ म० ॥ गमनागमन विनोद रे ॥ चि० ॥ ११ ॥ निज घर नररूपें रहे रे ॥ म० ॥ देखी रूप सरूप रे ॥ चि० ॥ सभारे क्षण क्ष ण प्रत्यें रे ॥ म० ॥ पडियो कदर्पकूप रे ॥ चि० ॥ १२ ॥ पुरुषपणे प रवश थयो रे ॥ म० ॥ चिंतवे चित्त मजार रे ॥ चि० ॥ अहो एक वार संगम लहु रे ॥ म० ॥ तो सुख पासुं अपार रे ॥ चि०॥१३॥ तेणें तस अ रथी थइ करी रे ॥म० ॥ तस घर रहे चिर काल रे ॥ चि०॥ विविध कला कौतुक करी रे ॥ म० ॥ रीजवे प्रेम विशाल रे ॥ चि० ॥ १४ ॥ धरम क था पण बहु करे रे ॥ म० ॥ कामकथा विचें थाय रे ॥ चि० ॥ जेम ते म वश करे तेहनो रे ॥ म० ॥ तेम करे जोइ अभिप्राय रे ॥ चि० ॥१५॥ क्षीर आहारमां जेम होये रे ॥ म०॥ भेग कदन्ननो अश रे ॥ चि०॥ पण पुष्प पुष्टि करे घणी रे ॥ म० ॥ तेणे करती परशस रे ॥ चि० ॥ १६ ॥ हलुयें हलुयें वधारती रे ॥ म० ॥ कामकथा अभिराम रे ॥ चि० ॥ जेम जेम रुचि वधे तेहनी रे ॥म०॥ तेम तेम करे कथा काम रे ॥चि० ॥१७॥ जेम जेम प्रीतिवती थइ रे ॥ म० ॥ रतिसुदरी धरी प्रेम रे ॥ चि० ॥ पर वडे वचनें तेहने रे ॥ म० ॥ रीजवे तस मन तेम रे ॥ चि० ॥ १८॥ ढ़ी नवमा खमनां रे ॥ म० ॥ पद्मविजय कही ढाल रे ॥ चि० ॥ शीलवती र तिसुदरी रे ॥ म० ॥ पामशे मगल माल रे ॥ चि० ॥ १ए॥ १७८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन कारिमी स्त्री कहे, यौवन फोकट जाय ॥ वनवल्लीपरें जोग विणुं,तुजनें केम सोहाय ॥१॥ कामक्रीडा वन यौवनं,तरुणनें नवन बन्न ॥ रूप नहीं तुज सारिखु, विश्वमां मोहे मन्न ॥२॥ तुज तनु दीपशिखा परें, तरुणना ल्हृदय पतंग ॥ रमणिक सहज स्वनावथी, सघलां ताहारां अंग ॥ ३॥ सामग्री सवि पामीनें, सघली निज आधीन ॥ सफली ते केम नवि करे, रहे जेम दुःखिणी दीन ॥ ४॥ सफली पतिसगे होये, तस नवि मालिम कांय ॥ खबर न जीवे के मूउं, तेणें पति नविन कराय ॥ ५ ॥ यत ॥ नष्टे मृते प्रव्रजिते, क्लिबे च पतिते पतौ ॥ पचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्योविधीयते ॥ १ ॥ एहवां शास्त्रनां वचनथी, अपयश पण नवि थाय ॥ कुलस्त्रीनें दूषण नही, तुजथी गन्नु न कांय ॥६॥ वली गणिकानी तु सुता,तुजनें बाधा न कोय ॥ नवो नरता तेणें कीजीयें, शु बहु कीधे होय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ एहवां वयण सुणी करी, पीडा लही चित्त अत्यंत मेरे लाल, ल्हृदय शल्ये जेम कापीयुं, तेहनें धिक्कार करंत मे० ॥ १ ॥ सतीरे शिरोमणि एम लहो ॥ ए आंकणी ॥ माया स्त्री तव बोलती, में ताहरी परीक्षा काम मे० ॥ सतीपणु तुज निरखवा, हु बोली तुजनें आम मे० ॥ स० ॥ २ ॥ हु ताहरी दुशमन नहीं, मुज वचनें ऊपनो खेद मे० ॥ सखीपणाथी ते खमो, हु समजी तुमचो नेद मे० ॥ स०॥३॥ एहवे मधुरें वयणथी, रतिसुदरीनें करी शांत मे० ॥ रतिसुदरी पण खामती, वली तिमहिज थइ निभ्रांत मे० ॥ स० ॥ ४ ॥ पूर्वपरें वली गावती, कहेती पुण्यनां आख्यान मे० ॥ विच विचं काम कथा करे,वली कामनां करे गीत गान मे०॥स०॥ ॥ ५ ॥ निजमदिर नररूपथी, राणी चित्त सरल स्वनाव मे० ॥ आवर्जन करवा नणी, वजमाल पयो लही दाव मे० ॥ स० ॥६ ॥ अपूरव वस्तु मोकले, वली मोहननां गीत गाय मे० ॥ कामें अंतर पीडीयो,धर्मबुद्धि नाठी ते जाय मे० ॥स०॥७ ॥ अंग ठवी श्यामल थइ, रतिसुदरीनें नित्य ध्याय मे० ॥ नूख तरष गइ वेगली, स्वामि द्रोह पण न गणाय मे०॥स०॥ ॥ ८ ॥ निद्रा नावे रातिमां, राणीनो वांछे योग मे० ॥ आय उपाय घणा करे, पण न मले तेहशुं जोग मे० ॥ स० ॥ ए ॥ किमहीक आकार

श्रंगितें, रतिसुंदरी समजी चित्त मे० ॥ शुद्ध हृदयथी चितवे,एतो थाये ठे ठल नित्य मे० ॥ स० ॥ १० ॥ ए स्त्री जेह्वु गाय ठे, गातो नर पूर्वें एम मे० ॥ पाडोशी रहेतो थको, ए वात हशे कहो केम मे० ॥ स० ॥११॥ मुज देखी एहनें वधे, श्रंगें केम कामविकार मे० ॥ स्वर गति चेष्टा श्रंग नी,लक्षण पण नर श्राकार मे० ॥स०॥ १२ ॥ नारी रूपें एह देखीयें, पण नारी नहीं निरधार मे० ॥ कांइक कारक पामीनें, थयो पुरुष ते मायाना रि मे० ॥ स० ॥ १३ ॥ डुराचारी कोइ देखीयें, कामातुर पुरुष निदान मे० ॥ करवा शीलनी खंमना, 'श्राव्यो मुज करतो तान मे०॥स० ॥१४॥ एह्वे श्राचारें करी, श्रपराधी माहारो एह मे० ॥ निग्रह करवो एहनो, में श्रवसर पामी तेह मे० ॥ स० ॥ १५ ॥ सतिय शिरोमणि एणी परें, चित्तमांहे धारी विचार मे० ॥ तेहशुं वात विनोदनी, करे पूरव परें ते उ दार मे० ॥ स० ॥ १६ ॥ एक दिन तेहशु गोवडी, करतां श्रालाप सलाप मे० ॥ लाज मूकीनें बोलती, शणगार रसें चित्त पाप मे० ॥ स० ॥१७॥ कामकथा विस्तारती, उत्तम मारग करी दूर मे० ॥ सांजली वाह्यथी रीज ती, रतिसुदरी श्राणद पूर मे० ॥ स० ॥ १० ॥ कहे रे सखी मुजने वाल्ह ही, मीठी लागे तुज वाण मे० ॥ तुज वयणें मुज चित्त चल्युं, रतिसुख जोगवु सुख खाण मे० ॥ स० ॥१ए॥ पण इछु जे खाइयें, लालच मीठा इनी होय मे०॥ करीयें श्रकारय पण तथा, तेहवो सयोग मले कोय मे० ॥स०॥ २० ॥तेहवो तरुण कोइ नर मले, गुणवत श्रद्भुत श्राकार मे० ॥ पंमित सर्व कलानिधि,लक्षणनें रूप चमार॥मे०॥स०॥२१॥प्राण दीयेप्रियानें वली, एहवो धरे प्रेम विशाल मे० ॥ एहवो जरता कीजीयें, रमीयें वली रंग रसाल मे० ॥ स० ॥ २२ ॥ सातमी नवमा खंममां, कही पद्मविजय वर ढाल मे० ॥ राखे शील केणी परें, ते सांजलो वात रसाल॥मे०॥स०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ रतिसुदरीनां वयण ते, सांजली हर्ष न माय ॥ माया स्त्री कहे सांजलो, उत्तम कहु उपाय ॥ १ ॥ रूप कलाथी श्रागलो, ठे माहारो जरतार ॥ रूपें पुरंदर सारिखो, धनद परें दातार ॥ २ ॥ स्नेह धरे तुज उपरें,तेडो तमारी पास ॥ इछा पूरण कीजीयें, बेहुनी फलशे श्राश ॥३॥यत ॥ पतिव्रता सदा पत्यु, रनुकूला स्थिराशया ॥ प्रियमेवाचरत्युर्चै, रुच्चरंते च चारुता॥१॥दोहा॥

पतिव्रता पणे मुजने, शोकनी अरुचि न थाय ॥ तेणें तुज जेवो होय ते, प्रग ट करो अभिप्राय ॥४॥ जे नें मुजपति मोकल्यु, राणी बोले ताम ॥ सर्वबिंब ना सारिखु, जिहां नही प्राप्ति दाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ ठेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

॥ मुज भरतारने धन छे बहुलु, जोइयें ते तमे मागो ॥ भोग सामग्री जग मां जोतां, नावे कोडीमे भागो ॥ १ ॥ जूओ तुम ख्यालो, सतीयानो प्रपंच, सुणीनें चित्त पखालो॥एम जाणी तुमे भवि जीव के शील ते पालो॥फुल्लहो न रभव तुमें पामीने अजुआलो ॥ ए आंकणी ॥ मोकल्यु जे मागो ते तुमनें, भोग लाभ वली थाशे ॥ कामपीडा मुज पतिनी टलशे, बेहुनां डु:खडां जा शे ॥जू० ॥ २ ॥ राणी कहे जो देवा शक्ति,तो आपो धन कोडी ॥ जो वि श्वास न आवे तुमने,तो दीयो मुज अर्द्धकोडि ॥ जू० ॥ ३ ॥ अर्द्धकोडी आवे तव लावे, सांभली प्रमुदित थाय ॥ अंगीकार करीनें निज घर, माया स्त्री हवे जाय ॥ जू० ॥ ४ ॥कामवशें करी कांइ न देखे, रात दिवस जे अ ध ॥ अंधथकी कामांध ते अधिको, नावे शीलनो गंध ॥ जू० ॥ ५॥ मत दिवा पश्यति नो घूक ,काकोनक्त न पश्यति॥अपूर्व कोपि कामांधो,दिवा नक्त न पश्यति ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ अर्द्ध कोडी निज दासी हाथें, मोकल्यु पूरव दिन्न ॥ सकेतित दिवसें नररूपें, अर्द्ध कोडी लइ धन्न ॥ जू० ॥ ६ ॥ रतन गांठडी लेई भनो, राणीने दरबार॥मणि कचन आभूषण पहेरी, वली बहु करी शणगार॥जू० ॥७॥ वस्त्रादिकनो आडबर बहु, देखे किंकरी जाम ॥ ज इनें सभलावे राणीनें, दासी दोडी ताम ॥ जू० ॥८ ॥ द्वारमांहे तेडी बे साड्यो, चित्रशालामांहे तेह ॥ अर्द्धकोडी दासीने हाथे, वली मोकलतो जे ह ॥ जू० ॥ए ॥ पूर्व पहेलेनां भेला करती, रतिसुदरी ते राणी॥ तेजवत बहु रत्न देखीनें, चित्तमां चितवे शाणी ॥ जू० ॥ १० ॥ हर्ष लहे विस्मय कांइ पामी, त्रास रहित ते देखी ॥ अहो अपूरव एह रतन छे, पूरव समान गवे षी ॥ जू० ॥११ ॥ मुज भरतारनां रत्न सरिखां, वृत्तादिक आकार ॥ रक्ता दिक वर्णें वली तेहनो, दीसे छे विस्तार ॥ जू० ॥१२॥ मानुं सूर्यमंडलथी आयां, स्निग्धादिक गुणसार ॥ सख्यातित स्वामि घर दीठां, तेहिज ए निरधा र ॥ जू० ॥ १३॥ जाणु मुज पतियें मोकलीयो, बहु आपीनें रत्न ॥ मुज देखी चलचित्त थयो ए, तेणें ए करतो यत्न ॥ जू० ॥ १४ ॥ कुमेति स्वा

मिठोही पातकी, नरकनो जावण द्वार ॥ पण मूरख नवि जाणे एटलु, अगम्य होये सति नार ॥ जू०॥ १५॥ तेहमां पण नवि साहामुं जोइयें,जे होयें नृपनी राणी ॥ तास गमननी वात तो दूरें, जे माता सम जाणी ॥ ॥ जू० ॥१६॥ यत ॥ राजपत्नी गुरो पत्नी, पत्नी च सुहृदस्तथा ॥ पत्नीमाता स्वमाता च, पंचैता मातर स्मृता ॥१॥ पूर्वढाल ॥ त्रिविध सती उपर ए माया, करतो पण अवेखु ॥ पण पुरुषाधम निजस्वामिनो, ड्रोहीपणे ए देखु ॥ जू० ॥ १७ ॥ अम दपतिनो ए अपराधी, नवि करीयें विशवास ॥ निर्लज्ज डुष्ट बुद्धि सकषायी, बोले मरषा नाष ॥ जू० ॥ १८ ॥ यत ॥ अ तर्डुष्टधिय पापा , कृपामुक्तागतत्रपा ॥सततं कोपना केपि,व्रतलोपेप्यनीरव ॥ १ ॥गर्त्ती शूकरवन्नित्य, नि श्चूका कामलालसा ॥सकषायामृषावाद, वि डुरा सडुरोदरा ॥२॥ व्यंसकाव्यसनव्यास,रसिकाविकथारसा ॥ विरसा शुद्ध धर्मेषु, निर्गुणा स्वार्थवत्सला ॥३॥लुब्धा क्रुध्धा शठा कुटा ,परोपकृतिकर्मसु॥ डुराचाराश्चडुर्वाच प्रपंचपटवस्त्रियां ॥ ४ ॥ इत्याद्यशेषडुर्दोष, डुर्दशादूषिता त्मनां ॥ अधमाधमशीलाना, मपि नो सगति शुन्ना ॥५॥ ढाल पूर्वली ॥ धर्मे वर्जित काम अधरा, सती सरूप न जाणे ॥ प्राणांतें पण शील न लोपे, महासती जेह वखाणे ॥ जू० ॥१९॥ फरस न सहे कोइ अन्य पुरुषनो, जेम अग्निनी ज्वाला ॥ असतिपणु नवि तेह आचरे, मरण करे पण बाला ॥ ॥ जू० ॥ २० ॥ कुलस्त्री स्वपनें पण निज मेलु, शील न करे कोइ कालें ॥ कुलने रतन दीपपरें रूडी, तेह सती अजुआले ॥ जू० ॥ २१ ॥ बलात्कार थी नर सुरपति पण,शील सतीनु न लोपे ॥ जो लोपवा जाये तो तेहनें,बाली नस्म करे कोपें ॥ जू० ॥ २२ ॥ केशरीखध केश अहिमस्तक, मणि वाघण पय जाणो ॥ चमरी पूछ लेवा कोण समरथ, जो पण होये अति शाणो ॥ जू० ॥२३॥ जीवतां शील सतीनु न नागे, तेणे ए मूरख माथे ॥ शील माणिक मुज हरवा आव्यो, सतिशिरोमणि साथें ॥ जू० ॥ २४ ॥ धन्य ए रतिसुंदरी शीलवती, नाम लीधे अघ जाय ॥ नवमे खंडें आठमी ढालें, पद्मविजय गवराय ॥ जू० ॥ २५॥ सर्वगाथा ॥ २३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लकुट प्रहार विना नही, शुद्ध वाजरी ज्वार ॥ तेम शिक्षा विण न वि रहे, घरमां जे होयें नारि ॥ १ ॥ मूर्ख चपेटा विण नही, सहेजें पाध

रो होय ॥ तेम शिक्षा देवी खरी, एहमां पाप न कोय ॥ २ ॥ जेम कर्मां नत्तु फल लहे, एणी परें करी विचार ॥ दासीनें तेडी कहे, तांनल सुख प्रकार ॥ ३ ॥ सुपनें पण वांछु नही, ए पापीनो संग ॥ पेसवा दीयो मम घारमां, ते पण वित्त प्रसंग ॥४॥ जइ कहो अमची स्वामिनी, स्नान करी शणगार ॥ थइ तैयार बोलावशे, जाणो हृदय मजार ॥ ५ ॥ ए मणिमय पल्यंक ठे, रति सुंदरीयें दीध ॥ तिहां लगें रहो तुमे इहां कणें, जाणो वंछित सिद्ध ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ प्यारे मोकु ले चलो ॥ ए देशी ॥

॥ रतिसुंदरीयें मोकल्यु, ल्यो ए सुगंधी तंबोल हो ॥ नाना इव्यशुं चे लीयो, मुख थाये रंगचोल हो ॥ १ ॥ प्यारे तोकु ले चलु, ले चलुंगी मुज साथ हो ॥प्या०॥ ए आंकणी॥ इत्यादिक वचनें करी, उपजावी सुखशात हो ॥ मुज पासें आवो तुम्हें, जाखो मुज अवदात हो ॥ प्या०॥२॥ ते करी आवी सवे कह्यु, पण तंबोलमां ताम हो ॥ तरष लागे घणी जेहथी, ए हवा इव्य अनिराम हो ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सुखमां रहे रतिसुंदरी, पल्यंक उ पर खास हो ॥ शूरदत्तनी सेवा करे, दासीयो विनय विलास हो ॥प्या० ॥ ४ ॥ बहु उपचार करे वली, पाद पखाले तास हो ॥ मणिपर्यंक रुडी तूलिका, शयन करे सुखवास हो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ स्वर्गनां सुख जोगवुं अबु, एम माने मनमांहि हो ॥ देवांगना सम दासियो, देखी मन उछा हि हो ॥ प्या० ॥६॥ कथा वारता करतां थकां, उपजे अंतर प्रीति हो ॥ सर्वस्वादथी शिरोमणि, तंबोलनी जली रीति हो ॥ प्या० ॥ ७ ॥ वारंवा र आस्वादता, विषय तृष्णापरें तास हो ॥ तंबोलना परजावथी, लागी अ तिय पिपास हो ॥ प्या०॥ ८ ॥ पाणी मागे ते हवे, दासीयो गइ घरमांहे हो ॥ निज स्वामिनीनें वीनवे, स्वामी तरष अथाह हो ॥ प्या० ॥ ए ॥ स्वामिनी कहे सुणो किंकरी, मदकारी सुरा सार हो ॥ आपणा घरमां तैयार ठे, इव्य अनेक प्रकार हो ॥ प्या० ॥ १० ॥ वासित्तनें महा पराक्रमी, स्वादवंत घणु तेह हो ॥ शाकर डाख जलथी घणु, मधुरपणानो गेह हो ॥ प्या० ॥ ११ ॥ शीतल निर्मल तेह ठे, इव्य सुगंध सुवास हो ॥ जल थानकें पाउ तुमें, वात म करशो तास हो ॥ प्या० ॥१२॥ स्वामिनी आ णा शिरें-करे, स्वाड जल चमकार हो ॥ पाइ तेणें वधतो थयो, काम इछा

नो विकार हो ॥ प्या० ॥१३॥ लोचन मीचाइ गयां, आसव नीरनो नेद हो ॥ कनक जाजनें समज्यो नही, वलीय पिपासानो खेद हो ॥प्या०॥ ॥ १४॥ पान करी सूतो ढोलीये, पापी मन आराम हो ॥ क्षणमां घूमायो घणु, शव परें पडीयो ताम हो ॥ प्या० ॥ १५ ॥ नवि हाले चाले किमे, साप मश्यो होये जेम हो ॥ मूर्छाणो पीडा लहे, मानु जमें दीठो नेम हो ॥ प्या० ॥ १६ ॥ दीर्घनिद्रानी वेदेनही, आवी निद्रा ताम हो ॥ मृतक स मो जाणी करी,शका रहित थइ जाम हो ॥प्या०॥१७॥ शोधे अग शूरहस्तनु, देखे तव शिरमांहे हो ॥ वेणीमांहे गोपवी हिके, औषधि दीठी त्यांहि हो ॥ प्या० ॥ १८ ॥ हर्षथी दासीयो लेइनें, आवे स्वामिनी पास हो ॥ आपे रतिसुंदरी करें, ते पण लहे उल्लास हो ॥ प्या० ॥ १९ ॥ जोइ जोइनें ते लखी, विस्मय पामी चित्त हो ॥ वदनकमल विकस्वर थयु, हृदयें धरे जे म वित्त हो ॥ प्या० ॥ २० ॥ दिव्य औषधि ए पति तणी, महाप्रनावनु धा म हो ॥ माया मदिर माहरी, मातनें शिक्षा काम हो ॥प्या०॥ २१ ॥ मु जपतियें शूकरी करी, ते एहनें परनाव हो ॥ लांबी पोहोली पण तेहवी, वर्ण प्रमुख सवि नाव हो ॥ प्या०॥ २२ ॥ निश्चय हु तेहज लहु, नहींतो ए डुराचार हो ॥ नारि रूप ए केम करे, डुष्ट आशय निरधार हो ॥प्या०॥ ॥ २३ ॥ परनर नवि पेशी शके, कोई मुज आवास हो ॥ तिहां ए आव्यो पापीयो, औषधि धरी निज पास हो ॥ प्या० ॥ २४ ॥ केम एहनें कर ए चढी,विस्मय लहु बहु एह हो ॥ अथवा स्वामीयें दीधली, जाणशुं आ गल तेह हो ॥ प्या० ॥ २५॥ नवमी नवमा खंममां, पद्मविजय कही ढा ल हो ॥ शीलें मनवंछित फले, शीलें मगल माल हो ॥ प्या० ॥२६॥२७०॥

॥ दोहा ॥

॥ जेम कहेशुं तेम नांखशे, बीजो नांहि विचार ॥ पण औषधि परनाव थी, करु मर्कट आकार ॥ १ ॥ बीहीक देखाडी नली परें, शिक्षा देइश सार॥ रतिसुंदरीयें चित्तमां,एह कर्यो निरधार ॥२॥ दासीनें परशसतो,नलु की धु तें काम ॥ आपी औषधि लावीनें, एह पासेंथी आम ॥ ३॥ धन्य पुण्य विनीत तुमें, कीधा गुणनी जाण ॥ तुमें स्वामिनी नगति घणु,केतां करु वखाण ॥ ४ ॥ उपजाव्यो आनद बहु, वयण कही रसाल ॥ सूतां सुख निद्रा थकी, राति गमाव्यो काल ॥ ५ ॥ ब्राह्म मुहूर्त्ते उठी करी, आवश्यक

दोय प्रकार ॥ करीनें चेटीने कहे,लावो ए गेह मकार ॥६॥ ते पण लावी त तक्षणे, उगाडी तेणी वार ॥ जवनी अंतर पोते रही,बोले वयण उदार॥७॥

॥ ढाल दशमी ॥ पारधीयानी ढाल स्वामी स्वयप्रज्ञ सुंदरु रे ॥ ए देशी ॥

॥ कामें अंध प्रमादीयो रे, हरष लहे अत्यंत रे ॥ परवसीयो ॥ सुजनें राणी मली हवे रे, एम घूर्णित राचत रे ॥ सुखरसीयो ॥ १ ॥ औषधी शि र पापी करी रे, मर्कट कीयो तास रे ॥ प० ॥ लोह सांकल दासी कनेंरे, मगावे सुविलास रे ॥ सु० ॥ २ ॥ परस्त्री लंपटनें गले रे, घाली ऊकडपो तेह रे ॥ प० ॥ माया खरी पापी लही रे, आवी कोपनें गेह रे ॥सु०॥३॥ वारवार संजारती रे, ताडना करे अपार रे ॥ प० ॥ नित्य नचावे तेहनें रे, वचन कहे तेणी वार रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अग्निमां नाखु तुजनें रे, रे पापिशिरदार रे ॥प०॥ दासी पासें बीह्विरावती रे, नित्य प्रत्यें वारंवार रे ॥सु० ॥५॥ स्वामी झोही पापीया रे, रे डुर्मद डुराचार रे ॥प०॥ परस्त्रीनी इछा तणु रे, फल जोगव ए लगार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ झोहमां स्वामी झो हनु रे, पापनु फल कहे कोण रे ॥ प० ॥ वली परस्त्रीना जोगनी रे, इछामां नही ऊण रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तास विपाक फल कोण कहे रे,सम रथ वली वाचाल रे ॥प०॥ विषय आशा पासें नडघा रे,डुःख पामे असरा ल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जनम अनंत मरण लहे रे, नरकादिक लहे प्राय रे ॥ प० ॥ तेहनां डुःख केवली लहे रे, पण मुखथी न कहाय रे ॥ सु० ॥ ॥९॥ यत ॥ सल्लं कामा विषं कामा , कामा आसिविषोवमा ॥ कामा पछे माणा, अ कांमा जंति डुग्गइं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ विषनें विषयमां अंतरो रे, जाख्यो छे अति जेण रे ॥ प०॥ एक वार मारे खाधु थकु रे,एक संजारे ते ण रे ॥ सु० ॥१०॥ यत ॥ विषस्य विषयस्यैव, दूरमत्यंतमंतरं ॥ उपभुक्तंवि षं हंति, विषया स्मरणादपि ॥१॥ पूर्वढाल ॥ निजपरस्त्री वांठा हवे रे, जो सुख चाहे अंग रे ॥प०॥ नहीं तो इह जव परजवें रे, डुःख पामीश एकंग रे ॥ सु० ॥११॥ इत्यादिक उपदेशथी रे, हित करती अविशेष रे ॥ प० ॥ स ज्ञान पीडघा रस वींधे रे, शोलडी परें सुविशेष रे ॥ सु० ॥१२॥ सांजली रा णी देशना रे, गर्हित निज आचार रे ॥प०॥ निज आतम बहु शोचतो रे, निंदा करे अपार रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ मार खाये आंसु जरे रे, दीन वदनें क हे वात रे ॥ प० ॥ में तुज गुनहो बहु कर्यो रे, मूक मूक हवे मात रे ॥

॥ सु० ॥ १४ ॥ राणी कहे डु खमा पड्यो रे, बोले दमणो एम रे ॥प०॥ पण ते पापनां फल कह्यो रे, बूटक वारो केम रे ॥ सु० ॥१५॥ सहेवु डु ख नरकादिके रे, नव अनंत लगें प्राय रे ॥ प०॥ पाप इह्यानी वानगी रे,एणें नव तुजनें आय रें ॥ सु० ॥ १६ ॥ जेहवु बांध्यु तेहवु रे, जोगवीयें निर धार रे ॥ प०॥ धान्य वावीयें जेहवु रे, लणीयें तेह प्रकार रे ॥सु०॥१७॥ कीधुं जोगवीयें सवे रे, शुन के अशुन जे कर्म रे ॥प०॥ विण जोगवे नवि बूटीयें रे, ए जिनशासन मर्म रे ॥ सु०॥१८॥ ॥ परशास्त्रेपि यत ॥ कृतक र्मक्षयोनास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्यं, कृतं कर्म शुजाशुन॥ ॥ पूर्वढाल ॥ वारंवार एम सांजली रे, राणीनो उपदेश रे ॥प० ॥ मारनें बीहीक वली लही रे, पाम्यो बोध विशेष रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ डुर्मन मूकी नें हवे रे, दीन वदननें नयण रे ॥ प० ॥ विनयथकी चेष्टा करी रे, पद प्र णमे अधोवयण रे ॥ सु० ॥२०॥ फरी फरीनें ते खमावतो रें, परस्त्री निय म करंत रे ॥ प० ॥ अगित आकारें करी रे, राणी तेह लहंत रे ॥ सु० ॥ ॥ २१ ॥ सरल दयावती घणी रे, सतिय शिरोमणि तेह रे ॥ प० ॥ मूकावे दासी कनें रे, बंध सांकल दृढ जेह रे ॥ सु० ॥२२॥ पूर्वरूप नर कीधलो रे, औषधी लेइ सार रे ॥ प०॥ जीवतो पण अण जीवतो रे,अल्प अन्न दीये आहार रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ दशमी नवमा खम्मां रे,पद्मविजय कही ढाल रे ॥प०॥ डुर्जन सज्जन सगथी रे, पामे मंगलमाल रे ॥ सु०॥२४॥२०१॥

॥ दोहा ॥

॥ एकदिन राणी तेहनें, दासी पासें तास ॥ दृढबंधन बंधावीनें,अगनि लावी पास ॥ १ ॥ लोह शिली कन्ही करी, श्रीजयानंदनो दास ॥ नाम लिखावे जालमां, पामे डु खनी राशि ॥२॥ निन्नंडे वली बहु परें, कहुई डु सह वाणि ॥ अशुजना फल सनलावीनें, निश्चल करे सुजाण ॥ ३ ॥ पर स्त्री नियम ते आपीनें, मूक्यो ते नर जाम ॥ बंध गेडी स्वस्थन करी, प रियची नाखी ताम ॥ ४ ॥ परनर मुख जोवु नही, परिश्रचि अतरें तेह॥ वेसारी पूछे इस्यु, तु कोण आव्यो केह ॥ ५॥ किहांनो वासी किहां थकी, स्यो कारय उद्देश ॥ साचु कहे धुरथी सवे, केम कीधो एम वेश ॥ ६ ॥

दोय प्रकार ॥ करीनें चेटीने कहे,लावो ए गेह मझार ॥६॥ ते पण लावी त तक्षणे, उगाडी तेणी वार ॥ जवनी अंतर पोते रही,बोले वयण उदार॥७॥
॥ ढाल दशमी ॥ पारधीयानी ढाल स्वामी स्वयप्रज सुंदरु रे ॥ ए देशी ॥
॥ कामें अध प्रमादीयो रे, दरप लहे अत्यत रे ॥ परवसीयो ॥ मुजनें राणी मली हवे रे, एम घूर्णित राचत रे ॥ सुखरसीयो ॥ १ ॥ औषधी शिर थापी करी रे, मर्कट कीधो तास रे ॥ प० ॥ लोह सांकल दासी कनेंरे, मगावे सुविलास रे ॥ सु० ॥ २ ॥ परस्त्री लपटनें गले रे, घाली ऊकडयो तेह रे ॥ प० ॥ माया खरी पापी लही रे, आवी कोपनें गेह रे ॥सु०॥३॥ वारवार सन्नारती रे, ताडना करे अपार रे ॥ प० ॥ नित्य नचावे तेहनें रे, वचन कहे तेणी वार रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अग्निमां नाखु तुजनें रे, रे पापिशिरदार रे ॥प०॥ दासी पासें बीहिवरावती रे, नित्य प्रत्यें वारवार रे ॥ सु० ॥५॥ स्वामी ड्रोही पापीया रे, रे डुर्मद डुराचार रे ॥प०॥ परस्त्रीनी इछा तणु रे, फल नोगव ए लगार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ ड्रोहमां स्वामी ड्रोहनु रे, पापनु फल कहे कोण रे ॥ प० ॥ वली परस्त्रीना नोगनी रे, इछामां नही कण रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तास विपाक फल कोण कहे रे,समरथ वली वाचाल रे ॥प०॥ विषय आशा पासें नडया रे,डुःख पामे असराल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जनम अनत मरण लहे रे, नरकादिक लहे प्राय रे ॥ प० ॥ तेहनां डुःख केवली लहे रे, पण मुखथी न कहाय रे ॥ सु० ॥ ॥९॥ यत ॥ सल्लं कामा विष कामा , कामा आसिविषोवमा ॥ कामा पछे माणा, अ कांमा जति डुग्गइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ विपनें विषयमां अंतरो रे, नाख्यो ठे अति जेण रे ॥ प०॥ एक वार मारे खाधु थकुं रे,एक सन्नारे तेण रे ॥ सु० ॥१०॥ यत ॥ विषस्य विषयस्यैव, दूरमत्यंतमतरं ॥ उपभुक्तविषं हंति, विषया स्मरणादपि ॥१॥ पूर्वढाल ॥ निजपरस्त्री वांछा हवे रे, जो सुख चाहे अग रे ॥प०॥ नहीं तो इह नव परनवें रे, डुःख पामीश एकग रे ॥ सु० ॥११॥ इत्यादिक उपदेशथी रे, हित करती अविशेष रे ॥ प० ॥ सज्ञान पीडया रस दीये रे, शोलडी परें सुविशेष रे ॥ सु० ॥१२॥ सांनली राणी देशना रे, गर्हित निज आचार रे ॥प०॥ निज आतम बहु शोचतो रे, निंदा करे अपार रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ मार खाये आंसु जरे रे, दीन वदनें कहे वात रे ॥ प० ॥ में तुज गुनहो बहु कस्यो रे, मूक मूक हवे मात रे ॥

न पलोठं रे ॥ मो० ॥१६॥ नवि आलाप संगति करुं रे, न करुं वली श णगार रे ॥ तांबूलादिक नवि लेउ रे, नवि करु स्निग्ध आहार रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ नख पण नवि लेवरावीयें रे, फूलमालनें स्नान रे ॥ धूपनें अं गराग वली रे, तजीयां करी अपमान रे ॥ मो० ॥ १८ ॥ प्रोषितप्रिय स तीआ तणो रे, पालुं सवि आचार रे ॥ काम शतोपण ऊपनें रे, नवि पर पुरुषनो चार रे ॥ मो० ॥ १९ ॥ आज लगी पर पुरुषनो रे, नवि दीधो प रवेश रे ॥ तुज साथे केम आवीयें रे, ए अवधार विशेष रे ॥ मो०॥२०॥ एकासन केम वेशीयें रे, तेणें जइ मुजपति पासें रे ॥ तुमचा साथ विना न ही रे, आवछुं एम प्रकाशे रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ नवमा खमर्मा ए कही रे, अगीयारमी ए ढाल रे॥मीठी सरस सुधा समी रे, पद्मविजय सुरसाल रे॥ ॥ मो० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ३२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहेजे स्वामिनें जइ,जे कहुं वचन प्रकार ॥तुमें पुण्यवता राजीया, सो नागी शिरदार ॥ १ ॥ रूपवती सहसो गमे, ठाम ठाम लह्या नार ॥ तेहनी प्रीति पटतरें, मुज नवि देखो किवार ॥ २ ॥ पण तुम दर्शन वांछती, डुर्घ ट पासु केम ॥ हुं तुमने ध्याउ सदा, तुम न संभारो प्रेम ॥ ३ ॥ पण हुं र ति तुमें स्मर अछो, तुम आयत मुज प्राण ॥ वेचाथी लीधी तुमें, तेहनुं न करो त्राण ॥ ४ ॥ करवो प्रसाद तो वेगलो, चिता पण तजी मुज्ज ॥ कोण आगल कहीयें कहो, स्वामी मूकी तुज्ज ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ नराणानी ॥ जेम मधुकर मन मालती रे ॥ ए देशी ॥

॥ बहु नारीना प्रेमथी रे, रुंध्युं छे तुम चित्त रे ॥ राजनजी ॥ तिहां एक को रे माहरो रे, द्यो अवकाश ते नित्य रे ॥ राजनजी ॥१॥ तुम विण अवरछुं ना रमुगी ॥ ए आंकणी ॥ इंद्रियमां मन मोटकु रे, तेहनो करी अपहार रे ॥ रा० ॥ केम मूकी मुज एकली रे, माहारे तुमें आधार रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ॥ २ ॥ करुणानिधि चिंता करो रे, शरणागत मुज स्वामि रे ॥ रा० ॥ र विप्रजा परें थइ चंद्रिका रे, वेदगाया जेम ठाम रे ॥रा०॥तु० ॥ ३ ॥ मुज उ पर प्रसन्न थइ रे, तेहवा मोकल्यो जेम रे ॥ रा० ॥ माहरी वात जे में क ही रे, कहे जे संभारी तेम रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ४ ॥ वली मुज नर्त्तानी तुमें रे, जाणो यथारथ वात रे ॥ रा० ॥ तुम मुज मन हरखाववा रे, नाखो

॥ ढाल अगीआरमी ॥ जंबू कुमर वैरागीयो रे, मात
पिता प्रतें नासे रे ॥ ए देशी ॥

॥ एह प्रश्नें मन हरषतो रे कृतारथ निज माने रे ॥ वात यथारथ दाखवु रे, सांजलो थिर थइ कानें रे ॥१॥ मोरी मातजी रे, सांजलो वात हमारी रे ॥ तुम वातजी रे,अमृतथी अतिप्यारी रे ॥ ए आंकणी ॥ विजयपुरें पुरदर समो रे, श्रीविजयराजनो पूत रे ॥ रायसहस्र सेविजतो रे, देवता जेम पुरुहूत रे ॥ मो० ॥ २ ॥ श्रीश्रीजयानद नरपति रे, सूर्य अपूरव सरिखो रे ॥ मृडकरथी विकश्वर करे रे, कमलाकर चित्र परखो रे ॥ ॥ मो० ॥ ३ ॥ क्षत्री सुत हु तेहनो रे, सुरदत्त मुज नाम रे ॥ सेवक हु सुखीयो सदा रे, परम विश्वासनु गम रे ॥ मो० ॥४॥ पासे वसीयो तेणें करी रे, जाणु सहु अवदातो रे ॥ राज्य धानी लखमी पुरें रे, करता जगत विख्यातो रे ॥मो०॥५॥ दिव्य पल्यंक मुज आपियो रे, खग परें जाउ आकाश रे॥ तुमने तेडवा मूकीयो रे, रत्न दीधां बहु खासो रे ॥ मो०॥ ६ ॥ आव्यो इहां तुम परखवा रे, पासें लीधु गेह रे ॥ वली मुज आपी औषधी रे, दिव्य प्रजावनी गेह रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ विलसु ते धनथी घणो रे, इछित देउं दान रे ॥ स्त्री रूपें तुज महासती रें, दर्शन पाम्यो प्रधान रे ॥ ॥ मो० ॥ ८ ॥ जीते रतिरंजा सिरि रे, रूप अनोपम तुझ रे ॥ देखी अनाग्यना योगथी रे, चपल चित्त थयु मुझ रे ॥ मो० ॥ ए ॥ एह विटंबणा पामीयो रे, ते महारो सवि वांक रे ॥ उद्धर्यो मुज किरपा करी रे, स्वामिनी हु अति रांक रे ॥ मो० ॥ १० ॥ परस्त्री नियम तुमें दीयो रे, कीधो मुज उपकार रे ॥ पुण्य मारग देखाडीनें रें,कीधो मुझ उद्धार रे ॥ मो० ॥ ॥ ११ ॥ लखमीपुर वर राजीयो रे, श्रीजयानद राजान रे ॥ तुम पति इछे तुम बहु रें, करे तुम आगम ध्यान रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ जवनी अतरें राणी कहे रे, ताहारु साहस नारी रे ॥ मुज सार्थे जे इछतो रे, सगम जे परनारी रे ॥ मो० ॥ १३ ॥ पण परनरना परशनें रे, नवि इछे शीलवती रे ॥ तेणे तें नियम अर्युं अछे रे, मत मूकजे करी वतीरे ॥ मो० ॥ १४॥ परनारी बांधव जिके रे, ते सदाचारी कहीयें रे ॥ शील निधान समोवडे रे, शील आजूषण लहीयें रे ॥ मो०॥ १५ ॥ स्वामिप्रसादें हु सदा रे, परनर मुख नवि जोउ रे ॥ स्वजन कुटुंब पण पुरुष जे रे, तेहनु मुख

॥ तु० ॥ २१ ॥ रत्नप्रज्ञ हवे राजियो रे, सामंतनें परधान रे ॥ रा० ॥ ह पैं नगरना जन सवे रे, सेवे करी एकतान रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ २२ ॥ गज रथ घोडा नेटणे रे, ॥ रत्नादिक बहु वस्त रे ॥ रा० ॥ जे जे अपूर्व देशमां रे, ने ते दीयें सु प्रशस्त रे ॥ रा०॥तु०॥ २३ ॥ तिहां सुखमां रहेतां थकां रे, बा रमी थइ ए ढाल रे॥ रा० ॥ पद्मविजयें कही सांजलो रे, नवमे खंमें रसाल रे॥ रा० ॥ तु० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ३५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक दिन तिहां रही करी, पूछी ससरा सास ॥ श्रीजयानंद नृपति हवे, जावा मन उल्लास ॥ १ ॥ मात पिता भ्राता प्रमुख, रतिसुंदरीनें ता म ॥ आज्ञा दीये महासती प्रत्यें, थाये छु खनां धाम ॥ २ ॥ दासी दास नें धन बहु, आपे सेवा काज ॥ सहुनें लेइ विमानमां, श्रीजयानंद महा राज ॥ ३ ॥ निजपरिवारशुं चालीया, वायुवेग अकाश॥ग्राम नगर उल्लंघता, आव्या निजपुर वास ॥४॥ उत्सव महोत्सवथी तिहां, आवे निज बर धा म ॥ रतिसुंदरीनें राखवा, महोल दिये अनिराम ॥ ५ ॥ सहु प्रिया मेली करी, उचित दान सन्मान ॥ मंत्री पासें करावता, श्रीजयानंद राजान॥६॥ संतोषी सहु तेहनें, सुख सागरमां लीन ॥ पंच विषय सुख नोगवे, सहु राणीशु पीन ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ केशर वरणो हो के काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ हवे सहु नृपति हो के परजा पाले मारा लाल, निज परजा सम होके सहु रखवाले मा० ॥ कनक सिंहासन हो के एकदिन बेठा मा० ॥ पं चपरमेष्ठीना हो के ध्यानमां पेठा मा० ॥ १ ॥ बहु नृप नमता हो के आ णाने धारे मा० ॥ मुखशशि किरणें हो के दिशि अजुआले मा० ॥ परष द बेठी हो के निज निज कामें मा० ॥ प्रतिहार आवी हो के शीघ्र शिर ना में मा०॥ २ ॥ विनति एणी परें हो के नृपनें करतो मा० ॥ लोक बहु आ व्यो हो के बहु छु ख धरतो मा०॥विजयपुरथी हो के पोलनें द्वारें मा०॥उन्नो तुमचा हो के दर्शन प्यारें मा० ॥३॥ मोकलो वहेला हो के नरपति ना से मा० ॥ मोकले, ते पण हो के जइ तस पासे मा० ॥ आवी प्रणमे हो के नरपति पाया मा० ॥ विनतिपत्रिका हो के नृपपुर ठाया मा० ॥४॥ मंत्री लेइनें हो के नृप कर देवे मा० ॥ नरपति हरषें हो के जोइ तस दे

सवि अवदात रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ५ ॥ शूरदत्त कहे सांजलो रे, सघलो क हु अधिकार रे ॥ रा० ॥ तुम नरता नूनर्त्ता तणो रे, सांजलो घुरथी सार रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ लखमीपुरें श्रीपति नलो रे, त्रण कन्यानो ताव रे ॥ रा० ॥ राजा सर्व शिरोमणि रे, जैनधर्म मन जाय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ॥ ७ ॥ दीधी त्रणे तुम पति रे, वली दीधु निजराज रे ॥ रा० ॥ दीक्षा ली धी राजीये रे, वरवा शिवसाम्राज रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ८ ॥ वैताढ्य जइ विद्याधरा रे, बहु वश कीधा तास रे ॥ रा० ॥ करी महोटा उपकारनें रे, पा म्या जश सुविलास रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ९ ॥ तास पुत्रीयो परणिया रे, वली चक्रायुध राय रे ॥ रा० ॥ जीतीनें तस कन्यका रे, परण्या सहस समुदा य रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ बहु उत्सव आडंबरें रे, आव्या निजपुर रा य रे ॥ रा० ॥ शत्रुनृप जय चिहुदिशें रे, करीनें आव्या गाय रे ॥ रा० ॥ ॥ तु० ॥ ११ ॥ जे जे आश्चर्य शतो गमे रे, वली तस तात सबध रे ॥ ॥ र० ॥ शूरदत्त सवि जांखीयो रे, विस्तारें परबध रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १२॥ सांनली सर्व सबधनें रे, आनद अग न माय रे ॥ रा० ॥ दान देइ सतो षियो रे, कीधो बहु सुपसाय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १३ ॥ रतिसुदरीयें विस र्जीयो रे, पोहोतो लखमीपुर गाय रे ॥ रा० ॥ अनुक्रमें राज्यसजा गयो रे, जिहां श्रीजयानद राय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १४ ॥ परीक्षा प्रमुख सवि वातडी रे, कही तस आमूल चूल रे ॥ रा० ॥ तेम वली जे कहेवरावीयुं रे, ते जाख्यु अनुकूल रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १५ ॥ तुमनें तेडणा छे वली रे, सांनली श्रीजयानद रे ॥ रा० ॥ निजप्रीया शील शोहामणु रे, धरता अति आणद रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १६ ॥ नक्तिवती नार्या तणु रे, दर्शननु पर्यु चित्त रे ॥ रा० ॥ वली तेडवा पण जायवु रे, बेशी विमान विचित्र रे रा०॥ तु० ॥ १७ ॥ पोहोता दिव्य विमानशुं रे, रत्नपुरें क्षण मांहि रे ॥ रा० ॥ सार सौजन्य परिवारशुं रे, धरता मन उत्साहि रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १८ ॥ रत्न प्रज नृपनें मल्या रे, तेम नयरी जन व्रात रे ॥ रा० ॥ रत्नमाला नृपनी प्रिया रे, पाम्या अति सुखशात रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १९ ॥ सतोषी रतिसुदरी रे, आपी दर्शन आप रे ॥ रा० ॥ अधिक आनद दीये घणो रे, उचित करी आ लाप रे ॥ रा० ॥ तु० ॥२०॥ अमृतवृष्टि अचितवी रे माने आवतु राय रे ॥ रा० ॥ खेम प्रश्नादिक बहु करे रे, जकतें बमणो नराय रे ॥ रा० ॥

हो के कुशल ते नारी मा० ॥ वली मित्र न तेहवो हो के दीये मति सारी मा० ॥ १६ ॥ एक प्रज्ञावंत हो के वृद्ध न पासें मा० ॥ रुडु तस राज्य न हो के चाले सरासे मा० ॥ कुलस्थिति नवि होय हो के नवि जश थाय मा० ॥ नासें धन दूरें हो के सुकृत न कांय मा० ॥ १७ ॥ मम्मलिक प्रधानतु हो के धन बहु लीधु मा० ॥ परधान विना नवि हो के राज्य ते सीधु मा० ॥ निज पर नवि गणिया हो के लोभें पूरो मा० ॥ अन्याय ते करवो हो के नहीं अधूरो मा० ॥ १८ ॥ जेम कागल थोडे हो के सवि न लखाय मा० ॥ तेम वात ते पूरी हो के ढालें न थाय मा० ॥ एइ नवमे खमें हो के तेरमी ढाल मा० ॥ कहे पद्मविजय मुनि हो के वात रसाल मा० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कांईये कहीयें नहीं, श्रीविजयराज जे तात ॥ तेहुये पण फल भोगव्यु, अवरां केही वात ॥ १ ॥ तेतो सहु जाण्यु हशे, तस मुख वचन प्रमाण ॥ जय नृप काका तुम तणा, सुखदायी राजान ॥ २ ॥ तेहुये तेडाव्या घणु, नवि आव्या तुमें कोय ॥ भाग्य उदय नहीं अम तणो, तेणें तुम वांक न होय ॥ ३ ॥ दुखदायी तुम भाइ ए, अम अभाग्यथी थाय ॥ राज्यपदें बेशी करी, एणी परें काम कराय ॥ ४ ॥ वनमां वसवु रूअडो, रूडो वली परदेश ॥ मरण करेवु रूअडु, तप रूडु सुविशेष ॥५॥ पण ए राज्यनी छांहडी, सुपनें न वांछु अंश ॥ सिंहसारें एणी परें घणु, कलंक दीयो तुम वंश ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ विमलजिन विमलता ताहरीजी ॥ ए देशी ॥

॥ दृष्टि दया करी दीजीयें जी, सेवक उपर स्वामि ॥ सीदाता केम उवेखीया जी, एह परजा तुम नाम ॥ दृ० ॥१॥ कीर्त्ति जस सागर छो तुमेंजी, गुणगण रत्न निधान ॥ परउपगार शिरोमणिजी, अशरण शरण परधान ॥ ॥ दृ० ॥२॥ पूरव क्षत्रव्रतधर थयाजी, तेहमां धुर तुम नाम ॥ पापी अन्यायीनें तुमें दंडो जी, एह करो अम तणु काम ॥ दृ० ॥३॥ रीति लोपो न पूर्वज तणी जी,मूको न निज प्रजा एह ॥ मूल निज राज्य हवे लीजीयें जी, अनुग्रह करो प्रभु रेह ॥ दृ० ॥ ४ ॥ तुमें दया चिंतवी बधुनी जी,जो नवि तुमें करो एह ॥ देश पुर नगर उजड थशे जी,मत करो तेहमां संदे

वे मा० ॥ मूल राज्यनां हो के लोक ते जाणी मा० ॥ बहु आदर करे हो के नृप गुणखाणी मा० ॥ ५ ॥ मुड्ा उखेली हो के वांचे पोतें मा० ॥ तेह कहीजें होके सुणीयें श्रोतें मा० ॥ स्वस्तिश्रीमति हो के सुरपुर सरिखु मा० ॥ लखमीपुरवर हो के महा ऋद्धि निरखुं मा० ॥ ६ ॥ राज्य करे तिहां हो के श्रीजयानंद मा० ॥ बहुनृप वहेता हो के आण आणंद मा० ॥ जनक विजयनृप हो के परिछद सोहे मा० ॥ तेहनें लखतां हो के मोद आरोहे मा० ॥ ७ ॥ विजयाभिधपुरथी हो के पुरजन मलीनें मा० ॥ राजवर्गी पण हो के मांहे जलीनें मा० ॥ प्रणतिपूर्वक हो के करकज जोडी मा० ॥ विनति लखीयें हो के माननें मोडी मा० ॥ ८ ॥ सुख श्रेय ईहां ठे हो के पुण्य प्रमाणें मा० ॥ दिन दिन प्रत्यें वांछु हो के प्रन्नु सुखगाणें मा० ॥ सुणजो समाचार हो के पूर्वज जेह मा० ॥ तुम चा तेणें पाली हो के परजा नेंह मा० ॥ ए ॥ विजयपुरनी हो के वात ही सुणजो मा० ॥ नृप सिंहसार ठे हो के नामज सुणजो मा० ॥ कपटें पटु कटु वली हो के करतो काम मा० ॥ उन्मार्गनी मति वली हो के व्यसननुं धाम मा० ॥ १० ॥ नवि धर्मनी वात ते हो के मनमां जाणे मा० ॥ गुरुकर्मा गाजे हो के आप वखाणे मा० ॥ वैरी परें परजा होके जाणे मनमां मा० ॥ परजा चित्त जाणे हो के वसियें वनमां मा०॥ ११॥ अन्यायनो मार्ग हो के नित्य चलावे मा० ॥ तुम राजन कुलना हो के जे जे आवे मा० ॥ विश्वास पमाडी हो के गुप्तियें नाखे मा० ॥ बहु कष्टनें देतो हो के सुख न सराखे मा० ॥ १२ ॥ अपराध विना बहु हो के दाखे दंम मा० ॥ उद्वेग पमाडे हो के तेज प्रचंम मा० ॥ केइनें नवि नोजन हो के आपे खावा मा० ॥ कोना मुख आगें हो के करियें रावा मा० ॥ १३ ॥ इत्यादिक रीतें हो के डुखनें देतो मा० ॥ अठतां डुख दाखी हो के दंम ते लेतो मा० ॥ लोनांध थइनें हो के हय रथ हाथी मा० ॥ ते लीये ठलाली हो के बहु उनमाथी मा० ॥ १४ ॥ तुम पूरवजें जन्मथी हो के परजा पाली मा० ॥ तेणें डुख नवि दीठुं हो के सुपनें न्नाली मा०॥ तुम तातें पूरां हो के लाम लमायां मा० ॥ सहुनी उहावे होके एह पढायां मा० ॥ १५ ॥ कर ले अष्टादश हो के जे सुण्या कानें मा० ॥ तरणा सम जगतनें हो के मनमां माने मा० ॥ जेहनें नही मत्री

॥ दोहा ॥

॥ तुम दरिशण अति दोहेलु, नाग्यें पाम्या आज ॥ दुःख अंधकारमां ऊगीयो, स्वामी तु दिनराज ॥ १ ॥ काल रात्रि परें एटलो, काल काढ्यो जय कार ॥ ऊय कीधो अम्ह पुण्यनो,उदय ते तु दिनकार ॥२॥ चिरंजीवो सफलुं करो, मूलराज्य महाराज ॥ अमृत सम दृष्टि देइ,पवित्र करो जगुराज ॥३॥ एम स्तवना करी हर्षथी, पोहोता निज निज गेह ॥ देश नगर पुर गाममां, वूठा अमीरस मेह ॥ ४ ॥ देवपूजादिक कृत्य करे, उचितज वेला होय ॥लो क तुष्टि हेतें तिहां, काल गमावे कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ राग मारुणी॥श्रीसीमधर साहेब आगें विनति रे॥ए देशी ॥

॥ राज्यमांहे रह्या राज्य काज सवि साचवे रे, तेम तातनें परिवार ॥ आ गें रे आगें रे, लागें धर्म कथा कहे रे ॥ १ ॥ जिनवरनाषित धर्म दया गुण मूल छे रे,तेम दानादिक चार ॥ नाख्यो रे नाख्यो रे,दाख्यो देव गुरु धर्मथी रे ॥२॥ पुण्य पाप फल सुकृत दुःकृत कारण कहे रे,हेतु युक्ति अपार ॥ राज्य रे राज्य रे, काज करंतां पण कहे रे ॥३॥ विचें विचे अवसर लहीनें निपुण ते नृपति रे, नित्य नित्य करे व्याख्यान ॥ सरसा रे सरसा रे, नही विरसा दृ ष्टांतथी रे ॥४॥ सारसंग्रह करी समकेत नित्य समजावता रे,श्रोतानें सुख कार॥हितकर रे हितकर रे,अतर रहित ते उपदिशे रे॥५॥एम करतां जिन प्रव चन श्रावक सहु कह्या रे,पुत्र वचन घन सार॥सांनली रे सांनली रे,काच का मली गद सवि गयो रे ॥६॥ अमृत परें निज आतम सींची धर्मथी रे, अंगी करे गृही धर्म ॥ राय रे राय रे, ताय ते श्रीजयानंदनो रे ॥७॥ जैनधर्मे दृढ करीनें जनकने थापता रे, तेह क्रमागत राज्य ॥ जाणी रे जाणी रे, मन आ णी नृप आदरे रे ॥ ८ ॥ पुत्र वयण गुणवतनुं नवि उल्लंघता रे, हवे जावा नुं मन्न ॥ श्रीजय रे श्रीजय रे, विजय राय हठें राखता रे॥ए ॥तात संतोष नें कारण केइक दिन रही रे, परजानें सुखदाय ॥ थाय रे थाय रे, राय श्री विजय धर्मी घणु रे ॥ १० ॥ परजानें पण जैनधर्म समजावता रे, श्रीश्री विजयनरिंद ॥ जोगवे रे जोगवे रे, जोगवे राज्य अखंमनें रे ॥ ११ ॥ एकदि न विजयराय चित्तमांहे दयालुउ रे, कारागारमां जेह ॥ घाल्या रे घाल्या रे, आल्या मुगता तेहनें रे ॥ १२ ॥ सिंहसार हवे कारागारमां दुःख खमे रे,व ध बंधादिक जोर ॥ खमतो रे खमतो रे,नवि नमतो मनथी कदा रे॥१३॥

ह ॥ ह० ॥ ५ ॥ शोय पक्षमां जे ज़ुगतु होये जी, तेह कीजें स्वयमेव ॥ वां
ची वली सांनली वयणडांजी, अमरष आवियो देव ॥ ह० ॥ ६ ॥ तातप
रानव वली सांनखोजी, डु ख प्रजानु चित्त धार ॥ अर्द्ध नरतपति उठीयो
जी, वयरी जाण्यो सिंहसार ॥ ह० ॥ ७ ॥ करिय सेनापति आगलेंजी, वा
जां वजडावे प्रयाण ॥ सैन्य चतुरग तव सज्ज करीजी, चालीया ते सपराण
॥ ह० ॥ ८ ॥ स्वल्प प्रयाण जइ तिहां रहीजी, मोकलीयो तिहां दूत ॥ ते
हनें जाण करवा नणीजी, सनलावे आप आकूत ॥ ह० ॥ ९ ॥ शत गमे
ताहरा अन्यायनेंजी, खमीय उवेखीयो तुज्झ ॥ एटलो काल सौजन्यपणे
जी, वांक मत काढजे मुज्झ ॥ ह० ॥ १० ॥ आज नवि खमु हवे ताहरो
जी, राखी ए राज्यनी नीति ॥ कीध प्रयाण ते आगलेंजी, लोपतो नवि कोइ
रीति ॥ ह० ॥ ११ ॥ सैन्य असख्यशु चालतांजी, कोयनें न होय सताप ॥
पर उपगारी दयालुयो जी, ते केणि परें करे पाप ॥ ह० ॥ १२ ॥ निज परदे
श सरिखा गणेजी, खम त्रणनो जे अधीश ॥ तस नगर ढूकडा आवीयाजी,
जाणतो सिंह नरेश ॥ ह० ॥ १३ ॥ सन्मुख महाबलें नीकलेजी, व्याघ्र स
न्मुख शश जेम ॥ बल सहित सिंहशु जूझीनेंजी, नांजे करी वृक्षनें तेम
॥ह०॥१४॥ घात विधुरित पकडी लीयोजी, लीलायें ते सिंहसार ॥ बांधीनें
निगड घाली करीजी, सोंप्यो तातनें तेणी वार ॥ह०॥ १५॥ पडियो कारा
गार मांहे ते जी, अनुनवे पीड अपार ॥ कर्म निज शोचतो तिहां रहेजी,
पाप तरु फल ए असार ॥ ह० ॥ १६ ॥ कर्म कीधां ते मूके नहीजी, पा
प मत करो नवि जीव ॥ पापनां फल ए देखी करीजी, धर्म ते करीयें सदै
व ॥ ह० ॥ १७ ॥ श्रीश्रीजयानद नृपति जी, जयसिरि करी निज हाथ॥
नगर प्रवेश महामहोत्सवेंजी, राजन्य पुरजन साथ ॥ ह० ॥ १८ ॥ करि
य प्रवेश निज तातशुं जी, हय गय रयणनें वस्त्र ॥ पौर जन राजवर्गी तथा
जी, नेटणे मूके केइ शस्त्र ॥ ह० ॥ १९ ॥ सामत मन्त्रिपुर जन वली जी,
वलीय सीमाडा राजान ॥ देश परदेशना लोकने जी, नृप बहु आदर मा
न ॥ ह० ॥२०॥ जेहनें योग्य जेम तस करें जी, दाननें वली सनमान ॥
करिय प्रणाम स्तवना करेजी, चित्तमां अति बहु मान ॥ ह० ॥२१ ॥ ख
ण्ड नवमे एह चौदमीजी, पद्मविजयें कही ढाल ॥ पुण्यथी सवि सुख नीप
जे जी, पुण्यथी मगलमाल ॥ ह० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१२ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ पीछजी पीछजी नाम जपुं दिन रातीयां ॥ ए देशी ॥

॥ गो महिषी घट अधिक दीये पय लोकनें, थानक थानक पूरी धरा धान्य थोकनें ॥ कालें वरसे मेघ करे पुष्टता घणी,आपे फलनें फल पट ऋतु आप आपणी ॥ १ ॥ रत्न सुवर्णना आकर नीपजे नग नगें,रयणनिधान प्रगट होये धरतीयें पग पगें ॥ पूर्वजें दाटया धन परजानें नीसरें,नारी सुगुण सुखकर सुशील सहु शिरे ॥ २॥ द्यूत मद्य वेश्या परनारी गमन नही, चोरीनें मृगया मांस ए व्यसन टाले सही ॥ निजपर चक्रनो नय उपसर्ग नहीं कदा, नहीं अतिवृष्टि अनावृष्टि डु खदायी सदा ॥३ ॥ कलह मृमर नहीं दश मसादिक नवि नडे, मुषक तीडना नय सुपनें पण नवि जडे ॥ विविध उपायें मंत्री प्रधान बलें करी,राष्ट्र कोशादिकें पूरण राज्य सिरि धरी ॥ ४ ॥ हवे श्रीविजय नृप दानादिक आचरे, लक्षादिक वरसां लगें धर्म विविध करे ॥ नि स्पृह पणे राज्य पालें अजातशत्रु पणे, डु ख टाले परजानां राखे सुख घणे ॥ ५ ॥ जीर्ण उद्धार करावे द्रव्यनो व्यय करी, जैन शिरोमणि थइनें पुण्यलक्ष्मी नरी ॥ श्रीजयानंदनी आण लही लघु सुत नणी, शुनदिवसे राज्य थापे शीख देई घणी ॥ ६ ॥ नाम शतानंद योग्य उत्तम गन्नीर ते, सहुनें सम्मत तेजस्वी धुरें धीर ते ॥ विनीत नें गुण अनुत्तर धर्मे थिर हितकरु, निश्चल थइ नृप धर्म करे निज सुखकरु ॥७॥ आगमसागर सद्गुरु तेणे समे आवीया, नाग्यथकी तेणे कालें मनमां नावीया ॥ लेइ प्रजानी आणनें दीक्षा मन धरे, निजसुत नरपति उछव महोछव बहु करे ॥ ८ ॥ सुख वाहन बेसीनें दान बहु दीये, जैन धरम परनावना, बहु आणंद दीये ॥ योग्य पुरुष परिवारथी गुरु पासें जइ, करी परणामनें आदरे व्रत शीघ्रज थइ ॥ ए ॥ विजयराज ऋषि दक्ष गुरु सेवा करे, ग्रहण आसेवन शिक्षा अनुक्रमें दोय धरे ॥ तत्त्व जाण सत्ववंत अशेष आगम नणे, अंतर शत्रु जय करे कर्म कठिन हणे ॥ ॥ १० ॥ तप करता विचरे गुरु साथे विनय करे, शांतजितेंद्रिय गुण अणगारना आदरे ॥ तात दीक्षाथी हर्ष खेद नृपति लहे, सहु मुनिवंदना करीनें, जायें निज गृहे ॥ ११ ॥ श्रीशतानंद राजान जैनधर्म पालता, सैन्य परिछदर्शु शासन अखुआलता ॥ केइक दिन निज राज्यें रही बहु नेहथी, अग्रज उपरें नक्ति घणी चित्त गेहथी ॥ १२॥ श्रीजयानंदनी सेवा करवा

नत्रीज जाणी काढी मूक्यो देशथी रे, पाले राज्य महांत॥ राय रे रायरे नवि अ न्याय कदा करे रे ॥ १४ ॥ श्रीजयानंद हवे अवसर लही एकदा रे, तात ना प्रणमी पाय ॥ नगतें रे नगतें रे, युक्तें पूठी तातनें रे ॥ १५ ॥ मात प्रमुख गुरु जन प्रणमीनें आदरे रे, केइनें वात्सल कीध ॥ केइनें रे देइनें दृष्टि सोहामणी रे ॥ १६ ॥ केइनें मधुर वयणथी सतोष्या घणा रे, राज ननें परधान ॥ जेह रे जेह रे, नेह धरी घणुं पूठतो रे ॥ १७ ॥ जनपद लो क प्रजानें प्रीति वधायतो रे, वोलावा सहु जाय ॥ आवे रे आवे रे, जावे खे चर नृप बहु रे ॥ १८ ॥ शोल सहस नृप अरधा नरतना आवीया रे, निज निज लेइ सैन्य ।। वलीया रे वलीया रे, टलीया नही रण कर्ममां रे ॥१९॥ चतुरंगी सेनायें चतुर ते चालीयो रे, निज पुर जावा काज ॥ कोइ रे को इ रे, नवि होये प्रतिमल्ल कदा रे ॥२०॥ वाजित्र शब्दें दिशा वलय सवि पू रीयु रे, शत्रुवृदनें त्रास ॥ आपे रे आपे रे, कापे दुःख मित्रज तणां रे ॥ ॥ २१ ॥ केटलीक मजलें कोइ अटवीमा उतखा रे, पूजा करी जिनराज ॥ नूप रे नूप रे, कूप अगाध ते सत्वनो रे ॥२२ ॥ अशनादिक करीने सहु रा जन्य लोकनें रे, वाले हरथी राय ॥ अनुक्रमें रे अनुक्रमें रे, जिनधर्में जन वासतो रे ॥ २३ ॥ अनुक्रमें आव्या लखमी पुर महामहोत्सवें रे, अनुक्र में पोहोता गेह ॥ पाले रे पाले रे, टाले कटक राज्यमा रे ।।२४॥ सहु नृ प नूचर खेचर प्रणमी मोदशुं रे, निज निज थानक जाय ॥ गाय रे गाय रे, राय तणा गुण नित्य प्रत्यें रे ॥२५॥ नवमे खर्मे ढाल पन्नरमी ए कही रे, श्रीजयानदनें रास॥ नाखे रे नाखे रे, दाखे पद्मविजय मुनि रे॥२६॥४४२॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानदना राज्यमां, जलचर नवि पकडाय ॥ थलचर खेचर प रस्परें, नवि कोइ हणवा धाय ॥ १ ॥ जनम मरण अकालें नहीं, कटक कमलनी नाल ॥ सरोगता कमलें रह्युं, दम देवलशिर नाल ॥ २ ॥ कलह ते गजशाला रह्यो, कुहियां मदिर होय ॥ स्नेहनो क्षय दीपक विषे, कुटिल सापिणि गति जोय ॥ ३ ॥ अहव कुटिल सरिता कही, फूलके वेणी बधा य ॥ कर प्रग्रह करिनो रह्यो, सकलक शशी कहेवाय ॥ ४ ॥ निर्दयता खड्गें रही, कोरणी मदिर मांहि ॥ पण ए लोक मांहि नहीं, रहेता चित्त उछाहि ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४७ ॥

पटुवचन पण गुण लेशनें, समरथ न कहेवा होय ॥ करे नक्ति एहनी तेहने, नवि आवे नवनय कोय ॥ म० ॥ १० ॥ तेणे नगरनां जन सहु मली, ए आवे ने वली जाय ॥ ते सुणी श्रीजयानंदजी, चित्त चितवे महाराय ॥ म० ॥ ११ ॥ मनमां मानजो नवि जीव, नवस्थिति विचित्र सदैव ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ अज्ञान महाङ खें ठेदीयें, घन निविडनें अनंत ॥ काल रात्रि परें महा डुख दीये, प्राणीनां सुख दंत ॥म०॥१२॥ सन्मार्गनें ए आचरे, डुर्दशा कारण एह ॥ तिरियंच नरकना नव नमे, सवि डुखनुं ए गेह ॥ म० ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व रुखनुं कंद ए, सद्ज्ञाननुं ए चोर ॥ सहु कर्ममां ए शिरोमणि, अज्ञान अतिहि कगेर ॥ म० ॥ १४ ॥ तृष्णा विषयनी जे नदी, तेहनो ए गिरिवर जाण ॥ विचित्र नवनाटक करे, ते जाणो महिमा अन्नाण ॥ म० ॥ १५ ॥ चेतन ते पञर सारिखो, नवि जीव माने कोय ॥ एणी परें अज्ञानें करी, वेगो ते निज ऋद्धि खोय ॥ म० ॥ १६ ॥ पंचेंडी पण अज्ञानथी, गत नयनपरें करे काम ॥ तेणें अंधतम अज्ञान ए, तत्त्वदृष्टि न रहे गम ॥ म० ॥१७ ॥ तेणें एह काका मा हरा, बुद्धिवत पण अज्ञान ॥ मारग विना केम जइ शके, नेत्र हीन वंछित थान ॥ म० ॥ १८ ॥ तेणे हु ए पीतरीया प्रत्यें, करुं सम्यग्दर्शनवंत ॥ श्रुतज्ञान अमृत आंजीनें, करुं दिव्य नेत्र महंत ॥ म० ॥१९॥ एम चित्त मांहे चितवी, श्रीजयानंद नूपाल ॥ पितृव्यबोधन कारणें, उपनी बुद्धि विशाल ॥ म० ॥२०॥ नवमे खंमें ए सत्तरमी, थणु ढाल एह रसाल ॥ फहे पद्म श्रीजयानंदजी, करशे ते मंगलमाल ॥म०॥२१॥सर्वगाथा॥४७७॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रज्ञप्ति विद्या प्रतें, समरे श्रीजयानंद ॥ आवी प्रगटपणे तिहां, पूछे परमाणंद ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ति कहे सांनलो, एहनें बोध उपाय ॥ पंचाग्नि साधन करे, तापस ए ऋषि राय ॥२॥ पूरवदिशें अग्नि स्थलें, महोटुं काष्ट पोलार ॥ महोटो नाग तिहां वसे, प्रथम तो ए अवधार ॥३॥ दक्षिणदिशिना काष्ठमां, कांकिडो लहे दाह ॥ इथण तापथी आकुलो, नविनासणनो राह ॥४॥ पश्चिमदिशि अग्नि स्थलें, उदेही ठे अपार ॥ काष्ठमां बलती तेहनें, नवि कोइ राखणहार ॥५॥ उत्तरदिशें ठे काष्ठमां, देडकीनो नही मान ॥ केइ मूइ केइ जीवतो, केइक मूआ समान ॥६॥ तिहां जइ काष्ठ कढावीनें, करजो दो दो नाग ॥

इछतो, सार सैन्य लेइ लखमीपुर नणी गछतो॥ राज्य सोपी विसवाती पुरुषनें चालीयो, पोहोतो लखमीपुर गाम ताम चित्त म्हालीयो ॥ १३ ॥ श्री जयानंदनरिंद चक्रीनें जइ मल्या, अनुजनी नक्तिथी आदर करी सुखमां नल्या ॥ नवमे खमें ढाल ए शोलमी मन धरो, पद्म कहे नवि धर्म करी नवजल तरो ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु आदर सतकारिया, वली कीधु बहु मान ॥ गुणीनें गुणवंता मले, वाधे प्रमोद प्रधान ॥ १ ॥ शतानंद नृप आदि दे, बांधव बहुपरिवार ॥ सहस गमे नूचर तथा, खेचरना पण वार ॥ २ ॥ राज्याधिराज्य एक दिन हवे, रयवाडी सहु संग ॥ श्रीजयानंदजी आवीया, नगर बाहिर मनरंग ॥ ३ ॥ ताम लोक एकण दिशें, जाता देखे जाम ॥ तेम आवता वली जावता, लखो नर अनिराम ॥ ४ ॥ तेहमांथी कोइ पुरुषनें, तेडी पूछे राय ॥ श्यो उद्यम छे लोकनें, केम गमनागम थाय ॥ ५ ॥

ढाल सत्तरमी ॥ राग विहागडो, मुज घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ ते नर कहे नरपति सुणो, ए वात छे अद्भुत ॥ एणे नगर टुकडा आवीया, पूर्वदिशें अवधूत ॥ १ ॥ मन मानज्यो रे नाथ ॥ ए नगरी कीधी सनाथ ॥म०॥ ए आंकणी ॥ मनोरम उद्यानमां जयनाम ते रुषिराय, तप करे छे अति आकरां, पंचाग्निनें तेह तपाय ॥ म० ॥ २ ॥ समता घणा इंडियो दमी, यम नियम पाले सार ॥ ते रुषि नमवा जाय छे, ए लोकनां हजार ॥ म० ॥ ३ ॥ उपकरण लेइ पूजा तणां, केइ धरी लोक विवेक ॥ जइ पूजशे ते रुषि प्रत्यें, चित्त धारी धर्मनी टेक ॥ म०॥ ४ ॥ केइ सोवन फूल केइ वस्त्रथी, केइ विलेपन लेई जाय ॥ पण निस्पृहमां ए अवधि छे, तपनो निधि रुषिराय ॥ म० ॥ ५ ॥ सत्कारथी तूसे नहीं, रूसे न लही अपमान ॥ ए निरीहनें मणि मृत्तिका, शत्रुनें मित्र समान ॥म०॥ ६ ॥ कनक पञर समवडे, पृथिवी करे सुपवित्र ॥ करे स्नान त्रण वेला वली, धरे जटा मुकुटनी रीत ॥ म० ॥ ७ ॥ वस्त्र पहेरीयां तरु छालनां, कंद मूल फलनो आहार ॥ मृगचर्म धरी संध्या करे, निद्रा तजी निरधार ॥ म० ॥ ८ ॥ रहे ध्यान मांहे विधिपकी, निस्पृह पोतानें देह ॥ वनवास नित्य जेणे कस्यो, शास्त्रना अभ्यासी जेह ॥म०॥ए॥

पटुवचन पण गुण लेशनें, समरथ न कहेवा होय ॥ करे नक्ति एहनी तेहने, नवि आवे नवनय कोय ॥ म० ॥ १० ॥ तेणे नगरनां जन सहु मली, ए आवे ने वली जाय ॥ ते सुणी श्रीजयानंदजी, चित्त चितवे महाराय ॥ म० ॥ ११ ॥ मनमां मानजो नवि जीव, नवस्थिति विचित्र सदैव ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ अज्ञान महाडु खें नेदीयें, घन निविडनें अ नत ॥ काल रात्रि परें महा डु ख दीये, प्राणीनां सुख हरंत ॥म०॥१२॥ सन्मार्गनें ए आवरे, डुर्दशा कारण एह ॥ तिरियंच नरकना नव नमे, सवि डु खनु ए गेह ॥ म० ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व रुखनु कद ए, सद्ज्ञाननुं ए चोर ॥ सहु कर्ममां ए शिरोमणि, अज्ञान अतिहि कगेर ॥ म० ॥ १४ ॥ तृष्णा विषयनी जे नदी, तेहनो ए गिरिवर जाण ॥ विचित्र नवनाटक करे, ते जाणो महिमा अन्नाण ॥ म० ॥ १५ ॥ चेतन ते पञ्चर सारिखो, नवि जीव माने कोय ॥ एणी परें अज्ञानें करी, बेगे ते निज ऋध्धि खोय ॥ म० ॥ १६ ॥ पंचेंडीपण अज्ञानथी,गत नयनपरें करे काम ॥ तेणें अंध तम अंज्ञान ए, तत्त्वदृष्टि न रहे गम ॥ म० ॥१७ ॥ तेणें एह काका मा हरा, बुध्धिवत पण अज्ञान ॥ मारग विना केम जइ शके, नेत्र हीन वंछित थान ॥ म० ॥ १८ ॥ तेणे हु ए पीतरीया प्रत्यें, करुं सम्यग्दर्शनवत ॥ श्रुतज्ञान अमृत आंजीनें, करुं दिव्य नेत्र महत ॥ म० ॥१९॥ एम चित्त मांहे चितवी, श्रीजयानद नूपाल ॥ पितृव्यबोधन कारणें, नपनी बुध्धिवि शाल ॥ म० ॥२०॥ नवमे खमें ए सत्तरमी, घणु ढाल एह रसाल ॥ क हे पद्म श्रीजयानदजी, करशे ते मगलमाल ॥म०॥२१॥सर्वगाथा॥४८८॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रज्ञप्ति विद्या प्रतें, समरे श्रीजयानद ॥ आवी प्रगटपणे तिहां, पूछे परमाणद ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ति कहे सांजलो,एहनें बोध नपाय ॥ पंचाग्नि साधन करे, तापस ए ऋषि राय ॥२॥ पूरवदिशें अग्नि स्थलें,महोटु काष्ट पोलार॥ महोटो नाग तिहां वसे,प्रथम तो ए अवधार ॥३॥ दक्षिणदिशिना काष्टमां, कालिंडो लहे दाह ॥ इधण तापथी आकुलो,नविनासणनो राह ॥४॥ पश्चि मदिशिअग्नि स्थलें,नदेही ने अपार ॥ काष्टमां बलती तेहनें,नवि कोइ राखण हार ॥५॥ नत्तरदिशें ने काष्टमां, देडकीनो नही मान ॥ केइ मूइ केइ जीव तो,केइक मूआ समान ॥६॥ तिहां जइ काष्ट कढावीनें, करजो दो दो नाग ॥

इछतो, सार सैन्य लेइ लखमीपुर नणी गयतो ॥ राज्य सोंपी विश्वासी पुरुपनें चालीयो, पोहोतो लखमीपुर गाम ताम चित्त म्हालीयो ॥ १३ ॥ श्रीजयानदनरिंद चक्रीनें जइ मल्या, अनुजननी नक्तियी आदर करी सुखमां नल्या ॥ नवमे खर्मे ढाल ए शोलमी मन धरो, पद्म कहे नवि धर्म करी नवजल तरो ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु आदर सतकारिया, वली कीधु बहु मान ॥ गुणीनें गुणवता मले, वार्धे प्रमोद प्रधान ॥ १ ॥ शतानद नृप आदि दे, बांधव बहुपरिवार ॥ सहस गमे नूचर तथा, खेचरना पण वार ॥ २ ॥ राज्याधिराज्य एक दिन हवे, रयवाडी सहु सग ॥ श्रीजयानदजी आवीया, नगर बाहिर मनरग ॥ ३ ॥ ताम लोक एकण दिशें, जाता देखे जाम ॥ तेम आवता वली जावता, लखो नर अनिराम ॥ ४ ॥ तेहमांथी कोइ पुरुषनें, तेही पूछे राय ॥ श्यो उद्यम छे लोकनें, केम गमनागम थाय ॥ ५ ॥

ढाल सत्तरमी ॥ राग विहागडो, मुज घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ ते नर कहे नरपति सुणो, ए वात छे अद्भुत ॥ एणे नगर कूकडा आवीया, पूर्वदिशें अवधूत ॥ १ ॥ मन मानज्यो रे नाथ ॥ ए नगरी कीधी सनाथ ॥म०॥ ए आंकणी ॥ मनोरम उद्यानमां जयनाम ते रुषिराय, तप करे छे अति आकरां, पंचाग्निनें तेह तपाय ॥ म० ॥ २ ॥ समता घणी इन्द्रियो दमी, यम नियम पाले सार ॥ ते रुषि नमवा जाय छे, ए लोकनां हजार ॥ म० ॥ ३ ॥ उपकरण लेइ पूजा तणां, केइ धरी लोक विवेक ॥ जइ पूजशे ते रुषि प्रत्यें, चित्त धारी धर्मनी टेक ॥ म०॥ ४ ॥ केइ सोवन फूल केइ वस्त्रथी, केइ विलेपन लेई जाय ॥ पण निस्पृहमां ए अवधि छे, तपनो निधि रुषिराय ॥ म० ॥ ५ ॥ सत्कारथी तूसे नहीं, रूसे न लही अपमान ॥ ए निरीहनें मणि मृत्तिका, शत्रुनें मित्र समान ॥म०॥ ६ ॥ कनक पत्थर समवडे, पृथिवी करे सुपवित्त ॥ करे स्नान त्रण वेला वली, धरे जटा मुकुटनी रीत ॥ म० ॥ ७ ॥ वस्त्र पहेरीयां तरु गलनां, कद मूल फलनो आहार ॥ मृगचर्म धरी सध्या करे, निद्रा तजी निरधार ॥ म० ॥ ८ ॥ रहे ध्यान मांहे विधिपकी, निस्पृह पोतानें देह ॥ वनवास नित्य जेणे कर्यो, शास्त्रना अभ्यासी जेह ॥म०॥९॥

पटुवचन पण गुण लेशनें, समरथ न कहेवा होय ॥ करे नक्ति एहनी तेहने, नवि आवे नवजय कोय ॥ म० ॥ १० ॥ तेणे नगरनां जन सहु मली, ए आवे ने वली जाय ॥ ते सुणी श्रीजयानंदजी, चित्त चितवे महाराय ॥ म० ॥ ११ ॥ मनमां मानजो नवि जीव, नवस्थिति विचित्र सदैव ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ अज्ञान महाडु खें ठेदीयें, घन निविडनें अनत ॥ काल रात्रि परें महा डु ख दीये, प्राणीनां सुख हरंत ॥म०॥१२॥ सन्मार्गेनें ए आचरे, डुर्दशा कारण एह ॥ तिर्यंच नरकना नव नमे, सवि डु खनुं ए गेह ॥ म० ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व रुखनुं कंद ए, सद्ज्ञाननुं ए चोर ॥ सहु कर्ममां ए शिरोमणि, अज्ञान अतिहि कगेर ॥ म० ॥ १४ ॥ तृष्णा विषयनी जे नदी, तेहनो ए गिरिवर जाण ॥ विचित्र नवनाटक करे, ते जाणो महिमा अन्नाण ॥ म० ॥ १५ ॥ चेतन ते पत्थर सारिखो, नवि जीव माने कोय ॥ एणी परें अज्ञानें करी, वेगे ते निज रुध्धि खोय ॥ म० ॥ १६ ॥ पंचेंडी पण अज्ञानथी,गत नयनपरें करे काम ॥ तेणें अंध तम अज्ञान ए, तत्त्वदृष्टि न रहे गम ॥ म० ॥१७ ॥ तेणें एह काका मा हरा, बुध्धिवंत पण अज्ञान ॥ मारग विना केम जइ शके, नेत्र हीन वछित थान ॥ म० ॥ १८ ॥ तेणे हु ए पीतरीया प्रत्यें, करुं सम्यग्दर्शनवंत ॥ शुनज्ञान अमृत आंजीनें, करुं दिव्य नेत्र महंत ॥ म० ॥१९॥ एम चित्त मांहे चितवी, श्रीजयानद नूपाल ॥ पितृव्यबोधन कारणें, उपनी बुध्धिवि शाल ॥ म० ॥२०॥ नवमे खंर्मे ए सत्तरमी, घणु ढाल एह रसाल ॥ क हे पद्म श्रीजयानदजी, करशे ते मंगलमाल ॥म०॥२१॥सर्वगाथा॥४७७॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रज्ञप्ति विद्या प्रतें, समरे श्रीजयानद ॥ आवी प्रगटपणे तिहां, पूछे परमाणंद ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ति कहे सांजलो,एहनें बोध उपाय ॥ पंचाग्नि साधन करे, तापस ए रुषि राय ॥२॥ पूरवदिशें अग्नि स्पर्शे,महोटु काष्ठ पोलार ॥ महोटो नाग तिहां वसे,प्रथम तो ए अवधार ॥३॥ दक्षिणदिशिना काष्ठमां, काकिडो लहे दाह ॥ इंधण तापथी आकुलो,नविनासणनो राह ॥४॥ पश्चिमदिशि अग्नि स्पर्शे,उदेही ठे अपार ॥ काष्ठमां बलती तेहनें,नवि कोइ राखण हार ॥५॥ उत्तरदिशें ठे काष्ठमां, देडकीनो नही मान ॥ केइ मूइ केइ जीवती,केइक मूआ समान ॥६॥ तिहां जइ काष्ठ कढावीनें, करजो दो दो नाग ॥

इछतो, सार सैन्य लेइ लखमीपुर नणी गछतो ॥ राज्य सोंपी विश्वासी पु रुषनें चालीयो, पोह्तो लखमीपुर गाम ताम चित्त ग्हालीयो ॥ १३ ॥ श्री जयानदनरिंद चक्रीनें जइ मल्या, अनुजनी नक्तिथी आदर करी सुखमां नल्या ॥ नवमे खर्मे ढाल ए शोलमी मन धरो, पद्म कहे नवि धर्म करी नवजल तरो ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु आदर सतकारिया, वली कीधु बहु मान ॥ गुणीनें गुणवंता मले, वाधे प्रमोद प्रधान ॥ १ ॥ शतानद नृप आदि दे, बांधव बहुपरि वार ॥ सहस गमे नूचर तथा, खेचरना पण वार ॥ २ ॥ राज्याधिराज्य एक दिन हवे, रयवाडी सहु सग ॥ श्रीजयानदजी आवीया, नगर बाहि र मनरग ॥ ३ ॥ ताम लोक एकण दिशें, जाता देखे जाम ॥ तेम आ वता वली जावता, लखो नर अनिराम ॥ ४ ॥ तेहमांथी कोइ पुरुषनें, तेडी पूछे राय ॥ श्यो वद्यम छे लोकनें, केम गमनागम थाय ॥ ५ ॥

ढाल सत्तरमी ॥ राग विहागडो, मुज घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ तें नर कहे नरपति सुणो, ए वात छे अद्भुत ॥ एणे नगर ढूकडा आवीया, पूर्वदिशें अवधूत ॥ १ ॥ मन मानज्यो रे नाथ ॥ ए नगरी कीधी सनाथ ॥म०॥ ए आंकणी ॥ मनोरम उद्यानमां जयनाम ते ऋषिरा य, तप करे छे अति आकरां, पंचाग्निनें तेह तपाय ॥ म० ॥ २ ॥ समता घणी इंडियो दमी, यम नियम पाले सार ॥ ते ऋषि नमवा जाय छे, ए लोकनां हजार ॥ म० ॥ ३ ॥ उपकरण लेइ पूजा तणां, केइ धरी लोक विवेक ॥ जइ पूजशे ते ऋषि प्रत्यें, चित्त धारी धर्मनी टेक ॥ म०॥ ४ ॥ केइ सोवन फूल केइ वस्त्रथी, केइ विलेपन लेई जाय ॥ पण निःस्पृहमां ए अवधि छे, तपनो निधि ऋषिराय ॥ म० ॥ ५ ॥ सत्कारथी तूसे नहीं, रूसे न लही अपमान ॥ ए निरीहनें मणि मृत्तिका, शत्रुनें मित्र समान ॥म०॥ ६ ॥ कनक पथर समवडे, पृथिवी करे सुपवित्र ॥ करे स्नान त्रण वेला वली, धरे जटा मुकुटनी रीत ॥ म० ॥ ७ ॥ वस्त्र पहेरीयां तरु छालनां, कंद मूल फलनो आहार ॥ मृगचर्म धरी संध्या करे, निद्रा तजी निरधार ॥ म० ॥ ८ ॥ रहे ध्यान मांहे विधिपकी, निःस्पृह पोता नें देह ॥ वनवास नित्य जेणे कस्यो, शास्त्रना अन्यासी जेह ॥म०॥९॥

चनं, आप्त दोषक्षयाद्विड ॥ वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रूयाद्धेत्वसंनवात् ॥ ॥ पूर्वढाल ॥ विण आधार आधेय न होय, गुरु विण आगम नही कोय रे ॥ जि० ॥ ज्ञान क्रिया संयुत गुरु जाणो, जिनवचन सम को न पीगणो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ठे जेहमां, वली देव गुरु धर्म एहमां रे ॥जि०॥ नावथी दोय ए त्रिक आराधे,तव केवल ज्ञानर्ने साधे रे ॥जि०॥ ॥ १२ ॥ योग ते एह दया जे पाले, दया विण योगर्ने गाले रे ॥ जी० ॥ नागो रहे वली शिर मुंमावे, मौन धरे वली राख लगावे रे ॥ १३ ॥ वांकलां पहेरे जटानें धरावे,करे स्नान अग्निहोत्र ध्यावे रे ॥जि०॥ कंद मूल वली करे आहार, मृग प्रमुख चर्म वली धारे रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ वली पाखंम करे अधिकेरा, पंचाग्निप्रमुख बहुतेरा रे ॥ जि० ॥ चांड्रायणादिक तप बहु तपतो,ध्यान नियमने जाप ते जपतो रे ॥ जि०॥ १५ ॥ देवार्चन वेद आगम नणतो, आतापना क्लेश न गणतो रे ॥ जि० ॥ एकादशी मुख व्रत आचरतो, सन्यास प्रमुख आदरतो रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ नूमिशयन वली विद्या साधे, बौधादिक दीक्षा आराधे रे ॥ जि० ॥ दया विना सवि फोकट जाणो, एहमां संदेह न आणो रे ॥ जि० ॥ १७ ॥ तात दया पालो नली रीतें, दया सर्वधर्मने जीते रे ॥ जि० ॥ पचाग्नि तपमां नही लेश, दया केरो कांइ प्रवेश रे ॥ जि० ॥ १० ॥ नवमे खमें अढारमी ढाल, कहे श्री गुरु उत्तम बाल रे ॥ जि०॥ ऋषिर्ने श्रीजयानंद नूपाल, केहवा करे जिव प्रतिपाल रे ॥ जि०॥ १ए ॥ सर्वगाथा ॥ ५१५॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सुणो पूरवदिशें,काष्ठमां बलतो नाग ॥ दक्षिणदिशि सरहो वले, धर्मनो केहो लाग ॥१॥ जुउ पश्चिमदिशि काष्ठमां, उदेही सहार ॥ उत्तरदिशि बहु देडका, बतलावे निरधार ॥२॥ नू जल वायु अनल वली, वनस्पति सहु जीव ॥ हेतुदृष्टांतें साधतो, श्रीजयानंद समीव ॥३॥ ते कारण हे तातजी, तत्त्वातत्त्व विवेक ॥ करनारा तुमें पूज्य गो, हिंसा न घटे ठेक ॥ ४ ॥ इत्यादिक सुणी रायनां, वचन विचार पवित्र ॥ राजऋषि जय बूजीया, श्रीजयवात विचित्र ॥ ५ ॥ आदेय वचन तणा धणी, वयण न निष्फल होय ॥ मेघधारा अमृत तणी, निष्फल कदि न जोय ॥ ६ ॥

पचेंड्री वलतां थकां,देखावजो लइ लाग ॥७॥ धर्मदयामयी नापीनें,वचन सुकोमल रीति ॥ पितृव्य तापस ऋषि प्रत्यें, प्रतिबोधजो धरी प्रीति ॥ ८ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ देवी थानक गइ हवे तिहां रे, नरपति चित्त विचारे रे ॥ जिनशासन रसीयो ॥ जिनवचनें थापु एह तपसी, जिम न पडे फरी लपसी रे ॥जि० ॥ १ ॥ तेणें मारग चाल्यो नरपाल, तिहां पोहोतो परम दयाल रे ॥जि० लोक सहुनें दूर करावे, नरपति पासें जावे रे ॥ जि० ॥२॥ आदरथी नव रहित नूपाल, कांयक नमतो नाल रे ॥ जि० ॥ धर्म स्वरूप हुं तुमने नाखु, तेहमां खलखच न राखु रे ॥जि०॥३॥ धर्मनु मूल दया छे सघले,षटदर्शनमां पग पगले रे ॥जि०॥ सवि सपद सुख हेतु एह,कही वेद पुराणें जेह रे॥जि० ॥४॥तेह दयासुं तप जप करीयें, तो नवसायर तरीयें रे॥जी०॥तडुक्तं॥ददातु दान विदधातु मौन,वेदादिक चापि विदां करोतु ॥ देवादिक ध्यायतु सततं वा, न चेदया निष्फलमेव सर्वं ॥१॥ न सा दीक्षा न सा निक्षा, न तद्दान न त त्तप ॥ न तद्ध्यान न तन्मौन, दया यत्र न विद्यते ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एह दया सवि धर्मनु मूल, ते विण सवि छे प्रतिकूल रे ॥ जि०॥ ५ ॥ सुख सघ लानुं साधन तात, जे जगमांहे विख्यात रे ॥ जि० ॥ एह दया जेहनें चित्त आवी, तस नय नवि होये नावी रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ यत ॥ कृपानदी महा तीरे, सर्वे धर्मास्तृणांकुरा ॥ तस्यां शोषमुपेतायां, कियन्नंदति ते चिरं ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ जाणे जीव अजीव स्वरूप, तव पाले दया अनुरूप रे ॥ जि० ॥ तडुक्त ॥ जो जीवे विवियाणाइ,अजीवेविवियाणइ ॥ जीवाजीवे वियाणतो, सोहु नाहि इ संजम ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ जीवाजीव स्वरूप न जाणे, केम दया पाले अजाणे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ यत ॥ जो जीवेवि न याणेइ, अजीवेवि न याणइ ॥ जीवा जीवे अयाणतो,कह सो नाहि इ सजम ॥१॥ ॥ ढाल ॥ जो जैनागम होय अन्यास तो, होय सद्गुरु पास रे ॥जि०॥ ते विण एह दयानो अंश, नवि आवे शलट होये भ्रश रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ निधि औषधि मणि पगपग खाण, कोइ सिद्धपुरुष मले जाण रे ॥ जि० ॥ तो ते हाथ आवे सुख पावे, नहिं तो मदेनत सवि जावे रे ॥जि०॥ ९ ॥ जैनागम गुरु विण धर्ममूल, केम पामीजें अनुकूल रे ॥ जि० ॥ ते आगम आसनो उपदेश, आस ते अरिहंत विशेष रे ॥ जि० ॥ १० ॥ यत ॥ आगमाभ्यासव

चन, आप्तं दोषक्षयाद्विदु ॥ वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रूयाद्धेत्वसंभवात् ॥ ॥ पूर्वढाल ॥ विण आधार आधेय न होय, गुरु विण आगम नही कोय रे ॥ जि० ॥ ज्ञान क्रिया संयुत गुरु जाणो, जिनवचन सम को न पीछाणो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ते जेहमां, वली देव गुरु धर्म एहमां रे ॥जि०॥ नावथी दोय ए त्रिक आराधे,तव केवल ज्ञाननें साधे रे ॥जि०॥ ॥ १२ ॥ योग ते एह दया जे पाले, दया विण योगनें गाले रे ॥ जी० ॥ नागो रहे वली शिर मुंमावे, मौन धरे वली राख लगावे रे ॥ १३ ॥ वांकलां पहेरे जटानें धरावे,करे स्नान अग्निहोत्र ध्यावे रे ॥जि०॥ कंद मूल वली क रे आहार, मृग प्रमुख चर्म वली धारे रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ वली पाखंम क रे अधिकेरा, पंचाग्निप्रमुख बहुतेरा रे ॥ जि० ॥ चांडायणादिक तप बहु तपतो,ध्यान नियमने जाप ते जपतो रे ॥ जि०॥ १५ ॥ देवार्चन वेद आ गम नणतो, आतापना क्लेश न गणतो रे ॥ जि० ॥ एकादशी मुख व्रत आचरतो, सन्यास प्रमुख आदरतो रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ नूमिशयन वली विद्या साधे, बौधादिक दीक्षा आराधे रे ॥ जि० ॥ दया विना सवि फोक ट जाणो, एहमां संदेह न आणो रे ॥ जि० ॥ १७ ॥ तात दया पालो न ली रीतें, दया सर्वधर्मने जीते रे ॥ जि० ॥ पंचाग्नि तपमां नही लेश, दया केरो कांइ प्रवेश रे ॥ जि० ॥ १० ॥ नवमे खंमें अढारमी ढाल, कहे श्री गुरु उत्तम बाल रे ॥ जि०॥ ऋषिनें श्रीजयानंद नूपाल, केहवा करे जिव प्रतिपाल रे ॥ जि०॥ १ए ॥ सर्वगाथा ॥ ५१५॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सुणो पूरवदिशें,काष्ठमां बलतो नाग ॥ दक्षिणदिशि सरडो बले, धर्मनो केहो लाग ॥१॥ जूउ पश्चिमदिशि काष्ठमां, उदेही सहार ॥ उत्तरदिशि बहु देडका, बतलावे निरधार ॥२॥ नू जल वायु अनल वली, वनस्पति सहु जीव ॥ हेतुदृष्टांतें साधतो, श्रीजयानंद समीव ॥३॥ ते का रण हे तातजी, तत्त्वातत्त्व विवेक ॥ करनारा तुमें पूज्य गो, हिंसा न घटे ठेक ॥ ४ ॥ इत्यादिक सुणी रायनां, वचन विचार पवित्र ॥ राजऋषि ज य बूजीया, श्रीजयवात विचित्र ॥ ५ ॥ आदेय वचन तणा धणी, वयण न निष्फल होय ॥ मेघधारा अमृत तणी, निष्फल कदि न जोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ नमो नमो मनक महा मुनि ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयराज ऋषि हवे, धुरथी पण वैराग रे ॥ जवभ्रमणे उदवेगीया, वली नृप वयणनो लाग रे ॥१॥ धन धन ए तापस ऋषि ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धधर्मनुं मूल छे, समकित धरे निज अंगें रे ॥ तापस पणुं हवे गंमीनें, चारित्र मन करे रंगें रे ॥ ध०॥ २ ॥ तावत कोइ नर आवीनें, श्रीजयानद नें जासे रे ॥ गुरु आव्या उद्यानमां, तव नृप एम प्रकाशे रे ॥ध०॥ ३ ॥ कोण गुरु कोण थानकें, तव उत्तर कहे तेह रे ॥ पूर्व उद्यानें चंपकवनें, पाउ धाख्या गुणगेह रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूरि आगमसागरू, नाम तेहवो परि णाम रे ॥ पांचशें मुनिवरें परिवख्या, वतख्या निर्जीव गाम रे ॥ध० ॥ ५ ॥ विजयराजऋषि साथ छे, जे तपना करनार रे ॥ वचन सुणी नृप हरखियो, कुद ज्युं मेघनी धार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ विपुल देइ तस दाननें, नगर मांहे करे जाण रे ॥ अतेवर पुर जन प्रत्यें, गुरु आगमनुं नाण रे ॥ध०॥ ७ ॥ तापस ऋषि आगल करी, श्रीजय तापस नाम रे ॥ अन्यलोक साथे थया, जोवा वात उद्दाम रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ सर्व ऋद्धिशुं परिवख्या, नृप शोजा जेम इंद रे ॥ गुरु देखीनें सांचवे, पचाजिगमनो वृंद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ वदनविधि सवि जालवी, त्रण प्रदक्षिणा देइ रे ॥ सूरि वदी वली वांदता, विजयादि क मुनि केइ रे ॥ ध० ॥ १० ॥ स्तुति करी श्रीगुरु राजनी, बेसे निज निज थान रे ॥ पितृव्य सहित राजा प्रत्यें, करे धर्मलाननुं दान रे ॥ ध० ॥ ११॥ देशना सरस सुधा रसें, मेघ धारा परें वरसी रे ॥ जव्य वृक्ष विकश्वर करे, गुण नवपल्लव फरसी रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ केइक देशना सांजली, सम्यग् दर्श न पामे रे ॥ देशविरति केइ आदरे, कइक महाव्रत कामे रे ॥ ध० ॥ १३॥ केइक समकेत व्रत लिये, तपसी श्रीजयराय रे ॥ वैरागें चारित्र आदरे, म होत्सव करे चक्रीराय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ गुरु वयणें जय मुनिवरु, विज यमुनीश्वर पासें रे ॥ ग्रहण आसेवना बेहु प्रत्यें, शिक्षा नित्य अन्यासे रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ गुरु तेम तात काका प्रत्यें, राजऋषिमां वडेरा रे ॥ अन्य वली मुनिराजनां, चरण नमे सहुकेरां रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ परिकर सहित घरें गया, त्रण खंम राज्य पाले रे ॥ आतम परें प्रजा पालतो, सर्व अनर्थनें टाले रे ॥ध०॥ १७॥ दंम देवे अन्यायीनें, न्यायवतथी रीजे रे ॥ तात पितृव्य संजारतो, अविरतिथी मन खीजे रे ॥ध०॥ १८ ॥ त्रण वर्षे निज अवसरें,

साचवतो नित्य नित्य रे ॥ राजगुणें राज्य पालतो, नीमकात वहचित्त रे ॥ ॥ध०॥१ए॥ यत ॥ धर्मार्थकामेषु मिथो, व्यावाधां परिहृत्य य ॥ प्रवर्त्तते कृतीशश्च, तस्य लोकद्वयं शुजम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मुख्यफल जावथी बहु सुखी, इव्यथी संतति होय रे ॥ पुत्र एक लक्ष लक्षण धरा, बहु कलावंत ते जोय रे ॥ ध०॥ २०॥ शास्त्र बहु जाण यौवन लह्या,सत्यसंधा शूरवीर रे ॥ सुगुण मतिवंत माहाशय धणी, प्रगुण आचार महाधीर रे ॥ध०॥२१॥ लोकप्रिय तात आणा करे, देश पुर गामनें गाम रे ॥ प्रौढ नृपकुलनी कन्या वस्या, जैनशासननी अनिराम रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ महापराक्रमी विनयी घणा, करे क्रिया जेह निष्पाप रे ॥ तातजक्ता नें न्यायी वली, करे गुरु देवनो जाप रे ॥ ध० ॥ २३॥ जिनवर पूजना नित्य करें, जुजबल जास अनंत रे ॥ हय गय सैन्यशुं परिवस्या, कोश जंमार जरत रे ॥ ध० ॥ २४॥ जूधर धीर गंजीर ते, रूपथी जीत्यो अनंग रे ॥ शशिपरें कीर्त्ति बहु उजली, रुतगुण जाण शुज संग रे ॥ ध०॥ २५ ॥ शत्रु उपर अति क्रूर ते, आण चाले घणी तास रे ॥ बहु प्रतापी परिवार अति, सार सस्थान वली जास रे ॥ ध० ॥ २६ ॥ श्रीजयानंदना पुत्रनी, रुद्धि वरणवी कही जेम रे॥ खंम नवमे उंगणीशमी, ढाल पभ्रे कही प्रेम रे ॥ध०॥२७॥सर्वगाथा॥५४७॥

॥ दोहा ॥

॥ शतधनु उंचि देहडी, सोवन वर्ण शरीर ॥ सूर्यपरें तेजें तपे, समुइपरें गंजीर ॥ १ ॥ लाख पूर्व होय आउखु, रोग रहित आणंद ॥ राज्य स्वर्ण मुझा धरे, न्याय माणिक सुखकंद ॥ २ ॥ चंइपरें कुवलय प्रत्यें, करतो नित्य विकाश ॥ तम राहु जस नवि ग्रहे, पसरे नित्य प्रकाश ॥३॥ सदानी कल्पवृक्ष परें, सुविधि नाथ जिनराज ॥ तेहनु तीर्थ प्रनावता, श्रीजयानंद माहाराज॥४॥दानमंमप पगपग करे, तिहां दीये दान अपार ॥ दीन अनाथ कोडघो गमे, संतोषे तेणी वार ॥५॥ स्थान शयन परदेशीनें, निपजावे बहु राय ॥ जिनप्रासाद घणां करे,पुण्यराशि मानु थाय ॥६॥ ते पण गाम गामें करे,नगर नगर गाम गाम॥ कोडघो गमे ते जरावतो,जिनप्रतिमा शुज काम ॥७॥ तास प्रतिष्ठा करे वली,थापे देहरा मांहें ॥ पूजाविधि नित्य साचवे,ग्रंरतो अंग उछाहें ॥ ८ ॥ ग्रास ग्राम दीये देहरे, पुष्पवाडीयो चंग ॥ वावि प्रमुख चैत्य कारणे, नृप दीये धरी उठरंग ॥ ए ॥ ५५६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ मोहना मोतीडो० ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन राज्य सजा नृप जोडी, अवर नृपाल रह्या कर जोडी ॥ साहेवा विनति सुणो मोरी, मोहना विनति० ॥ करकज जोडी कहे वनपाल, सांजलजो मुज वात रसाल ॥ सा० ॥ १ ॥ गुरु आगमनें वधावु राय, नृपमन अधिक प्रमोद ते थाय ॥ विमलमति राजा कहे एम, कोण गुरु किहां छे कहो जेम ॥ सा० ॥ २ ॥ वनपालक कहे सुणो नृपाल, गुरु गुणसायर षटकाय पाल ॥ महिमा जेहनो कह्यो न जाय, जगतमांहे गुण जास गवाय ॥ सा० ॥ ३ ॥ नाम लेता लिह थाये पवित्र, त्रिभुवनमां अद्भुत चरित्र ॥ नामथकी दुःख विलयें जाये, गुण लखमी जस तनु नवि माय ॥ सा० ॥ ४ ॥ अवधिज्ञान मोटुंथी अधिकेरु, प्रतिपाति नहिं तेह नलेरु ॥ वहु साधु सेवे जस चरण, निरतिचार पाले जे चरण ॥ सा० ॥ ५ ॥ पृथु उद्यानमां निरवद्य ठाम, अवग्रह मागी रह्या गुणधाम ॥ राजऋषि चक्रायुध नामें पाउ धाख्या छे मुज आरामें ॥ सा० ॥ ६ ॥ सूरि तेजें सूरज छिपे, शांति गुणें शशीनी परें दीपे ॥ लब्धि अनेक निधान मुणिंद, प्रणमे सुर नर नारीवृंद ॥ सा०॥ ७॥ पुर पुण्य होये जो अतोल, तो दर्शन थाये ए अमोल ॥ महाऋद्धे आवी मनरंगें, प्रणमो ते गुरु अति उछरंगें ॥ सा० ॥ ८ ॥ सांजली विकसे नृप रोम राय, अंग आनूषण वस्त्र अपाय ॥ पडह वजडावे नयरमां नूप, चालजो गुरु वंदन करी चूप ॥सा०॥ ॥९॥ करी सामग्री समग्र नरिंद,सैन्य सामंत प्रजानां वृंद ॥ वाजिंत्रनादें गगन ते गाजे, नृप आरोहे पटगज राजे ॥ सा० ॥ १० ॥ वीजाये चामर शशि परें श्वेत, छत्र वारे आतप नूनेते ॥ नीकलीयो गुरुवंदन हेतें, राणीयो सङ्क थइ हवे तेतें ॥ सा० ॥ ११ ॥ रतिसुंदरी विजयादिक राणी, सहसगमे हुइ सपराणी ॥ निकले ते निज निज परिवारें, नृप पूठें बहु हर्षनें धारे ॥सा०॥१२॥ सद्गुरु दर्शन दीठु जिहारें, गजवरथी उतरे नृप तिहारें ॥ पंचाभिगम साचवे राय, त्रण प्रदक्षिणा दीये तेण ठाय ॥ सा० ॥ १३ ॥ विनय नम्र थइ धरिय विवेक, वंदना करे नक्ते अतिरेक ॥ विद्याचारण श्रमणनां धोरी, वंदे गुरु निजपाप विछोरी ॥ सा० ॥ १४ ॥ दीये धर्मलाभ महालाभकारी, श्रीजयानंदने बहु हर्षकारी ॥ श्रीजयानंद पण विकसित वयणे, गुरु सन्मुख जोइ रसभर नयणें ॥ सा० ॥ १५ ॥ गुरुस्तवना करे क

रकज जोडी, पाप तणा परपचनें त्रोडी ॥ अनुक्रमें बीजा पण राजान, प रजा अंतेउर परधान ॥ सा० ॥ १६ ॥ हर्षें प्रणमी स्तवना करता, नक्ति घणी मनमदिर धरता ॥ गुरुमुख आगल श्रीजयानद, बेसे धरतो परमानद ॥१७॥ उचितस्थानक निज निज सहु वेसे, जेम गुरु वयणां हृदयमां पेसे ॥ सुर असुरां नर पर्षद देखी, देशना दीयें नव्य जीव गवेषी ॥ सा० ॥१८॥ नवमे खर्मे वीशमी ढाल, श्रीजयानदनें रास रसाल ॥ पद्म कहे सुणो बा ल गोपाल, श्रीगुरुथी होये मगलमाल ॥ सा०॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥५७६॥

॥ दोहा ॥

॥ देशना नवनी नाशिनी, साधारण दीये तोय ॥ श्रीजयानद उद्देशि नें, प्रारंने गुरु सोय ॥ १ ॥ क्षीराश्रव लब्धें करी,देवा नृप प्रतिबोध ॥ पूर वनव कही दाखवे, आप तणो सबध ॥ २ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ निंदडी वेरण हुई रही ॥ ए देशी ॥

॥ आरामिक नवे प्रनु तणी, पूजानां हो फल पाम्यो सार के ॥ राजप्र साद घणो थयो, दोय नारी हो तिहां प्राण आधार के ॥ १ ॥ जिनपूजा फल सांनलो ॥ वली व्रतदानें हो फल होय अनत के, पठो मतिसुदर तु थ यो, मत्रीसर हो माहारो गुणवत के ॥ जि० ॥२॥ पूरवनवनी दोय प्रिया, ए नवमां हो थइ ताहरी नार के ॥ अतिबल राजरूपिकनें,अरिहतनो हो लह्यो धर्मप्रकार के ॥जि०॥३॥ दोय प्रियासु आराधीयो, तुमें त्रण जण हो तिहांथी थया देव के ॥ तिहांथी चवीनें तु थयो, त्रण खम्मना हो न न करता सेव के ॥ जि० ॥ ४ ॥ पूरवनव पत्नी थई, राज कुलमां हो कन्या रूपवत के ॥ ते तुज रतिसुदरी तथा, विजय सुंदरी हो सती महाशीलवत के ॥जि०॥५॥ तु नरवीर नृपति तणो, मतिसुदर हो मत्री निरमाय के ॥ धर्म पमाडयो रायनें, स्याद्वादें हो नाख्यो जिनराय के ॥ जि० ॥ ६ ॥ ध र्म आराधी सुर थयो, तिहांथी चवी हो चक्रबल नूपाल के ॥ तस सुत च क्रायुध थयो, हु नरपति हो दोय श्रेणीप्रतिपाल के ॥ जि० ॥ ७ ॥ राज्य नोगवुं दोय श्रेणीनु,तु जीत्यो हो तेणे आव्यो वैराग्य के ॥ चार ज्ञानथी विशेषशुं, उपन्यो वली हो थयो चारित्र लाग के ॥ जि० ॥ ८ ॥ नारी प्रयो जनें तुजनें, बांधीनें हो खेपव्यो कारागार के ॥ पूर्वें तेणें तें मुज प्रत्यें, बांधीनें हो काष्ठ पिंजर मझार के ॥ जि० ॥ ए ॥ बधन मांहेथी काढीयो,

॥ ढाल वीशमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ मोहनां मोतीडो० ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन राज्य सना नृप जोडी, अवर नूपाल रह्या कर जोडी ॥ साहेवा विनति सुणो मोरी, मोहना विनति० ॥ करकज जोडी कहे वनपाल, सांनलजो मुज वात रसाल ॥ सा० ॥ १ ॥ गुरु आगमनें वधावु राय, नृपमन अधिक प्रमोद ते थाय ॥ विमलमति राजा कहे एम, कोण गुरु किहां ठे कहो जेम ॥ सा० ॥ २ ॥ वनपालक कहे सुणो नूपाल, गुरु गुणसायर षटकाय पाल ॥ महिमा जेहनो कह्यो न जाय, जगतमांहे गुण जास गवाय ॥ सा० ॥ ३ ॥ नाम लेता जिह थाये पवित्र, त्रिजुवनमां अद्भुत चरित्र ॥ नामथकी दुःख विलयें जाये, गुण लखमी जस तनु नवि माय ॥ सा० ॥ ४ ॥ अवधिज्ञान मोहथी अधिकेरु, प्रतिपाति नांहि तेह नलेरु ॥ बहु साधु सेवे जस चरण, निरतिचार पाले जे चरण ॥ सा० ॥ ५ ॥ एहु उद्यानमां निरवद्य गम, अवग्रह मागी रह्या गुणधाम ॥ राजऋषि चक्रायुध नामें, पाउ धास्या ठे मुज आरामें ॥ सा० ॥ ६ ॥ सूरि तेजें सूरज छिपे, शांति गुणें शशीनी परें दीपे ॥ लब्धि अनेक निधान मुणिंद, प्रणमे सुर नर नारीवृंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ पुर पुण्य होये जो अतोल, तो दर्शन थाये ए अमोल ॥ महाऋद्धें आवी मनरंगें, प्रणमो ते गुरु अति उहरंगें ॥ सा० ॥ ८ ॥ सांनली विकसे नृप रोम राय, अंग आनूषण वस्त्र अपाय ॥ पडह वजडावे नयरमां नूप, चालजो गुरु वंदन करी चूप ॥ सा० ॥ ९ ॥ करी सामग्री सघम नरिंद, सैन्य सामंत प्रजानां वृंद ॥ वाजिंत्रनादें गगन ते गाजे, नृप आरोहे पटगज राजे ॥ सा० ॥ १० ॥ वीजाये चामर शशि परें श्वेत, छत्र वारे आतप नूनेते ॥ नीकलीयो गुरुवंदन हेतें, राणीयो सङ्क थइ हवे तेतें ॥ सा० ॥ ११ ॥ रतिसुंदरी विजयादिक राणी, सहस्रगमे हुइ सपराणी ॥ निकले ते निज निज परिवारें, नृप पूठें बहु हर्षनें धारे ॥ सा० ॥ १२ ॥ सद्गुरु दर्शन दीठु जिहारें, गजवरथी उतरे नृप तिहारें ॥ पंचाभिगम साचवे राय, त्रण प्रदक्षिणा दीये तेण ठाय ॥ सा० ॥ १३ ॥ विनय नम्र थइ धरिय विवेक, वंदना करे नक्तें अतिरेक ॥ विद्याचारण श्रमणनां धोरी, वंदे गुरु निजपाप विछोरी ॥ सा० ॥ १४ ॥ दीये धर्मलान महालाजकारी, श्रीजयानंदने बहु हर्षकारी ॥ श्रीजयानंद पण विकसित वयणे, गुरु सन्मुख जोइ रसनर नयणें ॥ सा० ॥ १५ ॥ गुरुस्तवना करे क

अरिहत धर्में विशेष ॥ धर्म नामें अमरष धरें, अधर्मनो उपदेश ॥ ३ ॥ अ धर्मे पक्षपात। वली, तें कह्यो बहु उपकार ॥ तोपण द्वेष धरे घणो, पूर्वे वैरें सिहसार ॥४॥ तुज चक्षु ग्रही एणे यदा, ते दिनथी करे पाप ॥ आज लगें छुष्टातमा, पामे बहु संताप ॥ ५ ॥ पुण्य पाप फल व्यक्तिना, हेतु पूरव नव जाण ॥ धर्मे उद्यम करवो तुमें, जेह सदा सुख खाण ॥६॥ शुद्ध धर्म आपण वेहु, आराधि शुनरीति ॥ पुण्यानुबधी पुण्यथी, नोगवीयें सुख नित्य ॥७॥ ॥ सांनली नृप मौनज रह्या, क्षण एक करे विचार ॥ पूरव नव आलोच तां, विस्मय लह्य। अपार ॥ ७ ॥ श्रीजयानद प्रमुख सवे, लघुकर्मा ते जी व ॥ जातिसमरण पामीया, आवरण गयां अतीव ॥ ए ॥ ६०७ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ कवम्हारा आया गुरुजी प्राहुणा ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानदजी एम नणे, प्रञ्जु तुम वचन प्रमाण ॥ तुम वयणे मुज उपन्युं, जाति समरण नाण ॥ १ ॥ मह्वारा ज्ञानी गुरुजी, वाणी सुणी में अमृत सारिखी ॥ ए आंकणी ॥ जेम तुमें नाख्यु तेम लह्यु, वली नमे गुरुना पाय ॥ कर जोडीनें विनवे, स्वामी करो सुपसाय ॥ ॥मा०॥२॥ तात पितृव्य स्वामी माह्वारा, दीक्षादिनथी वात ॥ शी शी बनी कहो आगले, सघलो मुज अवदात ॥ मा० ॥ ३ ॥ मोक्ष जाय तिहां लगें कहो तव गुरु कहे सुणो राय ॥ गुरु सार्थे दीक्षा लेई, विचरे ते मुनिराय ॥ मा० ॥ ४ ॥ वार वरस लगें कीधलो, शिक्षा दोय अभ्यास ॥ ज्ञान क्रिया दोय शिखीया, जिन शासन शुनवास ॥ मा० ॥ ५ ॥ निरतिचार चारित्रि या, विचरे महियल मांह ॥ बोध करे नवि जीवनें, शुद्ध क्रियानो उत्साह ॥ मा० ॥ ६ ॥ गुरु आणा नित्य पालता, गुरुनी करे अति नक्ति ॥ बाल वृद्ध मुनिवर तणु, वैयावच्च यथाशक्ति ॥ मा० ॥ ७ ॥ तप करता अति आकरां, वली ते शम दमवत ॥ राग द्वेष वर्जित मुनि, नि स्पृहनें गुण वत ॥ मा०॥ ७ ॥ निर्मम नें कदाग्रह नही, सघले अप्रतिबध ॥ सत्तावीश गुण साधुना, पाले ते निर्द्वंद्व ॥ मा०॥ ए ॥ परिसह उपसर्गें कदा, न चले ते तिल मात ॥ पृथिवीनें पावन करी, पाली प्रवचन मात ॥ मा० ॥१०॥ अणसण करीय समाधिमां, सनत कुमार माहिंह ॥ देवलोकें सात अयर नें, अधिक आउखे दोय इंद ॥ मा० ॥ ११ ॥ सुख नोगवी ते इहनां, मा हाविदेह मजार ॥ निन्न निन्न देशें थशे, नरपतिनो अवतार ॥ मा० ॥१२॥

पूरवनवें हो तुजनें ततकाल के ॥ उपकारी तुज जाणीनें, बहु मान्यो हो धरी प्रीति विशाल के ॥ जि० ॥ १० ॥ जेणें तें मुजने इहां मूकीयो, राज्य कन्या हो दीधी घणी प्रीति के ॥ आपणनें नित्य वाधती, नवी लंघे हो कोइ कर्मनी रीति के ॥ जि० ॥ ११ ॥ धर्मोपकारनें कारणें, आव्यो हुं हो वली सांजलो वात के ॥ राय मंत्री जवे आपणें, श्रावकनो हो कह्यो धर्म विख्यात के ॥ जि० ॥ १२ ॥ कल्पवृक्ष समो धर्म ते, शुद्धनावें हो आराध्यो ताम के ॥ राज्य संपद प्रवली लह्यां, जोग सुख लह्या हो एणी परें अनिराम के ॥ जि०॥ १३ ॥ अतिशय श्रद्धा तुज हती, तेणें अतिशय हो लह्यो मुजथी ऋद्धि के ॥ कर्मथी कोइ वलीयो नहीं, तेम धर्मथी हो पामे सवि सिद्धि के ॥ जि० ॥१४॥ नेत्र गयां के मुजे नहीं, इत्यादिक हो पूरव जवें जेद के ॥ तें मुनिनें जारव्युं हतु, तेणें आंख्यो हो गइ एणें जव एह के ॥ जि० ॥१५॥ पहेलीयें कुल निंदा करी, बीजीयें कह्यु हो जिल्लनें थो अंध के ॥ वेश्याकुलें बीजी अंध थई, वली जिल्लनो हो पामी संबंध के ॥ ॥ जि० ॥१६ ॥ पश्चात्तापथकी वली, कर्म खपीयां हो रह्यो कांइक अंश के ॥ तेणे इण जवें उदय थयो, जोगव्या विण हो नही कर्मनो भ्रंश के ॥ ॥ जि० ॥ १७ ॥ सिद्धनो जव हवे सांजलो,पुरोहित मुज हो वसुसार जे हुत के ॥ नास्तिक धर्म शिरोमणि, में दीधु हो अपमान अत्यंत के ॥जि० ॥ १८ ॥ काढी मूक्यो देशथी, जवमांहे हो जमीयो बहु काल के ॥ परिव्राजक थयो कोइ जवे, थयो ज्योतिषी हो सुर प्रेम विशाल के ॥ जि० ॥ ॥ १९ ॥ बहुजव जमीयो तिहांथकी,तुज पितृव्य हो सुत थयो कुमार के॥ पापानुबंधी पुण्यथी, थयो महोटो हो नामें सिद्धसार के ॥ जि० ॥२० ॥ तें पुरोहितनें एम कह्युं, धर्मालनो हो श्यो करवो संग के ॥ तेणें तुज थोष दीयो एणे,धर्मालनो हो नवि कर्मनो जंग के॥ जि०॥ २१ ॥ नवमे खंमें ए कही, एकवीशमी हो वर पर्षे ढाल के ॥ कर्म म करजो को सही, कर्में करी हो होये बहु जंजाल के ॥ जि० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ६०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नास्तिक धर्म पूरव कह्यो, तेणे थयो कर्म जमाव ॥ दोष जह्यो निर्गुण थयो, मायी क्रूर स्वजाव ॥ १ ॥ अन्यायी निर्दयी घणो, क्रोध नें निर्जोग ॥ लोनी द्वेषी आकरो, पापमतिनो लाग॥२॥धर्म द्वेषी निरंकुश वली,

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ चक्रायुध सूरि कहे सांजलो, सिंह तणो अवदातजी ॥ पाप करी ब हु व्यसननें सेवी, अशुज ध्यान दिन रातजी ॥ च० ॥ १ ॥ किहांयक चोरीमां पकडायो, मरण लह्यो तेणी वारजी ॥ पाप तणां फल कडुआं जा णी, पाप न करशो किवारजी ॥ च० ॥ २ ॥ सातमी नरकें घोर पापथी, उपन्यो आपद गणजी ॥ महादु ख सागर जोगवतो तिहां, बावीश अयर प्रमाणजी ॥ च० ॥३॥ तिहांथी नीकली मत्स्यादिकनां, अंतरे जव करी ए मजी ॥ साते नरकें वार अनंती, उपन्यो नही कहीं खेमजी ॥ च० ॥ ४ ॥ सर्व तिर्यंचनें देव हीणामां, तेम दुष्ट नरकमां जायजी ॥ वार अनंति फरी फरि जमशे, पाप तणे सुपसायजी ॥ च० ॥ ५ ॥ एणी परें पाप विपाक आकरो, जव अनंत दु खदायजी ॥ तास दृष्टांत ए सिंहनो जांख्यो, कर्म कस्या नवि जायजी ॥च०॥६॥ एम जाणी जवि पाप न कीजें, पुण्य मारग आदरी येंजी ॥ जेहथी जव छु ख राशि न लहीयें, वहेलु शिवसुख वरीयेंजी ॥च०॥७॥ तुज सार्थें जे दीक्षा लेशे, अंतर रिपु जय करताजी ॥ तुजप्रिया तुज सेवक बी जा, नरपति पण व्रत वरताजी ॥च०॥८॥ स्वर्गादिकमां सुरसुख लेहीने, महा विदेह उपजशेजी ॥ उत्तम चरण पाली ते सर्वे, अल्पजवें शिव लहेशेजी ॥च० ॥ ए॥ एह सर्व जे तुजनें जाख्यु, ते मुज बुद्धे न जाणोजी ॥ पण हु विहर मान जिन वचन, माहाविदेहनें गणोजी ॥च०॥१०॥ तिहां श्रीपुंमरकिणि नग रीयें, जिनवर करे व्याख्यानजी ॥ जव्यजीव प्रतिबोधन कारण, जेने सहु ये समानजी ॥ च० ॥ ११ ॥ देशनामां तुज चरित्र वर्णव्यु, प्रजुजीयें करी विस्तारजी ॥ धुरथी मांमीनें जे जाख्यो, ते में सुण्यो अधिकारजी ॥ च० ॥ ॥१२॥ अवधिज्ञानें में जाण्यो हुतो, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ क्षायिक ज्ञानीनी वली साखें, दृढता थइ दृष्टांतजी ॥ च० ॥ १३ ॥ तुजनें प्रतिबोधन हु आ व्यो, तें मुज कस्यो उपकारजी ॥ पूरवजवें जिनधर्म पमाडयो, तेहनो प्रत्युप कारजी ॥ च० ॥ १४ ॥ तुजनें ए संसार असारथी, तारवा आव्यो जाणी जी ॥ देव देशना जवजय हरणी, सांजल तु मुज वाणीजी ॥ च० ॥ १५ ॥ नवमे खमें ढाल त्रेवीशमी, श्रीजयानंदनें रासजी ॥ पद्मविजय कहे सांजलो जविजन, सुणतां लीलविलासजी ॥ च० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ६५४ ॥

प्रोढराज्य तिहां पालता, लेशे संयम नार ॥ केवल लही मुकतें जशे, शा
श्वत शिव सुख सार ॥ मा० ॥ १३ ॥ सांजली सूरि मुखथकी, तात पितृ
व्य विरतंत ॥ हरष लही प्रणमी करी, नरपति वली पूछत ॥ मा० ॥ १४ ॥
महारु तेम सिंहसारनुं, तेम मुज नारीनुं जेह ॥ जवस्वरूप स्वामी जाणीयें,
करीय प्रसाद मुज एह ॥ मा० ॥ १५ ॥ हुं जव्य के अजव्य छुं, जव्य तो
इण जव सिद्धि ॥ अथवा आगें जवांतरें,जांखो करी हित बुद्धि ॥ मा० ॥
॥१६॥ अथवा मुज प्रिया आदिके, केम लेहशे निरवाण ॥ अथवा नही
जाये ते कहो, सघलुं मांहि प्रमाण ॥मा०॥ १७ ॥ सूरि कहे सुणो नृपति,
तुज पत्न्यादिक जेह ॥ आसन्नसिद्धि ते जव्य छे, इतर अयोग्य कहेह
॥ मा० ॥ १८ ॥ तेहमां तुं तथा ताहरी, नारीयो पूरवनी होय ॥ तेम हुं प
ण एणेहिज जवें, सहुनें शिवसुख होय ॥ मा० ॥ १९॥ देशे ऊणा लाख व
रसनो, केवलीनो पर्याय ॥ ज्ञान उद्योतें जगतनें, तारता करी सुपसाय ॥
॥ मा० ॥ २० ॥ पृथिवीनें पावन करी, चरणकमलें चित्त लाय ॥ चोराशी
लख वरसनुं, पाली मुनि पर्याय ॥ मा० ॥ २१ ॥ सकल कर्मनो क्षय करी
वरशो शिववधू सार ॥ हुं पण केवल लही करी, करी जव्यनें उपकार ॥
॥ मा० ॥ २२ ॥ केइक वर्ष विहरी करी, पामीश शाश्वत सुख ॥ सिंहनी
वात हवे सुणो, जेम पामे अतिदुःख ॥ मा० ॥ २३ ॥ नवमे खर्मे बावी
शमी, पद्म विजय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, पुण्यथी मंगलमाल
॥ मा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहसार पुर बाहरें, नीसरीयो ते जाम ॥ जमतो पृथिविमां फिरे, देश
नगर पुर ग्राम ॥१॥ उदर जरणनें कारणे, जिहां जिहां करतो वास ॥ तिहां
तिहां आवे आपदा,मूके मुख निस्सास ॥ २ ॥ तिहां दुर्निक्ष पडे वली, ते
हनु कारण एह ॥ ज्ञानी निमित्तिया वयणथी, जाणी निग्रहे तेह ॥३ ॥
लोक कोप करी एहनें, काढी मूके ताम ॥ सिंह सेवे जे नृपने, प्रायें जाये
जमधाम ॥ ४ ॥ लोक कहे पगलां बुरां, एहनां दीसे जाय ॥ शरण आ
धार जे आपणो, मरण लह्यो जूठ राय ॥ ५ ॥ ताडन तर्जना बहु करे,
काढी मूके तास ॥ घोर पाप फल अनुजवे, नवि पामे कहीं वास ॥ ६ ॥

॥८॥ खेत्र लहे कुल दोहलुं, कुल पामे उत्तम जाति रे ॥ जाति लहे बुद्धि दोहिली,बहु जड जगमां विख्यात रे ॥व०॥ ए ॥ बुद्धि लहे गुरु दोहिला, जे निर्ममनें निरमाय रे ॥ गुरु पामे पण दोहिलु, श्रवणे सांजलवु थाय रे ॥ श्र० ॥ १० ॥ अन्यतीर्थी सेवे घणा, अथवा करे कातीया नग रे ॥ धर्म सुण्यो गुरु सगतें, डुर्जन श्रद्धानो रग रे ॥ डु० ॥ ११ ॥ इव्य नाव डुग नेदथी, सरधा तिहां इव्यथी जाण रे ॥ तत्त्वरुचि जिन वयणमा, य दपि परमारथ अजाण रे ॥ य० ॥ १२ ॥ नावथी परमारथ लहे, अथवा वली दोय प्रकार रे ॥ निश्चयनें व्यवहारथी, शुद्ध हेतु ते होये व्यवहार रे ॥ शु० ॥ १३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रना, निश्चयथी शुन परिणाम रे ॥ कारक रोचक दीपकें, ए त्रिविध नेद होये नाम रे ॥ ए० ॥ १४ ॥ श्रद्धा सम किरिया करे, ते कारक समकित होय रे ॥ गौतम प्रमुख तणी परें, तेतो दीसे विरला कोय रे ॥ ते० ॥ १५ ॥ रुचि मात्रज श्रद्धा होये, जेम श्रेणिक प्रमुख नरिंद रे ॥ रोचक समकेत ते लहो, करणी विण जे नवि वृंद रे ॥ क० ॥ १६ ॥ दीपक समकेत जाणीयें, देशनादिकें दीप समान रे ॥ दीपे पण निजमां नही, होये अनव्य प्रमुख एणी गण रे ॥ हो० ॥ ॥ १७ ॥ समकेत रोचक जो लहे, पण कारक अतिडुर्लन रे ॥ विषय कषायमां मुजीयो, वली पुत्र कलत्र आरंन रे ॥ व० ॥ १८ ॥ यत ॥ मुक्का निकखिस्स विमाण वस्स,ससार निरुस्स ठिअस्स धम्मे ॥ न तारिसङ्कत्तरमह्नि लोए, जहिह्निठं बाल मणोहराउ ॥ १ ॥ ए ए असग समइक्कमित्ता, सुद्ध नराचेव नवति सेसा ॥ जहा महासागरमुत्तरित्ता, नईनवेअविगहा समा णा ॥ २॥ सह्म कामा विसकामा, कामा आसिविसोवमा ॥ कामा पढे माणा, अकामा जति डुग्गइ ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ डुर्गति दायक काम जे, पंमित करे तेहनो त्याग रे ॥ जे कारण मदीनें होये, अनासकियें कामनो राग रे ॥ अ० ॥ १९ ॥ ब्रह्मव्रती पर्वनें दिनें, अन्यदिवस तणु परिमाण रे ॥ ती व्रानिलाष न तेहमां, एहवो होये गृही घर गण रे ॥ ए० ॥ २० ॥ एम जाणी ब्रह्म आदरे, नहीतो स्वदारा सतोष रे ॥ निजनरतार सतोषिणी, ना रीनें एम व्रत पोष रे ॥ ना० ॥२१॥ सर्वथकी ब्रह्म आचरे, घर नार त्यजी अणगार रे ॥ शीलांगरथ मुनिराजनो, परिमाण अढार हजार रे ॥ प०॥ ॥ २२ ॥ करण योगें त्रिक नेदथी, आहारादिकसज्ञा चार रे ॥ इंद्रिय प

॥ दोहा ॥

सुधा मुधा करे देशना, सांजली श्रीजयानंद ॥ कर जोडी विनयें करी,विक सित मुख अरविंद ॥ १ ॥ निद्रा विकथा वरजतो, निद्रा करे व्याघात ॥ निद्रा शवनी वानकी, कर्मबंध पण थात ॥ २ ॥ निद्रावंतनें सहु हसे, जागतां नर जेह ॥ साधु प्रायें नवि वदे, सांजली न शके तेह ॥ ३ ॥ अमली परें ते धूणतो, न रहे कांइ शुद्धि ॥ उंघे श्रुत उंघ्या तणुं,जागतां वाधे बुद्धि ॥ ४ ॥ उंघण नर उटल समो,कटकमां मुख जाय ॥ डाख मंमप सम जिन वयण, गंमी ते उघाय ॥ ५ ॥ तेम विकथा वर्जो वली, जेहथी बहु जंजाल ॥ नवनानु जीव रोहिणी, जेम पामी डुःख जाल ॥ ६ ॥ विकथाथी उंघ्यो जलो, नवि मोसे व्याख्यान ॥ विकथा कारक महीष सम,जाण्यो प्रगट प्रमाण ॥ ७ ॥ जख्या टांकामां नाखीयें, मूतर चलुक प्रमाण ॥ विकथा ते वितथा करे, वक्ता तणु वखाण ॥ ८ ॥ तेमाटे तुमें मत करो, निद्रा विथा कोय ॥ एम सुणतां प्रमुदित होये, वक्ता श्रोता होय ॥ ए ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुरवर जलो,जिहां पांडुराजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी सांजलो, नरनव लही म करो प्रमाद रे ॥ फरि फरि नरनव दोहिलो, पामवो एम शास्त्र संवाद रे ॥ १ ॥ पामवो एम शास्त्र संवाद, सुणो नवि प्राणीयां, जिनवाणी रे ॥ जिनवाणी विन्नाण मुणिंद, कहे नविहित जणी, गुण खाणी रे ॥ ए आंकणी ॥ कायस्थिति अति जीवनी, पुढवी अप अनलनें वाय रे ॥ असंख्याती उत्सर्पिणी,रहे जिन्न जिन्न एक काय रे ॥ रहे० ॥ २ ॥ वनस्पतिमांहे जो रहे, अनंति उत्सर्पिणी थाय रे ॥ बि ति चउरिंदिय कायमां, संख्यातो काल रहाय रे ॥ सं०॥ ३ ॥ पंचिंद्रियमांहे जो करे, नव सात आठ संलग्ग रे ॥ संसरतां बहु डुःख लहे, नही सुख तणो संसग्ग रे ॥ न० ॥ ४ ॥ नव एकेक सुर नरकनो, एम जाये प्रमादमां काल रे ॥ त्रस पणु अति दोहिलु, थावरमां रहे बहु काल रे ॥ था० ॥ ५ ॥ त्रसपणु लहे दोहिलु, पंचेंद्रियपणु जगसार रे ॥ विकलेंद्रिय थीसे घणा, हीण इंद्रिय वली संसार रे ॥ ही० ॥६ ॥ पंचेंद्रिय लह्यो परवडां,पण डुर्लज मनु अवतार रे॥ सुर तिरि नरकमां बहु नमे, लहेतो तिहां डुःख अपार रे ॥ ल० ॥ ७ ॥ नरनव पामे दोहिलो, आरय खेत्रनो संबंध रे ॥ म्लेछादिक दीसे घणा,बहु पाप करम करे अंध रे ॥ब०

रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आशिष वचन परजा तणे रे, नरपति वाधे दोलत घणे रे ॥ रा० ॥ तेणे परजानें तुमें पालजो रे, पूर्वजनी रीति अजुआलजो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ परजा नृपनें लोपे नही रे, नवि नृप परजानें कोपे सही रे ॥ रा० ॥ परजा दानादिक जे करे रे,वली धर्म महोत्सव बहु आदरे रे ॥ रा० ॥४ ॥ ऋद्धिनें जशथी परजा वधे रे, वली अपर गुणे पण जे सधे रे ॥ रा० ॥ तेम तेम नृपनें आणंद घणो रे, परजा उपर प्रेमल पणो रे ॥ ॥रा०॥५॥ धन्य माने प्रजा सुत एहवी रे, पुण्यवती प्रजा सुजनें हवी रे ॥ ॥रा०॥ ए राज्यस्थिरीजावें रहे रे, जस कीरति वित्त जगमां लहे रे ॥रा०॥ ॥ ६ ॥ वत्स राज्य पालजो एणीपरें सदा रे, जेम धर्म सीदाये नवि कदा रे ॥ रा० ॥ चिंतामणि परें उत्तम लह्यो रे, धर्म ते वीतरागनो जे कह्यो रे ॥रा०॥७॥ ते समकेतसार इच्छित दीये रे, वडवीज परें ते वधीजीयें रे ॥रा०॥ शत शाखायें ते विस्तरे रे, डुष्ट वयण वायुयें नवि फर फरे रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ पुरमां सात व्यसन निवारजो रे, अणहुता पुरमां म लावजो रे॥रा०॥ देइ पुत्रनें शिक्षा एणीपरें रे, ते पुत्र सहु अंगीकरे रे॥ रा०॥ए॥हवे स्वजन प्रधाननें पागीया रे,महेता मसुदी जे राजीयारे॥रा०॥ पूछे सहुनें नर राजीयो रे,पुत्रपत्नीनें गुणगण गाजीयो रे॥रा०॥१०॥प्रमुदित करी सहु परजा प्रत्यें रे,करे महोत्सव दिन दिन वाधते रे ॥रा०॥ जिनवर चैत्यें महोत्सव करे रे, आठ दिवस लगें नवनव परें रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ वजडावे पडह अमारिना रे, परराज्य मांहे श्रीकारना रे ॥ रा० ॥ भक्ति करे साधर्मिक तणी रे, वस्त्र आहार दानादिक अति घणी रे ॥ रा० ॥१२ ॥ पच्चवीशमी नवमा खम्डमां रे, ढाल नाखी रंग अखम्डमां रे ॥ रा० ॥ सुणो श्रोता पद्मविजय कहे रे, शासनरागी आनंद लहे रे ॥ ॥रा० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन उन्नति जेम होये, तेहवां कार्य अनेक ॥ निज आतम हित कारणे, करता धरिय विवेक ॥ १ ॥

॥ ढाल उब्बीशमी ॥ ट्रुक अने टोडावचें रे, मेंदीनां दोय रुख, मेंदी रग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदना सुत भला रे,श्रीकुलानंद नरिंद ॥ सयम रंग लागो॥ सामग्री अनिपेकनी रे, मेलवे उपकरण वृंद ॥ स०॥१ ॥ विधिपूर्वक मह्

चनो जय कस्रो, पृथिव्यादिक दशपद धार रे ॥ पृ०॥ २३ ॥ नू जल ज्वल न अनिल तरु, विकलेंद्रिय वली त्रण नेद रे ॥ पंचेंद्रियने अजीव ए, द श नेदनो संयम वेद रे ॥ द० ॥ २४ ॥ खात्यादिक दश धर्मथी, जोडतां हो ये सहस अढार रे ॥ एहवा अढार रथें करी, गुण नरिया श्रीअणगार रे ॥ गु० ॥ २५ ॥ ते अणगार पणु धरे, जगमां धन्य तस अवतार रे ॥ तस उपमान न जगतमां, जे सकल गुणा शिरदार रे ॥ जे० ॥ २६ ॥ ६६ प द नमे चरणने, उत्कृष्टथी तेणे नव सिद्धि रे ॥ सात आठ नव ऊजवे न दी, ए समयमहिं प्रसिद्ध रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ तेणे संयम लेवु घटे, हवे करी संसारनो त्याग रे ॥ जनम मरणनां नय टले, वरवा शिव सुंदरी ला ग रे ॥ व० ॥ २८ ॥ आतम तत्त्वें रमण होये, परनाव प्रसंग न कोय रे ॥ चरण धरमना गुणथकी, चिदानंद प्रगट क्रमें होय रे ॥ चि० ॥ २९ ॥ ढाल चोवीशमी एणी परें, नवमे खंमें सुरसाल रे ॥ पद्मविजय कहे धर्म थी, होये घर घर मंगल माल रे ॥ हो० ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ८९३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रायुध चारित्रीया, दीधो एम उपदेश ॥ रोम रोम सुणी हरषीया, श्रीजयानंद नरेश ॥१॥ दान सुपात्रे दीधलु, पूर्वे संस्कार ते पाम ॥ सफल थयो उपदेश ते, दोलत न गमे दाम ॥२॥ वधतो थयो वैराग्य ते, पूर्वे वैराग्य प्र माण ॥ पयमां साकर जेम पडे, समज्यो तेह सुजाण ॥३॥ चित्त थयुं चा रित्रनुं कहे गुरुने किरपाल ॥ हितदेशक हित वांछकू, मुज हित करु मया ल ॥४॥ प्रसन्न थइ इहां पडखीयें, जइनें हुं निज धाम ॥ पुत्रने राज्य था पी करी, आवु छु हु आम ॥ ५॥ नव उदवेग लह्यो नलो, राज्यें न रीजे मन्न ॥ उत्सवशुं इहां आवीनें, आदरें तुम्ह आसन्न ॥ ६ ॥ वडपणे दीक्षा ग्रहु, तुमची पासें ताम ॥ म करो विलंब ए काममां, धर्मी गयो निजधाम॥७॥

॥ ढाल पचीशमी ॥ मीठा मीठु बोलीनें शुं रीजवो रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजन मीठुं बोलीनें सहु रीजवो रे, रखे कोइ प्रजामें खीजवो रे ॥ ॥ रा० ॥ पुत्र थापे महामहोत्सव करी रे, शीखामण दीये नृप हित धरी रे ॥ रा० ॥ सहोदरनी परें पालजो प्रजा रे, मत करजो कोइनी कूडी क जा रे ॥रा० ॥१ ॥ दूजे कामधेनुनी परें रे, जो सुखणी प्रजा होये थिरपरें रे ॥ रा० ॥ नृपनें नंमार ए पालतो रे, सुखमां प्रजालोक जो माहालतो

परजानें पण तेणीपरें रे, धर्म करावे नूपाल ॥ सं० ॥ २० ॥ पग पग तात सनारतो रे, करतो तस बहु मान ॥ स० ॥ हवे श्री श्रीजयानदजी रे, गुरु साथें असमान ॥ स० ॥ २१॥ विचरे सयम साधता रे, विनय तणा नंमार ॥ स० ॥ सामाचारी शीखीया रे,गुरुपासें विधि सार ॥स०॥२२॥ तिमहिज पोतें आचरे रे, करे श्रुतनो अन्यास ॥स०॥ अनुक्रमें थोडा कालमां रे,द्वा दशांगधर खास ॥स०॥२३॥ नवमे खम छवीशमी रे,पद्मविजयें कही ढाल ॥ स० ॥ मुनिगुण सुणतां गायतां रे,होवे मगल माल ॥स०॥२४॥४३०॥

॥ दोहा ॥

॥ समितिपंच समिता सदा, गुप्ति त्रण आगार ॥ अप्रमादी अकिंचनी' असगी अणगार ॥ १ ॥ साधुगुणथी शोनता,निर्ममनें नि कषाय ॥ तप क रता अति तीव्र ते, निर्मदनें निर्माय ॥२॥ श्रीजयानद सूरिपदें, गुरु थापे गन्नीर ॥ लायक नाना लब्धिनें, धरता साहस धीर ॥ ३ ॥ आणा गुरुनी आदरी, पृथिवी करे पवित्र ॥ सूत्र नणावे साधुनें, निरति चार चरित्र ॥ ॥४॥ छत्रीश छत्रीशी गुणे, शोनित जास शरीर ॥ गुरु पासे आव्या गुणी, वदनें वह वीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ कर करुनें करु वदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ चक्रायुध सूरी सरू, हुं वारीलाल ॥ विचरे बहु परिवार रे ॥ हु०॥ साथे श्रीजयानदजी ॥ हु० ॥ चरण करण व्रत धार रे ॥ हु० ॥ १ ॥ ए मुनिनें करु वदना हुवारी लाल ॥ ए आंकणी ॥ चार ज्ञानी चारित्रीया हु० ॥ चक्रायुध सूरिराय रे हु० ॥ लखमी पुरनें ढूकडा हु० ॥ आवी शा खा पुर गाय रे हु० ॥ ए० ॥ २ ॥ आयु अत जाणी करी हु० ॥ श्री जयानदनें ताम रे हु० ॥ गछनार सहु सोंपीयो हुं० ॥ गणेशपद अन्निरा म रे हु० ॥ ए० ॥ ३ ॥ कोइक तीरथ जइ करी हु० ॥ उपधि शिष्य करी त्याग रे हु० ॥ पादपोपगम आदरे हु० ॥ अणशण परम वैराग्य रे हु० ॥ ए० ॥ ४ ॥ त्रीश दिवस अणसण रह्या हु० ॥ घातीकर्म खपाय रे ॥ हु० ॥ केवलज्ञान गुणें करी हु० ॥ लोकालोक जणाय रे हु० ॥ए०॥ ५ ॥ शैलेशी करणे करी हु० ॥ शेष कर्म करी नाश रे हु० ॥ अजर अमर सु ख शाश्वतां हु० ॥ वरिया शिव आवास रे हु० ॥ ए० ॥ ६ ॥ आसन्न दे

न करे रे, वाजित्र गीत संगीत ॥ सं० ॥ बावना चंदन चरचीया रे, अंग थूही सुपवित्त ॥स० ॥ २ ॥ पुष्पमाल्य पहेरें वली रे, दिव्य वस्त्र अलंकार ॥ स० ॥ शिबिकामां आरोहीनें रे, पृथिवी पालण हार ॥ स०॥ ३ ॥ सिंहासन नृप सोहीयें रे, छत्र चामर श्रीकार ॥ स०॥ सर्व आभरण ऋद्धिशुं रे, देतो दान अपार ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रधाननें वली पागीया रे, परजानो समुदाय ॥ स० ॥ महेता मसुद्दी सहु मल्या रे, मगल गीत गवाय ॥ सं०॥ ॥ ५ ॥ नानाविध नाटक करे रे, पात्र विचित्र विशेष ॥ स० ॥ बिरुदावली बहु बोलता रे, बंदीजन सुविशेष ॥स०॥६॥ छत्र चामर हयगय नला रे, मगल कुंन चलाय ॥ स० ॥ अष्टमगल आगल चले रे, ध्वज मोहोटो लहकाय ॥ स० ॥ ७ ॥ चतुरंगी सेना चले रे, विद्याधर परिवार ॥स०॥ सुर नर कोडी गमे मल्यां रे, देवांगना नही पार ॥ स० ॥ ८ ॥ पुष्पवृष्टि करे सुरवरा रे, वाजे डुंडुन्नि खास ॥ स०॥ वाजित्र पडछदें करी रे, नरीयो वर आकाश ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुक्रमें नगर मध्ये थइ रे, आवे तस उद्यान ॥ स० ॥ शिबिकानें मूके तदा रे, मानु मूके मान ॥ स० ॥१० ॥ अग नमावी विधि थकी रे, वदे गुरुना पाय ॥ सं० ॥ स्वजन वर्गनें पूछतो रे,अग वैराग्य न माय ॥ स० ॥ ११ ॥ धीर गनीर शिरोमणि रे, नरपति श्री जयानद ॥ स० ॥ वस्त्र आनूषण मूकतो रे, धरतो परमानद ॥स०॥१२॥ पंच मुष्टि करे लोचनें रे, आवे गुरुनी पास ॥ स० ॥ सयम मुजनें दीजीयें रे, मुजने अति उल्लास ॥ सं०॥ १३ ॥ दीक्षा गुरु पण आपता रे, करता नवि उपकार ॥ सं० ॥ सार्थवाह परें नरपति रे, सार्थे बहुपरिवार ॥स०॥ ॥ १४ ॥ लखकोगमे जन आदरे रे, दीक्षा वृक्ष सुजाण ॥ स०॥ अतेउर राणी घणी रे, सार परिवार वखाण ॥ स० ॥ १५ ॥ पटराणी रतिसुंदरी रे, प्रमुख लीये व्रतनार ॥ स०॥ पुत्र पौत्रादिक सहस्रोगमे रे, तेम नृप एक हजार ॥स०॥१६॥ ते पण निज अतेउरी रे, सार्थे लीये व्रत नार ॥स०॥ जन जनपदमां नृपकुलें रे, हर्ष प्रमोद अपार ॥ सं० ॥१७॥ घर घर एहिज वातडी रे, लीजीयें सयम सार ॥ स० ॥ हवे कुलानद जे राजीयो रे, परवर्यो निज परिवार ॥ स० ॥ १८ ॥ श्रीजयानदना तातनें रे, तेम श्री श्रीजयानद ॥ स० ॥ तेम गुरु चक्रायुध तणा रे, प्रणमी पद अरविंद ॥ ॥ स० ॥ १९ ॥ घरें आवी नित्य आचरे रे, श्रीजिनधर्म विशाल ॥ स० ॥

नवमे खंमे ए कही हु० ॥ सत्तावीशमी ढाल रे हुं० ॥ मुनि गुण गातां प भणें हु० ॥ होये मगलमाल रे हुं० ॥ ए० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्राम नगर पुर पाटणे, थानक कोडघो प्रमाण ॥ विचरी बहुजन ता रिया, केइ सुजाण अजाण ॥ १ ॥ अपराधी जे जे हुता, तस आलोयण दीध ॥ इव्यजावें ते प्राणीनें, निर अपराधी कीध ॥ २ ॥ जेहनी सरिता देशना, तेहमां जव्य जे मीन ॥ उत्तम जन मक्षन करे, पामे रति अति पीन ॥ ३ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानद केवली तणी, कांय देशना गगा सरखी रे ॥ तास संगे सुपवित्र थया, कांइ धर्म मार्ग केइ परखी रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केइक वै मानिक थया, कांइ केइक अनुत्तर वासी रे ॥ केइक चक्रवर्त्ति पणु, कांइ आ गामी जवे थाशी रें ॥ श्री० ॥ २ ॥ केइक मोक्ष जवांतरें, कांइ केइक ते णे जवे सिद्ध रे ॥ इत्यादिक उपकारथी, कांइ सुखमय प्राणी कीध रे ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ राजरुपि वर केवली, श्रीजयानद जगख्यात रे ॥ विचरंतां वसु धा तलें, काइ निर्मल जस अवदात्त रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ विचरंता पाठधारी या, श्रीसोरठदेश मजार रे ॥ जिहां प्रचुरुपन्न समोसस्या, कांइ पूरव नवा णु वार रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांमवनें पुमरिक वली, कांइ इविड वारिखिल्ल दोय रे ॥ सांब प्रद्युम्न वली कृष्णना, जे दोय पुत्र वली होय रे ॥ श्री० ॥ ॥ ६ ॥ कोडघो गमे मुनिराजशुं, कांइ शिवपद वरिया जेह रे ॥ राम जरत नारद वली, कांइ तत्त्व वस्था निज तेह रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ थावच्चा सुत सय मी, वली शुक परिव्राजक तेम रे ॥ सुव्रत बहु अणगारशुं, कांइ एणेगिरि आ व्या प्रेम रे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ आतम तत्त्व नीपजावीयो, कांइ सादि अनतह जगें रे ॥ नारद एकाणु लाखशुं, कांइ निज गुण वरिया रगें रे ॥ श्री० ॥ ए ॥ ए गिरिनो महिमा घणो, कांइ मुखथी कह्यो न जाय रे ॥ हिंसक पापी जीव नो, कांइ इहां उद्धार ते थाय रे ॥ श्री० ॥ १० ॥ अनव्य न देखे नयणथी, कांइ शत्रुजय महात्म्य बोले रे ॥ जगमां जोता ए समुं, काइ तीर्थ नावे तोलें रे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ शाश्वत प्राय ए गिरिवरू, कांइ रूपनकूट परें जा णो रे ॥ जबू द्वीप पन्नत्तिनी, कांइ वृत्तिमांहे मन आणो रे ॥ श्री० ॥ १२ ॥

वता तिहां करे हुं० ॥महोत्सव अधिक मंमाण रे हुं० ॥ वाजित्र गीत संगी तणुं हु० ॥ करे उत्सव निर्वाण रे हु० ॥ ए० ॥ ७ ॥ ए उडुगिरव सांनली हु० ॥ श्रीजयानंद मुणिंद रे हुं० ॥ अप्रतिपाती वैराग्यथी हु० ॥ लहे शुक्ल ध्यान अमंद रे हुं० ॥ ए० ॥ ८ ॥ क्षपक श्रेणी मांमी करी हुं० ॥ वेद कषायनो नाश रे हु० ॥ मोह जयी त्रण कर्मनें हु०॥ क्षय करता शुन वास रे हुं० ॥ ए० ॥ ए ॥ श्रीजयानदजी पामीया हु० ॥ निर्मल केवल ज्ञान रे हु० ॥ प्रगट प्रछन्न कथुं सहु लहे हु० ॥ सर्वज्ञान परधान रे हु० ॥ ए० ॥ ॥ १० ॥ षटद्रव्य गुण पर्यायनें हु० ॥ ध्रुव व्ययने उतपाद रे हु० ॥ एक समयमां जाणता हुं० ॥ चिद अमृत आस्वाद रे हुं०॥ ए० ॥ ११ ॥ मुनि महिमायें आकर्षीया हुं० ॥ वैमानिक सुर आय रे हु ॥ महोत्सव केवल ज्ञाननो हु० ॥ करता सहु समुदाय रे ॥ हुं० ॥ ए० ॥ १२ ॥ दिव्य कमल विरचे तिहां हुं० ॥ सहस्र पत्रनुं महत रे हु० ॥ अदनूत एक सोवन तणुं हुं० ॥ ते उपर वेसत रे हु० ॥ ए० ॥ १३ ॥ नगरलोक सहु आवीया हु० ॥ वेग करीय प्रणाम रे हु० ॥ श्रीजयानदजी केवली हु० ॥ देशना देवे ताम रे हु० ॥ ए० ॥ १४ ॥ नवि उपकारनें कारणे हु० ॥ नाखे चतुर्विध धर्म रे हु० ॥ दान शील परन्नावथी हुं०॥ जेहथी लहे शिवशर्म रे हु० ॥ ए० ॥ १५ ॥ श्रीकुलानद हवे नृपति हु० ॥ जाणे तातनुं नाण रे हु० ॥ चतुरंगी सेना सजी हु० ॥ आवे अति मंमाण रे हुं० ॥ ए० ॥ ॥ १६ ॥ विश्वपूज्य केवली प्रत्यें हु० ॥ देखी करे प्रणाम रे हु० ॥ पंच अनिगम साचवी हु० ॥ विधि पूर्वक अनिराम रे हु० ॥ ए०॥ १७ ॥ तीन प्रदक्षणा देईनें हु० ॥ स्तवना करे नरराय रे हु० ॥ वंदना करी उचित तासनें हु० ॥ बेसे केवली पाय रे हु० ॥ ए० ॥ १८ ॥ केवली श्रीजयानदजी हुं० ॥ देशना देवे तास रे हु० ॥ श्रावक धर्म प्ररूपीयो हु० ॥ द्वादश व्रत सुविलास रे हु० ए० ॥ १ए ॥ मुनिवर धर्म पण उपदेशे हुं० ॥ समकेत दोयनुं मूल रे हु० ॥ केइक नविजन आदरे हुं० ॥ समकेत मन अनुकूल रे हु० ॥ ए० ॥ २० ॥ केइक देशविरति ग्रहे हुं० ॥ केइक मुनिवर धर्म रे हु०॥ केइक ग्रहे अनिग्रह घणा हु०॥ केइक प्रकृतें नर्म रे हुं० ॥ ए०॥ २१ ॥ एम अनेक नवि जीवनें हु०॥ विविध करी उपकार रे हुं० श्रीजयानदजी केवली हु० ॥ तिहांथी करे विहार रे हुं० ॥ ए० ॥ २२ ॥

जन तणा, मनमां हर्षे न माय ॥ ४ ॥ ए श्रीजयानंदनी कथा, गुणगण महिम विशाल ॥ जणे गुणे जवि सांजले, तस घर मंगलमाल ॥ ५ ॥
॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ तूठो तूठो रे मुज साहेब जगनो तूठो ॥ ए देशी ॥
॥ फलियो फलियो रे मुज सकल मनोरथ फलियो ॥ श्रीजयानंदनो रास करंतां, जाग्य अपूरव जलियो रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मुनिगुण गान नीरें करी माहारो, पाप पंक खलजलीयो ॥ नाम गोत्र सुणतां महा निर्जरा, सूत्रमांहे एम कलीयो रे ॥ मुज० ॥ २ ॥ मुनिगुणनां बहु मान करंतां, जन्मनुं फल हुं रलीयो ॥ आधि व्याधि उपद्रव सवि दूरें, मुजथी जाये टलीयो रे ॥ मुज० ॥ ३ ॥ पृथिवि मोक्ष साम्राज्यनी लखमी, श्रीजयानंद ते मलियो ॥ बाह्य अंतर शत्रु दोय जींत्या, ए बहु जाग्यथी बलीयो रे ॥ मुज० ॥ ४ ॥ धीरज गुण महोटो मेरु सम, कोइ वातें नवि चलीयो ॥ जे मुनि दान दीये एणी रीतें, तस डुःख जाये गलीयो रे ॥ मुज० ॥ ५ ॥ रंजाफल सम श्रीजयानंदना, गुणमां दोष न वलियो ॥ लोह समान हुं तेहमां मुनिगुण, रसकूपी रस ढलीयो रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ मुनि गुण जक्तिपकी हवे माहारो, डुःखनो दिवस ते दलियो ॥ मुनिगुण गातां अंतरंग मुज, अनुजव हेजें हलीयो रे ॥ मुज० ॥ ७ ॥

॥ अथ कलश प्रशस्ति ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तपगच्छपति श्रीजगतचंद सूरि, चौंआलीशमे पाटेंजी ॥ जावज्जीव जेणें आंबिल कीधां, तपगच्छ तेहिज माटेंजी ॥ १ ॥ तस पट्टें श्रीदेवेंद्रसूरि, गातारथ उपगारीजी ॥ छेंतालीशमे धर्मघोष सूरि, तार्या बहु नरनारीजी ॥ २ ॥ सोमप्रज सूरि तस पट्टराजें, सुडतालीशे ठामेंजी ॥ सोमतिलक सूरि अडतालीशमे, पाटें गुणगण धामजी ॥ ३ ॥ तस पट्टें श्रीदेवसुंदरसूरि, गुणवंता गुणरागीजी ॥ सोमसुंदर सूरि पाट पच्चाशमे, किरियावंत वैरागीजी ॥ ४ ॥ मुनिसुंदर सूरि एकावनमे, पाटें गुण गण दरीया जी ॥ सहस्त्रावधानी बालपणाथी, तार्या जिहां विचरीयाजी ॥ ५ ॥ अध्यातमकल्पद्रुम नामें, सतिकर जेणें कीधोजी ॥ एकशो आठ हाथनो कागल, लखीनें गुरुने दीधोजी ॥ ६ ॥ एकशो आठ वर्तुलिकाना रव, जिन्न जिन्न उंलखीयाजी ॥ उपदेश रत्नाकर जेणें कीधो, वादिगोकुल शांढ लखीयाजी ॥ ७ ॥ इत्यादिक बहु ग्रंथना कर्त्ता, श्रीजयानंद चरित्रजी ॥ जेणें कीधु न्हाना रस संयुत्त, बहु वैराग्य पवित्रज

कल्याणक पण एणे गिरि, कांइ जिनवर केरां थाशे रे ॥ पूर्वे थया वली एणे गिरें, बहु मोक्ष गया वली जाशे रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ महिमावत ए क्षेत्रमां, श्रीजयानदजी आवे रे ॥ गिरि उपर अणसण करे, कांछ पापपोप गम गवे रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ पटदिन अणसण पालीयु, काइ योग निरोध करंत रे ॥ शेलेशी करणें करी, कांइ शेप कर्म करे अत रे ॥ श्री०॥ १५ ॥ त्रीजो नाग सकेलीनें, करे अगुरु लघु अवगाह रे ॥ महानद पद पामी या, कांइ जिहां सुख अव्यावाह रे ॥ श्री० ॥ १६ ॥ समश्रेणि एक समय मां, कांइ लोकायें कस्यो वास रे ॥ सिद्ध बुद्ध समृद्ध थया, काइ अजराम र अविनाश रे ॥ श्री० ॥ १७ ॥ फरी नवि नवमा आवबु, जिहां एक ति हां अनत रे ॥ देश प्रदेशें फरसीनें, रह्या असख्य गुणा नगवत रें॥ श्री० ॥ १८ ॥ पण निज निज स्वरूपमां, रहे चिदानद नगवत रे ॥ अरूपी को ६ कोईने, कांइ पीडा ते न करत रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥ सकीरण पण नवि होयें, कांइ अनत चतुष्टयवत रे ॥ ज्ञान दर्शन सुख वीर्यनां, कांइ नोगी तेह महत रे ॥ श्री० ॥ २० ॥ अशरीरी अणाहारी जे, काइ निरुपाधिक सु ख वरीया रे ॥ जेहनी उपम जग नही, जे नवसायर निस्तरीया रे ॥श्री० ॥ २१ ॥ नाण दसण उपयोगीया, कांइ समयांतर पलटाय रे ॥ पण एक समयमा सवि लहे, मुख्यता गौणता कहेवाय रे ॥ श्री० ॥ २२ ॥ परम ज्याति परमातमा,कांइ परम ब्रह्म स्वरूप रे ॥ जाणे पण नवि कही शके, कांइ केवलज्ञानी अनूप रे ॥श्री० ॥ २३ ॥ अहावीशमी ढाल ए, कांइ न वमे खरूं नाखी रे ॥ श्रीजयानदना रासमां,काइ तेहनु चरित्र ले साखी रे ॥ एम पद्मविजय चित्त राखी रे, शिवसुखनां थाउ अनिलाषी रे,परनाव वीउ सहु नाखी रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ७९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तत्क्षण मलीया देवता, चार निकाय मिलत ॥ श्रीजयानद वियोग नो, अतिशय शोक धरंत ॥ १ ॥ पण निर्वाण तणो करे,उत्सव अति वि स्तार ॥ प्रायें तीर्थंकर परें, प्रमुदित थइ अपार ॥ २ ॥ उत्सव करी नदी श्वरें, अहाइ मह सार ॥ करीनें निज थानक गया, मुनिगुण चित्त सनार ॥ ३ ॥ एणी परें श्रीजयानदजी, केवली जे ऋषि राय ॥ गुण गाया गुणी

वि प्राणी, लेशें लछि विशालाजी ॥ अनुक्रमें शाश्वत पदवी पामी, वरशें मगलमालाजी ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥८३२॥ प्रथमखम्मे ढाल॥१५॥ गाथा ॥४४३॥ उक्तश्लोक॥१३॥ द्वितीयखम्मेढाल ॥३२॥गाथा ॥९६२॥ उक्तश्लोक ॥ २० ॥ तृतीयखम्मे ॥ ढाल ॥२३॥ गाथा ॥ ४२९ ॥ उक्तश्लोक ॥१३॥ चतुर्थखम्मे ढाल ॥३३॥ गाथा ॥ ८८६ ॥ उक्तश्लोक ॥ १० ॥ पचमखम्मे ढाल ॥ ९ ॥ गाथा॥२६४ ॥ उक्तश्लोक ॥११॥ षष्ठखम्मे ढाल ॥२२॥ गाथा ॥ ६८४ ॥ उक्तश्लोक ॥१९ ॥ सप्तमखम्मे ढाल ॥९ ॥ गाथा ॥२६६॥ उक्तश्लोक ॥ २ ॥ अष्टमखम्मे ढाल ॥२८॥ गाथा ॥ ८२५ ॥ उक्तश्लोक ॥ ॥ ५ ॥ नवमखम्मे ढाल ॥ २९ ॥ गाथा ॥८३२॥ उक्तश्लोक ॥ १९ ॥ समग्रासनी ढाल ॥२०२॥ समग्रग्रथ गाथा ॥५८९४ ॥ सर्वग्रथना उक्तश्लोक, सवैया, दोहा, अने समस्या मलीने ॥११२ ॥

॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित श्रीपद्मविजय गीणविरचिते श्रीश्रीजयानदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानदराजेंद्र दीक्षा केवल ज्ञानादिवर्णनोनामा नवम खम्म समाप्त ॥ तत्समाप्तौ च श्रीश्रीजयानदकेवलिचरित्र समाप्तम् ॥

इति मुनिश्रीपद्मविजय गणिविरचिते श्री श्राद्धव्रत पालनफलमहात्म्योपरि श्रीश्रीजयानद केवली रास सपूर्ण ॥

॥ ८ ॥ तेह चरित्रथी रास रच्यो में, उंडो अधिको लिखायोजी ॥ ते मुज मिछाडुक्कड होजो, पाप रति न रखायोजी ॥ ए ॥ तस पाटें रत्नशेखर सूरि, जे अतिशय गुणवंताजी ॥ लक्ष्मीसागर सूरि त्रेपनमे, पाटे जेह महंताजी ॥ १० ॥ सुमतिसाधु सूरि पाट चोपनमे, हेमविमल सूरि जाणोजी ॥ श्री आणंद विमल सूरि उप्पन्नमे, पाटें गुणमणि खाणोजी ॥ ११ ॥ जेणें किरिया उद्धार करीनें,कुमति वृंद बहु काप्योजी ॥ विजयदान सूरि तस पटधर, बहु प्रतिष्ठा मह थाप्योजी ॥१२॥ तस पाटें श्रीहीरविजय सूरि, पातशाह दीधो मानजी॥ विजयसेनसूरि तस पटधर,ग्रथतणु बहु ज्ञानजी॥१३॥तस पाटें श्रीविजयदेवसूरि, पाट शाठमें जाणुंजी ॥ विजयप्रभसूरि तस पाटें,एक शठमें मन आणुजी ॥१४॥ विजयरत्नसूरि तस पटधर, श्रीविजयखिमा सूरिंदजी॥ विजयदया सूरीश चोशठमे, पाटे जेम दिणंदजी ॥ १५ ॥ विजय धर्म सूरि तस पाटें,पुण्यवंत वडनागीजी ॥ विजयजिनेंद्रसूरि छाशठमे,पाटें अधिक सोनागीजी ॥ १६ ॥ विद्यमान वरते जसु आणा, तेहनें राज्यें कीधोजी॥ रास एह सुंदर मुज मतिसम, मनहमनोरथ सीधोजी ॥ १७ ॥ संवत अढार अठावन वर्षे, जींबडी रही चउमासजी ॥ पोष सुदि एकादशी दिवसें, कीधो एह अन्यासजी ॥ १८ ॥ अल्पबुद्धे असमंजस नांख्यु, ते सज्जन शोधाज्योजी॥ खलबुद्धे जे दूषण दाखे, ते नवि मनमां लाज्योजी ॥ ॥ १९ ॥ नव खंडें करी नव नव रचना, नवरसमयी निरधारजी ॥ सघ आग्रहथी पूरण कीधो, हुउं जयजयकारजी ॥ २० ॥ श्रीविजयदेवसूरीश पटोधर, विजयसिंह गणराया जी ॥ तास शिष्य श्रीसत्यविजय बुध, पंमितजन सोहायाजी ॥ २१ ॥ कपूरविजय तस शिष्य सोनागी,खिमाविजय तस शिष्यजी ॥ पंमितप्रवर सुलक्षण लक्षित, जिनविजय सुजगीशजी ॥ ॥ २२ ॥ तास शिष्य समुदायमां उत्तम, उत्तमविजय मुणिंदजी ॥ समताव तनें श्रुत अन्यासी, नरिया गुणगण वृंदजी ॥ २३ ॥ तस पदपद्म शिलीमुख सरिखु, पद्मविजय अनिधानजी ॥ एह रासनी रचना कीधी, मुनिगुणनें बहु मानजी ॥ २४ ॥ जिहां लगें रवि शशी दीपनें सागर, जिहां लगें मेरु गिरिंदाजी ॥ तिहां लगें एह रास थिर होजो,वांचजो नविजन वृंदाजी ॥ २५ ॥ साढा आठ सहसनी उपर,श्लोक अग्यार गणायाजी ॥ ढाल बशें दोय कलशें कीधो, शांति पास सुपसायाजी ॥ २६ ॥ नणशे गणशे जे न

शा छगन चका. १
ऊवेरी नीमचद धर्मचद १
शा प्रागजी दीपचद १
पारेख हेमचद मोनजी १
शा दीपचद माणेकचद १
शा गनीर शामजी १
शा मोतीचद साकलचद १
वोरा छगन देवचद १
शेठ माणेकचद नाणजी १
दोशी जगजीवनदास धर्मचद १
पारेख जगजीवनदास कस्तूरचद १
दोशी दामोदर दयाल १
वकील वकोर ककल १
शा नगीनदास मोतीचद १
शा हरजीवन कीला १

पालीताणा

श्री जैनविद्याशाला ५
मास्तर तलकचद माणेकचद १
शेठ नाराण हीरजी १
शा माणेकचद जेठा १
मेता जीवा पीताम्बर १
श्री जैनज्ञानपुस्तकसना हा०
शा छगन जेठा १

धोलेरा

शा हीराचद मोतीचद १

माणा

सलोत उमेदचद ऊवेरचद १

शा लालचद हरजीवन तथा
अमीचद नाणजी १
दोशी उद्धवजी देवचद तथा व
नमाली रायचद १
सलोत डुर्लनजी गुलावचद १

धुलिया

शेठ सखारामनाई डुलनदास १

गारीयाधार,

शा गोपालजी गोविंदजी १
शा हीराचद गोविंदजी १

वरल

दोशी विछल वेचर १

वढवाण

शा मगलजी जसराज १
शा गोकल नाणजी १
शा गोविंदजी मकन १

अमरेली

जैनज्ञानशालातरफथी शा वीर
चद जीवा. १

अगाशी

शा. केवल खीमचद ३

कुमला

शेठ वेचर राघवजी १

महुवा

शा शूरचद सवाईचद १
शा गांमालाल आणदजी. १

वरतेज

शा हेमचद प्रागजी १

आ ग्रंथने प्रथमथी आश्रय आपनारा सुज्ञजनोनां नामो

वालोचर प्रां मुर्शीदावाद	
रायलक्ष्मीपतिसिंहजी बाहादूर	१०
अजीमगंज प्रां मुर्शीदावाद	
रायधनपतिसिंहजी बाहादूर	४
जावनगर	
शा पानाचंद तेजा बुकसेलर.	१०
वोरा हठीसिंह झवेरचंद	५
श्री जैनज्ञानवर्धक सजा हा० मंत्री दीपचंद छगनलाल	५
वोरा अमरचंद जसराज	३
शा नरोत्तमदास हाठ	२
शा नानचंद रायचंद	२
श्री जैनधर्मप्रसारक सजा	२
वोरा नानचंद करशन	२
वोरा अमरचंद ठाकरशी	२
शा हीराचंद लखमीचंद	२
शा मूलचंद वि नथुजाई	२
शा मगनलाल कुंवरजी	२
शेठ दामोदर जाणजी	२
शघवी शिवचंद वेला	२
जावसार झवेर नाराण	१
शा सोमचंद अद्धवजी	१
शा नानचंद आणंदजी	१
शा गांधा वेला	१
वोरा छगन जीवन	१
शा बकोर शामजी	१
शा पुरुषोत्तम हेमजी	१
शा. लल्लुजाई कानजी	१
शा चुन्नीलाल दोलतचंद	१
शा गिरधर बावा	१
शा. दामोदर हरजीवन	१
दोशी आणंदजी पुरुषोत्तम	१
शा नानचंद ताराचंद	१
शघवी चतुर्जुज धनजी	१
पारेख मोतीचंद रामजी	१
श्री जैनधर्मप्रोत्तेजकसजा तरफथी पारेख शामजी रामजी	१
शा रायचंद हीराचंद	१
वोरा मगनलाल हरखचंद	१
शा हरगोविंद जीवा तथा मगनलाल नानचंद	१
शा तलकचंद नारणजी	१
शा हठीसंग गांगजी	१
शा गोविंदजी दीपचंद	१
शा ठाकरशी वर्धमान	१
मास्तर अमरचंद वखतचंद	१
शा हेमचंद मगल	१
शा नानचंद गांधा	१
शा लखमीचंद कल्याणजी	१
शा बकोर उजमशी	१
पारेख रघुनाथ नथु	१
शा छगन मूलजी	१
शा हरिचंद देवचंद	१
दोशी फतेचंद हुकमचंद	१

सुरत

शा कल्याणचद पानाचद १

शीहोर

शा॰ कुंवरजी मूळजी १

गोघा

श्रीजैनज्ञानदीपकसभा हा०

शा भीखाभाई मानचद १

श्रीजैनविद्याशाळा १

शघवी खूपचद पीताम्बर १

दोशी उत्तमचद दामजी १

दोशी नरोत्तम पुरुषोत्तम १

वळा

मेता काळिदास मोतीचद १

जैनविद्याशाळा १

धोराजी

शा बावा भाणजी १

शा जगजीवनदास सोभागचद १

कछ मांडवी

शेठ नागजी विसनजी १०

वीरमगाम

शेठ वीरजी वालजी १

बेन परशन १

वगसरा

दोशी कपूरचद करशनजी २

पालण पुर

रा रा मगळजीभाई ईश्वरजी २

शा नाथाभाई जेचद १

सायला

शा भामर नथु १

गोंडल

शा॰ नारणजी मूळजी॰ १

लींबडी

शा गिरधर लालचद १

चोकसी काळिदास वजेचद १

पारेख नानचद जेसग १

वडोदरा

गांधी फतेचद लालभाई १

झवेरी हीराचंद ईश्वरदास १

झवेरी माणकलाल घेलाभाई १

भारतवर्षीय जैनपुस्तकालय १

मुबई

शेठ परवत लधा ५

शेठ शामजी नरसी केशवजी २

शेठ फकीरचद प्रेमचद २

शेठ वीरचद राघवजी १

मोदी अनुपचद जगजीवन १

मेता मोतीचद झवेरचद॰ १

शा वाडीलाल बोघाभाई १

शा न्यालचद वेलचद १

मारवाडी राजाजी रुपाजी १

झवेरी नेमचद मेलापचद १

मारवाडी खुमाजी प्रेमचद १

मारवाडी दीपाजी कृष्णाजी १

शेठ तलकचद माणेकचद १

शेठ वीरचद दीपचद १

शेठ विठ्ठलदास मोतीचद १

शेठ करमचद कल्याणजी १

शेठ रुढवजी देवजी १